वीर भूमि की
बहुविध झाँकियाँ

●

# राजस्थान : स्वतन्त्रता के पहले और बाद

⊙

१९६६
हिन्द साहित्य लिमिटेड प्रकाशन

भूमिका
राजबहादुर जी
(सूचना एव प्रसारण मन्त्री)

●

प्रकाशक
पावन पाठक
व्यवस्थापक, हिन्द साहित्य लिमिटेड,
महात्मा गांधी मार्ग,
अजमेर

●

मुद्रक
सस्ता साहित्य प्रेस,
महात्मा गांधी मार्ग,
अजमेर

●

ब्लॉक मेकर्स
जयपुर ब्लाक्स,
जयपुर

●

मूल्य
पच्चीस रुपये

राजस्थान के
प्राचीन एव अर्वाचीन
निर्माताओ तथा
बलि-वीरो को
सादर समर्पित

## भूमिका

नवनिर्मित ग्रन्थ 'राजस्थान स्वतत्रता के पहले और बाद" पर भूमिका लिखने का 'दा साहब" (श्री हरिभाऊ उपाध्याय) ने मुझसे आग्रह किया है। यद्यपि मैं ग्रन्थ नही पढ़ पाया हू किन्तु ग्रन्थ के आत्मा और कलेवर से यथा सम्भव परिचय हो गया है। मैं जानता हूँ कि इतने आधार पर इस भूमिका द्वारा ग्रन्थ के प्रति मैं पूर्ण न्याय नही कर पाऊगा, किन्तु दा साहब और सौ० शकुन्तला जी का आग्रह भी कसे टाला जा सकता है। अस्तु।

'राजस्थान स्वतन्त्रता के पहले' इस एक वाक्य से ही एक साथ बीते हुए युग की याद ताजा हो जाती है। और इस ग्रन्थ म भी ठेठ वदिक काल से लेकर, जब से ससार म लिखित साहित्य उपलब्ध होता है आज तक के राजस्थान का एक समग्र चित्र प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। स्वतन्त्रता के पूर्व के राजस्थान के अनेकों चित्र हमारे स्मृति पटल पर उभर आते हैं। इतिहास के पूर्व का यह काल जब

भूगर्भवेत्ताओं के अनुसार राजस्थान का भू—भाग समुद्र के जल से ढका हुआ था, महाभारत काल जब कि इस प्रदेश का एक भाग जंगल और दूसरा मत्स्य देश कहलाता था, सम्राट अशोक का युग, यूनानी और शक जाति के लोगों का युग, फिर वह युग जब इसका पश्चिमी भाग गुर्जर प्रदेश और पूर्वी भाग वैराठ और मथुरा के नाम से विख्यात थे, तदुपरान्त राजपूतों और मुसलमानी आक्रमण का युग, एक एक कर इन सब की झांकियां सामने आ जाती हैं, और आती है झलक उस युग की जिसके चिन्ह आदि शिल्पी के बनाये हुए मिट्टी के खिलौनों मे मिलते हैं या फिर राजस्थान की लोक कलाओं एवं ललित कलाओं की झलक के साथ राजस्थान के मैदानों और पहाड़ियों के पुराने और नये इतिहास के पट परिवर्तनों की झांकियां, जो एकदम एक ओर तो देश के महान गौरव की, और दूसरी ओर पतन की सीमाओं का दिग्दर्शन करा देती हैं। यह सब केवल एक वाक्य 'राजस्थान स्वतन्त्रता के पहले' कहने मात्र से एक साथ मानस पटल पर चित्रित हो जाते हैं।

इतिहास के विकटतम युग मे देशी रजवाडों और राजे महाराजाओं का युग भी याद आता है, और उसी के साथ देश के स्वतन्त्रता संग्राम के संदर्भ मे राजस्थान की तत्कालीन विभिन्न रियासतों मे रियासती प्रजा का अपने को दोहरी गुलामी से मुक्त कराने के लिये किया हुआ जन आन्दोलन। सहसा स्मरण हो आता है उन जुल्मों और अपमानों का जो उस काल में जनसाधारण पर नित्य किये जाते थे। लाग, बाग बेगार, भेंट, मन और प्राणों को कुण्ठित करने वाली और जकड़ने वाली वह आर्थिक और सामाजिक विषमतायें और शोषण, जिनको इन रजवाडों के इन्सान ने पीढ़ियों तक बर्दाश्त किया था और जिनको वह पीढ़ी भी, जो इस संघर्ष में होकर गुजरी है, भुलाये नही भूल सकती। फिर आती है हमारे इतिहास का वह शानदार घड़ी जब सदियों का सोया हुआ भारत और उसका वह शानदार टुकड़ा राजस्थान, गहरी गुलामी की नींद से जागा था। स्वतन्त्रता के प्रभात में इस देश ने अपने चिर-प्रतीक्षित सौभाग्य से भेंट की थी। स्वतन्त्रता प्रभात की इस बेला मे एक नई आशा जाग्रत हुई और एक अनुपम अवसर मिला राजस्थान की जनता के आजादी के आन्दोलन मे संजोये हुए अरमान और स्वप्नों को साकार करने का और राजस्थान चल पड़ा अपनी आजादी की मंजिल पर।

हम गुलामी मे जीवन काटने का अनुभव तो बहुत था किन्तु आजादी मे हमारे परस्पर अधिकार और कर्तव्य क्या होंगे, परस्पर हित संघर्षों का कैसे निपटारा किया जायगा, इसका विशेष ज्ञान नही था। आजादी के बाद पुराने रजवाड़ों की इकाइयां मिल कर जब एक नया राजस्थान बनेगा तो उस नई व्यवस्था और नये वायु मण्डल मे हम क्या करेंगे और क्या करना चाहिये इसकी पूरी और सही तस्वीर हमारे सामने नही थी। इस तस्वीर को हमने बनाने का प्रयास किया है। इसको बहुत कुछ तैयार भी किया और इसमे रंग भी भरे हैं।

किन्तु आजादी अपने साथ राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक सवालों और समस्याओं की गठरी बांध कर लाई। एक एक कर उन सवालों और समस्याओं से देश के महान नेताओं के मार्गदर्शन के प्रकाश मे देश की जनता जूझ पड़ी। राजस्थान को भी यह प्रकाश मिला और राजस्थानियों ने अपनी समस्याओं से संघर्ष शुरू किया। बहुत कुछ किया और बहुत कुछ करना बाकी है।

'स्वतन्त्रता के बाद" के युग के हम इतने समीप हैं कि उसका मूल्यांकन तो आने वाली पीढ़ी और इतिहास ही कर सकेगा। राजस्थान के विभिन्न वर्ग और व्यक्ति आज के समय और परिस्थितियों के रंगमंच पर अपना अपना रोल किस प्रकार अदा कर रहे हैं यह वे स्वयं नहीं कह सकते, पीछे आने वाले ही कहेंगे। किन्तु एक बात स्पष्ट है, राजस्थान अपने सामन्ती युग की बेड़ियों को तोड़ कर आगे बढ़ा है। चाहे अपेक्षाकृत हमारी रफ्तार धीमी रही हो, किन्तु हम रुके नहीं। देश के अन्य भागों के मुकाबिले में राजस्थान को विरासत में सामाजिक और आर्थिक पिछड़ापन कुछ अधिक ही मिला था। किन्तु राजस्थान में सदियों के सोये हुए इन्सान ने एक करवट ली है, वह जागा है, उसने अपने अधिकारों को पहचाना है, अपनी इन्सानियत और खोया हुआ मान पाया है। उसे अपना मान मिला है, अधिकार मिले हैं जिनसे वह सदियों तक वंचित रहा था। उसके जीवन ने एक नया रूप अपनाया है। समाज के हर वर्ग और हर पहलू में क्रांति आई है। फिर भी, पुरानी रूढ़ियाँ और संस्कार, अभिशाप के रूप में विभिन्न प्रकार से अब भी समाज को जकड़े हुए हैं। इन बेड़ियों को भी राजस्थान के लोगों को तोड़कर फेंकना है। अभी इस दिशा में बहुत कुछ करना है। "स्वतन्त्रता के बाद' के नये राजस्थान का चित्र पूरा करना है। विकास और प्रगति के दौरे में अन्य प्रदेशों के बराबर ही नहीं आना है बल्कि अपने अपार साधनों के और शक्ति के सदुपयोग द्वारा राजस्थान को भारतीय संघ की एक सबसे मजबूत इकाई बनाना है। सीमावर्ती देश होने के नाते राजस्थानियों को अपने शौर्य और वीरता की अमर मर्यादाओं और परम्पराओं को लेकर देश की सीमाओं की रक्षा के लिए तयार करना है। मेरा विश्वास है कि इस ग्रन्थ में राजस्थान के विभिन्न पहलुओं पर समुचित प्रकाश डाला गया है।

यह एक सुन्दर संयोग है कि इस ग्रन्थ को शीघ्रातिशीघ्र तैयार करने में प्रेरणा मिली है हमारे मुख्य-मन्त्री श्री मोहनलाल जी सुखाड़िया के जन्म दिवस की समीपता से। राजस्थान के इतिहास में जहां हमारी आजादी की लड़ाई के परम् सेनानी श्रद्धेय स्वर्गीय जयनारायण व्यास जी का नाम अमर रहेगा और अमर रहेंगे शहीद श्री सागरमल गोपा जैसलमेर, श्री बालमुकुन्द बिस्सा जोधपुर, श्री रमेश स्वामी भुसावर श्री छतरसिंह एवं श्री पन्नासिंह तसीमो के नाम जिन्होंने हमारी आजादी के संघर्ष में अपने प्राणों की आहुति दी, वहां राजस्थान के प्रशासन में तेरह वर्ष तक स्थायित्व देने का ऐतिहासिक श्रेय श्री सुखाड़िया जी को रहेगा। आज के झंझटों और झगड़ों की गर्द जब शान्त होगी तो यह भी माना जायेगा कि अनेक कठिनाइयों के बावजूद सुखाड़िया जी ने राजस्थान का विकास करने के लिए भरसक यत्न किये। इन पंक्तियों द्वारा उनके पचासवें जन्म दिवस पर श्री सुखाड़िया जी को हार्दिक शुभकामनाएँ अर्पित करता हूँ। साथ ही इस ग्रन्थ की सफलता की कामना करता हूं। आशा है यह ग्रन्थ न केवल राजस्थानियों के लिए वरन् समस्त देशवासियों के सम्मुख राजस्थान का एक सच्चा और अच्छा चित्र प्रस्तुत करने में सफल होगा।●

राजबहादुर
२०-८-६६

## आमुख

राजस्थान पर अब तक सकडो लेख-कविता, बीसो ग्रन्थ निकल चुके है, हिन्दी और राजस्थानी मे तथा अन्य भाषाओ मे भी। परन्तु मेरे देखने मे अभी एक भी ग्रन्थ ऐसा नही आया जिसमे ठेठ वैदिक काल से लेकर जब से ससार मे लिखित साहित्य उपलब्ध होता है, आज तक राजस्थान का समग्र चित्र उपस्थित हो जाता हो। ऐसे सर्वांगपूर्ण ग्रन्थ की आवश्यकता महसूस होती रही है। वतमान ग्रन्थ उसी की पूर्ति की दिशा मे एक आशिक या स्वल्प प्रयास है। पाठको को इसमे राजस्थान के प्राचीन-ठेठ मानव जीवन की समावना से लेकर १८५७ की क्राति तक फिर १९४७ मे स्वतन्त्रता प्राप्ति तक तथा उसके बाद आज तक के इतिहास और विकास पर अच्छी रोशनी मिलेगी इसमे सन्देह नही। प्राचीन इतिहास के अलावा इसम राजस्थान की कला सस्कृति पर भी भरपूर प्रकाश डाला गया है, आधुनिक भारतीय स्वातन्त्र्य युद्ध राजस्थान म भी उसके तत्कालीन विविध राज्यो म भी लडा गया था-यद्यपि उन सबका केन्द्र और प्रेरणा स्थान अजमेर रहा था। उसके नेताओ, उनके साथियो, बलिवीरो के त्याग, कष्ट सेवन और बलिदान का भी उनके गौरव का भी-इसम समावेश किया गया है, जो अब छिपता-सा जा रहा है। पचवर्षीय योजनाओ के द्वारा विभिन्न प्रकार मे राज्य और सावजनिक सेवकों द्वारा जो निर्माण रचना, शिक्षा समाजसुधार आदि के काय किये गय हैं, किये जा रह है उनका भी वणन इसम अच्छी तरह आया है। इसका यह मतलब हर्गिज नही है कि ग्रन्थ परिपूर्ण या सर्वांगपूर्ण बन गया है-इसमे कही कोई त्रुटि नही रह गई है। ग्रन्थ बहुत जल्दी म कुल दो महीने म तयार हुआ है, अत त्रुटि रह जाना आश्चय की बात नही है। अक्सर ऐसे ग्रन्थो की तयारी मे महीना लग जाते हैं। इसके सपादक और प्रकाशक मण्डल के सामने भी यह कठिनाई थी। उन्होने इसके लिए कोई सीमा निर्धारण करना ठीक समझा। सदव से हमारे प्रिय और सफल मुख्यमन्त्री भाई सुखाडिया जी का जन्मदिन नजदीक आ रहा था तो प्रकाशको के मन म यह प्रेरणा हुई कि क्यो न यह ग्रन्थ पूरा करके उनके जन्मदिन के उपलक्ष मे भेंट किया जाय? उनके लिए इससे अधिक उपयुक्त भेंट और क्या होगी? इस विचार के आते ही सम्पादको और प्रकाशको का तथा उनके साथी सहायको का उत्साह दिन दूना रात चौगुना बढ गया। सबने दिन रात अथक परिश्रम करके, अनेक कठिनाइयो को पार करके यह ग्रन्थ तैयार किया है जिसका मैं स्वय साक्षी हूँ। यदि यह समय अवधि उनको प्रोत्साहक न होती तो इतने थोडे समय मे इतना वडा सचित्र सुन्दर ग्रन्थ हर्गिज तैयार नही हो सकता था। इस सफलता पर मैं उन सबको हृदय से बधाई देता हूँ।●

हरिभाऊ उपाध्याय

## कृतज्ञता ज्ञापन

इस ग्रन्थ के प्रकाशन मे हम सभी क्षेत्रो से सहयोग मिला है। श्री भगवतसिंह मेहता और श्री त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी से शुरू से ही मार्ग-दर्शन मिलता रहा। श्री भागीरथजी कानोडिया, श्री राधाकृष्ण बजाज, श्री गोकुलभाई, तथा श्री चम्पालाल उपाध्याय से न सिर्फ मार्ग-दर्शन मिला बल्कि उन्होंने हमारी कई समस्याओं को हल किया चाहे वे आर्थिक रही हो अथवा ग्रन्थ की सामग्री सम्बन्धी।

इस सब के बावजूद अगर हम जयपुर ब्लाक्स के भाई सोहनजी व सार्वजनिक सम्पर्क कार्यालय के भाई केसरीमलजी का सहयोग न पाते तो आगे बढना मुश्किल था। हम श्री मार्तण्ड उपाध्याय एव सस्ता साहित्य मण्डल, दिल्ली के कार्यकर्ताओं को भी नही भूल सकते जिन्होंने दिल्ली के खराब मौसम के बावजूद तुरन्त हमारा काम किया।

अपने लेखक बन्धुओं की कृपा का वर्णन किस प्रकार करें? कभी आशा नही की थी कि आज के विनिमय के युग मे अपने अपने विषय के इतने विद्वानो के लेख प्राप्त हो सकेंगे। भाई भवरशर्मा, महेन्द्र मानावत और महेन्द्र प्रकाश ने लेखो के साथ चित्र भी भेजने की कृपा की। भित्ती चित्रो की अनुकृतिया भवरशर्मा, झाकी के तथा जगलात सम्बन्धी पशु-पक्षिया के चित्र महेन्द्र प्रकाश के भेजे हैं। श्री बदरीप्रसाद साकरिया ने अपने लेख के साथ पाठ शोध को सुगम तरीके से समझाने के लिए एक नमूना भी भेजा जो उनके लेख के साथ छपा है। भाई श्री देवीलालजी सामर के प्रति हम कैसे कृतज्ञता प्रदर्शित करें? पुत्र शोक से व्याकुल होने पर भी ऐसा सारपूर्ण और तथ्य गर्भित लेख भेजने की कृपा की। यह सारी सामग्री जुटाने और सवारने मे श्री चन्द्रगुप्त वार्ष्णेय, श्री विश्वनाथ वामन काले, श्री कृष्णचन्द्र विद्यालकार, डा० बाबूराव जोशी, डा० हरीश, श्री जगदीशचन्द्र, श्री स्वाधीन, श्री राजहस शर्मा, श्री मदन गोपाल शर्मा तथा श्री जागेश्वर तिवाडी से जो योग मिला है वह बहुमूल्य है।

साथ ही उसका श्रेय सस्ता साहित्य प्रेस, अजमेर के कर्मचारियो को भी उतना ही है, जिन्होने ग्रन्थ का समय पर निकालने म दिनरात मेहनत की। इनके अलावा और भी अनेक क्षेत्रो और व्यक्तिया से हमे सहायता मिली है उन सब के हम आभारी हैं। हम हमारे केन्द्रीय मत्री श्री राजबहादुर जी के बहुत कृतज्ञ है जिन्होंने थोडा समय मिलने पर भी इस ग्रन्थ की भूमिका लिखने की कृपा करके अपने अपनाव को निभाया है।

ग्रथ को समयानुकूल गौरव मिला श्री चव्हाण साहब और डा० सम्पूर्णानन्दजी की कृपा से। पूज्य बाबूजी ने अस्वस्थ होते हुए भी समारोह की अध्यक्षता स्वीकार की, श्री चव्हाण साहब ने अत्यन्त व्यस्त रहने पर भी समय निकालकर जयपुर आकर सुखाडियाजी को उनकी ५०वीं वर्ष गाठ के उपलक्ष्य म यह ग्रन्थ भेंट करने की कृपा की इसके लिए हम उनके बहुत बहुत कृतज्ञ हैं। हमे इस बात का खेद अवश्य है कि हमारे बार बार अनुरोध करने पर भी कई महानुभावो ने स्वतत्रता-सग्राम सबधी लेख या सामग्री भेजने की कृपा नही की। इससे हम इस भाग को जितना सजीव और पुष्ठ बनाना चाहते थे उतना नही बना सके। ईश्वर ने चाहा तो अगले सस्करण में हम इस तथा अन्य कमियों को पूरा करने का प्रयास करेंगे। ●

प्रकाशक

उपराष्ट्रपति
भारत

नई दिल्ली
२ जुलाई, १९६६

मुझे यह जानकर खुशी हुई कि आपने राजस्थान स्वतंत्रता के पहले और बाद नामक ग्रन्थ श्री मोहनलाल सुखाड़िया जी की ५० वीं वर्षगांठ के शुभ अवसर पर भेंट करने का प्रयोजन किया है। अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट करने का आपने जो इस प्रकार आयोजन किया है, वह बहुत ही स्तुत्य है। मैं जानता हू कि श्री सुखाड़िया जी राजस्थान के बहुमुखी विकास के लिए सदैव प्रयत्नशील रहे हैं। मैंने ग्रन्थ की रूप रेखा देखी। अभिनन्दन ग्रन्थ को व्यक्तिनिष्ठ बनाने के बजाय समष्टिनिष्ठ बनाना यह उसकी सफलता का मैं समझता हू महान् श्रेय है।

• जाकिर हुसैन

CONGRESS PRESIDENT
INDIA

NEW DELHI
3rd June, 1966

Rajasthan has recorded commendable progress under the dynamic leadership of it's Chief Minister, Shri Mohanlal Sukhadia I have no doubt that the State will continue to flourish and prosper under Shri Sukhadia's lead On the occasion of his 50th birthday, I wish Shri Sukhadia a long and active life in the service of his people

• K Kamaraj

गृह मंत्री
भारत

नई दिल्ली
५ जुलाई, १९६६

मुझे यह जानकर अतीव प्रसन्नता है कि श्री मोहनलाल सुखाड़िया जी की ५०वीं वर्षगांठ के शुभ अवसर पर उन्हें एक पुस्तक 'राजस्थान-स्वतंत्रता के पहले और बाद' प्रकाशित कर भेंट की जा रही है। मुझे विश्वास है कि यह पुस्तक श्री सुखाड़िया जी के निमित्त जिन्होंने अपना सर्वस्व जीवन राजस्थान की उन्नति तथा खुशहाली के लिये बिताया है जिसके फलस्वरूप वह इस प्रदेश के भाग्य निर्माता कहे जाते हैं एक अनुरूप उपहार सिद्ध होगी। इस शुभ अवसर पर मैं राजस्थान निवासियों सहित श्री सुखाड़िया जी की दीर्घ आयु के लिये मंगल कामना करता हूं जिससे वह सतत् देश सेवा में रत रहें।

● गुलजारीलाल नन्दा

रेल मंत्री
भारत

नई दिल्ली
२० जून, १९६६

*मुझे यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि हिन्द साहित्य लिमिटेड के तत्वावधान में मुख्य मंत्री माननीय श्री मोहनलाल सुखाड़िया के ५०वें जन्म दिवस के अवसर पर 'राजस्थान स्वतंत्रता के पहले और बाद" ग्रंथ प्रकाशित किया जा रहा है। भारत एक विशाल देश है और उसके इतिहास की जानकारी राजस्थान के इतिहास को समझ कर की जा सकती है। कई वर्षों से जो राजस्थान एक पिछड़ा हुआ राज्य माना जाता था, स्वतंत्रता के पश्चात् श्री सुखाड़िया तथा अन्य मंत्रीगणों के मार्गदर्शन में उसने बड़ी तेजी से विकास किया। विकास का श्रेय तो सबको है ही मगर साथ ही राजस्थान के शासन को स्थायित्व देने का श्रेय मुख्यतः श्री सुखाड़िया जी को है। उनकी ५०वीं वर्षगांठ पर यह ग्रंथ अभिनन्दन के रूप में उन्हें अर्पण किया जा रहा है यह उचित है। इस प्रयास का मैं स्वागत करता हूं।*

● एस० के० पाटिल

नई दिल्ली
२१ जुलाई, १९६६

राजस्थान के प्रमुख जननायक तथा राज्य के मुख्य मन्त्री श्री मोहनलाल सुखाडिया के जन्मदिवस के अवसर पर राजस्थान के लोग उनके सम्मानार्थ एक अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित करने जा रहे हैं, यह खुशी की बात है।

श्री सुखाडिया से मेरा परिचय कई वर्षों से है। उनकी प्रशासन सम्बन्धी योग्यता, सहजबुद्धि और कार्यकुशलता के बारे में मैंने सुना ही नहीं, बहुत कुछ स्वयं देखा भी है। उनके मानवोचित गुणों और क्षमता का सबसे बड़ा आधार जनसाधारण से उनका गहरा सम्पर्क है। पहले जब वे केवल एक सार्वजनिक कार्यकर्ता थे ठीक उसी प्रकार अब राजस्थान के मुख्य मन्त्री पद पर आने के बाद भी जनसाधारण के वे उतने ही निकट हैं।

श्री सुखाडिया के नेतृत्व में राजस्थान भारत का पहला राज्य था जहां पंचायती राज्य का परीक्षण शुरू किया गया। यह एक साहसपूर्ण कदम था और राजस्थान में इसे जो सफलता मिली है उसका अधिकतर श्रेय श्री सुखाडिया के योग्य नेतृत्व को देना उचित होगा।

एक सीमावर्ती राज्य होने के कारण राजस्थान को गत वर्ष हिन्द-पाकिस्तान संघर्ष में भी काफी क्षति उठानी पडी। वहां के लोगों ने और राज्य की सरकार ने उस सङ्कटकाल में दृढता और अपनी देशभक्ति का अच्छा परिचय दिया, जिससे जनसाधारण, विशेषकर मोर्चे पर लडने वाले सैनिकों का उत्साह बढा। यह कार्य भी श्री सुखाडिया की तत्परता और निजी साहस के कारण ही सम्भव हो सका। इसके लिए वे सभी की ओर से बधाई के पात्र हैं।

श्री सुखाडिया अब अपने ५१वे वर्ष में पदार्पण कर रहे हैं। इस शुभ अवसर पर मैं उनका अभिनन्दन करता हूं और उन्हें अपनी शुभकामनाएं अर्पित करते हुये यह प्रार्थना करता हूं कि वे चिरायु हों और सदा अपने राज्य तथा भारत की सेवा करते रहने में समर्थ हों।

• यशवन्तराव चव्हाण

रक्षा मन्त्री
भारत

नई दिल्ली
२७ मई, १६६६

स्वास्थ्य मंत्री
भारत

राजस्थान का जिस तेजी से विकास होरहा है वह सबको हैरत म डाल देता है। जरूरत जनता क सामन लान की है। आशा है यह ग्रंथ इस काय को कर सकगा। म री शुभकामनाय आपक साथ है।

• सुशीला नैयर

नई दिल्ली
३० जून, १६६६

सूचना व प्रसारण मंत्री
भारत

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आप सब मिलकर 'राजस्थान स्वतन्त्रता के पहले और बाद' नामक परिचय ग्रन्थ प्रकाशित कर रहे हैं। पयास के लिए धन्यवाद और सफलता का कामना करता हू।

आपके इस प्रयास के लिए बहुत बहुत शुभकामनाय।

• राजबहादुर

CALCUTTA
27th May 1966

*The Hind Sahitya Limited is bringing out a souvenir on the occasion of the 50th birthday of our friend Shri Mohanlal Sukhadia Chief Minister of Rajasthan*

*From a purely agrarian and pastoral economy Rajasthan is taking rapid strides towards development of industries-big, medium and small Rajasthan also is the source of some rare industrial raw materials and prospecting for some more mines and minerals With more power and water sources economy of Rajasthan should further improve Here Sri Sukhadia has given the lead and recorded achievement the credit for which goes to his leadership and to his team of devoted workers*

*I join the readers in wishing him all the best in the years to come*

**• Prafulla Chandra Sen**

CHIEF MINISTER
WEST BENGAL

AHMEDABAD
8th June 1966

It is indeed good fortune of Rajasthan to have the services of a young and tenacious leader like Shri Mohanlal Sukhadia at the helm of its affairs Under his able leadership, the State has been fruitfully engaged in securing the promotion of industrial and rural development and in raising the living standards of the people of Rajasthan

On this happy occasion, I extend my hearty felicitations to Shri Sukhadia, and wish him many happy years in the service of the nation

**• Hitendra Desai**

CHIEF MINISTER
GUJRAT

वाशिंगटन
२२ जुलाई, १९६६

*राजस्थान भारत की संस्कृति और इतिहास का मूल केन्द्र है, इसके वीर स्त्री पुरुषों ने अपनी कुरबानियों से भारत का मस्तक ऊंचा उठाया है। यहां के कारीगरों ने भारत के कला कौशल के कोष को अपनी अद्भुत कारीगरी से भर दिया है, वहा का अद्भुत विजय स्तम्भ मानों वहा के इतिहास का जीता जागता नमूना है। विदेशी यात्री जब तक जयपुर का भव्य नगर और वहा का हवामहल न देखलें तब तक वह अपना भारत यात्रा को असफल ही मानते हैं। यहा का इतिहास और वर्णन का ग्रन्थ प्रकाशित करने का विचार शुभ है। मेरी पूर्ण सहानुभूति तुम्हारे इस पवित्र प्रयत्न के साथ है। तुम्हारी सफलता के लिये मैं सहर्ष अपनी सद्भावनाए तुम्हें भेजती हूँ।*

• रामेश्वरी नेहरू

अध्यक्षा
महिला-शिक्षा सदन-हटूंडी
(अजमेर)

नई दिल्ली
२७ जून, १९६६

यह तो अति आवश्यक है कि उन त्यागी और बलिदानी वीरों को जिन्होंने देश पर सर्वस्व निछावर कर दिया हम याद करें और उनके प्रति अपनी श्रद्धाजली अर्पित करें। देश तभी आगे बढ सकेगा जब देशवासी उन वीरों के पदचिन्हों पर चलें और उनके बलिदान से प्रेरणा लें। मैं आशा करती हूं आपके इस आयोजन से उन वीरों को उचित सम्मान मिलेगा जिन्होंने देश के लिये अपने को बलिदान कर दिया।

आपका आयोजन सफल हो इसके लिये मेरी शुभकामनायें आपके साथ हैं।

• ललिता शास्त्री

अध्यक्षा
लाल बहादुर शास्त्री निकेतन

जयपुर
८ जून, १९६६

मुझ यह जानकर प्रसन्नता हुई कि हिन्द साहित्य लिमिटेड अजमेर द्वारा राजस्थान स्वतन्त्रता से पहले और बाद विपय पर एक ग्रन्थ का प्रकाशन किया जा रहा है।

ग्र'थ की प्रस्तावित रूपरेखा काफी विस्तृत है और योजनानुरूप प्रकाशन होने पर यह ग्र थ राजस्थान के अतीत और वतमान का एक समग्र चित्र प्रस्तुत कर सकेगा ऐसी आशा है।

मैं आपके प्रकाशन की सफलता चाहता हू।

• मोहनलाल सुखाडिया

मुख्य मत्री
राजस्थान

जयपुर
१० जून, १९६६

*यह जानकर पसन्नता हुई कि आप ऐसा ग्र थ प्रकाशित करने जारहे है जो समग्र राजस्थान का चित्र प्रस्तु त कर सकेगा। ईश्वर आपके प्रयत्न को सफल करे। मेरी शुभकामनाय आपके साथ हैं।*

• हरिदेव जोशी

जन सम्पर्क मत्री
राजस्थान

जयपुर
१० जून १९६६

*'राजस्थान स्वतत्रता के पहले और बाद' की रूपरेखा देखी। पसन्द आई। पयास सराहनीय है। आशा करता हू ग्र थ उपयोगी सिद्ध होगा। मेरी शुभकामनाय स्वीकार कर।*

• बृजसु दर शर्मा

शिक्षा मत्री
राजस्थान

जयपुर
२२ जुलाई, १९६६

श्री सुखाड़ियाजी के जन्म दिवस पर "राजस्थान स्वतन्त्रता के पहले और बाद" इस नाम का ग्रंथ निकालने की जो योजना आप लोगों ने बनाई है वह सराहनीय है। ऐसे निमित्त से प्राचीन इतिहास के कुछ संस्मरण आगे आ जाते हैं। राजस्थान मेरी जन्मभूमि है, लेकिन मेरी कर्मभूमि सदा वर्धा ही रही है। संयोग से १९३९ में जयपुर सत्याग्रह के समय जब प्रजा मंडल का सारा संचालक मंडल जेल में चला गया था पू० जमनालालजी ने बुलाया और पीछे से सत्याग्रह संचालन की जिम्मेवारी मुझ सौंपी गई थी और पू० दादासाहब मेरा मार्गदर्शन करते थे। प्रत्यक्ष जयपुर सत्याग्रह का काम श्री देशपाण्डेजी देखते थे। उन दिनों में कुछ आचार संहिता भी उन्होंने बनाई थी जिसका अद्भुत पालन पूरे अनुशासन के साथ होता था।

आप लोगों ने इस प्रकाशन के लिये श्री सुखाड़ियाजी का जन्म दिन चुना, यह भी बहुत कुशल चुनाव मानना चाहिये। राजस्थान में बहुत बड़ी व्यवस्था शक्ति पड़ी है। वीरता के लिये राजस्थान प्रसिद्ध है। राजस्थान का जौहर त्याग का नमूना है। राजस्थान में आर्थिक संकट सदा हो रहा, इस कारण अनेक पुरुषार्थी लोग राजस्थान से निकले जो दुनिया के कोने-कोने में आज भी प्रकाशमान हैं। राजस्थान का जैसा सद्भाग्य रहा है, वैसा ही एक दुर्भाग्य भी रहा है। वयक्तिक अहम् का इतना अधिक प्रभाव रहा है कि उसके आगे समाज का भी बलिदान होता देखा गया है। जो दोष यहां के राजघरानों में था उसका वारसा हमारे सत्तारूढ़ देश सेवकों को भी मिला। कई लोग उसके बलिदान हुए। राजस्थान में अंधेरा दीखने लगा और सत्ता का युद्ध छिड़ गया। कई सत्ताधारी आये और गये, गद्दी को बाढ़ में बड़े-बड़े वृक्ष उखड़ गये लेकिन जो बेंत जैसे नम्र होकर रहे, व टिक गये।

आज इस अवसर पर हमारे आज के मुख्य मन्त्री श्री सुखाड़ियाजी को अनेक धन्यवाद देना चाहता हूं कि जिनकी सूझ-बूझ और नम्रता ने राजस्थान को गृहयुद्ध से बचा लिया।

उनके इस जन्मदिवस पर मेरी हार्दिक बधाइयां स्वीकार हों। भगवान उन्हें चिरायु करे उनकी कमियों को दूर करके उनका जीवन उज्ज्वल करे।

• राधाकृष्ण बजाज

उपाध्यक्ष
सट्रल गो-सवधन कौंसिल

# राजस्थान

## स्वतन्त्रता के पहले और बाद

| | |
|---|---|
| गौरवमय अतीत | ११२ पृष्ठ |
| उज्जवल भविष्य की ओर | १६० पृष्ठ |
| सास्कृतिक धरोहर | ८८ पृष्ठ |
| पुण्य स्मरण | ९६ पृष्ठ |
| ११६ बहुमूल्य चित्र (आर्ट पेपर पर) | ५२ पृष्ठ |
| कुल | ५०८ पृष्ठ |

# उद्देश्य और भावी योजनायें

आज हम एक बड़े अजीबोगरीब माहौल में से गुजर रहे हैं। चारों तरफ असन्तोष और घुटन है। आये दिन गरजिम्मेदाराना तरीके से जो आन्दोलन हो रहे हैं, उनसे लगता है कि दिशाभ्रम भी होगया है। ऐसे क्षुब्ध वातावरण में यह आवश्यक है कि हम अपनी और अपने देश की प्रगति का मूल्यांकन करें और सही दिशा में आगे बढ़ें। इस ग्रन्थ के द्वितीय खण्ड 'उज्जवल भविष्य की ओर" में राजस्थान की १८ वर्ष की बहुमुखी प्रगति का चित्र सामने आता है। इतिहास का लाभ तभी है जब हम अपनी गलतियों को समझें और वे बार बार दोहराई न जायें। राजस्थान का अतीत, अपरिमित शौर्य त्याग व बलिदान की अटूट कहानी होने के साथ ही व्यक्तिगत अहम् की पूर्ति के लिये राष्ट्र के हित की ओर से आंख मीच लेने की दुखद कहानी भी है। "पुण्य स्मरण" में राजस्थान की उन महान विभूतियों की झलक दिखाई देती है जिनके बलिदान और कष्ट सहन की नींव पर स्वतन्त्रता का भवन खड़ा है। इस ग्रन्थ को हमारे विद्यार्थी भी पढ़ेंगे—खास तौर पर उनके काम की चीज यह है भी, उनके मन को राजस्थान की बलिदानी आत्माओं का प्रश्न—"क्या इसीलिये हमने इतने कष्ट सहे थे कि तुम, हमारे वारिस, देश के गौरव के साथ खिलवाड़ करो?" छू सके, और कोई भी कदम बढ़ाते समय वे सोचें कि 'क्या यह कदम राजस्थान के गौरव के अनुकूल है'? तो हमारा इस ग्रन्थ को प्रकाशित करना सफल हो जायगा।

सिर्फ एक दूसरे के दोष ढूंढने से काम नहीं बनेगा। हमें पण्डित जवाहरलाल नेहरू के इन शब्दों को '*देश आगे बढ़ता नहीं जब तक की सारे देश वाले उसमें हाथ न लगायें*' हृदयगम करना होगा तभी अपने राजस्थान को, उसी के साथ हिन्दुस्तान को आगे बढ़ा कर अपने महान देशभक्त पूर्वजों को सच्ची श्रद्धान्जलि अर्पित कर सकेंगे। अवश्य ही हम भी इस ग्रन्थ में जितना चाहते थे उतना विवरण नहीं दे पाये हैं। इस कमी को पूरा करने के लिये ही हमारी भावी योजना "राजस्थान ग्रन्थ माला" है। इसमें राजस्थान के स्वतन्त्रता संग्राम में अपना सर्वस्व होमने वाले व्यक्तियों के साथ ही राजस्थान के विकास में लगे व्यक्तियों और संस्थाओं पर भी कई भागों में छोटी छोटी पुस्तिकायें प्रकाशित करने का हमारा विचार है। तभी उन मूक सेवाभावियों के साथ न्याय हो पायगा। 'भारत को राजस्थान की देन" नाम से भी हम एक प्रकाशन करने जारहे हैं जो हर क्षेत्र में राजस्थान ने किस प्रकार भारत मां का भण्डार भरा है इस पर प्रकाश डालेगा।

—प्रकाशक

# गौरवमय अतीत

•

# राजस्थान मे आदि मानव सभ्यता

प्राय जन साधारण की यह धारणा है कि राजस्थान का क्रमबद्ध इतिहास राजपूत काल से प्रारम्भ होता है और इस प्रदेश के विषय मे हमारी जानकारी पूव राजपूत काल की बहुत ही थोडी है। आधुनिकतम अन्वेक्षरणा के आधार पर हम न केवल राजस्थान को भारत के हिंदू एव पूव ऐतिहासिक काल के कतिपय विशिष्ट आधारभूत सामग्री का ही दाता कह सकते हैं, वरन् कई ऐसे प्रमाणो के आधार पर हम यहा के आदि मानव के काय कलापो का वरान करते हैं और ससार के आदि मानव का क्रीडा क्षेत्र भी इसे वर्षो तक सिद्ध कर सकते हैं।

इतिहास के आरम्भ से पूववर्ती काल मे आदि मानव केवल खाद्य सामग्री के सग्रह करने की अवस्था मे ही था तथा राजस्थान मे यह स्थिति सुदीघ काल पयन्त रही, ऐसा आभास दक्षिण पूर्वी एव पूर्वी राजस्थान म बनास तथा अन्य नदियो के तटो पर पुरातत्वान्वेषित अवशेषो से ज्ञात होता है। लगभग एक लाख वप पूव आदि मानव बनास, गम्भीरी, वडेच, वागा आदि नदियो के किनारे बसता था। इन स्थाना से अन्वेक्षण द्वारा पृथ्वी पर जमी हुई परतो मे प्रस्तर के हथियार लघु कुठार, रन्दे एव अन्य औजार प्राप्त हुए हैं, किन्तु कई स्थलो पर प्राकृतिक आघातवश यह अश्मोपकरण २-३ फर्लांग की दूरी तक गम्भीरी नदी के पाट मे बिखरे हुए मिलते हैं।

इन पर्यावरण मे निवासित राजस्थान का आदि मानव यायावर (अस्थिर वासी) अवस्था मे था एव उनका निर्वाह फल मूल, और अन्य पशु जसे मृग, शूकर अजा भेड, ढोर आदि के माम द्वारा होता था। यह पशु राजस्थान के भूभाग म अब भी पर्याप्त मात्रा मे पाये जाते हैं तथा प्रागेतिहासिक काल मे भी चित्तौड के निकटवर्ती गिरितटीय क्षेत्र मे ऐसे पशु निश्चय ही विचरण करते रहे होंगे। राजस्थान के पश्चिमी भूखण्ड मे भी मानव की प्रागेतिहासिक जीवन पद चिन्हावलि प्राप्त हुई है। लूनी नदी के तट से प्राप्त पाषाणास्त्रो का अध्ययन यह सप्रमाण प्रकाश मे लाता है कि उस अति प्राचीनकाल म भी पश्चिमी राजस्थान ने अपेक्षाकृत अत्यधिक श्रेष्ठ दिन देखे थे। *यद्यपि यह पश्चिमी भूभाग प्राय एक विस्तृत रजयुत* पथ प्रदेश कई मीलो तक चला जाता है, तदपि लूनी सरिता का शुष्क उदर प्रदेश अपने गम मे बालू के तले खाद जमी हुई मिट्टी और वज्रीकृत कक्र चूरा धारण किये हुए है। यह मृच्छिलिका पर आश्रित हैं।

यह पत्थर कई परता म होने के कारण सहज मे टूट जाता है। इतिहास के पूव कालीन युग मे लूनी नदी इस भूमाग को जल प्रदान करती रही होगी जिस कारण वहा हरे भरे जगल बन जाने म सहायता मिली। खाद्य सामग्री मात्र सग्रह की अवस्था मे आदि मानव न इन वन विथिया म भ्रमण करत हुए चकमक प्रस्तर के अश्मोपकरणा द्वारा जीवन निर्वाह किया होगा। पुरातन मानव के प्रयुक्त अश्मोपकरण दक्षिण पूर्वीय भाग की अपेक्षा राजस्थान के पश्चिमी भाग म छोटे आकार के पाये जाते है। ऐसे औजार प्राय धारदार एव नुकीले होते थे। इस अपरपाषाण युग मे मानव ने प्रारम्भिक पाषाण युग स भिन्न प्रकार के उपकरण प्रयोग किये। इससे अनुमान होता है कि पश्चिमी प्रान्त मे मानव की आवश्यकतायें आरम्भिक पाषाण युग से भिन्न प्रकार की थी। इस प्रान्त मे पाषाणास्त्र बहुधा उन पशुओ को काटने उनका चमडा छीलने एव उसमे छेद करने के काम आते थे जिनको मानव शिकार करके लाता था। यह पाषाणास्त्र जीवन सुरक्षा हेतु शस्त्र का काम भी देते थे, भाले और बाणाग्रा (शल्यो) के दोनो ओर की तेज धार को देख कर यह मत पुष्ट होता है। इस प्रकार के अश्मोपकरण राजस्थान के पूर्वी तथा पश्चिमी उभय प्रान्तो म उपलब्ध हुए है।

उदयपुर रेलवे स्टेशन के निकट अहाड तथा तहसील कपासन के दक्षिण पूव मे लगभग २५ मील की दूरी पर स्थित गिलुड नामक स्थान पर पुरातत्व उत्खनन द्वारा प्राप्त सामग्री म इस प्रकार के कुछ पाषाणास्त्रों का वैज्ञानिक अध्ययन राजस्थान मे मध्यपाषाण युग तथा अणु पाषाण युग की उस सभ्यता पर प्रकाश डालता है जब प्राची (प्राक्तन) मानव अस्थिर-वासी अवस्था म रहता था तथा स्वय अन्न उत्पन्न नही करता था और आखेट किये हुए पशुओ का ही आहार लेता था एव पूर्वी और पश्चिमी राजस्थान की पहाडियों के पार्श्वप्रदेश म निवास करता था। उस आदि काल म (लगभग एक लाख वष पूव) मानव किसी भी स्थान पर स्थिर होकर निवास नही करता था। मानव विज्ञान शास्त्र के आधार पर यह कह सकते हैं कि उस समय यहा के लोग भारत वष के अन्य भागो के निवासियो की भांति असभ्य थे तथा न तो धरलू उपयोग की वस्तुए रखते थे न वे पढना लिखना ही जानते थे। देश के बाहर या भीतर किसी भी भाग म उस युग से सम्बन्धित कोई विशिष्ट चिन्हित मुद्रा अथवा मृण्माण्डावशेष प्राप्त नही हुए है जो प्राचीन मानव जीवन की सभ्यता पर प्रकाश डाल सकें।

### प्राग्ऐतिहासिक काल —

इतिहास लेखन के श्रीगणेश से पूववर्ती काल मे पश्चिमी राजस्थान म विकास की चरम सीमा प्रस्तावित हुई है। यद्यपि सरस्वती और दृशद्वति नदिया पूर्वी राजस्थान और दक्षिण पूर्वीय पजाब मे बहती थीं तथापि पश्चिमी राजस्थान सुदीर्घ प्राचीन काल म अनुपजाऊ था। किन्तु दृशद्वति और सरस्वती की घाटिया की उपजाऊ भूमि क्रमश सिन्धु घाटी की सभ्यता वाले भूरे रग के मृतिका पात्रो का प्रयोग करने वाले मृतक सस्कार की सभ्यता वाले और रगमहल सभ्यता के लोगो को आकर्षित करन म सफल हुई थी।

राजस्थान म काली बगा नामक स्थान पर उत्खनन द्वारा यह निस्सन्देह सिद्ध हुआ है कि अनुमानत ५००० वष पूव एक अत्यन्त सभ्य मानव जाति यहा विकसित हुई थी। काली बगा के उत्खनन से प्राप्त

अन्य वस्तुओं में नगरनिर्माण योजना हेतु सुनिश्चित मार्ग का अनुसरण किया जाना प्रकाश में आया है। उस समय में प्राय कच्ची ईटों के घर बनाये जाते थे तथा प्रत्येक घर में चार या पांच बड़े कमरे होते थे। काम में आये हुए गदले पानी के प्रबन्ध हेतु पक्की ईटों की नालियां एवं शोषण पात्र का उपयोग होता था। उस युग की सभ्यता के प्राप्त अवशेषों में सादे तथा रंगीन मृत्तिका पात्रखण्ड, शस्त्रों के मानचित्रित चपटे फल, ताम्बे के हथियार, आभूषण, चकड़ी मिट्टी की आकृतियें, पुरुषाकृति खिलौने तथा पत्थर के बाट के अतिरिक्त खड़िया मिट्टी की बनी चिन्हित मुद्रायें भी सम्मिलित हैं जिन पर आदश हरप्पन लिपि में उपाख्यान (लेख) भी अंकित हैं, जो दुर्भाग्यवश आज तक अपठित हैं। कभी कभी कोई पशु आकृति, विविध नाट्य दृश्य चिन्हित भोजन पात्र, सकड़े पैंदे के जल पीने के प्याले, चिकनी लाल पृष्ठ भूमि पर काले रंग से चित्रित आकृतियुत मृण्भाण्डावशेष, चपटे गोल छेदवाले गुटके, चकड़ी मिट्टी के बने हुए खिलौने की गाडियों के नमूने चपटी तथा गोल दोहरा उभरी हुई चकड़ी मिट्टी की चपनियें तथा चमकीले पत्थर के लम्बे फल जो वास्तव में हड़प्पा की सभ्यता की प्रतीक हैं, इन प्राचीन स्थानों पर विद्यमान है। ये निश्चित रूप से उस युग के सदृश सभ्यता का प्रचलन सिद्ध करने को पर्याप्त है। दृशद्वति की घाटी में हड़प्पा युगी सभ्यता की अचूक सभ्यता (लिए हुए) धारण किए कुछ प्राचीन स्थल खोजे गये हैं जिनमें कहीं कहीं तो विभिन्न प्रकार के भाण्ड निर्माण की शैली प्रस्तुत होती है चूंकि यह स्थल हड़प्पा कालीन सभ्यता का पोर्वात्य प्रकार दरसाते हैं अनुमान होता है कि यह कला यहाँ हड़प्पा की वास्तविक सभ्यता के उत्तर युग में पनपी थी।

इस प्रकार इतिहास के प्रारम्भिक काल में पश्चिमी राजस्थान के लोग भाण्ड निर्माण की भिन्न शैली अपनाते थे। उस काल के लोगों का सौन्दर्य प्रेमी होना इन शैलियों से प्रतिबिम्बित होता है। दक्षिण पूर्वीय राजस्थान में भी 'बनास नदी' के किनारे 'अहाड़' और 'गिलूण्ड' स्थानों पर इतिहास के प्रारम्भिक कालीन ऐसे भाण्डावशेषों का आविष्कार हुआ है जिनका ऊपरी भाग काला तथा पैंदा लाल है एवं काले भाग पर सफेद चित्र बाहर भीतर अथवा दोनों ओर पाये जाते हैं।

इस शैली के चित्रित काल तथा लाल अथवा रंग भेद से बने भूरे अथवा लाल काले पात्र डाक्टर एच० डी० सांकालिया के मतानुसार कदाचित मेज पर रखने के डीलक्स मृदभाण्ड कहे जा सकते हैं। ऐसे मृदभाण्डों में छोटे प्याले कम गहरी थालियाँ तथा छोटी, ऊंची, सकड़ी गर्दन के छोटे गोल पात्र (लोटे) सम्मिलित हैं। यह पात्र सम्भवत खाने पीने के काम में आते थे क्योंकि उनके निर्माण में अन्तिम कृति पर सावधानी रखी गई दीख पड़ती है और बाहर तथा भीतर से चिकना पालिश किया हुआ है जिस पर बिन्दु या टेढ़ी रेखाएं चित्रित हैं। प्रतिदिन प्रयोग में आने वाले पात्र आहड़ तथा गिलूण्ड से भी प्राप्त हुए हैं। इन पात्रों में बड़े संचय पात्र एवं रसोईघर के छोटे पात्र भी सम्मिलित हैं। रोटी सेकने के तवे भी अन्य स्थलों पर उत्खनन से प्राप्त हुए हैं। पीसने के चौरस सिल बट्टे आदि बनास नदी के तट पर अहाड़ और गिलूण्ड में इतिहास के आरम्भ कालीन लोगों के दैनिक प्रयोग की वस्तुओं का प्राय पूर्ण चित्र प्रस्तुत करते हैं।

यद्यपि कोई खाद्यान्न प्राप्त नहीं हुए हैं तथापि इन प्रान्तों के लोगों के वर्तमान मुख्य आहार से अनुमान होता है कि मक्का बाजरा, यव (जौ), चना आदि प्रादेशिक खाद्यान्न बोये (उगाये) और खाये जाते थे।

भाजन पकाने के पात्र, सेंकने के तव, कढाई बडे तथा छोटे चपटे नतोन्नत सतह के पाषाण सिल, गोल बट्टे (लोढिया) और मूसल आदि यह बताते हैं कि प्रागैतिहासिक काल में मानव ने जीवन वृत्त का आखेटक एवं खाद्य संग्रह की भांति समाप्त किया और अपना आहार स्वयं उत्पादन करना प्रारम्भ किया था। आहाड (उदयपुर) में उत्खनन् द्वारा पात्र, कढाई और सामग्री भरने के दैनिक उपयोग के घडे आदि के साथ ही बिना हेन्डल के जल पीने के पात्र, छोटे कटोरे तथा बैठकीदार थालियाँ भी प्राप्त हुई हैं। सिन्धु घाटी की सभ्यता के प्रतीक किसी भी स्थल पर नहीं होने वाले ऐसे बिना दस्ते के छोटे जलपात्र प्रकाश में आना (आविष्कृत होना) ईसा के लगभग १५ शती पूर्व राजस्थान का सम्भवतः ईरान से सम्पर्क रहना प्रस्तावित करते हैं, क्योंकि डा० सकालिया के मतानुसार यह पात्र टेपेसियाल्क और हिसार तथा शाहटेपे में पूर्व तथा उत्तर कालीन ईरानी और बिलोची सभ्यता पूर्वी और उत्तरी राजस्थान में प्रमाणित करते हैं। जोधपुर संग्रहालय में प्रदर्शित नागोर जिले की परबतसर तहसील के अन्तर्गत खुरडी ग्राम से प्राप्त एक नालीदार टोटी का कटोरा तो ईरान में टेपेगियाँ से प्राप्त कटोरे से पूर्ण मेल खाने वाले, नवादा टोली में मिले मिट्टी के कटोरे से निकटतम सामंजस्य (सभ्यता) प्रस्तुत करता है। इस प्रकार लगभग ईसा पूर्व २० से १० शताब्दी काल में राजस्थान का शिष्टता के क्षेत्र में ईरान से सम्पर्क हुआ। इतिहास के बाल्य काल से पूर्व युग में तद्देशीय मानव समाज द्वारा प्रयुक्त अस्त्र शस्त्रों की कल्पना हमें का उदयपुर रेलवे स्टेशन के निकट अहाड स्थल पर हुए उत्खनन् से प्राप्त होती है। रेल मार्ग द्वारा चित्तोड लाइन पर उदयपुर से लगभग १० मील दूर देवारी स्टेशन के निकट तथा राजस्थान में अन्य कई स्थलों पर वसुन्धरा के गर्भ में प्रचुर ताम्र अन्तर्निहित है अतः यह अनुमान सम्भव होता है कि अहाड के लोग पत्थर काटने तथा पशुओं को मारने हेतु ताम्र के शस्त्रास्त्र प्रयोग में लाते एवं वस्त्रादि के स्थान पर खाल का उपयोग करते थे। सम्भवतः घरेलू तथा कृषि कार्यों के लिये ताम्र के बने चाकू के फल एवं हसिया का प्रयोग किया जाता होगा। सन् १९६२ के प्रारम्भ में डा० सकालिया द्वारा अहाड में उत्खनन् के परिणाम स्वरूप ट्रेन्च 'ए' में दश सत्यक गृह *की फर्श के नीचे एक अलंकृत भाण्ड के भीतर सामान्य चपटे उन्नतोदर धार के ताम्र कुठार और बिना खडे* के दस्ते प्राप्त हुए थे। उन दिनों में लोग दरिद्र थे। यह उस काल में उनकी स्त्रियों द्वारा प्रयुक्त आभूषणों के नमूने से जाना जाता है। पहाड तथा अन्य स्थलों पर उत्खनन् द्वारा इस प्रकार के कुछ आभूषण प्रकाश में आये हैं। यह जेवर अत्युत्कृष्ट अलंकृत नकाशीदार पकी हुई मिट्टी के, सूक्ष्म रेखांकित और इन्द्रगोप मणियों से बने हैं। पक्की मिट्टी के वर्तुलाकार कर्ण फूल आदि, बच्चों के खिलौने के अन्तर्गत मढ़ें, हाथी, श्वानादि पशु तथा कुछ चपटे नाक की मनुष्य की आकृतियां हमको इतिहास के पूर्व काल में पशु धन समृद्धि का संकेत देते हैं। दक्षिण पूर्वी राजस्थान में उस युग के मानव-आवास गृह की शैली उत्खनन् द्वारा प्रकाश में आई है। वनानिक उत्खनन् के परिणाम स्वरूप उद्घटित खण्डहर, भवन निर्माण कला का स्पष्ट सुबोध चित्र प्रस्तुत करते हैं। उन दिनों नींव में पत्थर की दीवार उठाकर मकान बनाते थे। यह खडे पत्थर के टुकडों से बनी दीवार नींव एवं अंशतः ऐसे भवन, जिनका ऊपरी भाग पकी हुई तथा कच्ची मिट्टी की ईटों से बने हैं, खडे करने के काम आई हैं। दीवारों के मुख्य भाग श्रेष्ठतर घडे हुए चौरस पत्थर से निर्मित हैं, जो अनुचित रीत्या आडे, टेढे जमाये गये हैं। पत्थरों का दूसरा पार्श्व बेडौल है।

सब स छाट आकार के घर १०'×१०' फीट या कुछ अधिक तथा बडे से बडे घर ४५'×१५' अथवा ३०'×१५' फीट नाप के बने हैं।

उन दिनो मिट्टी के झोपडे बनान म लोग नीव एव दिवारा का रमणीय और दृढ करने हेतु चमकीले बिल्लोर पत्थर के दाने तथा चपटे टुकडे मिट्टी मे मिश्रित करते थे। चमकीले बिल्लार पत्थर के दाना का उपयोग भवन निर्माण हेतु इतिहास प्रारम्भ होने के पूव काल से चला आ रहा है तथा आज भी दृष्टिगोचर होता है।

नदी की इकट्ठी की हुई उम्दा काली मिट्टी भी घरों का फश बनान के काम आती थी। साथ ही मिट्टी के पात्र बनाने म लोग नदी की इकट्ठी की हुई उम्दा बालू तथा अभरख (मोडन) का प्रयोग करते थे, जो उस स्थान पर बहुतायत से उपलब्ध है।

बडी भट्टियों के साथ ही घरों म वस्तु सग्रह करने के पात्र भी होते थे जो अब उत्खनन् वशात प्रकाश म आये हैं। खाई (ट्रे च) 'डी' स उदघटित ऐसी एक भट्टी के साथ ही उस पर रख कर पकाने के पात्र तो एसे विशालाकृति हैं जा दशक को एक वडा परिवार उस स्थल पर कभी बसन का स्पष्ट आभास देते हैं। यह निष्पक्षतया सम्भव हैं कि सयुक्त परिवार प्रथा का अस्तित्व इतिहास के पूवकाल मे वहा रहा हो और उस बहु सख्यक परिवार का भोजन भी एक ही स्थान पर बनता हो। उस युग म जन जीवन की झाकी से सम्बधित अन्य कुछ फुटकर प्रमाण जो 'अहाड' म उत्खनन् के परिणामत उदघटित हुए हैं उनमे उल्लेखनीय हैं। पकी हुई मिट्टी के बने घरो के पक्ति बद्ध निर्मित शायणगत दशको को उन दिनों की शव विसजन सस्कार पद्धति का परिज्ञान कराते हैं। अहाड म एक टीले के ऊपरी भाग मे ही उत्खनन् से प्राप्त ऐस शायणगत तथा मिट्टी के घरो द्वारा यह प्रकट हाता है कि इतिहास के आदि काल मे मुर्दे को आभूषण सहित गाडते तथा शव का मस्तक उत्तर और पर दक्षिण की तरफ रखते थे। ऐतिहासिक काल से पूव की सभ्यता के य धु धले किन्तु निश्चित चिन्ह जा राजस्थान के उत्तर पूर्वी और दक्षिण पूर्वी भागा मे उपलब्ध हैं, उस युग-वासी मानव के जीवन का सुन्दर उत्कृष्ट चित्र प्रस्तुत करत हैं।●

हिम्मत किम्मत होय, बिन हिम्मत किम्मत नहीं !
कर न आदर कोय, रद कागद ज्यू राजिया !!
नर जिण गालिब नहीं, दुसमण रा सौ दाव !
बे-पढ़िया हो, बाकला, ब पढ़िया-रा राव !!

उर्मिला शर्मा

# राजस्थान वैदिक युग से स्वर्ण युग तक

जो राजस्थान आज निजल मरूभूमि के उत्तप्त अचल मे प्यास मे सिमक रहा है वह वस्तुत जनाधिपति समुद्र की सन्तान है यह जानकर किसे आश्चय नही होगा ? समुद्र ने अपनी सन्तान को जन्म देकर अपने पुरूयोचित स्वभावानुकूल पलायन करते हुए सुदूर अपर गह्वरा म सन्याम ग्रहण कर लिया किन्तु वसुधरा को तो अपन अतल, गहन, स्नेह सलिल स इसे पाल पोस कर बडा करना ही था।

सहस्रा वर्षों तक समुद्र न लहरा की थपकियो से शिशु राजस्थान' को गभ म सुलाये रखा। किन्तु कब समुद्र ने अपना यह शिशु वसुधरा को अर्पित किया इसके लिये ठोस प्रमाणा के अभाव म अनुमान ही का सहारा अधिक लिया जा सकता है।

ऋग्वेद म समुद्र का अनक स्थला पर स्पष्ट उल्लख हुआ है —

अग्नि विश्वा अभिपृक्ष सचत । समुद्र न स्रवत सप्त यह्वी ।। (ऋग्वेद १।७१।७)

उस समय तक उत्तर पश्चिम म पजाब तक ही बसने वाले आर्यों द्वारा समुद्र का उल्लख यह तथ्योद्घाटन करता है कि आर्यों के प्रदेश म अरबसागर अथवा पूर्वी समुद्र स भिन्न कोई और समुद्र था जिसम गिरने वाली सात नदिया (सप्त यह्वी) सिंधु वितस्ता (झलम) असिक्नी (चिनाब) परूष्णी (इरावती या रावी) विपाश (व्यास) शुतुद्री (सतलज) एव सरस्वती हो सकती है।

एच जी वेल्स न प्राचीन भारत के मानचित्र म आज स २५००० वष पूव राजस्थान के स्थान पर एक विस्तृत समुद्र की स्थिति का बताया है। इसी आधार पर श्री अविनाशचन्द्र दास न लिखा है कि आधुनिक राजस्थान एक विशाल समुद्र था। सरस्वती नदी यही गिरती थी। गगा व यमुना छोटी नदिया थी। भौगोलिक दृष्टि से भारत का मानचित्र परिवर्तित था। ऋग्वेद मे एक स्थान पर अपर समुद्र का उल्लेख हुआ है जिसके बार म बलदव उपाध्याय ( वदिक साहित्य एव सस्कृति प ४८१ ) का विचार है कि अपर समुद्र वतमान अरब सागर का ही कोई भाग था जो सिंधु प्रदेश के ऊपर तक प्रवाहित होता था। पजाब के दक्षिण म जो विशाल बालुका राशि आज राजपूताना के रेगिस्तान के नाम से विख्यात है, वहा ऋग्वेदीय युग मे एक विपुल काय समुद्र की स्थिति का पता चलता है जिसम दृशद्वती के साथ मिलकर, विपाश तथा शुतुद्री आदि नदिया गिरती थी, मारवाड के पश्चिमी प्रदेश म अद्ध पाषाण

रूप मे परिवर्तित शख सीप आदि के मिलने के कारण पूर्व काल मे वहा समुद्र की स्थिति सिद्ध होती है। (मारवाड का इतिहास प० विश्वेश्वर नाथ रेउ पृ ३) राजस्थान की सामर झील सम्भवत उसी पूर्ववर्ती समुद्र का ही अवशिष्ट अश है।

वाल्मीकि रामायण के अनुसार भी इसी तथ्य की पुष्टि होती है कि वैदिक युग के प्रारम्भ में एव उसस पूर्व राजस्थान का भू-भाग समुद्र सलिल से परिच्छिन्न था। रामचन्द्रजी ने किस प्रकार इस जल को सुखाकर मरुभूमि को जन्म दिया? इसका अत्यन्त रोचक वर्णन रामायण मे उपलब्ध होता है। (वाल्मीकि रामायण, युद्ध काण्ड सर्ग २२) रामचन्द्रजी जब समुद्र सन्तरण करने की इच्छा से किनारे पर खडे होकर समुद्र की अभ्यर्थना करने लगे तो उसने अनसुनी की। इस उपेक्षा को राम सहन नहीं कर सके और उन्होंने अपना आग्नेयास्त्र चला कर समुद्र सोखने का विचार किया। भयभीत हो करबद्ध समुद्र राम के समक्ष उपस्थित हुआ और निवेदन करने लगा कि उत्तर मे द्रुमकुल्य नामक मेरा ही भाग है जिसके किनारे दस्यु एव आभीर लोग पापाचरण करते हुए मेरा जल पान करते हैं। हे राम! आप वहा अपना आग्नेयास्त्र छोडिए—

उत्तरेणावकाशास्ति कश्चित पुण्यतरोमम
द्रुमकुल्य इतिख्यातो लोके ख्याता यथा भवान् ॥
उग्र दर्शन कर्माणो बहवस्तत्र दस्यव।
आभीर प्रमुखा पापा पिबन्ति सलिल मम ॥

राम ने उसकी प्रार्थना सुनली और आग्नेयास्त्र को उसी दिशा मे चलाया। द्रुमकुल्य का जल सूख कर मरुभूमि का आविर्भाव हुआ।

तेन तन्मरुकान्तार पृथिव्या किल विश्रुतम
निपातित शरा यत्र वज्राशनि समप्रभ ॥

जिस स्थान पर वह तीर गिरा था वहा पर गह्वर बन गया और उससे पानी निकलने लगा। कुछ लोग मारवाड के बीलाडा नामक गाव की बाणगगा के कुड को उक्त बाण के गिरने के स्थान का अनुमान करते हैं। उपर्युक्त कथा अनेक अज्ञात तथ्यों की उद्भावना करती है। (१) राजस्थान के भू भाग पर के समुद्र का नाम द्रुमकुल्य था। (२) उक्त स्थान पर दस्यु, आभीर आदि अनार्य जातिया बसती थी। (३) प्रस्तुत घटना के पश्चात आर्यों के बसने के लिए मार्ग निष्कटक हो गया।

सभी जानते है कि चन्द्रमा तथा समुद्र का घनिष्ट सबध है। सभव है कि चन्द्रमा मे किसी परिवर्तन के कारण समुद्र भी अपने स्थान से पीछे खिसक गया हो जिसका प्रमाण शतपथ ब्राह्मण (शतपथ ब्रा० १।६।३।११) में मिलता है। शतपथ मे एक स्थान पर त्वष्टा और इन्द्र के सोम-पान सम्बन्धी सघर्ष के प्रसग मे सोम-चन्द्रमा, शतपथ ब्रा० ३।६।४।२) ने (क्यो कि उस मे वर्तमान होने का-खिसकने का गुण था) बाण की गति पर्यन्त तिर्यक देह वृद्धि द्वारा अवर एव पूर्व समुद्र को पीछे की ओर ढकेल दिया—

तस्माद् ह स्मेषुमात्रमेव तियङ्-वधते, इषु मात्र प्राङ । सोऽ वैवावर समुद्र दधौ, अव पूर्वम् ।

समवत रामायण की उपयुक्त कथा मे राम का बाण द्वारा समुद्र शोषण सम्बन्धी कथानक इसी साम की इषु के समान तियक वृद्धि विषयक प्रतीत का विकसित रूप हो ।

कारण कुछ भी रहा हो किन्तु जब समुद्र का जल सूख गया तो सरस्वती नदी भी, जिसके किनारे बैठ कर वैदिक ऋषियो ने मनोहर ऋचाओं का सृजन किया था और जो इस राजस्थान रूपी समुद्र मे गिरती थी, धीरे धीरे मरुभूमि में सूखने लगी । ब्राह्मण युग मे इसके सूखने का अनुमान है । ब्राह्मणो में सरस्वती के लुप्त होने का स्थान 'विनशन' कहा गया है । (ताण्डय ब्रा० २५।१०।१६) विनशन मे लुप्त होकर इस नदी ने मरुभूमि में ही एक स्थान पर पुन जन्म लिया जो 'प्लक्ष प्रास्रवण' नाम से प्रसिद्ध है जो विनशन से घोडे की गति से चौआलीस दिनो की दूरी पर स्थित था । (जमिनीय ब्राह्मण ४।१६।१२) विनशन का उल्लेख मनु ने भी किया है । (मनुस्मृति २।२१) सरस्वती नदी जो यमुना और सतलज के बीच मे बहती थी आजकल पटियाला रियासत में 'सुरसुति' के नाम से प्रसिद्ध छोटी नदी है । (वैदिक साहित्य और संस्कृति बलदेव उपाध्याय पृ० ४६५) कुछ विद्वाना का विचार है कि सतलज (शुतुद्री) नदी की एक धारा किसी समय राजस्थान के मारवाड भाग मे भी बहती थी जिसे लोग हाकडा के नाम से पुकारते थे । (मारवाड का इतिहास वही प० ३) इसके किनारा पर गन्नो की खेती होती थी । कुछ समय पश्चात् उधर की भूमि के ऊँचा हो जाने के कारण उस धारा का पानी मुलतान की तरफ मुडकर सिंधु में जा मिला । मारवाड राज्य का एक प्रान्त अब तक हाकडा क नाम से प्रख्यात है । समवत 'वह पानी मुलतान गया' कहावत इसी भौगालिक परिवतन की घटना की याद दिलाती है । "टॉडकृत राजस्थान" ग्रन्थ के प्रारम्भ म दिये प्राचीन राजस्थान के मानचित्र म सीमाओ का निर्देश किया गया है जिसके अनुसार राजस्थान के पूव मे बुदेलखण्ड पश्चिम मे सिंधु नदी की घाटी, उत्तर मे जांगल देश (सतलज से दक्षिण का) नामक मरुस्थल और दक्षिण मे विन्ध्याचल की पहाडियाँ थी । महाभारत काल मे मारवाड का उत्तरी भाग और उसके आगे का बीकानेर का सारा प्रदेश जागल देश कहलाता था और उसकी राजधानी अहिच्छत्रपुर (नागौर ?) थी तथा यह क्षेत्र कौरवो के अधिकार में था ।-(महाभारत, उद्योग पव अध्याय ५४, श्लोक ७)

पश्य राज्य महाराज ! कुरवस्ते सजागला ।

-गुजरात की ओर मारवाड का दक्षिणी भाग समवत मरु एव धन्व के नाम से विख्यात था जो महाभारत के समय से पूव ही बस गया था । ... म वर्णित है कि कस का बदला लेने के लिये जरासंध ने ७ ... पर विफल चढा... पश्चात उक्त नगरी पर कालयवन का आक्रमण हुआ । यह दे... सोचा कि इस अब ... पुन आक्रमण करदे ता यदु लोग निरथक मारे जायेंगे । ... द्वारका पु... ...िया ।

...१५) ... १, अध्याय १०, )

... कि मरु तथा ... प्रदेश थे

महाभारत काल म ही राजस्थान के कुछ भागो मे गणराज्यो का विकास प्रारम्भ हो गया था। जनतन्त्रीय शासन एव विचार धारा राजस्थान की जनता के लिये कोई नवीन या आश्चयकारी घटना नही है अपितु अति प्राचीन काल से ही यहा की जनता ने स्वशासन का उपभोग करना प्रारम्भ कर दिया था। सभापव (महाभारत सभापव अध्याय ३२) मे मालव, शिवि और त्रिगर्तों का निवास राजस्थान (मरु) बताया गया है। इसी अध्याय म दिग्विजय के प्रसग म इन तीनो का नाम दशार्णो व माध्यमिकयो के साथ आया है। माध्यमिकेय लोग नगरी (उदयपुर स्टेट) के निकट माध्यमिका नामक कस्बे के निवासी थे जहाँ प्रचुर मात्रा म माध्यमिकेय सिक्के प्राप्त हुए हैं। इससे यह भी स्पष्ट हो जाता है कि माध्यमिकेय शिबियो के शासन के अन्तगत न होकर अलग जाति थी। इन गणराज्यो के उल्लेख के पश्चात ही सरस्वती नदी व मत्स्य प्रदेश का उल्लेख है। अलवर जिला व जयपुर जिले का कुछ भाग मत्स्य प्रदेश के नाम से प्रख्यात था। सिंध से लेकर विंध्याचल के य सभी गणराज्य उस समय राजस्थान के अन्तगत थे। (हिन्दू पालिटि, काशीप्रसाद जायसवाल पृष्ठ १५४) महाभारत मे उत्सव सकेत गणराज्यो का भी नाम आया है जिनकी स्थिति पुष्कर तथा अजमेर के पास निर्दिष्ट है। वाल्मीकि रामायण के अनुसार विश्वामित्र ने पुष्कर के पवित्र स्थान मे कन्द मूल फल खाकर ब्राह्मणत्व की प्राप्ति के लिए तपस्या की थी। आचाय डा दिवेकर का मत है कि वेदमाता गायत्री की छद रचना ऋषि विश्वामित्र के द्वारा पुष्कर मे ही हुई थी। इस प्रकार वेदो की प्रथम छद रचना का श्रेय राजस्थान के पुष्कर क्षेत्र को ही है।

रामायण एव महाभारत काल के पश्चात् स्मृतियो एव पुराणो का युग आता है जहा से राजस्थान का मत्स्य प्रदेश नामक भाग अधिकाधिक प्रख्यात होने लगा। यह अनुमान है कि इस युग म महाभारत कालीन गणराज्य तिरोहित होने लगे और मौय शासन काल तक मत्स्य प्रदेश को अधिकतर राजाओ के शासन म रहना पडा। परवर्ती उपनिषदो, पुराणो तथा स्मृतियो के अनुसार मत्स्य प्रदेश आय क्षेत्र के अन्तगत था। कौशीतकी उपनिषद के अनुसार आय क्षेत्र के अन्तगत् आने वाले प्रदशो म उशीनर, वश, मत्स्य, कुरु, पाचाल काशी और विदेह मुख्य थे। (कौशीतकी उपनिषद ६.१) मनु ने आय सस्कृति को चार भागो मे बाँटा है। ब्रह्मावत, ब्रह्मर्षिदश मध्यदेश तथा आर्यावत। इनमे से ब्रह्मर्षि देश म कुरुक्षेत्र, मत्स्य, पाचाल व शूरसेन जनपद का नाम आता है। ब्रह्मर्षि विश्वामित्र की उपाधि थी। मत्स्य का ब्रह्मर्षि देश के अन्तगत होना पुष्कर म विश्वामित्र द्वारा की गई तपस्या की घटना को भी प्रामाणिक बनाता है।

बौद्ध ग्रन्थ अगुत्तर निकाय जसे प्राचीनतम पाली ग्रन्थो की १६ जनपदो की सूचि म भी मत्स्य जनपद का उल्लेख है। महाभारत की कथा के अनुसार मत्स्य की राजधानी विराटनगर म पाडवो ने अज्ञातवास का एक वष गुजारा था। विराट नगर का इतिहास महाभारत युग स लेकर मौय युग तथा हषवधन के युग तक प्रामाणिक रूप मे उपलब्ध होता है। यो तो भारत मे विराट नगर नाम के तीन स्थान पाये गय हैं। (१) बिहार प्रान्त मे दीनाजपुर और रगपुर ग्राम (२) धारवाड म हिंगलाज स्थान तथा (३) जयपुर डिवीजन मे बराठ। किन्तु अनेक आधार भूत प्रमाणो की उपलब्धि जयपुर डिवीजन म जयपुर शहर से उत्तर म इकतालीस मील दूर बराठ नामक स्थान को ही प्राचीन मत्स्य की राजधानी सिद्ध करती है। चीनी यात्री

तस्माद् ह स्मेषुमात्रमेव तिर्यङ् -वधते, इषु मात्र प्राङ् । सोऽ वैवावर समुद्र दधौ, भव पूर्वम् ।

समवत रामायण की उपयु क्त कथा म राम का बाण द्वारा समुद्र शोषण सम्बन्धी कथानक इसी सोम की इषु के समान तियक वृद्धि विषयक प्रतीत का विकसित रूप हो ।

कारण कुछ भी रहा हो किन्तु जब समुद्र का जल सूख गया तो सारस्वती नद्री भी, जिसके किनारे बैठ कर वैदिक ऋषियों ने मनोहर ऋचाओं का सृजन किया था और जो इस राजस्थान रूपी समुद्र में गिरती थी, धीरे धीरे मरुभूमि में सूखने लगी । ब्राह्मण युग म इसके सूखने का अनुमान है । ब्राह्मणा म सरस्वती के लुप्त होने का स्थान 'विनशन कहा गया है । (ताण्ड्य ब्रा० २५।१०।१६) विनशन मे लुप्त होकर इस नदी ने मरुभूमि मे ही एक स्थान पर पुन जन्म लिया जो प्लक्ष प्रास्रवण नाम से प्रसिद्ध है जो विनशन से घोड़े की गति से चौआलीस दिनो की दूरी पर स्थित था । (जमिनीय ब्राह्मण ४।१६।१२) विनशन का उल्लेख मनु ने भी किया है । (मनुस्मृति २।२१) सरस्वती नदी जो यमुना और सतलज के बीच में बहती थी आजकल पटियाला रियासत मे 'सुरसुति के नाम से प्रसिद्ध छोटी नदी है । (वदिक साहित्य और सस्कृति बलदेव उपाध्याय पृ० ४६५) कुछ विद्वानो का विचार है कि सतलज (शुतुद्री) नदी की एक धारा किसी समय राजस्थान के मारवाड भाग मे भी बहती थी जिसे लोग हाकडा के नाम से पुकारते थे । (मारवाड का इतिहास वही पृ० ३) इसके किनारो पर गन्नो की खेती होती थी । कुछ समय पश्चात् उधर की भूमि के ऊँचा हो जाने के कारण उस धारा का पानी मुलतान की तरफ मुडकर सिंधु मे जा मिला । मारवाड राज्य का एक प्रान्त अब तक हाकडा क नाम से प्रख्यात है । समवत 'वह पानी मुलतान गया कहावत इसी भौगोलिक परिवतन की घटना की याद दिलाती है । टॉडकृत राजस्थान" ग्रन्थ के प्रारम्भ म दिये प्राचीन राजस्थान के मानचित्र मे सीमाओ का निर्देश किया गया है जिसके अनुसार राजस्थान के पूव मे बुन्देलखण्ड, पश्चिम मे सिंधु नदी की घाटी, उत्तर म जांगल देश (सतलज से दक्षिण का) नामक मरुस्थल और दक्षिण म विन्ध्याचल की पहाडियाँ थी । महाभारत काल मे मारवाड का उत्तरी भाग और उसके आगे का बीकानेर का सारा प्रदेश जागल देश कहलाता था और उसकी राजधानी अहिच्छत्रपुर (नागौर ?) थी तथा यह क्षेत्र कौरवो के अधिकार में था । ( महाभारत, उद्योग पव अध्याय ५४, श्लोक ७)

पथ्य राज्य महाराज ! कुरवस्ते सजागला ।

गुजरात की ओर मारवाड का दक्षिणी भाग समवत मरु एव धन्व के नाम से विख्यात था जो महाभारत के समय से पूव ही बस गया था । श्रीमदभागवत मे वर्णित है कि कस का बदला लेने के लिये जरासघ ने ७ बार मथुरा पर विफल चढाइया की । इसके पश्चात उक्त नगरी पर कालयवन का आक्रमण हुआ । यह देखकर कृष्ण ने सोचा कि इस अवसर पर यदि जरासघ पुन आक्रमण करदे तो यदु लोग निरथक मारे जायेंगे । अत उन्होंने यदुओ को द्वारका पुरी की ओर भेज दिया ।

~ मरुघन्वमतिक्रम्य सौवीरामीरयो परान' (भागवत् स्कद १, अध्याय १०, श्लोक ३५)

श्री मद्भागवत का उक्त उल्लेख इस अनुमान को जन्म देता है कि मरु तथा धन्व दो भिन्न प्रदेश थे क्योकि दोनो शब्दो का प्रयोग एक ही ग्रथ के लिये उचित प्रतीत नही होता । समव है कि मारवाड का दक्षिण भाग धन्व के नाम से पुकारा जाता रहा हो ।

महाभारत काल म ही राजस्थान के कुछ भागो मे गणराज्या का विकास प्रारम्भ हो गया था। जनतन्त्रीय शासन एव विचार धारा राजस्थान की जनता के लिये कोई नवीन या आश्चयकारी घटना नही है अपितु, अति प्राचीन काल से ही यहा की जनता ने स्वशासन का उपभोग करना प्रारम्भ कर दिया था। समापव (महाभारत समापव, अध्याय ३२) म मालव, शिबि और त्रिगर्तो का निवास राजस्थान (मरु) बताया गया है। इसी अध्याय म दिग्विजय के प्रसग मे इन तीनो का नाम दशार्णों व माध्यमिकेया के साथ आया है। माध्यमिकेय लोग नगरी (उदयपुर स्टेट) के निकट माध्यमिका नामक कस्बे के निवासी थे जहाँ प्रचुर माना मे माध्यमिकेय सिक्के प्राप्त हुए हैं। इससे यह भी स्पष्ट हो जाता है कि माध्यमिकेय शिबिया के शासन के अन्तगत न होकर अलग जाति थी। इन गणराज्यो के उल्लेख के पश्चात् ही सरस्वती नदी व मत्स्य प्रदेश का उल्लेख है। अलवर जिला व जयपुर जिले का कुछ भाग मत्स्य प्रदेश के नाम से प्रख्यात था। सिंध से लेकर विंध्याचल के य सभी गणराज्य उस समय राजस्थान के अन्तगत थे। (हिंदू पॉलिटि, काशीप्रसाद जायसवाल पष्ठ १५४) महाभारत म उत्सव सकेत गणराज्यो का भी नाम आया है जिनकी स्थिति पुष्कर तथा अजमेर के पास निर्दिष्ट है। वाल्मीकि रामायण के अनुसार विश्वामित्र न पुष्कर के पवित्र स्थान म कन्द मूल फल खाकर ब्राह्मणत्व की प्राप्ति के लिए तपस्या की थी। आचाय डा दिवकर का मत है कि वेदमाता गायत्री की छद रचना ऋषि विश्वामित्र के द्वारा पुष्कर मे ही हुई थी। इस प्रकार वेदा की प्रथम छद रचना का श्रेय राजस्थान के पुष्कर क्षेत्र को ही है।

रामायण एव महाभारत काल के पश्चात् स्मृतियो एव पुराणा का युग आता है जहा से राजस्थान का मत्स्य प्रदेश नामक भाग अधिकाधिक प्रख्यात होने लगा। यह अनुमान है कि इस युग म महाभारत कालीन गणराज्य तिरोहित होने लगे और मौय शासन काल तक मत्स्य प्रदेश को अधिकतर राजाओ के शासन म रहना पडा। परवर्ती उपनिषदो पुराणो तथा स्मृतिया के अनुसार मत्स्य प्रदेश आय क्षेत्र के अन्तगत था। कौशीतकी उपनिषद के अनुसार आय क्षेत्र के अन्तगत आने वाले प्रदशो म उशीनर, वश मत्स्य, कुरु, पाचाल काशी और विदेह मुख्य थे। (कौशीतकी उपनिषद ६।१) मनु ने आय सस्कृति को चार भागो म बाटा है। ब्रह्मावत ब्रह्मर्षिदेश, मध्यदेश तथा आर्यावत। इनमे से ब्रह्मर्षि देश म कुरक्षेत्र मत्स्य, पाचाल व शूरसेन जनपद का नाम आता है। ब्रह्मर्षि विश्वामित्र की उपाधि थी। मत्स्य का ब्रह्मर्षि देश के अन्तगत होना पुष्कर म विश्वामित्र द्वारा की गई तपस्या की घटना को भी प्रामाणिक बनाता है।

बौद्ध ग्रन्थ अगुत्तर निकाय जसे प्राचीनतम पाली ग्रन्था की १६ जनपदो की सूचि म भी मत्स्य जनपद का उल्लेख है। महाभारत की कथा के अनुसार मत्स्य की राजधानी विराटनगर म पाडवा ने अज्ञातवास का एक वष गुजारा था। विराट नगर का इतिहास महाभारत युग से लेकर मौय युग तथा हषवधन के युग तक प्रामाणिक रूप म उपलब्ध होना है। या तो भारत मे विराट नगर नाम के तीन स्थान पाय गय हैं। (१) बिहार प्रान्त म दीनाजपुर और रगपुर ग्राम (२) धारवाड म हिंगलाज स्थान तथा (३) जयपुर डिवीजन मे बैराठ। किन्तु अनेक आधार भूत प्रमाणा की उपलब्धि जयपुर डिवीजन म, जयपुर शहर से उत्तर म इकतालीस मील दूर बराठ नामक स्थान को ही प्राचीन मत्स्य की राजधानी सिद्ध करती है। चीनी यात्री

ह्वनसाग के अनुसार पानियटोला की राजधानी मथुरा से पश्चिम की ओर ५०० ली (८३$\frac{1}{3}$ मील) और शेटाद्रु लो ( सतलज ) से दक्षिण पश्चिम की ओर ८०० ली पर थी। ह्वनसाग के इस पानियटोलो का समीकरण एम० रेनाड (M Reinaud) ने पारियात्र अथवा बराठ से किया है। ऐसा प्रतीत होता है कि पारियात्र पर्वत की इस प्रदेश में स्थिति होने के कारण यह प्रदेश भी पारियात्र के नाम से प्रसिद्ध रहा हो। विष्णु पुराण में भी इस पर्वत का उल्लेख हुआ है। "भारतवर्ष वह देश है जो हिमालय के दक्षिण और समुद्र के उत्तर में है जहा महेन्द्र, मलय, सह्य, शुक्तिमान, ऋक्ष, विन्ध्य व पारियात्र, ये कुल सात पर्वत हैं। ( देखिए विल्सन कृत विष्णु पुराण २।१२७।६) "पारियात्र पर्वत विन्ध्याचल का पश्चिम का वह पर्वतीय भाग है जो अरावली पर्वत के नाम से प्रख्यात हुआ। ( हिन्दु सभ्यता राधाकुमुद मुकर्जी डा० वासुदेव शरण अग्रवाल द्वारा अनुवादित पृ० १२८)। बराठ में अरावली पर्वत की शृंखला, आज भी मौजूद है। अत सभव है कि यह पारियात्र की विराट शृंखला पारियात्र-बराठ बराट विराट में सीमित हो गई हो। इस नामान्तरण का कारण कुछ भी रहा हो यह निर्विवाद तथ्य है कि मत्स्य की राजधानी विराट नगर का इतिहास अत्यन्त प्राचीन एव गौरव पूर्ण रहा है। राजस्थान के शौर्य की कहानी का प्रारम्भ राणा-सागा तथा महाराणा प्रताप से मानने वाले व्यक्ति भ्रम में रहेंगे यदि उन्हें यह ज्ञात नहीं है कि सुदूर प्राचीन काल में भी यहा के सैनिकों की क्षमता सराहनीय मानी जाती थी। मनु का कथन है कि

कुरुक्षेत्राश्च मत्स्याश्च पचालान् शूरसेनजान्।
दीर्घाल्लघुश्चैव नरानग्रानीकेषु योजयेत ॥ (मनुस्मृति ७।१९३)

सेना का अग्रिम दस्ता इन्द्रप्रस्थ के निकट कुरुक्षेत्र के निवासियों द्वारा अथवा मत्स्य के मनुष्यों द्वारा पाचालों और शूरसेनों द्वारा निर्मित होना चाहिये। इससे सिद्ध होता है कि राजस्थान के योद्धा सुदूर अतीत काल से ही शूरवीरों में अग्रगण्य रहे हैं।

बैराठ नगर से उत्तर में एक मील पर एक लम्बी चिकनी चट्टान वाली पहाडी पर भीम (पाडव) का निवास दिखाया गया है। इसके अतिरिक्त बराठ में अशोक का एक शिला लेख एव पहाडी पर प्राप्त हुआ है जो इस समय कलकत्ता की एशियाटिक सोसाइटी के म्यूजियम में रखा है। यहा आठ बौद्ध मठों के अवशेष भी मिले हैं। प्रस्तुत शिलालेख एव बौद्ध मठों की प्राप्ति से यह सिद्ध हो जाता है कि यह स्थान मौर्य काल में अशोक के शासन के अन्तर्गत था तथा यहा बौद्ध धर्म फला फूला था। इसके पश्चात विराट नगर नामक प्राचीन नगर उजड गया और अनेक सदियों तक वीरान पडा रहा। अकबर के समय में यह पुन बसाया गया। (Ancient Indian Geograhys By Cunningham Page 241)

मौर्य शासन के पश्चात राजस्थान की राजनीति ने पुन करवट ली। इसके कुछ भागों पर साम्राज्य वादी राजाओं का अधिकार अवश्य रहा किन्तु अधिकतर भागों में गणतन्त्रीय राज्य स्थापित हो गये। मौर्यों के पश्चात राजस्थान शुग वशी राजाओं के अधिकार में चला गया। इस वश के सस्थापक पुष्यमित्र के समय (१५६ ई० पू) ग्रीक नरेश मिनण्डर ने राजस्थान पर चढाई की थी। उसकी सेना नगरी (चित्तौड से ८ मील दूर) तक जा पहुची थी। ई० स० ४० से ई० स० २२६ तक भारत के पश्चिमी प्रदेशों पर कुषाणवशी

राजाओं का अधिकार रहा क्योंकि इन्होंने बलख से आगे बढ़ कर धीरे धीरे काबुल कंधार फारस सिंध और राजस्थान का बहुत सा भाग दबा लिया था। इनमें कनिष्क अत्यधिक प्रतापी राजा हुआ। सारा उत्तर पश्चिमी भारत और दक्षिण में विन्ध्य तक का प्रदेश इसके राज्य में था अतः राजस्थान के कुछ भाग पर इस वंश के नरेशों का भी राज्य अवश्य रहा होगा। ई० स० ११९ के लगभग काठियावाड़, कच्छ आदि प्रदेशों पर पश्चिमी क्षत्रप नहपाण का राज्य था। मारवाड़ के दक्षिणी भाग पर भी इसके अधिकार में होना पाया जाता है। नहपाण के जामाता ऋषभदत्त (उषवदात) ने पुष्कर में जाकर बहुत सा दान दिया था। (मारवाड़ का इतिहास वही पृ० ५) विक्रम सम्वत् १८१ के कुछ पश्चात ही नहपाण का राज्य आन्ध्र वंशी गौतमी पुत्र शातकर्णी ने छीन लिया था। संभव है कि मारवाड़ का दक्षिणी भाग भी उसके अधिकार में चला गया हो। वि० स० २०७ के पूर्व ही मरु (मारवाड़) श्वभ्र (उत्तरी गुजरात) कच्छ व सिंध प्रदेश क्षत्रपों के अधिकार में आ गये थे जैसा कि पश्चिमी क्षत्रप रुद्रदामन प्रथम के जूनागढ़ अभिलेख से ज्ञात होता है। (एपिग्राफिका इंडिका, भाग ८ पृ० ३६) गुप्त काल में मारवाड़ पर संभवतः गुप्त राजाओं का ही अधिकार था। विक्रम संवत् ६७४ का एक शिलालेख मारवाड़ के गोठ और मांगलोद की सीमा पर स्थित दधिमति देवी के मंदिर से मिला है। मारवाड़ की प्राचीन राजधानी मंडोर के विशीर्ण दुर्ग में एक तोरण के दो स्तम्भ खड़े हैं। उन पर कृष्ण की बाल लीलाएँ खुदी हुई हैं। इनमें से एक स्तम्भ पर गुप्त लिपि का लेख था जो अब लगभग सारा ही नष्ट हो गया है।

यह युग अत्यन्त विशृंखलित राजनैतिक व्यवस्था का युग था। एक ओर राजस्थान के उपयुक्त भागों पर साम्राज्यवादी शासकों की छीना झपटी चल रही थी तथा दूसरी ओर कुछ जातियाँ छोटे छोटे गणतन्त्रात्मक राज्यों की स्थापना कर रही थी। दस अश्वमेध करने वाले नाग राजाओं ने प्रजातन्त्रीय गणराज्यों को प्रोत्साहित किया तथा उनका पोषण भी किया। ये गणराज्य पूर्वी व पश्चिमी मालवा, गुजरात (आभीर) संपूर्ण राजपूताना तथा पूर्वी पंजाब के भाग को घेरे हुए थे। इनमें से यौधेय जाति अत्यन्त प्राचीन थी। महाभारत ने यौधेयों के प्रदेश को दो भागों में बांटा है। बहुधान्य व मरुभूमि, (महाभारत २२/६०) इससे प्रतीत होता है कि इनका अधिकृत क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत था। यौधेय जाति ने मौर्य एवं शुंग साम्राज्य का उत्थान तथा पतन तो देखा ही था कुषाण एवं क्षत्रपों के समय तक भी यह जाति कायम रही थी (हिन्दू पालिटि काशी प्रसादजायसवाल पृ० १४८) चौथी सदी के समुद्रगुप्त के अभिलेख में यौधेयों का नाम गुप्त साम्राज्य के सीमावर्ती प्रदेशों के रूप में उल्लिखित है:—

नैपाल-कर्तृ पुरादि प्रत्यन्त नृपति भिर्मालवार्जुनायन-यौधेय मद्रका (गुप्त इन्स्क्रिप्शन्स फ्लीट पृ० ८)
यौधेयों का एक मात्र अभिलेख अलंकृत लिपि में भरतपुर रियासत में मिला है जिसमें निर्वाचित अध्यक्ष का उल्लेख किया गया है। प्रस्तुत अभिलेख गुप्त कालीन स्वीकृत किया गया है। (हिन्दू पालिटी वही पृ १४६) ऐसा ज्ञात होता है कि दूसरी सदी से पूर्व ही यौधेय गण के लोग पश्चिमी राजस्थान में फैल गये थे क्योंकि इनके बाद रुद्रदामन ने मरु को अपने अधिकार में बनाया है। सतलज नदी के किनारे बहावलपुर की सीमा पर बसने वाले जाट्या राजपूत प्राचीन यौधेयों के आधुनिक प्रतिनिधि कहे जा सकते हैं।

यौधेयो के समान ही मालव जाति भी राजस्थान की तत्कालीन महत्वपूर्ण जाति थी। सिकन्दर के आक्रमण के समय मालव पजाब म बसे हुए थ । १५० ई० पू० के आसपास इन्होने पजाब से पूर्वी राजस्थान मे गमन किया और १०० ई० पू० के लगभग ये अपने नवीन प्रदेशो म बस गय । मालवा ने जयपुर के निकट करकोटा नगर को अपनी राजधानी बनाया जिसका नाम नाग राजा करकोट के नाम पर रखा गया था। करकोटा नगर टाक स २५ मील दूर दक्षिण पूव म है । स्वतन्त्रता से पहिले यह जयपुर के राजा के अधीनस्थ जागीरदार राजा उणियारा के क्षेत्र के अन्तगत था । यहा मालवा के सिक्के भी प्राप्त हुए हैं । विष्णु पुराण के अनुसार भी मालवो का निवास जयपुर मेवाड है (विष्णु पुराण विल्सन कृत अनुवाद २।१३३) ५८ ई०पू० से पहिले मालव लोग अजमेर के पश्चिम म उत्तमभद्रा के चारो ओर घेरा डालते हुये पाये जाते है जिन्हे नहपाण की सेनाओ ने मुक्त किया था । (एपिग्राफिका इडिका वाल्यूम ८ पृ १४४) मालवो की पश्चिमी सीमा माउट आबू थी (हिदु पोलिटी वही पृ १४०)

आजु नायन जाति १०० ई० पू० मे राजपूताना म थी । वे यौधेयो तथा अन्य जातियो के साथ समुद्र गुप्त के चौथी सदी के अभिलेख मे दिखाई देते हैं । ये राजस्थान के वीर यौधेया, मद्रको तथा मालवा के साथी थ जिन्होंने उनके साथ ही राजस्थान मे प्रवेश किया था ।

सिकन्दर के आक्रमण के समय के वीर क्षुद्रक लोग परवर्ती सदियो म पूर्ण रूप से मालवो मे मिल गये जबकि मालव पजाव से पूर्वी राजपूताना म गमन कर रहे थे ।

ऐसा अनुमान है कि शिबि लोगो ने भी जा सिकन्दर के आक्रमण के समय मालवा के साथी थे-मालवा के साथ राजस्थान म प्रवेश किया । चित्तौड के पास नगरी नामक स्थान पर उनके सिक्के मिले हैं जिन पर 'मझिमिकाय शिबि जनपद' लिखा हुआ है ।

यूनानी लेखको के अनुसार सिकन्दर के आक्रमण के समय उपयुक्त सभी जातिया पजाब म थी जिन्होने यूनानी राजा का डट कर मुकाबला किया था । पजाब की उपजाऊ भूमि से राजस्थान की मरुभूमि म इन जातिया का स्थानान्तरण उनकी स्वतन्त्रता प्रेमी तथा स्वाभिमानी प्रवृत्ति का प्रतीक है । राजस्थान मे आकर इन स्वतन्त्रता प्रेमी जातियो ने जनतन्त्र शासन की पुन स्थापना कर विदेशी आक्रमणो के समय यहाँ की जनता को सुरक्षा एव समृद्धि प्रदान की । राजस्थान मे जनतन्त्र शासन का यह स्वर्णिम युग था । डा० काशीप्रसाद जायसवाल के शब्दो म निम्न वक्तव्य प्राप्त है—

'Considering the power and long career in their new homes, the period 150 B C to 350 A D may be still considered a living period of Hindu republican polty It was the period of rise of the Rajputana republic

समुद्र के गर्भ मे "गहर पानी पठ" राजस्थान ने चिन्तन द्वारा जिस रत्न की उपलब्धि की वह था स्वाभिमान व स्वतन्त्रता की भावना । वैदिक युग से लेकर गुप्त युग तक की राजस्थान की उपयुक्त कहानी उसकी इसी विशेषता का चित्र सामने प्रस्तुत करती है ।

# वीरता
# की पृष्ठ भूमि

राजस्थान भारत भूमि का अत्यन्त प्राचीन भूखण्ड है। यही वतमान उदयपुर के निकटस्थ प्रदेश म आहाड सस्कृति का उदय हुआ। यही लूणी, बनास और चम्बल आदि नदियो के तट प्राचीन राजस्थानी मानव के, क्रीडा क्षेत्र बने। हडप्पा की सस्कृति भी सरस्वती और दृपद्वति के किनारो पर खूब फली फूली। यही "कृण्वन्तो" विश्वमार्यम् का नारा लगाते हुए आर्यों ने आर्य-सस्कृति का प्रसार करते हुए अनेक यज्ञ किये और 'एकम्सद् विप्रा बहुधा विप्रा बहुधा वदन्ति" के सिद्धान्त पर पहुच कर सब सम्प्रदायो के मूलभूत ऐक्य का सवप्रथम उपदेश दिया। "कस्मै देवाय हविपा विधेन" के गम्भीर प्रश्न द्वारा यही सरस्वती नदी के तट पर उस महान सत्ता के सामने अन्य सत्ताओ की नगण्यता का भी प्रतिपादन हुआ।

और यह भूमि आरम्भ से सस्कृति प्रसविनी ही नही वीर प्रसविनी और वीर रक्षिणी भी रही है। ब्राह्मण काल मे मत्स्यराज ध्वसन द्वैतवन न यहा अनेक अश्वमेघ यज्ञ किये। महाभारत काल मे कौरवो से द्यूत मे पराजित पाण्डवो ने द्वैतवन मे अपना नातवास समाप्त कर मत्स्यराज विराट की सभा मे एक वप तक अज्ञातवास किया था। यही उस उद्योग का भी आरम्भ हुआ जिसस अन्तत दुश्शासन और दुर्योधन का अन्त हुआ। इसके बाद कुछ समय तक राजस्थान की कुछ विशेष सूचना नही मिलती। किन्तु ई० पू० छठी शती म मत्स्य देश महाजनपद के रूप मे वतमान था। राजस्थान का मरुस्थल इस काल म भी दुगम था किन्तु अगम्य नही। अनेक साथ उसे पार कर देश के अन्य भागो से व्यापार करते थे।

किन्तु राजस्थान की महत्ता की प्रतीति, इसके धन्वदुर्गों, पहाडो और वनो का सुचारु रूप से मूल्याकन-चौथी शती ई० पू० के बाद ही हुआ। अशोक के समय राजस्थान म शान्ति रही। किन्तु उसकी मृत्यु के उपरान्त समस्त उत्तरी भारत पर आपत्ति के बादल मडराने लगे। यवनो के अनेक छोटे-मोटे राज्य अफगानिस्तान और पजाव म स्थापित हुए और ई० पू० १८५ के लगभग यवनराज डेमेट्रिअस ने मथुरा साकेत आदि के माग से कुसुमपुर (पाटली पुत्र) पर आक्रमण किया। यवन सेना की एक टुकडी ने चित्तौड के निकट पहुचकर माध्यमिका नगर पर घेरा डाला। सम्भवत उसे सफलता न मिली हो। यवनो के बाद शको, पह्लवो, और कुषाणो ने भारत म प्रवेश कर अनेक राज्य स्थापित किये। शको के मुख्य राज्य उत्तर पश्चिमी सीमान्त प्रान्त, पश्चिमी पजाव, मथुरा, सौराष्ट्र, गुजरात, मालव प्रदेश और महाराष्ट्र म थे। पह्लवो

का प्रवेश कुछ सीमित रहा। किन्तु कुषाण साम्राज्य दक्षिण में विंध्यपर्वत, पूर्व में बिहार, और उत्तर-पश्चिम में भारत की सीमा पार कर मध्य एशिया और पश्चिमी चीन तक फैला हुआ था।

पंजाब की वीर जातियां सिकन्दर के आक्रमण का झटका सह गई थीं। किन्तु जब आक्रमणों की एक झड़ी-सी लग गई तो इन वीर स्वातन्त्र्य प्रेमी जातियों के पास इसके सिवाय चारा ही क्या था कि वे अन्यत्र जाकर अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा करते हुए संघर्ष जारी रखें। इस संघर्ष की कुछ धुंधली सी झांकी हमें अनेक प्राचीन शिलालेखों से मिलती है। शकराज नहपाण के जामाता उषावदात (ऋषभदत्त) के शिलालेख से सिद्ध है कि पहली ईस्वी शताब्दी के अन्त तक अनेक क्षत्रिय जातियां राजस्थान में पहुंच चुकी थीं। शाल्व सम्भवतः अलवर (शाल्वपुर) प्रदेश में जा बसे। उन्हीं की एक शाखा मद्र थी जिनकी याद मादरानगर अब भी दिलाता है। शायद समय पाकर इनकी दो शाखायें बन चुकी थीं एक उत्तर (या उत्तम) मद्र और दूसरी दक्षिण मद्र। (देखें 'जर्नल-आफ ओरियंटल इंस्टीट्यूट, बड़ौदा खण्ड १०, पृष्ठ १८२ १८३ पर हमारा लेख)

उत्तम भद्रों ने शकराज नहपाण की अधीनता स्वीकार की किन्तु स्वातन्त्र्य प्रेमी मालवों ने तो पराधीनता का नाम ही न सीखा था। पंजाब में इनके शौर्य से सिकन्दर की सेना विचलित हो उठी थी। चन्द्रगुप्त मौर्य ने जिन जातियों की सहायता से फौजी यवनदस्ता 'को' निकाल बाहर किया था उनमें भी सम्भवतः मालवों का प्रमुख भाग रहा होगा। किन्तु जब निरन्तर बढ़ती हुई शक पह्लव शक्ति के सामने पंजाब के मैदानों में टिकना असम्भव हो गया तो इन्होंने राजस्थान के मरुस्थल वनों और पर्वतों का आश्रय लेकर शत्रु से मोर्चा लिया। उणियारा ठिकाने के नगर नामक ग्राम से कार्लाइल को मालवों की हजारों ऐसी छोटी छोटी मुद्रायें मिली थीं जिनका समय ई० पू० दूसरी शताब्दी से लेकर चौथी ईस्वी शताब्दी तक रखा गया है। जयपुर के रेड नामके छोटे से ग्राम से भी मालवों की लगभग तीन सौ मुद्रायें मिली। यहां से प्राप्त मुहर से सिद्ध है कि यह प्रदेश उस समय मालव जनपद के नाम से प्रसिद्ध हो चुका था और यहीं से प्राप्त एक ताम्रलेख से हम यह भी ज्ञात है कि तत्कालीन मालव नायक का नाम वैच्छग था। बहुत सम्भव है कि शक विरोधी मालवों ने यहीं से बढ़कर शकानुयायी उत्तमभद्रों को पुष्कर के निकट किसी स्थान पर पराजित किया हो। वीर जातियों की कभी जय होती है और कभी पराजय किन्तु पराजय उन्हें निस्सत्व नहीं बनाती। शकराज नहपाण के सेनापति ऋषभदत्त से हारने के बाद मालव लोग शकराज रुद्रदामा से भी पराजित अवश्य हुए पर इससे उनकी नीति न बदली। जीवदामा और रुद्रसिंह के गृहकलह से लाभ उठाकर उन्होंने फिर अपने शस्त्र संभाले और सन् २२५ के लगभग शकों को बुरी तरह से पराजित किया। इसी विजय के उपलक्ष्य में मालवनायक श्री सोम ने एक षष्ठि यज्ञ किया। जिसका उल्लेख नान्दसा के कृत संवत् २८२।२२५ ई० के स्तम्भलेख में वर्तमान है। उसने पितृपैतामही धुरा का समुद्धार कर पृथ्वी और आकाश के बीच के अन्तर को अपने अनुत्तम यश से आच्छादित कर लिया। उसने अग्नि और ब्राह्मणों को तृप्त कर ब्रह्मा विष्णु आदि के स्थानों में विविध दान किये। इन उद्धरणों से प्रतीत होता है कि इन क्रान्तियों का ध्येय आत्मस्वातन्त्र्य ही नहीं संस्कृति का समुद्धार भी था।

प्राय इसी समय के यूप लेख बडवे मे मिले है। इनकी संख्या तीन है। पहला लेख कृत संवत २९५ का है। इसके अनुसार श्रीमहासेनापति मौखरिबल के पुत्र बलवर्धन ने त्रिरात्रसत्र के अनन्तर एक सहस्र गायें दान मे दी। दूसरा लेख बलपुत्र सोमदेव का है। उसने भी त्रिरात्रसत्र के बाद अपने भाई जितना दान दिया। तीसरा लेख इनके भाई बलसिंह का है जिसके दान की मात्रा भी उतनी ही थी। बहुत सम्भव है कि इन मौखरि मादयो ने भी मालवो का स्वातन्त्र्य युद्ध मे सहयोग दिया हो। इन जातियो के सामने एक महान कार्य था। दक्षिण मे यदि सातवाहनो ने शको से देश को बचाया तो उत्तर मे मालवो और उनके सहयोगियो ने। मालवो की अनेक मुद्राओ का "मालवाना जय" अभिलेख अब भी उनकी शानदार विजय की घोषणा करता है।

भारत मे अन्य प्रबल साम्राज्य स्थापित करने वाली विदेशी जाति कुषाणो की थी। इसे पराजित करने का श्रेय मुख्यत यौधेय जाति को है जो बाद मे जाकर जोहिया नाम से विख्यात हुई। यह जाति भी मालवो की तरह प्राचीन काल मे अपनी वीरता के लिए प्रसिद्ध थी। उन्ही की तरह यौधेयो को भी शकराज रुद्रदामा से पराजित होना पडा था। किन्तु विजेता को भी अपने अभिलेख मे यौधेयो के वीरत्वाभिमान का उल्लेख करना पडा। राजस्थान के विजयगढ (भरतपुर) से लेकर देहरादून तक का भाग यौधेय जनतन्त्र के अन्तगत था। पूर्ण आत्मविश्वास और स्वातन्त्र्य भावना के द्योतक उनकी मुहर के शब्द यौधेयाना जयमन्त्रधराणाम्' किसे यौधेयगण की याद नही दिलाते? चारो और विजय के कारण उनकी यह धारणा बन चुकी थी कि यौधेयो के पास विजय का मन्त्र था किन्तु यह विजयमन्त्र किसी व्यक्ति विशेष की नही समस्त यौधेयगण की सम्पत्ति थी।

इसी प्रकार भारत के इस स्वातन्त्र्य युद्ध मे (जिसका लक्ष्य विदेशी शक पह्लवो और कुषाणो के प्रभुत्व से भारत को मुक्त करना था) आर्जुनायन आदि राजस्थान की जातियो ने प्रमुख भाग लिया। स्वर्ण युग इन्ही वीरो के महान् उत्सर्ग से सम्भव हुआ था। गुप्तकाल की महत्ता की नीव इन्ही वीर मालवो यौधेयो और अर्जुनायनो के विविध, बहुकालीन एव बहुसंख्यक बलिदानो की यज्ञवेदिका पर टिकी थी।

गुप्तकाल भारत के लिए सुख शान्ति और समृद्धि का समय था। किन्तु सन् ४५५ ई० मे हूणो के आक्रमण का आरम्भ हुआ। ५२५ के लगभग उत्तरी भारत का बहुत सा भाग इनसे पदाक्रान्त हो चुका था। इस समय वीर मालव जाति ने फिर अपना कार्य सम्भाला। गुप्तकाल मे भी गुप्त राज्य संवत का प्रयोग न कर मालव संवत का प्रयोग करने वाले औलिकर इसी वश के थे और चित्तौड मन्दसोर आदि का भाग उस समय उनकी मूल भूमि के रूप मे परिगणित था। (रिसर्चर खण्ड ५ ६ मे हमारा Chittor a part of Yashodharman's dominion लेख पढें) अस्तु जनता को मालव यशोधर्मा ने जिस भांति सम्भाला उसका अतीव सुन्दर वर्णन मदसोर के अभिलेख मे कवि वासुल ने इस रूप मे किया है — 'अभिमानी, अत्यन्त अविनयी अशुभ वस्तुओ मे सक्त आचार मार्ग को लंघन करने वाले इस काल के राजाओ द्वारा मोह से पीडित पृथ्वी ने लोकोपकार के लिए सफल प्रयत्नशील, कठिन धनुष की ज्या की रगड से उत्पन्न खुरदयुक्त कलाई वाले, यशोधर्मा के बाहु की शरण इसी प्रकार से ग्रहण की थी जिस तरह इन्ही गुणो से युक्त भगवान् शार्ङ्गपाणि के बाहु की।' वास्तव मे भारत के लिए ये बुरे दिन थे। राजस्थान के अनेक स्थानो को भी हूणो ने रौंद डाला था किन्तु वीर मालव यशोधर्मा की वीरता से यह पवित्र भूमि फिर फली और फूली।

"यज्ञधूम से फिर आकाश आवृत्त हुआ। हरित सस्य से फिर भूमि लहलहाने लगी। सुप्रसन्न सुन्दरी स्त्रिया की उद्यानक्रीडा फिर शुरू हुई, और यशोधर्मा भुज से विजित अनेक देशा ने फिर सुराज्य सुख की प्राप्ति की"। (मन्दसोर का मालव सवत् ५८६ का लेख, ८ वा पद्य)

डेढ सौ वष बाद देश को फिर राजस्थान के नेतृत्व की आवश्यकता हुई। अनेक विफल प्रयत्नो के बाद सन् ७१२ ई० मे अरब सिंध प्रदेश को जीतने मे सफल हुए। लगभग तेरह साल के अनन्तर सन् ७२५ ई० मे सिंध के प्रान्तीय अरब शासक जुनैद ने भारत के अन्य प्रान्तो को भी जीतने का निश्चय किया। उसने मारवाड और जैसलमेर के प्रदेशो को स्वय जीता। उसके सेनापतियों ने मालवा, माडलगढ और भडोच आदि स्थानो को अधिकृत किया। शीघ्र ही यह प्रतीत होने लगा कि ईरान, मिश्र, मोरोक्को, और स्पेन आदि की तरह समस्त भारत भी अरबो द्वारा विजित होगा। सभी जगह इस्लाम की तूती बोलेगी। इस कष्टमयी अवस्था म प्रतिहार नागभट प्रथम ने राजस्थान की चौहान, पवार सोलकी आदि क्षत्रिय जातियो का नेतृत्व कर, अरबो को अनेक युद्धो म पराजित किया। मारवाड, मालवा, जसलमेर, आदि सभी प्रान्तों को स्वतन्त्र कर उसने प्रतिहार साम्राज्य की नीव डाली और जालोर मे अपनी राजधानी स्थापित की। कवि बालादित्य के लिए ये घटनायें पुरानी न थी। सामान्य जनता ने उस समय जो अनुभूति की उसका प्रतिनिधित्व करते हुए कवि बालादित्य ने लिखा है "जिस वश मे मनु, इक्ष्वाकु, काकुत्स्थ, पृथु आदि ने जन्म लिया जिसमे पोलस्त्यहता राम अवतीर्ण हुए, उसी की प्रतिहार शाखा म (जो त्रलोक्य की शरणदायिनी बन चुकी थी) नागभट प्रथम की उत्पत्ति हुई। वह पुराण मुनि नारायण का अदभुत स्वरूप था। धम का प्रमथन करने वाले म्लेछाधिप की अक्षौहिणी सेना को अपने उग्र समुज्जवल शस्त्रास्त्रा से नष्ट करते हुए उसने (माना) चतुर्भुज स्वरूप धारण किया था'। (भोज के ग्वालियर शिलालेख के वृत्त २-४ का भावानुवाद)। और वास्तव मे बात भी यही थी। राजस्थान अरब आक्रमण की बाढ को इस समय न रोकता तो समस्त उत्तर भारत अरबो के हाथ म होता। मध्यदेश मे इस समय निबल आयुधो का राज्य था। बगाल मे यह प्राय मात्स्य-न्याय का काल था जब सबल निबल को हडपने का इसी तरह प्रयत्न करते जसे बडी मछली छोटी मछली को।

यह समय महारावल बप्पा का भी है। धम का स्वरूप सदा एकसा नही रहता

मवत्य धर्मो धर्मोहि धर्माश्चाधर्मावुभावपि।
कारणाद देशकालस्य देशकाल सतादश ॥ (शातिपव ७६।३१)

वह समय और परिस्थिति के अनुसार कुछ न कुछ बदला करता है। कभी शान्ति तो कभी युद्ध भी धम है। इन्ही विचारो से प्रेरित होकर महारावल बप्पा ने विप्रवृत्ति को छोड कर इस समय शस्त्र धारण किये। इन मन शान्ति ने केवल बप्पा का ही नही, राजस्थान के एक बडे भूमाग का जीवन बदल दिया।

आठवीं से दसवी शताब्दी तक के राजस्थान की महत्ता इसी म है कि उसने अपने स्वातन्त्र्य और सस्कृति का समुद्धार ही नहीं अपितु अनेक रूप से भारत का समुद्धार किया। इस दृष्टि से नागभट प्रथम, वत्सराज नागभट द्वितीय भोज प्रथम आदि के नाम प्रात स्मरणीय हैं। अरब प्रतिहारो से कापते, साथ ही यह भी स्वीकार करते कि प्रतिहार साम्राज्य भारत का सबसे सुशासित प्रदेश था।

ग्यारहवी शताब्दी म प्रतिहारा के शक्तिहीन होने पर महमूद ने अनेक बार भारत को लूटा । मथुरा, थानेश्वर, सोमनाथ, काँगडा आदि सभी स्थान रक्षाहीन हो गय । गजनी के अमीर बहराम के समय मुहम्मद बहलीम ने नागौर म अपना आधिपत्य जमा कर इधर उधर के प्रदेशा का लूटा, किन्तु राजस्थान ने फिर अपने को समाला । अर्णोराज चौहान के सिंहासनासीन होते ही गजनवी राज्य के किसी सेनापति ने अजमेर पर आक्रमण किया । युद्ध उस स्थान पर हुआ जहां आजकल आनासागर झील है । अर्णोराज के पौत्र पथ्वीराज तृतीय के समय रचित पृथ्वीराज विजय म इस सग्राम का अच्छा वणन है । चौहान इस युद्ध मे हार जाते तो तरावडी के द्वितीय युद्ध से लगभग पचहत्तर वप पूव राजस्थान अपना स्वातत्र्य खो बठता । इसी युद्ध का वणन करते हुए एक अन्य कवि ने विजयी अर्णोराज की अजमेर भूमि को उस नायिका से उपमित किया है, जिसने अपने विजयी वल्लभ के जयोत्सव म कुसुमी साडी पहनी हो ।

अर्णोराज के समय गजनी के सुल्तानो को राजस्थान पर दुबारा आक्रमण करने का साहस न हुआ । किन्तु उसकी मृत्यु के बाद विग्रहराज चतुथ के समय फिर मुसलमानी आक्रमण हुआ । सेना बब्वेरे तक पहुँची । मुख्यमत्री ने रुपया देकर सधि करने की सलाह दी, किन्तु वीरव्रती विग्रहराज के लिए ऐसी सधि असम्भव थी, जिसम देवताओं का तिरस्कार हो और भारतीय सस्कृति को हानि पहुचे । यह वही विग्रह-राज है, जिसकी प्रशस्ति म निम्नलिखित श्लोक दिल्ली के अशोक स्तम्भ पर उत्कीण है —

'आविंध्यादिहिमाद्रे विरचितजयस्तीथयात्रा प्रसगा—
दुदग्रीवेषुप्रहर्ता नृपतिपु विनमत्कधरेपु प्रसन्न ।
आर्यावत यथाथ पुनरपि कृतवान् म्लेच्छविच्छेदनाभि—
र्देव शाकम्भरीन्द्रो जगति विजयते वीसल क्षोणिपाल ॥ १ ॥
ब्रूते सम्प्रति चाहमानतिलक शाकम्भरीभूपति
श्रीमद्विग्रहराज एप विजयी सतानजानात्मन ।
अस्मामि करद व्यधाय सकल विंध्यातरालभुव
शेप स्वीकरणाय मास्तु भवतामुद्योग शून्य मन

"जिसने तीथयात्रा के प्रसग से विंध्य से हिमालय तक जय प्राप्त की थी, जो गदन ऊची करने वालो पर प्रहार करता, और प्रणत राजाओं पर प्रसन रहता, जिसने म्लेच्छविच्छेदन द्वारा आयावत को पुन यथाथनामा आर्यावत बना दिया, वह शाकम्भरीन्द्र महाराजा वीसल जगत म विजयी हैं ।

"यह शाकम्भरी नरेन्द्र चाहमान तिलक विजयी श्रीमदविग्रहराज अपन उत्तराधिकारियो से कहता है कि हमन विंध्य तक की सब भूमि का करद बनाया है । बाकी की भूमि के स्वीकरण म तुम्हारा मन उद्योग शून्य न हो ।'

गौरी सुल्तान मुहम्मद से युद्ध करने वाला प्रथ्वीराज तृतीय इतिहास मे प्रसिद्ध है । उसने तरावडी के पहले युद्ध म मुहम्मद को हराया और दूसरे म वह स्वय हारा । उसकी हार राजस्थान की हार और राजस्थान की हार समस्त उत्तरी भारत की हार सिद्ध हुई । राजस्थानी दोनो युद्धा मे अच्छे लडे, किन्तु

पथ्वीराज तृतीय की पराजय से यह सिद्ध हुआ कि केवल स्वातंत्र्य-प्रियता और शौर्य, स्वातंत्र्य की रक्षा के लिए पर्याप्त नहीं है। इतनी ही आवश्यकता है ऐक्य की। यदि पथ्वीराज चालुक्यों के साथ कंधे से कंधा भिड़ाकर मुहम्मद गोरी से लडा होता और अपने समसामयिक प्राय सभी राजाओं को उसने अपना शत्रु न बनाया होता तो संसार की कोई भी शक्ति उसे पराजित न कर पाती।

पथ्वीराज के बाद भी राजस्थान ने मुसलमानों से अच्छा मोर्चा लिया। रणथंभोर के हम्मीर जालोर के कान्हडदेव, और जैसलमेर के मूलराज की वीर कथायें पठनीय हैं। चित्तौड की महारानी पद्मावती की ऐतिहासिकता अब प्राय सिद्ध है। महाराणा हम्मीर, खेता कुम्भा, सांगा प्रताप और राजसिंह की वीरता और देश-भक्ति से हमारी इतिहास गाथा यशस्विनी बनी है। जिस देश की या देश के भाग की वीरता की पृष्ठभूमि इतनी समुज्ज्वल हो उसका भविष्य समुज्ज्वल है, उसमें दैवप्रदत्त वह शक्ति है जो प्रकृति एवं मानव-जनित सब कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करा सके। ●

जननी! जण अहडा जणे, क दाता, क सूर।<br>
ना तर रहजे बांझडी, मती गमाजे नूर॥

'इला न देणी आपणी, रण खेता भिड जाय'।<br>
पूत सिखावे पालणे, मरण बडाई माय॥

घर जातां, ध्रम पलटतां, त्रिया पड़न्तां ताव।<br>
अ तीनूं दिन मरण-रा, कहा रंक कहा राव॥

मरदां मरणो हक्क है, ऊबरसी गल्लांह।<br>
सा पुरसां रा जीवणा थोडा ही भल्लांह॥

Dr M L Sharma

# The Historical Role Of Rajasthan

Colonel James Tod, the pioneer modern historian of Rajasthan, was right when he remarked that there is not a petty state in Rajasthan that has not had its thermopolae and not a city that has not produced it's Leonidas The chief characteristics of this region are gallantry and chivalry Not only the Rajputs, but people of all other castes under their leadership, cultivated these virtues and pride themselves in vying each oth r in exhibiting death defying bravery in countless battle fields Earlier than the nineteenth century all the battles for the defence of India were fought by the Rajputs No doubt they had to yield to the foreign invaders but every time the wave of foreign invasion dashed against a rock of Indian defence The casualties on both sides were appalling, and from the western limits to the heart of the country, the territory was lost gradually, only after heroic resistance at innumerable places, which lasted continually for several centuries

The Rajasthan, as a ruling power, emerged sometime in the sixth century A D and established its principalities round about Mount Abu and on the bank of the Sambhar lake The first four clans, who acquired ruling status, were the Chauhans, the Chalukyas, the Pratihars and the Parmars The original seat of the Chauhans was Sambhar, whence they expanded to Ajmer, Jalore and later on to Sirohi, Bundi and Kota The remaining three clans founded principalities in Gujrat, Southern Marwar and Malwa The Chauhans were, for several centuries, the predominating power in Rajasthan and ruled over an extensive territory from Ajmer, which was their capital Towards the close of the twelfth century they became an imperial power and established their second capital at Delhi Prithviraj, the Chauhan Emperor, defeated Shahabuddin Ghori near Panipat in 1191 A D but was defeated and killed by him two years later Equally important were the Gahalots of Mewar, who acquired importance in the time of Bappa Rawal, the sixth ruler of their dynasty He seized the Chittor Fort and checked the Arab rulers of Sindh from extending their sway towards the east by fighting several successful

battles against them for the defence of his territory This dynasty was renowned for its continuous and vigorous resistance against the Pathan, Afghan and the Mughal rulers of India for about one thousand years

From the time of their rise to 1193, the Rajputs were independent rulers, governing their kingdoms according to the general principles of ancient Hindu Policy After the second battle of Tarain (1193) they ceased to be an imperial power, but they maintained their independence till 1527 The Chauhans held the fort of Ranthambhor for full one century (1193-1303), even after the disaster of Tarain and the Gahalots defeated the Sultans of Malwa, Gujrat and Delhi in more than one battle and ruled over a large domain Like Prithviraj Chauhan in 1191, Maharana Sanga faced the foreign foe in 1527 and though defeated, yet he died an independent ruler and his descendants never bowed before the Mughals

During the Mughal period, the Rajput states were divided into three categories *Those, who resisted the Mughals, at all costs, belonged to the first category Though* they lost heavily, they never submitted to the imperial power and continued to hold it in undisguised contempt They were the rulers of Udaipur, the descendants of Bappa Rawal In the second category were those, who entered into a political alliance with the Mughals, but on certain honourable conditions Principal among them were the rulers of Bundi Those, who belonged to the third category, were the rulers of Jaipur and a few other small states, who volunteered submission to the Mughals and contracted matrimonial alliances with them A few other states pursued the policy sitting on the fence They submitted, when they were weak and rebelled, when they were strong

Most notable resistance was put up by Udaipur and Jodhpur during the times of the Mughals and by Jaipur during the days of the Maratha supremacy The mighty fort of Chittor fell to Akbar after a heroic defence and unprecedented massacre was perpetrated by the conqueror there But after that Maharana Pratap kept the flag of independence flying through out his life Fighting in dales and on hills eluding imperial pursuits and resisting relentless aggression he baffled not less than forty invasions by Akbar s generals It is a record of a dauntless defence by a great hero against a mighty monarch Maharaja Jaswant Singh of Jodhpur had made himself so powerful that Aurangzeb was constantly afraid of him and considered him a powerful supporter of Hindu religion, and expressed great joy at his death, exclaiming that 'now the gate of Kufra or disbelief in Islam is broken and it was after his death, that Jazia was reimposed on Hindus Sawai Pratap Singh of Jaipur was only a teenager, when he had to defend his state against a well-organised invasion by Madhavji Scindhia, who was accompanied by trained battalions commanded by the French, German and Spainish generals, as also by the Maratha,

Mughal and Afghan cavalry which he was personally commanding Madhavji Scindhia had to retreat before this boy Kachhawa ruler

The war of Jodhpur against Aurangzeb, when the ruler was only a few months old, is a remarkable event in Indian History The devoted general, Durgadas Rathore fought so vigorously and manevoured so diplomatically that Aurangzeb found himself placed in such a critical position that after a patched-up treaty with Udaipur, he had to March down to the south, where he had to campaign continuously for twenty years, which shattered the strength of his empire and eventually the Deccan became his grave

It was during the Maratha period that the states of Rajputana lost all stamina and became deplorably demoralised Towards the close of the eighteenth century, they were almost on the verge of extinction The Maharana of Udaipur, most honoured among the Rajput rulers had to suffer the humiliation of forcing his charming princess Krishna Kumari to commit suicide in order to save his state from an utter collapse Another Prince, Maharaja Ishwari Singh of Jaipur also killed himself to escape dishonour and disgrace at the hands of Holkar Yet a third prince of quite an important state had to sell the jewllery of his deity to meet the monetary demands of the Marathas There were discords and dissension in the house of Jodhpur, which had to accept a very humiliating treaty with the Marathas

In the first decade of the nineteenth century, the states of Rajputana were in an abject state of helplessness and if the Maratha power had not suffered defeat at the hands of the East India Company, they would have completely disappeared from the map of India It was the East India Company, which invited them to accept its political protection on and save themselves from annihilation The treaties of 1817 18 gave the states of Rajputana a new lease of life, which enabled them to live on for another century and a half During this period, they were modernized and set on the way to progress under fetters The states, during the British period, were entirely at the mercy of the political department The dignity and honour and the salutes and the titles, which the rulers enjoyed emanated from the British Government, as rewards for loyalty to the British Crown

Apparently the states of Rajputana were small and had to suffer repeated defeats at the hands of the invaders and aggressors but what makes their history glorious, is the fact that there was hardly a decade in Indian history from the eighth to the eighteenth century, when some of them did not make a serious effort to regain their independence or defend their honour They were too weak to put a successful resistance, but it did not damp their courage or break their tenacity and they continued

the struggle This was responsible for the preservation of pure Hindu culture, religion, literature, temples and traditions in their states

Rajput States had their ministries, revenue system, military organisation and policy of taxation, as laid down in the books of the Gupt period, and they extended their patronage to all forms of Art and Literature The rulers were autocrats in theory, but constitutional in practice Their power was limited by the traditional customery law, religion, public opinion and the influence of the nobility Art and Literature flourished in every state and some times the rulers vied with others in patronizing scholars and encouraging learning Magha the celebrated poet and author of Shishupalbadh, was resident of Marwar In point of the music of words, beauty of similies and depth of meaning, he is considered an equal of Kalidas, Bharvi and Dandi Brahmgupta the great mathematician also flourished in Marwar Bihari and Vrinda were the court poets of Jaipur and Kishangarh Bankidas and Surpamal enjoyed the patronage of Jodhpur and Bundi and more than five hundred scholars received grants of lands from the various rulers Maharana Kumbha of Udaipur was himself an author of note He wrote a commentary on Gitagovinda and books on architecture and music Besides, he was a great builder and the tower of victory, which crowns the fort of Chittor, testifies to his skill in engineering Sawai Jai Singh of Jaipur in the first half of the eighteenth century, was a great builder He founded the city of Jaipur in 1777 In 1820, when it had fallen into neglegerce and decay, a British military visitor remarked 'I am disposed to think that in point of neatness and beauty the main streets of Jaipur would scarcely be surpassed by more than half a dozen streets in London'

Sawai Jai Singh of Jaipur found time to pursue two difficult branches of knowledge, namely Astronomy and Mathematics Under his patronage, several works of great merit were written by scholars, who adorned his court a number of whom were invited by him and his illustrious ancestor Shri Jai Singh wrotes everal works on Astronomy and Astronomical Mathematics, both in Sanskrit and Persian

This Maharaja constructed several instruments for astronomical observations at Jaipur Mathura Banaras, Ujjain and Delhi His passion for accuracy and precision, was so great that he invited at his court, for personal discussions several scholars from Portugal He addressed a letter to the king of Portugal through the viceroy of Goa, to send a learned European scientist and a physician to Jaipur The man who came, was a mathematician He was sent by Shri Jai Singh with sufficient funds to Europe, purchasing books and instruments for astronomical observations He invited French scholars also to study his observatories at Banaras, Mathura, Delhi and Jaipur The Geman scholar, who was invited, has already been mentioned

Learning and scholarship specially flourished under his patronage and it was from Jaipur that Polier procured in 1779 the first complete copies of the Vedas

which were presented to the British Museum By Shri Jaisingh s command Ptolemy's Syntaxius was translated into Sanskrit from an Arabic version The Alma Gest also was translated under the name of Siddhant Samrat Among several other Europeon works, translated into Sanskrit under his orders, particular mention may be made of Euclid's Elements He deputed two Mohammadan scholars abroad for collection of manuscripts on various branches of learning

In every state there was a system of education, which was not devised by any ruler, but had grown and developed during the course of centuries At the capital and in important towns there were educational institutions, which we may call colleges They imparted education in Sanskrit Literature Astrology, Logic and Grammar This was higher education Then in different parts of the cities and in big villages, there were pathashalas, in which reading, writing and elementary arithmetic were taught In small villages, primary schools functioned temporarily during rains-when boys had little work to do Generally, the emphasis was not on book-learning but on utility and usefulness of the Art

At every capital, big or small, there was a manuscript library consisting mostly of Sanskrit books on various subjects and also books in local dialects on poetry, medicine, veterinary science, omens etc It is in Rajasthan that we find the largest number of manuscripts in state and private libraries There are about two hundred Jain Bhandars, which house nearly three lakhs of manuscripts Such a large number of manuscripts, preserved in Rajasthan, is due to the fact that the Rajput rulers protected them from the destructive zeal of invaders, who reduced to ashes big libraries of manuscripts, found in other parts of India

In Rajasthan, there are quite a number of beautiful temples, built during the mediaeval times and also in recent centuries They are fine specimen of Rajput Art and have escaped the aggressors, because the Rajput put up a vigorous defence against them

It would not be out of place to cite a glorious instance When Aurangzeb launched the programme of destroying Hindu temples and idols, the priest of the Vashishthadwaita, Vaishnava sect implored the rulers of Rajasthan to protect the idol of Shrinath When none dared to do it, it was Maharana Raj Singh, who offered to instal the idol in his state When he was asked what he would do if Aurangzeb invaded his state, he said that a force of one lac Rajputs would defend the temple of the deity and not, till the last man had fallen would the bigotted emperor be able to touch the temple Aurangzeb did invade the Maharana s territory but not the temple,

It was the royal house of Chittor, to which Mira, the renowned lady saint belonged

Every court was adorned by a number of Sanskrit scholars and charan poets Many of them enjoyed state patronage in the form of land or cash Such People were spread over the territories of the states and functioned as local intellectual leaders

The Hindu art of painting had sunk into oblivion after Ajanta It remained ignored for several centuries, because there were many political ups and downs and the country was busy in the work of defence and self preservation The states of Rajasthan imitated the artistic tastes and tendencies of the Mughals and encouraged the art of painting at their courts The Jaipur school of painting is the most important in Rajasthan, but those of Jodhpur, Udaipur, Kishangarh and Bundi also are quite important

Rajasthan has a rich Dingal literature Dingal poetry is full of power and vigour and it is very inspiring It is mostly martial, but devotional and love songs also abound The main Rajasthani dialects are Marwari, Mewari, and Hadauti, each spoken in large areas and by lakhs of people The prose and poetry of Marwari is very sweet and refined There is quite a number of works in these dialects in the manuscript libraries of states and the Jain Bhanders

Rajasthan has now bidden farewell to the monarchial system of Government and has accepted the democratic form of rulering and is marking rapid strides towards modernization During the last fifteen years, education and industry have made remarkable progress and not only the masses, but the rulers also have taken the democratic way of life ●

> **Rajasthan exhibits the sloe example in the history of mankind, of a people withstanding every outrage barbarity can inflict, or human nature sustain, from a foe whose religion commands annihilation, and bent to the earth, yet rising buoyant from the pressure, and making calamity a whetstone to courage**
>
> **—James Tod**
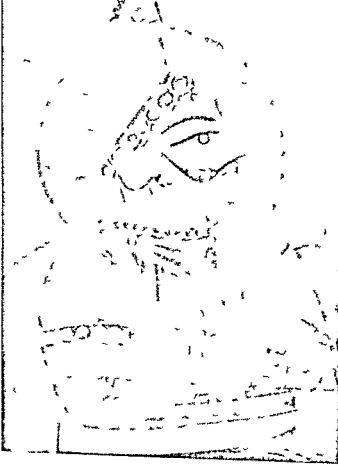
अंतिम हिंदू सम्राट पृथ्वीराज, जिनकी गाथा को पढकर समझ म आजाता है, कि शौय के साथ-साथ एकता का भी प्रयत्न किया होता, हर जगह 'अह' बीच मे न आता, तो न सिफ राजस्थान बल्कि समस्त उत्तराखड का इतिहास कुछ और होता। क्या हम इतिहास को दोहराते ही जायेंगे? कभी भी उससे कोई सबक न लेंगे?

वीर दृढ प्रतिज्ञ और मातृभूमि के लिये सवस्व बलिदान करने वाले महाराणा प्रताप की स्मृति आज भी जन-जन को त्याग और बलिदान के लिये प्रेरित करती है।

जोध
का
अजेय
जि
देख
ही
समभ
आजा
वि
उस
पहुँच
कित
कठिन
होगा
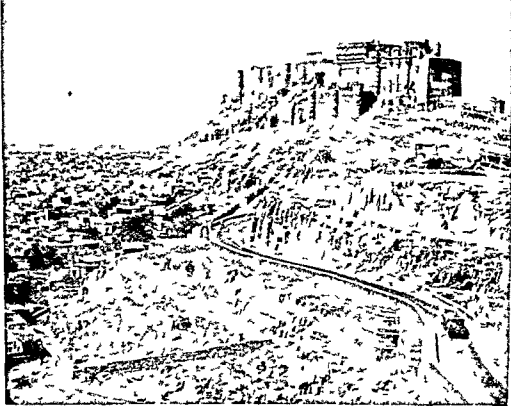
'आमेर' पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र होने के साथ-साथ मध्य युगीन चित्र कला एवं पच्ची कारी का बेहतरीन नमूना
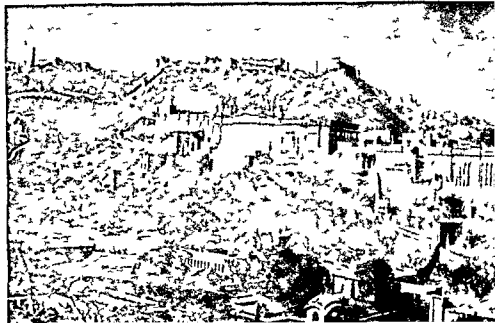
देशनोक (बीकानेर) स्थित करणी माता की मूर्ति, जहाँ चूहे पवित्र समझे जाते हैं। मान्यता है, सफेद चूहों का जोडा देवी है तथा उसका दर्शन शुभ शकुन समझा जाता है।

देशनोक, (बीकानेर) करणी माता का मन्दिर

महाराणा उदयपुर और लोकनायक जयनारायण व्यास

Harish Dubey

# Forgotten Chawand

The passage of time has not diminished the Rajput glory and, in no case, that of Maharana Pratap of Shishodia dynasty that ruled Mewar Maharana Pratap is a great land-mark in the history of India A well known warrior, who displayed great feats of chivalry and courage, is held in high esteem by the people of this land A life dedicated to the high cause of freedom, honour and integrity of the land and its people Rana Pratap has done a great service to our country He has been a constant source of inspiration But it pains to think that so little should have been known about the antecedents of the life of one of the India s greatest heroes Chawand is the place, where he breathed his last

At a distance of thirty four miles in the south of Udaipur, Chawand is a small village with a mixed population of little over three thousands nursing in its bosom the story of a great warrior and zealous lover of freedom Surrounded by high hills and thick and abundant forests, it provided a great protection to a hardy but small army of Rana Pratap who, due to want of men, money and arms, had to retreat to the steadfastness of hills Deceived by his own relatives, impoverished by the protracted struggle against 'Akbar', the mightiest of Moghul Emperors, at whose hand he had to suffer the reverses, Pratap took shelter at this place, where he found himself safe and protected, so that he could regain his strength And this place was the famous rendezvous of devoted Bhama Shah and needy Pratap Getting the timely help, he prepared himself with arms and men and engaged himself in the fierce struggles against the Moghul regime Fired by the great passion of honour and freedom, Rana Pratap, a great and true soldier as he was, fought to the last tired but unbroken disappointed but unyielding Bequeathing the legacy of struggle, misery and trouble, he crowned his son the successor with crown of thorns and passed away Today there are left but few remains of that mighty warrior and

*true patriot, who continues to remind us of ancient chivalry, unprecedented courage* and bravery

The whole land of Mewar, in one way or the other, is reminiscent of glorious past of Rajput chivalry and sacrifice but the relics of Rana Pratap, though shorn of aristocratic grandeur and colourful display, are the rich memory of a life of agony misery and trouble but unyielding resistance

The "Chhatri , where the last of Rana Pratap lie buried and the bases of which are washed by the waters of the tank of Kejed, is a mile east of Chawand It is a very simple structure thirty feet high, with a rectangular base of about twenty feet over which a "Chhatri", in a simple Rajput style, is made

A mile south east of this Chhatri', is the ruined palace of Rana Pratap, which tells the painful story of gross carelessness and neglect of those people, who highly acclaim the man, who lived in it The ruined palace does not now contain anything beyond a dilapidated outer wall indicating that it once circled a big structure, that was built on a hill A few hundred yards north, is the temple of goddess 'Chawanda', whose blessings were the greatest reward to the great Rajput and who continues to bless even today It continues to cater to the spiritual need of the people About a mile north east of Chawand is a very small village, Bandoli, peopled *by Bheels and Dangis It is said to be the place and also as the relics testify, where* the Rana used to confer with his people A fair, held annually in the memory of their beloved hero, is attended by thousands of Bheels It reminds us of the great love and respect that he commanded Col Robert Tod is very rich in his enologies of this Rajput hero Summed together all this makes painful but important history to be read by every true patriot

It is both sad and strange that this place, which is essentially connected with the memory of Rana Pratap, should have met with so much neglect Lulled as we were by our self-complacency after freedom, we were apt to forget the high ideals of honour, chivalry and heroism of our ancestors The Chinese aggression that came as a shock, has roused us from slumber, in which we had fallen It has made us painfully conscious of the need of protecting the freedom, honour and integrity of the nation and people And for this, rich funds of inspiration can be *drawn from the heroic sacrifices of the warriors like Pratap and Shivaji It is also* high time that some attention should be paid to the old relics, as of Chawand to brighten the now dim images of our glorious ancestors, so that we could always remain guided in our earnest efforts for safeguarding our high ideals ●

डा० बाबूराव जोशी

# राजस्थान का परीक्षा-काल

स्वर्गीय मानवेन्द्रनाथ राय ने अपनी पुस्तक 'दि हिस्टोरिकल रोल ग्राफ इस्लाम' मे लिखा है कि ससार की कोई भी सभ्य जाति इस्लाम के इतिहास से उतनी अपरिचित नही है जितने कि हिन्दू है और ससार की कोई भी जाति इस्लाम को उतनी घृणा से नही देखती जितने कि हिन्दू देखते है। राय महोदय ने जो बात लिखी है वह एक अ श मे भारत के मुसलमानो पर भी लागू होती है क्योकि इस देश के मुसलमानो मे भी इस्लाम के मौलिक स्वभाव, गुण और उसके ऐतिहासिक महत्व का ज्ञान बहुत ही छिछला रहा है। भारत मे मुसलमानो का अत्याचार इतना भयानक रहा है कि सारे ससार के इतिहास म उसका जोड नही मिलता। इन अत्याचारो के कारण हिन्दुओ के हृदय मे इस्लाम के प्रति जो घृणा उत्पन्न हुई उसके निशान अभी तक बाकी है।

बात यह है कि इस्लाम अपने प्रगतिशील युग म भारत नही आया, अथवा आया भी तो दक्षिण के समुद्र तटो पर व्यापारियो के साथ या दाहिर की पराजय के बाद सिन्ध व उसके आस पास के भागो म। महमूद गजनी और गौरी और बाबर सच्चे इस्लाम के प्रतिनिधी नही थे। उनमे अबूबक्र, उमर और अली की धार्मिक तेजस्विता नही थी। प्रोफेसर हूमायू कबीर ने अपनी पुस्तक 'अवर हरिटेज' म लिखा है, 'य जो नये लोग भारत म आये उन्होने इस्लाम के तत्व का भले ही न समझा हो किन्तु उसकी बाहरी बातें ग्रहण कर ली थी। गगा व सिन्धु के किनारे इस्लाम का झण्डा गाडने वाले अबूबक्र और उमर जैसे लोग नही थे बल्कि वे ये ईरानी थे जो विजय साम्राज्य के नशे म अन्धे होकर झूम रहे थे। य मध्य एशिया के वे बर्बर लोग थे जिन्होने इस्लाम की टोपी अभी हाल ही म पहनी थी।

इतिहास लेखको का मत है कि जब इस्लाम भारत म आया तब यहा बौद्ध-ब्राह्मण सघर्ष चल रहा था। राजस्थान म भी इसका पर्याप्त प्रभाव पडा था। उन दिनो दोनो पक्ष अपने लिए राज्य की सहायता चाहते थ। क्षत्रिय राजा जब बौद्ध होने तब ब्राह्मण क्षुब्ध हो उठते थे। क्षत्रियो को पूर्ण रूप से वश म न होते देख कर ब्राह्मणो ने नया तरीका निकाला। जो विदेशी सीथियन, हूण व शक वश के लोग इस देश म राज्य सत्ता पाने का सघर्ष कर रहे थे उन्हे ब्राह्मणो ने आबू के कुण्ड पर यज्ञ कर के राजपूत बना लिया। इससे विदेशियो की बर्बरता जाती रही और क्षत्रिय मान लिए जाने के कारण एकता व

ब्राह्मणों के कृतघ्न हो गए दूसरे ब्राह्मणों का पलड़ा भी भारी हो गया। डा० भगवतशरण उपाध्याय ने लिखा है कि "वर्तमान राजपूतों के अनेक कुल हूणों के और गुजरों से प्रादुर्भाव हुए हैं। गुजरों ने ना भारत मे एक विशिष्ठ सम्राट कुल गुजर-प्रतिहार की नींव डाली और भारत के एक विस्तृत भाग गुजरात का नाम अपनी सज्ञा से सार्थक किया।

मुसलमानी आक्रमण के बाद भारतवर्ष पहले पहल पराधीन हुआ और पहले पहल ऐसे लोगों का आधिपत्य हुआ जो यहां के धर्म को अपने धर्म से एकाकार करना नहीं चाहते थे। इतना ही नहीं ये लोग ऐसी कोशिश कर रहे थे कि भारतीय जनता ही अपना धर्म छोड़कर मुसलमान हो जाय। सन् ७१२ मे सिंध पर मुसलमानों का आक्रमण हुआ और मुहम्मद गोरी ने सन् ११९१ में दिल्ली को जीता। सिंध व दिल्ली की सीमाएं राजस्थान से लगी हुई है। राजस्थान के चार पांच सौ वर्षों पहले चेतावनी मिल गई थी लेकिन उस समय राजस्थान का राजनैतिक जीवन इतना मन्द हो गया था कि खतरे को अपने दरवाजे पर देख कर भी राजस्थान के राजाओं ने उसका मुकाबला करने की कोई तैयारी नहीं की। हर्षवर्धन के बाद केन्द्र की शक्ति टूट गई थी और राजस्थान के राजा आपस में युद्ध करके अपनी शक्ति नष्ट कर रहे थे। उस समय के राजा-महाराजाओं को अपना राज्य व राजधानी इतने प्यारे थे कि वे देश के अस्तित्व को ही भूल बैठे थे। किसी राजा की सुन्दरी कन्या से विवाह करना और उसके लिए वीरता का प्रदर्शन करना बड़ी अच्छी बात मानी जाती थी और ऐसे अधिक से अधिक विवाह करने एवं विलासी जीवन व्यतीत करने में उनकी शक्ति नष्ट हो रही थी। उस समय प्रायः प्रत्येक राजा को दूसरे राजा से कुछ न कुछ शिकायत थी फलतः कोई भी चार पांच राजा किसी विशिष्ट उद्देश्य के लिए संगठित हो कर एक दूसरे का साथ देने को तैयार नहीं थे। इसमे कोई सन्देह नहीं कि पृथ्वीराज, राणा सांगा को कुछ राजाओं का सहयोग प्राप्त हुआ, किन्तु इसे उस युग के हिन्दू स्वभाव के अपवाद का ही उदाहरण समझना चाहिए।

एकता, संगठन व राजनैतिक चेतना के अभाव मे उस युग के अधिकांश राजाओं का जीवन जड़ बना हुआ था। मुसलमानी आक्रमण के बहुत बड़े खतरे को अपने सिर पर देख कर भी किसी राजा को यह नहीं सूझा कि वह आक्रमण कर उसके घर में जाकर हमला करें। राजाओं को रक्षा परक युद्ध लड़ने की आदत सी हो गई थी। जयचन्द्र विद्यालंकार ने 'इतिहास-प्रवेश' मे लिखा है "राजपूतों की जिस वीरता की बड़ी प्रशंसा की जाती है, वह सदा रक्षक परक युद्धों में ही प्रकट हुई वह अपना अन्त निकट देख निराश होकर मरने मारने पर तुले हुए आदमियों की वीरता होती थी। उनमे महत्वाकांक्षा की वह प्रेरणा, विशाल दृष्टि का वह स्वप्न ऊंची सोच कभी न होती थी जो मनुष्यों को नयी भूमि खोजने और जीतने के खतरे उठाने के लिए आग करती है बेशक कायर बन कर आधीनता मानने की अपेक्षा वैसी वीरता की मौत मरना भी अच्छा था। किन्तु वह बहादुरी का मरना ही था। बहादुरी का जीना नहीं कहा जा सकता।'

'यथा राजा तथा प्रजा' के न्याय के अनुसार जब राजाओं को ही यह ज्ञान नहीं था कि देश उनका है तो जनता में इतनी चेतना कहां से आती। उन दिनों राजस्थान के जन जीवन में एक वर्ग था राजा महाराजाओं का जिसमें उनके कर्मचारी और दरबारी भी सम्मिलित थे दूसरा वर्ग था शेष लोगों का जो

मेहनत मजदूरी करके अपना निर्वाह करते थे। पहले वर्ग को जीवन के सभी आनन्द उपलब्ध थे। यह शिक्षित, सस्कृत व धनी लोगो का वर्ग था। राज्य से इसी वर्ग का सरोकार था। दूसरे वर्ग को राज्य से कोई सरोकार नहीं था। जब पहले वर्ग को दूसरे वर्ग से कोई सहानुभूति नही थी तो फिर जनता के हृदय मे राजा महाराजाओ के प्रति सहानुभूति कैसे हो सकती थी। इन दिनो राजा जुल्मी और प्रजा मजलूम थी। नतीजा यह हुआ कि यही कही किसी राजा ने दुश्मनो का विरोध किया भी तो जनता ने कोई विरोध नही किया।

भारतवर्ष मे पचायत की प्रथा बहुत दिनो से चली आ रही थी और राजस्थान के गावो पर भी उसका प्रभाव था। गाव के लोग स्वावलम्बी व स्वतंत्र थे। राज्य से उनका सम्बन्ध कर देने मात्र का था। भाग्य मे लोगो का बडा विश्वास था और उसका सहारा लिए हुए वे निश्चिन्त रहते थे। स्वायत्त शासन की इसी अतिवृद्धि के कारण ग्रामीण जनता की दृष्टि सकीर्ण हो गई थी और अपने ग्रामो की दुनियाँ के बाहर बडी दुनिया मे रुचि लेना छोड दिया था। न अपने राज्य के शासन मे उनकी रुचि थी, न प्रान्त व देश के शासन मे। वह समझती थी कि खेती बारी, वाणिज्य, व्यवसाय और धर्म के अतिरिक्त और कोई ऐसा प्रश्न नही है जिसकी ओर उसे उन्मुख होना चाहिए। राजा के लिए प्रजा आहार थी। इसलिए जब राजाओ को आहार बनाने वाले लोग बाहर से आ गये थे, तो जनता ने कोई खेद प्रकट नही किया।

जो वस्तुएँ मेहनत या पुरुषार्थ से प्राप्त होती हैं, उनकी याचना के लिए देवी देवताओ की प्रार्थना करना हिन्दुओ का बहुत पुराना स्वभाव था। इस युग तक आते आते वे देश-रक्षा जाति रक्षा और धर्म-रक्षा का भार भी देवताओ पर छोडने लगे। ज्यो ज्यो उनका पुरुषार्थ और साहस घटता जाता था त्यो त्यो उनकी ऐंठ और बढती जाती थी। उनका धार्मिक सस्कार विकृत हो गया था और वे केवल जनेऊ व जात को ही सर्वोपरि मान बठे थे। उनकी मान्यता थी कि यदि ये एक बार गये तो वापस नही लाये जा सकते। अपनी श्रेष्ठता व अहकार की वृद्धि लोगो मे काफी हो गई थी। अलबरूनी ने लिखा है कि "हिन्दू लोग समझते हैं कि उनके देश-जैसा दूसरा देश नही, उनके राजाओ जसे दूसरे राजा नही उनके धर्म जैसा दूसरा धर्म नही और उनके शास्त्रो जसा दूसरा शास्त्र नहीं है। यदि तुम खुरासान और ईरान के शास्त्रो पर विद्वानो के सम्बन्ध मे उनसे बात चीत करोगे तो वे तुमको मूर्ख ही नही मिथ्यावादी भी समझेंगे। व अगर प्रवास करें और दूसरो से मिलें जुलें तो उनकी यह प्रवृति नही रहेगी, कारण उनके पूर्वज ऐसे सकुचित विचारो के नही थे।

कविवर श्यामलदास ने वीर-विनोद मे लिखा है कि जब शेरशाह से हार कर हुमायूँ ईरान भाग गया था तो वहा ईरान के बादशाह ने एक दिन हुमायूँ से पूछा कि आपने हिन्दुस्तान की वीर-जाति के साथ विवाह सम्बन्ध किया या नही। हुमायूँ ने भारत की स्थिति बताई और कहा कि पठान तो हमारे शत्रु हैं और राजपूत हमसे सम्बन्ध नही करते लेकिन यह बात उसके मन मे बैठ गई और मरने के पूर्व उसने अकबर को आदेश दिया कि वह राजपूतो को अपना बनाने के लिए उनके साथ अपना विवाह सम्बन्ध जोडे। अकबर

ने पिता की इच्छानुसार राजपूत सरदारो को कहा कि वे अपनी बेटिया शाही खानदान म ब्याह और शाही खानदान की बेटिया अपने यहा लें। किन्तु अकबर का यह सदाशयता पूर्ण प्रस्ताव भी राजपूतो के गले के नीचे नही उतरा, वे घबरा गये। सोचने लगे, कि अगर मुसलमानिन घर म आ गई तो परिवार का धर्म नष्ट हो जायेगा सबके सब मुसलमान हो जायेंगे, किन्तु यदि हम अपनी बेटी शाही खानदान म ब्याह देंगे तो उससे एक बेटी ही जायगी और जिन राजाओ ने अपनी बेटिया को शाही खानदान म ब्याहा व दुबारा उन्ह अपने घर नही ले गये।

यदि भारत म मुसलमानी अत्याचार भयानक रहा तो तत्कालीन राजपूतो की वीरता की कहानी भी कुछ कम लोमहर्षक नही है। कम से कम राजपूत तो तुर्कों की तलवार को कुछ नही समझते थ। सही बात तो यह है कि मुसलमान तलवार के जोर से नही बढे भारतवासियो ने ही उनका सामना ही नही किया। इसी प्रकार इस्लाम भारत म खड्ग के बल से नहीं फला। हिन्दुत्व के जुल्म से घबराये हुए गरीब लोग ही प्राण बचाने के लिए इस्लाम के झण्डे के नीचे चले गये। सारे भारत की तरह राजस्थान का हिन्दुत्व भी छुई मुई का सा नाजुक हो गया। इसीलिए तो उन दिनो यदि गाव के कुएँ म मुसलमान पानी डाल देता तो सारा गाव स्वत मुसलमान हो जाता। शास्त्रो के प्रहरियो को यह सूझा ही नही कि पानी की तरह मनुष्य को भी शुद्ध किया जा सकता। आक्रमण के रास्ते म गाय पड जाती तो हिन्दुओ की स्वत ही ही पराजय हो जाती थी और यदि रास्ते मे मदिर पड जावे तो उन्ह कपकपी छूटने लग जाती थी।

हिन्दुओ की दूसरी कमजोरी थी उनका जात पाँत म बटा रहना। विपत्ति मे यदि वैश्य होते तो राजपूत उनकी मदद नही करते और ब्राह्मण व शूद्र मे तो मदद करने का प्रश्न नही होता था। हिन्दुओ के आपसी द्वेष की बहुत सी कहानियाँ प्रचलित हैं जसे।

१ जिसका बनिया यार उसे दुश्मन क्या दरकार।

२ खत्री पुत्रम् कभी न मित्रम् जब मित्रम् तब दगा दगा।

३ बामन, कुत्ता हाथी, आपन जाति न साथी।

४ कायथ कुक्कुट, कौआ तीनो जाति पोसौआ।

५ और जात शत्रु भली मित्र भला नही जाट।

जो जाति इस प्रकार टुकडो मे बट जाती थी। अपनी भक्ति व प्रेम का जाति वालो का ही अधिकार मानती है और दूसरी जाति के विद्वान को मूर्ख, दानी को कृपण बली को दुर्बल, सच्चरित्र को दुश्चरित्र मानती हैं वह देश कैसे स्वतन्त्र रह सकता है कैसे समृद्ध हो सकता है? हिन्दुओ ने जात पाँत और धर्म रक्षा की कोशिश मे देश को बर्बाद कर दिया।

भारत म इस्लाम का आरम्भिक इतिहास मार-काट धर्म-परिवर्तन, असभ्यता और अन्याय का इतिहास है। मुसलमान एक आदर्श, एक धर्म और एक सुगठित समाज मे आबद्ध थ किन्तु हिन्दुत्व ढीला हो चुका था फिर भी इस्लाम का मुकाबला राजस्थान के राजपूतो ने खूब किया और राजस्थान मे ही नही भारत

मे इस्लाम की धारा आसानी से नही जमने दी । इस्लाम हिन्दुत्व का ठीक विरोधी मत था और वह अपनी संस्कृति को बचाये रखने के लिए पूरी तरह से सतर्क था । हिन्दुत्व को इस्लाम से अपनी रक्षा करने के लिए अनेक संकटो का सामना करना पडा । हिन्दुत्व पराजित प्रजा का धर्म था इस्लाम विजेताओ का । नतीजा यह हुआ कि हिन्दुत्व अपनी रक्षा के लिए घोंघे की तरह सिकुड कर अपनी खाली मे छिपने लगा । उसने जात पात के नियम कडे बना दिये, लडकियो को बचपन मे ही ब्याह देना आम बात हो गयी और छूआछूत की भावना पहले से भी भयानक हो उठी । हिन्दुओ के हृदय मे मुसलमानो के प्रति जो घृणा दब गयी थी, उसी की अभिव्यक्ति इस प्रकार हुई कि वे मुसलमान का छुआ पानी भी न पीने लगे । पर्दे की प्रथा कुछ तो पहले से ही थी, मुसलमानी काल मे राजस्थान पर भी इसका सबसे ज्यादा असर हुआ ।

इधर, यद्यपि हिन्दू लोग मुसलमानो से त्रस्त थे तथापि उन्होने अनेक अवसरो पर अपनी उदारता का भी परिचय दिया । राणा कुम्भा के प्रसिद्ध कीर्ति स्तम्भ मे हिन्दुओं के सब देवी-देवताओ की मूर्तियो के साथ अरबी अक्षरो मे अल्लाह का नाम भी लिखा है । जयचन्द्र जी के शब्दो मे "वह निराकार ब्रह्म का अरबी नाम है । इस प्रकार इस्लाम के बुनियादी विचार को हिन्दुओ ने खुशी खुशी स्वीकार किया है ।" इसी प्रकार उदयपुर मे भी एक मस्जिद है जिसे महाराणा ने अपनी मुस्लिम प्रजा के लिए बनवाया था । यह नहीं कहा जा सकता कि सभी मुसलमान संगठित रूप से हिन्दू धर्म की जड खोद देना चाहते थे । प्रारम्भ मे अवश्य लडाइयाँ हुई मन्दिर व मूर्तियां तोडी गयी और हिन्दुओ को मुसलमान भी बनाया गया । लेकिन यह दो संस्कृतियां की प्रारम्भिक टकराहट थी । धीरे धीरे दोनो जातियो मे मेलजोल बढने लगा । मुसलमानो की सभी लडाईयाँ हिन्दुओ के खिलाफ नही थी, वे आपस मे भी लडते थे । अनेक बार ऐसा भी हुआ कि हिन्दुओ ने मुसलमानो का और मुसलमानो ने हिन्दुओ का साथ दिया । बाबर व राणा सांगा की लडाई मे मेवात के हसनखा और सुलतान महमूद लोदी राणा सांगा के साथ थे । मानसिंह तो अकबर का सेनापति ही तो था ।

साहित्य व कला की सेवा मे मुसलमानो ने साम्प्रदायिकता नहीं आने दी । सुन्दरदास को तो शाहजहा ने महाकविराज की उपाधि दी और अकबर ने मानसिंह, पृथ्वीराज आदि अनेक वीरो और कलाकारो का सम्मान किया था । जोधाबाई के घर मे तुलसी के वृक्ष बराबर रहे, होम व यज्ञ की वेदी सदैव जलती रही । उसने हिन्दू-धर्म की विधियां को राजमहल मे भी नही छोडा । हिन्दुओ के बहुत से रिवाज ऊंचे वर्ग के मुसलमानो मे अपने आप चले गये । आंख लगने से बचने के लिए न्योछावर उतारने की परिपाटी बादशाहो के महलो मे भी थी और जब शाहजादे लडाई के लिए निकलते थे, तो बाहो मे मन्त्रसिद्ध यन्त्र बंधवाते थे । बहुत से बादशाह हिन्दू योगियो से आशीर्वाद मागा करते थे और हिन्दू मठों की नकल पर मुस्लिम पीर भी गद्दी स्थापित करते थे । अजमेर की दरगाह इसका अच्छा उदाहरण है । कहा जाता है कि राजपूतो की देखा-देखी कुछ मुसलमानो ने भी जौहर को अपना लिया था । इसी युग के दादू-दयाल, रज्जबजी सुन्दरदास, दरिया साहब आदि ऐसे अनेक सन्त हुए थे, जिन्हें सूफी साधुओं और भारतीय साधको के मिलने से उत्पन्न जाग्रति का परिणाम ही कह सकते हैं ।

कला व शिल्प की दृष्टि से राजस्थान मे इन दिनो अच्छा काम हुआ। १६ वीं शताब्दी म राजस्थान में मुगल-कला से प्रेरणा ले कर नयी चित्र शैली का जन्म हुआ। १७ वी शताब्दी म राजस्थान के अनेकों क्षेत्रो मे इसका विकास हुआ, जिसमे मेवाड मुख्य हैं। विषय की दृष्टि से इस शली म मुख्यत राग-माला, नायिका भेद, कृष्ण-लीला, बारह-मासा आदि कथाचित्र बने हैं। यह शैली आलकारिक और वर्ण-विधान म अपभ्र श-शैली के निकट है। १७वी शताब्दी के अन्त मे इस शली म आलकारिता कम होने लगी और इसका वर्ण विधान भी अपेक्षाकृत कम तीखा हो गया। इस काल म असख्य चित्र बने, मेवाड, बीकानेर, जोधपुर, बू दी इसके प्रमुख केन्द्र रहे जहां इस कला का पर्याप्त विकास हुआ। १८ वीं शताब्दी के मध्य में जयपुर भी चित्र-कला-केन्द्र बना और यहा अनेक भावपूर्ण चित्रों की रचना हुई। जयपुर के चित्रो मे रग बहुत ही आकर्षक थे और कलम सधी हुई थी। इसी समय किशनगढ-शली भी पराकाष्ठा पर पहुँची।

राजपूत-कलम भारत की राष्ट्रीय कला-प्रवृत्ति से फूट कर निकली है। मुगल-काल की भांति राजपूत काल मे व्यक्ति के चित्रो की प्रधानता नही है, मुगल-काल की भांति वह जीवन को भोग, आनन्द और उल्लास की दृष्टि से नही देखती। उसके लिए जीवन अनन्त साधना का विषय है। राजपूत कलम किताब के पन्नो पर भित्ति से उतर कर आयी है उसम सूक्ष्मता व मोहकता है। राजपूत-कलम से एक प्रकार की अपरिवर्तन-शीलता की छाप दिखायी देती है। 'उसम धार्मिकता और शृ गारिकता भी है। अजन्ता कलम की विशेषता 'आदश की प्रधानता उसम भी है। मोगल-कलम दरबारियो के लिए थी, राजपूत-कलम जनता के लिए। राजपूत-कलम के विषय रामायण व महाभारत से प्राय थे, वष्णव धम और शैव धम से भी आये थे। उसका प्रेम का चित्रण बडा ही सुन्दर है। उसका प्रेम आदश को स्पश करता है। ●

### वतमान को जियें

मनुष्य के सब विचार या तो अतीत के विषय में होते हैं, या भविष्य के। वतमान पर वस्तुत हम बहुत ही कम विचार करते हैं—करते भी हैं तो सिफ उसकी सहायता से भविष्य की कल्पना करने के लिए। वतमान कभी हमारा लक्ष्य नहीं होता, भूत और वतमान साधन मात्र होते हैं और केवल भविष्य हमारा लक्ष्य। इस प्रकार हम उपस्थित क्षण को नहीं जीते, बल्कि जीने की आशा करते रहते हैं। और हरदम अनागत सुख की योजना मे डूबे रहने के कारण हम उपस्थित सुख को पकड नहीं पाते।

—बेज-पास्कल

|| श्री हरि ||

शीला भार्गव

# मध्य-युग : आर्थिक व सामाजिक जीवन

इससे पूर्व कि मध्यकालीन युग के राजस्थान के सामाजिक और आर्थिक जीवन का विवेचन किया जाये, यह ठीक रहेगा कि हम उस युग की राजनैतिक स्थिति का भी संक्षेप मे सिंहावलोकन करें। प्रत्येक राष्ट्र की राजनैतिक गतिविधि का समाज पर प्रभाव पडता है तथा साथ ही उस समाज के आर्थिक ढाचे पर भी। कई बार तो इन तीनो का समावेश इतना हो जाता है कि एक के बगैर दूसरे का अस्तित्व संभव ही नही हो सकता। उदाहरण के तौर पर आज हम साम्यवादी शासन प्रणाली मे राजनैतिक आर्थिक और सामाजिक ढाचे को अलग कर ही नही सकते। इस कारण मध्यकालीन राजस्थान की राजनैतिक स्थिति को जानना आवश्यक हो जाता है।

जब हम मध्यकालीन राजस्थान के सामाजिक व आर्थिक जीवन पर एक विहगम दृष्टि डालते हैं, तो हमारे सामने उस समय के राजस्थान का एक ऐसा राजनैतिक नक्शा उभर आता है जिसमे कि अलग अलग क्षेत्रो पर अलग अलग राज्य थे, जो कभी भी संगठित होकर कार्य न कर सके। मुख्य रूप से राजपूतो के निम्न घराने राजस्थान के अलग-अलग क्षेत्रो पर राज्य कर रहे थे।

१ राणा वंश — मेवाड
२ राठौर वंश — मारवाड
३ हाडा वंश — बूंदी व कोटा
४ जयपुर घराना

कर्नल टॉड के राजपूताने के इतिहास तथा श्री गौरीशंकर हीराचन्द के द्वारा रचित राजपूताने के इतिहास से ऊपर लिखित राज्य वंश ही हम उस युग के राजस्थान मे पाते हैं। इन सभी घरानो के अलावा और कई छोटे २ राजा रजवाडे थे, परन्तु उनका कोई स्वतन्त्र व्यक्तित्व नही था। इस प्रकार मध्यकालीन युग मे राजनैतिक दृष्टि से राजस्थान छिन्न भिन्न अवस्था मे था, जिसने जागीरदारी प्रथा को जन्म दिया। यूरोप मे भी उस समय सभी देशो मे जागीरदारी प्रथा थी। राजस्थान के राज्यो मे विशेषकर मेवाड राज्य मे जागीरदारी प्रथा शक्तिशाली थी। उस युग मे सम्पूर्ण राजस्थान मे लोगो का भाग्य और दुर्भाग्य राजा पर निर्भर था। इस प्रथा के कारण राजस्थान का कोई भी राजा देश और राज्य के लिये धन्य जागीरदारी

नही होते थे। राज घरानो मे प्रतिस्पर्धा बनी रहती थी। इस प्रकार की प्रति-द्वन्द्विता से सदा राज्या का पतन हुआ है। महाराणा प्रताप और मानसिंह की घटना ही राजस्थान की केवल अकेली घटना नही हैं। सम्पूण राजस्थान का इतिहास इस प्रकार की घटनाओ से भरा पडा है।

इस प्रकार की शासन व्यवस्था मे लोगो को धार्मिक भावना की पूरी स्वतन्त्रता थी और अधिकतर राज्या की ओर से कोई भी दबाव नही डाला जाता था। भारत का प्रधान और पुराना धम सनातन धम है जो पुराणो पर आधारित है। कनल टाड के अनुसार राजस्थान मे इन पुराणो का अधिक प्रभाव था। राजपूत लोग महादेव की पूजा किया करते थे और महादेवजी का ही अपना अराधक देवता मानते थे। हिन्दुओ के अलावा इस समय राजस्थान म जैन सम्प्रदाय वाला की सख्या काफी थी। कनल टाड के अनुसार बहुत से राजपूत इस सम्प्रदाय के लोगो को महत्व देते थे। मेवाड राज्य के अनेक मन्त्री और राज्य विभाग के अधिकाश कमचारी जनी थे।

राजस्थान के सब राज्या म विशपकर मेवाड मे ब्राह्मण सन्यासिया की, गुसाइयो की बहुत बडी सख्या थी। मेवाड की आमदनी की वार्षिक आय का पाचवा भाग धार्मिक वृत्तिया पर खच किया जाता था। ब्राह्मणो का राज घरानो पर विशेष प्रभाव रहता था। पुजारियो का पूरा अधिकार मन्दिरो पर होता था। धम में अटूट आस्था होने के कारण राजपूतो म नतिक सिद्धान्ता के प्रति लगाव था, जिन पर वे युद्ध के समय भी दृढ रहते थे। इसके वशीभूत पृथ्वीराज ने गौरी को छोडा था। कनल टाड के अनुसार 'लडाकू राजपूतो मे उनके पूवजो के गुणो का जितना सामञ्जस्य मिलता है, उतना अन्यत्र न मिलेगा।'

यह सभी स्वीकार करते है कि राजस्थान मे, स्त्रिया को, राजपूतो ने जो सम्मान दिया वह किसी दूसरे देश मे नही मिला।

राजपूत स्त्रिया भी राजस्थान मे अपने मर्दों से किसी हालत में कम नही थी। उनके बलिदाना मे सबसे प्रधान सतीप्रथा है जिसकी शुरूवात शक लोगो ने की। उनके बाद दूसरे लोगों मे उसका प्रचार हुआ। यह विश्वास था कि सती होने वाली स्त्री न सिफ अपने और अपने पति को पापो से मुक्त करती थी बल्कि दूसर जन्म म अपने पूव जन्म के पति का भी प्राप्त करती थी। इस विश्वास ने सती होने वाली स्त्रिया के साहस व शक्ति मे वृद्धि की।

सती प्रथा के अलावा उस समय राजपूतो मे लडकी को पदा होते ही मार डालने की प्रथा थी इसके कई कारण थे। राजस्थान के इतिहास मे कई युद्ध लडकियो के विवाह के लिय हुए थ। मेवाड को युद्ध से बचाने के लिये राजकुमारी कृष्णा को जहर का प्याला पीना पडा था और सयागिता के कारण जयचन्द और पथ्वीराज मे बर बना जिसका अत न सिफ पथ्वीराज की हार बल्कि समस्त उत्तरी भारत की हार म हुआ। इसके अलावा उस समय राजस्थान म विशपकर राजपूतो मे स्त्रियो के बलिदान का एक और तरीका था--वह है 'जौहर प्रथा।" इसम बहुत बडी सख्या मे राजपूत बालायें अग्नि की ज्वाला मे जल जाती थी। इसका उल्लेख मेवाड के इतिहास म भी कई जगह मिलता है। राजपूत स्त्रिया का जीवन-बलिदाना का जीवन था। शत्रु के हाथ पडने के बजाय वे प्राणोत्सग की तयारी रखती थी।

कर्नल टॉड के अनुसार, "राजपूतो का इतिहास ही भारतवर्ष का इतिहास है, इस देश के इतिहास से यदि राजपूतो के इतिहास के हिस्से को निकाल दिया जाय तो, इस देश का इतिहास बहुत निर्बल हो जायगा।" राजस्थान के कई राज्य थे जिनकी अलग-अलग रीतिया थी। उस समय यहा के लोगो म और भी कई कमिया और बुरी आदतें थी—जसे अफीम खाना और मदिरा पीना।

राजस्थान के उस समय के इतिहास म राजपूत जात का ही विशेष याग व महत्व रहा है। अफीम व मदिरा का सबसे ज्यादा प्रचलन इन्ही लोगो म था। यह जाति बहादुर व स्वाभिमानी थी। वे शिकार के बहुत शौकीन थे—उन्होने बडे बडे जगल शिकार के लिये सुरक्षित रखवाये थे—उन्हे इसी कारण कुत्तो और बन्दुको से बहुत लगाव था। राजपूत लोग तलवार, बर्छी और बन्दुको का प्रयोग करते थे। जन्म मृत्यु को यह लोग अधिक महत्व नही देते थे। प्रत्यक राजपूत अपनी सतान से शौय व साहस की अपेक्षा करता था। युद्ध कौशल उनके जीवन की प्रतिभा थी।

उस युग के रजवाडे सगीत प्रिय भी थे। वे स्वय गाने बजाने के शौकीन होते थे। अच्छे गाने व बजाने वालो का आदर करते और आश्रय देते थे।

राजस्थान के राजाओ म कोई ऐसा नही था जो, पढना-लिखना न जानता हो। वे शिक्षित वग का आदर करते थे। खासकर 'कवि राज दरबारो मे आश्रय पाते थे। महाकवि बिहारी जयपुर के महाराजा जयसिह के दरबारी कवि थे। कई बार राजाओ की झूठी तारिफें करके कविगण पैसा ऐठ कर ले जाते थे। कर्नल टाड के अनुसार राजस्थान के राजाओ का युद्ध म हारने का बडा कारण यह भाट लोग थे, जो कभी भी सत्य राजाओ के सामने नहीं आने देते थे, और झूठी बडाइयाँ करके उन्हे अधेरे मे रखते थे।

उस समय साधारणत सारे राज्यो की जनता की आर्थिक स्थिति एक समान ही थी। कुछ राज्यो की स्थिति दोषयुक्त नीतियो के कारण खराब हो जाया करती थी। आय के साधन सभी राज्यो म करीब करीब एक जसे ही थे।

मवाड म भूमि का मालिक किसान माना जाता था और इस अधिकार को वहा के किसान बपौती कहते थे। किसानो को कभी कोई भूमि से बेदखल नही कर सकता था। न, हा उस पर कोई कर लगाया जाता था। सारा अनाज मेवाड राज्य को भेजा जाता था।

मारवाड मे खानें (Mines) अच्छी आय का साधन थी। मकराना मे सगमरमर की खानें है जहाँ स मुगलो के समय महल बनाने के लिय सगमरमर पत्थर भेजा गया था। आय का प्रधान साधन यही खनिज पदाथ थे। सूत के मोटे कपडे और कम्बल तयार किये जाते थे। बन्दूकें तलवारें और अन्य अस्त्र-शस्त्र जोधपुर की राजधानी म और पाली मे बनते थे पानी के बने हुये लोटे व सदूक बहुत श्रेष्ठ माने जाते थ। लोहे की कढाइयाँ यहीं बनती थी, जो काफी टिकाऊ व मजबूत होती थी। वाणिज्य के लिय मेवाड मे भीलवाडा बीकानेर म चूरू जयपुर म मालपुरा और मारवाड म पाली प्रसिद्ध व्यापारिक स्थान थे। इन दिनो म भारतीय व्यवसायी ९०% से भी अधिक जन धर्मावलम्बी थ। सेनडी

नामक नगर के व्यवसायी हजारो की सख्या म व्यवसाय के लिय दूसरे प्रान्ता म जाते थे। कनल टॉड के अनुसार पाली भारतवष का सब से बडा व्यापारिक नगर था।

मारवाड मे राज्य की ग्रामदनी दो तरह से होती थी। एक ता कर से और दूसरी मालगुजारी से। किसी समय मारवाड के राजा की ग्रौर सामन्ता की ग्राय मिलाकर ९० लाख रुपये वार्षिक होती थी।

इस प्रकार बीकानेर राज्य म पहले कई प्रकार के कर वसूल किये जाते थे परन्तु जिनमें भूमि का कर, खेती का कर, ग्रौर ग्रपराधिया से लिया जाने वाला कर, प्रमुख थे। उससे राजा का ८० लाख रुपये से भी ग्रधिक ग्रामदनी होती थी। इस प्रकार प्रत्येक राजा ने खेती पर कर लगा रखा था ग्रौर वह विशेषतौर पर राज्य की ग्राय का प्रमुख साधन होता था। इस समय क ग्रधिकाश राज्यो की आर्थिक स्थिति कोई विशेष ग्रच्छी नही थी। राज्य की ग्राय सेना तथा राजाग्रा के व्यक्तिगत सुख-साधन मे खच हो जाती थी। कल्याणकारी राज्य की उस समय कल्पना भी नही की जाती थी।●

वक्ष की शाखाग्रो पर बहुतेरे पक्षी या कीडे-मकोडे विश्राम के लिए ग्रपने नीड बना लेते हैं। वे नीड बाद मे बडी बडी कोटरें भी हो जाते हैं, कालान्तर मे उनमे साप बिच्छू भी पाये जा सकते हैं। यह एक युग में तो उन्हीं कोटरो मे प्राणियों ने विश्राम लिया था। ये ढकोसले ऐसे ही हैं। कई ढकोसलो की ग्राज भी उपयोगिता हैं, पर कई मे साप-बिच्छू ही पाये जात हैं। इनसे तो मनुष्य को बचना ही चाहिये।

---

एक दिन वक्ष यकायक धडाम से गिर पडा। गुस्से से लाल-पीला होकर धरती बोला—"देख री तूने मुझे मिट्टी-पानी देना बन्द कर दिया था न! इसलिये भूख-प्यास से तडप-तडप कर सूख गया ग्रौर ग्राखिरकर गिर ही पडा।"

धरती धीरे से बोली, "ग्ररे म क्या तुझे मिट्टी-पानी देना बन्द कर सकती थी तेरी जड ही खोखली हो गयी थी।"

शुक्देव दूबे

# मुगल कालीन राजनैतिक उथल-पुथल

अरब दश म पैगम्बर महोम्मद साहब क प्रयत्ना स एक नय धम इस्लाम का उदय हुआ । प्रारम्भ से ही इस धम का उद्देश्य विजातीय देशों का जीतकर इस्लाम का प्रचार करना था । सातवी शताब्दी का समय राजस्थान के लिए बहुत महत्वपूण या । इस काल म एक तरफ तो विभिन्न वशीय राजपूत राजस्थान मे अपने कई राज्य सगठित कर रहे थे और दूसरी तरफ अरबो के मुसलमाना के आक्रमण भारत पर शुरू हो गये थे । सातवी से ग्यारवी शताब्दी तक मुसलमानो का राजस्थान मे प्रवेश नही हो सका । राजपूता की फूट और ईर्षा द्वेष के कारण पृथ्वीराज चौहान ११९२ ई० मे मोहम्मद गौरी के द्वारा परास्त हुआ और मुसलमानो राज-सत्ता राजस्थान मे प्रवेश हुई । परन्तु इनके यहाँ कदम नही जम पाये । इस काल म इन्होंने अपनी सत्ता उत्तर भारत म ही जमाने का प्रयत्न किया । तुर्कों ने अजमेर और नागौर पर भी अधिकार किये और आगे बढने का प्रयत्न किया । परन्तु इन्ह रणथम्भोर तथा नाडौल जालौर के चौहान और मेवाड़ के गुहिल पुत्र आगे बढने से रोकते रहे । दिल्ली के सुलतान इल्तुतमिश ने रणथम्भोर लेकर जब आगे बढने का प्रयत्न किया तो मेवाड के राजा जयसिंह ने करारी हार दी । यह १२३४ की घटना है । बाद मे चौहान राजा वागभट्ट ने तुर्कों से रणथम्भोर वापिस छीन लिया । अब १२३७ म मेवाड के महारावल समरसिंह न बलवन को हराया । १२९१ मे जलालुद्दीन खिलजी ने रणथम्भोर पर आक्रमण किया पर वह भी इसे न ले सका । इस प्रकार हम देखते हैं कि मुसलमाना के पाच खानदान गुलाम खिलजी, तुगलक, सैयद, लौदी राजस्थान में अपना सिक्का नही जमा सके । हाँ अलाउद्दीन ने जैसलमेर का जीतने का असफल प्रयत्न किया पर अलाउद्दीन को सन् १३०१ मे रणथम्भोर और १३०३ म चित्तौड पर अधिकार करने मे सफलता मिली । इन दिनो चित्तौड की गद्दी पर रावल रत्नसिंह थ इनकी सुन्दरी रानी पद्मिनी का जौहर इतिहास प्रसिद्ध है जो इसी युद्ध के फलस्वरूप हुआ था इसके बाद १३०५ से १३११ तक मारवाड के जालौर, नाडौल सिवाणा भीनमाल, साचौर आदि भी जीत लिय गय । जैसलमेर उजाड दिया गया । पर १३२८ म मोहम्मद तुगलक के गद्दी पर बैठते ही मेवाड वालो ने महाराणा हम्मीर के नेतृत्व म तुर्कों को चित्तौड से निकाल बाहर किया । तुर्क लोगा के राजस्थान में जो हमल होते थे वे मुख्य रूप स लूट खसोट मारकाट के दृष्टिकोण से होते थे । इनका स्थायी असर नही होता था । इस कारण राजस्थान की रियासतें अपनी स्वतन्त्रता बनाये रख सकी ।

इसी काल मे कई अवसर ऐस आय जब यदि राजपूत सगठित होकर दिल्ली पर चढ़ दौडते तो मुसलमानो को भारत से बाहर निकाल सकते थ । परन्तु इह अपने घरेलू झगडा से ही फुरसत नही थी । इसी काल मे मेवाड का उत्थान हुआ यह चारों ओर से मुस्लिम रियासता व अद्ध स्वतत्र ठिकाना म घिरा हुआ था । इसने राजस्थान की अव्यवस्था, अराजकता विदेशी और विधर्मी सत्ता को चुनौती दी ।

इस राज्य का सगठित मोर्चा देखकर राजस्थान के अनेक पुराने राज्यच्युत और महत्वाकाक्षी लाग —इसके नेतृत्व मे इकट्ठे होन लगे । जावर की चादी की खान ने इसकी स्थिति मजबूत की और सामरिक शक्ति बढाई ।

महाराणा कुम्भा के समय म मेवाड सार राजस्थान पर छा गया कुम्भा ने राजस्थान से तुर्कों व अय मुस्लिमो को निकाल बाहर किया । इन्ही के काल म राव जोधा ने १४५६ म मडावर के समीप ही वतमान जोधपुर का नीव डाली । १४६५ म राव जोधा के एक बेटे राव बीका ने एक नये राज्य बीकानर की स्थापना की । सारे राजस्थान के राजवश मेवाड के आधिपत्य को मानन लग । महाराणा कुम्भा के समय मे राजस्थान की बहुत उन्नति हुई और यहा हिन्दू सस्कृति, विद्या, कला और समाजादर्शों का पूर्ण उत्थान हुआ । १७६८ मे महाराणा कुम्भा की हत्या उनके लडके उदयसिंह ने कर दी इससे मेवाड की जनता और सरदार बहुत नाराज हुये, उदयसिंह ने दिल्ली के मुस्लिम सुलतान, मेवाड के शत्रुओ, गुजरात मालवा के मुस्लिम शासको को मेवाड के इलाके देकर अपना पक्ष मजबूत करना चाहा । इस कारण मेवाड की शक्ति को काफी धक्का लगा और मारवाड के जोधपुर, बीकानेर तथा अजमेर ढूंढाड आदि प्रदशो पर मेवाड का नियन्त्रण कमजोर हा गया । पर उदयसिंह का राज्य ज्यादा दिनो तक नही रह सका । महाराणा के द्वितीय पुत्र रायमल को १७७३ म सरदारो और जनता ने विद्रोह कर गद्दी पर बठाया महाराणा रायमल ने आपसी झगडे समाप्त किये और मेवाड की शक्ति को बढाया । अजमेर, आमेर टाडा पर फिर से मेवाड का अधिपत्य स्थापित किया और डूगरपुर, ईडर सिरोही आदि राजाओ का अपना वशवर्ती बनाया । मारवाड, बीकानेर और सिरोही तीना का मेवाड के राणा से रिश्ता होन से मेल बना रहा । इस प्रकार हम देखते हैं कि इस समय राजस्थान के प्राय सभी राजपूत मेवाड को अपना अगुआ और मुखिया मानते रहे । मालवा और गुजरात की मुस्लिम सल्तनतें मेवाड की बढी चढी शक्ति देखकर राजस्थान मे घुसने की हिम्मत न कर सकी । १५०६ म रायमल के देहान्त के बाद इतिहास प्रसिद्ध महाराणा सागा मेवाड की गद्दी पर बठे । इनके गद्दी पर बठते ही मेवाड की राजनीति म एक नवीन स्फूर्ति और तेजी का प्रादुर्भाव हुआ । इन्होंने मारवाड, बीकानर, अजमेर, आदि के राजाओ म अपन सम्बन्ध दृढ किये और दिल्ली के लोदिया स बयाना, धौलपुर और ग्वालियर के प्रदश हस्तगत किय । अब मवाड की सीमा पीलियार खाला तक पहुँच चुकी थी । मालवा की तरफ भी उत्तरी-मालवा और चन्देरी पर कब्जा कर लिया । पूव म सीमा बाघोगढ और भोपालराय सेन तक थी । गुजरात का ईडर, अहमदनगर और बडगाव का प्रदेश भी अपन कब्जे म ले लिया । दक्षिणी मारवाड म जालौर का प्रदेश गुजरात के ही अधिकार म रहा । सागा का जोधपुर के राव सागा से भी दृढ सम्बन्ध था और उनसे इनको हर तरह की मदद मिलती रहती थी । मारवाड के उत्तर म बीकानर राज्य भी तरक्की पर था । इसके भी मेवाड

राज्य से सम्बन्ध थे। यह लोग मेवाड के राणा को अपना मुखिया और नेता मानते थे। जैसलमेर भी राजस्थान में शामिल कर लिया गया था। आमेर का राजा पृथ्वीराज कछवाहा मेवाड का सामन्त था। बून्दी, डूंगरपुर, प्रतापगढ और ईडर के प्रदेश मेवाड के कब्जे मे थे। इस प्रकार हम देखते हैं कि इस काल मे राजस्थान मे मेवाड की शक्ति छाई हुई थी और यदि राजपूत प्रयत्न करते तो शक्तिहीन लोदी सुल्तानो को हराकर दिल्ली के तख्त पर कब्जा कर सकते थे परन्तु गत ५०० वर्षों स लगातार तुर्कों से रक्षात्मक युद्ध करते रहने के कारण इनमें आत्म विश्वास और हिम्मत की कमी आगई थी। इसी समय भारत की स्थिति मे लाभ उठाकर मुगल साम्राज्य के संस्थापक तैमूर के वंशधर बाबर ने भारत पर चढाई कर दी। १५२६ ई० मे पानीपत के मैदान मे इब्राहीम लोदी और बाबर म युद्ध हुआ। इब्राहीम मारा गया और बाबर दिल्ली का मालिक बन गया। बाबर का दूसरा प्रतिद्वन्दी महाराणा सागा था। रिश्वतें और लालच देकर बयाना, धौलपुर, ग्वालियर आदि प्रदेश जो महाराणा सागा के कब्जे म थे बाबर ने बिना लडे ही अपने अधिकार म कर लिये। इस पर महाराणा ने आक्रमण कर बयाना वापस ले लिया। इस युद्ध में राजपूतो के अदभुत शौर्य को देख मुसलमान डर गये। इन्होंने चाल चली और राणा को सन्धि वार्ता म फसाकर अपनी तैयारी पूरी कर १७ मार्च १५२७ को खानवा के ता मदानो मे महाराणा की सेना पर आक्रमण किया। इस युद्ध म महाराणा जख्मी होकर बेहोश हो गये। इसी कारण राजपूतो की हार होगई। खानवा की लडाई जीतने क बाद भी बाबर की हिम्मत मेवाड राज्य पर आक्रमण करने की नही हुई। महाराणा भी फिर एक बार बाबर से टक्कर लेना चाहता था। परन्तु स्वार्थी, लालची राजपूत सरदार जो युद्ध स कतरा रहे थे, युद्ध के लिये उत्सुक महाराणा को विष देकर अपने रास्ते से अलग कर दिया। इसके बाद ही मेवाड की शक्ति छिन्न भिन्न होगई।

राणासागा का दूसरा लडका रत्नसिंह गद्दी पर बैठा। इस काल मे मालवा सुल्तान अपने इलाके मेवाड स लने में असफल रहा। राणासागा की दूसरी रानी कर्मवती का भाई बूंदी का हाडा सरदार जो अपने भानजे विक्रमादित्य और उदयसिंह को मेवाड का राज्य दिलाना चाहता था, बाबर से साठगाठ करने लगा। इस सरदार को देशद्रोहिता का दंड देने हेतु जब रत्नसिंह ने इससे द्वन्द्व युद्ध किया तो मारा गया।

मेवाड की गद्दी पर अब विक्रमादित्य बैठा जो बडे छिछोरे स्वभाव का था और इस कारण अधिकाश राजपूत सरदार इससे रुष्ट थे। इसके काल म बहादुरशाह ने राजपूतो को चित्तौड की लडाई म हराया–उसे लूटा, और मेवाड से समूचा मालवा, रणथभौर तथा अजमेर तक के प्रदेश छीन लिये। इधर मुगलो ने भी उत्तर-पूर्वी राजस्थान म अलवर मेवात आमेर सांभर और नागौर तक अपने राज्य की सीमा बढा,ली थी। इस काल में मेवाड का गौरव नष्ट प्राय ही था और राजस्थान म मुसलमानो का प्रवेश हो गया था।

अब राजस्थान का नेतृत्व मेवाड के हाथ से निकलकर, मारवाड के हाथ मे चला गया था। इसी समय हुँमायूँ को हराकर शेरशाह दिल्ली के तख्त पर बैठा–इसने मारवाड के तत्कालीन राजाराव मालदेव से मोर्चा लिया परन्तु यह युद्ध इस इतना महगा पडा की उसे कहना पडा मुट्ठीभर बाजरी के पीछे मैं हिंदुस्तान का राज इस मरुभूमि में खाने चला आया था।

धोखेबाजी और छलकपट के द्वारा शेरशाह जीत तो गया पर वह भी राजस्थान से सामन्तशाही का नही हटा सका। इसका आबू जोधपुर, अजमेर जहाजपुर आदि क्षेत्रो पर कब्जा होगया था। चित्तौड के राजा उदयसिंह ने भी शेरशाह का आधिपत्य मान लिया था। राजस्थान मे अपना अधिकार बनाये रखने के लिए उसने अजमेर को मुख्य स्थान बनाया और वहा से समूचे राजस्थान की राजनीति का सचालन किया।

राजस्थान मे सामन्तशाही का इतना बोलबाला था कि उस न शेरशाह समाप्त कर पाया और न ही मुगल सम्राट अकबर। शेरशाह की मृत्यु के बाद राणा उदयसिंह ने अजमेर और रणथमौर ले लिया तथा आमेर और आबू पर भी अपनी सत्ता जमाली। मेवाड की राजधानी चित्तौड से हटाकर उदयपुर बनाई गई।

अकबर के समय मे राजस्थान म उदयपुर, डूगरपुर, बासवाडा, प्रतापगढ जोधपुर बीकानेर आमेर, बूदी सिरोही करौली और जसलमेर के ग्यारह राज्य थे। इनम उदयपुर व जोधपुर मुख्य थे। अकबर बहुत चतुर राजनीतिज्ञ था। उसने सबसे पहले आमेर के कमजोर राजा भारमल से अपने सम्बन्ध बढाये और उसकी पुत्री से विवाह किया पुत्रो को सेना मे ऊचे पद दिये। अकबर के जीवनकाल मे यही नीति चलती रही। उसने कई राजपूतो की पुत्रियो से विवाह सम्बन्ध स्थापित किये और उनके राज्यो पर अपना प्रभाव बढाया। मारवाड, बूदी और कई छोटे राजस्थानी राज्य सहज ही अकबर की आधीनता को मानने लग गये। सिर्फ मेवाड के राणाओ ने इसकी आधीनता स्वीकार नही की। महाराणा प्रताप के नेतृत्व म इन्होने मुगलों स छापामार युद्ध शुरू हुआ यह युद्ध २५ वर्ष तक चलता रहा और मेवाड ने अपने कई जीते प्रदेश वापिस छीने भी। अकबर के बाद जहांगीर ने भी मेवाडियो को झुकाने के कई प्रयत्न किये। आखिर म मेवाडियों ने थककर १६१४ मे कुछ शर्तों पर जिनमे व्यवहार और शाहीदरबार मे राणा को उपस्थित होने के लिये मजबूर न किया जाय, मुगलो का सिक्का मान लिया।

शाहजहाँ के काल म भी मुगलो और राजपूतो मे अच्छे सम्बन्ध रहे। परन्तु औरगजेब के समय म ये सम्बन्ध बिगड गये।

राठौर वीर दुर्गादास म औरगजेब स अच्छी टक्कर ली। औरगजेब के बाद कोई भी मुगल सम्राट इतना शक्तिशाली नही हुआ की वह राजस्थान की राजनीति मे दखल देता। इस काल मे राजपूतो को पुन सगठित करने का प्रयत्न किया गया पर वह सफल नही हो पाया। मराठो की लूटमार और आक्रमणो ने भी राजस्थान की शक्ति को काफी धक्का पहुँचाया।

इस प्रकार हम देखते है कि सम्पूर्ण मुस्लिम काल राजस्थान के लिये मारकाट का ही काल रहा है। इसमे सदेह नही की राजपूत शौर्य और शक्ति म बढे चढे थे परन्तु आपसी वैमनस्य और होड के कारण वे अपने शौर्य के अनुरूप सारे भारत मे नही छा सके। इसी कारण वे रक्षात्मक युद्ध ही करते रहे। उनकी आक्रमण नीति कभी भी नहा बन पाई।
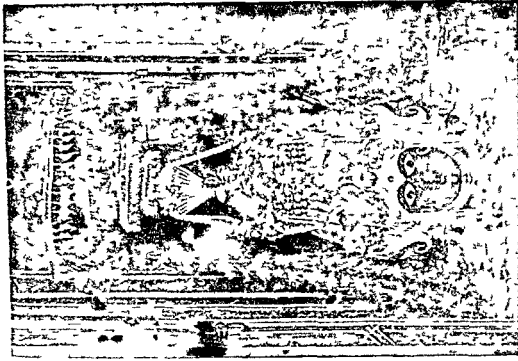
मेवाड के महाराणाओं
के
इष्टदेव
एकलिंग जी का मन्दिर
व
मूर्ति, जहाँ
राणा प्रताप
ने
मेवाड को
स्वतन्त्र करने
की
प्रतिज्ञा की
थी

देलवाड़ा मन्दिर, आबू
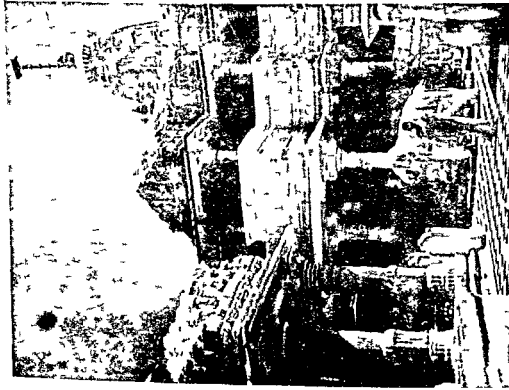
मध्य-युगीन स्थापत्य कला के ये बेजोड़ नमूने हैं।

जैन मन्दिर, जैसलमेर
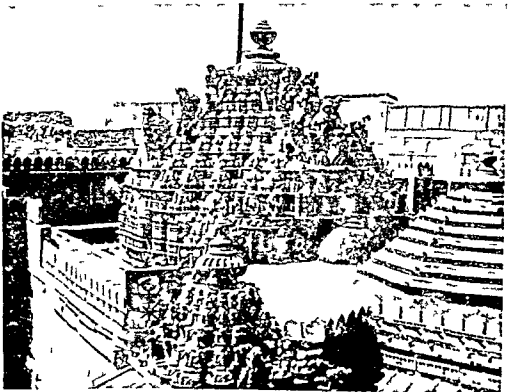
अजमेर की आनासागर झील व बारादरी अपने निर्माता आनाजी के साथ साथ शाहजहा और जहागीर के प्रकृति प्रेम तथा भवन-निर्माण के शौक की भी याद दिलाती है

उदयपुर की पिछाला झील सलानियो क आकर्षण का केन्द्र है
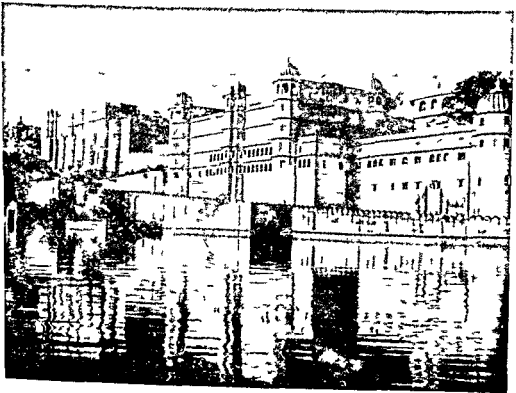
जसलमेर
का
यह
किला
न जाने
कितने
शौय पूण
दृश्यो
का
गवाह
है

अगणित
वीरो
वीरागनाम्रो
के शौय भ्रौर
बलिदान
की
ग ाथायें सुनाता
चित्तौडगढ
भ्राज भी
उसी शान
से
खडा है

कृष्णचन्द्र शास्त्री
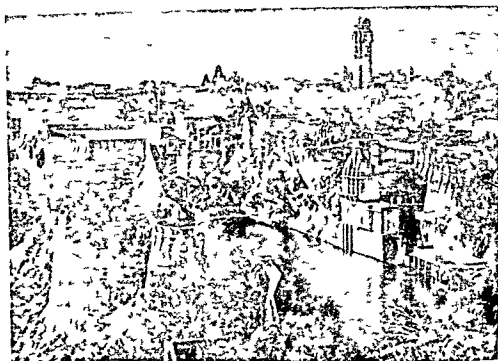
# एकलिंगजी के प्रतिष्ठाता

मेवाड की राजधानियो मे उदयपुर का भी प्रमुख स्थान था। इसका उत्तरवर्ती प्रदेश अत्यन्त समृद्ध रहा है। यहाँ के नागदा, बप्पारावल कैलाशपुरी आदि स्थान बहुत प्राचीन एव पर्वत-मालाओ से घिरे रहने के कारण अतीव रमणीय हैं। नागदा, जो पहले नागह्रद नाम से एक समृद्धि पूर्ण नगर था, अब ध्वसावशेष के रूप मे विद्यमान है। यहाँ के सास-बहू के मन्दिर अपने समय की स्थापत्य कला का उत्कृष्ट नमूना प्रस्तुत करते है। महाराणा कुभा के राजत्वकाल की अद्भुतजी की विराट प्रतिमा भी यहाँ की एक अनूठी सम्पत्ति है। कैलाशपुरी छोटे बडे अनेक प्राचीन-अर्वाचीन देवालयो से सुशोभित है। इन देवालयो मे मेवाड के शासको के इष्टदेव श्री एकलिंगजी का मन्दिर मुख्य है। इसी मन्दिर के कारण कैलाशपुरी को एकलिंग भी कहते है (इसे एकलिंगेश्वर पुरी भी कहते हैं। द्रष्टव्य, श्यामलदासकृत वीरविनोद, भाग १ पृष्ठ १५६)। देखा जाय तो मेवाड का यह छोटा सा भू खड धार्मिक श्रद्धालुओ के लिए जितना चित्त-ग्राही रहा है उतना इतिहास प्रेमियो अथवा पुरातात्विक सत्यान्वेषियो के लिए भी।

एकलिंगजी का मन्दिर बहुत पुराना है। इसे कब और किसने बनवाया, यह अब तक अज्ञात ही है। यद्यपि इतिहासकारो ने स्वीकार किया है कि इसका निर्माण मेवाड के प्रतापी शासक बप्पा (वि० स० ७६१-८१०) ने करवाया था, (डा० ओझा, उदयपुर राज्य का इतिहास जिल्द पहली, पृष्ठ ३२)। तथापि यह तथ्य केवल दन्तकथाओ पर आधारित है। इसके पीछे न तो कोई ठोस आधार और न वैज्ञानिक अनुमान ही है। इतने पर भी इसकी प्राचीनता में किसी प्रकार के सन्देह की गुजाइश नही है।

इस मन्दिर मे वर्त्तमान मे एकलिंगजी [शिव] की जो प्रतिमा है, वह चतुर्मुखी है। उसका निर्माण श्याम पाषाण से हुआ है। मन्दिर के इतिहास की तरह इस मूर्ति का इतिहास भी अद्यावधि परिश्रम और सचाई से नहीं लिखा जा सका है। जितना लिखा गया है वह भी दोषपूर्ण तथा भ्रान्ति युक्त है। प्रस्तुत लेख मे इसी एक छोटे से, किन्तु इतिहास की दृष्टि से महत्वपूर्ण तथ्य पर आधार प्रकाश डालने का प्रयत्न किया गया है। (द्रष्टव्य—मेरा लेख, मधुमती, उदयपुर जुलाई १६६८) इतिहास के विद्वानो का इस पर विचार करना चाहिये।

डा० गौरीशकर हीराचन्द ओझा ने स्व रचित इतिहास ग्रन्थ मे लिखा है कि इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा महाराणा रायमल [स० १५३०-६६] ने की थी (उदयपुर राज्य का इतिहास पहली जिल्द,

जसलमेर का यह किला न जाने कितन शौय पूण दृश्या का गवाह है

अगणित वीरो वीरागनाओ के शौय और बलिदान की गाथायें सुनाता चित्तौडगढ आज भी उसी शान से खडा है

कृष्णचन्द्र शास्त्री
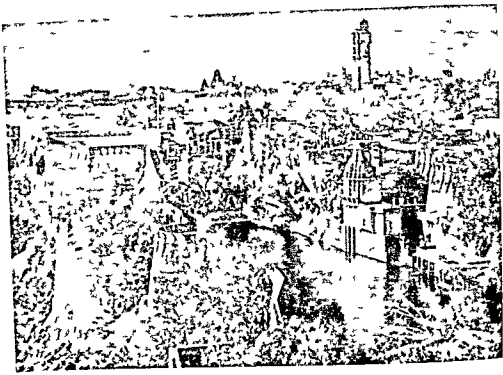
# एकलिंगजी के प्रतिष्ठाता

मेवाड की राजधानियों मे उदयपुर का भी प्रमुख स्थान था। इसका उत्तरवर्ती प्रदेश अत्यन्त समृद्ध रहा है। यहाँ के नागदा, बप्पारावल, कलाशपुरी आदि स्थान बहुत प्राचीन एव पर्वत-मालाओ से घिरे रहने के कारण अतीव रमणीय हैं। नागदा, जो पहले नागह्रद नाम से एक समृद्धि पूर्ण नगर था, अब ध्वंसावशेष के रूप मे विद्यमान है। यहाँ के सास-बहू के मंदिर अपने समय की स्थापत्य कला का उत्कृष्ट नमूना प्रस्तुत करते हैं। महाराणा कुंभा के राजत्वकाल की अदभुतजी की विराट प्रतिमा भी यहाँ की एक अनूठी सम्पत्ति है। कलाशपुरी छोटे बडे अनेक प्राचीन अर्वाचीन देवालयो से सुशोभित है। इन देवालयो मे मेवाड के शासको के इष्टदेव श्री एकलिंगजी का मन्दिर मुख्य है। इसी मंदिर के कारण कलाशपुरी को एकलिंग भी कहते हैं (इसे एकलिंगेश्वर पुरी भी कहते हैं। द्रष्टव्य, श्यामलदासकृत वीरविनोद, भाग १ पृष्ट १५६)। देखा जाय तो मेवाड का यह छोटा सा भू खड धार्मिक श्रद्धालुओ के लिए जितना चित्त-ग्राही रहा है, उतना इतिहास प्रेमियो अथवा पुरातात्विक सत्यान्वेषियो के लिए भी।

एकलिंगजी का मंदिर बहुत पुराना है। इसे कब और किसने बनवाया, यह अब तक अज्ञात ही है। यद्यपि इतिहासकारो ने स्वीकार किया है कि इसका निर्माण मेवाड के प्रतापी शासक बप्पा (वि० स० ७६१–८१०) ने करवाया था, (डा० ओझा, उदयपुर राज्य का इतिहास, जिल्द पहली, पृष्ट ३२)। तथापि यह तथ्य केवल दंतकथाओ पर आधारित है। इसके पीछे न तो कोई ठोस आधार और न वैज्ञानिक अनुमान ही है। इतने पर भी इसकी प्राचीनता में किसी प्रकार के संदेह की गुंजाइश नहीं है।

इस मंदिर मे वर्त्तमान मे एकलिंगजी [शिव] की जो प्रतिमा है, वह चतुर्मुखी है। उसका निर्माण श्याम पाषाण से हुआ है। मंदिर के इतिहास की तरह इस मूर्ति का इतिहास भी अद्यावधि परिश्रम और सचाई से नही लिखा जा सका है। जितना लिखा गया है वह भी दोष पूर्ण तथा भ्रांति-युक्त है। प्रस्तुत लेख मे इसी एक छोटे से किन्तु इतिहास की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण, तथ्य पर आधार प्रकाश डालने का प्रयत्न किया गया है। (द्रष्टव्य—मेरा लेख, मधुमती उदयपुर, जुलाई १९६५) इतिहास के विद्वानो को इस पर विचार करना चाहिये।

डा० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा ने स्व रचित इतिहास ग्रंथ मे लिखा है कि इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा महाराणा रायमल [ स० १५३०–६६ ] ने की थी ( उदयपुर राज्य का इतिहास, पहली जिल्द,

पृष्ठ ३२ ) इससे भी पहले इस तथ्य को स्पर्श किया था कविराज श्यामलदास ने । श्यामलदास का लिखा मेवाड का असाधारण इतिहास-ग्रन्थ 'वीरविनोद' नाम से प्रसिद्ध है। उसमे उन्होंने रायमल के द्वारा इस मन्दिर के जीर्णोद्धार और इसी जीर्णोद्धार के साथ इस मूर्ति के जीर्णोद्धार किये जाने का उल्लेख किया है (भाग १, पृष्ठ १५६) । मूर्ति के जीर्णोद्धार से उनका तात्पर्य सभवत मूर्ति के पुन प्रतिष्ठापन से ही रहा है। श्री जगदीशसिंह गहलोत ने भी स्वीकार किया है कि इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा महाराणा रायमल ने की थी। (राजपूताने का इतिहास, पहला भाग, पृष्ठ १५३ ) यही नही, एकलिंगजी के मठाधिपति श्री राघवानन्द गोस्वामी ने एक पुस्तक लिखी थी—'भगवान एकलिंग और हारीत'। उन्होने भी उसम रायमल द्वारा ही उक्त मूर्ति की प्रतिष्ठा होना माना है (उल्लिखित पुस्तक, पृष्ठ १२) ।

परन्तु खेद है कि उक्त विद्वानो ने अपने कथित तथ्य को प्रमाण पुष्ट करने के लिए अपने ग्रन्थो म कोई सन्दर्भ नही दिया है। राघवानन्द गोस्वामी न अपनी उक्त पुस्तक म इस तथ्य का प्रामाणिक बताने के लिए एक सन्दर्भ अवश्य दिया है। (वही, पृष्ठ १२ का फुटनोट) परन्तु आश्चर्य है कि उन्होंने सन्दर्भ के लिए जिस शिलालेख की ओर सकेत किया है, उसे देखने पर ज्ञात हुआ कि वहाँ उनके तथ्य का प्रमाणित करने वाली एक भी पक्ति नही है। गोस्वामीजी ने जिस शिलालेख का सन्दर्भ दिया है, वह है एकलिंगजी के मन्दिर की —दक्षिण द्वार की—प्रशस्ति। यह प्रशस्ति अद्यावधि दो जगह प्रकाशित हुई है—श्यामलदास कृत वीरविनोद म और भावनगर इन्स्क्रिप्शन्स मे। यथावसर इस लेख के लेखक न यथास्थान पहुँचकर मूल प्रशस्ति को भी देखा है। इस प्रशस्ति म महाराणा रायमल के द्वारा मन्दिर के जीर्णोद्धार किये जाने का उल्लेख तो अवश्य हुआ है, लेकिन वहाँ रायमल के द्वारा एकलिंगजी की चतुर्मुखी प्रतिमा की प्रतिष्ठा के सबध मे कोई सकेत तक नही मिलता है।

वास्तविक बात तो यह है कि एकलिंगजी की चतुर्मुखी मूर्ति की प्रतिष्ठा महाराणा रायमल ने नही हम्मीर, प्रथम, [वि० स० १३८३ १४२१] ने की थी। यह तथ्य मुझे सवप्रथम राजसमुद्र के नौचोकी घाट पर लगे राजप्रशस्ति-शिलालेख म देखने को मिला ('राजसमुद्र महाराणा राजसिंह का बनवाया हुआ एक विशाल सरोवर है, जो काकरोली के पास है) यह शिलालेख संस्कृत भाषा मे है और महाराणा राजसिंह, प्रथम, [वि० स० १७०६-३७] तथा उसके उत्तराधिकारी जयसिंह [वि० स० १७३७ १७५५] के राजत्व-काल मे लिखा गया था। वहाँ हम्मीर के वर्णन म इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा के सम्बन्ध म इस प्रकार कहा गया है —

ज्येष्ठ सुत पितु सगे यो हतस्तत्सुतो दधे।
राज्य हमीरो दानीद्रो मूढगगा प्रदर्शक ॥७॥
विद्वरे त्विद्रसरसि श्रीमूर्त्ति स्फाटिकी धृता।
न प्राप्ता सुस्थसमय एकलिंगस्य तद्व्यधात् ॥८॥
मूर्त्ति चतुर्मुखीमेता श्यामा श्यामायुता तत ।
चेत्रसिंहस्ततो लाखा लक्षदो मोकलस्तत ॥६॥ (शिला ५ वी, सर्ग चौथा)

अर्थात संघर्ष के समय म एकलिंग की स्फटिक-निर्मित मूर्ति इन्द्रसर मे डाल दी गई थी। उसके न मिलने पर हम्मीर ने यह चतुमुखी प्रतिमा प्रतिष्ठित की, जो श्याम पाषाण की बनी है। साथ म उसने पावती की मूर्ति को भी प्रतिष्ठित किया।

परन्तु जसा कि आगे चलकर पता लगा, यह तथ्य न केवल राजसमुद्र के उक्त शिलालेख मे, बल्कि इसके भी पहले, महाराणा रायमल के राजत्व काल म, लिखी गई एक शिला-प्रशस्ति म सुरक्षित है। यह प्रशस्ति एकलिंगजी के मन्दिर के दक्षिण द्वार की वही प्रशस्ति है, जिसका ऊपर उल्लेख किया जा चुका है। यह प्रशस्ति वि० स० १५४५, चैत्र शुक्ला १०, गुरुवार को लिखी गई थी। इसकी भाषा सस्कृत है। परन्तु इसके अन्त के भाग म कुछ पक्तियाँ देशी भाषा मे भी हैं। ये पक्तियाँ सस्कृत भाषा को जानने वाले—सामान्य—व्यक्तियो के लिये, महाराणा की आज्ञा से, लिखी गइ थी। ( गीर्वाण वाण्यामविचक्षणैर्नरै सुखावसेयानि वचासि कानिचित। स्वदेशभाषामनुसृत्य भूपतेरनुज्ञया लेख्यपथ नयाम हे ।। —[दक्षिण द्वार की प्रशस्ति, श्लोक १०१])एकलिंगजी की प्रतिमा की प्रतिष्ठा महाराणा हम्मीर (प्रथम) ने की थी यह तथ्य इन्ही पक्तियो म आया है। सबधित अश इस प्रकार है —

'श्री एकलिंग प्रसादि प्राप्त परमानन्द श्री हारीत राशि मुनिवचन प्राप्त मेदपाट प्रमुख समस्त वसुमती साम्राज्य श्री बापा, खुमाण, शालिवाहन, नरवाहन, भोज, कर्णादिक अनेक महाराजा इणी वश हुआ। इणीहीज वशी अरिसीह चित्तोडगढ दृढ प्राकार प्रकार प्रचण्ड भुजदण्ड मण्डलित कोदण्ड हुआ, तीयरो पुत्र विषमघाड पचायण कलिकाल कलकियाराय केदार हमीर हुओ तिणा श्री एकलिंग चतुमुख मूर्ति घरावी, शिहेलो ग्राम देवपूजाथ चढाव्यु।" (श्यामलदास, वीरविनोद, भाग १, शेष सग्रह, पृष्ठ ४२३)

एक और शिलालेख अवलोकनीय है। इसमे भी महाराणा हम्मीर (प्रथम) को ही एकलिंगजी की प्रतिमा का प्रतिष्ठायक माना गया है। यह लेख सीसारमा के वैद्यनाथ के मन्दिर म लगा हुआ है। (सीसारमा उदयपुर का पार्श्ववर्त्ती एक ग्राम है। वहा शिव का भव्य मन्दिर बना है, जो वैद्यनाथ का मन्दिर' के नाम से प्रसिद्ध है) यह सस्कृत भाषा म है। इसका लेखन-काल वि० स० १७७५, ज्येष्ठ कृष्णा ३, शनिवार है। सबधित तथ्य के प्रसग मे यहा इस प्रकार उल्लेख हुआ है —

ततोरिसिंहादभवद्धमीर समिद्धतेजा इव शभुरीड्य।
शिरस्स्खलत्स्वधु निसुप्रवाह पवित्रिताशेषज गज्जनौघ ॥२३॥

यश्चैकलिंगस्य शिवस्य लिंग पुनर्वशित्वाद् द्रुतमद्दधार।
शिवान्वयं प्रमथाधिनाथ सेवाविधि स स्वयमन्वकार्षीत ॥२४॥

( द्रष्टव्य—श्यामलदास कृत वीरविनोद द्वि० भाग, शेष सग्रह, पृष्ठ ११६७ )

इतिहासकारो ने इन शिलालेखो के उक्त तथ्य का अध्ययन क्यो नही किया और अपने ग्रन्थो म कपोल कल्पना को क्यो प्रश्रय दिया? यह समझ म नही आता। जो भी हो उक्त शिलालेखीय प्रमाणो के आधार पर इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा का समय महाराणा हम्मीर (प्रथम) का शासन-काल [वि० स०

१३८३-१४२१] निश्चित होता है तथा इसकी प्रतिष्ठा का श्रेय भी महाराणा रायमल को नहीं, हम्मीर (प्रथम) को ही मिलता है।

एक बात और है। राजप्रशस्ति शिलालेख, जिसका ऊपर उल्लेख हुआ है, का प्रकाशन वीरविनोद और एपिग्राफिया इंडिका में हुआ है। इसकी दो एक पट्टियाँ भावनगर इन्स्क्रिप्शन्स में भी छपी हैं। एपिग्राफिया इंडिका मे प्रकाशित राजप्रशस्ति का संपादन डा० एन० पी० चक्रवर्ती एवं बी-सी० एच० छावरा ने किया है। मूलपाठ के अंत मे वहाँ उसका सार भी दिया गया है। एकलिंगजी की प्रतिष्ठा के संबंध में दिये गये उक्त श्लोक का जो सार उसमे उक्त विद्वानो ने दिया है, वह नितांत दोषपूर्ण है। उद्धृत श्लोकों में प्रयुक्त 'श्रीमूर्त्ति' का अर्थ उन्होंने, लक्ष्मी की प्रतिमा लिया है। वे लिखते है —

It was again he, who built the black (stone) image of एकलिंग (शिव) with four faces accompanied by श्यामा (पार्वती) after the crystal figure of श्री (लक्ष्मी) deposited in the lake of इन्द्रसरस had been ascertained to be lost (एपिग्राफिया इंडिका, वाल्यूम XXIX, पृष्ठ १६-१७)

उक्त सार-लेखन के अनुसार एकलिंगजी की चतुर्मुखी प्रतिमा की प्रतिष्ठा के पहले उसकी जगह लक्ष्मी की मूर्त्ति का होना पाया जाता है, जो न तो प्रासंगिक और न शुद्ध है। एकलिंगजी की वर्तमान प्रतिमा से पहले वहां शिव की मूर्ति ही थी और वह भी लिंगाकार। यह तथ्य बप्पा रावल के सोने के सिक्के पर अंकित चित्र में स्पष्ट रूप से हमे देखने को मिलता है। (सिक्के के विशेष परिचय के लिये द्रष्टव्य—डॉ० गौरीशंकर हीराचंद ओझा ओझा निबंध संग्रह प्रथम भाग, पृष्ठ ९१) फिर 'श्रीमूर्त्ति' का सीधा अर्थ 'लक्ष्मी की प्रतिमा' से न होकर 'देव-विग्रह' से ही है। (द्रष्टव्य—राधाकांतदेव बहादुर, शब्दकल्पद्रुम खण्ड ५ वां) ●

### इंसान

मंदिर का शंख बजा। मसजिद मे अजान गूँजी। भक्त लोग अपने अपने पूजा-स्थल की तरफ दौड पड़े। मसजिद के मीनार और मंदिर के गुम्बद ने एक-दूसरे को देखा, दोनो मुस्कुरा उठे। मीनार ने कहा—"भया, मौन तोडो। अब तो इन मूर्खों को समझाओ कि, भगवान मिट्टी की दीवारों के भीतर नहीं हाड-मांस की दीवारो के भीतर है, गुम्बद ने कहा—"जोर से न कहो भाई नहीं तो ये हमे तोड डालेंगे—इंसान को यह जिद रही है कि वह सच्चाई कभी सहन नहीं कर सकता"।

—आफस अली

डा० देवीलाल पालीवाल

# महाराणा कुम्भा

**अजेय युद्धवीर कुम्भा —**

कुम्भा के राज्य काल का आरम्भ मालवा के सुल्तान महमूद खिलजी के साथ युद्ध से हुआ। जिसने महाराणा मोकल के भगोडे हत्यारे माहप पँवार को समर्पित करने से इन्कार किया। इस पर महाराणा ने रणमल के सेनापतित्व म एक विशाल सेना के साथ मालवा की राजधानी माँडू की ओर प्रस्थान किया। १४३७ ई० मे मालवा मे सारगपुर स्थान के निकट दोनो सेनाओ के बीच घमासान युद्ध हुआ जिसमे विजयश्री कुम्भा को प्राप्त हुई। पराजित होकर सुल्तान महमूद खिलजी माडू के गढ म जा छिपा, किन्तु महाराणा की सेना न गढ विजय किया और सुल्तान को कैद कर चित्तौड लाया गया। युवक कुम्भा के लिए अपन राज्य क आरम्भिक काल मे इस बडी विजय का भारी महत्व था। इस विजय के द्वारा दिल्ली की केन्द्रीय सत्ता— सयदवटा के मुहम्मद शाह १४३४-४५ ई० की शक्तिहीन स्थिति के कारण मवाड उत्तरी एव मध्य भारत भर मे एक प्रवलशक्ति के रूप म सामने आया। आगामी काल म जसा कि हम देखते हैं मालवा पर मेवाड विजय के इस महान शुभारम्भ को कुम्भा ने बडी योग्यता, कुशलता एव दूरदर्शिता स जारी रखा और अपन काल मे मेवाड को उत्तरी एव मध्यभारत के सर्वाधिक शक्तिशाली राज्य के रूप म निर्मित किया। युवक कुम्भा के उत्साह और दूरदृष्टि तथा भावी योजनाओ का पता इस बात से चलता है कि उसन मालवा विजय को एक स्थायी स्मारक चित्तौड म "जय स्तम्भ" निर्मित कराकर कितना महत्व दिया।

मालवा का सुल्तान महमूद खिलजी छ माह बाद चित्तौड से रिहा किया जाकर सादर मालवा रवाना किया गया। कृतघ्न खिलजी जन्म भर अपनी पराजय का बदला लेने के लिए निरतर मवाड की सीमाओ पर आक्रमण करता रहा किन्तु हर बार उसने मुँह की खाई। महमूद खिलजी के साथ कुम्भा द्वारा किया गया—व्यवहार कई इतिहास लेखको की आलोचना का कारण बना है। कर्नल टॉड तथा श्री शारदा और श्री ओझा ने कुम्भा के इस आचरण को राजनतिक अदूरदर्शिता और अनुचित उदारता की सज्ञा दी है, किन्तु १४३७ ई० मे मवाड की विचित्र स्थिति थी। कुम्भा के शासन को आरम्भ हुए चार वर्ष ही हुए

थे। उनके पिता के हत्यारो का षड्यन्त्र समाप्त नही हुआ था। कुम्भा के चुण्डा जैसे कई परिजन मालवा मे बठे हुए थे (चूडा ने कुम्भा के विरुद्ध महमूद की सहायता करने से इन्कार कर दिया था) और मेवाड मे राठौडो सिशोदियो के मध्य शत्रुता चल रही थी और रणमल द्वारा मवाड के राठौडीकरण के अभियान से कुम्भा स्वय आतंकित हो रहा था। ऐसी परिस्थिति म महमूद का लम्बे काल तक कैद मे रखना भी खतरनाक था और चारो ओर से घिरे हुए होने के कारण महमूद की हत्या करने की कायवाही का परिणाम भी उतना ही भयकर होता। इसके विपरीत महाराणा कुम्भा की इस कायवाही से (जो रणमल की इच्छा के विपरीत थी) राणा के साहस, शौय एव उदारता की जो छाप उस काल के राज्यो पर पडी, उससे मेवाड के हित मे बडे महत्वपूण राजनैतिक परिणाम भी निकले।

रणमल की मृत्यु के बाद आगामी सात वष कुम्भा को निरन्तर युद्धो म बिताने पडे। पश्चिम मे राठौडा से निरन्तर युद्ध चलता रहा और दक्षिण म मालवा का सुल्तान कभी चुप न बठा। किन्तु इसके साथ ही उसे सिरोही के देवडा (चौहान) शासक सहसमल से तथा बूदी के हाडा (चौहान) लोगो से निपटना पडा, जिन्होने मोकल की मृत्यु के बाद स्वतन्त्र होकर मेवाड के कई भागो पर कब्जा करने की चेष्टा की थी। महाराणा कुम्भा ने अपनी सेना भेजकर आबू वसन्तगढ और भूला तथा सिरोही राज्य के सम्पूण पूर्वी भाग पर कब्जा कर लिया। हाडावती पर आक्रमण कर कुम्भा ने अमरगढ खम्बोडा, बूदी, खाटगढ और माडलगढ पर कब्जा कर लिया और महाराव को अपने अधीन किया।

१४४३ ई० म जब राणा हाडावती की ओर कुछ विद्रोहियो को दबाने के लिए गया हुआ था, मालवा के सुल्तान महमूद खिलजी ने कुम्भलगढ की ओर से मेवाड पर आक्रमण किया। समाचार प्राप्त कर राणा मेवाड़ की ओर अग्रसर हुआ। माडलगढ के निकट मेवाड एव मालवा की सेनाओ के मध्य युद्ध हुआ। मांडलगढ के निकट जो युद्ध हुआ उसका परिणाम भी महमूद के लिए पराजय ही रहा और उसको माडू लौट जाने के लिए मजबूर होना पडा। १४४६ ई० म महमूद ने एक बार फिर मेवाड पर चढाई की किन्तु मेवाड की सेना ने बनास के किनारे मालवा की सेना को पूरी तरह पराजित किया और इसके बाद लगभग आठ वष तक महमूद को मेवाड की ओर दृष्टि करने का साहस नही हुआ।

निर्माण —

कुम्भा के राज्य के आगामी आठ वष का काल लगभग शान्ति का काल रहा। इस काल के दौरान राणा ने मेवाड म कई भवनो मन्दिरो एव किलो का निर्माण कराया। १४५४ ई० स कुम्भा को पुन युद्धरत होना पडा। इस वष मालवा के शासक न मेवाडाधीन अजमेर पर अचानक आक्रमण कर जीत लिया, किन्तु महमूद खिलजी की लौटती हुई सेना का मेवाड सेना ने एक बार फिर बुरी तरह पराजित कर मांडू की ओर खदेड दिया। निरन्तर प्रयत्नो के बावजूद जब खिलजी अपनी पराजयो का बदला न ले सका और हर प्रयत्न में नई पराजय ही पल्ले पडी तो उसने निराश एव क्षुब्ध होकर गुजरात के सुल्तान कुतुबुद्दीन के साथ कुम्भा के विरुद्ध १४५६ ई० के प्रारम्भ मे एक आक्रमणात्मक सन्धि की जो चम्पानेर की सन्धि के नाम

से प्रसिद्ध है। मुस्लिम इतिहासकारो के अनुसार इस सधि के द्वारा दोनो सुल्तानों ने अलग अलग दिशाओ से कुम्भा पर आक्रमण करने और उसकी शक्तिया को नष्ट करने का निर्णय किया और यह तय किया कि कुम्भा को पराजित कर मेवाड के प्रदेश को व आपस मे बाट लेंगे गुजरात से सटा हुआ इलाका गुजरात राज्य मे और मेवाड एव अहीरवाडा के जिले मालवा राज्य मे मिला लिये जाएंगे।

१४५५-५८ ई० काल कुम्भा के लिए भारी सकट और परीक्षा का काल रहा। इस काल मे तत्कालीन दो बडी शक्तियो मालवा और गुजरात-ने सम्मिलित रूप से मेवाड पर आक्रमण किये। राठौड नेता जोधा ने भी मेवाड के विरुद्ध मुस्लिम शक्तिया से मित्रता स्थापित की। स्वय मेवाड के भीतर कुम्भा के छोटे भाई क्षेम ने राणा के विरुद्ध हथियार उठाये। गुजरात से युद्ध का प्रारम्भ नागोर के सवाल पर हुआ जब कि १४५५ ई० मे वहा के मुस्लिम शासक ने गुजरात के सुल्तान कुतुबुद्दीन को अपनी पुत्री विवाह म देकर कुम्भा के विरुद्ध गुजरात की सेनाओ का सहयोग प्राप्त किया। किन्तु कुम्भा ने गुजरात की सेनाओ को खदेड दिया। इस पर गुजरात के सुल्तान न कुम्भा के विरुद्ध युद्ध की घोषणा की और दो दिशाओ से मेवाड पर आक्रमण किया, किन्तु कुतुबुद्दीन अपने प्रयोजन म असफल रहा और राणा से सधि करने पर मजबूर होकर गुजरात लौटा।

चम्पानेर की सधि के अनुसार १४५६-५७ के शीतकाल म राज्या की सेनाओ न मेवाड पर आक्रमण किया। कुतुबुद्दीन ने सिरोही पर कब्जा कर लिया, कुम्भलनेर के जिले को लूटा और चित्तौड की ओर बढा। दूसरी ओर मालवा के सुल्तान ने मेवाड के कई भागो म विध्वस मचाते हुए अजमेर लेने की कोशिश की किन्तु असफल रहा। मांडलगढ के निकट कुम्भा ने मालवा की सेना को पराजित कर मालवा की ओर खदेड दिया। गुजरात के सुल्तान को भी पराजित होकर मेवाड छोडना पडा। कुम्भा ने उनके लौटते ही सिरोही और नागोर पुन छीन लिये और मालवा के कुछ इलाको मे लूट मार की। १४५७-५८ ई० मे दोनो मित्र शक्तिया ने एक बार फिर मेवाड की विजय की कोशिश की किन्तु वे अपने प्रयत्नो मे असफल रहे। मुस्लिम इतिहासकार घटनाओ का अलग-अलग किन्तु एकपक्षीय वर्णन प्रस्तुत करते हैं, किन्तु वे इस बात का अस्वीकार नही करते कि दोनो सुल्तान अपने प्रयोजन को पूरा करने मे सफल नही हुए, जब कि मेवाड के तत्कालीन शिलालेख कुम्भा की विजया का उल्लेख करते हैं। १४६० ई० का कुम्भलगढ का शिलालेख कहता है कि— कुम्भा ने मालवा और गुजरात के सुल्ताना की समुद्र के समान विशाल सेनाओ को कुचल दिया।

**शासन और सामरिक नीति —**

१४५९ ई० तक कुम्भा के शासनकाल का सकटपूर्ण समय समाप्त हो गया। कुम्भा ने इन भीषण सकटो का किस प्रकार और किन साधनों से मुकाबला किया इसका हम कही वर्णन नही मिलता। इसको मानने मे कोई सन्देह नही है कि इन आफतों के मुकाबले के लिए कुम्भा को उच्च सामरिक नीति युद्ध-चातुर्य और दूरदर्शिता-पूर्ण राजनीति से काम लेना पडा होगा। कुम्भा के काल की सारी घटनाएँ और

उनके परिणाम इस बात का प्रमाण है कि कुम्भा अपने काल का सब से बडा योद्धा, सेनापति एव विजेता तथा कूटनीतिज्ञ था। कुम्भा के बाद उसके उत्तराधिकारी पुत्र राणा रायमल ने जो ३६ वर्षीय शान्तिपूर्ण शासन किया, वह कुम्भा की सामरिक नीति की ही सफलता का द्योतक है।

सुरक्षा नीति —

कुम्भा की सामरिक नीति का मूल आधार रक्षात्मक एव बडी शक्तियो के साथ सह अस्तित्व का था। रणमल के जीवनकाल मे मोकल के हत्यारो का पीछा करते हुए मेवाड की सेनाओ ने अवश्य मालवा और गुजरात के इलाका पर आक्रमण किया, किन्तु बाद म कुम्भा न अपनी ओर से कभी इन राज्यो की सीमाओ का अतिक्रमण नही किया। कुम्भा ने एक सफल एव दूरदर्शिता पूर्ण क्षत्री नीति का अनुसरण किया। इतिहास इस बात का साक्षी है कि किसी भी राज्य की रक्षा इस पर अर्थात इस बात पर निर्भर करती है कि उसके पडोसी राज्य अधिक शक्तिशाली न हो जायँ। कुम्भा ने इसी दृष्टि से मालवा, गुजरात और मेवाड के बीच के छोटे राज्यो को मेवाड के आधीन रखना मेवाड की रक्षात्मक नीति का अग बनाया और उन्हें कभी अपने हाथ से नही निकलन दिया। अजमेर क सामरिक महत्व को ध्यान म रखते हुए कुम्भा ने उसको भी मेवाड की स्वाधीनता से मुक्त नही होन दिया। महाराणा कुम्भा के द्वारा बनाई गई मेवाड राज्य की विदेश नीति का—उसके बाद उसके उत्तराधिकारियो ने भी बराबर पालन किया।

कुम्भा की रक्षात्मक सामरिक नीति का दूसरा अग था राज्य की रक्षा के लिए दुर्गो का निर्माण। यह प्रसिद्ध है कि मेवाड के ८४ दुर्गो म से ३२ दुर्ग अकेले कुम्भा द्वारा बनाए गये। इनम मे कुम्भा की महान सामरिक एव सृजनात्मक शक्ति का सबसे बडा उदाहरण है—कुम्भलगढ। मेवाड का सम्पूर्ण इतिहास इस बात का साक्षी है कि यह दुर्ग सर्वाधिक सामरिक महत्व का साबित हुआ। चित्तौड एव उदयपुर युद्धकाल मे जब कभी किसी शक्तिशाली शत्रु से असुरक्षित होते, कुम्भलगढ ही मेवाड की राज्य-शक्ति का शरणस्थल और केन्द्र बनता जहाँ रह कर ही मेवाड के शासक दिल्ली के शक्तिशाली सम्राटो से लोहा ले सके। कुम्भा ने चित्तौड दुर्ग की रक्षात्मक स्थिति को बुर्ज आदि बनाकर और मजबूत किया।

मेवाड राज्य को दृढ एव रक्षात्मक स्थिति म ढालन के लिए यह जरूरी था कि उसकी आर्थिक स्थिति मजबूत की जाय। कुम्भा के योग्य एव कुशल शासक होने का सबसे बडा प्रमाण यह है कि निरन्तर युद्धरत रहते हुए भी उसने मेवाड की भूमि को बराबर विनाश स बचाया और मेवाड के भीतर व्यापार एव व्यवसाय के द्वार तथा साधन सदा खुले रखे। ऐसा प्रतीत होता है कि दक्षिण एव पश्चिम दिशाओ मे निरन्तर युद्ध के बावजूद इन दिशाओ के व्यापारिक मार्ग बन्द नही हुए थे। युद्धो के बावजूद भी मेवाड की समृद्धि निरन्तर बढती रही। महाराणा द्वारा बनाय गए विशाल दुर्ग चित्तौड का भव्य कीर्ति-स्तम्भ आदि वरहाद्रा और कुम्भ-स्वामी जस विशाल मन्दिर इस बात के प्रमाण हैं। इतना ही नही, शासक की तरह जनता ने भी निर्माण कार्य मे हाथ बँटाया। राणकपुर और सिरोही के जन मन्दिर और चित्तौड का शृगारचवरी का सुन्दर मन्दिर कुम्भा के प्रजाजनो द्वारा बनाय गय।

निष्कर्ष —

महाराणा कुम्भा अपने काल का सबसे महान योद्धा और मध्य युग के बेजोड शासकों में से एक था। वह न केवल एक महान योद्धा, सेनापति एव विजेता था बल्कि एक कुशल राजनीतिज्ञ उच्च निर्माता और कलाकार भी था। वास्तुकला और मूर्तिकला के ममन और तत्सम्बन्धी ग्रन्थो के रचयिता मडन और नाथ ने कुम्भा के काल का अधिकाश निर्माण किया। अपने दो तिहाई राज्य काल म युद्धरत रहकर भी कुम्भा ने कला और साहित्य तथा इतिहास की सेवा की। वह स्वय वेदो, स्मृतियो, उपनिषदो, व्याकरण राजनीति और साहित्य का ममन था। उसने गीत-गोविन्द की टीका और चडीशतक की व्याख्या लिखी और चार नाटक लिखकर "नवीन भारत' की उपाधि ग्रहण की। वह सगीतशास्त्र का भी महान ज्ञाता था, उसने सगीत शास्त्र पर तीन ग्रन्थो की रचना की।

तुलनात्मक दृष्टि से एक छोटे राज्य का स्वामी होते हुए भी महाराणा कुम्भा म जिस प्रकार की विविध प्रतिभाओ, उच्च आदर्शों और महान सफलताओ का एक साथ समावेश मिलता है, वैसा विश्व-इतिहास के इने-गिने शासको मे ही देखा जाता है। खेद इस बात का है कि इस महान शासक के जीवन पर पूरा प्रकाश डालने वाली यथेष्ट सामग्री अभी तक उपलब्ध नही हो सकी है।●

यदि हम सम्पूर्ण विश्व की खोज करें, ऐसे देश का पता लगाने के लिए जिसे प्रकृति ने सर्व-सम्पन्न शक्तिशाली और सुन्दर बनाया है, तो म भारत की ओर सकेत करूँगा।

यदि मुझसे पूछा जाय कि किस आकाश के नीचे मानव मस्तिष्क ने अपने मुख्यतम गुणों का विकास किया जीवन की सबसे महत्वपूर्ण समस्या पर सबसे अधिक गहराई के साथ सोच विचार किया और उनमे से कुछ ऐसे समाचार ढूँढ निकाले, जिनकी ओर उन्हें भी ध्यान देना चाहिए, जिन्होंने प्लेटो और काण्ट का अध्ययन किया है तो म भारत की ओर सकेत करूँगा। और यदि म अपने आप से पूछू कि किस साहित्य का आश्रय लेकर हम यूरोपीय जो कि बहुत कुछ केवल यूनानियो, रोमनो और एक सेमेटिक जाति के यानी यहूदियों के विचार के साथ पले हों वह सुधारक वस्तु प्राप्त कर सकते हैं! जिसकी कि हमे अपने जीवन को अधिक पूर्ण, अधिक विस्तृत और अधिक व्यापक बनाने के लिये आवश्यकता है न कि केवल इस जीवन के लिए अपितु एकदम बदले हुए और उन्नत जीवन के लिए तो म फिर भारत की ओर सकेत करूँगा।

—मैक्स मूलर

# राजस्थान और ईस्ट इण्डिया कम्पनी

"आप जो कुछ कहते हैं, मैं इस बात का विश्वास करता हूँ लेकिन मेरा तो यकीन है कि वह समय आ रहा है और अब दूर नहीं है जब इस पूरे हिन्दुस्तान मे एक ही सिक्का होगा। आप हमारी बात पर विश्वास करें, मैं समझ बूझ कर यह बात कह रहा हूँ, महाराज! आप बडे शुभ अवसर पर इस देश मे आये हैं। जो फूट पैदा हुई है वह पक चुकी है और उसके खाने का समय है आपको उसके सभी टुकडो को खा जाना है। आप अपनी शक्तियो के द्वारा ऐसा नहीं करेंगे, बल्कि हमारी असगठित अवस्था—ईर्ष्या और फूट स्वय इस देश के शासन की बागडोर आपके हाथो मे लेने का काम करेगी (कर्नल टाड, राजस्थान का इतिहास पृष्ठ स० ६५२) यह महत्वपूर्ण तर्क की बात कोटा के वृद्ध जालिमसिंह ने कर्नल टाड से कही थी। जालिमसिंह की यह राजनतिक भविष्यवाणी सत्य सिद्ध हुई। राजपूताने की रियासतो की क्या स्थिति थी, यह उपरोक्त उदाहरण से स्पष्ट हो जाता है। कुटनीतिज्ञ अग्रेजों ने इस प्रकार की अवस्था का पूरा लाभ उठाया। उन्होंने इस बिगडती हुई स्थिति को अपनी कूटनीतिज्ञ चालो से किस प्रकार अपने हक मे परिवर्तित कर दिया यह बर्क के नीचे दिये हुये भाषण के एक अश से स्पष्ट हो जाता है।

"With regard, therefore, to the abuse of the external federal trust I engage myself to you to make good three positions First I say that from Mt Imans to Cape Comorin— there is not a single prince state or potentale great or small in India with whom they have come in to contact whom they have not sold I say sold, though sometimes they have not been able to deliver according to their bargain Secondly, I say that there is not a single treaty they have ever made, *which they have not broken Thirdly, I say that there is not a single prince or state* who ever put any trust in the company who is not utterly ruined and that none is in any degree secure or flourishing but in the exact proposition to their settled distrust & irreconciliable enmity to this nation

These assertions are universal I say, in the full sense universal They regard the external & political trust only, but I shall produce others fully equivalent in the internal (Burke's Speech on India Bill 1st Dec, 1783)

अंग्रेजो की भारतीय रियासतों के प्रति नीति यही रही कि उन पर छल तथा बल से अधिकार कर लिया जाय।

राजस्थान के राजाओं ने पहले भी कभी संगठित होकर शत्रु का मुकाबला नहीं किया था और इस बार फिर इतिहास अपने आप को दुहराता है" की लोकोक्ति को इन राजाओं ने चरितार्थ कर दिखाया।

राजपूताने के राज्यों की जर्जर अवस्था को देखकर दक्षिण से मरहठों ने लूटमार करनी शुरू कर दी थी और राजपूताने के शासक इस प्रकार की लूटमार से तंग आ गये थे। अंग्रेजों ने इस परिस्थिति का लाभ उठाया और घोषणा की कि आततायियों और लुटेरों को रोकने के लिए इस देश में एक ऐसा संगठन किया जायगा, जिसके द्वारा निर्बल राज्यों की रक्षा हो सके। उस समय निर्बल राज्य, जो लूटे और मारे जा रहे थे इस घोषणा को सुनकर प्रसन्न हो उठे। घोषणा के अनुसार दिल्ली में एक सभा की गई। जयपुर के अतिरिक्त शेष राजाओं के प्रतिनिधियों ने इसमें भाग लिया और उस उद्देश्य को स्वीकार किया। इस सभा को सफलता मिली और उसके द्वारा इस देश के राजाओं की बागडोर अंग्रेजों के हाथ में आ गई। एक संधिपत्र लिखा गया, उसमें इस बात को स्वीकार किया गया कि राजपूत अपनी स्वतन्त्रता को कायम रखें लुटेरे शत्रुओं और आततायियों से अंग्रेज सरकार उनकी रक्षा करेगी। और इस कार्य के लिए देशी राज्य अंग्रेजों को एक निश्चित कर अदा करेंगे।

इन दिनों में ईस्ट इण्डिया कम्पनी के साथ उदयपुर के महाराणा भीमसिंह ने एक संधि पर हस्ताक्षर किये। इस संधि की मुख्य शर्तें निम्न थी—

(१) अंग्रेजों और राणा भीमसिंह के बीच इस संधि के द्वारा जो मित्रता कायम हो रही है वह सदा के लिए है। एक का मित्र और शत्रु दूसरे का भी मित्र और शत्रु होगा। (२) उदयपुर के राणा को अंग्रेज सरकार की अधीनता में अपने समस्त कार्य करने पड़ेंगे। राज्य के सामन्तों और सरदारों से राणा का कोई सम्बन्ध न रहेगा। (३) बिना अंग्रेज सरकार की स्वीकृति के राणा को किसी राजा के साथ संधि अथवा राजनीतिक सम्बन्ध कायम करने का अधिकार न होगा। (४) राजा को स्वयं किसी पर आक्रमण करने का अधिकार न होगा। यदि किसी के साथ इस प्रकार की परिस्थिति पैदा हो तो उसका निर्णय अंग्रेज सरकार करेगी। (५) पांच वर्ष तक राणा अपनी आमदनी का एक चौथाई अंग्रेज सरकार को अदा करेगा और बाद में आमदनी का ⅜ भाग राणा सदा देता रहेगा। (६) आवश्यकता पड़ने पर अंग्रेज सरकार राणा की सेना ले सकेगी। यह संधि पत्र १६ जनवरी सन १८१८ में दिल्ली में लिखा गया।

इस प्रकार अंग्रेजों ने अपनी कूटनीतिक विजय राजस्थान में प्राप्त की।

मेवाड़ के बाद दूसरा महत्वपूर्ण घराना जो अब तक स्वतन्त्र रूप से कार्य कर रहा था वह था राठौर वंश जो मारवाड़ में शासन कर रहा था। सन १८१७ ई० में मारवाड़ के दूत व्यास विष्णुराम नाम के ब्राह्मण की उपस्थिति में ईस्ट इण्डिया कम्पनी के साथ दिल्ली में संधि हुई। इस संधि में यह भी लिखा गया था अधीन सामन्तों की सेना को आवश्यकता पड़ने पर ईस्ट इण्डिया कम्पनी अपने अधिकार में

ले लेगी'। सन १८१८ म ईस्ट इंडिया कम्पनी का प्रतिनिधि मिस्टर विल्डर जाधपुर गया था। मिस्टर विल्डर ने जाधपुर म राजा मानसिंह से वातचीत की और उसने मानसिंह से कहा 'सामन्ता के स्वच्छाचार और अन्याय को दूर करने के लिए ईस्ट इण्डिया कम्पनी अपनी सेना लेकर आपकी सहायता कर सकती है। (कनल टाड राजस्थान का इतिहास पृष्ठ ४९०) मानसिंह विचारशील तथा दूरदर्शी था, उसने जवाब दिया "आवश्यकता पडने पर मैं कम्पनी की सनिक सहायता लूगा।" मारवाड की दशा अच्छी नही थी। चारो ओर भयानक अशाति और अराजकता को मिस्टर विल्डरने अपने नेत्रा से देखा था। उसके अनुसार राजधानी से लेकर राज्य के प्रत्येक नगर और ग्राम तक अवस्था भयानक थी। सन् १८१८ मे कनल टाड को ईस्ट इण्डिया कम्पनी के द्वारा मारवाड राज्य का पोलिटिकल एजेण्ट बनाया गया। धीरे २ अव्यवस्था फली और अग्रजा का प्रभाव देशी रियासतो पर बढता गया।

मारवाड और मेवाड राज्य की तरह ही जयपुर राज्य म राजपूता की अवनति हो रही थी। सन् १८०३ ई० म जगतसिंह आमेर के सिंहासन पर बठा। मराठा के अत्याचारा से राजस्थान का प्रत्येक राज्य अशाति के दिन व्यतीत कर रहा था, कहा पर भी प्रजा सुखी नही थी। मराठा की लूट रोकने के लिए राजपूत राजाओ के पास कोई साधन न था। मराठो के दो सगठित दल थे, एक का नेतृत्व होल्कर कर रहा था और सिन्धिया दूसरे दल का सेनापति था। ऐसी दशा म जगतसिंह की आख अग्रेजा की तरफ लगी थी। उसने सोच समझकर १८०३ मे अग्रेजो के साथ सधि कर ली। इस सधि की मुख्य २ शर्तें निम्न प्रकार से थी —

१ इस सधि के द्वारा कम्पनी, राजा और उसके उत्तराधिकारियो म स्थायी रूप से मित्रता कायम हो गई।

२ इस सधि के अनुसार एक पक्ष का शत्रु दोनो पक्षो का शत्रु होगा।

३ कम्पनी के अधिकृत भागो पर अगर इस देश की कोई शक्ति आक्रमण करेगी तो आमेर की सेना कम्पनी की सेना के साथ आक्रमणकारी के विरुद्ध युद्ध करेगी।

४, किसी भी आवश्यकता के समय आमेर की सेना कम्पनी की सेना के साथ रहकर युद्ध करेगी।

५ कम्पनी के अधिकारियो के आदेश के बिना राजा जगतसिंह किसी देशी अथवा विदेशी शक्ति के साथ सधि अथवा मेल करने का अधिकारी न होगा।

१२ दिसम्बर १८०३ को दोनो पक्षा ने सधि पर हस्ताक्षर कर दिये।

लार्ड कार्नवालिस के समय उसी के सुझाव के अनुसार कम्पनी ने राजा से सधि तोड दी। मराठा के अत्याचार फिर से जयपुर मे शुरू हो गये।

इस दौरान ईस्ट इण्डिया कम्पनी की शक्ति बराबर बढ रही थी और राजस्थान के सभी राजाओ ने धीरे धीरे कम्पनी के साथ सन्धिया की। उस दशा म जयपुर के राजा को फिर विवश होकर सन् १८१२ ईसवी म २ अप्रल को कम्पनी के साथ नई सधि करनी पडी। यह दूसरी सधि बहुत ही कठिन शर्तों वाली थी। इस सधि के अनुसार जयपुर राज्य ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी को ८ लाख रुपये वार्षिक

कर देना स्वीकार किया। आमेर का राजा जगत सिंह निहायत ही दब्बू और अकमण्य व्यक्ति था। प्रजा तथा सामन्त उसमे नाखुश थे। दिसम्बर सन् १८१२ मे जालिमसिंह की मृत्यु हो गई।

बूंदी व कोटा में हाडा वंश के राजा राज्य कर रहे थे। १८१७ मे २६ दिसम्बर को दिल्ली मे संधि हुई। जालिमसिंह ने उम्मेदसिंह की मृत्यु पर संधि की शर्तों के विरुद्ध काम किया। १८१८ के मार्च में दो नई शर्तें इस संधि में जोडी गई जिसके द्वारा यह स्वीकार किया गया कि शासन का भार सदा के लिए जालिमसिंह के लडके तथा उनके उत्तराधिकारियो के अधिकार में होगा। इस प्रकार कोटा में भी अंग्रेजो ने संधि के द्वारा अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया।

इन सब राजाओ के अलावा, जिनको संधियो के द्वारा ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने अपने अधिकार में कर लिया था, कुछ राजस्थानी राज्य ऐसे भी थे, जहा अंग्रेजो को सेना से काम लेना पडा।

मार्क्विस वेल्सली ने भरतपुर प्रजा के कुछ प्रतिष्ठित लोगो पर यह दोष लगाया कि वे शत्रुओ के साथ गुप्त पत्र व्यवहार कर रहे हैं। उन्होंने लेक को यह आज्ञा दी कि भरतपुर के ऐसे लोगो को पकडकर सजा दें। परन्तु इसमे वहा के राजा रणजीत सिंह की सलाह नहीं ली गई। जनरल लेक के दिल में भरतपुर जीतने की तमन्ना थी। राजा रणजीत सिंह ने इनका यह हाल देखकर जसवन्त राव होल्कर की मदद लेने का निश्चय किया। जनरल लेक के भरतपुर के बारे में क्या इरादे थे वह उनके इस वक्तव्य से मालूम पडते हैं।

' it will not be in my power to avoid attacking him & his fort without delay (General Lake to Wellesely 27th Nov, 1804)

८ दिसम्बर, १८०४ को लेक सेना लेकर डीग पहुँचा और २४ तारीख को नगर पर कब्जा कर लिया इस विजय से खुश होकर गवर्नर जनरल ने २० दिसम्बर १८०४ को एक गुप्त पत्र लेक को लिखा।

'The entire reduction of the power and resources of the Raja of Bharatpur, however has now became indispensibly necessary & I accordingly ? authorize & direct Your Excellency to adopt immediate annexation for the attainment of that desirable object and for the annexation to the British power, in such manner as Your Excellency may deem most consistent with the public interests, of all the forts, territories & possessions belonging to the Raja Bharatpur Governor General's letter to General Lake—20th Dec 1804, marked secret & official

रणजीत सिंह के पास केवल भरतपुर नगर रह गया था। उससे भरतपुर नगर देने के लिए कहा गया परन्तु उसने देने से इन्कार कर दिया। ३ जनवरी १८०५ को जनरल लेक भरतपुर पहुँचे।

७ जनवरी १८०५ को पहला हमला आरम्भ हुआ पर उसमे असफलता मिली। दूसरी बार २१ जनवरी १८०५ को अंग्रेजी सेना ने फिर प्रयत्न किया परन्तु इस बार भी असफलता ही हाथ लगी। जनरल लेक ने मार्क्स वेल्सली को लिखा —

' .. I am sorry to add that the ditch was found so broad & deep that every attempt to pass it proved unsuccessful & the party was obliged to return to the

ले लेगी' । सन १८१८ में ईस्ट इण्डिया कम्पनी का प्रतिनिधि मिस्टर विल्डर जोधपुर गया था । मिस्टर विल्डर ने जोधपुर में राजा मानसिंह से बातचीत की और उसने मानसिंह से कहा सामन्तों के स्वेच्छाचार और अन्याय को दूर करने के लिए ईस्ट इण्डिया कम्पनी अपनी सेना लेकर आपकी सहायता कर सकती है।' (कर्नल टाड राजस्थान का इतिहास पृष्ठ ४६०) मानसिंह विचारशील तथा दूरदर्शी था, उसने जवाब दिया 'आवश्यकता पड़ने पर मैं कम्पनी की सैनिक सहायता लूंगा।" मारवाड़ की दशा अच्छी नहीं थी । चारों ओर भयानक अशान्ति और अराजकता का मिस्टर विल्डरने अपने नेत्रों से देखा था। उसके अनुसार राजधानी से लेकर राज्य के प्रत्येक नगर और ग्राम तक अवस्था भयानक थी। सन १८१८ में कर्नल टाड को ईस्ट इण्डिया कम्पनी के द्वारा मारवाड़ राज्य का पोलिटिकल एजेण्ट बनाया गया। धीरे २ अव्यवस्था फैली और अंग्रेजों का प्रभाव देशी रियासतों पर बढ़ता गया।

मारवाड़ और मेवाड़ राज्य की तरह ही जयपुर राज्य में राजपूतों की अवनति हो रही थी। सन् १८०३ ई० में जगतसिंह आमेर के सिंहासन पर बैठा। मराठों के अत्याचारों से राजस्थान का प्रत्येक राज्य अशांति के दिन व्यतीत कर रहा था, कहीं पर भी प्रजा सुखी नहीं थी। मराठों की लूट रोकने के लिए राजपूत राजाओं के पास कोई साधन न था। मराठों के दो संगठित दल थे एक का नेतृत्व होल्कर कर रहा था और सिंधिया दूसरे दल का सेनापति था। ऐसी दशा में जगतसिंह की आंख अंग्रेजों की तरफ लगी थी। उसने सोच समझकर १८०३ में अंग्रेजों के साथ सन्धि कर ली। इस सन्धि की मुख्य २ शर्तें निम्न प्रकार से थी —

१ इस सन्धि के द्वारा कम्पनी, राजा और उसके उत्तराधिकारियों में स्थायी रूप से मित्रता कायम हो गई।

२ इस सन्धि के अनुसार एक पक्ष का शत्रु दोनों पक्षों का शत्रु होगा।

३ कम्पनी के अधिकृत भागों पर अगर इस देश की कोई शक्ति आक्रमण करेगा तो आमेर की सेना कम्पनी की सेना के साथ आक्रमणकारी के विरुद्ध युद्ध करेगी।

४ किसी भी आवश्यकता के समय आमेर की सेना कम्पनी की सेना के साथ रहकर युद्ध करेगी।

५ कम्पनी के अधिकारियों के आदेश के बिना राजा जगतसिंह किसी देशी अथवा विदेशी शक्ति के साथ सन्धि अथवा मेल करने का अधिकारी न होगा।

१२ दिसम्बर १८०३ को दोनों पक्षों ने सन्धि पर हस्ताक्षर कर दिये।

लार्ड कार्नवालिस के समय उसी के सुझाव के अनुसार कम्पनी ने राजा से सन्धि तोड़ दी। मराठों के अत्याचार फिर से जयपुर में शुरू हो गये।

इस दौरान ईस्ट इण्डिया कम्पनी की शक्ति बराबर बढ़ रही थी और राजस्थान के सभी राजाओं ने धीरे धीरे कम्पनी के साथ सन्धियां की। उस दशा में जयपुर के राजा को फिर विवश होकर सन् १८१२ ईसवी में २ अप्रैल को कम्पनी के साथ नई सन्धि करनी पड़ी। यह दूसरी सन्धि बहुत ही कठिन शर्तों वाली थी। इस सन्धि के अनुसार जयपुर राज्य ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी को ८ लाख रुपये वार्षिक

कर दना स्वीकार किया। आमेर का राजा जगत सिह निहायत ही दब्बू और अकमण्य व्यक्ति था। प्रजा तथा सामन्त उससे नाखुश थे। दिसम्बर सन् १८१२ मे जगतसिंह की मृत्यु हो गई।

बूदी व कोटा मे हाडा वश के राजा राज्य कर रहे थे। १८१७ मे २६ दिसम्बर को दिल्ला म सघि हुई। जालिमसिंह ने उम्मेदसिंह की मृत्यु पर सघि की शर्तों के विरुद्ध काम किया। १८१८ के मार्च मे दो नई शर्तें इस सघि मे जोडी गइ जिसके द्वारा यह स्वीकार किया गया कि शासन का भार सदा के लिए जालिमसिंह के लडको तथा उनक उत्तराधिकारिया के अधिकार मे हागा। इस प्रकार कोटा मे भी अग्रेजो ने सघि के द्वारा अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया।

इन सब राजाओ के अलावा, जिनका सन्धियो के द्वारा ईस्ट इण्डिया कम्पनी न अपन अधिकार म कर लिया था, कुछ राजस्थानी राज्य एसे भी थ जहा अग्रेजा को सेना से काम लेना पडा।

मार्क्विस वल्मली ने भरतपुर प्रजा के कुछ प्रतिष्ठित लोगा पर यह दोष लगाया कि व शत्रुओ के साथ गुप्त पत्र व्यवहार कर रहे है। उन्होने लेक का यह आज्ञा दी कि भरतपुर के ऐसे लागा को पकडकर सजा दें। परन्तु इसमे वहा के राजा रणजीत सिंह की सलाह नही ली गई। जनरल लेक के दिल म भरतपुर जीतन की तमन्ना थी। राजा रणजीत सिह न इनका यह हाल देखकर जसवन्त राव हाल्कर की मदद लेने का निश्चय किया। जनरल लेक के भरतपुर के बारे म क्या इरादे थे, वह उनके इस वक्तव्य स मालूम पडते है।

" it will not be in my power to avoid attacking him & his fort without delay (General Lake to Wellesely 27th Nov, 1804)

८ दिसम्बर, १८०४ को लेक सेना लेकर डीग पहुँचा और २४ तारीख को नगर पर कब्जा कर लिया इस विजय से खुश होकर गवनर जनरल ने २० दिसम्बर १८०४ का एक गुप्त पत्र लेक को लिखा।

'The entire reduction of the power and resources of the Raja of Bharatpur, however has now became indispensibly necessary & I accordingly? authorize & direct Your Excellency to adopt immediate annexation for the attainment of that desirable object and for the annexation to the British power in such manner as Your Excellency may deem most consistent with the public interests, of all the forts, territories & possessions belonging to the Raja Bharatpur Governor General's letter to General Lake—20th Dec 1804, marked secret & official

रणजीत सिंह के पास केवल भरतपुर नगर रह गया था। उमस भरतपुर नगर देने के लिए कहा गया परन्तु उसने दने से इन्कार कर दिया। ३ जनवरी १८०५ को जनरल लेक भरतपुर पहुँचे।

७ जनवरी १८०५ का पहला हमला आरम्भ हुआ पर उसम असफलता मिली। दूसरी बार २१ जनवरी १८०५ को अग्रेजी सेना ने फिर प्रयत्न किया परन्तु इस बार भी असफलता ही हाथ लगी। जनरल लेक ने मार्क्स वल्सली का लिखा —

" I am sorry to add, that the ditch was found so broad & deep that every attempt to pass it proved unsuccessful & the party was obliged to return to the

trenches, without achieving their object The troops behaved with their usual steadiness but I fear, from the heavy fire they w re exposed for a considerable time, that our loss has been severe"

२० फरवरी १८०५ को अंग्रेजी सेना ने भरतपुर पर तीसरा आक्रमण किया—परन्तु वह भी विफल रहा। इन्ही दिनो होल्कर के सरदार अमीरखा को अंग्रेजो ने फाडने की सोची और अमीरखा धन के लालच म आ गया। जनरल लेक न गवनर जनरल को इस बार म लिखा —

"Amir Khan is most exhorbitant in his demands He asks 33 lacs of Rs in the first instance & jagir for 10,000 horses This was his proposal in Rohilkhand & I doubt much if he would now be more moderate as his battalions & guns have joined Scindhia Gen Lake to Governor General

इस प्रकार स भरतपुर के किले को अंग्रेजो ने अमीरखा को धोखा देकर ही कब्जा कर सके।

यही एक ऐसा राज्य था जिसके खिलाफ उनको अपनी सेना काम म लानी पडी थी।

१८५७ की क्रांति तक जब कि ईस्ट इण्डिया कम्पनी क शासन का अन्त आ गया था। और भारत मे प्रथम स्वतन्त्रता सग्राम लडा गया उस समय तक राजस्थान की सभी देशी रियासतो पर अंग्रेजो ने अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया था। १८५७ की क्रांति के समय इन देशी रियासतो के पास इतनी शक्ति भी नही रह गई थी कि वे सब इकट्ठे होकर उस समय के वीरो की सहायता कर पाते। अगर राजस्थान के राजा उस समय अपनी शक्ति इस प्रकार नष्ट न करते तो शायद वह भी १८५७ म महारानी झासी के साथ हाथ बटाकर उस समय की परिस्थिति का फायदा उठा कर कुछ कर सकते थे।

गुजरा जमाना और हम

हम लोग हमेशा गुजरे हुए जमाने पर ही नजर लगाए रहते हैं। मुझ किसी भी व्यक्ति या कौम का हमेशा पीछे की ही ओर देखते रहना कुछ भला नहीं मालूम देते हम अपन अतीत को जरूर देखें और उस मे जो कुछ तारीफ के काबिल हैं उस की तारीफ भी करें लेकिन हमारी आखो को हमेशा आगे देखना और हमारे परों को हमेशा आगे की ओर ही बढ़ना चाहिए।

—जवाहरलाल नेहरू

जगदीशचंद्र

# राजस्थान मे १८५७ का स्वतंत्रता सग्राम

ईस्ट इण्डिया कम्पनी के साथ राजस्थान के राज्यो का सम्बन्ध सव प्रथम १८०३ में स्थापित हुआ जब कि भरतपुर, अलवर, धौलपुर, जयपुर तथा जोधपुर को ब्रिटिश सरक्षण प्रदान किया गया क्योकि तत्कालीन गवनर जनरल वेलसली इन राज्यो का सिंधिया तथा होल्कर के विरुद्ध सगठित करना चाहता था। किन्तु वेलसली की यह योजना सफल न हो सकी तथा राजस्थान के राज्यो ने मराठा के साथ सघपम अगरेजा का साथ नही दिया (ऐम० सी० जुलाई १८, १८०५ नवम्बर २ कैप्टन सटक रैजिडेंट जयपुर की रिपोट के अनुसार जयपुर होल्कर के साथ युद्ध मे उदासीन रहा)। जोधपुर तथा भरतपुर ने तो प्रत्यक्ष रूप से होल्कर को सहायता प्रदान की। कोटा के साथ द्वितीय अगरेज-मराठा युद्ध के समय जो सम्बन्ध स्थापित हुआ था वह भी सौहाद्रपूण सिद्ध नही हुआ क्याकि जालिमसिंह झाला न कनल मानसन की होल्कर द्वारा पराजित सेना को, कोटा म आश्रय दने स इन्कार कर दिया। (जेम्स टाड–एनल्स एण्ड एटीक्वीटीज आफ राजस्थान जिल्द २ पृष्ठ ४४३) इस प्रकार अगरेजो का राजस्थान मे प्रथम अनुभव काफी कटुता पूण रहा और इसका परिणाम यह हुआ कि कम्पनी के डाइरेक्टस ने वेलसली द्वारा प्रारम्भ की गई नीति को त्याग दने की आज्ञा दी। किन्तु १८१७ मे कम्पनी ने पुन राजस्थान के राजाओ के समक्ष पिंडारियो के दमन के लिए सधि के प्रस्ताव रखे तो राजाओ ने पिंडारियो के आतक से बचने के लिए सहप स्वीकार कर लिया। इस प्रकार इन सधियो के द्वारा राजस्थान के राज्यों के प्रति ब्रिटिश सरकार ने एक नयी नीति का उद्घाटन किया जिसे कि "आश्रित पाथक्य की नीति" (The Policy of Subordinate Isolation) कहा जाता है। सधियो की भाषा ब्रिटिश कूटनीति की परिचायक है क्योकि सर्वोच्च सत्ता ने स्वय इनका निर्वाचन अपने हित साधन के लिए किया। गाधीजी के शब्दो म ये सधिया बराबर वालो के सुलहनामे नही थी। वे तो दान दी हुई चीजें थी जिन पर दाता ने अपनी इच्छा के अनुसार शर्तें और पाबन्दिया लगा दी। ये अधिकतर या सारी की सारी सावभौम सत्ता को मजबूत बनाने की खातिर दी हुई रियायतें थी।

राजस्थान पर ब्रिटिश प्रभुत्व की स्थापना के द्वारा अशान्ति एव युद्ध तो समाप्त हुए किन्तु इस शान्ति व्यवस्था के लिए राजस्थानियो को भारी मूल्य चुकाना पडा। ब्रिटिश साम्राज्य का सरक्षण प्राप्त करके

राजस्थान के राजा अधिक स्वेच्छाचारी बन गये। विदेशी शासन के पूर्व राजाओं को अपनी सत्ता बनाये रखने के लिए प्रजा के समर्थन की आवश्यकता पड़ती थी तथा एक अत्याचारी राजा को प्रजा विद्रोह द्वारा गद्दी से हटा सकती थी। ब्रिटिश साम्राज्य की छत्रछाया में राजाओं को प्रजा का भय नहीं रहा। फलस्वरूप देशी राज्य-शासन ब्रिटिश युग में और भी अधिक निरंकुश हो गया। एक ओर तो अंगरेजी संरक्षण ने राजाओं को अकर्मण्य बनाया दूसरी ओर अकर्मण्यता एवं कुशासन का आरोप लगा कर राज्यों के आन्तरिक मामलों में अधिक से अधिक हस्तक्षेप किया जाने लगा। आर्थिक क्षेत्र में भी ब्रिटिश साम्राज्य का प्रभाव राजस्थान के जन साधारण के लिए हानिकारक सिद्ध हुआ। प्राचीन कुटीर उद्योगों का पतन होने लगा। नमक पर जो प्रतिबंध लगाये गये उससे आम जनता को बहुत कष्ट हुआ। अफीम की खेती को नियंत्रित करने से राजस्थानी खेतीहरों को बहुत हानि हुई। देशी राजाओं को अपनी सेनायें कम करने के लिए बाध्य किया गया जिसका परिणाम यह हुआ कि बहुत से लोग बेरोजगार हो गये। इस प्रकार १८१८ के पश्चात राजस्थान में जो परिवर्तन हुए उनसे ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध असन्तोष बढ़ा। उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में जो ब्रिटिश विरोधी आन्दोलन एवं प्रदर्शन हुए वे विदेशी शासन के विरुद्ध जनता की प्रवृत्तियों के परिचायक थे। लार्ड डलहौजी ने निस्सन्तान राजाओं के राज्यों को हड़पने की जो नीति अपनायी उससे देशी राजा और भी सशंकित हो गये। (दि एम्पायर इन इण्डिया—मेजर इवान्स बेल पृष्ठ ३०—जब भारत की सर्वोच्च परिषद के एक सदस्य जनरल लो राजपूताना के दौरे पर आये तो उन्होंने प्रत्येक वर्ग में डलहौजी की नीति के प्रति उत्तेजना पाई) इन सब घटनाओं का परिणाम यह हुआ कि भारत के अन्य प्रान्तों की तरह राजस्थान में भी विद्रोह की ज्वाला सुलगने लगी और जब १८५७ में यह ज्वाला भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के रूप में भड़क उठी तो राजस्थान भी उसकी लपेट से अछूता न रह सका।

१८५७ की क्रान्ति में राजस्थान के योगदान के बारे में बहुत सी भ्रान्तियाँ हैं। अंग्रेज इस विद्रोह का दमन करने में सफल रहे इसी कारण राजस्थानी राजाओं ने अपनी राज भक्ति को बहुत बढ़ा चढ़ा कर प्रस्तुत किया तथा क्रान्ति की वास्तविक घटनाओं पर पर्दा डालने का प्रयत्न किया। स्वाधीनता के पश्चात ही स्वतंत्रता संग्राम के इस भूले हुए अध्याय पर प्रकाश डाला जा सका। समकालीन लेखकों की कृतियों तथा अन्य ऐतिहासिक तथ्यों के अध्ययन द्वारा उस युग की घटनाओं का वास्तविक रूप नजर आता है जिसे शासक वर्ग ने अपने हित साधन के लिए छिपा रखा था। यद्यपि अबके बहुत से इतिहासकार इस क्रान्ति को केवल सिपाही विद्रोह की संज्ञा देते हैं क्योंकि इस युग में भारतीयों में राष्ट्रीय चेतना का अभाव था। किन्तु यह एक निर्विवाद सत्य है कि भारतीय स्वतंत्रता का यह प्रथम संग्राम देश के अधिकांश भाग में लड़ा गया तथा भारत के प्रत्येक वर्ग ने इसमें भाग लिया। यद्यपि इस स्वाधीनता युद्ध के सेनानी अपने उद्देश्य की प्राप्ति में असफल हुए किन्तु किसी आन्दोलन की असफलता के आधार पर उसके राष्ट्रीय रूप को अस्वीकार नहीं किया जा सकता। (दि एम्पायर इन इण्डिया—मेजर इवान्स बेल पृष्ठ ३) स्वतंत्रता की प्राप्ति के लिए प्रथम प्रयत्न के रूप में १८५७ की क्रान्ति एक असाधारण महत्व की घटना कही जा सकती है। (वही पृष्ठ ३) । संघर्ष प्रारम्भ होने के पश्चात विद्रोहियों ने जिन राष्ट्रीय आकांक्षाओं

को प्रदर्शित किया उनका उचित मूल्याकन किया जाना चाहिये । (वही पष्ठ २) इस प्रकार विद्रोह का वास्तविक कारण भारतीयो का ब्रिटिश शासन के प्रति राजनतिक, आर्थिक, सामाजिक एव धार्मिक असतोष था । चरबी लगे कारतूसो का प्रचलन तो एक ऐसी घटना थी जिसने कि असतोष की चिगारिया को विद्रोह की ज्वाला मे परिणत कर दिया (वही पृष्ठ १) ।

ब्रिटिश सरकार ने राजस्थान पर अपना प्रभुत्व बनाये रखने के लिये नसीराबाद तथा नीमच म कम्पनी के सनिको की छावनिया स्थापित की थी । एरिनपुरा तथा देवली म जोधपुर और कोटा राज्य के खर्चे पर अगरेज अफसरो के नियत्रण मे सनिक टुकडिया रखी गई थी । (के एण्ड मलसन जिल्द ३ पृष्ठ १६५) विद्रोह के प्रारम्भ होने के समय राजस्थान मे स्थित कम्पनी के भारतीय सनिका की सख्या ५००० थी तथा उस समय कोई भी यूरोपीय सनिको की टुकडी इस प्रदेश मे नही थी (वही) । राजस्थान के तत्कालीन ए० जी० जी० जाज पेट्रिक लारेन्स ने स्थिति की भयकरता का अनुमान लगा लिया (वही) । इस बात की पूण सम्भावना थी कि यह सनिक अवसर मिलते ही विद्रोह कर देंगे (वही) । लारेन्स ने इस स्थिति का मुकाबला करने के लिये राजस्थान के सभी राजाओ के नाम एक गश्ती पत्र भेजा जिसम कि उनमे सहायता की माग की गई थी (के एण्ड मलेसन जिल्द १ पृष्ठ ३५२) । लारेन्स का दूसरा महत्वपूण काय अजमेर को सुरक्षित बनाना था, क्योकि वह जानता था कि अजमेर का राजस्थान म वही महत्व है जो दिल्ली का भारत मे है (फॉरेस्ट–हिस्ट्री ग्राफ इडियन म्यूटिनी पृष्ठ ५४८) —अगर अजमेर विद्रोहियो के अधिकार मे आ जाता तो राजस्थान मे ब्रिटिश सत्ता के अस्तित्व को बहुत बडा खतरा उत्पन्न हो जाता । जसी कि सम्भावना थी, नसीराबाद के सनिको ने २८ मई, १८५७ को विद्रोह कर दिया (इटलिजेन्स ब्राच रिपोट पृष्ठ ४३) तथा छावनी को जला कर दिल्ली की ओर प्रस्थान किया । ट्रेवर ए चैप्टर आफ इडियन म्युटिनी पृष्ठ ५४) जोधपुर राज्य द्वारा भेजे गये करीब एक हजार सनिको ने उनका पीछा किया किन्तु एक समकालीन ब्रिटिश सनिक अधिकारी के मतानुसार उक्त सनिको की सहानुभूति विद्रोहिया के साथ थी । (प्रिचाड-दि म्यूटिनीज इन राजपुताना) नीमच मे भी नसीराबाद की घटनाओ की पुनरावृत्ति हुई तथा ३ जून, १८५७ को यहा के सैनिको ने विद्रोह कर दिया और दिल्ली की ओर कूच किया । माग म यह विद्रोही सनिक निम्बाहेडा तथा टौक कस्बे म रुके जहा कि नगर के हाकिम ने तथा नगर निवासिया न उनका स्वागत किया । इस प्रकार जसे जसे विद्रोही दिल्ली की ओर बढते गय उनकी सख्या भी बढती गई । आगरा के पास कोटा कन्टीजर के सनिक भी इन विद्रोहियो से मिले गये । (ज्वाला सहाय-लॉयल राजपुताना पृष्ठ २०७) कप्तान शावस जब विद्रोहियो का पीछा करते हुए निम्बाहेडा पहुचा तो उसने वहा के मुख्य पटेल को विद्रोहिया की सहायता करने के अपराध म मृत्यु दण्ड दिया । (ज्वाला सहाय लायल राजपुताना पृष्ठ २१६) ।

एरिनपुरा स्थित जोधपुर लिजियन ने भी १६ अगस्त को विद्रोह कर दिया तथा उसकी एक टुकडी ने माउट आबू की अगरेज बस्ती पर आक्रमण किया (वही) । नसीराबाद तथा नीमच के विद्रोहियों की तरह इन्होंने भी दिल्ली की राह ली । जोधपुर के महाराजा न इन विद्रोहिया का मुकाबला करने के लिये

सेना भेजी किन्तु इस सेना ने विद्रोहियों का पीछा करने में किसी उत्साह का प्रदर्शन नहीं किया। लारेंस ने महाराजा जोधपुर को लिखा कि आपके सैनिक तो विद्रोहियों के इशारे पर नाचते हैं। लिजियन के सैनिकों ने अपनी सेवायें जोधपुर के असंतुष्ट जागीरदारों को सौंप दी जिनमें कि आऊआ, आसोप गूलर तथा आलनिया वास मुख्य थे। (प्रिचार्ड—दि म्युटिनीज इन राजपुताना, पृष्ठ २६०) प्रिचार्ड का मत है कि जागीरदारों तथा सैनिकों में अवश्य पहले से ही सम्बन्ध होगा क्योंकि उक्त जागीरदारों ने सिपाहियों के आने से पूर्व ही गोला बारूद एकत्रित कर रखा था। (वही) लारेंस ने आऊआ स्थित विद्रोहियों का दमन करने के लिये स्वयं एक ब्रिटिश सेना के साथ १८ सितम्बर १८५७ को आक्रमण किया। (शावर्स-ए मिसिंग चेप्टर आफ इंडियन म्यूटिनी पृ १०६) जोधपुर का अंगरेज रेजिडेन्ट मेजर मसन भी इस आक्रमण में सम्मिलित होने के लिये आऊआ पहुंचा किन्तु लारेंस की सेना के कैम्प तक पहुंचने के पूर्व ही वह विद्रोहियों की गोली से मारा गया। (प्रिचार्ड—म्यूटिनी इन राजपुताना पृष्ठ २४१, लेखक उस समय जोधपुर रेजिडेंसी का अधिकारी था और उसका मत है कि मसन की हत्या की योजना पहले से ही बनाली गई थी) मसन का सिर काट कर आऊआ के गढ़ पर टांग दिया गया। लारेंस तीन दिन तक आउआ के गढ़ पर घेरा डाले रहा किन्तु गढ़ के गोलों के समक्ष वह अधिक दिनों तक नहीं टिक सका और परिणाम यह हुआ कि उसकी सेना को पीछे हटना पड़ा। (के एंड मलेसन पृष्ठ ३६७) गोरी सेना की पराजय तथा विद्रोहियों की इस विजय का वृतान्त इस क्षेत्र के लोक-गीतों में विस्तार से मिलता है। ब्रिटिश सेनाध्यक्ष कर्नल होम्स ने पुनः एक बड़ी सेना के साथ २० जनवरी १८५८ को आक्रमण किया। आउआ के जागीरदार और उसके साथी यह घेरा तोड़कर निकल भागे तथा उन्हें मेवाड़ राज्य के जागीरदारों ने आश्रय दिया। २४ जनवरी १८५८ को होम्स की सेना ने आऊआ पर अधिकार स्थापित कर लिया तथा भविष्य में आऊआ की शक्ति समाप्त कर देने के उद्देश्य से इस गढ़ को तथा आसपास के अन्य गढ़ों को बारूद से उड़ा दिया गया।

कोटा भी १८५७ के विद्रोह के समय बहुत अशान्त था और जब अंगरेज रेजिडेन्ट मेजर बर्टन नीमच में अंगरेजी शासन को पुनः स्थापित कर १२ अक्तूबर १८५८ को लौटा तो उसने कोटा राज्य की सेना में बहुत उत्तेजना पाई। उसने १४ अक्तूबर को महाराव से मुलाकात की तथा यह परामर्श दिया कि राज्य सेना से ब्रिटिश विरोधी तत्वों को निकाल दिया जाय। (के एण्ड मैलेसन, पृष्ठ ३६८ जिल्द ४) मेजर बर्टन का यह कार्य सम्बन्धित अधिकारियों से छिपा न रह सका और परिणाम यह हुआ कि समस्त राज्य सेना भड़क उठी तथा उसने १५ अक्तूबर की सुबह को रेजीडेंसी पर आक्रमण कर दिया। (वही) मेजर बर्टन उसके दो पुत्र तथा रेजीडेंसी का डाक्टर मारे गये। विद्रोहियों ने सारे शहर पर अधिकार स्थापित कर लिया तथा महाराव का अधिकार महल की चार दिवारी तक रहा। चार माह तक विद्रोहियों ने कोटा पर जयदयाल कायस्थ तथा महाराव खान पठान के नेतृत्व में शासन किया। कोटा महाराव ने करौली के सैनिकों की सहायता से विद्रोहियों को नगर से बाहर निकालने का प्रयत्न किया किन्तु वह असफल रहा। जनरल राबर्टस ने २००० ब्रिटिश सैनिकों के साथ २२ मार्च १९५८ को कोटा पर आक्रमण किया और ३० मार्च १८५८ को विद्रोहियों को युद्ध में पराजित करने के बाद कोटा पर ब्रिटिश सैनिकों का अधिकार हो गया। (के एण्ड मलेसन जिल्द ४ पृष्ठ ४०३) जयदयाल का भाई हरदयाल युद्ध में मारा गया।

जयदयाल महाराव अलीखान और उनके एक सहयोगी एमाज अलीखान को फासी दे दी गई। (क एण्ड मलेसन, जिल ४ पृष्ठ ४०३) कोटा महाराव पर भी यह आराप लगाया गया कि वे गुप्त रूप से विद्रोहियो के साथ थे तथा मेजर बर्टन की हत्या के लिये उत्तरदायी हैं। यद्यपि जाच कमीशन ने कोटा महाराव को निर्दोष ठहराया किन्तु फिर भी कर्त्तव्य पालन म ढिलाई दिखलाने के आरोप से महाराव की सलामी १७ से घटा कर १३ कर दी गई।

कोटा विद्रोह के दमन के पश्चात् राजस्थान म कुछ माह तक शान्ति रही कि तु तात्या टापे के राजस्थान की ओर आने से यह प्रदेश पुन विद्रोहिया एव ब्रिटिश सरकार के सघष का स्थल बन गया। तात्या ५००० ग्वालियर के विद्रोहियो के साथ जून १८५८ म राजस्थान की आर बढा। माग मे ४००० भील भी उसके दल मे सम्मिलित हा गये। (वही) उसने जयपुर, हाडौती, तथा राजस्थान के अन्य राज्यो म अपने दूत भेजे क्योकि उसे विश्वास था कि इन स्थाना पर उसे समथन तथा सहायता प्राप्त हो सकेगी। (वही) इस आशा से वह जयपुर की आर बढा किन्तु जनरल राबर्ट्स उस नगर की रक्षा के लिये नसीराबाद से सेना लेकर पहुँच गया। (फारेस्ट—जिल्द ३ पृष्ठ ५६८) तात्या ने माग बदल लिया तथा वह टौंक पहुँचा। टौंक के नवाब ने जो सेना उसका मुकाबला करने के लिये भेजी वह विद्रोहियो से मिल गई। इस प्रकार तात्या की शक्ति म वृद्धि हुई। (वही) टौंक के पश्चात उसका दल बूँदी पहुँचा। यद्यपि बूँदी ने उसके विरुद्ध कोई सेना नही भेजी किन्तु तात्या को इस राज्य से कोई सहायता प्राप्त नही हो सकी। इसलिये वह मेवाड की ओर बढा, जहा कि सलूम्बर आदि ठिकानो से उसे काफी सहायता मिल सकती थी। (वही पृष्ठ ५७२) किन्तु राबर्ट्स की सेना ने उसे १४ अगस्त '१८८५ म भीलवाडा के निकट पराजित किया। (के एण्ड मलेसन, जिल्द ५ पृष्ठ २२५) मेवाड से तात्या झालावाड पहुँचा उसका राज्य के सनिका ने स्वागत किया। ( वीर विनोद पृष्ठ १६७७ ) यहा तात्या को बहुत साधन तथा सनिक सामग्री प्राप्त हुई और उसके सनिका की सख्या आठ से दस हजार तक हो गयी। (के एण्ड मलेसन, जिल्द ५, पृष्ठ २२८) दो माह तक यह सेना मध्य भारत म रही तथा दिसम्बर १८५८ म तात्या पुन राजस्थान म आया और बासवाडा पर कब्जा कर लिया। (फारेस्ट—पृष्ठ २०८) मेवाड मे उसे सलुम्बर से रसद प्राप्त हुई तथा यहा से वह जयपुर की ओर बढा। इस समय शाहजादा फिरोज भी उससे आ मिला। शावर्स न १६ जनवरी १८५८ का तात्या एव फिरोज की सम्मिलित सेनाओ को दौसा के निकट घेर लिया। किन्तु विद्रोही इस घेरे को तोडकर अलवर होते हुए ३१ जनवरी का सीकर जा पहुँचे। (के एण्ड मलेसन जिल्द ५ पृष्ठ २५५) उसी रात ब्रिटिश सेनाओ ने होम्स के नेतृत्व म विद्रोहिया पर अचानक धावा बोल दिया जिसका परिणाम यह हुआ कि विद्राही सेना पूर्ण रूप से परास्त हो गई। (वही) तात्या परोन के जगल मे जा छिपा जहा कि नरवर के जागीरदार मानसिह न उसे ब्रिटिश सरकार के हवाले कर दिया। १६ अप्रेल, १८५८ को सिप्री म उसे एक सक्षिप्त मुकदमे के पश्चात फासी दे दी गई। (ज्वालासहाय लॉयल राजपूताना पृष्ठ १८४)

इस प्रकार १८५७ की क्रान्ति को सफल बनाने के अतिम प्रयत्न राजस्थान की भूमि पर किये गये। ब्रिटिश साम्राज्य से लोहा लेने के लिये विद्रोही नेताओ द्वारा राजस्थान को सघष स्थल के रूप म चुना जाना

इस बात का प्रमाण है कि इस प्रदेश के निवासियो म स्वाधीनता-सग्राम के प्रति पर्याप्त सहानुभूति थी। विद्रोही सेनाय जहा भी गई स्थानीय जनता न उनका स्वागत किया तथा रसद प्रदान की अन्यथा तात्या टोपे के लिये यह सम्भव नही हो सकता था कि वह ब्रिटिश साम्राज्य की विशाल सेनाम्रा का मुकाबला कर सकता। राजस्थान के जन साधारण द्वारा विद्रोहियो के प्रति व्यक्त की गई सहानुभूति उनकी ब्रिटिश विरोधी प्रवृत्तिया की परिचायक है। इस युग के साहित्य एव लोकगीतो मे भी स्वतन्त्रता सग्राम के सेनानियो के साहस एव बलिदान की सराहना की गई है। सूर्यमल्ल मिश्रण एव कवि राजा बाकीदास की रचनायें उक्त कथन के साक्षी है। इन रचनाम्रो म राजाम्रो की अकमण्यता एव उनकी दासता की प्रवृति की भत्सना की गई है। यद्यपि शासक वग न स्वाथ वश विद्रोहियो का साथ नही दिया किन्तु उनका यह काय उनकी प्रजा का उचित प्रतीत नही हुम्रा। फलस्वरूप जब भी किसी राजा ने अग्रेजो की सहायता के लिय अपनी सेना भेजी तो इन सनिको ने विद्रोहियो का मुकाबला करने की अपेक्षा उनका स्वागत किया। प्रिचाड जो कि मेजर मैंसन की मृत्यु के पश्चात जोधपुर का रेजिडेंट था लिखता है यद्यपि जोधपुर राजा की भक्ति ब्रिटिश साम्राज्य के प्रति थी, किन्तु उसकी सेना तथा प्रजा म विद्रोहियो के प्रति सहानुभूति थी क्योकि विद्रोही उनके धम एव जाति की रक्षा के लिए लड रहे थे। (प्रिचाड म्यूटिनी, इन राजपूताना, पृष्ठ २३३) जब लारेन्स के आऊआ युद्ध मे पराजित होने के समाचार जोधपुर पहुँचे तो जनता ने बडे उत्साह से इस समाचार का स्वागत किया। (वही पृष्ठ २४३) उदयपुर मे भी नगर की जनता म ब्रिटिश विरोधी भावना इतनी अधिक थी कि महाराणा को अग्रेज परिवारो का पिछौला झील के महलो मे सुरक्षा की दृष्टि से रखना पडा। (ज्वालासहाय लॉयल राजपूताना, पृष्ठ २२४ २१५)

अग्रेज रेजिडेन्ट से महाराणा की मुलाकात भी गुप्त स्थानो म की जाती थी जिससे कि ब्रिटिश विरोधी तत्वो को उत्तेजना फैलाने का अवसर प्राप्त न हो। (वही) उदयपुर म सामोद के रावत शिवसिंह तथा सादुल्लाखा के नेतृत्व मे एक शक्तिशाली दल विद्रोहियो के साथ था। इस प्रकार राजस्थान के प्रत्यक राज्य म जन साधारण, सामन्त तथा सनिको का एक बहुत बडा भाग स्वाधीनता सग्राम म अपना योग देने के लिय तत्पर था। प्रिचाड लिखता है 'अगर राजस्थान क राजाम्रो ने उन्हे इस अवसर पर नेतृत्व प्रदान किया होता तो बहुत सम्भव था कि क्रान्ति का परिणाम कुछ ओर ही होता। (प्रिचाड, म्यूटिनी इन राजपूताना, पृष्ठ २६६) विद्रोहियो न राजाम्रो को आमन्त्रित भी किया तथा सम्राट बहादुरशाह न उनके नाम एक सदेश भेज कर यह इच्छा व्यक्त की कि यदि राजा लोग इस सघष का नेतृत्व अपने हाथो म ले लें तो सम्राट स्वय अपने सारे शाही अख्तियारात किसी ऐसे सघ या पचायत के हाथ सौप देंगे जो इस काम के लिय चुना जाय (श्री विनायक दामोदर सावरकर द्वारा अपने ग्रन्थ १८५८ का भारतीय स्वातन्त्र्य समर म ३२२ २३ पर उद्धत सर चालस मेट काफ कृत दि नेटिव नरेटिव पृष्ठ २२६ पर दिये गये सम्राट के हस्ताक्षरो सहित पत्र) किन्तु राजाम्रो ने बहादुर शाह के आह्वान को ठुकरा दिया और परिणाम यह हुम्रा कि राजस्थान म अपनी स्थिति को सुदृढ बनाने म अग्रेजो को विशेष कठिनाई नही हुई। इस प्रकार स्वतन्त्रता की प्राप्ति के लिए किया गया यह सघष राष्ट्र को विदेशी शासन स मुक्त कराने म असफल रहा। विद्रोही सनिको द्वारा असाधारण देशभक्ति वीरता और आश्चयजनक साहस प्रदर्शित करने पर भी अग्रेज

सेनानायकों की कुशल रणनीति के समक्ष उनकी हार हुई। नेतृत्व के अभाव में राजस्थान के विद्रोही सैनिक दिल्ली तथा कानपुर की ओर चले गये। अगर वे राजस्थान के बाहर जाने की अपेक्षा अपनी शक्ति को अजमेर आदि ब्रिटिश सत्ता के केन्द्रों को जीतने में लगाते तो बहुत सम्भव था कि राजस्थान की जनता स्वाधीनता के इस संग्राम में अपना निर्णयात्मक योग दे सकती। (प्रिचार्ड— म्यूटिनीज इन राजपूताना, पृष्ठ २४६) इस प्रदेश के जन साधारण में विदेशी सत्ता के विरुद्ध संघर्ष में भाग लेने के लिये कितनी तत्परता थी इसका उदाहरण हमें जोधपुर की रेजिडेंसी के एक पदाधिकारी प्रिचार्ड द्वारा दिये गये विद्रोह के वृत्तान्त से प्राप्त होता है। जिसके अनुसार मारवाड़ में उस समय ब्रिटिश विरोधी भावना इतनी अधिक थी कि मारवाड़ के प्रत्येक गांव से विद्रोहियों को धन एवं जन की सहायता प्राप्त हो सकती थी। (वही पृष्ठ २३०) स्पष्ट है कि अगर राजस्थान के ब्रिटिश विरोधी तत्वों को उचित नेतृत्व द्वारा संगठित किया जाता तो बहुत सम्भव था कि १८५७ की असफल क्रान्ति का परिणाम कुछ और ही होता। ●

> अगर हम न्याय पाना और आजादी हासिल करना चाहते हों, तो हमें अपने दोष देखना और सुधारना सीखना चाहिये, सहनशील बनना और आत्म-श्रद्धा तथा धीरज रखना सीखना चाहिये और त्याग व कुरबानी करना सीखना चाहिये। थोड़े में कहा जाय तो जिनसे हमें न्याय प्राप्त करना है उनके दोषों को देखने के बजाय उनके महान गुणों और ऊंचे चरित्र का अनुकरण करना हमें सीखना चाहिये।
>
> —सरदार पटेल

# स्वतंत्रता प्रयास

१८५७ के प्रथम स्वतन्त्रता सग्राम के पश्चात् भारत म अग्रेजी शासन पूरी तरह से स्थापित हो गया। देशी रियासता की स्वतन्त्रता समाप्त हो गई। पश्चिमी जीवन का हमारे ऊपर पूरा प्रभाव पडना शुरू हो गया। इसी पश्चिमी प्रभाव की देन राष्ट्रीय चेतना के रूप मे हमार सामने आई। १८८५ मे काग्रेस की स्थापना हुई। अग्रेजी शासन ने काग्रेस की स्थापना मे सहयोग दिया। सर ह्यूम उसके पहले सभापति थे। सरकार को यह नही मालूम था कि यही काग्रेस उसकी समाप्ति का एक दिन कारण बनेगी।

समय के साथ साथ काग्रेस म उग्रवादी सदस्य आते गय, राष्ट्रीय भावना बनी, इसी दौरान महात्मा गाधी के भारत म आगमन से लोगो में एक नई चेतना का उदय हुआ।

राजस्थान के सामन्तशाही शासन न जनता को और निरीह बनाकर दीनता तथा पराधीनता की बडियो म जकड रक्खा था। सामन्त जनता के भाग्य विधाता बने हुय थे और जनता उनको अन्नदाता भगवान ही मान कर पूजती थी। काग्रेस का जन्म इन रियासतो म तो नही हुआ परन्तु उससे प्रेरित होकर कई अन्य सस्थाओ ने जन्म लिया तथा विभिन्न रियासतो से जन प्रतिनिधि आगे आय और सामन्तशाही के खिलाफ मोर्चा लेने लग।

१९३६ मे जोधपुर म मारवाड लोक-परिषद की स्थापना की गई। इसक मुख्य कायकर्ता श्री जयनारायण व्यास थे जिन्होने जन आन्दोलन का सचालन किया और उसको सफलता की चोटी पर पहुचाया। १९४६ तक व्यास जी ने ९ बार जेल यात्रा की। २३ अक्टूबर १९२९ को श्री जयनारायण व्यास को प्रथम बार दो साथियो आनन्दराज सुराना और भवर लाल सर्राफ के साथ गिरफ्तार किया गया। नागौर जिले म यह सगीन मुकदमा चला, जिसके लिये स्पेशल ट्रिब्यूनल नियुक्त किया गया। व्यास जी को ६ वर्ष की सजा दी गई पर १९३१ म गाधी इरविन समझौते के अनुसार उनको छोड दिया गया।

इसके पश्चात ६ जनवरी १९३२ को अजमेर मे श्री हरिभाऊ जी उपाध्याय ब्यावर म श्री घीसू लाल जाजोदिया, व स्वामी कुमारानन्दजी को गिरफ्तार किया गया। ये गिरफ्तारिया सविनय आज्ञा भग आदोलन के सिल सिल म हुई थी। यह आन्दोलन गाधी जी के नेतृत्व म काग्रेस ने सार भारत

म छेड दिया था। १६२७ मे बम्बई मे अखिल भारतीय, देशी राज्य लोक परिषद के वार्षिक अधिवेशन मे व्यास जी को राजपूताना शाखा का मन्त्री नियुक्त किया गया। कई राज्यो म परिषद के कुछ सदस्य बनाये गये। बीकानेर के स्वामी गोपाल दासजी श्री खूबराम जी सर्राफ और श्री सत्यनारायण जी सर्राफ ने बडे उत्साह से परिषद के कार्यों मे हाथ बटाया।

१६३३ मे अजमेर जेल से एक वष की सजा काटने के बाद श्री जयनारायण व्यास परिषद के मन्त्री होने के नाते बीकानेर को रवाना हुए। बीकानेर राज्य की स्थिति भी बडी खराब थी। १६३२ मे बीकानेर राज्य के फौजदारी कानून के अन्तगत श्री खूबराम जी सर्राफ, श्री सत्यनारायण जी सर्राफ चूरू के स्वामी गोपाल दास, चन्दनमल जी, बद्रीप्रसाद जी, प्यारेलाल जी, व सोहनलाल जी पर सगीन मुकदमे चलाये गये। गोलमज सम्मेलन मे 'अखिल-भारतीय देशी राज्य, लोक-परिषद का एक विशेष शिष्ट मडल लन्दन इसलिये भेजा गया था कि राजाओ के मुकाबले म जनता के दृष्टिकोण को सम्मेलन के सदस्यो के सम्मुख उपस्थित करें। "जन्मभूमि" के सम्पादक श्री अमृतलाल, सौराष्ट्र के सुप्रसिद्ध बरीस्टर श्री चूडगर और पूना के प्रोफेसर अभ्यकर शिष्ट मडल मे शामिल थे। उन्होने बीकानेर और भोपाल राज्यो के सम्बन्ध म विशेष पॅम्फलेट तैयार किये थे। बीकानेर के राष्ट्रवादी नेताओ को महाराज गगासिंह का कोप सहना पडा। चूरू म १६३० म राष्ट्रीय झडे का फहराया जाना, 'खतरनाक प्रवृति बताया गया। अजमेर से प्रकाशित त्यागभूमि पत्र मे राज्य के बजट पर जो विहगम दृष्टि डाली गई थी उसको भयावह बताते हुये उसका उत्तरदायित्व अभियुक्तो पर डाला गया। १० माच १६३२ को उनको दोषी ठहराकर मामला सेशन अदालत को सुपुद कर दिया। श्री जय नारायण व्यास बीकानेर गये। अभियुक्तो के लिय राज्य मे स्थान स्थान पर अखिल भारतीय देशीय राज्य लोक परिषद के सदस्य बनाये गय। अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी, को दिये गय स्मरण पत्र पर उनके हस्ताक्षर करवाये।

जोधपुर राज्य म 'मारवाड लोक परिषद श्री व्यास के नेतृत्व म काय कर रही थी। इसी समय वहाँ किसान सभा का भी सगठन हुआ, इसको मारवाड लोक परिषद के समानान्तर खडा किया गया था परन्तु बाद मे किसान सभा भी जागीरी सघष स पृथक न रह सकी तब जाट सभा का आडम्बर रचा गया। मारवाड म 'लोकपरिषद' का आन्दोलन बहुत तीव्र होता गया और वह सामन्तशाही के साथ बराबर मोर्चा लेती रही। जागीरी आन्दोलन भी तीव्र होता गया और किसानो की जागृति के कारण सघष की सी स्थिति पदा हो गई। चन्डावल काण्ड २७ माच १६४२ और 'डाबडा काण्ड १३ माच १६४७, उस सघष के ही प्रतीक थे। भारत म काग्रेस ने महात्मा गाधी के नेतृत्व म १६४२ मे जब 'भारत छोडो आन्दोलन शुरू किया उसी समय जोधपुर म भी उत्तरदायी शासन के लिये मोर्चा शुरू किया गया और अन्त म राज्य म लोकप्रिय मन्त्री मण्डल गठित किया गया हालाकि उसमे भी तरह-तरह की अडचने डाली गई थी।

नवाबो तथा राजाओ का दमन तीव्र होता जा रहा था। लोहारू के सिंहानी तथा आसपास के अन्य गाँवो म १६३५ के अगस्त मास म नृशस एवम् हृदयहीन भीषण गोली-काण्ड व हत्या काण्ड हुए। ऐसे उदाहरण देशी राज्यो की जन जागृति के इतिहास म मुश्किल से मिलेंगे।

३० जुलाई १६३५ को लाहारू के नवाब ने अपने कुछ आदमियो को चेहडकना म ऊट टक्स वसूल करने भेजा । उन्होने रिपोट की कि लोग टक्स देने को तयार नही हैं, हालाकि, लोगो ने टक्स अदा करने के लिये कुछ मोहलत मागी थी । इस जरा सी बात पर नवाब ने अग्रेज सरकार से फौज मगा ली । ए० जी० जी० के आने से वहां भीड जमा हो गई, परन्तु ए० जी० जी० को यह बताया गया कि यह भीड विद्रोह के लिये जमा हुई है । लोगो ने ए० जी० जी० के सामने लाठिया लेकर आना ठीक न समझा और लाठिया एक जगह जमा करदी । इसे विद्रोह का सूचक समझा गया । उपस्थित लोगो ने ए० जी० जी० के माग मे भीड न जमा होने देने के लिये यह आवश्यक समझा कि जो जहां बठा है शात भाव से बठा रहे । नवाब ने इसे लोगो का ओछापन और अपमान जनक रवैया बताया । कुछ लोगो को बुलाकर गिरफ्तार कर लिया गया । जमा भीड पर बुरी तरह लाठी वर्षा की गई और उन्हे जगल म भगा दिया गया । गाँव मे लूट खसोट की गई और निमम होकर गोली चलाई गई । उस गोली काण्ड म १७ जाट, २ खतरी, १ धाकड और २ अग्रवालो की मृत्यु हुई ।

देशी राज्यो म कैसा घोर अधकार और कसा दमघोट वातावरण छाया हुआ था यह उपरोक्त वणन से जाना जा सकता है । इस प्रकार के अधकारमय वातावरण म जन प्रतिनिधि जिस साहस धय और सूझबूझ से काय कर रहे थ वह वास्तव म प्रशसनीय था ।

१६३१ मे बाबा नृसिहदास जी ने पुष्कर मेले पर 'राजपूताना मध्यभारत राजनतिक सम्मेलन' का विराट आयोजन श्रीमती कस्तूरबा गाधी की अध्यक्षता म किया ।

१६४५ म 'बीकानेर राज्य प्रजा-मण्डल' की स्थापना की गई जिसके प्रतिनिधि उदयपुर म 'अखिल भारतीय देशी राज्य लोक-परिषद' मे सम्मिलित हुए । इस राज्य-प्रजा-मडल को भी सरकार ने गर कानूनी ठहरा दिया । जिससे फिर से सघष की स्थिति पदा हुई ।

जयपुर मे १६३८ म सेठ जमनालालजी बजाज के नेतृत्व मे प्रजा मडल ने काय शुरू किया । १६४२ मे जयपुर राज्य प्रजा मडल का वार्षिक अधिवेशन श्रीमाधोपुर मे हुआ । यहा राजस्थान और मध्य भारत आदि के कायकर्ता आमन्त्रित थे । उन्ही दिनो सिरोही राज्य मे श्री गोकुलभाई भट्ट राष्ट्रीय आन्दोलनो का नेतृत्व कर रहे थ । १६४६ तक उनका काय क्षेत्र विशेषत बम्बई, महाराष्ट्र था । उस समय रियासती जनता का दुख दद सुनने वाले दो दैनिक बम्बई से निकलते थे । गुजराती मे जन्मभूमि तथा हिन्दी म 'अखण्ड भारत' — अखण्ड भारत नाम व्यास जी ने रखा था । यह बडा ही अथसूचक था । वे रियासती भारत और ब्रिटिश भारत को एक बनाना चाहते थे । अजमेर मेरवाडा राजनतिक सम्मेलन का आयोजन ब्यावर म १६३७ के शुरू के दिनो मे किया गया था । १६४७ मे अजमेर मेरवाडा को राजस्थान मे शामिल करने का आन्दोलन उठाया गया और १६४७ मे इसी उद्देश्य से एक सम्मेलन किया गया ।

आस पास के देशी रियासतो से जब भी वहा के काय-कर्ताओ को निवासित होने का दण्ड मिलता वे अजमेर मे ही आते थे । अजमेर एक तरह से ऐसे निर्वासित नेताओ और कायकर्ताओ का घर बन गया था ।

यहा पर एक उदाहरण देना अनुचित न होगा, जिससे यह मालूम पडता है कि उस समय के कार्यकर्ता कसे कसे तरीके सरकारी कानूनो और प्रतिबन्धो की अवज्ञा कराने के लिए ढूढ निकाला करते थ। सन् १९३२ म गाधीजी के गोलमज सम्मेलन लन्दन से लौटन पर 'नमक सत्याग्रह' का दौर शुरू हुआ। सावजनिक समाओ और राष्ट्रीय झडा फहराने पर भी प्रतिबन्ध लगा हुआ था। श्री रमेशचन्द्रजी व्यास (ससद सदस्य) ने दोनो ही प्रतिबन्ध एक साथ तोडने का निश्चय किया। उन्ही के शब्दो मे—"तिरगे झडे के रग की टोपी, कुर्ता पजामा बनाकर पहन लिया। बाजार मे एक खम्भे के पास जाकर अपने को लोहे की एक मजबूत जजीर से चारो ओर से ऊपर नीचे से बाधकर उसमे मोटा ताला लगा दिया और चाबी पास के नाले म फेंक दी। उस खम्भे के साथ बधे बधे मने व्याख्यान देना शुरू कर दिया। उस अजीब दृश्य का देखने के लिय बहुत भीड वहा जमा हो गई। भीड ने सहसा ही सावजनिक सभा का रूप धारण कर लिया। आध-पौन घण्टे मे पुलिस आई और घटा भर मुझे जन्जीर खोल कर गिरफ्तार करने म लग गया। लोहार बुलाया गया और जजीर काटी गई। डेढ दो घटा सभा चलती रही और मेरा व्याख्यान होता रहा।"

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारी श्री श्यामजीकृष्ण वर्मा, सेठ दामोदरलाल जी राठी और श्री घीसूलाल जी जाजोदिया आदि की तपोभूमि ब्यावर ही रही है। १९३५ मे अजमेर के डोगरा केस के बाद लोग इधर उधर बिखर गये।

१९३८ म मेवाड राज्य प्रजा मण्डल की स्थापना हुई जिसमे माणिक्यलाल वर्मा आदि ने सक्रिय भाग लिया। एक दो साल पश्चात ही वतमान मुख्य मत्री मोहनलालजी सुखाडिया भी सक्रिय कायकर्ता बने।

भरतपुर राज्य म भी 'प्रजा परिषद' और भरतपुर दरबार के बीच सघष जारो से चल रहा था। श्री जुगलकिशोर चतुर्वेदी, पडित रेवतीशरण शर्मा और श्री राजबहादुर जी आदि उस समय भरतपुर म काय कर रहे थे। सन् ४४ व ४५ मे सघष पूरे जोरो पर था साथ ही दमन भी। श्री जयनारायण व्यास, श्री हरिभाऊ उपाध्याय तथा ब० सा० दशपाडे, स्थिति का अध्ययन करने और सम्भव हो तो सम्मान पूण समझौता कराने गये। इस सिलसिले म वे लोगो से जेल म मिले और जेल अधिकारियो से भी भेंट की।

कार्यकर्ता आन्दोलनकारी ही न थे प्रत्युत रचनात्मक प्रवृत्तियो में सक्रिय भाग भी लिया करते थे। समाज-सुधार समाज सेवा, शिक्षा प्रसार, युवक सगठन तथा आध्यात्मिक व रचनात्मक काय जो इन्होंने किये अब भी इस क्षेत्र के लिये बहुत बडी देन हैं।

१९४७ म जिस समय आजादी प्राप्त हुई उस समय तक करीब करीब सभी राज्यों म लोकप्रिय एव उत्तरदायी मत्री-मण्डलो की स्थापना हो चुकी थी।

सक्षेप म यह राजस्थान के उन मुख्य-मुख्य राज्यो के स्वतन्त्रता प्रयासो का इतिहास है जो कि गाधीजी के द्वारा बताये अहिंसा के सिद्धान्त पर चलाये गये। जिन जिन विभूतियों का वणन ऊपर किया जा चुका है उनके अलावा असख्य लोगो का सहयोग व बलिदान भी शामिल है, उन्ही के प्रयत्नो से आज हम स्वतन्त्रता प्राप्त हुई है और राजस्थान अखड भारत का एक अग बन सका है।●

# राजनैतिक-जागृति

१८५७ के देशव्यापी विद्रोह म राजस्थानी रजवाडो द्वारा अग्रेजा को प्रश्रय मिला तबभी अग्रेज शासक राजाग्रा ग्रौर जागीरदारो के प्रति शक्ति रहते थे किन्तु विप्लववादिया का ग्रातक काग्रेस का प्रभाव, शासन सुधार ग्रौर प्रथम विश्वयुद्ध के उपरान्त अग्रेजा ने यह महसूस किया कि राजा रजवाडा का विश्वास मे लेकर उनका उपयोग स्वराज्य की बढती हुई माग का सामना करने म किया जा सकता है। इसीलिए नरेन्द्र-मण्डल के रूप मे सगठन खडा किया गया। इधर कनल टाड के राजस्थान के इतिहास से प्रेरणा पाकर मेवाड के तत्कालीन महाराणा सज्जनसिंह ने कविराज श्यामलदास को मेवाड का इतिहास जो कि भारत के नव-जागरण ग्रौर राष्ट्रीयता की लहर को बढान वाला था, तयार करने के लिए नियत किया। साथ ही स्वामी दयानन्द जसे निर्भीक धम प्रचारक ग्रौर स्वदेशाभिमानी को अपने यहा ग्रामन्त्रित एव सम्मानित कर अप्रत्यक्ष रूप से स्वाधीनता के ग्रान्दोलन को बल पहुँचाया किन्तु महाराणा सज्जनसिंह का अल्पायु मे ही देहावसान हो गया फिर भी उनके द्वारा किये गय सदकार्यों की परम्परा को उनके उत्तराधिकारी महाराणा फतहसिंह ने बढावा दिया, ग्रौर 'वीर-विनोद को पूरा करवाने के लिए कविराज श्यामलदास के साथ श्री गौरीशकर हीराचन्द ग्रोभा को नियुक्त किया। वे उस समय तक बिल्कुल ग्रज्ञात ग्रौर प्रसिद्धी से परे व्यक्ति थे।

महाराणा सज्जनसिंह का निमन्त्रण पाकर स्वामी दयानन्द को मेवाड मे ग्राकर "स्वराज्य से सुराज्य कभी भी अच्छा नही हो सकता', इसकी स्फूरणा मिली। उनके निकट सम्पक मे ग्राने वाले शिवाजीराव होल्कर स्वामी विवेकानन्द, श्यामजी, कृष्ण वर्मा अरविन्द घोष ग्रादि क्रान्ति प्रणेताग्रा का सम्बन्ध राजस्थान या पडौस की किसी न किसी रियासत से तो था ही ग्रत यहा के ग्रान्दोलन को उससे काफी बल मिला। खासकर राजस्थान मे क्रान्ति की मशाल को जगाने मे शहीद केसरीसिंह बारहठ ग्रौर उनके परिवार ने जो उत्कृष्ट बलिदान किया, उसकी याद सदा ग्रमर रहेगी। वसे इस ग्रान्दोलन म खरवा के ठाकुर गोपालसिंह, ब्यावर के सेठ दामोदरदास राठी ग्रौर स्वर्गीय अर्जुनलाल सेठी प्रारम्भ से ही थे। यह भी उल्लेखनीय है कि क्रान्तिकारियो मे प्रमुख श्यामजी कृष्ण वर्मा को महाराणा फतहसिंह ने अपने सक्रेटरी के तौर पर साथ रखा था।

**स्वदेशी आन्दोलन और जागृति की लहर'—**

लार्ड कर्जन द्वारा लागू किय गये "बंग-भंग' के विरुद्ध स्वदेशी आन्दोलन का १६०४ से १६०८ तक देश भर म बहुत जोर रहा। जिसके असर से राजस्थान का आदिवासी क्षेत्र भी अछूता नही रह सका। यहा भी 'गोविन्द गुरु" नामी सन्यासी के द्वारा दक्षिणी राजस्थान तथा आसपास के पहाडी प्रदेश म "सम्प-सभा' के नाम मे संगठन खडा किया गया, जिसका प्रभाव मीणा, भील आदि जातियां के जीवन पर आज भी स्पष्ट देखने मे आता है। उनके अनुयायी "भगत" नाम से पहचाने जाते हैं, तथा वे स्वच्छता आदि के नियमा का कडाई से पालन करते है। इस आन्दोलन के साथ छोटे-बडे ठिकानदारो और रियासती कर्मचारियां तक की सहानुभूति थी, पर १६०८ म अंग्रेजी सरकार के दबाव मे आकर उनको सैनिक कार्यवाही द्वारा दबा दिया गया।

१६०६ मे 'मार्ले मिण्टो शासन सुधार योजना लागू होने पर तथा एक शाही फरमान द्वारा बंग भंग हो जाने पर राजधानी कलकत्ते से दिल्ली मे बदलने के लिये २३ दिसम्बर १६१२ को लार्ड हार्डिंग ने बडी सजधज के साथ दिल्ली मे प्रवेश किया। उस अवसर पर रासबिहारी बोस के नेतृत्व म क्रान्तिकारियो द्वारा लार्ड हार्डिंग के हाथी पर बम फेंकने से अंग्रेजा के रौब म काफी खलल पहुचा। इस काण्ड के बाद रासबिहारी और उनके साथी वेदाग दिल्ली से निकल कर देश म सशस्त्र क्रान्ति की तैयारियां करने म जुट गये। राजस्थान और महाराष्ट्र के निवासियो को जो कि स्वाधीनता के नारे लगाने मे आगे होते हुए भी ढीले पडे थे, उकसाया गया और भोपसिंह नामक युवक को जो बाद म विजयसिंह पथिक के नाम से प्रसिद्ध हुआ, राजस्थान से शस्त्र संग्रह के लिए भेजा गया, जिनके द्वारा यहा कई गुप्त कारखाने खडे किये गय।

श्री अर्जुनलाल सेठी, जैन शास्त्रो के प्रकाण्ड पंडित थे। उन्होंने जयपुर मे चलाई जाने वाली जैन पाठशाला की तरफ जनता और नवयुवका का ध्यान खींचा। श्री रामनारायण चौधरी भी अपने छोटे भाई का इस पाठशाला म भरती करवाने आये इस प्रसन्ग से वह भी क्रान्तिकारिया के साथी बन गये। लेकिन क्रांतिकारियो के अथक प्रयास के बावजूद १६१५ तक एक एक करके उनके प्रयत्न विफल होते गये।

**गांधी युग का उदय —**

दक्षिण अफ्रिका मे अहिंसक ढंग से प्रतिकार करने मे सफलता प्राप्त करने से महात्मा गाधी की ओर लोगा का ध्यान खिंच रहा था। महात्मा गाधी ने साबरमती मे सत्याग्रह आश्रम' की स्थापना करके सामूहिक प्रतिकार के शस्त्र का प्रयोग प्रारम्भ किया। उसकी प्रकाश किरणें देश के एकान्त कोने मे बसी-हुई व सदियों से पीडित और पराधीन देशी राज्यो की जनता के हृदय को भी रौशन करने लगी। यह बात बिजोलिया के किसान सत्याग्रह के उज्जवल इतिहास से स्पष्ट होती है।

**बिजोलिया मे किसान जनता का शखनाद —**

श्री भोपसिंह अंग्रेजी शासन के चंगुल से बचकर किसी तरह राजसमन्द के उस पार भाणा जैसे छोटे से ग्राम के एक धनिक श्री डालचन्द्र के मकान पर बी० एस० पथिक के नाम से पाठशाला चलाते रहे।

वहा भी सरकारी गुप्तचरो की हलचल बढ़ जान स चित्तौड के पास ओछडी जागीरदार के यहा मेहमान बनकर रहे। वहा बिजोलिया के किसान व नेताओ से उनका सम्पक हुआ।

१९१३ म बिजोलिया के किसानो न साधु सीतारामदास के नेतृत्व म ठिकाने की अनुचित लालबाग और बढे बेगार के विरोध मे जमीन का जोतना बोना बन्द कर दिया था। इससे ठिकाने की आय तो बिल्कुल बद हो गई, मेवाड मे तहलका मचना भी स्वाभाविक था। उस समय ठिकानेदार के नाबालिग होने से मेवाड सरकार की ओर से श्री केसरीसिह बारहठ के जवाई श्री इसरदान का वहा का मुसिफ बनाकर भेजा गया था, जो कि दिल्ली बमकाण्ड के मामले म छुटकारा पाकर आय हुए थे। इनकी नियुक्ति यह बताती है कि तत्कालीन महाराणा फतहसिह की ऐसे व्यक्तियो और जनता के प्रति सहानुभूति थी। श्री पथिक ओछडी से बिजोलिया आकर अपने मित्र इसरदान के सम्पक से वहा के मुसिफ एक भाटी राजपूत के यहा डेरा डालकर रहने लगे और ऐसे घुलमिल गये कि सारे सरकारी कागजात और मामले मुन्सिम मुन्सिफ के नाम से स्वय ही निपटाने लगे, साथ ही एक पाठशाला एव युवक सेवा समिति का सगठन कर नव जागृति का सूत्रपात किया। ठिकानेदार और महाजन तो पहिले से ही घबराये हुए थे। सरकारी अधिकारी १९१६ की उन्हालू फसल के लगान की उगाई के साथ युद्ध ऋण का चन्दा जबरदस्ती वसूल करने लगे थे। किसानो ने पथिक की सलाह से उसे देने से इन्कार कर दिया। अग्रेज रेजिडेण्ट के पास शिकायत पहुचने पर श्री पथिक को गिरफ्तार कर उदयपुर रवाना करने का हुक्म मुन्सिफ के पास पहुचा। इससे बचने के लिये श्री पथिक भागकर कोटा पहुचे और सारी प्रवृतिया का भार श्री माणिक्य लाल वर्मा पर छोड गये।

इसके बाद वर्षा कम होने से सियालू की फसल भी नष्ट हो गयी। ठिकाने की ओर से लिये जाने वाली लगान और जबरदस्ती वसूल किये जाने वाले युद्ध-चन्दे के बारे मे श्री पथिक से मार्गदर्शन लेकर किसानो न उसको देने से भी साफ इन्कार कर दिया। इस प्रकार शासन की ओर से चलाये जाने वाले दमन चक्र के विरुद्ध वहा जबरदस्त आन्दोलन खडा हो गया, जो देश का प्रथम सामूहिक किसान आन्दोलन था। इसका प्रभाव पास के ठिकानो और हाडौती आदि क्षेत्र पर ही नही वरन् पूरे देश भर मे पडा। यह आन्दोलन अनेक उतार चढाव के बावजूद लम्बा चला और बहुत सफल रहा।

**भोमट की भील जागृति :—**

मेवाड का एक भाग जो भोमट का इलाका कहा जाता है जागीरो मे बटा हुआ था। यहा पनरवा आदि के चर्चास्पद जगल स्थित है यह आवागमन के मार्गों से कटा हुआ होने पर भी अग्रेजी सेनापति के कमाण्ड म सगठित भील कोर के मातहत शासित होता था। वहा के एक साधारण महाजन कुल मे उत्पन्न श्री मोतीलाल तेजावत के नेतृत्व मे तूफानी आन्दोलन खडा हुआ, जो देखते देखते सिरोही, दाता पालनपुर एडर आदि राज्यो म भी फैल गया। इस आन्दोलन को दबाने के लिये सिरोही की सीमा पर स्थित गांवो को जलाया गया। इस आन्दोलन के सिलसिले म इकट्ठे जन समूह पर गोलियो की बौछार की गई जिसमे १८०० आदमी मारे गये, तथा ६४० घर ७०८५ मन गल्ला, ६०० गाडी घास, एव १८५

पशुओ का नुकसान हुआ। इसके बाद वर्षों तक श्री मोतीलालजी तेजावत को अज्ञातवास मे रहना पडा। उनके खिलाफ कई राज्यो की ओर से वारट निकले हुए थ। जब व बम्बई मे देशी राज्य लोक परिषद की बठक मे पहली बार प्रकट हुए, वहा लेखक के साथ भी प्रथम परिचय हुआ, वहीं उन्हे सलाह दी गयी कि अब अज्ञातवास मे रहने के बजाय अपने का गिरफ्तार करवा दें, तदनुसार वे मेवाड मे गिरफ्तार हो गये और सात वष तक जेल म और बाद म वर्षों तक नजर बन्द रहे।

**असहयोग आन्दोलन और राजस्थान सेवा सघ का जन्म —**

१९२१ मे नागपुर म हुए काग्रेस अधिवेशन म असहयाग का प्रस्ताव स्वीकार होते ही उसकी गूज देश भर म सुनाई दी। उससे राजस्थान ही अछूता कसे रहता जबकि उसके एक सपूत व्यवसायी सेठ श्री जमनालाल बजाज ने देश की पुकार पर रायबहादुरी का खिताब लौटा दिया और तन-मन धन स स्वतत्रता सग्राम म कूद पडे। सेठ बजाज का अनुकरण करके प्रवासी राजस्थानी व्यवसाइयो ने भी आन्दोलन का जी खोलकर साथ दिया।

तब राजस्थान और मध्यभारत राजनतिक दृष्टि से एक ही इकाई माने जाते थे, और अजमेर इसका केन्द्र था। यहा के सभी कार्य-कर्ता असहयोग आन्दोलन म शामिल हो गय और श्री पथिकजी की अध्यक्षता मे राजस्थान सेवा-सघ की स्थापना हुई जिसम, रामनारायणजी चौधरी, श्रीमती अन्जनादेवी चौधरी, माणिक्यलाल वर्मा, हरिभाइ किंकर, नारूराम व्यास शोभालालजी गुप्ता, लादूरामजी जोशी आदि राजस्थान की सेवा करन का व्रत लेने वाले लाग भी शामिल हो गये। राजस्थान म असहयोग आन्दोलन और बिजोलिया के किसान आन्दोलन का यहा से निकलने वाले "नया राजस्थान' साप्ताहिक जिसने मेवाड राज्य की ओर से प्रतिबध लगन पर "तरुण राजस्थान" नाम बदलकर बहुत बल पहुचाया। अर्जुनलालजी सेठी, बाबा नृसिंहदास, शकरलालजी वर्मा, मौलाना मुहनुद्दीन चिसती अबदुल कादर बग, प्यारे मिया और चाद करण शारदा आदि ने जागृति की ज्योति को और आगे बढाया।

बगु के किसान आन्दोलन ने भी बहुत जोर पकडा और वहा पोलिटिकल विभाग से सीधा हस्तक्षेप करके जोर जुल्म भी बहुत किया। यहा तक की किसान महिलाओ पर भी घोर अत्याचार किया गया। निहत्थी जनता पर गोलियाँ बरसाई गयी किन्तु लोगो का जोश दबा नही बल्कि मेवाड के अन्य भागो के किसान भी सगठित होकर खडे हो गये।

इसी सिलसिले मे श्री हरिभाऊ उपाध्याय को, जिन्होने गाधीजी के सत्याग्रह आश्रम साबरमती म रहकर आन्दोलन को समझा और गाधीजी का विश्वास प्राप्त कर लिया था, राजस्थान म भेजा। इन्होने अपनी कुशाग्र बुद्धि और गहरी सूझ-बूझ से यहा के आन्दोलन को नई दिशा दी।

**राजस्थान भर मे राजनतिक चेतना —**

१९२२ म बिजोलिया के किसान आन्दोलन और राज्य के बीच समझौता हो जाने से ऊपर से शान्ति दिखाई देती थी किन्तु भीतर ही भीतर आग सुलग रही थी, क्योकि शेष मेवाड सिरोही हाडौती, अलवर,

जोधपुर, जयपुर आदि राज्यो म किसी न किसी रूप मे अशाति फूट पडती थी, अत उसको दबाने के लिय अग्रेजी राज्य की ओर से "भारतीय राज्या मे असतोष विरोधी रक्षा कानून" (इण्डियन स्टेटस प्रोटेक्शन अगेंस्ट डिससेटिस्फेक्शन एक्ट) बनाया गया और इगलड से उप-प्रधान मत्री लाड विंटरटन को रियासता के सम्बन्ध में ब्रिटिश सरकार की नयी नीति समझाने के लिय भारत भेजा गया। इसके बाद १९२४ मे राजस्थानी राज्यो म निरकुश दमन का नया दौर शुरू हुआ। अलवर मे किसाना और छोट राजपूत जागीरदारा (सरशितेदारो) ने १९३५ म लगान वृद्धि के विरोध म जगह २ प्रदशन किये। रियासत की फौज ने प्रदशनकारिया को कुचलने के लिय नीमुचाणा गाव म जहा वे एक सभा के लिये एकत्र हुए थ, चारो तरफ से घेर कर उन पर करीब पौन घण्टे तक निरन्तर गोली की वर्षा की जिससे सक्डो स्त्री, पुरुष, बच्चे और पशु हताहत हुए। इस अत्याचार के विरुद्ध देश भर म विरोध प्रकट किया गया। जब अलवर के तत्कालीन महाराजा विलायत से लौटकर बम्बई बन्दरगाह पर उतरे तब उनके खिलाफ प्रदशन करने मे स्वय लेखक भी शामिल था।

**प्रजामण्डलो का जन्म और जनमत की विजय —**

१९३७ के पूव काग्रेस के साथ देशी राज्यो के आन्दोलन का कोई वैधानिक सम्बन्ध नही था और ऐसी मान्यता चली आ रही थी कि ब्रिटिश हुकुमत से निपट लने पर रियासता का देख लिया जायगा। किन्तु, राज्या की जनता को इससे समाधान नही था। कही प्रजामण्डल और कही प्रजा परिषद के नाम से राजनतिक सगठन खडे होते थे, किन्तु वे जड नही पकड पाते थे। जब इस वष हरिपुरा (गुजरात) के काग्रेस अधिवेशन म देशी राज्या की जनता को सगठित होने सम्बन्धित प्रस्ताव पास हुआ तब राजस्थान के राज्यो मे प्रजा मण्डलो का व्यवस्थित काय प्रारम्भ हुआ। तब तक प्रजा मण्डलो का उद्देश्य राजाओ की छत्र छाया मे उत्तरदायी शासन" मागने तक ही सीमित था, फिर भी राज्या को प्रजा मण्डलो का जन्म फूटी आख नही सुहाया, और जन्म के साथ ही उन पर प्रतिबध लगा दिये गये किन्तु जन-शक्ति बढती गई और मेवाड, मारवाड, जयपुर अलवर भरतपुर बीकानेर, शाहपुरा, और सिरोही आदि राज्या मे प्रबल आन्दोलन खडे हुए, जिनका अनूठा और लम्बा इतिहास है। उन दिनो जगह २ आवाज सुनाई देने लगी थी "प्रजा मण्डल खोलागा, छाना रेवा को आडर तोडा, मुख सू बोलागा।" और १९४२ के भारत छोडो आन्दोलन के बाद १९४५ मे पण्डित जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता मे अ भा देशी राज्य लोक परिषद' का उदयपुर मे अधिवेशन हुआ, उससे देशी राज्यो की जनता की शक्ति बहुत बढी। परिणाम स्वरूप १९४७ मे जब देश आजाद हुआ, राजस्थान की राज्य-सत्ताओ ने समझ लिया कि अब प्रजा का विरोध मोल लेने के बजाय उसकी सत्ता को स्वीकार कर लेना ही उपयुक्त है। अत सरदार पटेल के कुशल नेतृत्व मे राजस्थान की प्राचीनतम रियासतो के राजाओ ने भारतीय सघ म सम्मिलित होना स्वीकार करके जो साहस और सूझ बूझ दिखाई, उसी का सुफल आज प्रजातत्रीय राजस्थान के रूप मे हमारे सामने है।●

गोकुलभाई दौ० भट्ट

# सिरोही का चेतना-स्त्रोत

एक मामूली छोटी सी रियासत थी यह, क्षेत्रफल, आबादी व आमदनी म । पर ऐसी तेजकिरण थी जिससे वह स्वय चमक उठती थी व औरो को चमका देती थी। शौर्यवती थी वह तेग और उसका नाम भी शमशीर का पर्यायवाची। अपना पराक्रम मौका पडा तब दिखाया, अपनी शान निभायी और मान बढाया। कविवर रवीन्द्रनाथ, राव सूरतान से प्रभावित हुए उन्होने "मानी' काव्य मे सिरोही के सूरतान की गाथा को गाया । राजस्थान म दो ही राज्य थे जो मुगलो की शरण म नही गये। एक था मेवाड और दूसरा था छोटा सा सिरोही।

"नम्यो न अरबुदनाथ'

इस सिरोही राज्य मे जनजागृति का श्रीगणेश जनता द्वारा ही हुआ । सिरोही का इतिहास पढने वाला जानता है कि राजा को गद्दी से उतरवाया गया था जन आदोलन के कारण। लम्बे अतीत की यह कहानी नही है। इसी सिरोही राज्य मे हरिपुरा काग्रेस के बाद राजनैतिक चेतना प्रकट होने लगी । वैसे तो स्व० वीर मोतीलाल तेजावत के भील आदोलन के जरिये से सिरोही का नाम आगे आया था। सिरोही राज्य प्रजा मडल का काय बम्बई वगैरा रहने वाले सिरोही राज्य निवासियो ने सन् १९३३ से चला रखा था। स्व० भीमाशकर शर्मा श्री टेकचद सिंघी, श्री वृद्धिशकर त्रिवेदी, स्व० भबुतमलजी सिंघी आदि अग्रसर थे । राज्य मे चल रही धाधली का विरोध होता था। 'धरमी' प्रकरण सिरोही को दुनिया के सामने लाया। यह सारा इतिहास रोचक तथा प्रेरणाप्रद है।

मुझे याद है एक प्रसग जबकि स्व० सौभाग्य मल सिंघी जसे नवयुवको ने एक सभा का आयोजन सिरोही नगर के आजाद मैदान मे किया था। बहुत गुप्तता बरती गई थी पर गुपचुप म समाचार शहर भर म फल गया था कि काग्रेस के एक नेता का भाषण होने वाला है। पुलिस भी सतक थी, जनता म कौतुहल था। योजनानुसार सभा हुई। उन दिनो म अध्यक्ष कौन बनता ? राव राजा शभूसिंह देवडा ने जिनको कि राज्य ने अपने मनमान ढग से राज्य की सेवा से मुक्त कर दिया था हिम्मत दिखलाई और वे 'वैज्ञानिक दृष्टि' शीर्षक वाले मेरे भाषण के समय अध्यक्ष के स्थान पर थे । यह पहली ही सभा थी जिसम से परोक्ष रूप से राज कारण की चिनगारी निकली ।

सन् १९३९ की जनवरी की २२ तारीख विशेष स्मरणीय है । हम सातो (ताराचद दोशी, धनराज तातेड, पुखराज सिघी, घमचद सुराणा बाबूमल शाह जी, खुशाल चद और मैं) को सिरोही की सभा में गिरफ्तार किया गया। कारावास की ओर हम मुडे । सिरोही नगरी के आबाल वृद्ध सब नया रग दिखाने लगे। कोई घबराये नही, दबे नही, पर आग भभक उठी। कौन किसका भाग दर्शन करता ? बहनें निकल पडी। एक तिरगा झडा बनाया। (लाल हरा सफेद) सारा नगर नारो के जयनादो से गूज उठा। "प्रजा मडल जिंदाबाद की आवाजें दरबार की नीद को हराम करने लगी। गिरफ्तार करने वाला मजिस्ट्रेट खुद काप रहा था कि जनता न जाने क्या कर डालेगी। पर एक बात जनता ने बराबर समझ ली थी कि महात्मा का रास्ता सत्य और अहिंसा का है। दुख झेलने का है, सकट का स्वागत करने का है मारने का नही, पर मर कर जीतने का रास्ता है। इसलिये जुलूस, नारे वगैरा कई घटो तक चलते रहे। सिरोही राज्य प्रजा मण्डल की स्थापना जनता ने कर दी। अपना ध्वज स्थापित कर दिया। इस ध्वज को जब पुलिस ने हटाना चाहा जबरदस्ती से तब एक ध्वज में से हजारो ध्वज प्रकट हुए और हरेक के सीने पर दिखाई देने लगे । अग्रेजी हुकूमत के प्रतिनिधि ध्वज की खीचतान के दूसरे दिन सिरोही प्रजा मडल के प्रतिनिधि से मिले और सीने पर के ध्वज के बजाय दूसरा ध्वज लगाने का सुझाव दिया तब उन्हे कहा गया कि यह सिरोही की जनता का ध्वज है और यही कायम रहेगा। इस तरह की कई कहानिया आज भी बल प्रेरक हैं । सिरोही की जनता व वहा के जन सेवक अभिनदन योग्य हैं। सिरोही प्रजा-मडल का इतिहास राजस्थान की गौरवगाथा का एक विशिष्ट पृष्ठ है जिसे भूला नही जा सकता। ●

मर मर के मौत ही तो जीवन दिखा रही है<br>
घिस घिस के मेहदी लो रग ला रही है।<br>
घुल घुल के सारी मिट्टी दुनिया बना रही है<br>
जल जल के दीप बाती जग को जगा रही है।

# जयपुर-सत्याग्रह

राजस्थान के सत्याग्रह-इतिहास मे जयपुर-सत्याग्रह अपना विशेष स्थान रखता है, क्योकि वह स्वय स्व० जमनालालजी जसे सच्चे सत्याग्रही वीर के नेतृत्व में चलाया गया था। जिन दिनो की यह बात है उन दिनो राजपूताने मे जयपुर आबादी और आमदनी दोनों के लिहाज से बहुत बडी रियासत थी। साधारणतया हरिजन पाठशालाओ खानगी व अग्रेजी शिक्षणालया, पुस्तकालयो, दवाखानों, सेवा समितियो, खादी केद्रो आदि के द्वारा जितने छोट बडे रचानात्मक काम इस रियासत मे फैले हुए थे उतने और कही नही थे। साथ ही राजनतिक, राष्ट्रीय तथा सामाजिक सुधार या प्रगति के कामो म जयपुर रियासत के जिमम, सीकर और शखावाटी शामिल हैं, धनी मानी जितनी दिलचस्पी लेते थे उतनी मध्यभारत और राजपूताने की किसी रियासत के नही। फिर भी जयपुर राजनैतिक प्रगति मे पिछडा हुआ माना जाता था। जब से श्री हीरालाल शास्त्री अपने विश्वस्त साथियो के साथ प्रजा-मण्डल में शामिल हुए और श्री जमनालालजी ने उसका अध्यक्ष पद ग्रहण किया तब स जयपुर राज्य मे राजनैतिक जागृति और आकाक्षाओ की एक बडी लहर उमड पडी थी। परतु श्री जमनालालजी के नेतृत्व म प्रजा मण्डल उस लहर मे बह नही गया। उसने अपनी शक्ति को तौल-तौल कर कदम बढाया। साफ सीधे सहयोग लेने देने की प्रवृत्ति रक्खी 'सघष नही सहयोग जीवन का नियम है' इस आदश पर और सघष आ ही पडे तो उससे पीछे हटना कायरता है' इस नीति पर वे दृढता से चलते रहे।

प्रजा मण्डल का कायक्रम विविध था (१) राजनतिक मागा, जसे उत्तरदायी शासन और नागरिक स्वतत्रता को जयपुर दरबार क सामने रखना और जनमत को उसके सम्बन्ध मे शिक्षित करना (२) प्रजा के कष्ट दूर करने सम्बन्धी भिन्न भिन्न सेवा तथा रचनात्मक कार्यों मे दिलचस्पी लेना।

श्री जमनालालजी के प्रजा-मडल का अध्यक्ष होने के समय सीकर रावराजा तथा जयपुर दरबार मे जोर का झगडा चल रहा था, जिसमे मध्यकालीन रजवाडो की लडाई का सा दृश्य दीखने लगा था। सीकर निवासी तथा जयपुर प्रजा-मण्डल के अध्यक्ष होने के नाते श्री जमनालालजी को उसमे विशेष दिलचस्पी लेनी पडी। सीकर आन्दोलन की गलत-फहमिया और नाराजगियो का शिकार होकर भी जमनालालजी ने जयपुर दरबार और सीकर प्रजा को नेक सलाह दी। अपना सारा प्रभाव खच करके गोलाबारी और हत्याकाड को

रोका तथा उससे होनेवाले दुष्परिणामो से जयपुर दरबार और सीकर की प्रजा की रक्षा की। इससे स्वभावत जमनालालजी और प्रजा-मडल का नैतिक बल बढ़ा। इसके बाद ही जयपुर रियासत म सख्त अकाल पड़ा जिसमें सकट निवारण का काय करना प्रजा मडल ने अपना धम समझा।

इधर प्रजा-मडल प्राय तमाम निजामतो मे शाखायें खोलकर अपना सगठन दृढ़ कर चुका था। ज्यो ज्यो प्रजा-मडल जनता मे प्रविष्ट और प्रिय होता जा रहा था, त्यों त्यों जयपुर के अग्रेज शासक भयभीत होते जाते थे। उनकी राय मे प्रजा-मडल यदि रहे भी तो मुट्ठी भर पढ़े लिखे लोगा में और शहरो म भले ही रहे गांवो मे और जनता म न फैले। इसलिये उन्होंने प्रकट और अप्रकट रूप से ऐसी वर्जिशें लगाना और बाधना शुरु किया जिसम प्रजा मडल के नेता और कायकर्ता ग्रामीण जनता के सम्पक मे न आने पावें। उनकी इस प्रवृत्ति का अन्त हुआ जमनालालजी के खिलाफ जयपुर राज्य मे प्रवेश करने की निषेधाना के रूप मे, जब कि वे मुख्यत अकाल सकट निवारण सम्बन्धी प्रजा-मडल के कार्यों की देख भाल के लिये जयपुर आ रहे थे। शांति प्रिय मगर स्वाभिमानी जमनालालजी इस अनुचित हस्तक्षेप को सहन नही कर सकते थ, न प्रजा-मडल ही अपने प्रिय नेता पर हुए इस वार को हजम कर सकता था। गाधीजी ने भी इसम प्रजा मडल और जमनालाल जी के भावो को ठीक समझा एव उनके पक्ष का समथन किया। अन्त म एक मास का नोटिस देने पर भी जब अधिकारियों ने अपनी गलती को ठीक नही किया, तो १ फरवरी १९३९ को जमनालालजी ने इस आज्ञा को भग करने के उद्देश्य से जयपुर म प्रवेश किया। जयपुर के तत्कालीन कर्ता धर्ता सर बीचम सेंट जान अपनी हेकडी में यह गलती कर तो गये, मगर गलती करने का जितना साहस उन्होने दिखाया उतना उसे सुधारने का नैतिक बल उनम न था। अधिकारियो और सत्ताधारियो की यह आम प्रवृत्ति पाई जाती है कि काम करते समय वे जितना साहस और दृढता दिखाते हैं उतना गलती को मानने और सुधारने मे नही। इसी से वे लोगो म अप्रिय और निबल होते जाते हैं। इस नतिक साहस के अभाव मे सर बीचम की स्थिति साप छछूदर की सी हो गई थी। उन्हें जमनालालजी को जेल मे रखने या अपने हुक्म को वापस लेने का नैतिक साहस न हुआ। दो बार पकड कर अपनी हद के बाहर छोड आये। तीसरी बार जमनालालजी ने उन्हे अपने को जेल म रखने पर मजबूर कर दिया। फिर तो प्रजा मडल के दूसरे नेताओ पर भी सरकार ने छापा मारा और सत्याग्रह पूरे रग म आगया।

१८ माच तक सत्याग्रह चला। ६०० के लगभग गिरफ्तारियाँ हुई। अन्त मे ता ७ अगस्त को जयपुर महाराज की दूरदर्शिता और समय सूचकता से जमनालालजी बिना शत छोडे गये। यह सत्याग्रह की विजय थी। यदि गाधीजी का वरद हस्त जमनालालजी का नेतृत्व, श्री० हीरालालजी और उनके विश्वस्त साथियो का दृढ़ सगठन तथा जनता का स्वच्छापूर्ण सहयोग, इन सब अनुकूलताओं का सुन्दर सगम न हुआ होता तो जयपुर दरबार का भी वास्तविक स्थिति का समझने और उसके अनुकूल अपने को बनाने की प्रेरणा न हुई होती।●

देवीशंकर तिवाड़ी

# जयपुर-राज्य में स्वतंत्रता संग्राम

परतन्त्रता की बेडी तोडने और स्वतन्त्रता के वैभव का रसास्वादन करने का अवसर जितनी शान्त पद्धति से भारत को सुलभ हुआ वह विश्व के इतिहास मे अनोखा है। विदेशी सत्ता का यह आश्चर्यजनक अन्त देश भक्तो के कठोर श्रम, बलिदान और उनके चिरस्मरणीय नेतृत्व के कारण सम्भव हो सका। देश के कोने-कोने म देश-भक्त व्यक्तियो ने स्वतन्त्रता सग्राम मे भाग लिया।

राजस्थान की तत्कालीन जयपुर रियासत जिसका क्षेत्रफल १५,६०१ वर्ग-मील एव जनसख्या ३०,४१,००० थी, और आमदनी लगभग ३ करोड रुपये थी, शासन-तन्त्र ब्रिटिश सरकार के नियन्त्रण मे चलता था। सर्व-प्रथम सन् १६३८ म सेठ जमनालालजी बजाज ने उनमे राजनतिक जागृति पैदा की, स्वतन्त्रता सग्राम मे सम्मिलित होने की प्रेरणा दी, और वर्धा से जयपुर आकर गाधीजी के आशीर्वाद स सोसायटी रजिस्ट्रेशन एक्ट का विरोध किया। इस आन्दोलन मे गति लाने के लिये सरकारी आज्ञा के विरुद्ध जयपुर राज्य मे प्रवेश करने के अभियोग मे वह बावरी ठकरिया रेलवे स्टेशनपर गिरफ्तार किये जाकर नजरबन्द कर दिये गये। सेठजी की गिरफ्तारी से रियासत मे देश प्रेम की भावना तीव्र हुई और जनता तथा तत्कालीन सरकार मे सघर्ष छिड गया। प्रजा-मण्डल के प्रमुख कार्यकर्ताओ ने सरकार की इस कार्यवाही का विरोध किया जिसम श्री हीरालाल शास्त्री कपूरचन्द पाटणी, चिरजीलाल मिश्र, हरिश्चन्द्र शर्मा, हस डी० राय आदि उल्लेखनीय हैं। रियासत के तत्कालीन ब्रिटिश प्रशासक यह बात सहन न कर सके। ३ फरवरी सन् १६३६ को सरकारी आज्ञा के भग करने के आरोप म उपरोक्त सभी नेताओ को गिरफ्तार करके लाम्बा के खण्डहर किले मे नजरबन्द कर दिया गया।

इन गिरफ्तारियो ने नई प्रेरणा प्रदान की। मेरे मित्र श्री दौलतमल भण्डारी (वर्तमान न्यायाधीश, हाई कोर्ट) ने इस सघर्ष को जारी रखने की प्रतिज्ञा की और श्री गुलाबचन्द कासलीवाल (वर्तमान एडवोकेट जनरल) से विचार विमर्श करके रात्रि के समय दोनो ही मेरे पास आये। हम तीनो मिलकर श्री बलवन्त राव देशपाण्डे से मिले क्योकि उन्ही की देख रेख मे आन्दोलन चल रहा था।

इस आन्दोलन को गति प्रदान करने का कार्य श्री भण्डारी और श्री कासलीवाल ने लिया और प्रचार का कार्य मुझे मिला। इस के पहले मेरा राजनीति से कोई सम्बन्ध नही था और न राजनीति मे कार्य करने

वाले उपरोक्त नेताओं से ही कोई परिचय। पहली बार हम तीनों व्यक्ति "लाम्बा" के जिले में नेताओं से मिले और आन्दोलन को गतिशील बनाये रखने के लिये उन्हें आश्वासन दिया। सेठ जमनालाल जी बजाज के निजी सचिव श्री दामोदर लाल तथा उनके भतीजे श्री राधाकृष्ण बजाज हमारी सहायता को थे ही। आन्दोलन को कुचलने के लिये तत्कालीन आई०जी० पुलिस श्री यंग, एवं सुपरिन्टेन्डेन्ट आफ पुलिस श्री चक्रवर्ती की ओर से बराबर दमन चक्र चलता रहा। प्रशासन की यह कठोर दमन नीति जनता में आन्दोलन को और अधिक गतिशील बनाने की दिशा में प्रेरणा देती रही। परन्तु कुछ ही दिनों के पश्चात सभी नेताओं की रिहाई हो गई। आपसी समझौता हुआ और प्रजा मण्डल को कार्य करने की अनुमति दे दी गई।

सेठ जमनालाल जी बजाज से मेरी प्रथम भेंट पुराने घाट से कुछ दूर एक बाग में जहां वे नजरबन्द थे हुई थी। सेठजी मेरे लेखों से इतने आकर्षित हुए कि उन्होंने मुझे कुछ ही दिनों पश्चात अपनी कार्यकारिणी का सक्रिय सदस्य बना लिया।

उधर शेखावाटी के किसानों पर जागीरदारों का अत्याचार व शोषण बढ़ा। अतः प्रजा-मण्डल ने इन किसानों में राजनतिक जागृति उत्पन्न करने का कार्य भी सम्भाला। सरदार हरलाल सिंह एवं श्री नेतराम सिंह किसानों के नेता थे और कृषक समाज में अत्यधिक प्रभाव रखते थे। श्री नरोत्तमलाल जी जोशी जो उस समय के अच्छे वकीलों में से थे, सरदार हरलाल सिंह जी के नेतृत्व में कृषकों में जागृति उत्पन्न करने में लग गये। इनकी गतिविधियां जागीरदार सहन न कर सकें। एक दिन श्री नरोत्तमलाल जी को इन लोगों ने पकड़ लिया और बोरे में बन्द करके ऊंट पर लाद दिया और ऊंट को जंगल में भगा दिया। इस घटना ने किसानों में जागीरदारों के प्रति कटुता पैदा करदी और कृषकों के आन्दोलन ने जोर पकड़ा। प्रजा मण्डल कृषकों की बराबर मदद करता रहा। यह परिस्थिति जून सन् १९४२ तक चलती रही। फिर सर मिर्जा इस्माइल जयपुर राज्य के दीवान होकर आये। उन्होंने आते ही प्रजा-मण्डल से मधुर सम्पर्क स्थापित करने की दिशा में प्रयत्न किये और शीघ्र ही प्रजा-मण्डल के श्री कपूरचन्द जी पाटणी ने उनके सलाहकार का स्थान प्राप्त कर लिया। जन साधारण और सरकार के बीच सहयोग का यह पहला कदम था। मिर्जा इस्माइल ने इस जन आन्दोलन के प्रति उदार दृष्टिकोण अपनाया और प्रजा मण्डल की अधिकांश मांगों को स्वीकार किया। इस क्षेत्र में उनका सबसे महत्वपूर्ण कार्य था इस रियासत में काम करने वाले अंग्रेज प्रशासकों को बड़ी संख्या में विदाई देना। सर मिर्जा इस्माइल केवल कुशल राजनीतिज्ञ ही नहीं थे अपितु एक सफल प्रशासक भी थे। उन्होंने अपने कार्यकाल में अनेकों विकास के कार्य किये जिनसे वे लोक प्रिय बन गये।

८ अगस्त सन १९४२ को 'अंग्रेजो भारत छोड़ो' का नारा देश भर में गूंज गया। लेकिन जयपुर राज्य में इस दिशा में प्रगति विशेष नहीं हुई। जौहरी बाजार में एक विशाल सभा का आयोजन किया गया जिसमें हजारों की संख्या में जनता ने भाग लिया। हम लोग सभी गिरफ्तारी के लिए तैयार होकर उस सभा में सम्मिलित हुए थे लेकिन कोई गिरफ्तारी नहीं की गई। दूसरे ही दिन जयपुर में आजाद मोर्चे का जन्म हुआ, श्री बलवन्त देशपांडे श्री रामकरण जोशी, श्री दौलतमल भण्डारी और श्री हरिश्चन्द्र शर्मा ने उसका संचालन किया।

कुशल राजनीतिज्ञ मिर्जा इस्माइल ने प्रजा मण्डल म दरार डाल दी। श्री हीरालाल शास्त्री द्वारा रखी गई प्रजा मण्डल की सभी मागा का मौखिक रूप से मान लिया। मीटिंग करने, यूनियन जक उतारने और जलाने, फौज म भर्ती का विरोध करने आदि प्रजा मण्डल की मागा को उन्होने स्वीकार कर लिया। अब गिरफ्तारी हो तो किस आधार पर और आन्दोलन चल तो कसे? आजाद मोर्चे के व्यक्ति गिरफ्तार होने के लिये आतुर हो रहे थ। अत मोर्चा सरकार की कटु आलोचना से आगे बढा और मिर्जा इस्माइल ने आजाद मोर्चे के सदस्यों को मनोकामना पूर्ण करने के लिये जेल म रख दिया। गिरफ्तारी के पश्चात् इन लोगो की ओर से हाईकोर्ट मे गिरफ्तारी के विरुद्ध याचिका पेश की गई। तत्कालीन मुख्य न्यायाधीश श्री शरत् कुमार घोष ने याचिका को स्वीकार किया और श्री दौलत मल भण्डारी को मुक्त कर दिया। अन्य अभियुक्ता के दण्ड की पुष्टि करते हुए जितनी सजा वे भुगत चुके थे उसे पर्याप्त मान कर कारागार से मुक्त कर दिया। यह निर्णय इस बात का प्रतीक है कि जयपुर म न्यायालया को उस समय अपना स्वतन्त्र निर्णय देने की कितनी छूट थी।

सन् १९४४ म जयपुर म चुनी हुई नगरपालिका स्थापित हुई और उसी समय जयपुर म एक विधान सभा एव प्रतिनिधि सभा का निर्वाचन हुआ। प्रतिनिधि सभा मे १२५ सदस्य एव विधान सभा मे ५१ सदस्य निर्वाचित हुए। इन सभाओ का ५ सितम्बर, १९४५ को विधिवत अधिवेशन हुआ। श्री रामकिशोर व्यास प्रतिनिधि सभा मे एव श्री दौलतमल भण्डारी धारा सभा मे प्रजा मण्डल दल के नेता बने। उसी समय प्रजा मण्डल से तीन व्यक्तिया का पनल लोकप्रिय मत्री की नियुक्ति करने के लिये मागा गया। मण्डल इस पर सहमत न हुआ। वह एक ही व्यक्ति का नाम भेजना चाहता था। सरकार झुकी और उसने प्रजा मण्डल की बात मान ली। किशनगढ-रैनवाल के प्रजा-मण्डल अधिवेशन मे सन् १९४६ मे सब सम्मति से लोकप्रिय मन्त्री के पद हेतु मेरा नाम स्वीकार किया और मैंने १८ मई सन् १९४६ को नये मन्त्रि मण्डल मे शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वायत्त शासन एव जेल विभाग के मन्त्री पद की शपथ ली। एक वर्ष पश्चात् सरकार की घोषित नीति के अनुसार १० मई, १९४७ को श्री दौलतमल भण्डारी एव सरदार पार्टी के नेता ठाकुर कुशलसिंहजी गीजगढ़ को क्रमश विकास मन्त्री एव निर्माण मन्त्री का पद प्रदान किया गया।

२७ मार्च १९४८ को मन्त्रि मण्डल म फिर परिवर्तन हुआ और अन्तरिम सरकार की स्थापना की गई। दीवान श्री वी० टी० कृष्णमाचारी मन्त्रिमण्डल के अध्यक्ष बने प्रजा मण्डल पार्टी के नेता श्री हीरालाल शास्त्री को मुख्य सचिव और श्री टीकाराम पालीवाल को राजस्व सचिव बनाया गया।

३० मार्च, १९४९ को सरदार पटेल ने राजपूताने का एकीकरण करके सयुक्त राजस्थान का निर्माण किया। जयपुर महाराज, नवीन वृहद राजस्थान के राजप्रमुख बने और ७ अप्रेल सन् १९४९ को जयपुर मे नये मन्त्रि मण्डल ने जिसके नेता हीरालाल जी शास्त्री थे, शपथ ली। इस प्रकार जयपुर रियासत की पृथक इकाई विशाल भारत का एक अग बन गई जिसे अन्य राज्या की तुलना मे स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिये बहुत कम सघर्ष करना पडा।●

# समवेदना या बधाई

स्वतन्त्रता-पूर्व काल के मस्ती के दिन जब याद आते है तो आज भी मन उसी जमाने म चले जाने का हो उठता हो। आज से ४० वप पहले का दा साहब का लिखा एक लेख हाथ पड गया जिसम उसी मस्ती के आलम की एक झलक है—

'आज 'मयूर' के लिये अपने तीन मित्रो के साथ समवेदना प्रकट करने का प्रसग उपस्थित हुआ है। उज्जैन की सावजनिक सभा के युवक मत्री श्री हिरवे की पत्नी का देहान्त अममय ही हो गया। उज्जैन के 'लोकमान्य' श्री० पुस्तके विधुरत्व की दीक्षा एक साल पहल ही ले चुके थे। अब कालचक्र ने उनके बडे भाई को भी उनकी पक्ति म ला बिठाया। 'मयूर' के जन्म सखा भाई नृसिंहदास जी अग्रवाल की धमपत्नी शान्ति देवी, भी एकाएक चल बसी। हिरवे नवयुवक और भावुक हैं। फिर भी दृढता के साथ वे इस चोट को सह रहे हैं। पुस्तके की मुस्कुराहट तो औरो के भी शोक का भुला देती है। नृसिंह दासजी के लिए जिन्दगी और मौत दोनो खेल है। ऐसी अवस्था म ये सज्जन समवेदना के पात्र हैं या बधाई के, या दोनो के? समवेदना उनकी हानि पर और बधाई उनकी सहन शीलता पर, अथवा उन देवियो को उनके छुटकारे पर। और बधाई इस पर भी क्यो न दें कि अब वे अधिक स्वतत्र और अधिक कायक्षम हो गये? मैं जानता हूँ कि पाठको का इस मौके पर मेरी यह निष्ठुरता बदाश्त न होगी। पर सावजनिक कार्यो म लीन रहने वाले व्यक्तियो की स्त्रियाँ मृत्यु को प्राप्त करके क्या सचमुच अधिक सुखी नही हो जाती? एक उपन्यास की एक विवाहिता स्त्री अपनी कुमारिका सखी को सावधान करती है 'कि तुम भूल करके भी देश भक्तो से शादी मत करना। देश भक्त अपने नशे म पहाड लाघता हुआ जाना चाहता है! बीतती है बचारी अनिच्छुक अथवा अध इच्छुक अर्धांगिनियो पर। देश के लिये खपने वाले जितना त्याग तप और साहस करते हैं, उससे कही अधिक त्याग और तप इनकी सनक के पीछे उनको करना पडता है। ऐसी अवस्था मे मृत्यु क्या दोनो के सहायक का काम नही करती? तो फिर बधाई की कल्पना क्या उचित नही? साथ ही क्या यह देश का दुर्भाग्य नही है कि मृत्यु पर बधाई की कल्पना मन मे आती है? बहन शान्ति देवी की तो मृत्यु पर विश्वास करने को जी ही नही चाहता। मैने नृसिंहदास जी को पत्र म लिखा था 'शान्ति बहन को वदे कहियेगा।' उत्तर मिला कि पत्र मिलने से पहले ही वह हमसे 'वन्दे मातरम्' कर गई।'

इस उत्तर मे कितनी चोट और फिर भी कितना खिलाडी पन है ! शान्ति देवी का स्वभाव बडा सरल था। वे कष्ट-सहिष्णु थी। सेठानी होते हुए भी उनके अलकार होते बदन पर मोटा खादी का लहगा और मोटी ओढनी। देखकर हृदय मे आदर उत्पन्न हुए बिना न रहता था। वे उन इनी-गिनी मारवाडी बहनों मे से थी जिन्होंने अपने को महात्माजी के सदेश के अनुकूल बनाया था और प्राय सब कुछ त्याग कर एक प्रकार से सन्यास की दीक्षा ही लेली थी।' (जुलाई १६२६ के 'मालव मयूर' के अक से)

यह सपादकीय लेख उस समय के कार्यकर्ताओ और जन-नेताओ के मानस का सही चित्रण करती है। परतन्त्रता के शिकजे म कसा मन, कोई सवेदना ग्रहण करना भूल-सा गया था। एक ही कसक मन मे व्याप्त थी और उसने सभी सबधो को अपने म इतना समेट लिया था कि चिर मधुर सबध भी बधन लगने लगा था। ऐसे ही आजादी के मतवालो के त्याग और बलिदान के फल स्वतन्त्रता' का हम स्वाद ही नही चख रहे लाभ भी उठा रहे हैं। क्या यह उचित नही कि समय समय पर नीव के पत्थरो, कार्यकर्ताओ और उनकी पत्नी व समस्त परिवार वालो का याद करे। उनके प्रति अपनी क्रियात्मक श्रद्धाजलि अर्पित करें।

यह सच है कि भारत की सेवा म जिन बलिवीरो ने अपना सवस्व न्योछावर किया वह उनकी अन्त प्रेरणा थी। न किसी बदले या प्राप्ति की भावना उसम थी न ऐसे त्याग का बदला दिया जा सकता है। अपनी माता की सेवा सतान करे, उसके लिये कष्ट सह, इसका भी भला कही बदला हो सकता है ? नही ! क्योकि माता का कष्ट-मोचन सतान का कर्तव्य है। लेकिन जसे मातृभूमि के लिये सवस्व बलिदान उनका कर्तव्य था वस ही आज की और आने वाली पीढी का यह कर्तव्य अवश्य है, कि ऐसे व्यक्तियो के परिवारो की पूरी देखभाल करे। यह करके हम कृतज्ञता ज्ञापन ही करेंगे।●

> "आज यदि हिदुस्तान स्वतन्त्र हुआ है तो हमारी कुर्बानी से हुआ है, ऐसा कोई गर्व न करे। हम मे से बहुत से लोग ऐसे हैं, जो समझते हैं कि हमने बहुत कुर्बानी की। की होगी ठीक है। लेकिन जो नई कुर्बानी करनी चाहिए, वह कुर्बानी न करो तो पिछली की गई कुर्बानी भी व्यर्थ हो जाती है। जेल जाने से कुर्बानी नहीं होती। कुर्बानी होती है कड़ुवा घूँट पीने से। हम मान अपमान भी सहन कर जाय और सच्चे दिल से गरीबों की सेवा करते जांय, तो कुर्बानी उसी मे है। उसी रास्ते पर चलने से हमारी असली इज्जत होगी।"
>
> —सरदार पटेल

# राजस्थान और मध्यभारत मे आत्मैक्य

१६२१ से मैं राजनीति में सक्रिय भाग लेने लगा था । उज्जैन यद्यपि देशी राज्य (ग्वालियर) के अन्तगत था, किन्तु जन जागृति के लिये पर्याप्त क्षेत्र था और सुविधाए भी उपलब्ध थी । हम लोगो ने विविध आदोलन किये, और जनता का साथ मिला स्थानीय गणेशोत्सव को हमने समाज सुधार और राजनैतिक रूप दिया, वह बहुत सफल हुआ । फिर तो कई काय हुए ३,४ आर्डिनेंस भी लगाये गये परन्तु आन्दोलन का प्रभाव बढता ही गया । जनता हम प्रेरित करती रही और उज्जन मे राष्ट्रीय चेतना जागृत होती रही । फिर भी हमारी एक सीमा थी यहा सीधे टकराने का अवसर सुलभ नही था । देशी राज्य अपने ही थे विरोध परदेशी सत्ता से होना था । वह सुविधा यहा कैसे सम्भव हो ? उन दिनो मध्यभारत के राजनतिक आदोलन का केन्द्र बिन्दु अजमेर था । स्व० पथिक जी अर्से से अजमेर मे धूनि रमाये बठे थे । राजस्थान की आत्मा की धडकन उनकी सस्था मे सुनाई देती थी । स्व० अजु नलाल जी सेठी की कमभूमि भी यही थी और दा साहब (हरिभाऊजी उपाध्याय) ने भी यही अपनी साधना के लिये त्रिशूल गाडा था । १६३० म जब सत्याग्रह आन्दोलन छिडा तो अजमेर ने हम लोगो को आकर्षित किया । हम अपनी सीमा से निकल कर आफत मोल लेने के लिये उतावले बन बैठे । एक रोज अपनी टोली को लिये अजमेर की ओर बढे । उस दिन उज्जन नगर ने दिल खोल कर हमारा जैसा स्वागत किया कभी भुलाने की चीज नही है । पूरे डिब्बो को फूलो से सजा दिया गया था और कई हजार व्यक्ति रेलवे स्टेशन पर विदा देने आये थे । अजमेर के सत्याग्रह शिविर मे दो सौ से ऊपर पुरुष और महिला सत्याग्रही कमरत थे । होड लगी हुई थी कि कौन आगे नाय और आपत्ति को सहप गले लगाये । हम लोगो ने अजमेर मे विदेशी वस्त्रो की दुकानों पर धरना देने का काम हाथ मे लिया । माई बालकृष्ण जी कौल (वतमान वित्तमत्री राजस्थान) भोपाल के स्व० विट्ठलदास जी बजाज, और मैं हम तीनो ने पिकेटिंग का उत्तरदायित्व लिया लेकिन सत्ता की ओर से कोई।सघप का अवसर नही आया न पकड धकड ही हुई । तब अन्य कायक्रम अपनाने का निश्चय हुआ । दल मे भरपूर जोश विद्यमान था । टकराने की आतुरता थी । हमारी टोली सत्याग्रही दल को लेकर नसीराबाद गई । वहा विदेशी शराब की दुकान पर धरना दिया गया । इसमे महिलाओ को प्रमुखता दी गई थी । श्रीमती मनोरमा देवी पडित व श्रीमती भागव के नेतृत्व मे यह धरना आरम्भ हुआ । हजारो

दशक जुडे हुए थे। उस समय भीड को चीरता हुआ एक अग्रेज दाम्पत्य पहुचा और महिलाओ के घेरे को तोडता हुआ जूतो से ठोकरें लगाता उस दुकान म घुस गया। यह देख दशकों म बहुत जोश भर गया। लोगो की आखो म खून उतर आया। हम लोग भी कुछ क्षण के लिये अपना आपा भूल गये थे। किन्तु लोग कोई तूफान खडा न कर बैठें उस ओर ध्यान गया और हम लोग समझाने बुझाने म लगे। उधर मनोरमा बहन ने उस अग्रेज की पत्नि की भत्सना करते हुए कहा "क्या आपके देश मे अपनी मा बहना के साथ ऐसी ही सभ्यता का व्यवहार किया जाता है ?" सुनकर वह अग्रेज महिला शर्मिन्दा हुई। इस घटना का प्रभाव उस दुकानदार पर भी गहरा पडा। उसन उस अग्रेज को कोई भी चीज देने से इन्कार कर दिया और अपनी दुकान तुरत बद कर दी। हमारा काम वहा पूरा हो गया। लोगो ने उत्साह से नारे लगाये। अब हमारी टोली पडौस के एक गाव की ओर चल पडी। तीन व्यक्तियो ने वहा जाकर नमक बनान का आयोजन किया। जब तक पुलिस पहुचे नमक बनकर लोगो मे 'नमक प्रसाद' वितरण हो गया। पुलिस ने निरथक छीना झपटी की और मुह देखती रह गई।

इस तरह हमारा कायक्रम बराबर चलता रहा। पुलिस आँख मिचौनी खेलती रही। आश्चय होता था कि आखिर सरकार क्या नही पकड रही है ? टोलिया आती जाती थी और विभिन्न कायक्रम करती जा रही थी। भाई कौल सा०, नद चट्टलजी, बजाज जी और मैं कायक्रम बनाकर व्यवस्था किया करते थे। परन्तु खेद यही होता था कि कही भी कोई टक्कर नही हो रही थी। मन कुछ करने को बेचैन था। मरी प्रवृत्ति इसके पूव भी उग्रता की ओर रही है। बाबा नृसिंह दास जी से मेरे विचार अधिक मिलते थ। उन दिनो पथिकजी के साप्ताहिक पत्र म सपादन-काय भाई शिवचरण लालजी करते थे। वे काकोरी काण्ड स सम्बन्धित रहे थे। मेरे साथ उनके सम्बन्ध थे ही। हमने मिलकर योजना बनाई कि अजमेर के प्रसिद्ध मेयो कॉलेज के समक्ष लगी हुई, लाड मेयो की प्रतिमा को खण्डित किया जाय। योजना के अनुरूप स्थिति और सुविधा की जाच पडताल की गई और एक रोज भाई शिवचरणजी की साईकिल पर हथोडे समेत सवार हो गया। रात के सन्नाटे म जाकर लाड मेयो की मूर्ति पर प्रहार आरम्भ हुआ। हथौडा मूर्ति से टकराकर लौट आता था। और टक्कर की गूज रात के सन्नाटे म चारो ओर फैल जाती थी। विवश होकर मेयो के पुतले के हाथ पर प्रहार किया और टूटी उगलियो को लेकर वापिस आना पडा। अब प्रश्न यह था कि इन खण्डित उगलियो को सत्याग्रह शिविर म कैसे सुरक्षित रखा जाय ? रात भर जसे तसे एक नीम के पेड के तल मिट्टी म दबाकर रखा और दूसरे रोज सुबह अपने मित्र डा० अम्बालालजी के दवाखाने में जाकर दवाई के डिब्बे म बद कर पासल से उज्जन रवाना किया। यह खण्डित उगलिया धरोहर की तरह १९३४ तक रही। १९३४ म जब मेरे स्थान पर दिल्ली पडयन्त्र केस के एक फरार-अभियुक्त को लेकर तलाशी हुई पूव सकेत मिल जाने पर कुछ क्षण पूव उन अगुलियो को महाकाल के कुण्ड मे आहिस्ता से विसर्जित कर देना पडा। अगुलियो की स्मृति का सुरक्षित रखने के लिये उसका एक भग्नावशेष रख छोडा जो अब भी याद ताजा कर देता है।

हट्टूडी मे कुछ दिनो तक दासाहब के निकट रहने के प्रसग पर बाबा जी (नृसिंह दासजी) से काफी निकटता आ गई थी। १९३८ म जब शहीद शिरोमणि भगतसिंह के हाथो अनुवादित आयरिश

क्रांतिकारी-डेनब्रीन की आत्मकथा और 'अत्याचारी क्रांतिकारी' दो पुस्तकें मेरे पास पहुची तब बाबाजी ने उन पुस्तकों को किसी गुप्त प्रेस मे अजमेर म ही प्रकाशित करवाया था और सवत्र वितरण किया था। इस प्रकार राजस्थान से मेरा निकट सम्पक रहा है। और कुछ सेवा करने का सुयोग भी मिला है। जहा राजस्थान को जनता से मेरा सम्पक बढता चला आ रहा वहा देशी राज्यो के अनेक नरेशो से भी मेरा सम्पक पुराना है। १६३४ म महाराजा उदयपुर का कुछ दिन आतिथ्य मिला है। राजस्थान ने मुझे उस समय पर मे सोना और वार्षिक भी दिया है। जन तन्त्र के आरम्भ होते हा जागीर के कागजात श्री स्व० भाई जयनारायणजी व्यास को जब वे मुख्य मत्री थे समर्पित कर दिये थे। वर्षो के बाद राजस्थान ने पुन अपने स्नेहपाश मे आबद्ध किया है। जयपुर विश्व विद्यालय से डाक्टरेट के परीक्षक के रूप मे सम्बन्धित हुआ तथा इधर शासन की हिन्दी परामर्शदात्री समिति एव राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय के निर्माण के लिए निर्मित उच्चस्तरीय समिति से भी सम्बन्धित हुआ हू। महामहिम राज्यपाल श्री सम्पूर्णानन्द जी के स्नेहमय आतिथ्य के साथ राजस्थान म कुछ दिना रहने का सुयोग मिला है। और स्व० जयनारायणजी व्यास, श्री हीरालाल जी शास्त्री श्री हरिभाऊ जी उपाध्याय का सदव अपनत्व रहा। भाई बालकृष्ण कौल तो अपने है ही। मैं वतमान मुख्य मत्री से अपने को सवथा अपरिचित अनुभव करता था किन्तु मिलने पर विदित हुआ कि ३२ वष पूव ही मेरा उनके परिवार स निकट परिचय रहा है और मिलने पर वही आत्मीयता, आकषण और सदभावना निदित हुई। मैं मुग्ध हो गया। ११ वष पूव मैं जयपुर गया था पर इस बार जब जयपुर कोटा देखा तथा १६३४ के पश्चात उदयपुर का अवलोकन किया तो लगा कि सारा ही काया-कल्प हो गया है। राजस्थान ने औद्योगिक प्रगति म शायद सभी से बाजी मार ली है। जयपुर उदयपुर म अद्भुत चेतना और जीवन के दशन होते हैं जबकि अनेक राजाओ की राजधानी के नगर निष्प्राण निश्चेतन दिखाई देते हैं वहा जयपुर मे चेतना हिलोरें लगाती दिखाई देती है। राजस्थान का स्थाइ शासन देने और प्रगति मे अग्रणी बनने का श्रेय यदि किसी का दिया जा सकता है तो उसके सूझ बूझ के धनी सहृदय मुख्य मत्री श्री सुखाडिया जी और उनके समरस-कम सहकारियो को ही है। श्री सुखाडिया जी को जिनको थोडे समय मे मैं जान पाया हू विशिष्ट सहृदय व्यक्तित्व ने आकर्षित किया है। वे ११ वष से मुख्य मत्री हैं। यह उनकी कमण्यता और लोक प्रियता का ज्वलत प्रमाण है। उनकी कतत्व शक्ति, कौशल, सूझ क्षमता एव सर्वोपरि सहज सरल मानवता विनयशीलता के साथ मोहक आकषण भी उनकी सफलता म सहायक है। यदि आगे भी कुछ समय तक राजस्थान की बागडोर उनके हाथो मे बनी रहे तो राजस्थान का भावी अधिक उज्जवल बन जायेगा। यहा मैं राजस्थान के मुख्य सचिव श्री मेहता सा० के योगदान को भी कम महत्वपूर्ण नही समझता। कई प्रदेशो से राजस्थान को अग्रणी बनाने मे इस समरस समवेत शासन ने मूल्यवान योग दिया है। मेरा राजस्थान एव उसके सफल कणधारो को अभिनदन एक तटस्थ दृष्टा और नि स्वाथ व्यक्ति द्वारा दिया गया है। अवश्य ही राजस्थान और मध्यभारत स्वतत्र अस्तित्व रखते हुए भी एक ही सस्कृति से अनुप्राणित हैं। उनम निकटता ही नही एकता भी है। इसलिए राजस्थान और मध्यभारत म शासकीय पाथक्य रहते हुए भी आत्मक्य विद्यमान है इसी आत्मक्य न दोनो को समवेत सूत्र मे ग्रथित कर रखा है।●

शिव शकर रावल

# सन् '३० का दो महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाए'

**विशाल जुलस, हडताल ग्रौर ग्राम सभा —**

मध्यभारत ग्रौर राजपूताना के देशी राज्या की प्रजा का राजनीतिक सम्बध मध्यभारत राजपूताना प्रातीय काग्रेस कमेटी जिसका कार्यालय ग्रजमेर म था, के द्वारा रहा है। इन राज्यो की वसुधरा ने ऐसे ग्रनेक बुद्धिमान, विद्वान, तेजस्वी तथा कष्ट सहिष्णु नररत्न नेताग्रो को जम दिया है जो प्रान्त मे ही नही देश भर म चमके। ये समय समय पर परस्पर एक दूसरी रियासता म ग्राया जाया करते थे। देशी राज्या मे जागृति तथा देश सेवक तयार करने का श्रेय इही को है। ग्वालियर राज्य के निवासी होने के कारण ग्रादरणीय हरिभाऊ जी का घनिष्ट सम्बध मध्यभारत ग्रौर मध्यभारत के कायकर्ताग्रा से रहा है। ग्रत इधर की राजनतिक जागृति का बहुत कुछ श्रेय श्री हरिभाऊ जी को ही है।

सन् ३० म सत्याग्रहियो के विशेष जत्थे मध्यभारत से भी गये थे। इनम ग्वालियर राज्य प्रमुख था। सन् ४२ के करो या मरो ग्रान्दोलन म भी मध्यभारत पीछे न रहा।

ग्रजमेर मे ग्रधिकाश चोटी के नेता जिस दिन गिरफ्तार हुए उस दिन नगर म व्यापक हडताल हुई ग्रौर भारी जुलूस निकला। यह जुलूस कालेज ग्रौर स्कूला को बन्द कराता हुग्रा उस स्थान पर पहुचा जो नगर म ही किले या कारावास जसा बना हुग्रा था। खबर थी कि इसम ग्राज गिरफ्तार नेताग्रो को लेजाया गया है। नागरिका की ग्रोर से पूरी ग्रौर मिठाईया ग्रपने प्रिय नेताग्रा को इसी किले के दरवाजे पर तैनात सिपाहियो द्वारा पहुचाई जा रही थी। ग्रफवाह फली कि यह सब नेताग्रा तक नही पहुच रही है बीच मे ही सनिक चट कर जाते हैं। भीड उत्तेजित हो उठी ग्रौर ग्रन्दर जाने के लिये फाटक तोडने ग्रौर उस पर तेल डालकर जला डालने की चारो ग्रोर से ग्रावाजें उठी। इतने म कुछ ग्रश्व सनिक ग्रागये। इस खबर से कि नेताग्रा को इसी दरवाज से जेल लेजाया जायेगा किले के चारा ग्रोर की भीड ग्रपने प्रिय नेताग्रो के दशन के लिये वहा एकत्र होगई। वास्तव म पुलिस की यह एक चाल थी। पुलिस इसम सफल हुई। कुछ ही देर म खबर मिली कि नेताग्रो को तो दूसरे दरवाजे से जेल भेज दिया गया।

रात्रि को नगर के एक प्रमुख बाजार के चौराहे पर विशाल ग्राम सभा हुई। पुलिस ने ग्राज की ग्राम हडताल ग्रौर जनता का उत्साह तथा जोश देखकर दमन द्वारा ग्रातक फैलाने की योजना बनाई।

समास्थल के चौराहा की सडका पर पुलिस लारिया पहली बार खडी दखी। अकस्मात सभा मे एक कोने से टिन का डिब्बा बजने की आवाज आई। उधर कुछ हलचल हुई—कुछ लोग उठे कुछ फिर बैठ गये। इतने मे उधर से ही कोई चालीस पचास की सख्या म सशस्त्र पुलिस भीड पर टूट पडी। जनता उठ खडी हुई। महिलाएँ एक तरफ हो गई। काग्रेस के स्वयसेवक तथा पुलिस के जवान आमने सामने मोर्चा लेकर डट गये। स्वयसेवको के पीछे जनता भी जमकर बैठ गई। पुलिस ने भीड और स्वयसेवका को पांच मिनिट म बिखर जाने अन्यथा गोली चलाने की चेतावनी दी। स्वयसेवको के कप्तान न साहस के साथ हटने से इकार कर दिया। पुलिस उनकी योजनानुसार गोलियो की झडी से दिन का बदला लेना और जन आन्दोलन को दबाना चाहती ही थी। मालूम नही उस रात को कितना जनसहार होना ? और कितने मृत शरीर लारियो म भरकर आनासागर या अन्यत्र जगला मे फेंक दिये जाते ? कल्पना हीन है। इस स्थिति को टालने के लिये काग्रेस के प्रधान ने हमारी सम्मति से कप्तान को सभा-स्थल से हट जाने का आदेश दिया। तब मन मारकर स्वय सेवको को मोर्चा छोडकर हट जाना पडा और जनता भी बिखर गई।

पुलिस द्वारा ही योजनानुसार एक गुप्तचर साधारण नागरिक की पोशाक म टीन का डिब्बा लिये सभा मे भेजा गया था। उसीने सभा को बिगाडने के लिय टीन का डिब्बा बजाया था। लोगा ने उसे रोका, जब वह नही माना तब उसे पकडकर एक तरफ ल गये। कुछ धौलधप्प की होगी। उधर पुलिस पहिल से ताक म थी। उसने इन लागा पर लाठी से आक्रमण कर दिया, और समास्थल पर आ डटे। पुलिस की इच्छा थी कि जनता को उत्तेजित किया जाय और फिर उनको गालिया से भून लिया जाय। पुलिस का यह षडयत्र असफल हुआ।

काग्रेस कैम्प म इस घटना ने रात भर किसी को नीद नही लेने दी। निश्चय हुआ कि अगले दिन पुलिस को मशीनगनो की तयारी के साथ आने की चुनौती देकर, विशाल जुलूस निकाला जाय। इसके नगर मे पोस्टस लगाये गये। अभूतपूव जुलूस निकला। कोई पचास हजार स्त्री पुरुष साथ थ और नारे लगा रहे थे —

एक—नौजवानो
जनता—हा भाई हा !
एक—जेल चलोगे ?
जनता—क्या भाई क्यो ?
एक—एक चीज मिलेगी।
जनता—क्या भाई क्या ?
एक—आजादी, आजादी
जनता—वाह भाई वाह वाह भाई वाह !

**असेम्बली के चुनाव के बहिष्कार की तयारी —**

असेम्बली के चुनाव का बहिष्कार करने की योजना और मतदान केन्द्रो पर पिकेटिंग करने के लिये स्वयसेवका के दल बन चुके थे। एकाध दिन पहिले स्वयसेवका के साथ हम सब गिरफ्तार कर लिये जावेंगे इसकी समावना देखकर चुनाव के एक दिन पूव हम सबने रात काग्रेस कम्प म न रह कर यत्र तत्र गुजारने की व्यवस्था करली थी। खासी तयारी थी।

रात्रि को ११ बजे कांग्रेस प्रेसिडेंट और मैं एक मीटिंग करके आ रहे थे। मार्ग में ग्रेज्युएट महाशय मिले जिनको देशभक्त जमनालालजी बजाज ने कांग्रेस में काम करने के लिये अजमेर भेजा था। उन्होंने कहा हरविलासजी शारदा असेम्बली के चुनाव में खड़े हुए हैं उनकी बात चीत हो गई है और पिकेटिंग न करने के लिये समझौता कर लिया है। उन्होंने वचन दिया है कि वे यदि चुनाव में सफल हो गये तो असेम्बली से त्याग पत्र दे देंगे। फिर पुन चुनाव होगा और जब तक इस रिक्त स्थान की पूर्ति के लिये चुनाव होगा वे चुनाव जीतने पर त्याग पत्र देते रहेंगे। इस प्रकार अजमेर क्षेत्र की असेम्बली की कुर्सी सदा खाली रहेगी और कांग्रेस का उद्देश्य असेम्बली के बहिष्कार का पूरा हो जायगा। इसलिये कांग्रेस का पिकेटिंग करने की आवश्यकता नहीं है। यदि पिकेटिंग किया गया तो इनके विरोधी मुस्लिम लीग द्वारा खड़ा किया गया उम्मीदवार जीत जावेगा। पिकेटिंग के कारण हिंदू मतदाता तो अधिकांश रुक जावेंगे और मुस्लिम मतदाता मानने वाले हैं नहीं।

यह सब सुनकर हम सन्न रह गये। अब कहते और करते भी क्या? एक जिम्मेदार कांग्रेस कार्यकर्त्ता समझौता करके आये हैं, उसे तोड़ना भारी प्रतीत हुआ। इतना अवश्य कहा कि कांग्रेस या गांधीजी के हेतु असेम्बली बहिष्कार का केवल इतना ही नहीं है कि असेम्बली भवन खाली रहे। बहिष्कार और पिकेटिंग करने का रहस्य यह है कि शासन द्वारा दमन हो। गोलियां और लाठियां चले इससे जनता में असंतोष और अशान्ति फैले और क्रांति समीप आवे।

हमने वह रात सस्ता साहित्य मंडल कार्यालय में व्यतीत की। प्रातःकाल उठकर कांग्रेस कैम्प में आये तो देखते हैं कि कैम्प को हजारों की भीड़ ने घेर लिया है और वे हम कांग्रेसी लोगों को विश्वासघाती और बेईमान बता रहे हैं। स्पष्ट आवाजें आ रही थी कि कांग्रेसी नेताओं ने शारदाजी से रुपये खाकर समझौता कर लिया है। क्योंकि जनता में कूट कूट कर असहयोग व बहिष्कार की भावनाएं भरी थी। असलियत बताने पर भी उनको संतोष नहीं हुआ और झंडा उठाकर उनके साथ मतदान केन्द्रों पर चलने के लिये आग्रह करने लगे। हम विवश थे। सुना था कि रात को कैम्प में पुलिस आई थी और उनको जैसा आदेश था जो कैम्प में मिले, पकड़ लाओ-कैम्प में केवल (हरिजन) भंगी का परिवार था उसे पकड़ कर ले गये थे।

मैं और वही ग्रेज्युएट महाशय बंदी की हैसियत से किसी प्रसंग से जेलर के कक्ष में बैठे थे। इतने में हरविलासजी शारदा आये। राम राम श्याम श्याम के बाद उन ग्रेज्युएट महाशय ने चुनाव में सफल होने पर उन्हें बधाई दी। पश्चात सम्भाषण होने लगा —

आपने वचन दिया था *कि चुनाव में यदि आप सफल हो गये तो असेम्बली से त्यागपत्र दे देंगे। ज्ञात* हुआ है कि आपने अभी तक त्याग पत्र नहीं दिया है।

—किसको वचन दिया था?

—मुझे।

—वचन देना तो दूर, मैं तो आपसे कभी मिला ही नहीं और न मैंने आपको कभी देखा ही।

मैं उन ग्रेज्युएट महाशय के मुख की तरफ देखता रहा और वे हक्के बक्के शारदाजी के मुख की ओर किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो देखते रहे। जब तक जेल में रहा इस प्रकरण की वेदना हृदय में उथल पुथल करती रही।०

प्रकाश त्यागी

# ज्वलंत घटनाएं

१६४२ मे हुए चडावल काड का वर्णन भुक्त भोगी श्री मीठालाल त्रिवेदी के शब्दो म सुनिये, '२८ मार्च, १६४२ को उत्तरदायी-शासन दिवस मनाने के उद्देश्य से कार्यकर्ताओ का एक जत्था तागो से चडावल चला। चडावल के जागीरदार को मालूम था कि हम आ रहे हैं, अत उसने आसपास के जागीरदारो से सहायता प्राप्त की और गाव के आसपास सशस्त्र आदमी तनात कर दिये। चडावल के मुख्य कार्यकर्ता श्री मागीलाल त्रिवेदी को पहले ही पकड लिया गया था।

"जत्थे ने गाव म घुसने का प्रयत्न किया, पर बेकार। अत म दरवाजे के बाहर वटवृक्ष की छाया म सभा का आयोजन किया गया। यह ठिकाने वालो के लिये असह्य था। उन्होंने बिना किसी चेतावनी के कार्यकर्ताओ का बेरहमी से मारना पीटना शुरू किया। भाड़ू, लाठिया, डडो व भालो के अतिरिक्त तलवारें भी चमकायी गयी। लेकिन कार्यकर्ता अडिग रहे। कितने ही लगातार लाठियो की मार पडने पर भी अपने स्थान से टस स मस नही हुए। इस मारपीट मे किसी के सिर किसी की आख किसी के कान, आदि मे गभीर चोट आई। सब लहू-लुहान हो गये थे—तेज धूप पड रही थी। पानी के लिये तडप रहे थे पर पानी पिलाने वहा था कौन ?"

इसी प्रकार का एक और सस्मरण सुनिये—श्री नरसिंह कछवाहा लिखते हैं—१३ मार्च १६४७ को वह डावडा काड हुआ जिसम जागीरदारो के अत्याचार चरम सीमा पर पहुँच गये। वहा किसान सभा ने एक विशेष सम्मेलन का आयोजन किया था। उसी पर जागीरदार उत्तेजित हो गये। शेखावाटी से २२ ऊटो पर सशस्त्र आक्रमण कारी विशेष रूप से बुलाये गये। उन्होंने आते ही बदूकें सभाल ली। सभा पर सशस्त्र आक्रमण किया गया। गोलिया दागी गई और तलवारें चमकाई गई। 'परिषद व 'सभा' के कार्यकर्ताओ ने स्थिति को बदतर होने से बचा लिया। किसान सभा के पाँच छ कार्यकर्ता शहीद हो गये।

लोहारू का गोली काड भी क्या भूलने की बात है ? भील नेता मोतीलाल तेजावत का त्याग कष्ट व लगन किसी के लिये भी अनुकरणीय है।

इस प्रकार की घटनायें जनता की स्वतत्रता की प्यास और उसे प्राप्त करने लिये त्याग और बलिदान की भावना और तैयारी के उज्ज्वल उदाहरण हैं। सघर्ष की भीषण आग म तपकर ही जनता ने विजय पाई और आज उन्नति की ओर अग्रसर हो सकी।●

# हाडौती की रियासतो की घुटन के हाल

रियासतो की आजादी के आन्दोलनो मे सकडा-हजारो लोगो ने जीवन पाया है। सबके नाम इतिहास की वस्तु हैं। १९४० मे उदयपुर के प्रजा-मण्डल पर पाबदी लगी हुई थी। उसके कार्यकर्त्ता अपनी बेबसी का अनुभव करते हुए यह नही समझ पा रहे थे कि क्या करें? गाधीजी की मदद मागी जा रही थी।

भारत रक्षा कानून का प्रयोग किया जा रहा था। राजनैतिक कार्यकर्ताओ को भील इलाको मे नही जाने दिया जा रहा था, जबकि ३ साल के निरतर अकाल के कारण लाचार आदिवासी, पडो की छाल और कच्चा मास (शिकार से) प्राप्त करके उबाल कर काम चला रहे थे।

श्री सारगधरदास की एक रिपोट के अनुसार श्री परशुराम ऐसे समय म खेती के लिय बीज लकर भील क्षेत्र म जा पहुचे। भील समझते थे कि गाधीजी न बीज भेजे हैं। जनता मे इसस जागृति आई तो उदयपुर की राजशाही सरकार के कारिंदे भी विचलित हो उठे और इसी कारण तत्कालीन उदयपुर के दीवान सर टी० विजयराघवाचाय ने फिर हजारो रुपय का बीज खरीद कर भीलो म बटवाया।

प्रजा-मण्डल राज्य मे उत्तरदायी शासन (नरेशो की छत्रछाया मे) की माग कर रहे थे। प्रारंभिक नागरिक अधिकारो के लिये तथा दमन के विरुद्ध भी आवाजें उठती पर छोटी रियासतो को मिलाकर प्रात बनाने की माग या रियासतो को प्रातो मे मिला देने की माग तो प्राय भारत के हर राज्य के प्रजा मण्डल ने उठाई थी। गाधीजी के नेतृत्व मे देशी राज्य लोक परिषद जिसका सचालन श्री नेहरू कर रह थे, दशी राज्यो म चल रही थी।

लगभग यही स्थिति कोटा, बूदी झालावाड, (हाडौती की तीनो रियासतो) मे थी। जन जागृति के काम में लग हुए लोगो म श्री गोपाललाल कोटिया, श्री नित्यानन्द नागर, श्री ऋषिदत्त मेहता और श्रीमती मेहता प्रमुख थ। सन् ४६ के आस पास श्री बृजसुदरजी शर्मा (नये वकील) की राजनतिक गति-विधिया बढ़ चली। वह म्यूनिसिपल बोड बूदी का आम चुनाव बडे सघष के बाद जीत पाये थे। तब कोटा स उनकी मदद को श्री इन्द्रदत्त स्वाधीन, श्री रमेश सोनी (बूदी वाले) श्री कुदनलाल चौपडा, श्री प्रभुलाल विजय एव

श्री क्वरलाल जेलिया भी गये। कोटा के प्रजा मण्डल के अग्रगण्णी नेतागणी सघय-मय जीवन बिता रहे थ।

कोटा की यही टोली भालावाड भी जाती थी। वहा के, उन दिनो प्रमुख कायकर्ता थे श्री मागीलाल भ-य, श्री क-हैयालाल श्री मास्टर रामच-द्र, श्री रतनलाल श्री ऐजाज मुम्मद तथा श्री पोद्दार।

भालावाड म महाराजा श्री हरिश्च-द्रसिंह देवजू प्रगतिशील गिने जाते थे पर उनका दायरा कोई बहुत बडा नही था। एक बार श्री हीरालाल थोनी के जुलूम को नही निकलने देने की उनके शासन ने सिरतोड कोशिश की थी और कोटा प्रजा मण्डल के प्रधान मत्री श्री इन्द्रदत्त स्वाधीन के पीछे उनके भालावाड के दौरे म पुलिस इतनी लगी रही थी कि किसी ने भी उन्ह ठहराया नही था, और सारी मण्डली (१९४६ म) रामघाट म ठहराई गई थी।

कोटा मे सन् ४२ का आन्दोलन बडा महत्वपूण था। श्री शभून्याल सक्सेना श्री तनसुखलाल मित्तल, मास्टर बिरधीलाल (श्री नैनूराम जी, प्रजा मण्डल के प्राण, की हत्या हो चुकी थी), श्री कु-दनलाल चोपडा, श्री सोनीजी श्री बाण्डाजी श्री मोतीलालजी श्री मण्णारीजी श्री मेडम्याजी, श्री प्रभूलाल विजय, श्री जोतियाजी श्री वेणीमाधवजी श्री नाथूलाल जन श्री रामेश्वरदयाल सक्सेना श्री बाबूलाल हड्ड, श्री रमेश अनिल व श्री इन्द्रदत्त स्वाधीन मन् ४० से ४७ तक के प्रमुख कायकर्ता रहे हैं।

सन् ४५-४६ ४७ म कोटा म एक स्थानीय आन्दोलन भी प्रजा मण्डल को लडना पडा। राष्ट्रीय काय कर्ताओ को नुक्त अमन (शान्ति भग न करने) सम्बन्धी पुलिस के काले कानून का शिकार बनना पडा। यह कानून १९३७ म भी लागू था। एक बार दासाहब (श्री हरिभाऊ उपाध्याय) ने श्री बालकृष्ण गग को कोटा के राष्ट्रीय आदोलन म मदद देने कोटा भेजा था। वह इन्द्रदत्त स्वाधीन के मेहमान नही बन सके थे इनके भाई डा० सुधीन्द्र तब सरकारी नौकरी म थे। नागरिका की साधारण सी हलचलो पर भारी पाबदिया शासन की ओर स थी। मेहमानो को भी पाबदिया माननी होती थी। डाक पर भारी मसर था। भला सावजनिक सभायें तो होती ही कसे? शासन ने न्याय व्यवस्था पर भी शिकजा कस रखा था।

श्री बालूलाल पानगडिया (उदयपुर) की एक रिपाट (१९४७) के अनुसार, माग यह थी कि अगर प्रान्त बन जावे तो हाईकोट स्वतत्र हो जावगा और तब जाबता फौजदारी, जाबता दीवानी ताजिरात-हिन्द कानून शहादत और अन्य कानूनो की मदद जनता का मिल सकेगी। आज तो नाम मात्र के हाईकोर्टों पर भी नरेशो की व्यक्तिगत इच्छा सर्वोपरि है।

कोटा मे न्याय व मुकद्दमो को शासको की इच्छा पर ही निभर रहना पडता था। हाईकोट तो शक्तिशाली थे ही कहा? कोटा महकमा खास के आडर स० क १२५ (११ ता० २०-३ ४६) के अनुसार प्राइ-मिनिस्टर बी० सी० शर्मा ने चीफ जस्टिस हाई कोट कोटा, को लिखा था — His Highness Govt are pleased to remit th unexpired portion of the sentence together with the fine, inflicted upon Mr Indra datta Swadheen' by the city Magistrate Kota (Sd)

पत्रकारो का जीवन तो राष्ट्रीय कायकर्ताओ से भी अधिक सकट पूण रहता था। एक बार देशी राज्य लोक परिषद का जलसा बीकानेर मे हो रहा था (७ १२ ४६) तत्कालीन प्राई मिनिस्टर श्री के० एम०
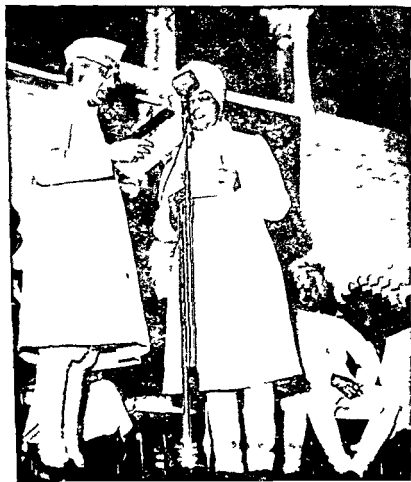
स्वप्न साकार हुआ एकता का प्रथम सोपान

कोटा दरबार शपथ ग्रहण करते हुए

उत्तरदायी-शासन का प्रारम्भ प० जवाहरलाल नेहरू ने महाराणा उदयपुर और श्री माणिक्लाल वर्मा को अपने पद की शपथ दिलवायी

वृहत्-राजस्थान के निर्माता सरदार पटेल ने जयपुर महाराज
सवाई मानसिंह को राजप्रमुख-पद की शपथ दिलवायी
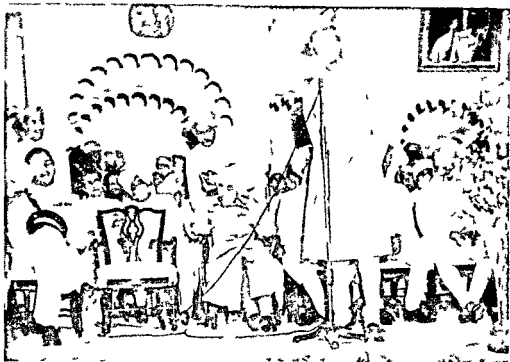
प्रथम चरण

उत्तरदायी शासन

चतुथ चरण (अजमेर राज्य सहित राजस्थान)

पनिकर ने श्री हीरालाल शास्त्री को (उस दिन बीकानेर) एक पत्र मे लिखा कि—'The govt have no desire to prevent you from meeting your co-workers and supporters, but it is not possible for them to permit a meeting to be held-(under See 144) उस दिन राजस्थान भर के नेताओं ने दफा १४४ तोडकर मीटिंग करना तय किया था और मत्री श्री सिद्धराजजी ढड्ढा (जो लोकवाणी के सम्पादक भी थे) ने श्री इन्द्रदत्त स्वाधीन को स्पेशल प्रतिनिधि नियुक्त करके यह चाहा था कि गिरफ्तारियो की खबरें बाहर जा सकें। लेकिन प्रशासन ने पत्रकारो का घूमना फिरना भी दूभर कर दिया था। शाम तक तनातनी बनी रही थी। आखिर बैठकें और मीटिंग दोनो हुई हालाकि १४४ धारा लागू थी पर पुलिस तमाश बीन ही बनी रही।

उस बैठक म उदयपुर के प्रतिनिधियो मे श्री माणिक्यलाल वर्मा, श्री भूरेलाल बया, श्री मोहनलाल सुखाडिया, श्री भोगीलाल पण्डया मुख्य थ। तब श्री सुखाडियाजी का भुकाव कुछ-कुछ समाजवादी पार्टी की ओर था। समाजवादी पार्टी काग्रेस का ही अग थी। श्री जयप्रकाश नारायण का नेतृत्व था।

आर्थिक दृष्टि से कमजोर, रचनात्मक काय दृष्टि से नितान्त शून्य, श्री नयनूराम शर्मा, श्री काला बादल, श्री मोतीलाल जन का नाम प्रमुख रहा है। हाडौती का क्षेत्र, जन जागृति मे कभी किसी से भी पीछे नही रहा। १९४२ म कोटा म तीन दिन जनता राज रहा। देश का प्रथम सत्याग्रह स्थल बीजालिया में कोटा, बूदी के असरय कायकर्ता थ। सन् ४८ तक स्थानीय आदोलनो मे हाडौती के लोग जूझते ही रहे। प्रात भर म, कई राज्या म, दिल्ली म भी हाडौती के कायकर्ता राष्ट्रीय आदोलना म भाग लेने बार बार जाते रहे है।

प्रशासन की घुटन मे भी राष्ट्रीय जागृति की भावना रखने वाले व जागृति का काम करने वालो के नाम प्रसग वश कही कही मने लिय है। ●

आज जब राजस्थान के कोने कोने से जीवन व जागति उमडते दीखते हैं, उमग व उत्साह जोर मारते हुए दिखाई देते हैं, राजस्थानी पूत सीना तान कर चलता हुआ नजर आता है, तब मेरा हृदय गदगद हो उठता है। अन्तरतम से एक आह निकलती है-काश, आज जमनालालजी राजस्थान के इस जौहर को देखने के लिए मौजूद होते। और कौन कह सकता है, कि अब भी उनकी आत्मा राजस्थान के वाताकाश पर मडराती हुई हमपर आशीर्वाद की वृष्टि न कर रही हो, हमारी पीठ न ठोक रही हो।

—हरिभाऊ उपाध्याय

श्री मथुरालाल शर्मा

# राज-शाही से लोकतंत्र तक

सन् १६४७ से पूर्व विशेषकर राजस्थान के शासक राजनतिक दृष्टि से व्याकुल और भयभीत थे। यह भय और व्याकुलता प्रथम विश्व-युद्ध के प्रारम से ही उत्पन्न हो गयी थी। जब ब्रिटिश सरकार ने भारतवर्ष मे सैनिको की भर्ती शुरू की तो लोकमान्य तिलक जसे नेताओ ने यह माग उपस्थित की थी, कि भारतवर्ष प्रथम विश्व युद्ध मे तभी शामिल होगा और सहायक बनगा जब यह वचन द दिया जाय कि युद्ध की सफल समाप्ति पर देश को स्वराज्य दे दिया जायगा। इस माग से प्राय समस्त देश सहमत था, परन्तु राजस्थान के शासक इसके कारण चिंतित और त्रस्त थ।

ज्यो ज्यों काग्रेस की राजनतिक माग प्रबल होती गयी राजस्थान के नरेशो की यह चिता बढती गयी। यदि भारत स्वतत्र हागया तो उसमे उनका क्या स्थान होगा। युद्ध की समाप्ति हुई और ब्रिटिश सरकार ने भारतवर्ष को कुछ सीमित राजनतिक अधिकार प्रदान किए। १६१६ के इण्डियन एक्ट के द्वारा दोहरी सरकार स्थापित हुई उससे भारत के राजनतिक नेता प्राय असतुष्ट थे। परन्तु उन अधूरे राजनैतिक सुधारो के प्रति भी राजस्थान के नरेशो की सहानुभूति नही थी और उनको यह भय था कि उनके राज्यो मे भी अब जनता अपने राजनतिक अधिकारो की माग प्रस्तुत करगी। इसलिए इस वर्ष नरेन्द्र मण्डल स्थापित किया गया और वाइसराय की अध्यक्षता म एक अधिवशन हुआ जिसम कई नरेशो ने यह इच्छा प्रकट की, कि भारत के राजनतिक आन्दोलन का उनके राज्यो पर प्रभाव नही पडना चाहिये। बाहर से उग्र राजनतिक विचार भावना से प्रिन्सेस प्राटेक्शन एक्ट बनवाया गया था जिसके कारण ब्रिटिश भारत के पत्र देशी राज्यो के शासन की कटु या कठोर आलोचना नही कर सकते थे।

इतने पर भी स्वतत्रता के विचार राजस्थान मे फले। विचारो का प्रवाह इतना प्रबल होता है कि वह किसी राजनतिक सीमा मे रुक नहीं सकता। इसको देखकर एक दो राज्यो म विधान सभाए बनाई गयी। नरेशो की जनता की आकाक्षाओ के साथ सहानुभूति तो थी ही नही पोलिटिकल विभाग भी नहीं चाहते थे कि कोई नरेश प्रगतिशील हो। प्राय सारे ही नरेश मेयो कालेज मे शिक्षा पाये हुए थे और उदार राजनतिक विचारो की छूत से सुरक्षित रखे जाते थे। प्राय सारे ही नरेश और जागीरदार अग्रजी शिक्षा पाये हुये थे। सब के टयूटर और गार्जियन अग्रज थे। आरम्भ से सब पर अंग्रेजी राज्य का एसा दबदबा जमा दिया गया

था, किसी को कभी चू करने का भी साहस नही होता था। ऐसी विदेशी और दवानेवाली शिक्षा के कारण सारे ही नरेश अपने राज्या म एक प्रकार से विदेशी वन गये थे और जनता से उनका सम्पक नाममात्र का रह गया था। लेखक को पता है कि एक वार ए० जी० जी० ने उदारता के आवेश मे आकर भोजन के उपरान्त अपने भापण म यह विचार प्रकट किये कि नरेशो को अपने शासन मे जनता का सहयोग लेना चाहिए। इससे प्रेरित होकर एक नरेश ने दूसर दिन अपने दरवार मे, जहा ए० जी० जी० भी उपस्थित थे, कुछ राजनैतिक सुधारा की घोपणा की तो ए० जी० जी० को अच्छा नही लगा और गुप्त रूपेण नरेश को समझाया गया कि उनके भापण का उद्देश्य यह नही था कि इतनी जल्दी राजनतिक सुधारो की ओर अग्रसर हो जाना चाहिए। परिणाम स्वरूप जो घोपणा की गई थी वह कागजो पर ही रह गयी और कार्यान्वित नही की गई। इस प्रकार ब्रिटिश भारत की जनता और राजस्थान की जनता म बडा भेद था। राजस्थान मे ८ प्रतिशत शिक्षा थी। स्त्री शिक्षा तो शायद ही कही ३ प्रतिशत से अधिक हो। लोग बोहरा के ऋण से दव हुए थे, अशिक्षित थे, कोई ऊची आकांक्षा या कामना नही थी, जिस गरीबी मे पैदा होते थे, उसी म मर जाते थे।

परन्तु ब्रिटिश सरकार नही चाहती थी कि राजस्थान के शासन का ढग सवा सौ वप बाद भी ज्या का त्या बना रहे। वह राजनतिक जागृति के पक्ष म तो नही थी परन्तु प्रशासनिक सुधार अवश्य चाहती थी। दो कमटिया इस उद्देश्य से बैठायी गई थी, कि भारत सरकार के साथ रियासता का क्या सम्बन्ध होना चाहिए और उनके आन्तरिक राज प्रशासन म क्या सुधार होने चाहिए। इन कमेटिया के सामने नरेशो ने अपनी बडी बडी मागें उपस्थित की और अपने अपन राज्या म पूर्ण स्वतन्त्रता चाही। परन्तु सरकार ने ये मागें स्वीकार नही की। साथ ही कमेटियो ने जनता की भी कोई वात नही सुनी। उन्हनि राज्य का प्रतिनिधि एक मात्र राजाओ का ही समझा। साइमन कमीशन की रिपोट पर जव भारतवप म नय राजनैतिक सुधार जारी किये गये ओर कुछ राजनतिक सत्ता जनता को सौपी गयी, उस समय भी राजस्थान की जनता मध्यकालीन वातावरण म ही रखी गयी। नये एक्ट का यदि कोई प्रभाव पडा ता राजाओ पर उनके हित म पडा जनता के पक्ष म कोई वात नही की गयी। वायसरॉय ने इतनी बात अवश्य कही थी कि छोटे छोटे राज्य अपने परो पर खडे नही हो सकते और राजनतिक या प्रशासनिक सुधार करन के लिए उनके पास साघन नही है। परन्तु यह बात ही बात थी, इसके आगे कोई कदम नही बढ़ाया गया। पालीटिकल विभाग क दवाव के कारण प्राय सारे राजस्थान म हाईकोट स्थापित हो गये, सहकारी समितिया जारी हुई। किसी न किसी उद्देश्य से बडे बडे राज्या म कालेज खोने गय, प्राथमिक शिक्षा का प्रचार हुआ, अदालतो म नरेशो का हस्तक्षेप नही रहा। दुर्भिक्ष के समय लागा को राहत भी पहुँचायी जाने लगी। बडे राज्या म बन्दोबस्त हो गया और भूमि लगान निश्चित कर दिया गया। तकावी भी जहा तहा दी जाने लगी। रेलें प्राय प्रत्येक राज्य म चलने लगी और सडकें बनी। परन्तु यह सब प्रशासनिक प्रगति थी। जनता अब भी दवी हुई थी और स्वतन्त्रता स सास भी नही ले सकती थी। राजनतिक आकाक्षाएं प्रकट करने वाले लोग भी केवल इने गिने थे और उनको भी बडे दुख उठाने पडते थे। फिर भी यह नही कह सकते कि जनता सोई हुई थी। जागृति सवत्र पहुँच रही थी।

दूसरे विश्व युद्ध के अन्त मे ऐसी देशव्यापी विचार क्रान्ति हुई और जनता की राजनतिक आकाक्षाए इतनी प्रबल हो गई कि कोई भी शक्ति उनको हमेशा के लिये दबा नही सकी, इस नवीन विचार प्रवाह ने थल सेना और नौसेना मे भी प्रवश प्राप्त कर लिया था। काग्रेस के आन्दोलन से प्रभावित प्रत्येक व्यक्ति नवीन युग का स्वागत करने के लिये आतुर था और लाखो लोग मातृभूमि की स्वाधीनता के लिये बलिदान होने को तत्पर थे। अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति इतनी विषम बन चुकी थी कि अग्रेज लोग भारतवष को दबाये रखने मे असमथ हो गये थे। सारे पराधीन देशामे स्वतन्त्रता की बाढ सी आ गई थी। जमनी ने इगलड पर इतने गोले बरसाये थे कि युद्ध के अन्त म अग्रेजो के सामने यह समस्या थी कि देश का पुनर्वास और पुनर्व्यवस्था कसे की जाय। हर एक अग्रेज नवयुवक की अपने दश म ही आवश्यकता थी। भारतवष को अपने अधीन बनाये रखने के लिये अग्रेज सरकार भारत म बहुत बडी सेना नही रख सकती थी। इसलिये अग्रेज सरकार ने यही श्रेयस्कर समझा कि इस देश को स्वतन्त्र कर दिया जाय। अग्रेजो ने भारत को बडी भलमनसाहत के साथ छोडा लेकिन चलते चलते भी हिन्दु और मुसलमानो के लिये हमेशा लडते रहने की पृष्ठ भूमि तैयार कर गये। गृह-कलह का हमत हसत उन्होने देखा और अपनी जय बुलवाकर वे हिन्दुस्तान से विदा हुए। विदा होने से पहले व दशी रियासतो की समस्या को जितना उलझा सकते थे, उलझा गये। इसीलिये राजस्थान की रियासतो के एकीकरण म और विलीनीकरण म समय लगा।

परन्तु जो स्वर्ण स्वप्न चरिताथ हुआ लाग दखना चाहत थे, वह नही हुआ। पहिले की अपेक्षा आज अन्न की कमी है, दूध और घी अत्यन्त दुलभ हो गये हैं और जीवन बडा महगा और दूभर बन गया है। स्वाधीनता के साथ ही साथ पाकिस्तान की समस्या भी खडी हो गई। उसके साथ दो बार युद्ध हुआ। चीन, जिससे शीत युद्ध तो बना ही रहता है के साथ भी बहुत बडा युद्ध हुआ। एशिया के सभी पडौसी दशो से हम सशक हैं और यूरोप के देशो के रुख का हमको ठीक पता नही लगता। इस निरन्तर चिन्ता और व्याकुलता के कारण राष्ट्र के चरित्र म भी बडा परिवतन हो गया है। धृति क्षमा दान और सत्य जिसके लिये भारतवष का सिर ऊचा था, अब प्राय विलीन हो गये है। सरकार क सामने निरन्तर एक न एक बडी समस्या बनी रहती है। कही दुर्भिक्ष है तो कही हडताल है कही राजनतिक उत्पात है तो कही नये सूबे की माँग है। पिछले १६ वष से भाषा, अन्न और जातिभेद की समस्याए वसी ही बनी हुई है जैसी स्वाधीनता के पूव थी। इन अनेक कठिनाइयो के कारण जनजीवन क्षत विक्षत सा हो गया है।

ससार के जिस देश मे भी शासन पद्धति बदली, वहा किसी न किसी अश म प्राय ऐसे सकट उपस्थित हुए हैं। एकतन्त्र से प्रजातन्त्र का माग सुगम और सरल नही है। स्वाधीनता प्राप्त करना इतना कठिन नही है जितना उसकी रक्षा करना और उसके स्वरूप को सुन्दर बनाना। आरभ म लाग स्वभावत ही अधिकारो पर ही जोर देते हैं और कर्त्तव्या की उपक्षा करते हैं। इगलड, फ्रास, रूस, टर्की और अमरिका मे जब जनतन्त्र प्रणाली का आरभ हुआ तो ऐसा ही हुआ था। इसलिय हमका आशा करनी चाहिये कि यह क्षुब्ध जीवन भविष्य म शान्त और सुखी होगा। इसके लिय धय विश्वास और परिश्रम की आवश्यकता है। ●

डा० बाबूराव जोशी

# राजस्थान का पुनर्गठन

वतमान राजस्थान का जन्म १ नवम्बर १९५६ को हुआ। इसी दिन राजस्थान के छोटे बडे राज्य जो अपने शौय और गौरवशाली परम्परा के लिये प्रसिद्ध थे लेकिन एकता एव सगठन के अभाव म विश्रृंखलित और कमजोर थे एकता के सूत्र म आबद्ध हुए।

स्वतन्त्रता सघष म शहीद होने वाले वीरो का स्मरण होते ही सबसे पहले अलवर राज्य के उस नीमूचाणा नामक ग्राम के चरणो म हमारा सिर श्रद्धा से झुक जाता है जो राजस्थान का 'जलियाँवाला बाग' कहा जाता है, वहा लगभग १०० नर नारी शहीद हुए थे। जैसलमेर के अमर शहीद सागरमल गोपा का नाम राजस्थान के इतिहास म स्वर्णाक्षरो म लिखा जायेगा। उन्होने अन्याय और अत्याचार के सामने झुकने के बजाय जिन्दा जल जाना ही अधिक पसन्द किया था। भरतपुर के रमेश स्वामी ने अपने ऊपर किये गये निमम प्राणघातक हमले का मुकाबला करके तो मानो स्वतन्त्रता की एक अमर ज्योति ही प्रज्वलित कर दी। जोधपुर के बालमुकन्द बीसा और ठाकुर प्रतापसिंह ने भी हसते हुए अपने प्राणो की आहुति दी और शाहपुरा के केसरसिंह ने आजन्म कारावास के कष्टो को सहन करके आजादी की मशाल बुझने न दी। बासवाडा के महाराजा शम्भूसिंह आजादी के आन्दोलन से प्रभावित हुए और उन्होने पदच्युति का मूल्य देकर भी स्वतन्त्रता का झण्डा ऊचा रखा।

सन् १९३८ मे हरिपुरा काग्रेस मे अखिल भारतीय काग्रेस न देशी राज्यो के सम्बन्ध मे अपनी नीति की घोषणा की, कि वह भारत के एक ऐसे सघ को पसन्द करेगी जिसम देशी राज्य भी एक इकाई के रूप म रह और जनतात्रिक स्वतन्त्रता का उपभोग करें। लेकिन जब अग्रेज जाने लगे तो जाते जाते भी एक चाल चल ही गये। भारत मे अपनी सर्वोच्च सत्ता की समाप्ति के साथ साथ उन्होने यह भी घोषणा कर दी कि देशी राज्यो म भी उनकी सर्वोच्च सत्ता समाप्त हो रही है और देशी राज्य के नरेश चाहे तो भारत में सम्मिलित हो चाहे पाकिस्तान म। इसका एक अथ यह भी निकलता था कि वे चाहे तो न भारत मे सम्मिलित हो न पाकिस्तान म और एक स्वतन्त्र राज्य के रूप म रह। यदि ऐसा होने दिया जाता तो भारत अनेक टुकडो म बट जाता और सब अपनी अपनी ढपली लेकर अपना अपना राग आलापने लग जाते।

१५ अगस्त, १९४७ के तत्काल बाद अनेक बार ऐसे अवसर आये जब स्थिति बडी विषम होता हुई प्रतीत हुई। व सचमुच बडी उत्तेजना के क्षण थे जबकि जोधपुर के महाराजा ने पाकिस्तान के साथ साठ गाठ प्रारम्भ की। वे कायदे आजम जिन्ना और मुस्लिम लीग के नताओ स बार बार मिले। अन्तिम बार वे बीकानर के महाराजा के साथ उनसे मिलन वाले थे लकिन महाराजा बीकानर इसक लिय तयार न हुए। महाराजा जोधपुर अकेले जाना नही चाहते थे अत व जसलमेर के महाराजकुमार का अपने साथ ले गये। जोधपुर, बीकानर और जैसलमेर की ही सीमा पाकिस्तान स लगी हुई थी। जिन्ना न एक कोरा कागज दस्तखत करके महाराजा जोधपुर को दे दिया और कहा—'आप जो भी शर्ते चाह लिख लीजिये। मुझे आपकी सारी शर्ते मजूर हैं। महाराजा जोधपुर तैयार हो गये। उन्होंने महाराज कुमार स पूछा कि उनका क्या इरादा है। महाराजकुमार बोले मैं इस शत पर पाकिस्तान म मिलन को तयार हू कि यदि हिन्दु मुसलमानो म झगडा हुआ तो मैं हिन्दुओं के विरुद्ध मुसलमानो का पक्ष नही लूगा। इस शत के ऊपर जो चचा हुई उसने महाराजा जोधपुर की आखें खोल दी। सर मोहम्मद जफरुल्ला ने महाराजा का समाधान करने की बहुत कोशिश की लेकिन महाराजा के मन म शका कुशकाए पैदा हुई। उन्होने कहा कि वे कल फिर आयेंगे और तब अपना निश्चय बतायेंगे। जोधपुर लौटकर व तीन दिन तक विचार विनिमय करत रहे। राज्य का जनमत पाकिस्तान के साथ मिलन के विरुद्ध था। स्व० जयनारायण जी व्यास के नेतृत्व मे उसका विरोध किया जा रहा था। कुछ जागीरदार भी इसे पसन्द नही करते थे। वे दिल्ली गये। उनका विचार था कि यदि भारत सरकार स किन्ही अच्छी शर्तों पर समझौता हो जाय तो पाकिस्तान म मिलने का विचार छोड दिया जावेगा।

दिल्ली म उन्ह कोई विशेष सफलता नही मिली। हा उनकी कुछ छोटी शर्ते स्वीकार करली गई। महाराजा की मनस्थिति पर उस समय की एक घटना अच्छा प्रकाश डालती है। कहा जाता है कि राज्य मत्री श्री वी पी मेनन, गवनर जनरल लाड माउण्टबेटन और महाराजा ने एक साथ बठकर चर्चा की। चचा के बाद जब गवनर जनरल चले गय तो महाराजा ने उत्तेजित होकर रिवाल्वर निकाल लिया और उस श्री मनन की ओर तानकर कहा, 'मैं तुम्हारे दबाव के सामने किसी प्रकार भी झुक नही सकता। श्री मेनन ने कहा "यदि आप यह सोचते हैं कि मुझे मारकर या मारने की धमकी दकर अपने राज्य को पाकिस्तान मे मिला लेंगे तो आप बहुत बडी भूल कर रहे हैं। अच्छा हो आप य विचार अपने दिमाग से निकाल दें।

य घटनाए बताती है कि देशी राज्यो के पुर्नगठन का काम कितना कठिन होता यदि बुद्धिमानी, दूरदर्शिता, सयम और होशियारी से काम न लिया गया होता। यदि एक देशभक्त पत्रकार महाराजा जोधपुर की पाकिस्तान के साथ चलने वाली साठगाठ का भण्डाफोड न करता और यदि ठीक समय पर राजाओ की बठक मे महाराजा उदयपुर न दृढतापूवक यह न कहा होता कि वे पाकिस्तान म जिन्दा रहने के बजाय भारत में मरना पसन्द करेंगे तो पता नही राजस्थान का भविष्य कितना अधकारमय बन गया होता और निश्चय ही राजस्थान का नक्शा कुछ दूसरा होता।

राजस्थान का पुनर्गठन विभिन्न चरणों मे पूरा हुआ। पहले चरण मे राजस्थान सघ का निर्माण बासवाडा, बूदी, डूगरपुर, झालावाड, किशनगढ कोटा और टोक के पुनर्गठन से हुआ। भाषा और सस्कृति की दृष्टि से यह एक अच्छी इकाई बन गई थी। इस नये राज्य का उदघाटन २६ मार्च, १६४८ को हुआ।

इसके बाद मेवाड के महाराणा ने भी इस नवीन सघ मे मिलना स्वीकार कर लिया। मेवाड एक बडा राज्य था उसके मिल जाने से नवनिर्मित राजस्थान सघ की राजधानी कोटा के स्थान पर उदयपुर को बना दिया गया। अब महाराणा उदयपुर को आजीवन राजप्रमुख बनाया गया और कोटा के महाराजा को वरिष्ठ उपराजप्रमुख। इस नय सघ का उदघाटन प० जवाहरलाल नेहरू के करकमलो से १८ अप्रैल, १६४८ को हुआ।

यह एक अच्छा श्री गणेश था। लेकिन जयपुर, जोधपुर, बीकानेर जैसलमेर, भरतपुर, अलवर आदि ऐसे अनेक राज्य बचे थे जो सस्कृति, भाषा और परम्परा की दृष्टि से राजस्थान के ही अग थ, अत राजस्थान मे ही उनका विलय आवश्यक एव उचित था। अत अब इन सब राज्यो के विलय की बात प्रारम्भ हुई। बातचीत सफल हुई और जयपुर जोधपुर, बीकानेर एव जसलमेर का जन्म हुआ। इसका उदघाटन ३० मार्च १६४६ को हुआ।

अब मत्स्य सघ के भी विलय होने की बात प्रारम्भ हुई। इस सघ का उदघाटन मार्च, १६४८ को हुआ था और इसमे अलवर, भरतपुर, धौलपुर एव करौली ये चार राज्य सम्मिलित हुए थे। करौली और अलवर ने तो राजस्थान म मिलना तत्काल स्वीकार कर लिया लेकिन भरतपुर और धौलपुर का झुकाव उत्तरप्रदेश म मिलने की ओर था। अन्त म तय हुआ कि जनमत मालूम करके तदनुकूल कार्यवाही की जाय। जाच पडताल के बाद कमेटी ने रिपोर्ट दी, कि इन दोनो राज्यों का बहुमत राजस्थान म ही मिलने क पक्ष मे है। फलत १० अप्रैल १६४६ को मत्स्य सघ के चारो राज्य राजस्थान म मिला दिये गये।

अब यद्यपि राजस्थान के सभी देशी राज्य एकता के सूत्र मे बध गये थे तथापि अजमेर उसके बीचो बीच स्थित होते हुए भी एक अलग राज्य ही बना हुआ था। राज्य पुनर्गठन आयोग ने यह बाधा भी हटा दी। उसने अपनी रिपोर्ट म कहा कि अजमेर राज्य, आबू (बम्बई प्रान्त का एक भाग) तथा सुनल (मध्यप्रदेश के मन्दसौर जिले के एक टप्पे) को राजस्थान म मिलाया जाय और राजस्थान के सिरोज डिवीजन को मध्य प्रदेश म। इस सिफारिश के अनुसार अजमेर आबू और सुनल राजस्थान म मिले तथा सिरोज डिवीजन मध्यप्रदेश म। यह पुनर्गठन का अन्तिम चरण था।

राजस्थान के पुनर्गठन की यह कहानी स्व, प जवाहरलाल नेहरू की प्रेरणादायी उल्लेख के बिना अधूरी ही रहगी। उन्होने वर्षों तक अखिल भारतीय देशी राज्य प्रजा परिषद के द्वारा देशी राज्यो की जनता का मार्गदर्शन किया और उसे भी उसी मार्ग पर ले आये जिस पर तिरगे झण्डे के नीचे ब्रिटिश भारत की जनता आगे बढ रही थी। इधर सरदार पटेल ने राजस्थान के राजा महाराजाओं को एकता के सूत्र मे बाधने के लिए जिस दृढता, बुद्धिमता और कार्यकुशलता का परिचय दिया वह भी सदव आदर के साथ स्मरण किया जायगा। जिन प्रश्नो को दूसरा कोई भी व्यक्ति सेना की सहायता के बिना हल ही नहीं कर सकता था उस सरदार पटेल ने मनोवैज्ञानिक ढग स बडे कौशल के साथ बिना रक्त की एक भी बूद बहाये हल कर दिया, और इस पुनर्गठित राजस्थान के हजारो देशभक्तो और शहीदो के स्वप्न को साकार बना दिया। ●

मोहनलाल सुखाडिया

# राजस्थान निर्माण का एक प्रयास

१६३६ की बात है। उस समय मैं बम्बई से इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग में डिप्लोमा लेकर राजस्थान लौटा ही था। उस समय सारा देश उत्साह और जोश से अनुप्राणित हो रहा था। मैं भी अपने हृदय की समस्त शक्ति बटोर कर इस आन्दोलन म कूद पडा। महात्मा गाधी और नेहरूजी के नेतृत्व मे भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस हमारी राष्ट्रीय एकता और आकाक्षा का प्रतीक बन गई थी तथा इसके झडे के नीचे ब्रिटिश भारत और रियासतो से निकल कर हजारो कायकर्ता एकत्र होते जा रहे थे। इन कायकर्ताओ मे त्याग और उत्साह की अनूठी भावना भरी थी। इनका लक्ष्य स्वतत्रता प्राप्त करना था तथा ये इस लक्ष्य को पाने के लिए हर प्रकार की कठिनाई और कष्ट झेलने के लिए कटिबद्ध थे।

मेवाड म हम लोग भी इस देश-व्यापी आन्दोलन से प्रेरित हुए। प्रजामडल की स्थापना की गई। श्री माणिक्य लाल वर्मा के नेतृत्व म यह राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत निस्वार्थ कायकर्ताओ का एक ऐसा घटक बन गया जिसने रियासती शासन के अत्याचारो के विरुद्ध सघष किया तथा उत्तरदायी शासन के लिए आवाज बुलन्द की। एक ओर हमने मेवाड की उस शानदार वीर परम्परा मे प्रेरणा प्राप्त की जिसने जीवन पयन्त शक्तिशाली मुगल सम्राटो से लोहा लेने वाले और कल्पनातीत कठिनाइया और दारुण कष्ट झेलकर भी स्वतत्रता के झडे को फहराने वाले महाराणा प्रताप को जन्म दिया था दूसरी ओर हमने महात्मा गाधी और नेहरू से प्रेरणा प्राप्त की जो हमारे पथ प्रदशक नेता थे। वास्तव मे गाधी और नेहरू के समान जनता को अभिभूत करने वाले व्यक्तित्व इतिहास म कभी कभी ही अवतीर्ण होते हैं।

ऐसा प्रतीत होता है माना गाधीजी अफ्रिका मे गोरो द्वारा किये जा रहे दुर्भाग्यजनित शोषण का समाधान खोजने गये लौटने पर उन्हे यहा की परिस्थितियो म भी वसा ही उत्पीडन दिखाई दिया। महात्मा गाधी की वाणी मे क्रान्तिकारियो की सी जोशीली शब्दावलि नही थी, न उनके व्यक्तित्व मे इस प्रकार का दिखावा था लेकिन उनके सीधे सच्चे शब्दो ने देश की सदियो से प्रसुप्त जनता मे जागरण का शखनाद किया जिसके फलस्वरूप वे इतिहास की उस महानतम रक्तहीन क्राति के सृष्टा बन सके उनका यह काय इतना अदभुत था कि देश की भावी पीढियो और इतिहासकारो को इस चमत्कारपूर्ण घटना पर कठिनाई से विश्वास हो सकेगा।

|| श्री हरि ||

गाधीजी के इस विचार ने कि हम सक्रिय और ग्राम जीवन को प्रभावित करने वाली पचायतों के माध्यम से गाँवों का पुननिमाण कर सकते हैं, मुझे बडी प्रेरणा दी। इसके बहुत वर्षों बाद, २ अक्टूबर, १६५६ को उनकी जयन्ती के दिन जब राजस्थान मे पचायती राज का शुभारम्भ किया गया तो मुझे यह अनुभूति हुई कि पचायती राज का सूत्रपात्र कर हम राष्ट्रपिता का एक सच्ची श्रद्धाजली अर्पित कर रहे हैं। देश मे जब सवप्रथम राजस्थान मे पचायती राज का प्रारम्भ किया गया तो सदेहवादियो ने ऊहापोह की थी, उनका खयाल था कि यह एक प्रकार का प्रयोग है जिसका असफलता प्राप्त होते ही तत्काल परित्याग कर दिया जायेगा। लेकिन मुझे हमारी ग्रामीण जनता के सामान्य ज्ञान की गहरी पठ पर विश्वास रहा है। पचायती राज के माध्यम से हम बापू के सपनो के भारत का निर्माण कर सकेंगे। राजस्थान मे गत सात वर्षो मे हुई पचायती राज की प्रगति ने धारणाओं को पुष्ट किया है तथा मेरे आशावादी दृष्टि कोण को बल प्रदान किया है हालाकि इस अवधि मे पचायती राज सस्थाओं की कुछ त्रुटिया भी मेरे ध्यान म आई हैं।

नेहरूजी ने काग्रेस सगठन में समाजवाद एव योजनाबद्ध विकास के विचारो की अवतारणा की। नेहरूजी के व्यक्तित्व मे विलक्षण सम्मोहन था। वे ओजस्विता एव गत्यात्मिकता से परिपूर्ण थे। १६३६ से ही वे देश के योजनाबद्ध विकास की कल्पना कर रहे थे। इग्लड मे अध्ययन करते समय केम्ब्रिज मे सद्धान्तिक समाजवादियो (फेबियन्स) से सम्पर्क हुआ तथा क्रान्ति के पश्चात सोवियत रूस द्वारा की गई प्रगति से भी वे प्रभावित हुए। नेहरूजी पर इन दोनो विचारधाराओ का गहरा प्रभाव पडा तथापि भारत के लिए उन्होने एक ऐसी अर्थ व्यवस्था का विकास किया जो भारतीय विचारधाराओ के अनुरूप थी। उनकी ऐसी मान्यता थी कि हमारे देश म लोकतान्त्रिक समाजवादी समाज की स्थापना केवल योजनाबद्ध विकास के माध्यम से ही हो सकती है। वे चाहते थे कि इस आयोजना के प्रति लोकतान्त्रिक पद्धति से लोगो को अग्रसर किया जाय। उन्हे बडे पैमाने के उद्योगो और साथ ही छोटे पैमाने के उद्योगों के विकास मे किसी प्रकार का प्रतिरोध नजर नहीं आया। इस प्रकार उन्होने छोटे उद्योगो के विकास के प्रति बापू के विचारो का बडे उद्योगो की आधुनिक धारणा से समन्वय स्थापित किया।

राजस्थान के लिए जो योजना तैयार की गई उसका आधार भी यही समन्वय है। सामन्तकालीन शासन में हमारे यहा किसी भी प्रकार का उल्लेखनीय उद्योग नही था। लेकिन स्वतत्रता प्राप्ति के पश्चात् और विशेषत गत दशाब्दि में औद्योगीकरण के क्षेत्र मे महत्वपूर्ण प्रगति हुई है। कोटा, खेतडी, डीडवाना और उदयपुर जसे स्थान जहा उद्योगो का कोई अस्तित्व नही था आज औद्योगिक हलचल से आलोडित हो रहे हैं। पचायत समितियो ने विस्तार का जो कायक्रम हाथ म लिया तथा राजस्थान लघु उद्योग निगम और विभिन्न खादी सस्थाओ ने जो प्रयास इस दिशा मे किये हैं, उनके सुफल आज चरितार्थ होने लगे हैं। हमारे स्थानीय हस्तकलाओ के कारीगरो म आज नवोन्मेष जागृत हुआ है तथा अधिकाधिक लोग लघु उद्योगो को अपनाते जा रहे हैं। राजस्थान म कच्चे माल का कतई अभाव नही है। बिजली की प्रारम्भिक कठिनाई और अभाव के शीघ्र दूर होने की आशा है। मैंने आस्ट्रेलिया और अमरीका जाकर देखा है कि विमान और

टेक्नोलोजी की मदद से तथा जल और विद्युत दोनो शक्तियो का सतर्कता और कुशलतापूर्वक उपयोग करके कृषि एव उद्योग के क्षेत्र मे इन दोना ने अभूतपूर्व प्रगति की है। हमारे देश मे भी ये साधन प्रचुर मात्रा म है लेकिन अभी तक इनका उपयोग इस दिशा म नही किया जा सका है। आस्ट्रेलिया और अमेरीका की तरह ही हम इन विपुल स्त्रोतो का जन हित म उपयोग कर प्रगति की धारा को मोड सकेंगे।

हमारे प्रगतिशील भूमि सुधारो ने देहाती क्षेत्रो म क्रातिकारी परिवर्तन किये हैं। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पूर्व यहा भिन्न भिन्न भूमि सम्बन्धी कानूनो और व्यवहारा की एक ऐसी शृंखला सामन्ती परम्परा के रूप म हम प्राप्त हुई जो भूमि जोतने वाले किसान के विरुद्ध केवल सामन्ती हिता की पोषक थी। मुझे प्रारम्भ म राजस्व मन्त्री के रूप मे और बाद मे मुख्यमन्त्री के रूप मे इस समस्या से जूझने का मौका मिला। जिन दिनो मैं आदिवासियो म काम कर रहा था, उन समय से ही मेरी यह धारणा हो चुकी थी कि यदि हमे किसाना की दशा मे सुधार करना है और खाद्यान्न उत्पादन बढाना है, तो हमे बिचौलियो को समाप्त कर किसान को जमीन का स्वतन्त्र स्वामित्व दिलाना होगा। किसान के लिए आजादी का तब तक कोई अर्थ नही होगा जब तक कि बिचौलिया द्वारा उसका शोषण होता रहे, वह सताया जाता रहे। हमने अनेक प्रकार के भूमि सम्बन्धी कानूनो को लागू करके जागीरदारो और बिस्वेदारा जैसे सभी बिचौलिया को समाप्त कर दिया है तथा वास्तव मे भूमि जोतने वालो को जमीन पर परम्परागत अधिकार प्रदान किये हैं। उनको जमीन को बेचने या हस्तातरित करने के भी समस्त अधिकार प्रदान किये गये हैं। कानून द्वारा जोत की अधिकतम सीमा निर्धारित कर हमने कुछ लोगा के हाथा मे बडे बडे जमीन के चको के सग्रह को रोकने के लिए भूमि सुधारो की दिशा म अत्यधिक प्रगतिशील कदम उठाया है। राजस्थान के किसानों को इसने नव जीवन प्रदान किया है।

राजस्थान के देहाती इलाको का दौरा करते समय मैंने सदैव इस बात पर गौर किया है कि हमारे किसान कैसे कपडे पहनते हैं कैसे मकाना मे रहते है तथा उनके आसपास का वातावरण कैसा है किसानो के जीवन स्तर मे हुए सुधारो का अनुमान लगाने के लिए उससे अधिक विश्वसनीय मापदड दूसरा नही हो सकता। मुझे किसानो के रहन सहन के तरीका म किसी प्रकार के परिवर्तन का आभास मिलता है तो मेरा मन आलहादित हो उठता है। मुझे उन दिनो का स्मरण हो आता है जब कि भील क्षेत्रो म प्रजा मडल का काम करते समय भील युवक–युवतियो को अर्धनग्न, चिथडो म लिपटा देखकर हम कितनी मानसिक वेदना होती थी। आज यह देखकर मन मे एक प्रकार का सतोष होता है कि चाहे जितनी मात्रा म हुआ हो, ग्रामीणो के जीवन स्तर मे कुछ परिवर्तन तो अवश्य हुआ है।

राज्य म भाखडा और चम्बल जैसी महत्वाकांक्षी बहुउद्देशीय योजनाओ से जल और विद्युत उपलब्ध होने लगी है। इन सुविधाओ से राज्य के आर्थिक विकास की प्रारम्भिक और आधार भूत आवश्यकताओ की पूर्ति की जा रही है। राजस्थान नहर का निर्माण हो जाने पर राज्य का निर्जन मरुस्थलीय प्रदेश शस्य श्यामला भूमि म परिवर्तित हो जायेगा।

जब भी मैं राजस्थान के भविष्य का स्वप्न देखने लगता हू मुझे लगता है कि इस राज्य का दक्षिणी भाग वहा उपलब्ध खनिज पदार्थों का उपयोग करने पर समृद्धि को प्राप्त हो जायेगा तथा साथ ही इन

खनिजो से सम्बन्धित उद्योगो का भी वहा विकास होने लगेगा। राजस्थान का पश्चिमी-उत्तरी भाग बिजली के उत्पादन म ठोस प्रगति करके अन्ततोगत्वा समृद्धि प्राप्त करेगा। कोटा का एक विशाल औद्योगिक केन्द्र के रूप म विकास होगा। जयपुर म औद्योगिक धरातल के विस्तार की पर्याप्त सभावनाये है और इन्जीनियरिंग से सम्बन्धित उद्योग अच्छे पनप सकेंगे। रासायनिक उद्योगो का विकास तथा भूमिगत जल की उपलब्धि दो ऐसे तत्व हैं, जो आधुनिक समृद्धिशाली और समाजवादी राजस्थान के निर्माण की दिशा मे ठोस योगदान प्रदान करेंगे।

बिजली और सिंचाई की सुविधाओ ने राजस्थान मे कृषि और उद्योगो के विकास के नये अवसर पैदा किये हैं। कृषि के साथ पशुपालन का विकास भी जुडा हुआ है। मैंने आगे भी इस बात की चर्चा की है कि हमारा विकास और समृद्धि बहुत कुछ बिजली, पानी और खेती तथा पशुपालन के क्षेत्र मे उन्नत तरीको को अपनाने की क्षमता और योग्यता पर निर्भर करेगी। पचायती राज ने लोगो मे जनहित कार्यों मे उत्साह से सहयोग देने की भावना को पैदा किया है तथा उसे प्रोत्साहित किया है। यदि हम स्थानीय लोगो मे हर काम में उत्साह से आगे आने की भावना को बनाये रख सके और शिक्षा के कार्यक्रम की गति को तीव्र कर सके तो मुझे विश्वास है कि हमारा राज्य न केवल अन्य विकसित राज्यो के समकक्ष पहुँच जायगा बल्कि अनेक राज्यो से प्रगति की दौड म आगे निकल जायेगा।

मैं सदैव इस तथ्य के प्रति जागरूक रहा हू कि प्रशासन द्वारा प्रयुक्त विभिन्न पद्धतियो और व्यवस्थाओ का लगातार पुनरावलोकन किया जाना आवश्यक है। जो कार्य किये जा रहे है, उनकी नियमित रूप से जाच पडताल होती रहनी चाहिए ताकि प्रशासन तन्त्र को धीरे धीरे विभिन्न नीतियो और कार्यक्रमो म अन्तर्निहित सिद्धान्तो के निकट लाया जा सके। इस दृष्टि से राजस्थान म पचायती राज, प्रशासनिक सुधार और कृषि उत्पादन आदि क्षेत्रो मे नियमित रूप से मूल्याकन किया जाता है।

राज्य के अनेक भागो म छात्रो द्वारा किये गए आन्दोलन तथा जयपुर वासियो द्वारा जयपुर मे उच्च न्यायालय की बैच हटाने के विरोध मे किये गये आन्दोलन के,दिन मेरे लिए अत्यन्त वेदना और कष्ट के दिन थे। मेरे सामने एक ओर कानून और व्यवस्था को बनाये रखने की आवश्यकता और दूसरी ओर आन्दोलनकारियो को किसी प्रकार की चोट नही पहुँचाने की इच्छा ने एक दुविधाजनक परिस्थिति उत्पन्न कर दी थी। फलस्वरूप मैंने अनेक रातें बिना सोये बेचैनी म बिताई। यह हमारे लिए सौभाग्य की बात थी कि स्थिति पर बिना कठोर कदम उठाये ही काबू पा लिया गया। इस स्थिति से जो थोडा बहुत भी सतोष मुझे मिलता है उसके लिए मैं उस सर्वशक्तिमान परमात्मा का ऋणी हूँ।

नन्हे मुन्ने बालक बालिकाओ ने मुझे सदैव आकर्षित किया है क्योकि उनमे भावी भारत की झलक मिलती है। जब से मैं राज काज के मामलो से सबद्ध हुआ हू मैंने सदैव इस बात का ध्यान रखा है कि थोडा बहुत समय हमारे उज्ज्वल भविष्य की इन फलती फूलती आशाओ के बीच बिता सकू। मेरी सदैव यह आकाक्षा रही है कि राज्य म वह परिस्थिति उत्पन्न की जाय जिसम किसी भी कारण प्रतिभा सपन्न लडके व लडकी को अपने अभिभावको की आर्थिक कठिनाइयो के कारण उच्च शिक्षा प्राप्त करने के अवसरो

से वचित न रहना पडे। छात्रो और उनके कल्याण कार्यों म मेरी निजी रुचि है क्याकि उनकी गतिविधियो के साथ स्वय को जोड कर मुझे एक प्रकार की तृप्ति की भावना का अनुभव होता है।

स्वतत्रता प्राप्ति के लिए सघष और सुनियोजित अथ व्यवस्था के माध्यम से एक जनतान्त्रिक समाजवादी समाज के निर्माण के प्रयास देश के भविष्य के इस महान ऐतिहासिक नाटक के दो दृश्य है। स्वतत्रता प्राप्ति और अपने भाग्य पर स्वय नियत्रण के अधिकार प्राप्ति के साथ ही प्रथम दृश्य का शानदार पटाक्षेप हो चुका है। दूसरा दृश्य अभी चल रहा है और हम इसे भी इसी आन, बान और शान से पूणता की ओर आगे ले जाने के लिए हर सभव प्रयत्न करना है। सब प्रकार के त्याग और बलिदान के लिए उद्यत रहना है। यह मेरे लिए गौरव और सौभाग्य की बात है कि मुझे हमारे स्वतत्रता आन्दोलन म अपनी विनम्र भूमिका निभाने और बादमे राज्य की जनता को समृद्धिशाली बनाने के दिव्य पुनीत काय को सम्पन्न कराने का अवसर मिला। मुझे अपने राज्य की जनता मे गहन आस्था है और राज्य के भविष्य मे मेरा अटूट विश्वास है। हमे स्वय को महाराणा प्रताप, बापू और नेहरूजी जैसे महापुरुषो की परम्परा को निभाने के योग्य बनने का प्रयत्न करना है। "श्री मा" के शब्दा मे—

'आओ प्राथना के समान ही हम काम म जुट जाय, क्योकि वास्तव से यह शरीर काम करके ही दिव्यात्मा की श्रेष्ठ अभ्यथना कर सकता है ●

लोगों ने जो सेवा की वह जनता को मान्य हो जाती है। पर जनता का एक अजीब स्वभाव है। जो विशेष करता है उससे वह और अधिक सेवा की अपेक्षा करती है। उसकी सेवा की माग बढती जाती है। उसका वह हक भी है, क्योंकि वही सेवकों की मानी हुई देवता है। सेवा से प्रसाद और प्रसाद से सेवा यह सिलसिला अखड चले, इसी मे जीवन का मजा है।

—विनोबा

इन्दुबाला सुखाडिया

# राष्ट्रीय संकट की घडी में राजस्थान की महिलाओ का योग

चीन ने १९६२ मे जब हमारे देश पर हमला किया और अब १९६५ मे पाकिस्तान ने कश्मीर पर दूसरी बार हमला किया तो यह स्पष्ट हो गया, कि किसी भी देश को, मन्थर और तीव्र गति से प्रवाहित विशाल नदिया, गगन चुम्बी पवत मालायें, मीलो तक विस्तृत समुद्र तट या सीमा प्रदेश ही महान और शक्तिशाली नही बनाते, उसकी शक्ति तो उसके लोगो और उनके विचारो की पद्धति म निहित होती है।

वतमान सघष मे भी महिलाओ ने अपनी कतव्य परायणता का अनोखा उदाहरण प्रस्तुत किया है। राजस्थान म महिलाओ को सघठित होकर अपना काम करने का पहला अवसर २० अक्टूबर १९६२ के बाद मिला। इस वक्त सामाजिक कायकर्ताओं की एक समिति, 'राजस्थान महिला प्रतिरक्षा कोष समिति' कायम की गई जिसके जिम्मे अस्पतालो और मोर्चों पर युद्ध रत जवानो के लिए गम कपडे तयार करने तथा अन्य सामान भेजने का काम सौंपा गया।

महिलाओ की इस समिति को नगद और सोने के रूप मे धन सग्रह करना तथा जवानो के परिवारो से सम्पक कर उनकी आवश्यकताओं का अनुमान लगाने का काम सौंपा गया था। महिलाओ ने राष्ट्र की पुकार को शिरोधाय किया और इस काम मे लग गई। चीनी आक्रमण के मुकाबले के लिये सारा देश एक व्यक्ति बनकर खडा हो गया था। राजस्थान की इस समिति ने जवानो के लिए ट्रान्जिस्टर सेट, तकियो के गिलाफ सूती कपडे कम्बल, जसिया बोनवीटा, साबुन की टिकिया, सिगरेट आदि काफी सख्या मे मोर्चों पर भेंट स्वरूप भेजी। राष्ट्रीय सुरक्षा कोष म भी सोने और चादी का योगदान दिया। लगभग ४६३७ ६५० ग्राम चादी एकत्र कर जमा करायी गयी।

चीन ने युद्ध विराम कर दिया तो धीरे-धीरे समिति के काम की गति भी मन्द होती चली गई। लेकिन पाकिस्तान ने जब कश्मीर पर हमला किया तो समिति को सकटकालीन स्तर पर पुनगगठित किया गया। इस बार राजस्थान राज्य महिला प्रतिरक्षा कोष समिति को जिला मुख्यालया तक पहुचाया गया। हर जिले मे महिलाओ के सगठन कायम किये गये।

समिति न अपने काय को व्यवस्थित ढग से चलाने के लिए उचित विभाजन किया। (१) मोर्चे पर युद्ध-रत जवानों के लिए आवश्यक सामग्री एव सुविधायें जुटाने के काम को प्राथमिकता दी गई। (२) मोर्चे

पर लड़ने वाले जवानो के परिवारो की देखभाल। (३) राष्ट्र सेवा मे अपने जीवन का बलिदान देने वाले सनिकों के परिवारो के लिए सुविधायें जुटाना। (४) पाकिस्तान के सीमा क्षेत्रो के निकट से आने वाले विस्थापितो को सुविधायें प्रदान करना। (५) जवानो के परिवारो के लिये अल्प कालीन प्रशिक्षण पाठ्यक्रम चालू करना। इन उपरोक्त उद्देश्यो की पूर्ति के लिए एक केन्द्रीय सामग्र संग्रही और प्रेषण केन्द्र, ८-सिविल लाइन्स जयपुर में स्थापित किया गया। राज्य समाज कल्याण बोड तथा अन्य सगठनो से स्वच्छिक सहयोग प्राप्त किया गया। राजस्थान से बाहर अन्य राज्यो से भी योगदान और उपहार प्राप्त करने के प्रयत्न किये गये और बम्बई के राज्य पाल की धमपत्नि श्रीमती चेरियन ने राजस्थान के विस्थापितो के लिए चार ट्रक भरकर ४१४ पैकेज भेजे जिनमे बतन, वस्त्र, अचार, दवाइया, खाने की चीजें, साडिया, आटा, चावल तथा गेहूँ आदि वस्तुए सम्मिलित थी।

समिति ने आबकारी विभाग के ठेकेदारो तथा कमचारियो से सम्पक कर ५००० बोतलें "रम" की प्राप्त की जिन्हे मोर्चे पर लड रहे जवानो के लिये भेजा गया। बालिकाओ ने जवानो के लिये मिठाइया तैयार की हैं, तो बालको ने बचत के पसे एकत्र कर सुरक्षा कोष मे प्रदान किये हैं। कुछ स्कूलो म तो हर छात्र ने एक एक बिस्कुट का पकेट जवानो के लिए उपहार स्वरूप दिया है।

महिलाओ ने आगे बढकर नागरिक सुरक्षा के प्रशिक्षण प्राप्त किये हैं। अजमेर म ४०० महिलाओ ने नागरिक सुरक्षा मे प्राथमिक प्रशिक्षण प्राप्त किया तथा ४०० महिलाओ ने प्राथमिक उपचार (फस्ट एड) का प्रशिक्षण ले लिया है। यह प्रशिक्षण अब भी चालू है। अजमेर की महिलाओ ने जवानो के लिए अडे भी भेजे हैं। कुछ पुरानी मासिक पत्रिकाए भी एकत्र की गई हैं जो जवानो के मनोरजन हेतु भेजी गई हैं। बालोतरा और अन्य सीमा प्रदेशीय क्षेत्रो मे, समिति उधर से गुजरने वाले जवानो के लिए नि शुल्क चाय-स्टाल चला रही है।

राजस्थान की महिलाओ ने सुरक्षा प्रयासो म हर प्रकार से योग दान दिया है। वह जागरूक है राष्ट्र की एकता और दृढता को बनाये रखने के लिए, और जवानो व उनके परिवारो को वाछित सुख सुविधाए प्रदान कराने के लिये। सीमा पर जवान मोर्चा साधे सतत जागरूक बठे हैं तो महिलाए निरतर उनके परिवारो की क्षेम कुशल के लिए चिन्तित और गतिशील हैं।●

किसी देश की उन्नति छोटे विचार के बड आदमियों पर नहीं, बड़े विचार के छोटे आदमियो पर निभर है।

—स्वामी रामतीथ

बी० मेहता

# राजस्थान में प्रशासन कुशलता की दिशा मे प्रयास

राजस्थान का निर्माण बहुत सी एसी देशी रियासतो के एकीकरण से हुआ जिनमे आकार, उद्भव तथा विकास की दृष्टि से विशमता थी। हर एक रियासत का अपना स्वय का अलग अस्तित्व था, परम्परायें थी तथा प्रशासनिक तंत्र था। इन भिन्न भिन्न रियासतो से निरासन के रूप म लाये हुये कर्मचारी वग म ऐसे व्यक्ति आये जिनकी योग्यताए भिन्न भिन्न थी और जो काम करने के भिन्न भिन्न तरीका से अभ्यस्त थे। इस स्थिति को एक नये ढाचे मे ढालना था ताकि नये राज्य की प्रशासनिक व्यवस्था म वे लोग काम कर सकें। इसलिये पाच छ वर्ष का समय एकीकरण करने मे व्यतीत करना पडा।

एकीकरण का काय समाप्त हो जाने के बाद ही सरकार प्रशासनिक तन्त्र को आधुनिक परिस्थिति के अनुकूल बनाने, मौलिक परिवतनो का समावेश करने, प्रशासन के प्रकमा का सिहावलोकन करने, काम करने की प्रणालियो तथा प्रक्रियाओ को अधिक औचित्यपूर्ण ढाचे मे ढाले और राज्य कमचारियो के दृष्टिकोण को बदलन की ओर ध्यान दे सकी। पिछले दस बारह वर्षो मे काफी विचार किया गया है, भिन्न भिन्न पहलुओ पर विचार करने के लिये समितियां नियुक्त की गई जिनमे से कुछेक निम्नलिखित हैं

१. डिपाटमेन्टल प्रोसीजर कमेटी, १९५४
२ राजस्थान एडमिनिस्ट्रेटिव इन्क्वायरी कमेटी, १९५६
३. प्लानिंग एन्ड डेवलपमेन्ट कोआर्डीनेशन कमेटीज
४ स्टेट कमेटी ऑन ट्रेनिंग १९६१
५ एडमिनिस्ट्रेटिव रिफामस कमेटी, १९६२
६ राजस्थान पचायती राज स्टडी टीम, १९६२
७ रेवेन्यू लाज कमीशन, १९६२

डिपाटमेन्टल प्रोसीजर कमेटी ने श्री बी० मेहता की अध्यक्षता म भिन्न भिन्न विभागा मे काय भार की वृद्धि का ध्यान मे रखते हुए प्रशासनिक तन्त्र को तदनुकूल विस्तृत करने के समूचे मसले की जाच की और नेशनल एक्सटेंशन सर्विस टक्निकल विभागो तथा उनके प्रशासन की ओर विशेष तौर पर ध्यान दते हुए, तहसील स्तर स लकर विभागाध्यक्ष के स्तर तक प्रशासन के समग्र काय कलाप का देखा।

राजस्थान एडमिनिस्ट्रेटिव इन्क्वायरी कमेटी ने मुख्य सचिव की अध्यक्षता मे, वित्तीय तथा प्रशासनिक शक्तियो के प्रत्यायोजन के प्रश्न पर तथा प्रशासनिक नियन्त्रण रखने की रीति पर विचार किया। अभिप्राय विकेन्द्रीकरण करना था ताकि मातहत आफिस अपना काय ययोचित स्वाधीनता तथा स्वप्रेरणा से कर सकें।

प्लानिंग एड डेवलपमेट कोआर्डिनेशन कमेटिया मुख्य सचिव की अध्यक्षता म गठित की गई जिनका काय विभिन्न विकास विभागो के कायक्रमा की प्रगति का सिंहावलोकन करके इन्हे समन्वयित करना था।

एक और महत्वपूर्ण कदम जो उठाया गया वह था भर्ती रिक्रूटमेण्ट की नीति मे सशोधन। सघि पत्रान्तगत राज्यो म विभिन्न सेवाओ म काम कर रहे व्यक्तिया को इस ढग से उपयुक्त रूप म एकित्रत करना था ताकि वे लोग नये काडरो को भूतपूव ब्रिटिश प्रान्ता म प्रचलित ढग से सुव्यवस्थित कर सकते थे। यह काय पूरा हो जाने के पश्चात इन काडरो की भर्ती खुली प्रतियोगिता के माध्यम से होनी थी।

जो व्यक्ति प्रशासन काय मे आज व्यस्त हैं उन्हे एक शताब्दि पहले अपने पूर्वाधिकारियो की अपेक्षा इस बारे मे बहुत अधिक सीखना है। आज किसी सस्थान म किसी पद विशेष के लिय सामान्य तथा तकनीकी ज्ञान सम्बन्धी आवश्यकताओ के अलावा प्रशासनिक धारणाओ तथा सिद्धान्ता की जानकारी भी आवश्यक हो जाती है। लोक सेवका की शिक्षा एव प्रशिक्षण के इन सभी पहलुओ पर राज्य सरकार गभीर रूप से विचार करती रही है और अधिकारी वग के प्रशिक्षण के लिये १६५७ मे एक आफीसस ट्रेनिंग स्कूल खोला गया। तत्पश्चात कुछ वर्षों मे ही पुलिस अधिकारिया की ट्रेनिंग के लिये और लेखा अधिकारियो के लिये भी अलग अलग स्कूल प्रारम्भ किये गये। तदनन्तर इन प्रयासो को और भी अधिक विस्तृत किया गया जब कि स्कूलो और ट्रेनिंग सस्थाओ की एक कतार खडी की गई जिनम काल परपजेज रेवेन्यू ट्रेनिंग स्कूल फारेस्ट स्कूल और कोआपरेटिव तथा पटवार ट्रेनिंग स्कूल है। सन् १६६१ मे प्रशिक्षण कायक्रम उस स्थिति मे आ गये जब कि उनका समेकन एव पुनगठन करना आवश्यक हो गया और श्री बी० मेहता की अध्यक्षता म एक समिति नियुक्त की गई। इस समिति ने राज्य स्तरीय सेवाओ तथा अधीनस्थ सेवाओ के लिये सामान्य तथा तकनीकी प्रशिक्षण के एक व्यापक कायक्रम की सिफारिश की जिसम से कुछेक का उल्लेख नीचे किया गया है।

१ पोस्ट एन्ट्री तथा प्री सर्विस ट्रेनिंग
२ रिफ्रेशर कोस
३ मिडिल एव हायर मेनेजमेण्ट कोस

इन पाठ्यक्रमो की व्यवस्था स्कूल मे है। बुनियादी ट्रेनिंग का अभिप्राय प्रशासन को परिवतन-शील धारणाओ देश की अर्थव्यवस्था, आयोजना के विभिन्न पहलुओ तथा सविधान के अन्तगत लोक सेवकों एव सरकार की जिम्मेदारिया का ज्ञान कराने के साथ साथ कमचारी वग म सही मनोवृत्ति जाग्रत करना है। उसी प्रकार रिफ्रेशर कोस तथा मिडिल मैनेजमेण्ट कोर्सों के जरिये उन व्यक्तियो म जो इन कोर्सों मे भाग लेते है सहयोग और पारस्परिक समझौते की भावना तो विकसित की ही जाती है उसके साथ साथ उनके समक्ष सरकार के कतव्या का तथा उन कतव्यो के अग्रस्वरूप उनके स्वय के कतव्या का एक व्यापक तथा अधिक विशाल स्वरूप रखा जाता है। इन कोर्सों म भिन्न भिन्न किन्तु परस्पर सम्बद्ध विभागो मे भिन्न सेवाओ म काम करने वाले अधिकारी भाग लेते हैं।

विभिन्न सरकारी कार्यालयों एव व्यापार सस्थाओ मे कनिष्ठ लिपिक के पदो के लिए उम्मीदवारों को शिक्षित करने हेतु राजस्थान के विश्वविद्यालयो के सहयोग से जूनियर डिप्लोमा कोर्स प्रारम्भ किया गया है जिसमे सचिवालय सम्बन्धी तथा वाणिज्य सम्बन्धी ट्रेनिंग दी जाती है। यह कोर्स जुलाई सन् १६५६ से राजस्थान के छ कालेजो मे अजमेर, बीकानेर, जयपुर, जोधपुर, कोटा, और उदयपुर मे पूर्णकालीन कोर्स के रूप मे चलाया जा रहा है। जो उम्मीदवार इस कोर्स को सफलता से पूरा कर लेते हैं उन्हे सचिवालय तथा अन्य सरकारी कार्यालयो मे भर्ती करने मे प्राथमिकता दी जाती है।

प्रशासन के विरुद्ध आज कल दो सामान्य शिकायतें है—(१) नियमावलियाँ तथा प्रक्रियायें जटिल हैं। (२) सार्वजनिक हित अथवा कुछेक व्यक्तियों अथवा वर्गों के अधिकारो की उपेक्षा की जाती है। ये शिकायतें, पर्यवेक्षण तथा उद्देश्यपूर्ण निरीक्षण की कमी के कारण उत्पन्न होती हैं। अत सरकार ने निर्णय लिया है कि नियमित समयान्तरो पर निरीक्षण होने चाहिये। निरीक्षण के दौरान यह देखना होता है कि प्राधिकार का दुरुपयोग कितने मामलो मे किया गया है निर्धारित प्रक्रिया से विचलन कितना में हुआ है और कितने मामलो मे असाधारण विलम्ब हुआ है तथा यह भी देखना पडता है कि पहले पायाके सिद्धान्त का पालन किस हद तक किया जा रहा है। निरीक्षक अधिकारी को, इस बारे मे ठोस एवम् निश्चित निर्णय पर पहुचने के के लिए फैसला शुदा मामलो म से कम से कम ३० से ४० प्रतिशत तक की जाच करनी होती है। अधिकारियो द्वारा निरीक्षण एव दौरे नियमित रूप से किय जाने जान के बारे मे व्यापक अनुदेश जारी कर दिये गये हैं।

जहा तात्कालिक एव विवेकपूर्ण पर्यवेक्षण तथा ठीक समय पर जाच किया जाना आवश्यक है, वहा यह भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि कर्मचारी वर्ग को सतुष्ट रखा जाय और सरकारी कर्मचारियो को प्रशसा योग्य कार्य के लिए उचित प्रोत्साहन दिया जाय। सबसे महत्वपूर्ण निर्णय यह लिया गया कि पचास प्रतिशत पदोन्नतिया और अच्छे जिला म अथवा ऐसे पदो पर जिनमें विशेष वेतन मिलता है पदस्थापन योग्यता के आधार पर लिये जायेंगे। सुझाव योजना के अनुसार सरकारी कर्मचारियो को कार्यालय तथा प्रशासनिक प्रक्रियाओ म (१) मितव्ययता लाने (२) जन शक्ति के अपव्यय को बचाने (३) राजस्व की चोरी को रोकने (४) प्रक्रिया सम्बन्धी विलम्ब को कम करने तथा (५) शील निष्ठा बनाये रखने की दृष्टि, सुधार के लिए देने पर नगद पुरस्कार अथवा योग्यता प्रमाण पत्र दिये जायगे।

प्रशासनिक पद्धति का एक सामान्य दोष यह है कि वह ऐसे कर्मचारियो को जो अपने काम मे अकुशल हैं और जिनके कारण विभागो की कार्यकुशलता आगे नही बढ पाती, सेवा से अलग करने मे असमर्थ है। सेवा मे अनिवार्यत रिटायर करने का तरीका जारी किया गया है। जिसके अनुसार हर एक सरकारी कर्मचारी के सर्विस रिकार्ड की, उसकी सेवा निवृति आयु पूरी होन से पहले दो बार जाच की जाती है।

प्रशासन विरुद्ध जो दूसरी सामान्य शिकायत सुनी जाती है वह यह है कि काम को शीघ्र और समय पर निपटाने की भावना का पूर्णतया अभाव है और कार्य बहुत धीमी गति से किया जाता है, जिसके परिणामस्वरूप मामलो म अनावश्यक विलम्ब होता रहता है। इसके अतिरिक्त एक यह भी शिकायत है कि ऐसी कोई मशीनरी नही है जो कि लोगो की आपत्तियो और शिकायतो को शीघ्रता से दूर कर सके,

तथा सरकार की नीति सम्बन्धी कार्यक्रमो और गति विधियो के सम्बन्ध म सवसाधारण की प्रतिक्रिया और राय को सही सही जानने के लिए भी कोई उपयुक्त मशीनरी नही है। इस प्रश्न पर प्रशासनिक सुधार समिति ने विचार किया था जो कि श्री एच० सी० माथुर ससद सदस्य की अध्यक्षता मे गठित की गई थी। इस समिति ने एसे प्रश्नो पर बहुत विस्तृत रूप म विचार किया और व्यापक सिफारिशें की जिनम से अधिकाश पर विचार कर लिया गया है और उन्ह कार्यान्वित भी किया जा चुका है। कुछ कदम प्रक्रिया सम्बन्धी विलम्ब को दूर करने और जन साधारण की कठिनाइयो का निवारण करने के लिए उठाये गये हैं, जिनम से मुख्य मुख्य निम्नप्रकार है —

१ हर स्तर पर कागजो का निपटारा करने के लिय समय नियत कर दिया है। यह प्रयास विशेष रूप से ऐसे आवदन पत्रो के निपटारे के लिए किया गया है जो कि ऋण उधार लेने लाइसे स लने तथा जमाशुदा रकमो की वापसी आदि के लिये पश की जाती है। राज्य कमचारियो के आवदन पत्रो के निपटारे के लिये ३ माह का समय नियत कर दिया गया है। २ सचिवालय म तथा कुछ अन्य विभागो म लगभग तीन वष पहले सेल सिस्टम जारी किया गया था। दफ्तरो म काम को अलग अलग आत्म निभर सेलो म व्यवस्थित कर दिया है जिनका सीधा सम्बन्ध अफसरो से है। इनमे अधिकाश मामलो का निपटारा अधिकारियो द्वारा कर दिया जाता है जो सम्बन्धित कागजो को मगवाकर स्वय उनका अध्ययन करते हैं और उनम तुरन्त निणय ले लेते हैं तथा अपने निणय को स्टेनोग्राफरो का लिखा दते हैं। इस सेल की प्रणाली के परिणाम स्वरूप अब कागजात का निपटारा क्लर्कों के विवेक के अनुसार न होकर अफसरो के विवेकानुसार होने लगा है। इस प्रणाली का एक बडा फायदा यह हुआ है कि अब विलम्ब अथवा निपटारे अथवा दोनो के लिए जिम्मेदारी सही सही और ठीक ठीक स्थिर की जा सकती है। इस पद्धति को अन्य विभागो मे प्रचलित करने के लिय एक पूव बद्ध कायक्रम ( phased programme ) बनाने के लिये एक समिति नियुक्त की गई है।

व्यवस्था एव पद्धति विभाग जिसकी स्थापना सन् १९५५ मे हुइ थी प्रशासनिक प्रक्रिया तथा कुशलता मे सुधार लाने की दिशा मे अच्छा काम करता रहा है। इस विभाग को सुदृढ अध्ययन आधार पर स्थित करने के लिये इसे पुनगठित और अधिक सशक्त बनाने का निणय लिया गया है।

मन्त्रिमडल के निणयो को अधिक दक्षता और शीघ्रता से कार्यान्वित करन के लिये एक मन्त्रिमडल सचिवालय १९६० मे स्थापित किया गया। इसका काय मुख्य मन्त्री तथा अन्य मन्त्रियो द्वारा पूछे जाने वाले विविध प्रश्नो के उत्तर तयार करने म मुख्य सचिव को सहायता देने का है। इस मन्त्रिमडल सचिवालय के साथ एक मूल्याकन कक्ष भी सम्बद्ध कर दिया गया है और मूल्याकन सगठन के निर्देशक उसके अध्यक्ष है।

विभिन्न विभागो मे विविध स्तरो पर सावजनिक अभियोगो के निस्तारण म विलम्ब के कारणो की जाच पडताल करन के लिय एक जन अभियोग निराकरण विभाग ( निर्देशालय ) का भी १९६४ मे सृजन किया गया। इस निर्देशालय का जून १९६५ तक प्रथम प्रतिवेदन भी प्रकाशित हो चुका है।

भ्रष्टाचार विरोधी व्यवस्था को अधिक सुदृढ बनाने तथा विभागीय जाचो के परिपालन म शीघ्रता

करने के लिये, सरकार ने दो पृथक अधिकारी नियुक्त किये हैं,

(१) विशिष्ट महानिरीक्षक पुलिस भ्रष्टाचार निरोध और (२) आयुक्त विभागीय जाच।

प्रशासन के विभिन्न क्षेत्रों म सरकार की नीति के महत्वपूर्ण मामलो पर विचार विमश करने तथा अन्तर्विभागीय समस्याओ का हल ढूढने के लिये विशेषकर जिला प्रशासन के सदभ म, सरकार द्वारा विभागो के अध्यक्षो तथा कलक्टरो का वार्षिक सम्मलन (जिसे वरिष्ठ अधिकारी सम्मेलन कहा जाता है) आयोजित किया जाता है तथा सम्मेलन की सिफारिशो को कार्यान्वित करने हेतु तदनुसार काय वाही की जाती है।

जिस तरीके से जिले म प्रशासन काय होता है उसी को देखकर जन साधारण अपनी राय बनाते हैं। जिला प्रशासन को सुदृढ तथा सुप्रवाहित बनाने हेतु विभिन्न कायवाहिया की गई है।

१ कलक्टर को अतिम समन्वयकारी अधिकारी बना दिया गया है। यह सुनिश्चित करने के लिये स्पष्ट आदेश दे दिये गये है कि (क) विकास तथा कल्याणकारी योजनाएँ ऐसी हो, जिनसे जनता की आवश्यकताओ की पूर्ती हो (ख) विभिन्न योजनाओ के टाइम टेबिल का पालन किया जाय और उद्देश्य प्राप्ति निर्धारित समय के भीतर हो। (ग) भ्रष्टाचर न रहे (घ) जहा कही भी आवश्यक हो जनता का सहयोग प्राप्त किया जाय (ङ) जिले की सभी विकास तथा कल्याणकारी योजनाएँ सरकार या स्थानीय निकायो को प्रस्तुत किये जाने से पूव कलक्टर के परामश से तैयार की जाकर उन्हे अतिम रूप प्रदान किया जावे, और (च) जिला स्तर के विकास अधिकारियो पर प्रशासनिक तथा अनुशासनात्मक नियन्त्रण सम्बन्धी कतिपय शक्तियो का प्रयोग किया जाए।

२ कलक्टर अपने जिलो म सरकार के विभिन्न विभागो के कार्यो की देखभाल करते हैं और सचिवालय विकास आयुक्त तथा मुख्य सचिव को छमाही रिपोट भेजते हैं। कलक्टरो द्वारा अनुभव की गई कठिनाइयो पर कलक्टरो की (रीजनल) बैठको मे विचार विमश किया जाता है। ये बैठकें वष मे दो बार ही आयोजित की जाती है।

न्यायापालिका के पृथकरण की याजना को १३ जिलो मे पूणत तथा शप जिलो म अशत कार्यान्वित किया गया है।

जस्टिस भडारी की अध्यक्षता म रेवेन्यू लाज कमीशन स्थापित किया गया। कमीशन को भू धारण अधिकार तथा टीनन्सी कानून के प्रभाव के सम्बन्ध म रिपोट पेश करन, वतमान विधिया को सशोधित तथा सरल करने के प्रस्ताव रखन का काय सौंपा गया। कमीशन की रिपोट पर सक्रियता से विचार किया जा रहा है।

प्रशासन की प्रक्रियाओ के निरन्तर सिंहावलोकन हेतु मुख्य सचिव की अध्यक्षता म प्रशासन तथा निर्देशन सम्बन्धी एक समिति स्थापित की गई है। व्यवस्था एव पद्धति विभाग म एक विशेष अधिकारी की नियुक्ति की गई है। सगठनात्मक व्यवस्था नीति सम्बन्धी किन्ही परिवतनो की आवश्यकता तथा सामान्य प्रशासनिक काय की दृष्टि से विभिन्न विभागो के कार्यों की जाच करन हेतु उक्त विशेष अधिकारी के पास एक शोध तथा तथा अध्ययन यूनिट काम करती है।●

प्रकाशवती सिन्हा

# राजस्थान की नारी

"वीर पिता की सतान कायर होते देखी गई है, किन्तु वीर माता की सतान कभी भी कायर होते नही देखी'। राजस्थान का इतिहास बनाने का श्रेय राजस्थान की वीरागनाओ को ही है।

आज चित्तौड के ध्वस्त खण्डहरो को देखकर समस्त नारी जाति का शीश गौरव स ऊचा हो जाता है। राजस्थान की वीरागना ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र म जो मूल्य चुकाया है वह विश्व के समक्ष अद्भुत उदाहरण है। चित्तौडगढ मे एक बार नही अनेको बार राजस्थान की वीरागनाओ ने अपने आपको अग्नि को समपण किया। हाडीरानी, महारानी महामाया, महारानी वीरागना किरनदवी के नाम जगमगाते नक्षत्र है। पन्ना धाय ने तो त्याग का अनुपम उदाहरण पश किया। ऐसी मिसाल और कहा मिलेगी वह अगर उदयसिह की रक्षा न करती तो शायद राणा प्रताप भी न होते और मेवाड का इतिहास कुछ और ही होता।

वत्तमान स्वतन्त्रता सग्राम का बिगुल बजा। राजस्थान की वीरागनायें कैसे पीछे रह सकती थी! वे भी सामने आई और देश भक्त तथा आजादी के दीवानो के साथ मातृभूमि को स्वतन्त्र करने म जुट गई! स्व० श्री रमा देवी (धम पत्नी श्री लादूराम जी जोशी) श्रीमती गोमती देवी भागव श्रीमती मनोरमा पडित, श्रीमती मनोरमा देवी टडन, श्रीमती भागीरथी देवी उपाध्याय, श्रीमती प्रियवदा चतुर्वदी, अजना देवी चौधरी, विजयाबाई सरदार बहन, नारायणी देवी वर्मा भीलवाडा, रतनदेवी शास्त्री जयपुर, रामप्यारी जी जयपुर कमला श्रोत्रीय उदयपुर, रमा देशपाण्डे जयपुर, सुनिला खेतान जयपुर, गुलाव देवी अजमेर, कृष्णदेवी ब्यावर श्रीमती इन्दिरा देवी शास्त्री जयपुर आदि को इतिहास कभी नही भूलेगा। जिन्होने आजादी की नीव के रूप मे काम किया। इन्ही के कारण राजस्थान के स्त्री वग मे राष्ट्रीय चेतना का सचार हुआ। श्रीमती रतन देवी शास्त्री तथा भागीरथी बहन ने नारी शिक्षा के क्षेत्र म सराहनीय काय किया है। श्रीमती कमला देवी क्षेत्रीय, श्रीमती इन्दुबाला सुखाडिया श्रीमती नारायणी देवी वर्मा भी भिन्न भिन्न सस्थाओ का सचालन कर नारी विकास म महत्वपूण काय कर रही हैं।

एक श्रेणी उन महिलाओ की है, जो राजनीति मे रुचि रखती है। इनम गायत्री देवी एम पी रानी लक्ष्मीकुमारी चूडावत एम एल ए रानी उर्मिला दवी मसूदा, कमला वेनीवाल उप मन्त्रिणी प्रभा मिश्रा उप मन्त्रिणी, सुमित्रा देवी गौरी पुनिया एम एल ए नगेन्द्रबाला एम एल ए का नाम लिया जा सकता है।●

ोमदत्त शास्त्री

# खादी का इतिहास

राजस्थान चर्खा सघ की स्थापना सन् १९२६ म श्री जमनालाल बजाज के आशीर्वाद से हुई। उन्होंने श्री ब० सा० दशपाडे तथा श्री हरिभाऊ उपाध्याय को इस कार्य के सचालन के लिये भेजा। बाबा नृसिंहदासजी द्वारा प्रारभ किये गय ब्यावर, सीकर, अजमेर और अमरसर के खादी भडार भी राजस्थान चर्खा सघ के तत्वावधान मे काम करने लगे। अमरसर को मुख्य उत्पत्ति केन्द्र बनाया गया। इन्ही दिनो मैं दासाहब से मिला और इनके आग्रह पर खादी व रचनात्मक कार्यों म जुट गया। कुछ ही दिन बाद रीगस मे एक स्वावलम्बन केन्द्र चालू किया गया। सन् ३० मे पू बापू ने नमक-सत्याग्रह प्रारभ किया। उस समय की नीति के अनुसार हम रचनात्मक कायकर्त्ता अजमेर म जाकर ही उसमे भाग ले सकते थे। हमारे कई साथियो ने जोश से भाग लिया।

राजस्थान चर्खा सघ का काम धीरे धीरे बढा सकडो कायकर्त्ता शामिल हुए, बडे बडे शहरो म उत्पत्ति एव बिक्री केन्द्र प्रारम हुए। इससे ग्रामीण जनता को राहत मिली और हमारा प्रभाव ग्रामो मे बढने लगा जिसके द्वारा हम उनमे विभिन्न प्रकार के सुधार करने म समथ हुए। बारडोली सत्याग्रह के जमाने मे हमारी चर्खा शाला एव अन्य ग्रामीण पाठशालाओ के छोटे छोटे १० १०, १२-१२ साल के बालको ने भी बडे जोश से भाग लिया। मुझे उन बालको की याद आ रही है जिन्हे माफी मागने को कहा गया पर ये वीर बच्चे न माने। तब उन्हे १८ १८ बेंतो की सजा दी गई। हर बेंत पर वे वदे-मातरम् का नारा लगाते, उनमे स सिफ एक, बाला सहाय का नाम ही मुझे याद आरहा है।

स्वस्थ होने पर भी इन बालको ने घर जाने से इकार कर दिया और फिर से पुलिस से आख मिचौनी शुरू हुई। अत म ३ ३ महीने की सजा दी गई। खादी के अलावा रचनात्मक कार्यों के द्वारा राजनतिक जागृति फलाने का काय भी करते रहे और राजस्थान के आदोलनो का बहुत कुछ श्रेय रचनात्मक कायकर्ताओ को ही है जो आज भी पद प्रतिष्ठा के झगडे मे न पड कर उसी निष्ठा से अपने काम म लगे हैं।

सन् ३७ मे श्री जमनालाल जी के नेतृत्व म प्रजामडल का जो आदोलन चला उसमे भी चर्खा सघ के कायकर्ताओ ने खुलकर भाग लिया। सगठन का काम तो वे करते ही थे परन्तु बहुत से छुट्टी

लेकर आन्दोलन म कूद पड २०० से ऊपर काफी दिना तक जेल म रहे। जसे ही परिस्थिति और वातावरण स्वाभाविक बनता अपने खादी व रचनात्मक कार्यों म लग जाते १९४२ के 'भारत छोडो' आन्दोलन के समय भी आजाद मोर्चा बनाकर कमान सभालने वाला मे हम खादी के कायकर्ता दशपाडेजी और मैं मुख्य थे। मिर्जा इस्माइल की नीति के कारण अधिक करने की गुजाइश नही थी फिर भी सघ के कायकर्ताओं और विद्यार्थियो ने आन्दोलन को आगे बढ़ाया। इस अवसर पर भी चरखा सघ के ५० कायकर्ता गिरफ्तार हुए।

आजादी के बाद अखिल भारतीय चर्खा-सघ का विकेन्द्रीकरण हुआ। आल इण्डिया खादी कमीशन बना। जिससे केन्द्रीय सरकार न खादी और ग्रामोद्योगा को विकसित किया। राजस्थान म भी अलग-अलग स्वतत्र सस्थायें बनी जिसम राजस्थान खादी सस्था सघ खादी बाग-चौमू, 'उद्योग मदिर आमेर खादी विकास मडल गोविन्दगढ' और 'केन्द्रीय सर्वोदय स० सघ आदि प्रमुख है। साथ ही अनेक छोटी २ सस्थायें व सहकारी समितियाँ बनी।

सरकारी स्तर पर काम करने के लिये राजस्थान खादी ग्रामोद्योग बोर्ड की स्थापना हुई। सस्थाओ को सलाह देने और सुविधा प्राप्त कराने के लिये 'सस्था सघ बना। अ भा खा कमीशन' ने अपने काय व रुपयो की सभाल के लिये प्रान्तीय शाखा खोली। इस प्रकार ये तीना ही, सस्थाओ के सलाह सहयोग व आर्थिक विकास के क्षेत्र म अपने अपने तरीके म काम कर रही हैं। इस समय प्रान्त म १५ बडी सस्थायें और ५० छोटी सस्थायें खादी का काम कर रही हैं और करीब १००० सहकारी समितिया ग्रामोद्योगा मे लगी है। करोडो रुपया का माल बनाया और बेचा जाता है। ऊनी कपडा भी कई करोड का बनता हैं। बीकानेर की कार्टिग जर्सी, जुराब आदि माल इतना बढिया बनने लगा है कि कश्मीरी माल से टक्कर लेता है। सेना के लिये कबल भी तैयार करके भेजे जाते हैं। इस प्रकार सूती कपडे, ऊनी कपडे तथा तेल चमडा साबुन आदि कार्यों के द्वारा लाखो को रोटी मिल रही है और ये सस्थायें आज भी आर्थिक विकास व नवीन समाज रचना म लगी हैं।●

> जमनालालजी राजनतिक मतभेदो को दूर कराने म लगे थे। पथिकजी से लम्बी बात की, पर म जानता था कि पथिकजी अपने विचारो से टस से मस न होंगे। मने उनसे कहा, 'आप क्यों पत्थर से सिर टकराते हैं कुछ होने वाला नहीं है, म काफी बात कर चुका हूँ।' वे बोले, "बात केवल मे सद्धान्तिक मतभेद की नहीं है। लगता है उन्हे मुझ से कोई व्यक्तिगत शिकायत है। म उसे दूर करना चाहता हूँ। म किसी को अपना शत्रु नहीं मानता, म नहीं चाहता कि कोई मुझे अपना शत्रु समझे।" मेरे हृदय मे मानो बिजली चमक गयी हम किसी से शत्रुता न रखें, इतना ही काफी नहीं ह ऐसी स्थिति बनावें कि हमें कोई शत्रु न समझे।
>
> —हरिभाऊ उपाध्याय

रामकृष्ण बजाज

# ग्रामदान आन्दोलन

राजस्थान म ग्रामदान की शुरुग्रात १६६० म जब ग्राचाय विनोबाजी का यहा दौरा हुग्रा उस समय हुई थी। खास तौर स डूगरपुर, नागौर ग्रौर जयपुर जिले म ग्रधिक काम हुग्रा था। गत सितम्बर म जब से ग्राचाय विनोबाजी ने ग्रामदान तूफान का नारा लगाया तब से सार देश मे ग्रामदान के काय को गति मिली ग्रौर एक ग्रलग ही हवा वहने लगी। निराशा म से ग्राशा जगी। ग्रामदानो की सख्या बढन लगी। देखत देखते २३ हजार से ऊपर सख्या पहुँच गई। ३० से ऊपर प्रखण्ड दान हो गये। यहा तक कि जिला दान की भी चचा होने लगी। जन सहयोग से कितना भारी काम हो सकता है उसका यह नमूना है। ग्राचाय विनोबाजी ने जब तूफान का नारा दिया उस समय कतई उम्मीद नही थी कि इस प्रकार का तूफान उठेगा ग्रौर ग्रकेले बिहार प्रात मे १० हजार के करीब ग्रामदान कर सकेंगे। जितना जोश हविस बिहार म है करीब उतना ही ग्रनेक दिक्कता के होते हुए भी उत्कल मे है। तमिलनाड मध्य प्रदेश ग्राध्र राजस्थान ग्रादि प्रदेशो में भी तेजी बढती जा रही। विनोबाजी कहते हैं कि ग्राज तक हमने छुट पुट ग्रामदान तो लिये। उसमे वह ग्राबोहवा नही बनती जो प्रखण्ड या जिलादान से बनेगी। उनके विचार से देश की भीतरी ग्रधिकाश समस्याग्रो का हल ग्रामदान म है। इससे उत्पादन बढेगा, गावो की ग्रखण्डता टिकेगी भ्रष्टाचार घटेगा ग्रौर ग्रापसी झगडे एव चुनावो के झगडे भी कम होगे। वसे दोनो तरह के लोग सवत्र मिलेंगे। एक कहता है ग्रामदान फिजूल है उससे कुछ नही बनेगा ग्रौर दूसरा कहता है कि देश की कठिनाईयो का हल ग्रामदान म ही है। ग्रब हम देखें कि हमारा ग्रनुभव क्या कहता है?

हम लोग जब गाँवो म ग्रामदान की बात करन के लिये जाते हैं तो यह देखा कि सबसे पहले ग्राकषण उन्हें इस बात से होता है कि पचायतो के चुनावो के झगडे स बचेंगे। दूसरी खुशी इस बात से होती है कि पटवारी के फन्दे स छूटेंगे। गावो म जमीनो के ग्रधिकाश झगडे इन्ही पटवारियो की देन होते हैं। जो ग्रामदानी गाव हुए हैं उनम यह भी देखा कि ग्रापसी झगडे ग्रापस म ही मिटाने की प्रवृति जगती है। हाल ही म नीमका थाना के एक नग्रोडी गाव के लोगो ने दूसरे गाव म जाकर वहा के भी झगडे मिटाये। हमारे ख्याल म ग्रामदान म सबसे बडी खूबी यह है कि ग्राम का ग्रस्तित्व बनता है। ग्राज तक एसी कोई योजना नही है जिसम पूरे गाव के लोगो की तरफ से प्रतिनिधित्व होता हो। ग्राम सभा बनने के बाद सरकार से

सम्बन्ध व्यक्तियो के कम होंगे और ग्राम सभा के बढते जायेंगे। जो स्थिति सरकार के साथ होगी वही आगे जाकर अन्य व्यवहारो मे भी हो जायगी। नतीजा यह होगा कि पूरा गाव, गाव के भले-बुरे के बारे में सोचने लगेगा। स्वावलम्बन के लिये नया रास्ता खुल जायगा। सरकार की विकास योजनाओ के लिए ग्रामदानी गाव अधिक अनुकूल हो सकते हैं। क्योकि उनमे मिलकर काम करने की भावना अन्य गावो के मुकाबले अधिक होगी। मिलकर काम करने की भावना आये बिना ग्रामदान होता भी नही।

ग्रामदान की योजना मे यह खूबी है कि उसमे गाव के सबसे नीचे के स्तर के लोगो के लिये जैसे निसहाय, बेकार, विधवा, बीमार आदि सबकी चिन्ता का एक साधन मौजूद है जो कि अभी तक किसी योजना मे नहीं आया। ग्रामदान की योजना से ग्राम एक यूनिट बन जाता है। उसमे उसको अपने भले-बुरे का सोचने का और करने का मौका मिलता है। ग्रामदान मे सर्वसम्मति या सर्वानुमति से निर्णय करने की योजना होने के कारण चुनावो के झगडे कम रहेगे। इस प्रकार कानूनी ग्रामदान घोषित होते ही इतनी बातें सहज रूप मे हो जाती हैं। इससे अधिक प्रगति वहा के निवासियो पर मुनस्सर रहेगी इन सारी अनुकूलताओ का लाभ उठा कर यदि निर्माण काय मे लगा जाय तो काफी आगे बढा जा सकता है। जयपुर जिले मे एक ग्रामदानी गाव है जिसका नाम जयप्रकाशपुरा है उसमे लोगो ने काफी उत्पादन बढा लिया है और उनकी खेती भी बहुत अच्छी होती है। एकाध घर छोडकर बाकी सबके पक्के घर बन गये हैं। राजस्थान मे ग्रामदान के आँकडे इस प्रकार हैं —

— राजस्थान भूदान बोर्ड, जयपुर —

( जुलाई '६६ तक )

| क्रमाक | नाम जिला | सख्या ग्रामदानी गाव | क्रमाक | नाम जिला | सख्या ग्रामदानी गाव |
|---|---|---|---|---|---|
| १ | जयपुर | ६३ | २ | टोक | ६ |
| ३ | सीकर | २६७ | ४ | सिरोही | ४६ |
| ५ | नागोर | ३६ | ६ | चित्तौड गढ | ७४ |
| ७ | उदयपुर | ८८ | ८ | भीलवाडा | ६ |
| ९ | डूगरपुर | २७५ | १० | बासवाडा | ४२ |
| ११ | कोटा | ८ | १२ | जैसलमेर | ३ |
| १३ | सवाईमाधोपुर | २ | १४ | अलवर | १ |
| | | | | योग — | ६५३ |

२ अक्टूबर
१९५९ का
पडित नहरु
ने
लोकतत्र की
नीव
डाल कर
जन जन
म
ज्ञान की ज्योति
प्रज्वलित
की
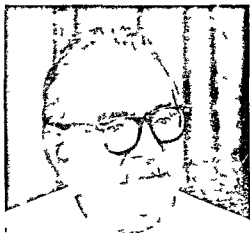
सुप्रसिद्ध विद्वान एव राजस्थान के वतमान
राज्यपाल डा० सपूर्णानन्द

राजस्थान के निमाता और प्रेरणा स्रोत

सरदार पटेल एव पडित नहरू

पोलो के प्रसिद्ध खिलाडी,
महाराजा सवाई मानसिंह जी
आजकल स्पेन मे भारतीय
राजदूत है पडित जी के साथ

सम्बन्ध व्यक्तियो के कम होगे और ग्राम सभा के बढते जायेंगे । जो स्थिति सरकार के साथ होगी वही आगे जाकर अन्य व्यवहारो म भी हो जायगी । नतीजा यह होगा कि पूरा गाव, गाव के भले-बुरे के बारे में सोचने लगेगा । स्वावलम्बन के लिये नया रास्ता खुल जायगा । सरकार की विकास योजनाओं के लिए ग्रामदानी गाव अधिक अनुकूल हो सकते है । क्याकि उनम मिलकर काम करने की भावना अन्य गावो के मुकाबले अधिक होगी । मिलकर काम करने की भावना आये बिना ग्रामदान होता भी नही ।

ग्रामदान की योजना म यह खूबी है कि उसमे गाव के सबसे नीचे के स्तर के लोगो के लिये जसे नि सहाय, बेकार विधवा बीमार आदि सबकी चिंता का एक साधन मौजूद है जो कि अभी तक किसी योजना मे नहीं आया । ग्रामदान की योजना से ग्राम एक यूनिट बन जाता है । उसम उसको अपने भले-बुरे का सोचने का और करन का मौका मिलता है । ग्रामदान म सवसम्मति या सर्वानुमति से निणय करन की योजना होने के कारण चुनावो के झगडे कम रहगे । इस प्रकार कानूनी ग्रामदान घोषित होत ही इतनी बातें सहज रूप म हो जाती हैं । इसस अधिक प्रगति वहा के निवासियो पर मुनस्सर रहेगी इन सारी अनुकूलताओं का लाभ उठा कर यदि निर्माण काय मे लगा जाय तो काफी आगे बढा जा सकता है । जयपुर जिले मे एक ग्रामदानी गाव है जिसका नाम जयप्रकाशपुरा है उसमे लोगा ने काफी उत्पादन बढ़ा लिया है और उनकी खेती भी बहुत अच्छी होती है । एकाध घर छाडकर बाकी सबके पक्के घर बन गये हैं । राजस्थान म ग्रामदान के आकार इस प्रकार हैं —

— राजस्थान भूदान बोर्ड, जयपुर —
( जुलाई '६६ तक )

| क्रमाक | नाम जिला | सख्या ग्रामदानी गाव | क्रमाक | नाम जिला | सख्या ग्रामदानी गाव |
|---|---|---|---|---|---|
| १ | जयपुर | ६३ | २ | टोंक | ६ |
| ३ | सीकर | २६७ | ४ | सिरोही | ४६ |
| ५ | नागोर | ३६ | ६ | चित्तौड गढ | ७४ |
| ७ | उदयपुर | ८८ | ८ | भीलवाडा | ६ |
| ६ | डूगरपुर | २७५ | १० | बासवाडा | ४२ |
| ११ | कोटा | ८ | १२ | जैसलमेर | ३ |
| १३ | सवाईमाधोपुर | २ | १४ | अलवर | १ |
| | | | | योग — | ८५३ |

२ अक्तूबर
१६५६ को
पडित नहरु
ने
लोकतत्र की
नाव
डाल कर
जन जन
मे
नान की ज्योति
प्रज्वलित
की

सुप्रसिद्ध विद्वान एव राजस्थान के वतमान
राज्यपाल डा० मपूर्णानन्द

राजस्थान के निर्माता और प्रेरणा स्रोत
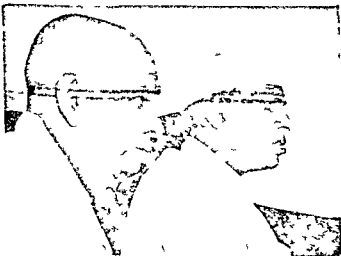
सरदार पटन एव पडित नहरू

पाना व प्रसिद्ध खिनाडी,
महाराजा सवाई मानसिंह जी,
आजकल स्पेन म भारतीय
राजदूत ह पंडित जी क साथ
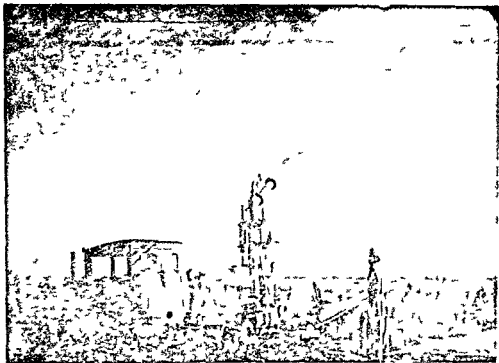
सूरतगढ़ फार्म

जयपुर का सुप्रसिद्ध जन्तर मन्तर

मरुभूमि में लहलहाती खेती आशा उल्लास और उत्साह से भर देती है।

श्री० बरकतुल्लाह खा

श्री० निरजननाथ आचार्य

श्री० रामप्रसाद लढ्ढा

श्री० रामनिवास मिर्धा

श्री० कुमाराम आर्य

श्री० बालकृष्ण कौल

श्री० चंदनमल बैद

श्री० दामोदर लाल व्यास

श्री० हरिदेव जोशी

श्री० बृज सुन्दर शर्मा

श्री० नाथूराम मिर्धा

श्री० मथुरादास माथुर

श्री० अमृतलाल यादव

# उज्जवल भविष्य की ओर

कृषि एवं कृषि-सम्बन्धित अन्य उद्योगों के विकास के द्वारा ग्रामीण अर्थ व्यवस्था को सुदृढ़ आधार प्रदान करना तथा समाज शिक्षा एवं युवक-मंडल, महिला-मण्डल आदि संस्थाओं के गठन द्वारा जीवन की समस्याओं के समाधान के प्रति ग्रामीणों में तत्परता उत्पन्न करना, इस कार्यक्रम का प्रमुख ध्येय था।

**योजना का पहला दौर —**

प्रथम पंचवर्षीय योजना के आरम्भ में राजस्थान का किसान खेती के उन्नत तरीकों से पूर्णतः अनभिज्ञ था। खेती के नये औजारों को काम में लेने में उसे झिझक थी, रासायनिक खाद के प्रयोग से वह कतराता था। किन्तु प्रथम पंचवर्षीय योजना की अवधि में इस कार्यक्रम के अन्तर्गत कुल ८५ हजार मन से भी अधिक रासायनिक खाद किसानों में वितरित किया गया, एक लाख तिरानवे हजार मन उन्नत बीज बांटा गया और १० हजार से भी अधिक खेती के उन्नत औजार किसानों को दिये गये। यह सब इस लिए सम्भव हो सका कि किसानों के खेतों पर इन वैज्ञानिक विधियों का प्रदर्शन किया गया और उन्हें इस की सफलता से आश्वस्त किया गया। प्रथम योजना की अवधि में कुल ३० हजार खेतों में प्रदर्शन आयोजित किये गये थे।

इस अवधि में कुल ३७६ एकड़ पड़ती भूमि को कृषि-योग्य बनाया गया और सूखी धरती की प्यास बुझाने के लिए ६,५८६ सिंचाई के नये कूओं का निर्माण किया गया।

आर्थिक विकास के कार्यक्रमों के साथ साथ सामाजिक अभ्युदय की प्रवृत्तियों का भी संचालन किया गया। पीने के पानी की समस्या थी इस लिए गांवों में लगभग दो हजार पीने के पानी के कूओं का निर्माण किया गया। ग्रामीणों में साक्षरता का प्रसार करने व उन्हें नित्य नवीन जानकारी प्राप्त कराते रहने के उद्देश्य से ७८० वाचनालय तथा पुस्तकालय ग्रामीण क्षेत्रों में स्थापित किये गये।

सामुदायिक विकास-कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रथम पंच वर्षीय योजना की अवधि में १२१.३८ लाख रुपये का जन सहयोग प्राप्त हुआ था, जब कि द्वितीय योजना की अवधि में सहयोग की मात्रा बढ़ कर ५४८.४६ लाख हो गई थी।

**दूसरी योजना की अवधि में —**

ग्रामीणों में कृषि के उन्नत साधनों के प्रति जागरूकता दिनों-दिन बढ़ती गई और दूसरी योजना की अवधि में ५ लाख ४४ हजार मन रासायनिक खाद २० लाख २७ हजार मन उन्नत बीज और ९६ हजार खेती के सुधरे औजार किसानों में वितरित किये गये। उन्नत कृषि पद्धति के व्यावहारिक प्रशिक्षण के लिए १ लाख १६ हजार से भी अधिक प्रदर्शन खेतों पर आयोजित किये गये।

खेती के साथ पशु पालन का धंधा भी राज्य के किसानों की आजीविका का मुख्य साधन है। इस लिए पशुओं की नस्ल सुधारने के लिए लगभग ६ हजार उन्नत नस्ल के पशु वितरित किये गये।

लघु सिंचाई में वृद्धि करने के उद्देश्य से ३३ हजार से अधिक सिंचाई के नये कुओं का इस अवधि में निर्माण किया गया तथा १,६५,८८० एकड़ अतिरिक्त भूमि को सिंचाई के साधन उपलब्ध किये गये।

तीसरी याजना का ता ढाचा ही मूल-रूप से ग्राम पचायत द्वारा तयार की गई ग्रामीण याजनाग्रा के ग्राधार पर बनाने का प्रयत्न किया गया था। यद्यपि यह ग्रारम्भिक प्रयास था ग्रौर गावा के साधना का व्यापक सर्वेक्षण समय चाहता था। ग्रत इस प्रयास मे उतनी सफलता नहा मिली, पर ग्रामो का स्वतन्त्र उत्पादन-कायक्रम तैयार कर, उस कार्यान्वित करने की एक नई दिशा इस से ग्रवश्य मिली।

तीसरी योजना की ग्रवधि मे कृषि की उन्नत पद्धतियो का ग्रौर भी व्यापक प्रचार हुग्रा है ग्रौर इस ग्रवधि मे ३१ माच, १९६५ तक २८ लाख मन से भी ग्रधिक उवरक ग्रौर ४२ लाख मन उन्नत किस्म के बीज वितरित किये जा चुके हैं। खेती के उन्नत तरीका का जब तक किसाना को व्यावहारिक प्रदशन नहीं किया जाता, उनका ग्रपनाने मे सकोच करना स्वाभाविक है। ग्रत खेता पर प्रदशन ग्रायोजित करने पर ग्रब ग्रधिक बल दिया जा रहा है। इस ग्रवधि म ९२,४०८ प्रदशन ग्रायाजित किय गये। इन से किसान नये ग्रौजारा की ग्रार ग्रधिक ग्राकृष्ट हुए हैं ग्रौर उन्हें ३ १६ लाख सुधरे ग्रौजार वितरित किये जा चुके हैं। ५५ हजार से भी ग्रधिक सिंचाई के कूग्रा का निमाण किया गया है ग्रौर ५ लाख एकड ग्रतिरिक्त भूमि की सिंचाई सुलभ हो सकी है।

चतुथ पचवर्षीय याजना का निर्माण इन दिना म चल रहा है ग्रौर उस वास्तविक रूप मे गावा की याजना के ग्राधार पर तयार करने का प्रयत्न किया जा रहा है। पचायत-समितिया कृषि-उत्पादन का सर्वोच्च प्राथमिकता देन की दृष्टि से ही ग्रपनी चतुर्थ पचवर्षीय योजना तैयार कर रही हैं। इन योजनाग्रा के निर्माण मे ग्रामीण जनता का भी पूरा समथन लेन का प्रयत्न किया गया है ग्रौर इन याजनाग्रा की ग्राधारभूत बातें ग्राम पचायत की ग्राम-सभाग्रा से ग्रनुमोदित हैं। पचायत-समितिया द्वारा निर्मित योजनाग्रा का सकलन जिला स्तर पर किया जा रहा है ग्रौर उन के ग्राधार पर जिले की चतुथ पचवर्षीय याजना की रूप-रेखा तैयार की जा रही है।

**चरम परिणति पचायती राज —**

राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्रा म उन्नत जीवन-यापन की जा लालसा इस कायक्रम द्वारा जागृत की गइ, उस की चरम परिणति २ ग्रक्टूबर १९५९ का पचायती राज की स्थापना म हुई। राजस्थान म इस कायक्रम के ग्रारम्भ की एक प्रमुख विशेषता यह थी कि यह सारे राज्य म एक साथ लागू किया गया ग्रौर इस प्रकार जा क्षेत्र सामुदायिक विकास-कायक्रम के ग्रन्तगत उस समय नहीं ग्राय, थे उन्ह भी ग्रपना विकास करने का ग्रवसर प्राप्त हुग्रा।

पचायती राज की त्रिस्तरीय योजना के ग्रधीन ग्रब तक दा बार पचायता के ग्राम चुनाव हा चुके हैं। ग्रभी हाल ही के चुनावा म जनता का उत्साह इतना ग्रधिक रहा है कि कहीं कही ता ९५ प्रतिशत तक मत-दान हुग्रा है। ७,३८८ पचायता म से ३ पचायता म महिलाए सरपच के पदो पर चुनी गई तथा ३ महिलाए प्रधान के पदा पर निर्वाचित हुई हैं। लगभग ३० प्रतिशत सरपच निर्विराध निर्वाचित हुए हैं। २३२ प्रधाना म स ७६ प्रधान पुन निर्वाचित किय गय हैं तथा १४ प्रधान निर्विराध चुन गये हैं। इस

प्रकार राज्य के २६ जिला-परिषदों के प्रमुखों में से १७ का पुन निर्वाचन किया गया है तथा ४ प्रमुख निर्विरोध चुने गये हैं।

इन चुनावों मे जिस प्रकार जनता ने रुचि प्रदर्शित की, उस से पचायती राज के उज्ज्वल भविष्य के प्रति आस्था और भी सबल होती जा रही है।

पचायती राज राजस्थान के लिए एक नई बात थी इसलिए इस के सचालन के विषय मे राज्य-सरकार जहा एक ओर सतक एव जागरूक थी, वहा दूसरी ओर लोगो म इस के परिणामो के प्रति उत्सुकता भी बहुत थी। राज्य सरकार ने इस कायक्रम के सचालन का अध्ययन कर इस म और भी सुधार करने के उद्देश्य से सुझाव देने के लिए ससद-सदस्य श्री० सादिक अली की अध्यक्षता म एक दल की नियुक्ति की थी, जिस ने अपने महत्वपूर्ण सुझाव राज्य-सरकार को दे दिये हैं। राज्य-सरकार द्वारा उन म से कुछ तो स्वीकार कर लिए गये हैं और कुछ अभी विचाराधीन हैं।

ग्रामदानी गावो के भी पचायती राज सस्थाओ म प्रतिनिधित्व करने की व्यवस्था की गई है और अब ग्रामदानी गावो के प्रतिनिधियो को भी पचायत-समिति म प्रतिनिधित्व प्राप्त है।

राजस्थान म पचायती राज सस्थाओ का कितना महत्व है, यह इसी तथ्य से आका जा सकता है कि चालू वर्ष मे विभिन्न कार्यों के लिए इन सस्थाओ के माध्यम से लगभग १६.७१ करोड रु० स भी अधिक की राशि व्यय की जायगी, जब कि गत-वर्ष कुल १६.५८ करोड रुपये इन सस्थाओ को विकास-कार्यों के लिये दिये गये थे।

ग्रामीण क्षेत्रो तथा ग्राम-सेवको मे स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना के विकास की दृष्टि से सदा की भाति इस वर्ष भी ग्राम एव ग्रामसेवक प्रतियोगिता का आयोजन किया गया और उस मे राज्य स्तर पर सीकर जिले की नीम का थाना पचायत-समिति के ग्राम-सेवक श्री नन्दलाल विजारणिया को सर्व-श्रेष्ठ ग्राम-सेवक घोषित किया गया। इसी प्रकार बूदी जिले की तालेडा पचायत समिति के जमीतपुरा ग्राम को इस वर्ष का सर्व श्रेष्ठ ग्राम होने का गौरव प्राप्त हुआ है।

नये नेतृत्व का उद्भव —

पचायती राज ने विकास की अपनी योजनाओ को कार्यान्वित करने की दायित्व पूर्ण चुनौती अब ग्रामीणो को दी है और कहने की आवश्यकता नहीं कि राज्य के दो करोड ग्रामवासियो ने इसे स्वीकार कर लिया है। पचायती राज सस्थाए इन योजनाओ को पूरा करने के लिए अपने साधन जुटा रही हैं और अब तक ४२।। लाख रुपये के कर इन सस्थाओ द्वारा लगाये जा चुके है। इस के अतिरिक्त उत्पादन द्वारा भी आय-वृद्धि के प्रयत्न इन सस्थाओ द्वारा किये जा रहे है। इस कायक्रम से गावो मे एक नये नेतृत्व का भी उदय हुआ है जो आगे जा कर समृद्ध भारत के निर्माण मे सक्रिय योग देगा।o

# श्रमिक प्रगति की ओर

एकीकरण से पूव राजस्थान कई इकाइयो मे वटा हुआ था और श्रम विभाग नाम मात्र का था। कुछ राज्या का छोड कर कहीं भी श्रम कानून प्रचलित नही थे। और न उनको लागू करने का कोई प्रयत्न किया गया था। यही नही राजस्थान के कई राज्या मे मनुष्यो को दास के रूप मे खरीदे जाने और गुलामो की तरह काम लेने की प्रथा प्रचलित थी।

समय बदला, समाज म एक क्रान्ति आयी, देश स्वतन्त्र हुआ और गुलामी तथा दास प्रथा सदा के लिये समाप्त हो गई। स्वाधीनता के तुरन्त बाद श्रमिका की दशा को सुधारन के लिए राज्य सरकार ने कई कदम उठायें। सबसे प्रमुख काय श्रम विभाग का पूरा रूपेण सगठन करना था। राज्य के प्रमुख औद्योगिक सस्थाना म श्रम अधिकारी नियुक्त किये गये जो औद्योगिक झगडा म समझौता कराने तथा श्रमिक कानूना का पालन कराने के लिये जिम्मेदार बनाये गय। केन्द्रीय सरकार द्वारा बनाये गय श्रम कानून जसे-फैक्ट्रीज एक्ट, माईस एक्ट, औद्योगिक विवाद अधिनियम आदि राज्य म लागू किय गये तथा उनके अन्तगत अधिकारी नियुक्त किये गय। इन कानूनो से श्रमिका को सामाजिक न्याय व कुछ विशेष अधिकार प्राप्त हुए इनम काय करने के अधिकार, उचित मजदूरी, काम करने व रहने की मानवीय स्थिति, बीमारी एव चोट आदि लगने को सहायता आदि का समावेश था।

सबसे प्रथम तीन श्रम कल्याण केन्द्र १९५४-५५ म प्रारम्भ हुए जिस के लिय केवल २१ हजार रुपय का प्रावधान था। आज राज्य मे २९ श्रम कल्याण केन्द्र काय कर रहे हैं जिन पर लगभग ४ लाख रुपय साल व्यय होता है। इन श्रम कल्याण केन्द्रो म श्रमिका के मनोरजन, प्रौढ शिक्षा वाचनालय, पुस्तकालय, सगीत शिक्षा, खेल कूद, सिलाई शिक्षा आदि का प्रबन्ध है। अभ्रक खाना के लिए अलग से कल्याण निधि की व्यवस्था की गई जिसके लिय धन राशि का प्रबन्ध अभ्रक पर एक विशेष कर लगाकर किया गया है। इस राशि से अभ्रक खान क्षेत्र मे कई मनोरजन केन्द्र, अस्पताल तथा शिक्षण केन्द्र खोले गय हैं।

श्रम कल्याण का एक महत्वपूर्ण पहलू निवास गृहो की व्यवस्था करना है। श्रमिक अधिकतर गन्दी बस्तिया तथा मालिका द्वारा बनाय गय गन्दे मकाना मे रहते थे। राज्य सरकार न श्रमिका के लिये अच्छे मकाना की आवश्यकता का महसूस किया और औद्योगिक गृह निर्माण योजना सन् १९५५ ५६म प्रारम्भ की।

अब तक इस योजना के अन्तगत राज्य सरकार द्वारा २४०० मकान बनाये गय है जिन पर लगभग १ करोड रुपया व्यय हुआ है। इसके अतिरिक्त मालिका तथा सहकारी समितिया का ऋण व सहायता दकर लगभग १६०० मकान बनाये गये है। श्रमिका को उचित मजदूरी दिलाने के लिए न्यूनतम वतन रु० ४५) माहवार या रु० २.३१ प्रतिदिन निश्चित कर दिया है जो देश के अन्य राज्यो म प्रचलित न्यूनतम वेतन से कहीं अधिक है। सगठित उद्योगा म जहां-जहा वतन बोड केन्द्रीय सरकार द्वारा बनाये गये थे जसे-सूती कपडा, शक्कर तथा सीमट उद्योगा म, वहा वहाँ श्रमिका का इन वेतन बोर्डों की सिफारिशा के अनुसार मजदूरी तथा अन्य सुविधायें मिल रही हैं।

मँहगाई भत्ते बढने के साथ साथ श्रमिका द्वारा मँहगाई भत्त तथा वेतन बढाने की माग होना स्वाभाविक था। राज्य सरकार न मँहगाई भत्ते को उपभोक्ता मूल्य सूचनाक से सम्बन्धित करने के लिय राजस्थान विश्वविद्यालय के वतमान उपकुलपति प्रोफेसर एम० वी० माथुर की अध्यक्षता मे एक समिति बनाई जिसस इस प्रश्न पर राज्य सरकार का प्रतिवेदन प्रस्तुत करने को कहा गया। इस समिति की सिफारिशो के आधार पर राज्य सरकार ने मँहगाई भत्ते को मूल्य सूचनाका से सबन्धित करने क प्रश्न का सिद्धान्त स्वीकार कर लिया है। सम्भवत भारत म यह पहला राज्य है जहाँ राज्य स्तर पर इस महत्वपूर्ण प्रश्न पर निर्णय लिया गया है। यह निर्णय न केवल निजी उद्योगा पर लागू होगा वरन् राजकीय क्षेत्र पर राज्य कमचारियो के लिये भी सिद्धान्त स्वीकार कर लिया गया है।

श्रमिका की सुरक्षा के सम्बन्ध मे सबसे बडा कदम सामाजिक बीमा योजना का प्रारम्भ है जो कमचारी बीमा कानून के द्वारा लागू होगा। इस कानून के अन्तगत बीमारी प्रसवकाल तथा काम करते समय चोट की दशा मे नगदी सहायता और चिकित्सा की व्यवस्था श्रमिका के लिये की गई है। काम करत समय चोट लगन स अगर किसी श्रमिक की मृत्यु होजाती है तो उसके आश्रिता का नगदी सहायता भी दी जाती है। यह कानून सभी श्रमिक सस्थानो पर लागू कर दिया गया है। इसके अन्तगत १८ डिस्पेन्सरी काय कर रही हैं। कुछ श्रमिक स्थाना पर अस्पताल भी बनाये जा रहे हैं। इस योजना क अन्तगत लगभग डेढ लाख स अधिक श्रमिक तथा उनके परिवार के सदस्य लाभ उठा रहे हैं।

सामाजिक सुरक्षा की ओर एक और महत्वपूर्ण कदम कमचारी प्रोविडेन्ट फन्ड योजना है। यह योजना १ नम्बर, १९५२ से प्रारम्भ की गई थी। इस योजना स श्रमिका को काम से मुक्त होन पर बुढापे म कुछ न कुछ धन सुरक्षित रूप से मिलता रहता है। अब इस योजना से अस्थाई बेरोजगार होने वाले व्यक्तियो को भी सहायता मिलने की योजना विचाराधीन है।

श्रमिको को उनकी जिम्मेदारी तथा अधिकारो का ज्ञान करने के लिये श्रमिक शिक्षा योजना को लागू किया गया है। इसका केन्द्र भीलवाडा म खोला गया है जिसम श्रमिक शिक्षको को शिक्षा दी जाती है। जसे-जसे शिक्षा का कायक्रम आगे बढेगा श्रमिक और अधिक आत्मनिर्भर और काय कुशल होंगे।

समाजवादी प्रजातन्त्र मे श्रमिक राष्ट्रीय विकास के काम मे साझेदार हैं और उन्हे उत्साह पूवक इसमे भाग लेना चाहिए। श्रमिको व कारीगरो को जहा भी हो सके अधिक स अधिक रूप म शामिल करने के

लिये कई उद्योगो म सयुक्त प्रबन्ध परिषदा का निमाण करना चाहिये। ऐसी परिषदो के बनान से उद्योगो की उत्पादन क्षमता वढने और उनकी सर्वांगीण उन्नति के सम्बन्ध मे उन्ह अपनी राय प्रकट करने का मौका मिलता है।

आपसी बातचीत और सलाह मशविरे की प्रणाली का एक और अच्छा उपयोग उत्पादन बढाने के लिए देश मे किया गया है। चीनी आक्रमण व पाकिस्तानी आक्रमण के समय विशेष रूप से श्रमिको तथा मालिको द्वारा यह सकल्प किया गया था कि वे उत्पादन बढाने के लिये मिल-जुलकर प्रयत्न करेंगे और श्रम, मशीन तथा माल के पूर्ण और सही उपयोग करन म कोई रुकावट नहीं आन देंगे। यह प्रसन्नता की बात है कि सकटकालीन स्थिति म श्रमिका म सहयोग और जिम्मेदारी की भावना का विकास हुआ। राजस्थान म लगभग ५१ कारखाना मे इस प्रकार की समितिया बनी जिनके द्वारा कई कारखानों म उत्पादन के निर्धारित लक्ष्या का प्राप्त करने म सहायता मिली है।

आपसी बातचीत की दिशा मे एक और कदम यह उठाया गया है कि मतभेदा का दूर करने के लिये अधिक से अधिक रूप म पच फैसला को अपनाया जाय। पचफसले के सिद्धान्त को अधिक से अधिक अपनाने का प्रयत्न किया जारहा है। राज्य सरकार न श्रम कल्याण के जो काय किये है उनस राज्य म श्रमिको के हिता और अधिकारो की रक्षा हुई है।

सीमाग्रा पर खतरा होन के कारण हमे दृढ निश्चय से आगे बढना है। श्रमिको म देश भक्ति की भावना की प्रचुरता है, समाज के प्रति अपन उत्तरदायित्व का ज्ञान है। यदि हम श्रमिको के हिता का पूरा ध्यान रखकर काय करते रहेगे तो हमारे श्रमिक देश की सुरक्षा और विकास के अपने उत्तरदायित्व को पूरा तरह स निभायेंगे।●

राजाओं के शासन की समाप्ति, सामन्तशाही का अत और समाजवादी निर्माण की प्रक्रिया का आरम्भ, इतिहास के ये तीनों ही परिच्छेद एक ही पीढ़ी लिखे, ऐसे अवसर कम ही आते हैं। राजस्थान के जीवन मे ऐसा ही अवसर आया है। यह सौभाग्य भी है और चुनौती भी।

मेघराज "मुकुल"

# धरती रो सिणगार

खड्या-खड्यो ललकारू थानै, सुपने रा ससार !
देखू म्हारी धरती रो अब, कुण लेवै सिणगार !!

माटी री मीठी सौरम म, बीज भीजग्या सारा !
कू पल रै उजलै होठा पर लुक-छिपग्या अधियारा !!
हेलो मारे आज रूखडा छइया भी मुस्काव
नई जीवणी री बाणी म, बिरखा भिर मिर गाव !!
आज उदासी रा बादल तो चल्या गया उण पार !
देखू म्हारी धरती रो अब, कुण लेवे सिणगार !!

बढ्यो जमानो आगै आगै, पाव पडैना पाछो !
सिरल-मिरल सै हुया सूगला, चिमकै आछो-आछो !!
दीपक घर घर बुझग्यो, किरणा नयो चानणो ल्याई—
धरती री करडी काया पर, करसै ली अगडाई !!
कान खोल के सुण ल्यो अब तो, धरती री हुकार !
देखू म्हारी धरती रो अब, कुण लेवै सिणगार !!

बाजण लागी पजणियाँ, बिजली अब घूमर घाले !
खेतां र गले पर हाली, मदरो-मदरो चालै !!
कद पिछाडी, कदै अगाडी, डगमग पग सरकावै !
काधे ऊपर जेली धरके, तेजो टेर सुणाव !!
बाह पकड के सागै सागै, चलै मुलकतो प्यार !
देखू म्हारी धरती रो अब, कुण लेवै सिणगार !!

चाद और तारा सू भरियो, मौज कर गिगनार !
किरणा लियाँ चान्णी गाव, गीत दूधियाधार !!
सुगण मनावै, पिया रिझाव, रातडली मैं नार—
साँझ सवेरे भवरा मिणक, भीणी सी झकार !!
समझ गया म्हे धरा बताव, जीवण रो आधार !
देखू म्हारी धरती रो अब, कुण लेवै सिणगार !!

राम सिंह

# राजस्थान में योजनाबद्ध विकास

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पूर्व ही यह अनुभव कर लिया गया था कि आर्थिक विकास के बिना राजनैतिक स्वतन्त्रता का विशेष महत्त्व नही है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात इस विचार को कार्य रूप म परिणित करने के उद्देश्य से योजनाबद्ध विकास के दवारा भारत के आर्थिक विकास का लक्ष्य निर्धारित किया गया। आर्थिक पिछड़ेपन की समस्या वसे तो सभी राज्यों म विद्यमान थी, परन्तु हमारे राज्य म एक और समस्या यह थी कि विभिन्न प्रकार के शासन तन्त्र म बद्ध तत्कालीन राज्यों म शासन पद्धति की समानता न थी। वित्तीय सामजस्य भी इन रियासतो म कम था। शांति एवं न्याय की व्यवस्था भी पूर्णता से कहीं दूर थी। राज्य आर्थिक दृष्टि से बहुत पिछड़ा हुआ था। गरीबी भयंकर रूप म विद्यमान थी। जिस समय देश के अन्य राज्य प्रथम पचवर्षीय योजना का उपयोग अपने आर्थिक विकास के लिये कर रहे थे, उस समय राजस्थान मे विभिन्न प्रकार की शासन प्रणालियों को एक सूत्र में बाधने के एव राज्य को वित्तीय दृष्टि से सुदृढ बनाने के प्रयास किये जा रहे थे। प्रथम योजना अवधि म राज्य ने अपनी आर्थिक विशेष समस्याओ के समाधान के लिये भरसक प्रयास किये और योजनाबद्ध विकास की आधारशिला रखी। साथ ही साथ राज्य सरकार ने भूमि सुधार के विभिन्न कदम भी उठाये जिनमे मध्यस्थो का अन्त, लगान का नियमन, चकबन्दी एव भूमि की अधिकतम सीमा निर्धारण आदि कार्य सम्मिलित हैं। इन प्रयासो के फलस्वरूप कृषक को उत्पादन वृद्धि हेतु समुचित प्रेरणा प्राप्त हुई है।

राज्य म अब तक तीन पचवर्षीय योजनाये कार्यान्वित की जा चुकी हैं। प्रथम पचवर्षीय योजना मे ६४ ५० करोड रु० के प्रावधान की तुलना मे ५४ १४ करोड रुपये ही विभिन्न योजनाओं पर व्यय किये गये। इसकी तुलना म द्वितीय योजना के लिये दुगुने से कुछ ही कम राशि का प्रावधान किया गया। राज्य योजनाओं के लिये १०५ २७ करोड रुपये रखे गये एव केंद्र सचालित योजनाओ के लिये ७ ३३ करोड रुपया की व्यवस्था की गई। इसके अतिरिक्त राजस्थान नहर के निर्माण हेतु १५ करोड रुपये रखे गये। इनम से राज्य सरकार ने १०३ १० करोड रुपया अथवा ९७ ९४ प्रतिशत राज्य सरकार की योजनाओ पर ८७८ करोड रुपये अथवा ११९७८ प्रतिशत केंद्र सचालित योजनाओ पर एव १२ २१ करोड रुपये या ८१ ४० प्रतिशत राजस्थान नहर पर व्यय किये। प्रथम दो योजनाओ म की गई प्रगति को तीव्र करने की दृष्टि से तृतीय योजना के लिए २३६ करोड रुपया की राशि निर्धारित की गई है। इसम केन्द्र सचालित योजनाओं की

प्रावधान शामिल नहीं है। उपरोक्त प्रावधान में वित्तीय कठिनाइयो के कारण सशोधन किया गया तथा प्राथमिकता की दृष्टि से योजना को दो भागो मे विभक्त किया गया है। प्रथम भाग, जो कि आंतरिक कहा गया है, मे वे महत्त्वपूर्ण योजनाए रखी गई जिनका योजना काल मे पूरा किया जाना अनिवार्य समझा गया एव जो योजना के पहले साल मे प्रारम्भ कर दी गई थी। साथ मे यह निश्चित किया गया कि वार्षिक योजनायें आतरिक मे शामिल किये गये लक्ष्यो के आधार पर तैयार की जांय। दूसरे भाग में कम महत्त्व की ऐसी योजनायें सम्मिलित की गई जिनका पूरा करना अतिरिक्त धनराशि की उपलब्धि पर निर्भर था। आतरिक योजनाओ के लिए २०८ ६८ करोड रुपया का प्रावधान रखा गया। इसकी तुलना में तृतीय पचवर्षीय योजना के अन्त तक २११ ६८ करोड रुपये अनुमानत व्यय हो चुके हैं।

प्रथम योजना के प्रारम्भ से अब तक हर क्षेत्र मे आशातीत प्रगति की गई है। प्रमुख क्षेत्रों में की गई प्रगति का विवरण निम्न अनुच्छेदों मे इस प्रकार है।

कृषि —

राजस्थान की अर्थ व्यवस्था मे कृषि का विशिष्ट महत्व है क्योंकि कुल जनसख्या का लगभग ७० प्रतिशत भाग अपनी आजीविका के लिए कृषि पर ही निर्भर है। कृषि एव पशुपालन व्यवसाय सम्मिलित रूप से राज्य की आय का लगभग ५० प्रतिशत भाग प्रदान करते हैं। कृषि के इस महत्त्व के उपरात भी राजस्थान राज्य मे इस व्यवसाय की अवस्था एकीकरण के समय शोचनीय थी। राज्य खाद्यान में स्वावलम्बी न था। सामान्य वर्षों में राज्य में ५० हजार टन से एकलाख टन तक की कमी रहती थी। अभाव काल में यह कमी बढ़ कर ३ से ४ लाख टन तक हो जाया करती थी। इस स्थिति के सुधार के लिए राज्य मे कृषि कार्यक्रमों को कार्यान्वित करने के पूर्व कुछ बहुत ही महत्त्वपूर्ण भूमि सुधार के कार्य किये गये। जागीरदारी, जमीदारी एव बिस्वेदारी आदि भू स्वामित्व की प्रणालियो की समाप्ति द्वारा कृषको मे सुरक्षा एव प्रेरणा का मार्ग प्रशस्त किया गया। लगान भी उचित दरो पर निर्धारित कर दिये गये हैं। वर्तमान एव भविष्य की जोतो की सीमा निर्धारण का कार्य भी किया जा चुका है। भूमि के अपखडन को वैधानिक रूप से रोक दिया गया है, एव भूमि एकीकरण का कार्य भी सुचारु रूप से किया जा रहा है। इन क्रान्तिकारी सुधारो के साथ जो कृषि कार्यक्रम राज्य मे कार्यान्वित किए जा रहे हैं, उनके परिणाम स्वरूप राजस्थान ने न केवल खाद्यान्न में स्वावलम्बन ही प्राप्त किया है प्रत्युत यह एक निर्यातक राज्य बन गया है। कृषि उत्पादन मे वृद्धि के लिये किये गये प्रयासों का सक्षिप्त विवरण निम्न पक्तियो मे दिया जा रहा है।

अधिक उत्पादन हेतु बढती हुई बीजो की माग की पूर्ति करने के लिए राजस्थान राज्य मे कुल ५१ बीज उत्पादन फार्मों की स्थापना अब तक की जा चुकी है। उन्नत बीजो का वितरण राज्य के कृषकों को उचित दरों पर किया जा रहा है, जिससे कृषि उत्पादन मे वृद्धि हो सके। रासायनिक खादो एव उवरकों का वितरण भी कृषको को किया जा रहा है। स्थानीय खाद साधनो के समुचित प्रयोग पर भी ध्यान दिया गया है। पौध-सरक्षण के कार्यक्रमों के लिए कृषको को कृमिनाशक औषधियाँ भी रियायती दरो पर वितरित की जा रही हैं, ताकि फसलो को कीडो एव रोगो से बचा कर कृषक स्वय भी अपने परिश्रम का पूरा

पारिश्रमिक प्राप्त कर सकें एव राष्ट्र की समस्या के समाधान म अपना योग दे सकें। राज्य के गगानगर एव कोटा जिलो मे हवाई जहाजो द्वारा भी फसलो पर कृमिनाशक औषधिया छिड़की गई हैं।

उन्नत यत्रों की प्राप्ति सुगम बनाने के लिए जयपुर मे एक कृषि यत्र निर्माणशाला स्थापित की गई है जहा राज्य की भूमि एव जलवायु के अनुकूल यत्रा का निर्माण काय किया जा रहा है। पचायत समितियो द्वारा सुधरे हुए यत्रो के लिए कृषका को ऋण एव अनुदान आदि भी प्रदान किये जाते हैं। यांत्रिक कृषि का एक भव्य उदाहरण सूरतगढ स्थित विशाल यान्त्रिक कृषि फाम है जो सोवियत रूस के सहयोग से स्थापित किया गया है। नवम्बर १९६० से पाली जिले म सघन जिला कृषि कायक्रम के अन्तगत जिले म कृषि उत्पादन में वृद्धि पर विशेष ध्यान दिया गया है, सन १९६४–६५ से यह कायक्रम सिरोही जिले में भी लागू किया गया है। इसके अतिरिक्त विभिन्न जिला में विभिन्न फसलो के लिए गहन कृषि कायक्रम भी कार्यान्वित किये जा रहे हैं।

कृषि उत्पादन मे वृद्धि करने के लिये यह भी आवश्यक है कि भूमि के उप विभाजन एव अपखडन को रोका जाय। द्वितीय योजना तथा तृतीय योजना मे ४६ ४८ लाख एकड भूमि मे चकबदी का काय किया गया। पानी की समुचित उपलब्धि पर ही अन्य उन्नत बीजा, खादो आदि का प्रयोग निभर करता है। विभिन्न लघुसिंचाई साधना द्वारा मानसून पर कृषि की निभरता को कम करने का प्रयास किया गया है, फलस्वरूप नये कूओं के निर्माण तथा पुराने कूओं के सुधार के लिए ऋण की व्यवस्था की गई है।

भूमि की उवरता को कायम रखन के लिए भूमि सरक्षण कायक्रम भी राज्य के कृषि विभाग एव वन विभाग द्वारा कार्यान्वित किये जा रहे हैं। कृषका को उनकी उपज का उचित मूल्य दिलवाने के लिए कई भडारण एव विक्रय सुविधाए भी प्रदान की गई हैं।

कृषि उत्पादन की वृद्धि के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये कृषि तकनीकी में प्रशिक्षित व्यक्तियों की भी आवश्यकता है। पूव स्थापित जोबनेर कृषि महाविद्यालय का विस्तार किया गया है एव उदयपुर मे एक कृषि विश्वविद्यालय के साथ साथ एक कृषि महाविद्यालय की स्थापना की गई है। दयानन्द महाविद्यालय अजमेर एव सांगरिया मडी स्थित विद्यालय भी कृषि क्षेत्र मे प्रशिक्षण का काय कर रहे हैं। ग्राम सेवको आदि को कृषि विस्तार से सबधित प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए राज्य मे ५ ग्राम सेवक प्रशिक्षण केंद्र कार्य कर रह हैं। कृषि अनुसधान का काय राज्य के पाच अनुसधान केंद्र तथा उप अनुसधान केंद्र कर रहे हैं।

तृतीय पचवर्षीय योजना म खाद्यान्ना के अतिरिक्त उत्पादन का लक्ष्य १५ लाख टन का था किन्तु अतिरिक्त उत्पादन अनुमानत ११ ३४ लाख टन हुआ है। इस योजना के दौरान तिलहन, कपास तथा गन्ना (गुड) की उपज अनुमानत क्रमश ० ८३ लाख टन १ ५० लाख गाठें तथा ० ८२ लाख टन की थी। उत्पादन म कमी मुख्य रूप से मौसम के प्रतिकूल हाने, मुख्य तथा मध्यम सिंचाई योजनाओं द्वारा सिंचाई कम होने तथा अति आवश्यक वस्तुए जसे उवरक तथा कीटाणु नाशक दवाइयों आदि की कमी होने के कारण हुई है।

यह देखा गया है कि मौसम के परिवतना के कारण कृषि उत्पादन मे भी नियमित क्रम से कुछ वर्षो के कालान्तर पर उतार चढाव आते है। राजस्थानमे ऐसा चक्र प्रति चार वष पर आमतौर से देखने मे आता

है। अतएव वास्तविक प्रगति जानने के लिए उत्पादन के चार वर्षीय औसत का अध्ययन उचित होगा। निम्न तालिका में कृषि की मुख्य मदों के सूचकांक का चार वर्षीय औसत दिया गया है।

| वर्ष | खाद्यान्न फसल | अखाद्यान्न फसलें | सब फसलें |
|---|---|---|---|
| १९५२-५६ | १०० ० | १०० ० | १०० ० |
| १९५३-५७ | ११० ६ | ११६ ७ | ११२ ६ |
| १९५४-५८ | ११० ८ | १३२ ५ | ११५ ६ |
| १९५५-५९ | ११७ ५ | १३२ ६ | १२० ६ |
| १९५६-६० | १२० ४ | १३७ १ | १२४ १ |
| १९५७-६१ | ११७ ० | १४३ ० | १२२ ८ |
| १९५८-६२ | १२७ ५ | १४७ ० | १३१ ६ |
| १९५९-६३ | १२७ १ | १६२ १ | १३४ ६ |
| १९६०-६४ | १२१ ८ | १६० २ | १३० ३ |
| १९६१-६५ | १२६ २ | १५४ ३ | १३२ ५ |

उपर्युक्त तालिका से यह स्पष्ट होगा कि उत्पादन में उतार चढ़ाव होते हुए भी समुचित वृद्धि हुई है।

**पशुपालन —**

राजस्थान में पशुपालन का विकास भी आर्थिक विकास के लिये आवश्यक है क्योंकि राजस्थान के अपेक्षाकृत शुष्क प्रदेश में पशुपालन ही जीविका का प्रमुख साधन है। पशुओं की नस्ल सुधार के लिये राज्य में १५ आधार ग्राम खण्डों की स्थापना की गई है। पशुओं को रोगों से बचाने के लिए कई प्रयास किये गये हैं। राज्य में रिडरपेस्ट रोग के उन्मूलन के लिए १३ रिडरपेस्ट दल एव ५ चेक पोस्ट काय कर रहे हैं। १९५० ५१ की अपेक्षा १९६५-६६ में पशु औषधालयों की संख्या ८८ से बढ कर १२७ हो गई है। पशु चिकित्सालयों की संख्या इस अवधि में बढ़कर ५७ से २०४ हो गई। राजस्थान में देश के कुल ऊन उत्पादन का एक तिहाई भाग तैयार होता है। ऊन उत्पादन में वृद्धि करने के लिए राज्य सरकार ने एक पृथक भेड़ एव ऊन निर्देशनालय की स्थापना की है जो ऊन के अधिक उत्पादन, उसके वैज्ञानिक कतरन एव उसके वर्गीकरण के लिये महत्वपूर्ण काय कर रहा है। उदयपुर विश्वविद्यालय से सलग्न बीकानेर स्थित पशुपालन महाविद्यालय पशुपालन एव पशु चिकित्सा से सबन्धित विषयों पर प्रशिक्षण प्रदान कर रहा है। जयपुर में भी पशुपालन विभाग के तकनीकी कर्मचारियों को प्रशिक्षण प्रदान करने के लिये एक विद्यालय काय कर रहा है। राज्य की पचायत समितियों द्वारा भी कृषकों को सुधरे हुए पशुओं का वितरण किया जा रहा है। पशुपालन विभाग द्वारा प्रति वर्ष पशुपालन योजनाओं को कार्यान्वित करने के लिये कुछ राशि पचायत समितियों को स्थानान्तरित कर दी जाती है। १९६३-६४ से जयपुर में उचित मूल्य पर अच्छा दूध उपलब्ध करने के लिए एक सहकारी दुग्ध वितरण योजना भी प्रारभ करदी गई है।

वन —

वनो के वनानिक प्रबन्ध एव समुचित उपयोग के कार्यों का शुभारम्भ प्रथम योजना से ही कर दिया गया। वर्ष १९६४ ६५ के अन्त तक ९१३२ हैक्टेयर भूमि में वृक्षारोपण किया जा चुका है तथा ३१७२० वर्ग किलो मीटर भूमि में वनो की सीमा निर्धारण कर उनकी उचित व्यवस्था की गई तथा ८९ वन पाल १८८९ वन रक्षी, ४३ क्षेत्र एव ३० अधिकारीगणो को प्रशिक्षित किया गया। इसी काल में ७८१ किलो मीटर लम्बी सडकें भी वनो तक पहुचाने के लिए बनाई गई हैं।

सहकारिता —

एकीकरण के पूर्व सहकारिता आन्दोलन राज्य के कुछ भागो तक ही सीमित था तथा इसकी प्रगति धीमी थी। इसके प्रमुख कारण शिक्षा, वित्त तथा प्रशिक्षित कर्मचारियो एव कार्यकर्ताओ की कमी थी। अत योजनाकाल के प्रारम्भ से ही राष्ट्रीय नीति के अनुसार इसकी प्रगति के सभी प्रयत्न किये जा रहे है।

प्रथम योजना काल से ही एक सहकारिता प्रशिक्षण स्कूल जयपुर मे तथा तीन प्रशिक्षण केन्द्र जयपुर कोटा व डूगरपुर म शुरू किये जा चुके है।

सहकारिता विस्तार कार्य क्रम के अन्तर्गत अब तक २८१४८९ गैर सहकारी व्यक्ति प्रशिक्षित किये गये हैं। तृतीय योजना काल म २२५२ अधीनस्थ कर्मचारियो को प्रशिक्षित किया गया तथा ४ थोक उपभोक्ता भण्डार व १०२ प्राथमिक उपभोक्ता भण्डार खोले गये। इनके अतिरिक्त १५ भडारो का पुनरावर्तन किया गया है। राज्य म सहकारी समितियो की सख्या सन् १९५०-५१ म ३५६० थी जिनमे १ ४५ लाख व्यक्ति सदस्य थे। यह सख्या जून १९६५ की समाप्ति तक बढ कर २२३१० हो गई तथा १३ ३५ लाख व्यक्ति इसके सदस्य थे। जून १९६५ तक ३१ २ प्रतिशत ग्राम्य परिवार सहकारिता आन्दोलन के अन्तर्गत लाये जा चुके हैं जो अनुमानत तृतीय योजना के अन्त तक ३५ प्रतिशत हो जाएगा, जब कि यह प्रतिशत १९५०-६१ म नगण्य था।

सामुदायिक विकास एव पचायती राज —

विभिन्न विकास कार्यक्रमो एव बदलते हुए सामाजिक एव आर्थिक मूल्यो के प्रति नई चेतना का सचार करने के लिये राज्य म २ अक्टूबर १९५२ से ६ सामुदायिक विकास खण्डो की स्थापना के साथ सामुदायिक विकास कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया। अब राजस्थान का समस्त ग्रामीण क्षेत्र २३२ विकास खण्डो की स्थापना के साथ इस कार्यक्रम के अन्तर्गत लाया जा चुका है। इनमे से ८३ प्रथम चरण खण्ड, ९३ द्वितीय चरण खण्ड, ५६ उत्तर द्वितीय चरण विकास खण्ड है।

२ अक्टूबर १९५९, को पचायती राज की स्थापना करके राजस्थान लोकतान्त्रिक विकेन्द्रीकरण में अग्रणी बन गया। विकेन्द्रीकरण के अन्तर्गत स्थानीय सस्थाओ यथा पचायतो पचायत समितियो एव जिलापरिषद के अधिकार एव कार्य क्षेत्र का व्यापक विस्तार कर दिया गया है। ग्रामीण आर्थिक विकास की एक महत्वपूर्ण कडी के रूप मे पचायत समितिया विभिन्न कृषि उत्पादन कार्यक्रमो एव आर्थिक सामाजिक

कायक्रमो को जन सहयोग से सफल बनाने की दिशा म निरतर अग्रसर हैं। इस लक्ष्य की पूर्ति के लिये विभिन्न विभागो द्वारा प्रति वप पचायत समितियो को धन राशि स्थानान्तरित कर दी जाता है, जिससे वे अपने क्षेत्र की प्राथमिकताम्रा के अनुसार याजनाम्रो का सचालन करके उनकी सफलता मे योग दे सकें। पचायती राज व्यवस्था से सबधित व्यक्तिया को प्रशिक्षण प्रदान करने की दिशा म राज्य के १० पचायती राज प्रशिक्षण केंद्र अपना महत्वपूण योग प्रदान कर रहे है।

**सिंचाई —**

राज्य मे सदा प्रवाही नदिया के अभाव व भूमिगत पानी की सतह नीची होने के कारण केवल वर्षा का पानी ही सिंचाई का मुख्य साधन था। प्रथम योजना के पूव केवल गगानगर जिले म गग नहर ही राज्य मे एक नहर थी। सन् १९५०-५१ मे कुल मिलाकर २९ लाख एकड ( ११ ७४ लाख हेक्टेयर ) भूमि पर सिंचाई की गई थी जिसमे से ११ लाख एकड (४ ३५ लाख हेक्टेयर) नहर, तालाब एव अन्य साधना से एव १८ लाख एकड (७ ३९ लाख हेक्टेयर) कूम्रो से सिंचित की गई। अत योजनाम्रा के प्रारभ से ही सिंचाई साधना को लगातार बढाने का प्रयत्न किया जा रहा है।

प्रथम योजना काल मे दो बहुउद्देशीय योजनायें भाखडा एव चम्बल प्रारभ की गइ। इसके अतिरिक्त १११ बडे एव मध्यम सिंचाई काय, २१ काय अभावग्रस्त क्षेत्रा म एव २४४ लघु सिंचाई काय प्रारभ किये गये। प्रथम योजना काल म पूरे किये गये सिंचाई कार्यों से ५ ६० लाख एकड अतिरिक्त भूमि द्वितीय योजना के अत तक सिंचित की गई। इसके अतिरिक्त ६ ०४ लाख एकड (२ ४४ लाख हेक्टयर) भूमि भाखडा व चबल परियोजनाम्रो के पूरे होने पर सिंचित की जानी थी। सन् १९५५ ५६ म सिंचित किया गया क्षेत्रफल ३३ ३८ लाख एकड (१३ ५० लाख हेक्टेयर) तक पहुँच गया।

द्वितीय योजना काल मे १० अन्य काय प्रारभ किये गये। इन नये कार्यों के द्वारा ५ २५ लाख एकड (२ १२ लाख हेक्टेयर) अतिरिक्त भूमि सिंचित की जा सकती थी। इस योजना काल तक प्रथम याजना काल के चल रहे १५ कार्यों म से ७ काय चल रहे थ। अभावग्रस्त क्षेत्रो म चल रहे २१ योजना कार्यों म से ७ पर काय द्वितीय योजना काल मे समाप्त किया जा चुका था तथा चल रहे १४ कार्यों से भी सिंचाई प्रारम्भ कर दी गई थी। सन् १९६०-६१ मे इनके द्वारा ८२ ४ हजार एकड भूमि (२१ २ हजार हेक्टेयर) मे सिंचाई की गई।

२४४ लघु सिंचाई कार्यों म से जो कि प्रथम योजना काल म शुरु किये गय थे, १८६ काय १९५५-५६ तक पूरे किये गये तथा द्वितीय योजना काल मे १०४ सिंचाई काय और प्रारभ किय गय। इन चल रहे १६२ कार्यों म से ७६ काय द्वितीय याजना काल में पूरे किये गये। इसके द्ववारा १९६०-६१ मे १ ४६ लाख एकड (० ५९ लाख हेक्टेयर) भूमि सिंचित की गई। राजस्थान नहर पर भी काय इसी योजना काल म जून १९५८ से प्रारभ किया गया। चम्बल परियोजना स सन् १९६० से सिंचाई काय प्रारभ कर दिया गया। यह योजना काय सन् १९५३ में शुरु किया गया था। १९६० ६१ मे ३७ १८ हजार एकड (१५ ५ हजार हेक्टेयर) भूमि इसके द्वारा सींची गई। यह क्षेत्र बढा कर १९६४-६५ मे २१८ हजार एकड (८८ २२ हजार हेक्टेयर)

हो गया। इसी प्रकार माखडा परियोजना से सिंचित क्षेत्र जो वर्ष १९६० ६१ मे २ १७ लाख एकड (० ८८ लाख हेक्टेयर) था। वर्ष १९६४-६५ मे बढकर ५ २७ लाख एकड (२ १३ लाख हेक्टेयर) हो गया।

तृतीय योजना काल मे बहुउद्देशीय बृहत एव मध्यम सिंचाई से १२ ९६ लाख एकड (५ ८४ लाख हेक्टेयर) अतिरिक्त भूमि को सींचने का लक्ष्य रखा गया। सन् १९६५-६६ तक भाखडा, चम्बल, बृहत एव मध्यम सिंचाई कार्यों के द्वारा ९ ४४ लाख एकड (३ ८२ लाख हेक्टेयर) अतिरिक्त भूमि सींचने की क्षमता प्राप्त की जा चुकी है। इसके अतिरिक्त लघु सिंचाई कार्यों के द्वारा तृतीय योजना के अन्त तक १ ८० लाख एकड (० ७३ लाख हेक्टेयर) अतिरिक्त भूमि सींचे जाने का लक्ष्य रखा गया था। जिसकी तुलना मे १·४० लाख एकड (० ५७ लाख हेक्टेयर) भूमि सिंचित की गई।

राज्य सरकार द्वारा किये गये सब प्रयासो के फल स्वरूप सिंचित क्षेत्र जो १९५० ५१ में २९ लाख एकड (११ ७४ लाख हेक्टेयर) था, बढ कर १९६०-६१ मे ४३ २८ लाख एकड (१७ ५१ लाख हेक्टेयर) हो गया एव १९६२ ६३ मे बढ़ कर ४६ ४४ लाख एकड (१८ ६३ लाख हेक्टेयर) हो गया।

**विद्युत —**

आधुनिक युग मे विद्युत शक्ति का मानव जीवन मे महत्वपूर्ण स्थान है तथा विद्युत उपभोग को भौतिक विकास का एक मापदड माना जाता है। यदि स्वतन्त्रता प्राप्ति के पूर्व की स्थिति की समीक्षा की जाय तो यह स्पष्ट होगा कि राज्य विद्युत शक्ति के क्षेत्र मे बहुत पीछे था, जिसका प्रमुख कारण था राज्य का छोटी २ रियासतो मे विभक्त होना। सर्व प्रथम योजना के प्रारम्भ मे यहा ३२ विद्युत गृह थे तथा कुल उत्पादन क्षमता १३२७१ किलोवाट थी एव केवल ४२ नगरो व कस्बों मे विद्युत उपलब्ध थी। प्रथम योजना काल मे भीलवाडा, डीग, हिंडोन एव सागवाडा मे विद्युत उपगृहो की स्थापना की गई। इस योजना के अत तक कुल उत्पादन क्षमता बढकर ३४६०० किलोवाट तथा विद्युत प्राप्त बस्तियों की सख्या ६६ हो गई। दूसरी पचवर्षीय योजना मे कुल उत्पादन क्षमता १०८९९२ किलोवाट हो गई। इस योजना काल मे १३२ के वी लाइन की १०२ मील लबी लाईनें, ६६ के वी की १४५ मील लबी लाइनें, ३३ के वी लाइन की ४०३ मील लम्बी लाइनें तथा ११ के वी की १३२ मील लबी लाइनें डाली गइ। विद्युतिकरण की गई बस्तियों की सख्या बढकर १३१ हो गई। तृतीय पचवर्षीय योजना में अनुमानत ४८ मेगावाट अतिरिक्त विद्युत उत्पादन हुआ। यद्यपि विद्युत की कमी थी फिर भी बस्तिया के विद्युतिकरण मे महत्वपूर्ण प्रगति हुई। और विशेषतया सिंचाई हेतु कूओ मे बिजली लगान पर अधिक जोर दिया गया। इस योजना के अन्त तक १२७४ बस्तियों का और लगभग ७००० पपिग सटो का विद्युतिकरण किया गया।

**उद्योग एव खनन —**

औद्योगिक विकास के लिए आवश्यक कच्चे माल की दृष्टि से राजस्थान एक धनी राज्य है एव यहा पर विभिन्न प्रकार के महत्वपूर्ण खनिज सीसा, अभ्रक, जस्ता, पीतल, जिप्सम, लिगनाइट एव मेगनीज आदि बहुतायत मे उपलब्ध हैं। राज्य मे देश के कुल ऊन उत्पादन का तीसरा भाग पैदा होता है। परन्तु फिर भी औद्योगिक दृष्टि से यह राज्य एकीकरण के समय बहुत पिछडा हुआ था। पजीकृत कारखानो की सख्या १९५२ मे केवल २४० थी। अत राज्य सरकार ने इस क्षेत्र के विकास के लिये आवश्यक प्रयत्न किये।

प्रथम पचवर्षीय योजना काल में विद्युत की कमी के कारण वृहत उद्योग नही स्थापित किये जा सके। अत लघु, कुटीर एव हस्तकला उद्योगा के विकास के लिये औद्योगिक प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान दिया गया। बीकानेर, जोधपुर, जयपुर राजगढ एव चूरू म चल रहे प्रशिक्षण केन्द्रा म ६६४ प्रशिक्षणार्थियो को विभिन्न कार्यों की शिक्षा दी गई। प्रथम योजना मे हाथ कर्घा उद्योग को भी विकसित नही किया जा सका था। अत द्वितीय योजना म इस क्षेत्र मे काय किया गया एवं ४८ बिक्री गृह १६ रगाई गृह १४ निरीक्षण व स्टाम्पिग गृह स्थापित किये गय। इनके अतिरिक्त ३०० शक्ति चालित कर्घे भी वितरित किये गये। तीसरी योजना म १६ हाथ कर्घा विक्रय आगार, १६ रगाई गृह, ४ जुलाहागार बस्तियो, ४ श्रेणी निर्धारण केन्द्र, ३ केन्द्र हस्तकला उद्योग हेतु तथा १ केन्द्र लघु आकार उद्योगो हेतु, ५ सामूहिक औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र व एक चम उद्योग प्रशिक्षण सस्था एव ११ औद्योगिक बस्तिया की स्थापना की जा चुकी है तथा इनमे ३५३ शड बनाए जा चुके हैं। डीडवाना म सोडियम सल्फेट का कारखाना भी स्थापित किया गया है।

निजी क्षेत्र मे एक खाद का कारखाना कोटा म लगाया जा रहा है जिसकी वार्षिक उत्पादन क्षमता २१७८०० टन होगी। कमानी इडस्ट्रीज कारपोरेशन का एक कच्चे लोहे का कारखाना उदयपुर के पास लगाने हेतु लाइसेंस दिया जा चुका है। इनके अतिरिक्त कागज व गत्ते का कारखाना जिप्सम बाड बनाने का कारखाना, स्टोन वेयर पाइप्स व फिटिंग का कारखाना काच के सामान का कारखाना, नाइलोन, टेरलिन, मोटर के टायर व टयूब बनाने का कारखाना इत्यादि हेतु भी लाइसेंस दिय जा चुके है। जिन बडे उद्योगो के लिए भारत सरकार द्वारा लाइसेंस दिये जा चुके हैं उनम से कागज व गत्ते का कारखाना, सीमेंट का कारखाना, वायर क्लाथ का कारखाना, आक्सीजन बनान का कारखाना, विस्कोज हाई टिनेसीटी, रेयन यान का कारखाना निकट भविष्य म ही काय प्रारम्भ कर देंगे।

राज्य सरकार द्वारा किये गये प्रयत्नो के फलस्वरूप पजीकृत कारखानो की सख्या १९६४ म बढकर १४६४ हो गई है जो कि १९५२ मे केवल २४० थी।

## सचार तथा परिवहन —

पचवर्षीय योजनाओ से पूर्व राजस्थान सडको की दृष्टि से बहुत पिछडा हुआ था। अत राज्य के बहुमुखी विकास के लिए सडक निमाण पर ध्यान दिया जाना अत्यावश्यक समझा गया। इन्ही प्रयासो के परिणामस्वरूप सडको की लम्बाई जो १९४९ म ८६१८ मील थी बढ कर १९५१ मे १०७७० मील हो गई। प्रथम पचवर्षीय योजना के प्रारम्भ म प्रति १०० वग मील पर ८ २ मील एव प्रति हजार जन सख्या पर ० ७ मील लम्बी सडकें थी। प्रथम पचवर्षीय योजना के अत म कुल मिला कर १३९९८ मील लम्बी सडकें बन चुकी थी एव प्रति १०० वग मील पर १० ६१ मील लम्बी सडकें एव प्रति हजार जन सख्या पर ० ८ मील लम्बी सडकें हो गई।

तृतीय पचवर्षीय योजना म सडक विस्तार के लिए ५००० से अधिक जनसख्या वाले गावो एव कस्बो को सडक द्वारा शहरो से जोडने, समस्त तहसील मुख्यालयो को सुगम माग द्वारा जिला मुख्यालयो से मिलाने एव राजस्थान नहर तथा माखडा नहर क्षेत्र मे हो रहे विकास को ध्यान मे रखते हुए इस क्षेत्र म नई सडको

का निर्माण तथा मुख्य २ खनिज क्षेत्रो को सडका द्वारा मिलाने का निश्चय नागपुर योजना के अनुसार किया गया। इन उद्देश्यो की पूर्ति हेतु तृतीय याजना काल मे ३१३७ मील नई सडकें बनाने एव ६३८ मील चालू सडका के सुधारने का निश्चय किया गया जिसकी तुलना म २०६० मील लम्बी नवीन सडका का निर्माण किया गया है और इस प्रकार तृतीय योजना के अन्त तक कुल १८८०४ मील लम्बी सडक हो जायगी।

शिक्षा —

राजस्थान मे १९५१ म साक्षरता केवल ८ ९ प्रतिशत थी जो १९६१ मे बढकर १५ २ प्रतिशत हो गई है। इसी अवधि मे देश मे साक्षरता १६ प्रतिशत से बढकर २४ प्रतिशत हो गयी। यद्यपि इससे प्रतीत होता है कि राजस्थान मे साक्षरता का प्रतिशत अभी भी भारतीय साक्षरता प्रतिशत से कम है परन्तु साक्षरता वृद्धि राजस्थान म कही अधिक हुई है। सन् १९५०–५१ मे राज्य म शैक्षणिक सस्थाओ की सख्या ५५०१ थी, जिनमे प्राथमिक शालाओ, माध्यमिक शालाओ, महाविद्यालयो एव विश्वविद्यालयो की सख्या क्रमश ३९३५, ८४८, ३५ व १ थी। इस काल म स्कूल जाने वाले ६-११,११-१४, व १४-१७ आयु वग के छात्रो की सख्या का प्रतिशत क्रमश १६ ६, ५ ४ व १ ८ था। इसी काल मे इन्ही आयु के छात्रो की सख्या सपूण देश मे क्रमश ४२ ६ १२ ७ एव ५ ३ प्रतिशत थी।

राज्य ने अपनी योजनाओ द्वारा शिक्षा के क्षेत्र के इस पिछडेपन को दूर करने के भरसक प्रयत्न किये हैं। भौतिक प्रगति के रूप म सन् १९५५-५६ के अन्त म शैक्षणिक सस्थाओ की सख्या बढकर १०८५१ हो गई जिनम ७५८४ प्राथमिक शालाए, ११८० माध्यमिक शालाए, ८२ महाविद्यालय व १ विश्वविद्यालय था। प्रथम योजना के अन्त मे स्कूल जाने वाले ६-११,११ १४ व १४-१७ आयु वग के छात्रो की सख्या भी १९५० ५१ की तुलना म बढकर क्रमश २१ ७, ९ २ व ३ ५ प्रतिशत हो गई। इसी योजना काल मे ५ स्थानीय व २४ जिला पुस्तकालय खोले गये तथा ५० पुस्ताकालयाध्यक्षो को प्रशिक्षण भी प्रदान किया गया।

द्वितीय योजना काल के प्रयासा के परिणाम स्वरूप सन् १९६०-६१ के अन्त म शक्षणिक सस्थाओ की सख्या बढकर २०७७१ हो गई जिनमे १२५६६ प्राथमिक पाठशालायें, १९५३ माध्यमिक शालायें, ९६ महाविद्यालय व १ विश्वविद्यालय था। साथ ही स्कूल आने वाले ६ ११, ११-१४ व ११ १७ आयु वग के छात्रो की सख्या भी बढ़कर क्रमश ३८ ४,१६ ३ व ७ ३ प्रतिशत हो गई। इसी काल मे छात्रो की सख्या सपूण देश की क्रमश ६१ १, २२ ८ एव ११ ५ प्रतिशत हो गई।

द्वितीय योजना काल मे ही ४० सम्मेलनो व गोष्ठियो द्वारा माध्यमिक शिक्षा म अध्यापकों को रिफ्रेशस कोस द्वारा प्रशिक्षण दिया गया। ५१ माध्यमिक शालाओ म विज्ञान अध्ययन का विकास तथा उच्चमाध्यमिक विद्यालया मे १३४ पुस्तकालयो का भी विकास किया गया। इसी अवधि मे राजस्थान खेलकूद परिषद व शारीरिक शिक्षा प्रशिक्षण विद्यालय जोधपुर की स्थापना की गई। योजना के अतिम दो वर्षों म स्कूल चलो अभियान भी चलाया गया।

इन सब प्रयत्नो के बावजूद भी अन्य राज्यो की अपेक्षा इस क्षेत्र मे राज्य की स्थिति बहुत सतोषजनक नही हो पाई। अत तृतीय योजना मे भी शिक्षा के प्रसार एव स्तर सुधार पर विशेष ध्यान दिया गया है। इन सब प्रयासो के फलस्वरूप तृतीय योजना के चतुर्थ वर्ष के अन्त मे शक्षणिक सस्थाओ की सख्या बढ़कर लगभग ३०२५५ हो गई। इसी काल म स्थानीय विश्वविद्यालय उदयपुर की भी स्थापना की गई। सन् १९६४-६५ के अन्त मे स्कूल जाने वाले ६ ११, ११ १४ व १४ १७ आयु वर्ग के छात्रो की सख्या भी बढकर क्रमश ५४ ६,२२ ० व १० २ प्रतिशत हो गई है।

प्राविधिक शिक्षा क्षेत्र के अन्तर्गत सन् १९४९ तक राजस्थान मे केवल १ इजीनियरिंग कालेज पिलानी म था। सन् १९५१ मे दूसरा इजीनियरिंग कालेज जोधपुर मे खोला गया। प्राविधिक शिक्षा के महत्व को ध्यान मे रखते हुए सन् १९५७ मे इसका अलग से निर्देशालय भी जोधपुर मे खोला गया। डिप्लोमा कोर्स के लिए भी द्वितीय योजना काल मे ५ पोलिटेक्निक्स की स्थापना की गई। तृतीय योजना काल म भी प्राविधिक शिक्षा के विस्तार पर विशेष ध्यान दिया गया है। सन् १९६३-६४ मे क्षेत्रीय इजीनियरिंग कालेज जयपुर की भी स्थापना की गई है। अब सन् १९६५-६६ के अन्त मे तीनो कालेजो की अन्तग्रहण क्षमता ६७० हो गई। १९६५ ६६ के अत म राज्य मे ६ पोलिटेक्निक्स अजमेर, अलवर, कोटा, जोधपुर, बीकानेर व उदयपुर म डिप्लोमा कोर्स की शिक्षा प्रदान कर रहे हैं तथा जिनकी अन्तग्रहण क्षमता ११८० है।

### आधुनिक औषधिया और आयुर्वेद —

पचवर्षीय योजना लागू होने से पूर्व राज्य की जनता का उचित चिकित्सा सुविधायें भी उपलब्ध नही थी। सन् १९५१ मे राज्य म केवल ३७४ चिकित्सालय एव औषधालय थ जिनम रोगियो के लिये ८२५७ शैयायें उपलब्ध थी तथा केवल १ चिकित्सा महाविद्यालय जयपुर म था। सन् १९५६ के अन्त म राज्य म चिकित्सालयो व औषधालयो की सख्या बढकर ४६८ हो गई। जिनमे २६१ चिकित्सालय व २०७ औषधालय थे। राज्य म पहली बार सन् १९५६ म ७ परिवार नियोजन केन्द्र भी स्थापित किये गये। राज्य की चिकित्सा सस्थाओ मे सन् १९५६ के अन्त मे रोगी शैयाओ की सख्या को भी बढाकर ६७४७ कर दिया गया। प्रथम योजना काल म ही ३ शाखायें राष्ट्रीय मलेरिया उन्मूलन कार्यक्रम के अन्तर्गत खोली गई। द्वितीय योजना काल मे भी राज्य ने इस क्षेत्र म उत्साहजनक प्रगति की है। सन् १९६१ के अत म चिकित्सालयो एव औषधालयो को बढाकर ४९२ कर दिया जिनमे २५५ चिकित्सालय व २३७ औषधालय थे। सन् १९६१ के अन्त म प्रसूति एव शिशु कल्याण केन्द्रो को भी बढाकर ६२ कर लिया गया। क्षय रोग चिकित्सा सस्थाओ की सख्या ११ से बढाकर १४ कर दी गई। परिवार नियोजन के अन्तर्गत केन्द्रो की सख्या बढाकर १४० हो गई। साथ ही साथ चल परिवार नियोजन केन्द्र भी शुरू किये गये। इसी काल मे चिकित्सको की कमी को ध्यान मे रखते हुए एक और चिकित्सा महाविद्यालय की स्थापना बीकानेर म की गई। दोनो कालेजो की अतग्रहण क्षमता १९६० ६१ के अन्त म २२० थी। राज्य की चिकित्सा सस्थाओ की रोग शयाओ की सख्या बढाकर ९४२२ कर दी गई।

तृतीय योजना काल म भी इस क्षेत्र म हो रही प्रगति की गति को बनाये रखा गया है। सन् १९६५ के अन्त में चिकित्सालयों व औषधालयों की संख्या बढ़कर ५३६ हो गई है जिनमें ३११ चिकित्सालय व २२८ औषधालय हैं। प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों व प्रसूति एवं शिशु कल्याण केंद्रों की संख्या बढ़कर क्रमश २२६ व ७२ हो गई है। राष्ट्रीय मलेरिया उन्मूलन कार्यक्रम के अन्तर्गत शाखाओं की संख्या बढ़ाकर १७ कर दी गई है। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय चेचक उन्मूलन कार्यक्रम भी इस योजना में लागू कर दिया गया है। परिवार नियोजन कार्य को भी इस योजना में व्यापक रूप दिया गया है। सन् १९६५ के अन्त में परिवार नियोजन केंद्रों की संख्या बढ़कर २८७ हो गई तथा चल केन्द्रों को बढ़ाकर २३ कर दिया गया। सन् १९६५ में परिवार नियोजन के सम्बन्ध में १०६१७५६ व्यक्तियों को सलाह दी गई तथा ४२४४६ व्यक्तियों का आपरेशन किया गया। सन् १९६५ के अन्त में चिकित्सा संस्थाओं में रोगी शैयाओं की संख्या बढ़कर ११६६५ हो गई।

इसी योजना काल में ३ और नये चिकित्सा महाविद्यालय उदयपुर, अजमेर व जोधपुर में खोले गये। तृतीय योजना में पांचों कालेजों की अन्तर्ग्रहण क्षमता ६३५ कर दी गई है।

आयुर्वेद क्षेत्र के अन्तर्गत सन् १९५१-५२ में राज्य में १३ चिकित्सालय व ३३७ औषधालय थे। वैद्यों, हकीमों एवं कम्पाउण्डरों की संख्या क्रमश ३६२,१३ व १६१ थी। चिकित्सालयों में रोग शयाओं की संख्या केवल १०० थी। प्रथम योजना के प्रयासों के फलस्वरूप औषधालयों की संख्या बढ़ाकर ४८२ हो गई एवं पूर्व स्थापित १३ चिकित्सालय भी सेवा प्रदान करते रहे। वैद्यों, हकीमों एवं कम्पाउण्डरों की संख्या बढ़कर ५००,२० व २१५ हो गई। द्वितीय योजना के अन्त में चिकित्सालयों एवं औषधालयों की संख्या बढ़कर क्रमश १७ व ११४७ हो गई। वैद्यों व हकीमों की संख्या १२३५ व कम्पाउण्डरों की संख्या ८८६ हो गई। चिकित्सा संस्थाओं में रोगी शयाओं की संख्या भी बढ़ाकर २०४ कर दी गई। तृतीय योजना काल में इस क्षेत्र में की गई उन्नति भी उत्साहजनक है। तृतीय योजना के चौथे वर्ष के अन्त में राज्य में चिकित्सालयों एवं औषधालयों की संख्या बढ़कर १८ व १४०६ हो गई। वैद्यों व हकीमों की संख्या १५१० तथा कम्पाउण्डरों की संख्या बढ़कर १२६५ हो गई। चिकित्सा संस्थाओं में रोगियों के लिये शयाओं की संख्या भी बढ़ाकर ३०५ कर दी गई है।

जल प्रदाय —

प्राकृतिक कारणों से राजस्थान में पीने के पानी की समस्या अन्य राज्यों से अपेक्षाकृत अधिक है। इस पृष्ठभूमि को ध्यान में रखकर राजस्थान के गठन के समय से इस ओर विशेष ध्यान दिया गया। प्रथम योजना में जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, कोटा, डूंगरपुर आदि में जलप्रदाय कार्य का पुनर्गठन किया गया ताकि इन शहरों की बढ़ती हुई मांग को पूरा किया जा सके। दूसरी योजना में पहले से चली आ रही २२ योजनाओं के अलावा ४२ अन्य योजनाएं चालू की गईं। तृतीय योजना काल में १९६४-६५ की समाप्ति तक ३७ नगर जल प्रदाय योजनायें व ५९ ग्राम्य जलप्रदाय योजनायें पूरी की जा चुकी हैं।

गृह निर्माण —

आधुनिक समय मे गृह व्यवस्था भी बहुत महत्वपूर्ण हो गई है। वैज्ञानिक ढग पर बने हुए स्वास्थ्य प्रद घर की कामना हर व्यक्ति करता है। साथ ही साथ जनसख्या मे वृद्धि गृह निर्माण के विस्तार को आवश्यक बना देती है। इन परिस्थितियो को ध्यान म रखते हुए प्रथम पचवर्षीय योजना से ही इस क्षेत्र मे विभिन्न योजनाओ के अन्तर्गत ऋण एव अनुदान प्रदान करने की व्यवस्था की गई है। भारत सरकार द्वारा सचालित निम्न आय वर्ग गृह निमाण व्यवस्था को १६५४ म प्रारम किया गया। तथा १६५५ ५६ तक २५०८ परिवारो को ऋण दिये गये। औद्योगिक गृह निर्माण योजना १६५५ ५६ स शुरु की गई तथा दूसरी पचवर्षीय योजना मे ११२२ घर औद्योगिक गृह निर्माण योजना के अतगत, ४०८१ घर अल्प आय वर्ग वालो के लिये, १६५ गृह मध्यम आय वग वाला के लिये एव १२० घर गन्दी बस्ती उन्मूलन योजना के अन्तगत बनाये गये। इसके अतिरिक्त ग्रामीण गृह निर्माण योजना कायक्रम से ३०० ग्राम लाभान्वित हुए। वष १६६४-६५ के अन्त तक २४५७ गृह अल्प आय गृह के अतर्गत, १५२४ गृह औद्योगिक गृह निर्माण के अन्तगत, २६०६ गृह ग्रामीण गृह निर्माण योजना के अन्तगत एव २८२ गृह गन्दी बस्ती उन्मूलन योजना के अन्तगत बनाये जा चुके हैं।

समाज कल्याण व पिछड़े वग का कल्याण —

पिछडे वर्ग की जनसख्या राज्य की जनसख्या का लगभग एक चौथाई भाग है। राजस्थान के एकीकरण के पूव इस वर्ग की आर्थिक एव सामाजिक दशा पिछडी हुई थी। राज्य की योजनाओं द्वारा इस बात का प्रयास किया गया है कि इस वग की अवस्था म सुधार हो एव यह वग भी अन्य वर्गों के स्तर पर आ सके। भौतिक प्रगति के रूप मे प्रथम द्वितीय एव तृतीय योजना मे इस वग की दशा सुधारने के लिए पानी पीने के कूओ सिंचाई के कूओ, गृह निर्माण, बलो एव कृषि औजारो के क्रय तथा परिवारो के बसाने आदि के लिये वित्तीय सहायता प्रदान की गई है। साथ ही इस वग के छात्रो को छात्रवृत्तिया भी प्रदान की गई है। इन वर्गों के सुव्यवस्थित जीवन के लिये प्रथम, द्वितीय एव तृतीय योजना म आर्थिक सहायता प्रदान की गई है।

राज्य की योजनाओ के अ तगत समाज कल्याण क्षेत्र म भी प्रगति हुई है। द्वितीय योजना काल क अत म राज्य म १ रिमाड होम, १ प्रमाणित पाठशाला, २ भिक्षुक गृह एव १ रस्क्यू होम काय कर रहे थे। इन कार्यों को तृतीय योजना मे और अधिक गति प्रदान की गई है। तृतीय योजना के अत मे इस क्षेत्र क अतगत १ रिमाड होम, १ प्रमाणितशाला, १ आफ्टर कयर होम १ वद्ध एव दुबलो के लिये एव ३ रेस्क्यु होम काय कर रहे है। इसके अतिरिक्त १६ परिवीक्षा अधिकारी भी परिवीक्षा सेवाय कर रहे हैं। राज्य समाज कल्याण मडल भी अपने २० कल्याण विस्तार केन्द्रा द्वारा महिलाओ एव बच्चो की प्रगति की दिशा म काय कर रहा है।

योजनाओ का प्रमुख उद्देश्य अधिक स अधिक रोजगार प्रदान करना है। द्वितीय योजना क विभिन्न प्रगति कार्यो के फलस्वरुप ३ ६६ लाख अतिरिक्त व्यक्तियो को रोजगार मिल गया था। तृतीय योजना क

अ तर्गत सशाधित अनुमानो के अनुसार ६ ८८ लाख अतिरिक्त व्यक्तियो को रोजगार देन का लक्ष्य रखा गया है। ऐसा अनुमान है कि १९६४ ६५ तक ५ ५३ लाख अतिरिक्त व्यक्तिया को रोजगार प्रदान किया जा चुका है।

राज्य आय राज्य की अथ व्यवस्था की वास्तविक सूचक कही जा सकती है। इसम १९५५-५६ से सन् १९६० ६१ म वतमान कीमतो पर ३९ ५७ प्रतिशत एव १९५४-५५ की स्थिर कीमतो पर आधारित १४ ६१ प्रतिशत की वृद्धि हुई। सन् १९६४-६५ म अग्रिम अनुमान सन् १९६० ६६ की तुलना म वतमान कीमता पर २९ ५४ प्रतिशत व स्थिर कीमतो पर १७ २९ प्रतिशत की वद्धि हुई। राज्य आय के इन अनुमाना की यदि हम राष्ट्रीय आय के अनुमाना से तुलना करें तो ज्ञात होगा कि राज्य आय मे वृद्धि का प्रतिशत तृतीय योजना के प्रथम चार वर्षा मे राष्ट्रीय आय मे वृद्धि की प्रतिशत के लगभग समान रहा। भारत मे राष्ट्रीय आय मे वृद्धि तृतीय योजना के प्रथम चार वर्षों म ४ ४ प्रतिशत प्रतिवष थी।•

हम उधरा से हासिल की दौलत पर ज्यादा वक्त तक नहीं रह सकते, उसके लिये साख की जरुरत है। हम मे वह ताकत होनी चाहिये कि उस दौलत को उचित दिशाओ मे लगा सके। इस सारे के लिये उत्पादन की दरकार है, जिससे कि हम अपनी सबसे बडी जरुरतो को पूरा कर सकें, ताकि हम विकास सम्बन्धी योजनाओ मे लगाने के लिये कुछ बचा सकें। इस तरह हम उत्पादन की बुनियादी जरुरत पर लौट आते हैं। अब उत्पादन के लिये कडी और लगातार मेहनत करने की जरुरत है। उत्पादन के लिये यह जरुरी है कि काम न रोका जाय, हडतालें न हा, और नहीं मजदूरो को निकाला जाय।

—जवाहरलाल नहरू

निरजन सिंह

# राजस्थान में सहकारिता का क्रमिक विकास

राज्य म सहकारिता का विकास राजस्थान निर्माण के पश्चात १६४६ से प्रारम्भ हुआ। इससे पूव कुछ राज्या म ही सहकारिता का काय हो रहा था, जो कि व्यवस्थित व सतोपजनक नही कहा जा सकता। अधिकाश भूतपूव दशी रियासतो मे बासवाडा, डूगरपुर, बूदी, झालावाड जसलमेर, सिरोही, प्रतापगढ, शाहपुरा व टौक आदि म तो सहकारिता का प्रारम्भ ही नही हो सका था।

राजस्थान के निर्माण होने से पूव जिन राज्यो म सहकारिता आदोलन चल रहा था, वहा पर अलग अलग कानून विद्यमान थे। एकीकरण के पश्चात सम्पूण राज्य के लिय एक सहकारी कानून के निर्माण की आवश्यकता अनुभव की गई जिसके परिणामस्वरूप राजस्थान सहकारी समितिया अधिनियम (न० ४) अप्रेल १६५३ से लागू हुआ। इस अधिनियम के उद्देश्यो की पूर्ति हेतु राजस्थान राज्य सहकारी समितिया नियम १६५७, तैयार कर लागू किया गया।

**नया सहकारी कानून —**

भारत सरकार द्वारा नियुक्त की गई सहकारी कानून कमटी की सिफारिश क अनुसार, राज्य सरकार ने भी एक कमेटी का निर्माण किया जिसका काम राज्य के सहकारी कानून को पुनगठित स्वरूप प्रदान करना था। इस कमेटी ने वतमान सहकारी कानून और भारत सरकार द्वारा नियुक्त की गई कमटी द्वारा तयार किय गये आदश सहकारी विधेयक के आधार पर कुछ बहुत ही महत्त्वपूण सुझाव प्रस्तुत किय जिनक आधार पर राज्य का नया कानून बनाया गया जो २ अक्टूबर १६६५ से लागू हो चुका है।

इस नये सहकारी कानून के लागू हो जाने से राज्य के सहकारिता आन्दालन को विकसित होन का एक सुदृढ आधार प्राप्त हुआ है। इस कानून की कतिपय महत्वपूण बात निम्न प्रकार स है —

(१) समिति को एक सक्षम आर्थिक इकाई के रूप मे विकसित करने के लिए यह निणय लिया गया है कि ग्रामीण समिति म कम स कम ५० परिवारा के सदस्य अवश्य सम्मिलित हा तथा पजियन के समय उसकी हिस्सा पूजी कम से कम ७५०) रु० हा। आर्थिक दृष्टि से पिछड़े हुए वर्गो का सहकारिता के क्षेत्र म लाने हेतु यह भी अनिवाय कर दिया गया है कि ग्रामीण

समिति के रजिस्ट्रेशन के लिये दिये जाने वाले आवेदन के समय उसकी सदस्यता का कम से कम १० प्रतिशत भाग आर्थिक दृष्टि से पिछड़े हुए वर्ग के लोगों का हो।

(२) ग्रामीण समिति में गाव का रजिस्टर्ड महाजन केवल साधारण सदस्य ही बन सकेगा किसी प्रकार का ऋण उसे नही प्राप्त हो सकेगा। समिति का वह पदाधिकारी भी नही हो सकेगा।

(३) फाइनसिंग बैंको में कोई भी व्यक्तिगत सदस्य नही होगा।

(४) यदि कोई समिति किसी के सदस्यता आवेदन पर १ महीने की अवधि मे अपना निर्णय न देगी, तो निर्णय न देने या अस्वीकृत करने की स्थिति मे उस व्यक्ति को यह अधिकार होगा कि वह ६० दिन मे रजिस्ट्रार को अपील कर सके।

(५) एक व्यक्ति एक से अधिक शीर्ष और केन्द्रीय सहकारी सगठन का एक साथ सदस्य नही बन सकेगा।

(६) समितियो के पदाधिकारियो को उनकी सेवाओ के लिये ओनेरेरियम दिया जा सकेगा।

(७) प्रत्येक समिति को अपने लाभ में से एक निश्चित प्रतिशत शिक्षा कोष में देना होगा।

(८) अपील सुनने के लिये एक ट्रिब्यूनल की स्थापना की जाय।

**सहकारी ऋण —**

सहकारी सस्थाओ को ऋण सुविधायें उपलब्ध कराने के लिये राज्य मे ३ शीर्ष सहकारी सस्थाए काम कर रही है (१) राजस्थान राज्य सहकारी बैंक लि० (२) राजस्थान राज्य सहकारी भूमि विकास बैंक लि० (३) राजस्थान राज्य औद्योगिक सहकारी बैंक लि०।

जिला स्तर पर २५ केन्द्रीय सहकारी बैंकों की स्थापना की जा चुकी है तथा प्राथमिक भूमि विकास बैंको की सख्या ८२ है।

तृतीय पंचवर्षीय योजना के प्रथम चार वर्षों १९६१ ६२, १९६२ ६३, १९६३-६४ और ६४-६५ में अल्प व मध्यकालीन ऋण क्रमश ५३६ लाख, ५०६ लाख, ४६६ लाख और ५८१ लाख रुपया दिया गया। अल्प व मध्यकालीन ऋण वितरण की प्रगति वर्ष १९६४-६५ मे सतोषजनक रही है और इस बात के लिये पूर्ण प्रयास किये जा रहे हैं कि अधिक से अधिक ऋण वितरण किया जा सके।

ऋण के हाट बाजारो से कड़ी वसूल करके प्राथमिक कृषि समितियो को दिये जाने वाले ऋण की वसूली उनकी उपज से करने के प्रयास किये जा रहे हैं। इसके लिये क्रय विक्रय समितियो मे प्रशिक्षित अनुभवी व कुशल व्यवस्थापक उपलब्ध कराये जा रहे हैं। अब तक २६ व्यवस्थापक, ४६ निरीक्षक और १४ सहायक निरीक्षको को क्रय विक्रय का प्रशिक्षण दिया जा चुका है।

**योजनाबद्ध विकास —**

प्रथम पचवर्षीय योजना के अन्तर्गत समितियो का योजनाबद्ध तरीके से यद्यपि विकास नहीं किया जा सका परन्तु मोटे तौर पर यह लक्ष्य निर्धारित किया गया कि योजना के अन्त तक समितियो की सख्या

३५६० से बढ कर ६००० हो जाय । इस लक्ष्य की तुलना म योजना के अन्त तक राज्य की समितिया की सख्या ६६१६ हुई तथा उसकी सदयस्ता ? ३ लाख तक पहुँच गई । इस प्रकार से १६ प्रतिशत गाव और ५ प्रतिशत ग्रामीण परिवार याजना के अ तगत सहकारिता के क्षेत्र म लाये जा सके । इसके अतिरिक्त इस अवधि म १ शीप सहकारी बक व १० केन्द्रीय सहकारी बैंको की स्थापना की गई व १ सहकारी प्रशिक्षण स्कूल खोला गया ।

राज्य की द्वितीय पचवर्षीय योजना का सहकारिता विकास कायक्रम अखिल भारतीय ग्रामीण ऋण सर्वेक्षण कमेटी की सिफारिश के आधार पर किया गया । राष्ट्रीय विकास परिपद के १९५८ के प्रस्ताव से सहकारिता आन्दोलन के इतिहास मे क्रा तकारी परिवतन हुए जिसके परिणाम स्वरूप आन्दोलन को जो जन आ दोलन का रूप देने एव गावो को इकाई मानकर सहकारी समितिया का गठन करने का निश्चय किया गया । यह भी निश्चय किया गया कि ग्राम स्तर का सामाजिक व आर्थिक विकास ग्राम समितिया एव पचायता के माध्यम से किया जाय । प्रस्ताव म यह भी सिफारिश की गई कि शीघ्रतिशीघ्र सम्पूण ग्रामीण जन सख्या को सहकारिता के क्षेत्र म लाया जाय, परन्तु यह काय तृतीय पचवर्षीय योजना तक पूण हो जाना चाहिये ।

इन लक्ष्यो को ध्यान मे रखते हुए सहकारिता विकास की द्वितीय पचवर्षीय योजना के लक्ष्यो को पुनगठित किया गया और विकास का कायक्रम निर्धारित किया गया । इसके परिणाम स्वरूप ५९ प्रतिशत गावा और २६ प्रतिशत ग्रामीण परिवारा को याजना के अ त तक सहकारिता के क्षेत्र मे लाया जा सका । शीप सहकारी क्रय-विक्रय समितिया की स्थापना के साथ साथ राज्य की प्रमुख १०५ मडियो म क्रय विक्रय सहकारी समितिया की स्थापना की गई । जसलमेर का छोडकर अ य सभी जिलो म केन्द्रीय सहकारी बक गठित किये गये । इसके अलावा १ केन्द्रीय भूमि विकास बक व २८ प्राथमिक भूमिविकास बैंका की स्थापना की गई । माल सावार ने के क्षेत्र मे जयपुर क्रय-विक्रय सहकारी समिति को दाल मिल स्थापित करने हेतु आर्थिक सहायता प्रदान की गई । इसके अतिरिक्त बिलाडा और बारोदिया की क्रय विक्रय और काटन जिनिंग समितिया का दो काटन जिनिंग मिल के लिये आर्थिक सहायता भी दी गई । केकडी मे ऊन के क्रय-का गठन किया गया । औद्योगिक समितिया को सहायता देने हेतु १ औद्योगिक विक्रय सहकारी बक की स्थापना की गई ।

सहकारी शिक्षा के प्रसार हेतु राजस्थान राज्य सहकारी सघ एव २६ जिलो म जिला सहकारी सघा की स्थापना की गई । इस काय हेतु ५२ शक्षणिक इकाइयो को आर्थिक सहायता प्रदान की गई । सहकारी प्रशिक्षणालया की सख्या बढाकर ३ कर दी गई ।

द्वितीय पचवर्षीय योजना का मूल वित्तीय प्रावधान १६४ लाख रुपये था जिसे परिवर्तित लक्ष्यो के अनुसार बढकर २०२ लाख रुपय कर दिया गया । इस वित्तीय प्रावधान मे से योजना के अन्त तक १९२ ८७ लाख रु० व्यय किया गया ।

तृतीय पचवर्षीय योजना के अन्तगत राज्य के सम्पूण ग्रामा और ६७ प्रतिशत ग्रामीण परिवारा को सहकारिता के क्षेत्र म लाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया परन्तु आर्थिक कठिनाइयो के कारण ४५०० नई

सेवा सहकारी समितियो के लक्ष्य को घटाकर ४००० कर दिया गया। इसके परिणाम स्वरूप, ग्रामीण परिवारो को समितियो के क्षेत्र मे लाये जाने के ६७ प्रतिशत लक्ष्य को घटाकर ५० प्रतिशत कर दिया गया। सहकारी विकास के लिये योजना मे ४०० लाख रुपये का प्रावधान किया गया था जिसे घटाकर प्लान की कोर म २६६ ६८ लाख रु० कर दिया गया। इस प्रावधान के अन्तगत योजना के प्रथम चार वर्षों मे कुल व्यय १६७ ०७ लाख रुपये हुआ। वष १६६५ ६६ के लिये ७८ लाख रु० का प्रावधान रखा गया है।

**सेवा सहकारी समितियां —**

द्वितीय पचवर्षीय योजना के अंतिम दो वर्षों मे ३८६३ नई सेवा सहकारी समितिया बनाई गइ जबकि तृतीय पचवर्षीय योजना के प्रथम चार वर्षों मे २५६८ नई सेवा सहकारी समितिया बनाई गई हैं।

**लघु आकारी प्राथमिक कृषि ऋणदात्री समितियों का पुनगठन —**

विद्यमान ग्रामीण ऋणदात्री समितियो का पुनगठन करन के कायक्रम के अन्तगत उन समितिया को छोडकर जो कि इस काय के लिये अनुपयुक्त पाई गईं, ७० प्रतिशत विद्यमान समितिया के पुनगठन का लक्ष्य निधारित किया गया। इसके परिणामस्वरूप द्वितीय पचवर्षीय योजना मे ३२४४ प्रायमिक ग्रामीण समितिया को पुनगठित किया गया और तृतीय पचवर्षीय योजना के अन्तगत १००० समितिया को पुनगठित करन का लक्ष्य रखा गया।

समितिया के पुनगठन करने के लिये यह लक्ष्य निर्धारित किया गया कि उसकी सदस्यता ३०० और हिस्सा पूजी ६००० रु० हो। इस प्रकार से य समितियां ३ से ५ वर्षो म सक्षम इकाइया के रूप मे विकसित हो सकती हैं। इस प्रकार की समितियो की वार्षिक आय १५०० रु० होनी चाहिये। भारत सरकार ने भी अभी हाल ही मे यह निश्चय किया है कि समितिया को पुनगठित किया जाय ताकि वे सक्षम इकाई के रूप मे काय कर सकें। यह आशा की जाती है कि राज्य म ८,००० सक्षम इकाइयां इन समितियो की बनाई जायेंगी।

**केन्द्रीय सहकारी बक —**

तृतीय पचवर्षीय योजना के अन्तगत यह प्रस्ताव किया गया है कि केन्द्रीय सहकारी बको की ५० नई शाखायें स्थापित की जायें। इस लक्ष्य म से योजना के प्रथम चार वर्षों मे ४० शाखाओ की स्थापना की जा चुकी है और अनुमान है कि योजना के अन्त तक शेष १० शाखाओ की और स्थापना की जा सकेगी।

**प्राथमिक भूमि विकास बक —**

दीघकालीन ऋण वितरण के लिये १ केन्द्रीय सहकारी भूमि विकास बक राज्य स्तर पर एव २५ प्राथमिक भूमि विकास बैंक जिला या सब डिवीजन स्तर पर, द्वितीय पचवर्षीय योजना के अन्त तक गठित

किये जा चुके थे। तृतीय पचवर्षीय योजना म ऐसे २५ बैंको की स्थापना का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। ६२ ६३ व ६३-६४ मे योजना आयोग द्वारा कोई लक्ष्य स्वीकार नही किये गये और वप ६४ ६५ म ३ बैंकों की स्थापना की गई। प्रत्येक भूमि विकास बक को ३ वर्षों म ५,००० रु० का व्यवस्थापकीय अनुदान दिया जाता है।

सहकारी क्रय विक्रय समितियां —

एक शीप क्रय-विक्रय सहकारी समिति और १०५ क्रय विक्रय सहकारी समितिया का गठन द्वितीय पचवर्षीय योजना के अन्त तक किया जा चुका था। इन समितियो के गठन का मूल उद्देश्य कृपको की उपज की बचत की बिक्री की व्यवस्था तथा बीज, रासायनिक खाद, व कीटनाशक औषधिया उपलब्ध करना है। ये समितिया राज्य की प्राय सभी मडियो के क्षेत्र मे स्थापित की गई हैं। तृतीय पचवर्षीय योजना के प्रथम चार वर्षों मे ६ प्राथमिक क्रय-विक्रय सहकारी समितिया का गठन किया गया है। फल व सब्जी के क्रय-विक्रय हेतु १ सहकारी समिति का गठन हुआ है। वप ६४-६५ मे ३ प्राथमिक क्रय विक्रय सहकारी समिति का गठन किया गया और ६५ ६६ मे ऐसी ३ समितियो के गठन का लक्ष्य निर्धारित किया गया। इन समितियो को सुदृढ बनाने के लिये राज्य सरकार की ओर से हिस्सा पूजी अशदान, ऋण और गोदाम निमाण करने के लिये वित्तीय सहायता दी जाती है। अब तक ११४ क्रय विक्रय सहकारी समितिया को यह सुविधा उपलब्ध कराई जा चुकी है।

१५० ग्रामीण गोदामा को द्वितीय पचवर्षीय योजना मे आर्थिक सहायता प्रदान की गई। तृतीय पच वर्षीय योजना मे मूल लक्ष्य इन गोदामा का २५० रखा गया था परन्तु उसे अब प्लान के बारे मे घटाकर १२५ कर दिया गया है। राज्य सरकार द्वारा प्रदान की गई आर्थिक सहायता से शीप क्रय विक्रय सहकारी समिति ने २ गोदामो का निर्माण करा लिया है।

माल सवार समितियां —

सहकारी माल सवार समि यो की स्थापना की दशा मे बहुत अधिक प्रगति कर सकना सम्भव नही हुआ है, परन्तु फिर भी विभिन्न समितियो को हिस्सा पूजी अशदान और व्यवस्थापकीय अनुदान के रूप मे ३१ ३ ६५ तक ३ ६४ लाख रुपयों की सहायता प्रदान की जा चुकी है। तृतीय पचवर्षीय योजना के अन्तगत २ कॉटन जिनिंग प्लाट २ तेल मिल २ मूगफली छीलने के कारखाना का लक्ष्य प्रारम्भ मे रखा गया था, परन्तु अब उसे घटाकर १ काटन जिनिंग १ दाल मिल, १ मूगफली छीलने का कारखाना कर दिया गया है। एक चीनी मिल और ६ चावल मिल भी स्थापित करने का इस वष म लक्ष्य है।

सहकारी कृषि समितियां —

द्वितीय पचवर्षीय योजना के अन्त तक सभी प्रकार की सहकारी कृषि समितियो की सख्या ८२१ थी। इनम सयुक्त सामूहिक, टीनेण्ट और अच्छी कृषि सहकारी समितिया सम्मिलित थी। सहकारी खेती के

अन्तगत अब केवल २ प्रकार की समितियों को ही वर्गीकृत किया गया है जो सामूहिक व सयुक्त समितिया हैं। ३० ६-६५ तक इस प्रकार की राज्य म ६०० सहकारी कृषि समितिया काय कर रही थी। तृतीय पचवर्षीय योजना के अन्त तक ३०० समितिया पायलेट क्षेत्र में व १३५ गर पायलेट क्षेत्र मे स्थापित की जायेंगी।

सहकारी उपभोक्ता भण्डार —

सहकारी उपभोक्ता भण्डारा के गठन एव पुनर्गठन का काय तृतीय पचवर्षीय योजना के अन्तगत सव प्रथम हाथ मे लिया गया। मूल प्रस्तावा को योजना के कोर म घटाकर २५ प्रायमिक उपभोक्ता भण्डारों के गठन करन एव १ होलसल भण्डार बनाने का रखा गया। २६ प्राथमिक भण्डारा के पुनगठन का लक्ष्य निर्धारित किया गया। वप ६१ ६२ म १० नय भण्डार स्थापित किये गये और १० विद्यमान स्टोरो का पुनगठन किया गया। वप १९६२ मे इस योजना को केन्द्रीय योजना का स्वरूप प्रदान किया गया। वप ६२-६३ म जयपुर, जोधपुर, बीकानेर और अजमेर शहरा म ४ होलसेल भण्डारो और ५५ प्राथमिक भण्डारा की स्थापना की गई। ६३ ६४ म अलवर, गगानगर, कोटा व उदयपुर मे ४ होलसेल भण्डारा एव १०५ प्राथमिक भण्डारा का गठन किया गया। इस प्रकार से केन्द्रीय योजना के अन्तगत राज्य म चल रहे ८ होलसेल भण्डार एव १६० प्राथमिक भण्डार उपभोक्ताओ की सेवायें कर रहे हैं।

श्रमिक ठेका समिति —

राजस्थान सरकार ने श्रमिक ठेका समितिया को सक्षम इकाई बनाने के उद्देश्य से विभिन्न प्रकार की सहायता व सुविधायें प्रदान की हैं। इन सस्थाओ को राज्य के सावजनिक निर्माण विभाग का ठेका लेने की स्वीकृति है। इन्हें अरनेस्ट मनी या सिक्यूरिटी मनी जमा न कराने की छूट है। कतिपय नियमो के अन्तगत इन समितियो को १ लाख रुपये तक का काम दिया जा सकता है। ग्राम पचायतें, पचायत सहकारी समितिया श्रमिक ठेका समितिया, भारत सेवक समाज आदि सस्थाओ द्वारा किय गये कामा के बिल पर अग्रिम मासिक भुगतान करन की छूट दी हुई है।

तृतीय पचवर्षीय योजना के अन्तगत २५० श्रमिक ठेका सहकारी समितिया के गठन का लक्ष्य निर्धारित किया गया। इस लक्ष्य के मुकाबले मे ६४ ६५ तक १०४ समितिया व सघा का गठन किया जा चुका है। ६५-६६ म २५ समितिया एव सघो का गठन किया जायगा।

सहकारी शिक्षा एव प्रशिक्षण —

विभाग के वरिष्ठ अधिकारियो को पूना के सहकारी प्रशिक्षण और रिसच इन्स्टीट्यूट म प्रशिक्षण दिया जाता है। मध्यवर्गीय अधिकारियो को पहले क्षेत्रीय प्रशिक्षणालय इन्दौर म प्रशिक्षण के लिये भेजा जाता था। परन्तु अब उन्ह कोटा मे ही प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। कनिष्ठ अधिकारियो क प्रशिक्षण

के लिये राज्य म जयपुर, जोधपुर व भरतपुर म ३ प्रशिक्षणालय काय कर रहे हैं। इन स्कूलो के प्रशिक्षण क्षमता के अनुसार अब तक ४३२० सबग्रोर्डनिट पसनल्स को प्रशिक्षण दिया जाना चाहिये था, परन्तु अभी तक केवल २२३८ व्यक्तियो को ही प्रशिक्षित किया जा सका है।

गर सरकारी व्यक्तियो को प्रशिक्षण देने की व्यवस्था राज्य म की जा चुकी है। यह प्रशिक्षण ६० भ्रमणकारी दलो के माध्यम से दिया जा रहा है। गर सरकारी व्यक्तियो के प्रशिक्षण का कायक्रम राज्य स्तर पर राजस्थान राज्य सहकारी सघ एव जिला स्तर पर सहकारी सघो की देख रेख म किया जाता है। वष ६४-६५ के अन्त तक ४७७६ पदाधिकारियो, ४६३८८ कायकारिणी समिति के सदस्यो और २ १६,६०४ सदस्यो व सम्भावित सदस्यो को इस योजना के अन्तगत प्रशिक्षण दिया जा चुका है।

प्रचार —

तृतीय पचवर्षीय योजना के अन्तगत प्रचार के साथ-साथ राज्य स्तर के सहकारी सघ और जिला स्तर के जिला सहकारी सघो म भी प्रचार प्रकाशन हेतु वित्तीय प्रावधान रखा गया है। यह काय प्रकाशन, क्षत्रीय प्रचार, समाचार और समितियो आदि के आयोजन द्वारा किया जाता है। विभाग के प्रचार हेतु मुख्यावास के अतिरिक्त जयपुर, जोधपुर व उदयपुर म ३ क्षेत्रीय प्रचार घटक काय करते है। इसके अलावा नाटक के माध्यम से सहकारिता की भावना को गाव-गाव म पहुँचाने के उद्देश्य से सहकारी रगमच भी काय करता है। मुख्यावास से सहकारी योजना, कार्य क्रम एव उपलब्धियो के समाचार, लेख व प्रकाशन आदि का काय किया जाता है।

चतुथ पचवर्षीय योजना —

चतुथ पचवर्षीय योजना म सहकारिता के विकास के लिये ६७३ लाख रुपय का प्रावधान प्रस्तावित किया गया है। इस योजना के अन्त तक ६० प्रतिशत ग्रामीण परिवारो को सहकारिता के क्षेत्र म लाय जाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

योजना अवधि म ५०० नई सवा सहकारी समितियो, ४० मार्केटिंग समितियो ५ काटन जिनिंग एण्ड प्रसिग यूनिटस ७ तल मिल ५ ग्राउण्ड नट डिकार्टिकेटस १ चीनी फक्टी ५८० कृषि समितियो (पायलेट प्राजक्टस) २५ प्राइमरी लण्ड विकास बक, १ केन्द्रीय सहकारी बैंक १०० केन्द्रीय सहकारी बैंको की शाखाय ५० प्राइमरी श्रमिक ठेका समितियो और ५ श्रमिक ठेका समितियो की यूनियन्स, २ कोल्ड स्टोरेज १ प्रिंटिंग प्रेस १० वॉशरमेन्स सहकारी समितियो ४ रीजनल मार्केटिंग समितियो ४० ग्रेडिंग यूनिट २०० कृषि क्रेडिट समितियो, १५ अरबन समितियो ५० लिफ्ट सिंचाई समितियो और २०० वन श्रमिक सहकारी समितियो गठित करने के लक्ष्य निर्धारित किय गये हैं। इसके अलावा गोदाम सुविधाओ को ग्राम स्तर पर उपलब्ध कराने के उद्देश्य से १३०० ग्रामीण गोदामो के निर्माण का लक्ष्य रखा गया है।

ताराचन्द काला

# कृषि विकास की झलक

राजस्थान को सामान्यत राजपूतो की जन्मभूमि अथवा विशाल मरुस्थल के रूप मे लोग जानते हैं। प्राचीन काल मे तलवार और भाला से शौर्य प्रदर्शित करने के लिये प्रसिद्ध यहा के निवासी आज उसी तरह हल-फावड़े पकड़े साहस पूर्ण उपलब्धिया करने म पीछे नही रहे हैं। प्रदेश की शुष्कता, अनावृष्टि एव अकाल के विरुद्ध उन्होंने डटकर मोर्चा लिया है और सभी प्राकृतिक प्रकोप एव असुविधाओ के उपरान्त भी गत-वर्षों म कृषि-उत्पादन बढ़ाने म सफल हुए हैं। कई लोगो को यह जानकर आश्चर्य होगा कि अन्न के सबध म अभावपूर्ण माना जाने वाला यह राज्य, आज न केवल आत्म निर्भर ही बन गया है, अपितु दूसरे राज्यो को खाद्यान्न एव सब्जियाँ निर्यात भी कर रहा है। इस अभूतपूर्व परिवर्तन का मुख्य श्रेय यहा के किसान को है, जो आज अपनी शुष्क व बजर भूमि का उवरा बनाने के लिय कृत-सकल्प है।

कृषि हमारे आर्थिक विकास का प्रमुख आधार है और इसीलिये देश की विकास योजनाओ म कृषि को विशेष महत्व दिया गया है। आजकल सकटकालीन स्थिति म कृषि उत्पादन का महत्व और भी अधिक बढ गया है। इतिहास बतलाता है कि युद्ध जीतने के लिये भोजन सामग्री का महत्व, हथियार व गोला बारूद से भी अधिक है। देश की सुरक्षा के बाद कृषि उत्पादन बढाना हमारा दूसरा मोर्चा है। ऐसी स्थिति म यह आवश्यक है कि कृषि उत्पादन कार्यक्रम को इस प्रकार नियोजित किया जाय कि हम कम से कम समय म अधिक से अधिक लाभ मिल सके।

कृषि विकास के लिए नियोजित कार्यक्रम की सफलता इस बात पर निर्भर है कि हम आवश्यकतानुसार उत्पादन कर भविष्य के लिये उत्तरोत्तर वृद्धि का माग प्रशस्त कर सकें और हमारे देश म आज, खाद्यान्न की आवश्यकता एव उत्पादन म जो अन्तर अनुभव किया जा रहा है उसे दूर कर हम खाद्यान्न के सबध मे पूर्णत आत्मनिर्भर बन सकें, हमारे कल कारखानो और उद्योगो के लिए पर्याप्त मात्रा म कच्चा माल सुलभ हो सके और हम अपना निर्यात बढाकर अधिकाधिक विदेशी मुद्रा प्राप्त कर सकें।

वस्तुत कृषि उत्पादन म एक साथ इतनी वृद्धि करना सरल कार्य नही है, क्योकि कृषि-कार्य दूसरे उद्योगो की अपेक्षा प्राकृतिक साधनो पर अधिक निर्भर करता है। यदि प्रकृति अनुकूल नही है तो अन्य प्राविधिक साधनो की सहायता के उपरान्त भी सभावित लाभ की आशा नही की जा सकती। इसलिए राज्य

म प्रारम्भ किये गये कृषि उत्पादन कायक्रम म इस बात का विशष ध्यान रखा गया है कि प्राकृतिक विषमताओ और सदिग्धताओ से जितना अधिक और जितना जल्दी किसान का बचायें उतनी ही तीव्र गति से विकास समव होगा तथा कृषि विकास के कायक्रम के प्रति किसान का विश्वास भी सुदृढ हो सकेगा। इसके साथ ही उन साधनो को अधिकाधिक जुटाया जा रहा है जिन्ह काम म लेकर किसान सरलता स उन्नत कृषि को अपना सक और अपने उत्पादन का उचित मूल्य भी प्राप्त कर सकें।

विभिन्न विभागो की प्रवत्तिया जैसे सामुदायिक विकास, सहकारिता, सिंचाई, पशुपालन, भूमि-सुधार आदि भी कृषि-विभाग द्वारा सचालित उत्पादन कायक्रम की पूरक हैं। राजस्थान मे कृषि विकास का इतिहास बहुत लम्बा नही है। पन्द्रह वष पूव यहा इस दिशा मे सुनियोजित एव सगठित कोई कायक्रम नहा था। विभिन्न रियासतो के एकीकरण के बाद एक ओर पीडिया से पीडित किसान को भूमि सुधार कानूना द्वारा राहत मिली और दूसरी ओर उसकी आर्थिक स्थिति सुधारने एव कृषि उत्पादन बढान के लिए कायक्रम प्रारम्भ किये गये। इन कायक्रमो के परिणाम स्वरूप राज्य की खाद्यान्न स्थिति म एक क्रान्तिकारी परिवतन आया। राज्य मे जहा पहले ५० हजार से एक लाख टन खाद्यान्न का अभाव अनुभव किया जाता था, प्रथम पचवर्षीय योजना के अन्त तक राज्य ने न केवल आत्म-निभरता ही प्राप्त कर ली अपितु दूसरे राज्यो को खाद्यान्न नियात करन की क्षमता भी प्राप्त कर ली।

राज्य की द्वितीय योजना प्रथम की अपेक्षा अधिक विस्तृत थी और इसम खाद्यान्न फसलो का उत्पादन बढाने के साथ साथ व्यावसायिक फसलो की उपज बढान पर भी विशेष बल दिया गया। कृषि उत्पादन कायक्रमो का विकास एव विस्तार किया गया और प्रगति की प्रक्रिया निरतर जारी रखी गई। इन प्रयत्नो के परिणाम स्वरूप योजना के अन्त मे उत्पादन के लिये निर्धारित लक्ष्यो से भी अधिक उपलब्धि हुई। उत्पादन म वृद्धि होने के साथ ही प्रथम एव द्वितीय योजना की सही अर्थो मे विशेष सफलता यह है कि कृषि कायक्रम से किसानो को अपने खेती के तरीको म सुधार कर तरक्की करने की प्रेरणा मिली है और आज वे क्षमता के अनुसार कृषि की उपज बढाने के लिये प्रयत्नशील है। नया कायक्रम अपनाने में स्वभावत जो भय एव सशय रहता है वह कम हो गया है।

तृतीय पचवर्षीय योजना के लिये कृषि के अन्तगत जो कायक्रम बनाया गया उसमे राज्य मे उपज बढाने की समावनायें और भी उज्ज्वल हो गई। इस योजना की एक महत्वपूर्ण बात यह है कि योजनायें अधिकतर छोटी इकाई पर तयार हुई हैं। जनतान्त्रिक विकेन्द्रीकरण के कारण इन योजनाओ के सचालन का भार भी जन प्रतिनिधियो पर और छोटे सगठनो पर अधिक पडा है। इस सबंध मे प्रारम्भ म, यह समावना व्यक्त की जा रही थी कि परिवर्तित परिस्थिति के कारण काय म कुछ शिथिलता आ जायगी, विकास का सतुलन बिगड जायगा तथा जिस गति से हम आगे बढे हैं वह धीमी हो जायगी परन्तु इस सबध म अब कोई सशय नही रहा है। पचायत एव पचायत समितियो ने कृषि विकास म महत्वपूर्ण योग दिया है और कृषि विकास कायक्रम एक ऊपरी योजना नही स्वय ग्रामवासियो की योजना का रूप लेती जा रही है।

कृषि के अन्तगत तृतीय योजना म द्वितीय योजना से ३२ प्रतिशत अधिक उत्पादन करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया। इस योजना मे उत्पादन के लक्ष्य इस प्रकार निश्चित किये गये—

| फसल | उत्पादन स्तर (१९६०-६१) | अतिरिक्त उत्पादन लक्ष्य | कुल उत्पादन |
|---|---|---|---|
| खाद्यान्न (लाख टन) | ४६ ६४ | १५ ०० | ६१ ६४ |
| तिलहन (लाख टन) | २ ४२ | १ ५० | ३ ९२ |
| कपास (लाख गाठ) | १ ७७ | १ ५२ | ३ २९ |
| गन्ना (लाख टन) | ६ ५९ | १० ०० | १६ ५९ |

तृतीय पचवर्षीय योजना के अन्तगत खाद्यान्न एव दूसरी फसलो का उत्पादन निम्न प्रकार हुआ है—

| फसल | तृतीय योजना के लक्ष्य | उत्पादन १९६१-६५ | अनुमानित उत्पादन १९६५ ६६ |
|---|---|---|---|
| खाद्यान्न (लाख टन) | १५ ०० | ९ ६२ | १ ७२ |
| तिलहन (लाख टन) | १ ५० | ० ८६ | ० ०३ |
| कपास (लाख गाठ) | १ ५२ | १ ३१ | ० १९ |
| गन्ना—गुड, (लाख टन) | १ ०० | ० ४९ | ० ३३ |

योजना के प्रथम चार वर्षों म वास्तविक कृपि उत्पादन इस प्रकार हुआ है—

| फसल | १९६१-६२ | १९६२ ६३ | १९६३-६४ | १९६४ ६५ |
|---|---|---|---|---|
| खाद्यान्न (लाख टन) | ५४,८० | ४९ ६९ | ३९ ७९ | ५१ ७९ |
| तिलहन | २ ५६ | ३ ५८ | १ ९४ | २ ५२ |
| कपास (लाख गाठ) | १ ६८ | १ ६० | १ ८४ | १ ८६ |
| गन्ना—गुड (लाख टन) | ० ७८ | ० ८१ | ० ५७ | ० ६६ |

पिछले दा वर्षों म राज्य मे वर्षा की कमी रही है और १९६५ ६६ मे भी वर्षा का अत्यधिक अभाव रहने से फसलो पर बहुत बुरा प्रभाव पडा है। खरीफ की फसल अनावृष्टि के कारण अच्छी नहीं हो सकी और लगातार वर्षा की कमी होने के कारण कुआ व जलाशया म भी पानी की बडी कमी आ गई, जिससे रबी की फसल के लिये पर्याप्त मात्रा म पानी नहीं मिल सका। साथ ही बडी सिंचाई योजनाओ—राजस्थान नहर, भाखड़ा एव चबल से भी निर्धारित मात्रा म सिंचाई के लिये पानी उपलब्ध नही हो सका। सभी क्षेत्रो मे

पानी की कमी से खरीफ और रबी दोना फसला का लगभग एक तिहाई कृषि क्षेत्र कम हो गया। अनुमान पत्रों के अनुसार खाद्यान्न एव दूसरी फसला का क्षेत्रफल इस प्रकार है—

| फसल | अन्तिम अनुमान पत्रानुसार १६६४-६५ | प्रथम अनुमान पत्रानुसार १६६५ ६६ |
|---|---|---|
| खाद्यान फसलें : | | |
| खरीफ | २१० ६१ लाख एकड | १८० ३१ लाख एकड |
| रबी | ७६ १२ " | ५१ ४० " |
| | योग –२८६ ७३ लाख एकड | २३१ ७१ लाख एकड |

दूसरी फसलें

| | | |
|---|---|---|
| तिलहन- | २६ ५० | २२ ७२ |
| कपास (तृतीय अनुमान पत्रानुसार) | ६ ४५ | ५ ५४ |
| गन्ना (गुड द्वितीय अनुमान पत्रानुसार) | १ ०६ | ० ६१ |

पिछले वर्षों म विस्तार कायक्रम के फलस्वरूप किसानों मे उन्नत कृषि की ओर जागति पदा हुई और किसाना ने उन्नत साधनों, रासायनिक खाद कीट एव व्याधि नाशक औषधियो के उपयोग के महत्व को समझा। कृषि उपज से ऊचे मूल्यो के मिलने के कारण किसानो ने इन साधनो को काम म लेने मे और भी अधिक रुचि दिखाई, परन्तु दुर्भाग्य से विदेशी मुद्रा की कमी एव देश मे इन पदार्थों को बनाने के लिये आवश्यक कच्चे माल की कमी के कारण एक नई कठिनाई सामने आई। उवरक एव कीट पतग नाशक औषधियाँ पूरी माग के अनुसार उन्हे उपलब्ध न हो सकी। १६६५ ६६ वष म एक लाख टन नत्रजनीय उवरक के स्थान पर केवल २८ हजार टन उवरक ही विशेष प्रयत्न करने पर मिल पाया। इसी प्रकार तीस हजार टन सुपरफास्फेट की माग के स्थान पर करीब साढे चार हजार टन सुपरफास्फेट प्राप्त हुआ। कीट पतग नाशक औषधियो जो कि विदेशो से आती हैं अथवा जिनके बनाने के लिए विदेशी रसायन काम मे लिये जाते हैं भी कमी रही। जहा वर्षा की कमी से क्षेत्रफल और उपज पर बुरा प्रभाव पडा वहा इन साधनो की कमी ने प्रति एकड पर अपना असर डाला। अनुमान है कि इन सबके बुरे प्रभाव के कारण कृषि उत्पादन करीब ५० प्रतिशत कम होगा। यह स्थिति केवल राजस्थान की हा नहीं है साधनों की कमी देश व्यापी है तथा दुर्भाग्य से सारे देश म ही अनियमित एव कम वर्षा हुई।

राज्य म कृषि उत्पादन बढाने के लिये गत वर्षों मे जो प्रयत्न किये जा रहे हैं, उनका विवरण इस प्रकार है--

कृषि उत्पादन को तेजी से बढाने के लिये राजस्थान की उत्पादन क्षमता को ध्यान मे रखते हुए चुने हुए जिलो में सघन खेती का कायक्रम रखा गया। यह विशेष कायक्रम खाद्यान्न फसला के अन्तगत ज्वार

के लिये कोटा व भालावाड, बाजरे के लिये अलवर तथा गेहू के लिये जयपुर भरतपुर, श्रीगगानगर, चित्तौडगढ, एव उदयपुर जिला म प्रारम्भ हुआ । कपास के लिये श्रीगगानगर व भीलवाडा तथा मू गफली के लिय जयपुर जिले की लालसोट एवम् चित्तौड जिले की छोटी सादडी व निम्बाहेडा पचायत समितियो मे प्रारम्भ किया गया । सघन खेती का विस्तृत कायक्रम बनाकर उसके अनुसार कार्यों का सचालन किया जा रहा है । पचायत समितियो मे इस काय को तेजी से बढाने के लिये अतिरिक्त कृषि प्रसार अधिकारी एव ग्राम सेवको की नियुक्ति की गई तथा इस कायक्रम के सम्बध म आवश्यक प्रशिक्षण की व्यवस्था भी की गई है । कायक्रम को व्यवस्थित रूप से चलाने के लिय पिछली खरीफ म २२०५० कृषि परिवारो की तथा रबी म ५०२०० कृषि परिवारो की फाम योजनायें बनाई गइ । इसके अतिरिक्त देश की सकटकालीन स्थिति मे खाद्यान उत्पादन को बढाने के लिये विशेष अभियान क रूप मे विभिन्न कायक्रम प्रारम्भ किये गये ।

सिंचाई के अन्तगत वतमान सुविधाओ म पूरा लाभ उठाने के लिये जहा जल सग्रह है वहा लिफ्ट इर्रीगेशन द्वारा ४००० एकड क्षेत्र मे अतिरिक्त सिचाई करने का निश्चय किया गया ।

लघु सिंचाई योजना के अन्तगत १६६१ ६५ मे लगभग ४८२ २४ हजार एकड अतिरिक्त क्षेत्र म सिंचाई सुविधायें प्राप्त हुई । कृषि उत्पादन म सबसे ज्यादा जोर लघु सिंचाई योजनाओ पर ही दिया गया है । तृतीय पचवर्षीय योजना मे इस कायक्रम के लिये ३२५ ०० लाख रुपये की धनराशि का प्रावधान किया गया था, परतु हमने इस मद पर करीब ७१५ ०० लाख रुपये व्यय किये है ।

इस कायक्रम को और तेजी से चलाने के लिये हैण्ड बोरिंग की स्कीम चालू की है, जिसके अन्तगत छोटे काश्तकारो के कूओ को गहरा किया जाता है । इस कायक्रम को आने वाले सालो म और भी अधिक सुदृढ बनाने का प्रस्ताव है । इसके अलावा कूओ को गहरा करने के लिये रिंग्स एव कम्प्रेशर मे बढोत्तरी की गई । कुछ पचायत समितिया ने भी कम्प्रेशर खरीदे हैं और उन्होने भी कूओ को गहरा करने का कायक्रम आरम्भ किया है । कुछ क्षेत्रो मे पचायत समितियो ने तालाबो और नालो पर सामूहिक रूप से पम्पिग सेट लगवाये हैं । गगानगर म टयूब वल्स का काम भी तेजी से प्रारम्भ हो गया है । इन सभी साधनो के फलस्वरूप लघु सिंचाई कायक्रम को काफी बल मिला है ।

राज्य म रासायनिक खाद की दिन-प्रति दिन लोकप्रियता बढती जा रही है । सघन खेती कायक्रम के अन्तगत जो प्रयत्न किये गये तथा कृषि विस्तार सगठनो द्वारा इस दिशा मे जो प्रदर्शनी लगायी गयी और समय समय पर जो अभियान आयोजित किये गये, उनसे किसानो म काफी जागृति आई है और वे रासायनिक खाद के महत्व को समझने लगे हैं । सन १६६४-६५ म लगभग ४७८०० टन नत्रजनीय उवरक एव १३००० टन सुपरफास्फेट किसानो मे वितरित किया गया । इस वष यद्यपि माग बहुत अधिक थी परन्तु हम उसे पूरा नही कर सके । रासायनिक खाद की कमी की पूर्ति के लिये कम्पोस्ट खाद बनाने पर विशेष बल दिया जा रहा है । यह कायक्रम ६ नगरपालिकाओं–जयपुर, अलवर, कोटा, उदयपुर, अजमेर और जोधपुर म प्रारम्भ कर दिया गया है । इस कायक्रम के अन्तगत २५ नगरपालिकाओ को परिवहन यत्र खरीदने के लिय ऋण दिया जा चुका है । इसके अतिरिक्त ?०० रानेरी छलनी बनवाकर विभिन्न नगरपालिकाओ को बाटी गई हैं ।

इसी प्रकार हरी खाद का भी अधिकाधिक प्रोत्साहन दिया गया है। नहरी क्षेत्रों मे हरी खाद बोने के लिये किसानो को मुफ्त मे पानी दिया जा रहा है। इस वर्ष पानी की कमी के कारण इस कायक्रम पर बुरा प्रभाव पडा है।

फसल-सरक्षण कायक्रम को महत्व देते हुए तृतीय पचवर्षीय योजना मे पूव निर्धारित लक्ष्यो म वृद्धि की गई। राज्य मे कायक्रम को सुचारु रूप से चलाने के लिये १०० फसल-सरक्षण दल स्थापित कर दिये हैं। प्रत्यक दल म एक फसल सरक्षण निरीक्षक एव दो फील्डमेन नियुक्त हैं और ये दल पचायत समितियो म काय करत है। पिछल वष से पौध सरक्षण दवाओ पर ५० प्रतिशत सहायता दी जा रही है, इस के अतिरिक्त ५० प्रतिशत सहायता पौध-सरक्षण के उपकरण खरीदन पर दी जाती है। सन् १९६५ ६६ म ३५ लाख एकड कृषि-क्षेत्र म फसल सरक्षण काय किया गया और इस वष लगभग ४४ लाख एकड म यह काय कर सकन का अनुमान है।

कपास एव गन्ने पर हवाई जहाज से दवा छिडकने (एरियल स्प्रे इग) का कायक्रम भी आरम्भ किया गया है। सन् १९६६-६७ म इस प्रोग्राम के अन्तगत २०,००० एकड का लक्ष्य रखा गया है। मूगफली मे एक विशेष प्रकार की लट लग जान के कारण फसल को २-३ सालो स काफी नुकसान हो रहा है। इस सम्बध मे प्रयोग किये जा रहे हैं और उनम हम को कुछ सफलता भी मिली है परन्तु फिर भी इस के अनुसधान काय को और तेजी से बढाने की आवश्यकता है। इस सम्बध मे भारत सरकार से भी सहायता के लिय पत्र व्यवहार किया जा रहा है और उसन आश्वासन दिया है कि इस वष वह इस लट की रोक थाम के लिय कुछ पाइलेट प्रोजेक्ट प्रारम्भ करेगी।

कृषि यन्त्रो को अधिकाधिक लोकप्रिय बनाने के लिय उनके प्रयोग प्रदशन की व्यवस्था की जा चुकी है और चार प्रदशन दल गावो म उन्नत-कृषि यन्त्रो का प्रदशन कर उन की उपयोगिता को समझाने के काय म लगे हुए हैं। कृषि वक्शाप का विस्तार किया गया है और अब कृषि यन्त्रो की उत्पादन-क्षमता आवश्यकतानुसार बढेगी। इस कायक्रम मे आने वाल सालो म और भी अधिक बल देन का प्रस्ताव है। इस हेतु चार क्षेत्रीय वकशाप स्थापित किय जा रह है। जिसके लिय आवश्यक निर्माण यन्त्र उद्योग विभाग से प्राप्त कर लिये गय हैं। ये वकशाप बहुत शीघ्र ही अपना काय प्रारम्भ कर देगे। यन्त्रो के निर्माण के सम्बध म भी अनुसधान काय चल रहा है, तथा यन्त्रो की काय क्षमता का सही रूप से आकने की पूरी व्यवस्था की जा चुकी है। इस भाग को और भी विस्तृत एव मजबूत करन का प्रस्ताव है।

जिला पाली और सिरोही म चल रह सघन कृषि कायक्रम के अन्तगत प्रगति हो रही है। गत वष के अन्त तक जिला पाली म २१ प्रतिशत तथा जिला सिरोही मे ३ प्रतिशत क्षेत्र इस कायक्रम के अन्तगत लिया जा चुका है तथा पाली में ४६ ७०० कृषक परिवार और जिला सिरोही म ३५०० कृषक परिवारो ने योजना के अनुरूप काय करना प्रारम्भ कर दिया है। सघन कृषि योजना के अन्तगत जो कदम उठाये गये उसके फलस्वरूप पाली जिले म ६१,००० टन और सिरोही जिले मे ७६ ००० टन खाद्यान्न उत्पादन की क्षमता हो गई है।

भू-सरंक्षण कार्यक्रम २० जिलों में चल रहा है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत सन् १९६१-६५ तक ६८,५७० एकड़ क्षेत्र में समोच्च रेखाबंदी और २,३६० एकड़ में टेरेसिंग किया गया। राजस्थान नहर क्षेत्र में लगभग ८,९४००० एकड़ भूमि में मिट्टी सर्वेक्षण किया जा चुका है। चम्बल अधीनस्थ क्षेत्र में पानी के भराव की बहुत गम्भीर समस्या है अतः इस समस्या को हल करने का कार्य प्रारम्भ कर दिया गया है और आशा की जाती है कि निकट भविष्य में हमको अन्तर्राष्ट्रीय सहायता कोष से भी इस कार्य के लिये आर्थिक सहायता मिल जायगी, जिस से हम इस कार्य को शीघ्र पूरा कर सकेंगे।

इस के अतिरिक्त Refinace Corporation की मदद से भी १,००० एकड़ भूमि का समतल करने का कार्यक्रम तैयार कर लिया गया है।

राज्य सरकार ने यह भी निश्चय किया है कि अकालग्रस्त क्षेत्र में भूमि सरंक्षण का कार्य आरम्भ कर दिया जाय। इस के लिये नागौर, जोधपुर, अजमेर और उदयपुर जिले चुन लिये गये हैं। इन क्षेत्रों में भू-सरंक्षण कार्य के लिये बजाय २५ प्रतिशत अनुदान के ५० प्रतिशत अनुदान देने की अनुमति भी दी गई है।

राजस्थान नहर क्षेत्र में भूमि को समतल करने का कार्य चल रहा है। बुलडोजर्स की काफी मांग है परन्तु विदेशी मुद्रा की कठिनाई होने के कारण ये मशीनें नहीं मिल रही हैं, जिस से कार्य में तेजी नहीं आ पा रही है। इस के लिये राज्य सरकार ने भारत सरकार को लिख रखा है। जैसे ही विदेशी मुद्रा मिल सकेगी बुलडोजर खरीद कर इस कार्य को तेजी से बढ़ाने का प्रस्ताव है। माही योजना अधीनस्थ क्षेत्र में भी मिट्टी सर्वेक्षण का कार्यक्रम प्रारम्भ कर दिया गया है। इसी तरह दूसरे मध्यम श्रेणी के योजना क्षेत्रों में भी सर्वेक्षण का कार्य प्रारम्भ करने का प्रस्ताव है।

किसानों को कृषि व हाट सम्बन्धी सुविधा देने के लिये कृषि-मंडी योजना प्रारम्भ कर दी गई है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत १०२ मंडियां नियमित की जा चुकी हैं। मार्केट रेगुलेशन ऐक्ट की कुछ धाराओं में उच्च न्यायालय द्वारा संशोधन की सलाह दी गई थी, वे संशोधन अब कर दिये गये हैं जिसके फलस्वरूप कृषि-मंडी योजना का कार्यक्रम अब तेजी से चल सकेगा।

उपरोक्त कार्यक्रमों के अतिरिक्त विभाग ने अन्य कार्यक्रमों पर भी बल दिया है जैसे घरेलू बागवानी आलू की खेती तथा अंगूर की खेती। इस के लिये राज्य की ओर से तकनीकी एवं आर्थिक सहायता दी जा रही है। राजस्थान में फल व सब्जी उत्पादन की अधिक क्षमता है। इसी प्रकार अंगूर की खेती के लिये भी यहाँ की जलवायु एवं मिट्टी बहुत ही उपयुक्त है। १९६५-६६ में लगभग ८५ एकड़ भूमि में अंगूर की खेती के लिये कनेक्शन व ऋण की व्यवस्था की गई थी और १९६६-६७ में ११० एकड़ भूमि में अंगूर की खेती कराने का प्रावधान है। इस कार्यक्रम के लिये कुछ जिलों को चुना गया है। उपरोक्त सभी कार्यक्रमों पर आने वाले सालों में, और भी अधिक बल देने का प्रस्ताव है।

आज देश में इस बात की आवश्यकता है कि हम प्रति एकड़ पैदावार बढ़ायें और ऐसी किस्मों का प्रयोग करें जिस से प्रति एकड़ अधिक उत्पादन प्राप्त हो सके। इसी दृष्टिकोण से पिछले वर्ष अधिक उत्पादन

क्षमता वाले सकर बीज की किस्मा के कुछ प्रदशन राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रा मे किय गय, जिनका परिणाम बहुत ही उत्साह वधक रहा है। सकर बाजरे की औसतन पदावार ४० मन प्रति एकड हुई। इसी तरह से सकर ज्वार की ३५ मन प्रति एकड पदावार हुई। सामायत इन दोनो फसला की उपज ४ और ६ मन प्रति एकड बढी है। इन प्रदशना से यह स्पष्ट हो गया है कि उन्नत विधियो को काम म लेने और साथ ही अधिक उत्पादन क्षमता वाले इन बीजा का प्रयोग करन से हम तजी स कृषि उत्पादन बढा सकते हैं।

इस वष के लिय नीचे लिखे लक्ष्य निर्धारित किये गये है —

| | |
|---|---|
| सकर बाजरा | १०,००० एकड |
| सकर मक्का | १५,००० ,, |
| सकर ज्वार | ५,००० ,, |
| सकर धान | १,००० ,, |
| मेक्सीकन गेहू | ५०,००० , |

इस क्षेत्रफल को और भी अधिक बढाने की हमारी क्षमता है परन्तु इसम जो कठिनाई आ रही है वह समय पर आवश्यकतानुसार बीज का उपलब्ध न होना तथा रासायनिक खाद का न मिलना है। इस मामल पर भारत सरकार से विस्तृत चर्चा की जा चुकी है और उसने यह आश्वासन भी दिया है कि इस सम्बन्ध म सारी व्यवस्था समय पर कर दी जायगी। इस कमी को पूरा करने के लिये हम साकर बीज राजस्थान म ही पदा करन की भी व्यवस्था कर रहे हैं।

एक अन्य महत्वपूर्ण कायक्रम, जिस पर अधिक जार दने की आवश्यकता है वह है क्वालिटी बीज उत्पादन। इसके लिये मौजूदा बीज उत्पादन केन्द्रो को अधिक सुदृढ बनाया जा रहा है।

कृपि-उत्पादन को बढान के हेतु मिट्टी-परीक्षण का भी बढाया जा रहा है। अभी तक हमारे पास केवल एक प्रयोगशाला इस काय के लिये जोधपुर म थी। इस साल हम एसी तीन और प्रयोग शालायें गगानगर कोटा तथा जयपुर म स्थापित करन जा रहे है। इनके भवन का निमाण लगभग पूण हो चुका है तथा इनके लिये आवश्यक यत्रादि प्राप्त किये जा रहे है।

चतुय पचवर्षीय योजना —

तृतीय पचवर्षीय याजना काल म कृषि उत्पादन-वृद्धि के लिय नियोजित कायक्रम स चतुय पचवर्षीय याजना का भविष्य काफी उज्ज्वल बन गया है। राज्य की प्रस्तावित चतुथ पचवर्षीय याजना म कृषि के अन्तगत आवश्यक लक्ष्य निर्धारित करते समय, जनसख्या म हान वाली वृद्धि, नागरिको के आहारीय स्तर मे उन्नति की आवश्यकता, राष्ट्रीय आय म हाने वाली वृद्धि का प्रभाव, प्राकृतिक प्रकाप, आक्रमणादि क समय उत्पन्न होने वाली स्थिति का मुकाबला करन के लिय साधनो की आवश्यकता, उद्योगों के

लिये कच्चे माल की बढती हुई माग आदि का ध्यान म रखा गया है। योजना म उत्पादन के प्रस्तावित लक्ष्य इस प्रकार हैं—

| फसल | आधार वष (१९६५ ६६) | अतिरिक्त उत्पादन | चतुथ योजना के अन्त म उत्पादन स्तर |
|---|---|---|---|
| खाद्यान्न (लाख टन) | ५८ ०० | २० ३७ | ७८ ३७ |
| तिलहन ,, | ३ ९२ | १ ६२ | ५ ५४ |
| कपास (लाख गाठ) | २ ७५ | १ ९७ | ४ ७२ |
| गन्ना—गुड (लाख टन) | १० २० | ११ ५० | २१ ७० |

इस वष १९६६-६७ म खाद्यान्न एव दूसरी फसलो के लिय उत्पादन के निम्नलिखित लक्ष्य निर्धारित किये गय हैं—

लक्ष्य १९६६ ६७

| फसल | अतिरिक्त उत्पादन | कुल उत्पादन |
|---|---|---|
| खाद्यान्न (लाख टन) | ४ ५१ | ५८ ३५ |
| तिलहन ,, | ० ०८ | ४ ०५ |
| कपास (लाख गाठ) | ० २२ | २ ४८ |
| गन्ना (लाखटन) गुड | ० १२ | ० ९७ |

" देश की जनता तक यह प्रेरणा पुकार पहुँचानी होगी कि एक भी भारतीय भोजन से वचित न रहे। गाव, शहरो को भोजन दें और बदले मे शहर, गांवो को अन्य आवश्यक सामग्री अर्पित करें। गावो की निधन जनता की सहायता के लिए हम अपनी बहुत सी सहयोगी सेवायें अर्पित कर सकते हैं।"

—के कामराज

K L Mathur

# Development of Irrigation In Rajasthan since 1947

## General

The State of Rajasthan was formed principally by the integration of 22 small princely states It lies in the north western part of India between 230°–3" and 30°–12" latitudes North and 69°–30" and 78°–17" longitudes east, having roughly a rhombic shape On the three sides, it is surrounded by the four states–Punjab, Uttar Pradesh, Madhya Pradesh and Gujarat and on its fourth side lies West Pakistan

In Rajasthan, the need for irrigation works is paramount The Aravali range divides the entire state into two parts, the north western zone comprises of about 60% of the total area and the south-eastern zone covers the remaining 40% The former region is, on the whole, a sandy, ill watered and unproductive with high frequency of famine and water scarcity The soil, however, is fertile and can yield rich crops with assured water supply In the north-western region, the average annual rainfall varies between 6 inches and 15 inches where as in the south east it ranges between 15 and 40 inches

On the formation of Rajasthan it was found that out of a total arable area of 532 00 lacs acres, an insignificant area of 9 00 lacs acres was then receiving irrigation facilities from the Government owned works Private wells and other sources provided irrigation for another 2 million acres Gang Canal in Bikaner State was the only major work which used to irrigate 6 00 lacs acres of land annualy Waters of major rivers (with their important tributaries) of the State namely Banas, Jakham Chambal and Mahi remained unutilised There were, how ever, some artificial lakes like Jaisamand Pichola Pushkar, Anasagar,Sardarsamand, Hemawas, Toodi Sagar, Chandsen, Ramgarh etc providing irrigation facilities here and there

Thus necessity of constructing irrigation works in Rajasthan was very urgent In fact it was a case of doing so or perishing During the past Three Five Year

Plans, Development Programmes for irrigation under different categories were taken up viz Multipurpose Projects, Plan Works, Scarcity Area Works and Minor Irriga tion Works

## Multipurpose Projects

**Bhakra** —This is a joint scheme of Punjab and Rajasthan for a Canal System in Punjab and Rajasthan The water to the extent of 2551 cusecs perenni ally, is to be delivered at 5 points from the tails of Canals in Punjab to the distribution system in Rajasthan The estimated cost of this project for works in Rajasthan is Rs 2385 16 lacs including Rs 1937 77 lacs for shares of common works payable to the Punjab Government with an estimated annual irrigation of 5 70 lacs acres The work has since been completed Partial irrigation from the project was commenced in 1954 and supplies made available so far by the Punjab have been utalised fully and the target has already been achieved

In the Third Five Year Plan proposal, provision of Rs 65 00 lacs has been made for this project out of which Rs 5 00 lacs are for works in Rajasthan and remaining Rs 60 lacs are for share of common works in the Punjab Against this, the actual expenditure is likely to be Rs 22 00 lakhs on works in Rajasthan and Rs 127 lacs on share of common works credited to the Punjab Expenditure incurred to end of March, 1965 on project as a whole is Rs 2170 40 lacs and a sum of Rs 4 3 lacs has been spent in current year (1965–66), which is mainly on works of extension and improvement nature The actual development of irrigation has been as follows —

| Year | Irrigation done in acres |
|---|---|
| 1954–55 | 54,000 |
| 1955–56 | 1 47,000 |
| 1956–57 | 1,05,000 |
| 1957–58 | 1,79,000 |
| 1958–59 | 2,67 000 |
| 1959–60 | 3,44 000 |
| 1960–61 | 2,17,000 |
| 1961–62 | 2,99 000 |
| 1962–63 | 4 07,000 |
| 1963–64 | 4,49,000 |
| 1964–65 | 5 27 000 |
| 1965–66 | 5,50 000 (likely) |
| | 4,54,000 (Short fall is due to less supplies received from Punjab ) |

## Chambal Project (Stage-I)

The first stage of Chambal Valley Development works in Rajasthan comprises of Kota Barrage, near Kota city and Right and Left Main Canals to provide irrigation of 5 5 lacs ares in Rajasthan and Madhya Pradesh each from the storage created in Madhya Pradesh in Gandhisagar Dam The revised estimated cost of this first stage development in Rajasthan is likely to be in the order of Rs 2100 00 lacs The work on Kota Barrage, Right and Left Main Canals has since been completed and work on distribution system is in progress Irrigation was started in November, 1960 and the annual irrigation development since then has been as follows –

| Year | Irrigation done in acres |
|---|---|
| 1961–62 | 64,600 acres |
| 1962–63 | 79,600 acres |
| 1963–64 | 1,45 000 acres |
| 1964–65 | 2,18,000 acres |
| 1965–66 | 2,14,000 acres |

Due to poor rainfall in the catchment of the Chambal river during monsoons of 1964 as also during 1965, in–flow into Gandhi Sagar reservoir has been in-adequate which has retarded the pace of development of irrigation and whatever water is available during 1965–66, will be fully utilised

The works as originally envisaged in project have been mostly completed but with the introduction of irrigation, water logging and drainage difficulties have been experienced in the commanded area In order to check this problem, lining of worst effected reaches of main canal have been taken up and completed Work on a pilot antidrainage Scheme has also been taken up in hand, but major portion of the drain age measures will be taken up and completed in the 4th and 5th plans

## Chambal Project (Stage–II) Rana Pratap Sagar Dam

The Second Stage of the Chambal Valley Development scheme consists of the construction of Rana Pratap Sagar Dam 3750 ft long and 136 ft high and the power house in order to utilise the 40 ft natural fall in the bed of Chambal River near Chulia Fall, in addition to the head created by the reservoir near village Rawat Bhatta, about 32 miles upstream of Kota City and about 20 miles down stream of Gandhi Sagar Dam The gross storage capacity provided at Rana Pratap Sagar Dam is 2 35 maft and the useful storage is 1 27 maft The lake created by the construction of Rana Pratap Sagar Dam will impound 2 35 maft of water at R L 1162 and the water spread would cover an area of 84 25 sq miles

The construction of this dam will enable irrigation of about 3 lac acres of land more & generation of 90,000 Kwt 60% load factor

The construction of this dam is being supervised by a separate Chief Engineer The major part of the main dam is near completion and the progress is in full swing The work is likely to be completed by the year 67–68 A sum of Rs 15 00 crores has been spent by the end of March, 1966 against the total estimated cost of the project including irrigation and power Rs 30 62 crores

## Chambal Project Stage—III (Jawahar Sagar Dam)

The construction of this dam on the Chambal River, about 15 miles down stream of the Rana Pratap Sagar Dam with a power station close by, forms the 3rd and final stage of the Chambal Valley Development Scheme This is entirely mean to utilise difference in the water level between the tail race of the Rana Pratap Sagar Dam and full suply level of the Kota Barrage situated down stream of this dam The location of the dam is in a very narrow gorge and the area that is submerged at the maximum water level is about 3,72 sq miles, involving very little disturbance to population The scheme provides for the installation of three units of 33000 kw with provision of a fourth unit of similar capacity at a later stage The likely production has been estimated as 60 000 kw @ 60% load factor

The primary work on the dam has been taken up and a sum of Rs 2 25 crores has been spent by the end of March, 1966 against the total estimated cost of Rs 13 47 crores

## Mahi Project

It is a multipurpose scheme envisaging extension of irrigation to 76 000 acres of land in Rajasthan (Banswara District) and development of hydro electric power of about 32 000 kw The revised estimated cost of the project would be nearly Rs 30 00 crores comprising of main dam and appartment works canals in Rajasthan and power generation and transmission system and is shareable by three partners-Rajasthan Irrigation, Rajasthan Power and Gujrat Government The cost of unit one i e Dam and appartment works is to be allocated to Rajasthan Irrigation, Rajasthan Power and Gujrat in the ratio of 2 2, 2 9 and 7 65 respectively The cost of unit two comprising of irrigation works to provide irrigation facilities is wholly to be born by the Rajasthan Power Section only The site of the dam is situated on river Mahi at a distance of about 10 miles from Banswara The work is now being executed under the supervision of Chief Engineer, Rana Pratap Sagar and Jawahar Sagar Dam The construction of roads and essential buildings has since been taken in hand The works of canal system had already been taken up in hand and a sum of Rs 83 00 lacs has been spent by the end of March 1966 It is expected to be completed, as per schedule, i e in 1967 68

## B-Plan Works

During the 1st Five Year Plan, 3 schemes with an estimated cost of Rs 768 21 lacs to provide irrigation for 1 61 lac acres of land were taken up 103

works were completed by the end of 1st and 2nd plan period and 8 works viz. Jawai Meja, Parbati, Gudha Kalisel, Juggar, Surwal and Morel along with the scheme of Narayan Sagar, which continued in the 3rd Plan period have been practically completed by now A provision of Rs 33 70 lacs has been made in the 3rd Plan for their completion, against which a sum of Rs 82 lacs has been spent by end of March, 1966 All these works have started functioning and are providing irrigation benefits

**Scarcity Area Works**—Works under this category were started as early as 1953 when special interest-free loan of Rs 2 5 crores was sanctioned by Government of India In this programme 21 schemes estimated to cost Rs 555 28 lacs with irrigation benefits of 1 45 lac acres were taken up during the first Five Year Plan and all these works were completed during 2nd Plan period and 14 works remained in progress in 3rd Plan These have also been completed by now except Bhimsagar and Kalisidh which will be carried over to 4th Plan During the 3rd Five Year Plan, a sum of Rs 45 lacs has been spent by March, 1966 on all the works in progress under the programme of scarcity area works Most of these works have been put to operation and started giving irrigation benefits

## Second Plan Medium Irrigation Works

4 Major & 15 medium works with an estimated cost of Rs 2938 66 lacs (Rajasthan share) and with annual irrigation of 568 0 thousand acres, with a provision of Rs 686 00 lacs, were provided in the 2nd plan outlay

Out of these 15 medium schemes, only 8 schemes viz (1) Berach at Badgaon (2) Berach at Vallabhnagar (3) Orai (4) Alnia (5) Khari Feeder (6) West Banas (7) Bharatpur Feeder (8) Jakham, were sanctioned by the Planning Commission and works taken up A sum of Rs 65 89 lacs was spent by the end of 2nd plan period on these works A sum of Rs 286 lacs has been spent during the 3rd Five Year Plan period on these 8 schemes Work on Jakham (part scheme) Alnia, west Banas, Bharatpur Feeder and Berach at Vallabhnagar has been completed and irrigation has been started Rest of the schemes are in advanced stage of completion and will start giving irrigation benefits within next two years

## Minor Irrigation Works

Schemes costing Rs 10 00 lacs (now the limit is raised to Rs 15,00 lacs) are categorised as minor irrigation works and form part of the 'grow more Food Campaign' of the Government of India This programme was started in 1954 and special stress is being given to this programme, due to early completion of such works from the indigeneous resources without material requirement of foreign exchange heavy and complicated machines and specialised technical skill and knowledge Moreover, the benefits from them are achieved quickly and are scattered all over the

state Small works estimated to cost Rs 25 000 and below, are undertaken by the Panchayat Samities and the works, costing above Rs 25,000, are taken up by the irrigation department During the First and 2nd Five Year Plans, a sum of Rs 273 85 lacs was spent on these works by Irrigation Department and in the third five year plan, a sum of Rs 296 lacs is likely to be spent During these 3 plans, about 340 works have been completed and 60 works are in progress In order to accelerate food production highest priority is being given to construction of minor irrigation works during the Fourth Plan Major portion of financial allocation for irrigation is likely to be spent on this programme

On account of financial stringencies, no new major or medium irrigation project could be taken up during the third five year plan During this period concentrated efforts have been made for completion of works carried over from 2nd to 3rd plan and development of irrigation from works put into operation By the end of current year (1965) about 500 works with the irrigation potential of 2031 80 thousand acres have been completed The Additional irrigation potential created by these new works on full development is 225% above the irrigation that was being done by all works constructed by the ex-princely states till the dawn of independence in 1947 The amount spent as well as irrigation benefits from irrigation works undertaken in the different categories during the past fifteen years is tabulated below—

| Development Works | Amount spent ( Rs lacs ) By 3/61 (Since 1950) | During Five Years of 3rd Plan | Total | Estimated irrigation full development (thousand acres) |
|---|---|---|---|---|
| 1 Multipurpose Projects | 3317 92 | 1015 43 | 4333 35 | 1270 00 |
| 2 Major Projects excluding Raj Canal Project | 10 37 | 72 83 | 83 20 | 138 00 |
| 3 Medium Projects | 1024 13 | 722 47 | 1746 60 | 399 80 |
| 4 Minor Irrigation Works | 273 58 | 295 52 | 569 10 | 224 00 |
| Total — | 4626 00 | 2106 25 | 6723 25 | 2031 80 |

In the next two years, no new medium works are likely to be taken up due to financial reasons except Gurgaon Canal Project, work on which is in progress in upper reaches in the Punjab This work in Rajasthan is likely to be taken up shortly and proposed to be completed within next two years by the time, the main canal in Punjab is ready and water released Gurgaon Canal System envisages utilisation of mansoon run-off of Jamuna river, which at present escapes into the

sea without benefiting agricultural land The water of the Jumuna will be diverted from Okhla head works to Rajasthan through existing Agra Canal and then by Gurgaon Canal for inundation of 62,000 acres of land of Bharatpur distt from a non-perennial discharge of 500 cusecs In this period stress will continue to be given for the completion of works already in hand and development of irrigation from works put into operation

## Flood Problem of Rajasthan and the Progress of Flood Control Works

In Rajasthan State, the damages from floods have been mainly confined to Bharatpur and Ganganagar districts, where serious problem is caused in the years of heavy rainfall

Topography of Bharatpur district is generally flat with large saucer shaped natural depressions The fall in levels towards Jamuna River is very inadequate and it does not permit drainage of flood water, brought down by the Gambhir and Banganga rivers as also from the adjoining areas of the Gurgaon Distt of the Punjab The flood water stagnates in low lying areas for a greater part of the year which causes heavy loss to kharif crops and does not permit sowing of the rabi crops, besides great inconvenience to the local populace as well as disrupting means of communications

The enormous quantity of silt, brought down by Gambhir and Banganga rivers, is deposited in river beds due to flat bed slope and obstruction in their courses The construction of temporary bunds to divert water in inundation canals during rainy season aggravate the silt accretion problem In the year of heavy rainfall, the water of these streams generally out flanks their banks and flows in vast sheet inundating hundreds of square miles which besides damaging kharif crops endangers the city of Bharatpur and area thus flooded does not dry up in time to allow rabi sowing Problem of this area therefore consists mainly of –

1 Confining the two rivers viz the Banganga and Gambhir in their proper courses by constructing marginal and afflux bunds

2 To provide adequate outfall to drain the flood waters well in time

The need for construction of effective flood control works was felt in the severe floods of 1958, when major part of Bharatpur Distt was badly affected To prevent recurrence of similar situation a sum of Rs 44 00 lacs was sanctioned by the Planning Commission, for undertaking flood control works in the 2nd plan Against this allotment about 15 small flood control works were taken up and go completed These works consisted of–

(i) Construction of new protective, marginal and afflux bunds

(ii) Raising and widening of old banks
(iii) Desilting and widening of existing drains
(iv) Providing new and improving old regulators and
(v) Replacing wooden karries by steel gates for flood regulation

During Second Five Year Plan a sum of Rs 10 05 lacs was spent on these flood control works

In the third five year plan sufficient emphasis has been laid on the construction of flood control works in this flood infested district and in this period, the following important schemes has been finalised and works started On all these works, a sum of Rs 133 97 lacs have been spent by the end of 3rd plan i e March, 1966 The works uudertaken are as follows —

(1) Kaman Pahari Goverdhan Drain
(2) Singhawali Flood Control Scheme
(3) Bharatpur City Drain

## Ghaggar Flood Control Works

This work is to cost Rs 422 lacs The cost of construction of Ghaggar Flood Scheme is to be shared between Punjab & Rajasthan in the ratio of 40 60 respectively The work is in progress and by March, 66, a sum of Rs 216 lacs has been spent on the diversion channel with its auxilary works Although the scheme is expected to be Completed by 1967-68, it is expected to start giving partial relief from the next mansoon

## Flood Control Works in other areas —

Rest of the state is practically free from flood problem except small scattered localities The devastating trend in such areas is generally not very frequent and intensive But in years of abnormal rainfall whenever the flood occurs the damages caused are alarming and the condition become distressing Flood in such area causes less damage to areas,but the impact on the abadi areas, and their environments, means of communications etc are quite perceptible and cause concern In order to save such localities, a number of small works has also been sanctioned and completed Such works are as follows –

| | Name of Works | Distt | Tehsil | Amount to be spent upto March, 1966 (Rs lacs) |
|---|---|---|---|---|
| 1 | Protection of Bali town from Mithri river | Pali | Bali | 0 07 |
| 2 | Protection of Balotra town from Luni river | Barmer | Balotra | 0 55 |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 3 | Protection of Chitawan from Luni | Jalore | Sanchore | 1 79 |
| 4 | Diversion of channel near Vachol andMorwara | ' | | 0 20 |
| 5 | Surpura Flood Control Works | Jaipur | Barirath | – |
| 6 | Flood works in Ranoli and Trilokpura | Sikar | – | 1 03 |
| 7 | Jolia flood works | Sirohi | – | 0 03 |
| 8 | Kanspahari | Bharatpur | – | 0 28 |
| 9 | Small works in Bharatpur feeder area | ' | – | 13 0J |

Protection of Jolia Flood Control Works has also been sanctioned and is likely to be completed in the financial year 1966–67 The work of protection of Ned area in Sachore tehsil costing Rs 1 05 lacs has also been taken up and will be completed before the rains of 1966

The total expenditure on all the flood control works in the state would be Rs 365 11 lacs upto March, 66 as per annual break-up given below —

| | | Rs lacs |
|---|---|---|
| 1 | Amount spent on flood works upto March 61 | Rs *1005* |
| 2 | Amount spent during 1961–62 | Rs 2.43 |
| 3 | Amount spent during 1962–63 | Rs 1 85 |
| 4 | Amount spent during 1963–64 | Rs 15 80 |
| 5 | Amount spent during 1964–65 | Rs 139 32 |
| 6 | Amount spent during 1965–66 | Rs 169 46 |
| | Total upto March 66 | lacs Rs 338 91 |

Floods are the manifestations of the natures displeasure and complete immunity from these can hardly be expected However, with the completion of works in hand, *major problem of the state would be solved* In the 4th Plan, *funds* required for completion of the works in hand will be provided on priority basis ●

चौधरी रामनारायण

# मरुधर की आशा : राजस्थान नहर

*भारत के थार महा–मरुस्थल में जहां सामान्यतया पीने का पानी उपलब्ध नहीं, जहां गर्मी में* तापमान १२५ डिग्री फा० तक पहुंच जाता है जहां वातावरण धूल भरी आंधियों से भरा रहता है, और जहां यातायात का कोई साधन नहीं है वहां राजस्थान नहर निर्माण कार्य को देखकर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि राजस्थान नहर सिंचाई योजना को पूरा करके इस महा मरुस्थल पर भारत के नये भगीरथ कितनी महान् विजय प्राप्त करेंगे ।

राजस्थान नहर पूर्ण रूप से निर्मित होने पर कुल ८० लाख एकड अथवा १२५०० वर्ग मील मरु-भूमि को सुधारेगी । *यह क्षेत्र लगभग ४०० मील की लम्बाई में श्रीगंगानगर, बीकानेर एवं जैसलमेर के जिलों* में स्थित है । कुल १८४ करोड रुपये की अनुमानित लागत से बनी हुई यह योजना प्रतिवर्ष २८ ७५ लाख एकड भूमि में सिंचाई करेगी जिस से ईख रुई तिलहन खाद्यान्न तथा चारे की कुल वार्षिक पैदावार लगभग २७ ५ लाख टन होगी । योजना के पूर्ण विकसित होने पर इससे कृषि, पशुपालन उद्योग तथा व्यापार के द्वारा लगभग ११२ करोड रुपये प्रतिवर्ष आय की संभावना है ।

राजस्थान नहर योजना संसार की सबसे बडी नहर योजना होगी । राजस्थान फीडर सतलज व व्यास *नदियों के संगम के तुरन्त नीचे बनाये हुए हरी के बांध से निकाली गई है । वहां पर इस में पानी का* आकल्पित बहाव १८,५०० घन फीट प्रति सेकिंड है इसका तला १२८ फीट चौडा है तथा इसकी आकल्पित पूर्ण बहाव की गहराई २१ फीट है । राजस्थान मुख्य नहर की कुल लम्बाई ४२६ मील होगी, जिसमें से प्रारम्भिक १३४ मील की लम्बाई राजस्थान फीडर और शेष २९२ मील राजस्थान मुख्य नहर कहलाती है । राजस्थान फीडर का प्रारम्भिक १११ मील का भाग पंजाब में है । राजस्थान फीडर तथा राजस्थान मुख्य नहर सारी लम्बाई में आस्तरित की जा रही है । इसके तल पर एक ईंट का आस्तर सीमेंट में लगाया जा रहा है तथा दोनों पार्श्वों में तले से ऊपर तक दोहरी ईंटों का आस्तर लगाया जा रहा है । राजस्थान मुख्य नहर के अतिरिक्त अन्य सभी शाखाएँ केवल मिट्टी में ही बनाई जायगी, जिनकी लम्बाई करीब ४००० मील होगी ।

राजस्थान नहर मे रावी तथा व्यास नदिया का पानी डाला जायगा, जो कि व्यास नदी पर पाग बाध द्वारा तथा रावी नदी पर थाईन बाध द्वारा एकत्रित किया जायगा। सतलज नदी का समूचा जल तो पहले मे ही भाखडा बाध द्वारा एकत्रित करके भाखडा क्षेत्र की नहरो म एव गग नहर म दिया जा रहा है।

**निर्माण काय की प्रगति —**

राजस्थान नहर का निमाण दो चरणो मे किया जाना निश्चित हुआ है। प्रथम चरण म समूची १३४ मील लम्बी राजस्थान फीडर, राजस्थान मुख्य नहर के प्रारम्भिक १२२ मील तथा १२२ मील तक की शाखाओ का निर्माण किया जा रहा है। प्रथम चरण की सभी नहरो का काय जो सन् १९५८ ५९ मे आरम्भ हुआ था, सन् १९६८ ६९ तक पूण करने का प्रस्ताव है।

इस परियोजना के निमाण काय के दूसरे चरण मे राजस्थान मुख्य नहर का १२२ मील से आगे का भाग तथा उस म से निकलने वाली अन्य नहरो का काय नियोजित किया गया है। दूसरा चरण सन् १९७७-७८ तक पूरा करने का प्रस्ताव है।

पहले ही उल्लख किया जा चुका है जिस मरुक्षेत्र म इस राजस्थान नहर का निर्माण-काय हो रहा है वहा पीने तक का पानी नहीं है। भूगभ म पानी २५० फीट से अधिक गहरा है परन्तु वह भी खारा होने के कारण न तो निमाण-काय के योग्य है तथा न ही पीने के योग्य है। इस कारण पीने का पानी जुटाने के लिय ९० माल लम्बी १२ इच से १८ इच व्यास की पाइप लाइन तथा कई उदच्चन-स्थान बनाये जा रहे है। इस पाइप लाइन पर कुल २ करोड रुपय का व्यय होने का अनुमान है। गगनहर की करनोजी शाखाओं म से रामसिहपुर के निकट से निकलती हुई एक ५ मील लम्बी आस्तरित नहर बनाई गई है जो कि कृपली ग्राम के निकट बनाये हुए पक्के जलाशय म पानी एकत्र करेगा। यहा से यह पानी पम्प द्वारा राजस्थान नहर के विभिन्न निमाण स्थानो पर पहुँचाया जायगा। इस पाइप लाइन का निमाण काय सन् १९६५-६६ म आरम्भ किया गया था जिस की इस वष म पूर्ण हो जाने की सम्भावना है।

इस समय लगभग ३५ करोड घन फीट मिट्टी प्रतिवष हटाई जा रही है जिस म से आधा काय यन्त्रो द्वारा किया जाता है।

**कार्य प्रगति निम्न प्रकार है**

**प्रथम चरण —**

**(क) व्यय मे प्रगति —**

(१) प्रथम चरण की अनुमानित लागत—७४ ७३ करोड रुपय
(पाग बाध हरीके बाध व माधोपुर व्यास जोड की साझे म आने वाली लागत के अतिरिक्त)

(२) ३१ ३ ६९ तक का व्यय — ४२ ८० करोड रु०
प्रतिशत प्रगति — =५९ प्रतिशत।

(ख) भौतिक प्रगति

(१) मुख्य नहर

(अ) प्रथम चरण में राजस्थान फीडर व
राजस्थान मुख्य नहर की कुल निर्धारित लम्बाई — २५६ मील

(ब) ३१-३ ६६ तक बनाई गई राजस्थान फीडर
व राजस्थान मुख्य नहर की लम्बाई — १६५.५ मील
प्रतिशत प्रगति — = ६४ ५ प्रतिशत

राजस्थान मुख्य नहर का निर्माण-काय ३६ मील से ५८ मील म चल रहा है।

(२) शाखायें:—

| क्रम सख्या | नहर का नाम | सिंचित क्षेत्र | विवरण |
|---|---|---|---|
| १ | नौरग दसर शाखा | ६७२८० | निर्माण-काय सम्पन्न हो चुका है। |
| २ | रावतसर शाखा | ८७,१५० | निर्माण-काय सम्पन्न हो चुका है। |
| ३ | सूरतगढ शाखा | २,७७,४६७ | निर्माण-काय करीब करीब सम्पन्न हो चुका है। |
| ४ | अनूपगढ शाखा | ५,५६,१८० | निर्माण-काय जारी है। |
| ५ | नौशरा शाखा | ५ ७८,००० | निर्माण-काय आरम्भ होगा। |

(३) राजस्थान मुख्य नहर मे से निकलने वाली सीधी शाखायें —

राजस्थान मुख्य नहर के प्रथम १२२ मील म से, सीधी निकलने वाली शाखायें कुल १८ होगी, जिन म से ६ का निर्माण-काय लगभग पूर्ण हो चुका है।

(४) सिंचाई क्षेत्र का विकास —

(१) प्रथम चरण की कुल निर्धारित वार्षिक सिंचाई — १३ लाख एकड

(२) सन् ६५-६६ तक बनाई गई नहरो
से सिंचाई की समावना — २ ७८ लाख एकड

(३) सन् ६५ ६६ मे सिंचित भूमि — १,०२,२५० एकड

द्वितीय चरण

द्वितीय चरण का निर्माण-काय पहले चरण के निर्माण-काय के पूर्ण होने पर प्रारम्भ किया जाएगा। दूसरे चरण की अनुमानित लागत ६३ १७ करोड रुपय की है।

**उपनिवेशन तथा विकास काय —**

राजस्थान नहर क्षेत्र मे जीवन की सामाय सुविधायें न होने के कारण तथा कठिन जलवायु होने के कारण लोग पर्याप्त सख्या मे नही हैं । इस सिंचाई परियोजना का समुचित लाभ उठाने हेतु देश के श्रय भागो के लोगो की इस क्षेत्र म श्रावास व्यवस्था करनी होगी तथा विकास के अन्य काय करने होगे इस क्षेत्र के विकास की एक बृहत् योजना बनाई जा चुकी है । इस पर २१३ करोड रुपये के व्यय का प्रावधान है जिसमे ६३ करोड रुपये केन्द्रीय क्षेत्र मे तथा १५० करोड रुपये राजकीय क्षेत्र मे व्यय करने की योजना है । राजकीय क्षेत्र मे किये जाने वाले १५० करोड रुपये के व्यय म से ३७ करोड रुपये के ऋण दिये जायेंगे तथा शेष ११३ करोड रुपये का वास्तविक व्यय किया जायगा ।

राजकीय क्षेत्र म किये जाने वाले मुख्य विकास काय होंगे—श्रावास तथा गृह निर्माण, सचार, कृषि उद्योग, पशुपालन पेयजल, शिक्षा, विद्युत, स्वास्थ्य, सहकारिता, समाज-विकास एव उपनिवेशन इत्यादि ।

केन्द्रीय क्षेत्र म किये जाने वाले मुख्य विकास काय होंगे रेल, राष्ट्रीय पथ, रासायनिक खाद के कारखाने एव परमाणु शक्ति-केन्द्र ।

**मरुस्थल लहलहायेगा —**

राजस्थान नहर के निर्माण से भारत के थार महामरुस्थल मे बसन्त सी बहार श्रा जायगी । यह मरुभूमि हरे भरे खेतो व बागो से लहलहाने लगेगी । क्षेत्र को इस नहर द्वारा अनक लाभ होंगे । वर्षों पुराने अभाव अकाल तथा इन से उत्पन्न होने वाले मानव जाति के सभी दु ख दूर हो जायेंगे । जो भूमि सीधी सिंचाई म आयेगी उस को तो लाभ होगा ही इस के अतिरिक्त समीपवर्ती क्षेत्रो को भी बहुत लाभ होगा ।

नहर द्वारा एक बहुत ही सुसमृद्ध आर्थिक-स्थिति का अभ्युदय होगा । नवीन मण्डियाँ स्थापित होंगी, कृषि उद्योग व्यापार बढ़ेंगे तथा बेकारी दूर होगी । राजस्थान नहर द्वारा सदिया से प्यासी इस भूमि तथा नाना प्रकार के अभाव झेलने वाली वहा की मानव जाति की तृप्ति होगी । इस समृद्धि के स्वप्न को अवश्य ही यह नहर योजना साकार कर देगी । राजस्थान नहर वास्तव म मरुस्थल के लिये वरदान सिद्ध होगी । •

डा० गोपालसिंह राठौड

# पशु-धन : विकास के प्रयत्न

भारत कृषि- प्रधान देश है और कृषि एव पशु-पालन एक दूसरे पर आश्रित है। राजस्थान की अथ-व्यवस्था मे तो दोनो का ही महत्व समरूप एव विस्तृत है। राजस्थान म बहु-सख्यक जन समुदाय की आजीविका का एक मात्र साधन "पशु-पालन" ही है। शुष्क एव घने रेतीले क्षेत्र म, उन्नत पशु सम्पदा यहा के निवासियो के लिये प्रमुख देन है, क्योकि पशु-पालन के अतिरिक्त उनके पास जीवनयापन के अन्य सुलभ साधन उपलब्ध नही हैं—

१९६१ की पशु-गणना के अनुसार, राजस्थान की कुल पशु-सम्पदा ( भेडो के अतिरिक्त ) निम्न प्रकारेण है —

| | |
|---|---|
| गौ-पशु | १,३१,४०,२५५ |
| भैस | ४०,१८,६७७ |
| बकरी | ८०,५२,४०६ |
| ऊट | ५७०,३२३ |
| घोडे | ६३,७२३ |
| खच्चर | ९१२ |
| गधे | २,०६,३२६ |
| शूकर | ७१,८०६ |

उक्त वर्णित पशु-सख्या, भारत के अन्य राज्यो की पशु-सख्या की तुलना म काफी अधिक है। राजस्थान ही ऐसा राज्य है, जहा पर उन्नत नस्ल के पशु इतनी सख्या म विद्यमान हैं। कुछ पशु तो इतने उत्कृष्ट श्रेणी के हैं कि व राज्य की अथ-व्यवस्था म महत्वपूर्ण योग प्रदान करते हैं। उदाहरणार्थ यहा के नागौरी थारपारकर, गीर एव राठी नस्ल के पशु तो अपना सानी ही नहा रखत। ऊटो के उत्पादन म राजस्थान, भारत म एकाधिकार जमाये हुए है और बकरे यहा से पडौसी राज्यो को निर्यात किये जाते हैं। हमारे पशुधन की महत्ता का अनुमान इन तथ्यो स लगाया जा सकता है। यहा के नागौरी बैल राजस्थान म ही नही, अपितु पूरे भारतवर्ष म, कृषि कार्यों म कुशल माने जाते हैं।

राजस्थान के विभिन्न जिलों म स्थित गाय एव भैंसा का मुख्य २ नस्लें इस प्रकार है —

**नागौरी** —नागौरी नस्ल के बैल, नागौर जिले म, मुख्य रूप से प्राप्त होते हैं । इसी के आधार पर इस नस्ल का नामकरण किया गया है । यह नस्ल जयपुर जिले की रूपनगढ तहसील म, बीकानेर जिले की नोखा तहसील म और जोधपुर जिले के पूर्वी भागा तक फली हुई है । रग इन का सफेद होता है इन के पर मध्यमाकार किन्तु कुछ लम्बे होते हैं भारत म समस्त कृषि कार्यों म नागौरी बैला का ही सुदृढ समझा गया है, इन म काफी कार्यक्षमता एव मजबूती होती है । ये अटूट आत्म विश्वास, कठिन परिश्रम व धय से भूमि को जोतते हैं । इसी कारण समस्त भारत म इनकी अधिक माग है । इनकी आवश्यकता का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि पशु-मेला म इन की बिक्री अधिक ऊची कीमत पर होती है । इस नस्ल की गायें, कम दुग्ध दती हैं ।

**कांकरेज** —इस नस्ल के पशु-जालौर, बाडमेर और पाली जिलो मे पाय जाते हैं । इसी प्रकार की एक नस्ल जो इसके समतुल्य मानी गई है, आध्रप्रदेश म पाई जाती हैं यह द्वि-प्रयोजनीय नस्ल है, जो भारवहन के अतिरिक्त सफल दुग्ध-दायिनी भी है । गायें औसतन १० १२ पौंड प्रतिदिन दूध देती है बल, भारी भार ढोने और कठोर भूमि को जोतने वाले होते हैं । भारत म इन की माग, केन्द्रीय एव पश्चिमी भागा म है ।

**थारपारकर** —स्थानीय भागा म यह नस्ल 'मालानी' के नाम से विख्यात है । थारपारकर की शुद्ध नस्ल बाडमेर, साचौर, पूर्वी जसलमेर एव जोधपुर के पश्चिमी भागों मे प्राप्त हो सकती है । इस नस्ल के पशु, विशेषरूप से दूध के लिय पाले जाते हैं । इन के बला को इतना महत्व पूर्ण एव प्रभावशाली नही माना गया है, जितना गाया को । य भारवहन के अधिक उपयुक्त नही हैं बल्कि डेयरी उद्योग के लिये इनकी अधिक माग है ।

**राठी** —यह नस्ल बीकानेर के पश्चिमी गगानगर के दक्षिणी पश्चिमी एव जसलमर क उत्तरी पूर्वी क्षेत्रा म उपलब्ध है । राठी नस्ल लाल सिन्धी एव साहीवाल नस्ला की मिश्रित जाति है । इस नस्ल के गौ पशुओ म काफी दुग्ध उत्पादन क्षमता होती है । इसलिय डेयरी कार्यों के लिये यह नस्ल अधिक लाभकारी चुनी गई है । इन के बला की भारवहन क्षमता तो यद्यपि काफी दुबल है तथापि गाया की दुग्ध उत्पादन क्षमता औसतन १२ १४ पौण्ड प्रतिदिन है जो कि काफी अधिक है । अधिकाशत य पशु घुमक्कड पशु पालका तक ही सीमित हैं । इस नस्ल के पशुओ मे यह विशेषता है कि ये रूक्ष चारे पर भी निभर रह सकते हैं ।

**हरियाणा** —इस जाति के पशु गगानगर चूरू, पूर्वी बीकानेर सीकर, जयपुर और टोक जिलो मे मिलते हैं, जो कि भारत म विख्यात है । यह द्वि प्रयोजनीय नस्ल है । इस नस्ल की भारतवष के उत्तरी राज्यो म काफी माग है । बला के द्वारा भारवहन एव सिचाई का काय लिया जाता है । गहरे कुओ से पानी खीचने का काय एव बैलगाडियो द्वारा सामान ढोने का काय इनके द्वारा लिया जाता है । खेत जोतने मे भी य बल निपुण सिद्ध हुए हैं । गाय औसतन प्रतिदिन १२ स २४ पौंड दूध दती है ।

गीर —यह जाति अजमेर, भीलवाडा, पाली, तथा कोटा व उदयपुर जिलो के कुछ प्रभागो म उपलब्ध है। कुछ भागो म इन्हे रेण्डा या अजमेरा के नाम से भी पुकारा जाता है। यह द्वि प्रयोजनीय जाति है, लेकिन हरियाणा के अनुपात म अधिक दूध देती है। अधिक दुधारू होने के कारण इस नस्ल की माग काफी है। इस जाति के बैल काफी सुन्ढ है, परन्तु थोडा धीरे काय करते है। आजकल पशु-पालक इस जाति का सम्वधन डेरी उद्योग के लिये कर रहे है। गाय का औसतन दूध २० से २६ पौंड है। इस जाति का रग लाल, पीला या धब्बेदार होता है। इस नस्ल से तथा इससे उत्पादित वस्तुओ मे पशु-पालको को २५० लाख रुपयो की आय प्रतिवष होती है।

मालवी —यह जाति मध्यप्रदेश से सलग्न राजस्थानी इलाके म पाई जाती है जसे कोटा, झालावाड, चित्तौड डूगरपुर, बाँसवाडा, आदि पहाडी प्रदेशो म। यह शुद्ध भारवाही नस्ल है तथा मजबूत बैलो के लिये विख्यात है। यह जाति छोटे व बडे दोनो आकारो मे उपलब्ध है। भारी भारवहन व पथरीली धरती म खेत जोतने के उपयुक्त होने के कारण कृषको में इनकी काफी माग है। इस नस्ल की गायें कम दुधारु होती हैं।

भस —राजस्थान म केवल एक ही जाति की भस उपलब्ध है, जिसका नाम मुराई है। इसका परिपालन यहा ज्यादा प्रचलित है। दुग्ध-उत्पादन एव वसा की मात्रा की अधिकता के कारण सम्पूर्ण भारत में उत्तम किस्म की मानी जाती है। अच्छी वर्षा वाले जिलो और नहरी सिंचाई क्षेत्रो में यह पाई जाती है जसे गगानगर, भरतपुर, अलवर, जयपुर आदि में। औसतन २०-४० पौंड प्रतिदिन इस जाति की भस का दुग्धोत्पादन आका गया है। डेयरी कार्यों के लिये इस का महत्व अधिक होने के कारण, भारत के बडे बडे शहरी क्षेत्रो म इसका निर्यात होता है।

## पशु-पालन अनुसधान (१९४७-६४)

राजस्थान म रियासतो के विलय के पूव अनुसधान कार्यों की ओर विशेष ध्यान नही दिया गया था। सन १९५७ म पशु-पालन विभाग, पृथक विभाग के रूप मे स्थापित किया गया, जिस ने प्राविधिक निर्देशन के सरक्षण म निम्नलिखित काय किये।

पशु-सम्वधन —१ विभिन्न गौ-पशु, भसें, ऊट व बकरी की जातिगत विशेषताओ एव उन के क्षेत्रीय वितरण का सर्वे काय पूरा हो चुका है।

२ राज्य म विभिन्न गौ-सम्वधन योजनाओ को अपनाकर पशु-पालन विभाग ने पशु-सम्पत्ति के सुधार का ध्यान दिया है।

३ तीसरी पचवर्षीय योजना से ही इस विभाग ने दुग्ध उपकरणो व उत्पादन कार्यों का सर्वे प्रारम्भ कर दिया था। पशुओ के लिये खाद्य एव चारा हेतु राज्य म चालू की गई योजनाओ के अन्तगत लगभग दो तिहाई काय पूरा हो चुका है। पशुओ मे उत्पन्न विभिन्न बीमारियो के क्षेत्रो म अनुसधान काय चल रहा है। पशु-रोगो के उन्मूलन का काय भी प्रारम्भ किया गया है।

जब पशु-पालन विभाग, कृषि विभाग से पृथक हुआ उस समय, विभाग म केवल एक पयार्जित लेबारेट्री और एक लस्सीविन प्रयोगशाला पशु रोग अनुसधान का काय करती थी। लेकिन अब तीन प्रयागशालाएँ पशु रोग अनुसधान काय म यस्त है। ये प्रयोगशालाएँ निम्न स्थाना पर स्थित हैं —

१ पशु-रोग अनुसधान प्रयोगशाला जयपुर, बडे पशुआ के लिय
२ „ „ जोधपुर, भेड व बकरी के लिये
३ „ „ „ जयपुर, कुक्कुटा के लिय।

लस्सीविन प्रयोगशाला, विभिन्न प्रकार के वेक्सीन निर्मित कर रही है, जो कि पशुधन एव कुक्कुट दोनो के लिय ही हितकर हैं।

**पशु पालन सम्बधी शिक्षा** —द्वितीय पचवर्षीय योजना के अन्तगत बीकानेर म पशु चिकित्सा महाविद्यालय प्रस्थापित किया गया जिस मे पशु पालन सम्बधी विनान के बारे म विद्यार्थियों को शिक्षा दी जाती है। इस के अतिरिक्त एक पशु पालन विद्यालय जयपुर म भी कायरत है।

**सम्पादित विस्तार काय —**

***पशु चिकित्सालय व औषधालय*** *—राजस्थान म रियासता के विलय क समय* १२७ *पशु चिकित्सालय* एव औषधालय थे। विकास की गति के साथ साथ, इनकी सख्या म वद्धि हानी गई। सन् १९६३ ६४ मे इनकी सख्या बढकर २७९ हो गई।

पचवर्षीय योजनाआ के अन्तगत इन की स्थापना निम्न प्रकार है —

| योजना | पशु चिकित्सालय | औषधालय | योग | चल औषधालय इकाइया। |
|---|---|---|---|---|
| प्रथम | ५७ | १६८ | २२५ | १२ |
| द्वितीय | १०७ | १४८ | २२५ | २० |
| तृतीय | १६२ | १३२ | २९४ | २४ |

तीसरी योजना के अन्तगत 'रागनियत्रण' के काय हतु क्ष रश्मि वाहन की सुविधा भी उपलब्ध की गई है जा कि कठिन रोगो का निदान करती है। यह क्ष-रश्मिक इकाई, ग्रामीण क्षेत्रा मे जाकर राग निदान काय करती है। पशु चिकित्सालय जयपुर म दो क्ष रश्मिक उपकरण हैं। एक पशु रोगी वाहन की व्यवस्था भी की गई है जो कि रोगी पशुआ को अस्पताल लाती और वहा स ले जाती है।

**ग्राम आधार योजना** —अधिक सख्या म अनार्थिक एव अनुत्पादक पशु, दश के विकास म बाधा उत्पन्न करते है। ये अनार्थिक पशु देश एव पशु पालक दोनो क लिये अहितकर ह। इन सब समस्याओ को ध्यान म रख पशु विकास काय के लिय ग्राम की आधार योजना की नीव डाली गई जिस से पशुओ को ज्यादा से ज्यादा उत्पादक बनाया जा सके।

ग्राम आधार योजना एक ऐसी सुव्यवस्थित याजना पद्धति है जा प्रजनन काय को सयत रखती है एव राज्य म उन्नत साडा की न्यूनता-पूर्ति करती है। कृत्रिम गभाधान प्रणाली का अपना कर उन्नत

एव इच्छित साडो का सम्वधन किया जाता है। ये सम्वर्धित एव पोषित साड, ग्रामो म परिसेवाएं करते हैं। नियत्रित सम्वधन की प्रक्रिया अपनाने के लिये गावो मे वधिया-करण योजना चलायी गई।

इस समय राजस्थान मे १७ ग्राम आधार साड हैं। एक वीय सवन्दन केन्द्र और दो कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र स्थापित हैं।

**पशु-मेले**—गौ-पशु उद्योग की सफलता इस बात पर भी निभर करती है कि समय-समय पर पशु उत्पादन की बिक्री के लिये समुचित व्यवस्था हो। विपणन व्यवस्था मे पशु-पालन के तरीको का समुचित मान होता है। अधिकाशत किसान एव पशु-पालक लघु पमाने पर दूध उत्पादन करते है और बछड़े कम पालते हैं, क्योकि विपणन के उचित सगठन के अभाव मे वे उत्पादित वस्तुओ को उचित मूल्य पर नहीं बच पाते। मध्यस्थो के चुगल म फस जाने पर उनको प्राय एक रुपये के ६ आने तक ही मिल पाते है। उन को उचित मूल्य प्राप्त हो सके उसके लिये ये मेले आयोजित होते हैं। ये राज्यस्तरीय होते हैं इस के अलावा पचायत समितियो म्युनिसिपेलिटीज एव पशु-पालन विभाग की ओर से भी वर्ष मे कई मेले सगठित किये जाते हैं। ये मेले वर्ष मे कुल १५६ लगते हैं। इनमे से विभाग की ओर से १३ मेले प्रति वर्ष लगते हैं। दूर दूर से व्यापारी लोग पशु क्रय-विक्रय हेतु आते हैं। जिस से राज्य सरकार को ८ से १० लाख रुपये की आमदनी प्रतिवर्ष होती है।

**कुक्कुट विकास**—राजस्थान निर्माण के बाद कुक्कुट विकास की गति तीव्र से तीव्रतर होती गई। इस का कारण यह है कि राज्य सरकार इस ओर अधिक रुचि लेने लगी है। प्रारम्भ मे राजस्थान मे केवल ३ कुक्कुट शालायें थी जो अजमेर जयपुर उदयपुर म स्थित थी इन के उत्पादन का पमाना भी लघु ही था, लकिन अब यही उद्योग, काफी विस्तृत हो गया है। अब दो शालाएं तो राज्यस्तरीय एव ३ जिला स्तरीय हैं कुक्कुट शाला उदयपुर उदयपुर विश्वविद्यालय को हस्तान्तरित कर दी गयी है।

**गौसम्वधनशालायें**—राजस्थान मे ४२ लाख गायें हैं यहां केवल १२००० साड ही उपलब्ध हैं जब कि ३०,००० साडो की आवश्यकता है। प्रश्न केवल साडो की सख्या का ही नही है, अपितु उनकी उन्नत जाति व नस्ल का है। साडो के परिपालन के साधन केवल सरकारी फार्म की सुव्यवस्थित गौशालायें हैं। प्रथम व द्वितीय पचवर्षीय योजनाओ के अन्तगत तीन महत्वपूर्ण नस्लो हरियाणा मवाती और नागौरी के लिये क्रमश तीन शालाएं बस्सी, अलवर और नागौर मे खोली गयी हैं। आवश्यकता को देखते हुए तीन फार्म कुम्हेर राममर एव चदनवेल (जसलमेर) क्रमश हरियाणा गीर, और थारपारकर नस्ल के लिए और स्थापित किये गये।

**शूकर प्रजनन केन्द्र**—शूकर परिपालन का काय सन् १९५८-५९ से, विभाग द्वारा प्रारम्भ किया गया। प्रथम चरण की शुरूआत पशु प्रजनन फार्म, बस्सी मे एक शूकर-परिपालन इकाई की स्थापना की गई। जहा पर ६ मादा सूअर और दो नर सूअर रखे गये। ये योकशायर नस्ल के थे। शनै शनै यह सख्या ३० मादा सूअर और ६ नर सूअर तक पहुँच गई। शूकर प्रजनन इकाई म जो बस्सी म कायरत है अब शूकरो

की संख्या द्विगुणित से- त्रिगुणित हो रही है और स्वास्थ्य एव कृषि सगठन की प्रशंसा का पात्र बन गई हैं। अब विदेशो को भी शूकर निर्यात किया जाने लगा है।

**उष्ट्र संवर्धन शाला** —राज्यमे पहले ऊँट प्रजनन फार्म, पशु पालको के अधीन ही था। वे इनका परिपालन एव सुधार कार्य एक ट्रस्ट के जरिये करते थे। राज्य सरकार ने इन उष्ट्र पालको को सहायता देकर इस कार्य की प्रगति मे भी हाथ बँटाया। राज्य सरकार उचित समय पर इनको ऋण अनुदान प्रदान करती है। ताकि ये इन का अच्छा पोषण कर सकें। उष्ट्र-सुधार योजना के द्वारा पशु पालन विभाग भी इन की सहायता करता है। बीकानेर मे एक ऊँट सुधार शाला १९५९ ६० मे स्थापित की गयी जिसम २०० मादा ऊँट रखे गये। *यह फार्म अब ५ साल के ऊँट के बच्चे वितरित करता है। वैज्ञानिक आधार पर* इन ऊँटो की खाद्य एव आवास व्यवस्था की शिक्षा भी पशु पालको को दी जाती है जिस से इन के सुधार की ओर कार्य जारी रहे। राजस्थान पशु पालन विद्यालय, बीकानेर मे ऊँटो के रक्त, दूध एव मूत्र पर शोध कार्य हो रहा है।

**गौशाला विकास** —राजस्थान मे १८१ गौशालायें एव पिंजरापोल हैं, जिनमे से १५८ राजस्थान गौशाला एव पिंजरापोल फेडरेशन, जयपुर द्वारा मान्यता प्राप्त हैं। ये संस्थायें ३६००० गौ पशुओं का परिपालन कर रही हैं। जिनम से ७० प्रतिशत उत्पादक एव ३० प्रतिशत अनुत्पादक हैं। इन गौशालाओं के पास काफी भूमि और अन्य सिचाई सुविधायें उपलब्ध हैं, लेकिन वित्त की समस्या सबसे ज्यादा बाधक है।

भारत सरकार द्वारा १९५६-५७ के अन्तर्गत चालू की गई योजना के अन्तर्गत अब जहा जहाँ गौशालायें ली गई है वे छोटे छोटे गोसम्वर्धन केन्द्र के रूप मे कार्य करेंगी साथ ही सलग्न क्षेत्रो मे डेयरी का व्यवसाय भी चलाती रहेगी और जनता को शुद्ध दूध उचित मूल्य पर प्रदान करेंगी।

**दुग्ध परियोजना** — अलवर, जयपुर और जोधपुर मे ३ घी वर्गीकरण केन्द्र खोले गये। ये केन्द्र शुद्ध एव ताजा घी सरकारी छाप के सहित जनता को प्रदान करते हैं।

जयपुर दुग्ध वितरण योजना जयपुर ने भी दुग्ध वितरण कार्य प्रारम्भ कर दिया है, जो कि ८० पैसे प्रति लीटर की दर से बद बोतलो मे पाश्चराइज्ड दूध वितरित करती हैं। इस योजना के अन्तर्गत ९००० लीटर दूध प्रतिदिन जनता को वितरित किया जाता है। इस दूध म औसतन ४ २ प्रतिशत चर्बी और ८ ५ प्रतिशत बिना चर्बी का दुग्ध विद्यमान होता है।

**मत्स्य विकास** —राजस्थान जो कि भारत म शुष्क एव रेतीला इलाका गिना गया है, मत्स्य साधनों मे भी पीछे नहीं रहा है। पजाब, हिमाचल प्रदेश और मसूर राज्यो के मत्स्य विकास की तुलना म राजस्थान पीछे नहीं है। इस की तुलना मध्य प्रदेश से की जा सकती है। यहाँ प्रतिवर्ष ३ लाख एकड पानी मे १५ लाख टन मछलिया उत्पन्न की जाती हैं ५ मन प्रति एकड मत्स्य उपज का यहा अनुमान लगाया गया है तथा ७५००० मन मछलिया का उत्पादन आका गया है। इस की कीमत ६० रु० प्रति मन की दर से लगाई जाय तो विकास की गति का अनुमान लगाया जा सकता है।●

राजस्थान नहर मरु भूमि की युगों की प्यास मिटा रही है और इसी के वरदान से
रेगिस्तान लहलहाते खेतों मे परिवर्तित होगा
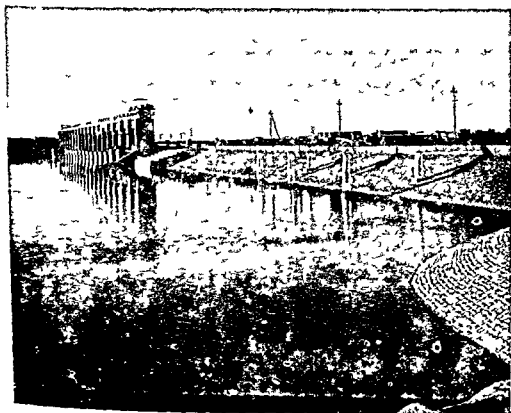
प्रकृति की स्वच्छन्द बालिका चम्बल ने भी मानव के हित के लिये बंधन स्वीकार कर लिया है-
उसके इस [illegible]
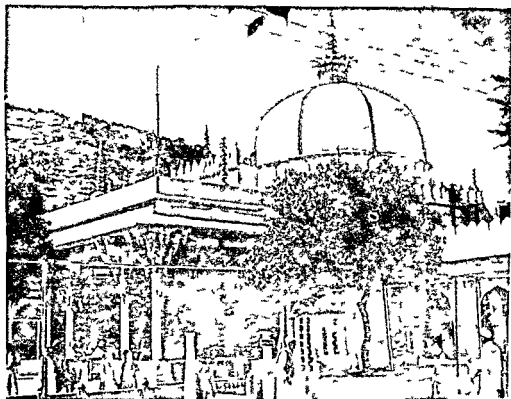
दरगाह शरीफ

धर्म निरपेक्ष राज्य के दो प्रतीक

नाथद्वारा मंदिर
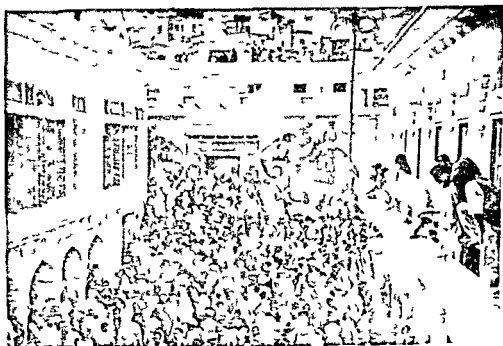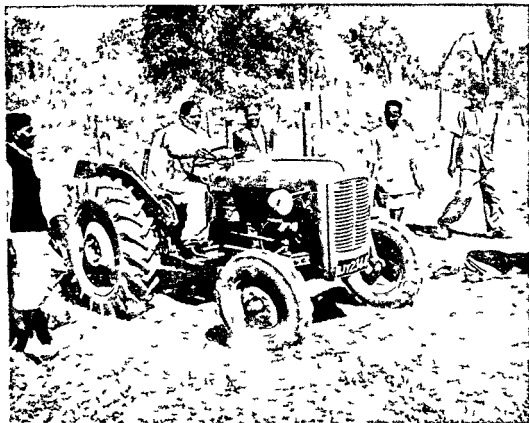
प्रगति
दौड मे
तभी
सबके
रह स
हैं
जब
वे
स्त्री
पुरुष ब
से
हिस्सा

प्रताप सागर बाँध जहाँ से हमे पानी और बिजली प्राप्त हो रही है
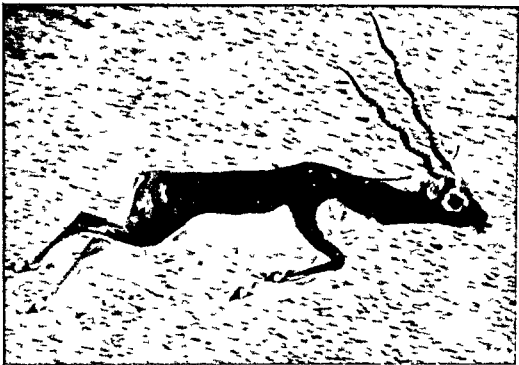
उन्मुक्त मृगसुरक्षित वन मे किस निर्भयता और उल्लास से छलांग भरने को उद्यत है

रेगिस्तान की रोक-थाम के प्रयत्न, जिससे जमीन बचेगी हरे भरे वृक्ष लग सकेंगे
और वे मरु भूमि का रिक्त आंचल भरने को बादलों को बुलायेंगे

प्रसन्न पक्षी-परिवार
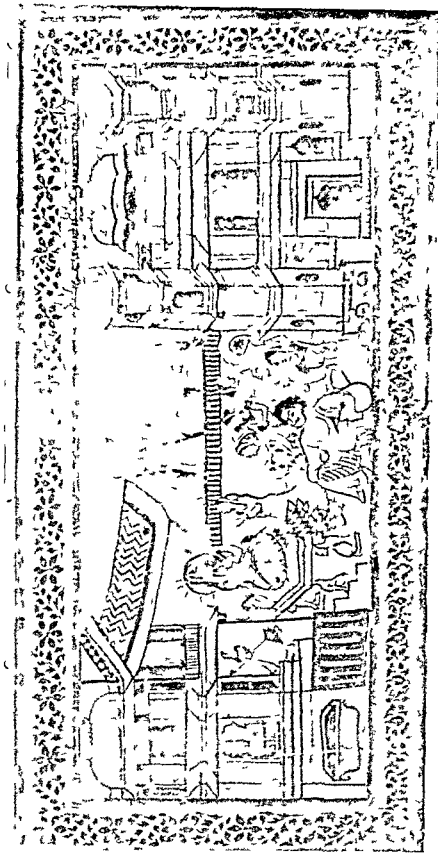
माधवानल काम कन्दला' एव मध्यकालीन प्रेमाख्यान का भित्ति चित्र, जो भटजी गणेशलाल के रंगभवन, उदयपुर से प्राप्त हुआ है

# हमारी वन-सम्पदा

स्वतन्त्रता के पश्चात् देश की सर्वांगीण प्रगति के लिये योजनाबद्ध विकास का महान अभियान १९५१ ५२ से आरम्भ हुआ। पंचवर्षीय योजनाओं के अन्तगत अब तक तीन चरण पूर्ण हो चुके हैं। देश के आर्थिक, औद्योगिक तथा सामाजिक विकास के लिये वनों का उपयुक्त विकास होना अनिवाय है। वनों से दैनिक उपयोग की वस्तुए, इमारती लकड़ी, ईधन, कोयला, गोंद, लाख, अनेक रेशे, रंग, शहद, मोम आदि प्राप्त होते हैं। 'कागज' भी वन-उपज (घास तथा लकड़ी की लुगदी) से ही निर्मित किया जाता है। अनेक उद्योग, प्लाइवुड, हार्ड बोर्ड, तारपीन, लाख, फर्नीचर, खस आदि वन-उपज पर ही निर्भर हैं। इसके अतिरिक्त *वनों के 'अप्रत्यक्ष' लाभ भी अनगिनत हैं। भूमि तथा जल संरक्षण के लिये वनों का बड़ा महत्व* और उपयोगिता है। वनों के अभाव में वर्षा का पानी उपजाऊ मिट्टी को काटता हुआ शीघ्र बह जाता है और जल भूमि के अन्दर सोखा नहीं जाता। वर्षा ऋतु में नदियों में भयंकर बाढ़ आती है। सिंचाई तथा बिजली के उत्पादन के लिये बने बाँधों की सुरक्षा के लिये, जलदाय क्षेत्रों (नदियों के निकास स्थान) में वनों की सुरक्षा, वृक्षारोपण एवं वनों का विकास अत्यन्त आवश्यक है।

**वन तथा कृषि —**

वन एवं कृषि का घनिष्ठ सम्बन्ध है। भूमि के ऊपर की एक इंच सतह को बनाने में प्रकृति को एक हजार वर्ष तक लग जाते हैं। धरती के ऊपरी भाग के ७-८ इंच उपजाऊ होते हैं, जिस की रक्षा वनों द्वारा होती है। वृक्ष, झाड़ियाँ व घास की जड़ें धरती को बाँधे रहती हैं उसे उड़ने, बहने तथा कटने से बचाती हैं। वृक्षों की पत्तियों आदि के सड़ने से जो कार्बन गैस निकलती है, वह धरती में कार्बोनेट, फॉसफेट एवं सिलीकेट को घुलने में सहायता देती है, घुली अवस्था में ही यह आवश्यक खाद्य-पदार्थ पौधों के लिये उपयोगी हो सकते हैं।

**वनों की बाड़ द्वारा कृषि एवं पशुओं की रक्षा —**

लू अथवा ठण्डी व तीक्ष्ण हवा से खेती बाड़ी को बचाने के लिये पेड़ों की बाड़ एक अत्यन्त उपयोगी साधन है। तीव्र गति से चलने वाली वायु से वृक्षों की बाड़ द्वारा खेतों की रक्षा किये जाने पर अन्न की उपज २५ प्रतिशत तक बढ़ जाती है और पशुओं के दूध में १२ प्रतिशत तक अन्तर होता है।

इसी प्रकार वनो का तापक्रम एव वायुमण्डल की नमी के साथ भी घनिष्ठ सम्बन्ध है। वृक्ष एव वना का वर्षा पर लाभदायक प्रभाव पडता है। वना के नष्ट किय जाने पर मौसम की विषमता म वद्धि होती है। वनो की माना बढाने से वर्षा म वृद्धि होनी है। राजस्थान जसे शुष्क प्रदश मे वनो का वषा पर इस से अच्छा एव लाभकारी प्रभाव और क्या हो सकता है कि वर्षा के दिन बढें, समय पर वपा का पानी मिल सके जो मुख्य फसलो (बाजरा, मक्का, चना, गहूँ आदि) के लिये लाभकारी सिद्ध हो ?

**नग्न पहाडियो का घातक परिणाम —**

राजस्थान के पूर्वी भाग म भी जहा वर्षा की मात्रा पश्चिमी भाग की अपेक्षा अधिक है, वनो का होना अनिवार्य है विशेषतया पहाडियो, ढालू कटी एव बजर धरती पर। वर्षा के वेग से वृक्ष धरती की रक्षा करते हैं धरती की सोखने की शक्ति को बढाते है, एव जलवायु म सुधार करते हैं। पहाडो पर वृक्षो के न होने से ग्रीष्म ऋतु म वायु गम होकर ऊपर उठती है और वर्षा लान वाल बान्ला को ग्रस्त व्यस्त करती है। इस प्रकार नग्न पहाडिया का स्थानीय वर्षा पर घातक प्रभाव होता है। इस के विपरीत वनाच्छादित पहाडियो के ऊपर की आद्र ता (नमी) का वातावरण वर्षा लाने वाले बान्ला को आकर्षित करता है।

**राष्ट्रीय वन-नीति —**

वना की इन उपयागिताओ के कारण १९५२ मे राष्ट्रीय वन नीति निर्धारित की गई जिस के अनुसार देश म कम से कम एक तिहाई भाग पर वनो का होना आवश्यक समझा गया। पहाडी और जलदाय क्षेत्रो मे वनो की मात्रा ६० प्रतिशत हानी चाहिये।

राजस्थान मे वन विभाग के अधीन केवल ११ प्रतिशत भाग है। इस म मे भी केवल एक तिहाई भाग पर ही अच्छे वन हैं शप मे केवल नग्न पहाडियो एव झाडिया के क्षेत्र सम्मिलित हैं।

**मरुस्थलीय क्षेत्र का सुधार —**

प्रदेश का लगभग दो तिहाई पश्चिमी एव उत्तर पश्चिमी भाग भी मरुस्थलीय है। इस क्षेत्र मे विस्तृत वनखण्ड तथा रेत के सरकते हुए टीलो से सडका, रेला नहरो खेता व आबादियो की रक्षा के लिये वृक्षा की कतारें (Shelter belts-wind breaks) लगाई गई हैं। इस क्षेत्र म मवशी पालन मुख्य उद्योग है और यहा मवेशियो की विश्व विख्यात नस्लें पाई जाती हैं। इसी भाग म सेवन धामन करड आदि उत्तम एव पौष्टिक घास का ४५ प्रतिशत उत्पन्न होता है। मवेशिया के लिये अच्छे चरागाहो एव गाचर का सुधार तथा विकास आवश्यक है।

**जलाऊ लकडी की कमी —**

प्रदेश मे वना का अनुपात बहुत कम है, जिस से यहा जलाऊ लकडी का अधिक अभाव है और इसी कारण गोबर जो एक बहुमूल्य उपयागी खाद है जला दिया जाता है। अनुमान है कि लगभग पाच लाख

टन गोबर इस प्रकार प्रतिवर्ष जला दिया जाता है। यह गोबर चूल्हे के स्थान पर यदि खेतो मे प्रयुक्त किया जा सके तो अनाज की पदावार मे आशातीत वृद्धि हो सकती है। लेकिन यह तभी सम्भव है जब प्रत्येक गाव मे उपयुक्त मात्रा मे 'वन' हो।

राजस्थान मे वनो के विकास का लक्ष्य बहुत विशाल है जिस की उपलब्धि मे अनिश्चित समय लग सकता है। पिछली तीन पचवर्षीय योजनाओ मे हमारे परिमित साधनो एव धनराशि के अनुसार ही इस दिशा मे प्रयत्न किये जा सके है।

**पचवर्षीय योजनायें —**

प्रथम पचवर्षीय योजना काल (१९५१-५२–१९५५ ५६) मे कोई उल्लेखनीय प्रगति नही हुई क्योकि इस समय राजस्थान बना ही था तथा एकीकरण की समस्याओ का समाधान आवश्यक था। इस योजना-काल मे केवल २०.१६ लाख की अल्प धनराशि मे कुछ आवश्यक तकनीकी उपकरण क्रय किये गये तथा कुछ वृक्षारोपण भी किया गया। प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय पचवर्षीय योजना-काल (१९५६ ५७—१९६५ ६६) मे निम्नलिखित कार्य किये गये —

**वनो का सीमाकन एव बन्दोबस्त (Demarcation & settlement)**

वनो के समुचित प्रबन्ध के लिये यह आवश्यक है कि वन क्षेत्र का सीमाकन एव बन्दोबस्त किया जाय। यह एक प्राथमिक कार्य है, किन्तु अनेक कारणो से प्रगति कुछ शिथिल रही। प्रथम योजना काल मे यह कार्य ४४६८ वर्ग किलो मीटर (१७३२ वर्गमील) मे किया गया। द्वितीय पचवर्षीय योजना तक कुल १९६०० वर्ग किलो मीटर (७।९७ वर्गमील) मे कार्य हुआ। तृतीय योजना काल मे बदली हुई प्रणाली के अनुसार तथा राजस्व नक्शा मे सीमाओ को दर्ज करते हुए १०३२२ वर्ग किलो मीटर (४००१ वर्गमील) मे सीमाकन एव बन्दोबस्त का कार्य पूर्ण किया गया।

**वन-आयोजना (Working plan)**

वनो के वैज्ञानिक प्रबन्ध के लिये प्रत्येक वन मण्डल (डिवीजन) के लिये वन-आयोजना बनाई जाती है। वन प्रबन्ध का मूल वनानिक आधार यह है कि वनो से लकडी आदि पदावार की उपलब्धि इस प्रकार की जाय कि वह यथा सम्भव अधिक अभिवृद्धि के साथ कालान्तर मे चिरतन मिलती रहे। वन योजना का लक्ष्य यह है कि वनो से सतुलित उपलब्धि इस प्रकार ली जाय कि वनो का ह्रास न हो। अब तक राज्य के १० डिवीजनो की वन आयोजनायें बन चुकी है, केवल अजमेर डिवीजन के लिये आयोजना की पुनरावृत्ति तथा जयपुर व भरतपुर डिवीजन की आयोजनाओ मे कुछ कार्य शेष रह गया है।

प्रशिक्षण (Training)

वनो के प्रब ध तथा विभिन्न विकास कार्यों के लिये प्रशिक्षित कमचारियो की आवश्यकता है। अब तक निम्नलिखित कमचारी प्रशिक्षित किये गये हैं।

| | |
|---|---|
| अधिकारी | ३६ |
| वन क्षेत्रीय (रन्जस) | ४२ |
| वन पाल (फोरेस्टस) | ३१६ |
| वन रक्षक (फोरेस्ट गाड) | २४८८ |

विशिष्ट प्रशिक्षण —

| | |
|---|---|
| मृदा सरक्षण (सोइल क जर्वेशन) | (i) अधिकारी ४ |
| | (ii) वन क्षेत्रीय १० |
| विदेश भ्रमण | (i) अधिकारी ६ |

निर्माण काय (मकान तथा सडकें)

वना के सुप्रब ध के लिये यह आवश्यक है कि वना की पदावार के विकास के लिये जगला म सडकें हा। इस स वन पैदावार का मूल्य बढ जाता है। साथ ही वन कमचारियो के लिये, जिन का विषम परिस्थितिया मे जगला म रहना पडता है उपयुक्त आवास व्यवस्था आवश्यक है। अब तक निम्नलिखित काय किये गये—

भवन—१७५
सडकें—१०२२ मील (१६३५ किलो मीटर)

वनों का पुनरुद्धार ( Rehabilitation of degraded forests )

अनेक अच्छे वन क्षेत्र अनियन्त्रित एव अत्यधिक चराई तथा कटाई के कारण नष्ट हो गये है। ऐसे क्षेत्रा म धाक के जगला मैं झाडी की शक्ल म फले हुए ठू ठ ठीक से काट लिये गय है तथा दीवार बन्दा कर दी गई है। प्रदेश मे बासवाडा, बारा आदि स्थाना पर सागवान के वक्ष है, किन्तु ये अनियमित कटाई के कारण टेढे मेढे और खोखले हो गय है। इन की छटाई तथा सुरक्षा की जाती है। इस काय के अच्छे असर अभी से स्पष्ट हो रहे हैं और कुछ ही वर्षों म यहा अच्छी सीधी सागवान की बल्लिया बन गई हैं। ३० ४० वर्षा मे ये सागवान के मूल्यवान जगल बन जायगे। अब तक यह काय धोक जगलो म १२६० हैक्टर (३१५० एकड) तथा सागवान जगला म ५७६१ हैक्टर (१४४०४० एकड) म किया गया है। चराई सुधार का काय ६३६६ हैक्टर (२३४६८ एकड) म विभिन्न बीडो मे हुआ है।

वृक्षारोपण (Plantation)

वना की अभिवद्धि के लिय उपयोगी नये वृक्ष लगाना अत्यन्त आवश्यक है। ८ लाख एकड भूमि म नाल व दरड हैं वृक्ष आदि लगाकर ही इन के विस्तार को रोका जा रहा है। इस के अतिरिक्त बीडा, सडका

घ नहरा के विनार वृक्ष लगाये गये हैं । अब तक २३,४११ हैक्टर (५८,२८ एकड) क्षेत्र म प्लाटेशन किया गया है । १८२ किलामीटर (११४ मील) सडका पर वृक्ष लगाय गये है ।

**वन्य-प्राणी सरक्षण (Wild life preservation)**

राजस्थान मे ८ वन-जीव-सरक्षण क्षेत्र (गम सक्चुएरीज) हैं —

१—वन-विहार एव राम सागर (धौलपुर)
२—घना (भरतपुर) बड सक्चुरी
३—सरिस्का (अलवर)
४—सवाई माधोपुर
५—दरा (कोटा)
६—जय समद (उदयपुर)
७—माउण्ट आबू
८—ताल छापर (बीकानेर)

इन स्थानों मे वन्य जीव देखने के लिये काफी सख्या मे देश विदेश से पयटक आते हैं । इस स विदेशी मुद्रा का लाभ होता है ।

राजस्थान ही एक ऐसा प्रदेश है, जहा इतनी गेम सक्चुएरीज है और जहा विभिन्न प्रकार के जीव जन्तु देखने को मिलते हैं, जिन म शेर, बघेरे, सामर, चीतल, नील गाय, चौसिंगा, जगली सूअर, काले हिरन चिकारा, भेडिया, जरख, जगली बिल्ली, बिज्जू, भालू, उदबिलाव, अजगर, मगरमच्छ तथा भिन्न भिन्न प्रकार की चिडियाँयें उल्लेखनीय हैं ।

सरिस्का, धौलपुर तथा घना मे ठहरा के लिये वन विभाग के अच्छे रस्ट-हाउस हैं, जहा खाने का भी उचित प्रबन्ध है । सभी सक्चुएरीज की उन्नति के लिये अभी तक १५,६०,७०० रुपये व्यय किये गये हैं ।

**वनों की सुरक्षा (Forest Protection)**

वनो मे आग लगने से भयकर हानि हानी है । आग से रक्षा के लिये अग्नि रक्षा-पट्टिया (Fire lines) २६० किलो मीटर (१८१ ६ मील) म बनाई गई तथा फायर वाचर्स रखे गये हैं ।

**अनुसधान काय (Research)**

इस विभाग के सिल्वीकल्चर डिवीजन द्वारा, वन अनुसधान केन्द्र, देहरादून (F R I) के साथ, वन सम्बन्धी अनुसधान काय किया जाता रहा है । अनेक आवश्यक (Statistical) आकडे सकलित किये गय तथा प्रमुख वृक्षो पर महत्वपूर्ण प्रयोग किये गये हैं ।

**उद्योग (Industries)**

बासवाडा मे एक चिप बोड फक्ट्री तथा कोटा मे स्ट्रॉबोड फैक्ट्री लगाई गई । सालर प्रदेश मे गुरजन के वृक्ष बहुतायत से हैं, जिन से पॅकिंग केस बनाने के भी प्रयत्न किये जा रहे हैं । एक कागज के कारखाने का भी प्रस्ताव है ।

भू-सरक्षण (*Soil Conservation*)

कटती हुई भूमि, पहाड तथा मरुस्थलीय चेत्र म निम्न लिखित काय किय गय —

| काय | प्राप्त लक्ष्य |
|---|---|
| १ वन रोपण तथा भूमि सुधार | ७६६२ हैक्टर (१६६०६ एकड) |
| २ रतीले टीला की रोक थाम | ३६६ हैक्टर (६१७ एकड) |
| ३ सडका के किनार वृक्षावली | ११५ किलामी० (७२ मील) |
| ४ पहाडी स्थला म मृदा-सरक्षण। | २६५६० हैक्टर (७३६६६ एकड) |
| ५ घाटिया म मृदा सरक्षण | १४४३ हैक्टर (३६०८ एकड) |

*अकाल सहायता* —

*वन विभाग द्वारा अकाल सहायता हेतु वना एव घास की बीडो से घास एकत्रित किया जाकर बहुत* वडे पैमाने पर वितरण किया गया एव भविष्य के लिये भी घास कई डीपों पर इक्टठी की गयी।

**चम्बल भू सरक्षण योजना (Chambal Soil Conservation Scheme)**

प्रदेश म चम्बल नदी पर अत्यन्त उपयोगी बाधा का निर्माण हुआ है जिन के लिये जलदाय चेत्र (catchment areas) म वनो का विकास नितान्त आवश्यक है। इस के अर्न्तगत निम्नलिखित काय किये गये —

| काम | प्राप्त लक्ष्य |
|---|---|
| १ भूमि का सुधार | १५००० हैक्टर (३७५०० एकड) |
| २ वन रोपण | ५१६ „ (१२६० ) |
| ३ अग्नि रक्षा पट्टिया | ६०८ कि० मी० (३८० मील) |
| ४ कृषि भूमि मे मृदा-सरक्षण हेतु सर्वेक्षण | ५१० है० (१२७६ एकड) |
| ५ कृषि भूमि पर मृदा-सरक्षण। | २७७ है० (६६४ एकड) |
| ६ कन्दरा सर्वेक्षण काय | ७८२८७ है० (१६५६१८ ) |

उपयुक्त विवरण से स्पष्ट है कि अनक समस्याओ व कठिनाइया तथा आर्थिक सीमाओ के होत हुए भी वना के विकास के कई चेत्रो म आशाजनक प्रगति हुई है।●

सूरजमल जैन

# वन्य पशु संरक्षण

न खलु न खलु बाण सन्निपात्योऽयमस्मिन्,
मृदुनि मृग शरीरे तूल राशाविवाग्नि ।
क्व बत हरिणकाना जीवित चाति लोल
क्व च निशितनिपाता वज्रसारा शरास्ते ।।
तदाशु कृत सन्धान प्रति सहर सायकम्,
आर्तत्राणाय व शस्त्र न प्रहर्तु मनागसि ।।
(अभिज्ञान शाकुन्तलम्—प्रथम अंक)

(हे राजन् ! आप इस मृग के शरीर पर, रुई की ढेरी पर अग्नि के समान अपने इस प्रचण्ड बाण को मत छोडिये । आपके वज्र-तुल्य कठोर, इन बाणो का लक्ष्य तो दुष्ट, दस्यु, चोर, डाकू आदि ही होने चाहिए, न कि कोमल प्राण बेचारे ये हरिण)

वन्य पशु पक्षी-सरक्षण हमारी संस्कृति का विशिष्ट अभिन्न अंग रहा है । अनेक पर्व त्योहारों पर हम इन की पूजा अर्चना करते हैं । मोर की परम पूज्या सरस्वती देवी के साथ सिंह की महाशक्ति काली के वाहन के रूप में अगाध मान्यता है । चूहे का परम देव गणेश के साथ तथा गिलहरी का सेतु-बंध निर्माण में श्री राम के साथ महान पौराणिक सम्बन्ध है । भगवान महावीर और बुद्ध की इस पुण्य-भूमि में, इस में कोई अतिशयोक्ति नहीं कि ऋषियों के आश्रमों में सिंह और मृग अभय विचरते थे ।

**परस्परोपग्रहो जीवनाम्**

(सृष्टि का प्रत्येक जीव परस्पर (एक दूसरे के) उपकार के लिये है न कि घात के लिए)

वस्तुत वन्य पशु-पक्षियों की, सृष्टि के जीवमात्र की व्युत्पत्ति, प्रादुर्भाव, अवस्थिति, एक दूसरे के सहयोग, सहचय तथा हित के लिये ही है । अनेक पशु पक्षी मृत शरीरों को खाकर प्रकृति के वृहत् आगन में सफाई का काम करते हैं । मछलियाँ नदी तालाब के पानी को साफ रखती हैं । अनेक पक्षी खेती के

लिये हानिकारक कीड़ों को नष्ट करते हैं। वनस्पति तथा प्राणी शास्त्र के विद्यार्थी जानते हैं कि अनेक जानवर, पक्षी तथा छोटी-छोटी तितलियाँ व कीड़े मकोड़े भी हमारी खेती के अनाज तथा उद्यानों के फूलों के निर्माण के लिये निरंतर कार्य करते रहते है, इन के बिना वनस्पति जगत की प्रक्रियाएँ (pollination, dispersal आदि) रुक जायेंगे और हमारे जीवन का आधार-खाद्यान्न भी उपलब्ध नहीं हो सकेगा।

इस के अतिरिक्त सुन्दर वन्य पशु-पक्षी हमारे सुरम्य वनों तथा पर्यटक स्थलों की शोभा हैं। यदि हमारे वनों और उद्यानों से चिड़ियों के मधुरिम स्वरों को निकाल दिया जाये तो उन में क्या आकर्षण रह जायगा? विदेशी पर्यटक ताज के अतिरिक्त हमारे यहां के गेंडा, शेर, हिरन, साभर, चीते तथा अनेक रंग-बिरंगी चिड़िया के कारण विशेष रूप से आकर्षित होते हैं। इस से देश को विदेशी मुद्रा का लाभ होता है। हमारे राष्ट्रीय पक्षी मोर की नभचर जगत में कोई समानता नहीं है। वन्य पशु पक्षियों के चर्म सींग, पंख आदि की व्यापारिक उपयोगिता है और ये विदेशों में भी निर्यात होते हैं। जीवित पकड़े गये गेंडा, सिंह आदि की देश विदेशों में बहुत मांग है।

"If the marvellous forests and their wild life can be saved, you could build up a most valuable tourist trade bringing pounds and dollars into the country If *the wild life is destroyed, tourists will go to Africa instead*

(Extract from a letter to late beloved Prime Minister of India from Mrs Norah Burke–Author of King Todd)

यह देश, सुरम्य वनों तथा पर्यटकों के आकर्षण केन्द्र व सुन्दर वन्य पशु-पक्षियों के लिये विख्यात रहा है। जहां शिकारी की शान्त व्यवस्थित पद चाप से ही वन्य पशु सशंकित हो जाते हैं उस की उपस्थिति मात्र की सूचना आत्मीय वन-वायु उन्हें दे देती है और वे सचेत हो जाते हैं, वहां अभी कुछ ही वर्ष पूर्व तक धौलपुर-नरेश वन विहार वन खण्ड में पशुओं को अपने हाथ से दाना खिलाते थे, उन की मोटर की आवाज सुन कर झुण्ड के झुण्ड वन्य पशु सड़क के किनारे एकत्र हो जाते थे, वन्य पशुओं के प्रति प्रेम तथा अभय दान का यह एक ज्वलन्त उदाहरण है।

दुर्भाग्य से जनसंख्या की अनियन्त्रित अभिवृद्धि के कारण वनों तथा वन्य पशुओं पर मनुष्य का भयंकर अतिक्रमण हुआ है। वन्य पशुओं के विनाश का क्रम पिछले ५० वर्षों से तो जीप गाड़ियों तथा हथियारों की सुलभता के कारण अत्यन्त वेग से हुआ है। अनेक प्रकार के वन्य पशु लुप्त हो गये हैं। प्रसिद्ध काश्मीरी हिरन, दो सींग वाला गेंडा, जंगली गधा, गुडहुन (ग्रेट इण्डियन बस्टर्ड) लगभग समाप्त हो गये हैं। हमारी संस्कृति का प्रतीक बब्बर शेर (सिंह) *अब केवल ३०० की संख्या में सिर्फ गीर वन खण्ड में* ही बच गये हैं।

सुन्दर वन्य पशु पक्षी प्रकृति की धरोहर हैं जिन्हें यथावत और यदि हो सके तो अभिवृद्धि के साथ भावी पीढ़ियों के लिये सुरक्षित रखना हमारा कर्त्तव्य है। वन्य जीवों की सुरक्षा के लिये सन् १९५२ में केन्द्रीय वाइल्ड लाइफ बोर्ड की स्थापना हुई और फिर प्रान्तीय वाइल्ड लाइफ बोर्ड बने, जिन का कार्य वन्य जीवों की सुरक्षा अभिवृद्धि के लिये राज्य-सरकार को सुझाव देना है।

राजस्थान मे जय-समन्द, सवाई-माधोपुर, सरिस्का, घना, वनविहार, दरा, आबू वन्य प्राणी-संरक्षण-स्थलो (सेंक्चुरीएज) का निर्माण हुआ, जिन मे वन्य प्राणियो का मारना सर्वथा वर्जित है, इन म से कई अब देश-विदेश के पर्यटको के लिये प्रमुख आकर्षण केन्द्र बन गये हैं।

| क्रम | नाम सेन्क्चूरी | क्षेत्रफल | स्थिति | प्रमुख जानवर | देखने के लिये सबसे उपयुक्त समय | अन्य सुविधायें |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | जय समन्द | ४० व मी | उदयपुर जिला उदयपुर मे ३० मील | शेर, बघेरा, साभर सूअर आदि | मई, जून | ठहरने के लिये रेस्ट हाउस |
| २ | सवाई माधोपुर | ४० व मी | सवाई माधोपुर जिला | शेर, बघेरा, रीछ साभर, सूअर, चीतल आदि | अगस्त-सितम्बर को छोड कर वर्ष भर | ,, |
| ३ | सरिस्का | १६ व मी | अलवर जिला जयपुर से ७० मील | ,, | ,, | ,, |
| ४ | घना | ११ व मी | भरतपुर जिला भरतपुर से दो मील | स्थानीय तथा पर्यटक चिडिया के लिये विश्व विख्यात। चीतल नील-गाय, सूअर आदि भी मिलते हैं। | सितम्बर से जनवरी | ,, |
| ५ | वन विहार | ८ व मी | भरतपुर जिला धौलपुर से ६० मील | शेर, बघेरा, रीछ साभर, चीतल | अगस्त-सितम्बर को छोड कर, वर्ष भर | , |
| ६ | दरा | ४० व मी | कोटा जिला कोटा से ३० मील | शेर, बघेरा, साभर नील-गाय आदि | ,, | , |
| ७ | आबू | | सिरोही जिला | , | , | ,, |

इन मे से जयसमन्द, सरिस्का तथा आबू को नेशनल पार्क मे परिवर्तित करने की योजना है, जिस के चतुर्थ पंचवर्षीय योजना-काल म कार्यान्वित होने की आशा है। राज्य-सरकार ने वन्य प्राणी-संरक्षण के लिये दूसरी पंचवर्षीय योजना काल मे ५ ४० लाख रुपये व्यय किये, तृतीय पंचवर्षीय योजना मे १६ ३७ लाख रुपये के व्यय का अनुमान है। चतुर्थ पंचवर्षीय योजना म इस के लिये ५० ०० लाख रुपये का प्रस्ताव है।

लुप्त प्राय वन्य-पशुओ की रक्षा नितान्त आवश्यक है। शिकार, बन्द-मौसम (closed season) म जो मुख्यतया इन का प्रमुख प्रजनन काल होता है, नही किया जाना चाहिए। आखेट, आज्ञा (permit) से ही किया जाना चाहिए। चोरी स शिकार करने वालो के प्रति सूचना देने व कार्यवाही करने म प्रत्येक नागरिक महत्वपूर्ण योग दे सकता है।

कृष्ण चन्द्र विद्यालङ्कार

# उद्योग : प्रगति का साधन

भारत के औद्योगिक विकास मे भी अनेक श्रेणियो का योग है, किन्तु राजस्थान के परिश्रमी अध्यवसायी और दूरदर्शी उद्योगपतियो का सहयोग विशेष महत्त्व रखता है। लोटा डोर लेकर राजस्थान की मरुभूमि से निकल पडने वाले अध्यवसायी व्यक्ति जहाँ भी गये, वहाँ उन्हो ने अपने अध्यवसाय और कार्य-कुशलता के द्वारा अपने लिये एक स्थान बना लिया। छोटी-छोटी दूकानो से बढकर वे क्रमश बड़े-बड़े उद्योगो के सचालक बन गये। आसाम, बिहार, बगाल, बम्बई और दक्षिण के उन भागो म भी जहाँ अहिन्दी-भाषी लोग अधिक रहते हैं मारवाडी व्यापारी और उद्योगपति देखे जा सकते हैं। इन लोगो ने न केवल सम्पत्ति का उपार्जन किया, अपितु उन-उन क्षेत्रो के आर्थिक विकास पर भी ध्यान दिया। विभिन्न राज्यो मे राजस्थान के उद्योगपतियो की धुआँ उगलने वाली बडी-बडी चिमनियाँ इस का प्रमाण हैं। इन सब राज्यो मे बडी-बडी व्यापारी पेढीयो के स्वामी राजस्थानी हैं। यह भी सन्तोष की बात है कि राजस्थान के सम्पन्न वर्ग ने सामान्य जनता के हित के लिये भी करोडो रुपया दिया है। सभी तीर्थों और मन्दिरो के पास उन की बडी बडी धर्मशालाएँ, प्याऊ, तथा बडे नगरो मे स्कूल कॉलेज, अस्पताल, राजस्थान के सम्पन्न वर्ग की यशो गाथा का प्रचार कर रहे हैं।

यह आश्चर्य का विषय है कि इतना कुशल और अध्यवसायी राजस्थानी अपने राजस्थान की औद्योगिक उन्नति मे बहुत कम योग दे सका। इस का मुख्य कारण वस्तुत राजस्थान की राजनीतिक और भौगोलिक परिस्थितियाँ थी। राजस्थान बीसियो रियासतो और खडो मे विभक्त था, जिन के राजाओ को अपने वयक्तिक सुख की चिन्ता अधिक रही, राज्य के आर्थिक विकास की कम। व्यापार एव उद्योग को शासन की ओर से कोई प्रोत्साहन नही मिला। दूसरा महत्वपूर्ण कारण राजस्थान की भौगोलिक परिस्थिति थी। राजस्थान के बहुत बडे क्षेत्र मे पानी का अभाव रहा। रेल और सडको का अभाव भी इसी लिए था कि राजा महाराजा केवल अपने मुख्य नगर के ही विकास म रुचि लेते रहे। परस्पर राज्यो म आने जाने वाले माल पर चुगी ने भी भारी रुकावट डाली, इस के अलावा अनेक वस्तुओ पर राज्य के एकाधिकार ने भी जनता को कोई नया साहस करने से रोका।

धन्य हैं सरदार पटेल, जिन्हो ने राजनीतिक स्वतन्त्रता के बाद सब से अधिक यशस्विता-पूर्ण कार्य कर के बीसियो रियासतो को एक महान् राजस्थान के रूप में परिणित कर दिया। इस महान क्रान्ति ने सचमुच राजस्थान की कायापलट कर दी। एक शासन के नीचे आने वाला राजस्थान पारस्परिक भेदों और बाधाओं को समाप्त करके समृद्ध राज्य बनने के लिये कटिबद्ध हो गया। छोटे छोटे खण्डो की चुंगी-चौकियाँ समाप्त कर दी गईं, सडको का जाल बिछ गया और औद्योगिक विकास का मार्ग प्रशस्त हो गया।

औद्योगिक विकास के लिये कुछ आधारभूत सुविधाएं आवश्यक होती हैं—शक्ति, जल, यातायात के सुलभ साधन, पूँजी, कच्चे माल की प्रचुरता और राज्य की ओर से प्रोत्साहन। राजस्थान के उद्योगपतियो के पास पूँजी की कमी नही थी। उन की पूँजी समस्त भारत में फैली हुई थी, अपने राज्य में विकास की उज्ज्वल सम्भावनाओं को देख कर वे राजस्थान की ओर प्रवृत्त हुए। राजस्थान में खनिज-पदार्थों की कमी नही हैं। बड़े बड़े भूगर्भ-भण्डार वहा छिपे पड़े हैं जिन के विकास की सम्भावनायें बहुत उज्ज्वल हैं। राजस्थान का प्रशासन भी इस के लिये अब पूर्ण सहयोग दे रहा है। राजस्थान के पशु-धन ने सामान्य जनता के जीवन को कुछ सरल बना दिया है। विद्युत का उत्पादन पचवर्षीय योजनाओं में काफी बढा है और चम्बल तथा अन्य योजनाओं के कारण लगातार बढता जा रहा है। चम्बल तथा अन्य सिंचाई योजनाओं के कारण अब राजस्थान की मरुभूमि निकट भविष्य में हरी-भरी और शस्य श्यामला होने जा रही है। यातायात के साधन भी अब बहुत विकसित हो रहे हैं। इस प्रकार औद्योगिक विकास की सभी आवश्यक सुविधाएँ बढती जा रही हैं। आज राजस्थान में अनेक बड़े उद्योग चलने लगे हैं। जयपुर स्थित नेशनल इंजिनियरिंग इण्डस्ट्रीज (बाल बियरिंग) अपने किस्म का भारत का सब से बड़ा कारखाना है। जयपुर मेटल इंडस्ट्रीज, मान इंडस्ट्रियल कारपोरेशन तथा अन्य सकडो छोटे-बड़े उद्योग राज्य मे प्रारम्भ हो रहे हैं। औद्योगिक खनिज-विकास निगम के अन्तर्गत राजस्थान के खनिज अब भूगर्भ से निकल कर राजस्थान के ही नहीं, देश के आर्थिक विकास को गति दे रहे हैं। श्री एस० के० पाटिल ने ठीक ही कहा था कि "मैं किसी दूसरे राज्य को नहीं देखता, जिस के नागरिक इतनी बडी सख्या मे देश के कोने कोने में जा कर कठोर परिश्रम और अध्यवसाय का परिचय देते हैं। मुझे इस मे कोई आश्चर्य नहीं होगा कि राजस्थान देश के अत्यन्त समृद्ध राज्यों में से एक हो जायगा और शायद सब राज्यों से अधिक विकसित हो जायगा। वह इस लिये सम्भव होगा कि राजस्थान की जनता अध्यवसाय, व्यापारिक कुशलता और परिश्रम में बहुत आगे है। राजस्थान का चित्र बहुत तेजी से बदल रहा है।"

राजस्थान-वित्त निगम विभिन्न उद्योगों की सहायता और परामर्श देने का जो कार्य कर रहा है वह प्रशसनीय है। उस ने सूती वस्त्र, चीनी, क्रॉकरी, इंजिनियरिंग, नाइलोन, केमिकल, आदि उद्योगो के लिये लाखो रुपया का ऋण दिया है। छोटे उद्योगो को भी वह सहारा दे रहा है। साभर झील का नमक न जाने कितने समय से राजस्थान के विकास मे योग दे रहा है।

राजस्थान के औद्योगिक विकास की सभावनाओं को देख कर राजस्थान के अतिरिक्त अन्य राज्यों के उद्योगपति भी वहाँ नये उद्योगो की स्थापना करने लगे है। दिल्ली क्लाथ मिल की ओर से रेयन और टायर कॉर्ड के उद्योग कोटा और उस के आस पास के क्षेत्र को समृद्ध कर रहे हैं। खेतडी की ताँबे की खानें

फास के सहयोग से अब फिर चालू-अवस्था म हो गई हैं। जिप्सम पर तो राजस्थान का प्राय एकाधिकार है। पिछले तीन-चार वर्षो से ऊन-उद्योग का तीव्रगति से विकास हो रहा है। इन के अतिरिक्त उदयपुर भिक के स्मेल्टर और पिग आयरन प्लाट भी उल्लेखनीय है। भरतपुर की वगन फक्ट्री, जयपुर और चित्तौडगढ की क्रमश वाटर मीटर और सीमेण्ट फक्टरियाँ राजस्थान के सामान्य नागरिक जीवन का स्तर ऊ चा कर रही हैं। ट्रासमीशन टावर और सोडियम सल्फेट, रासायनिक खाद का कारखाना कोटा मे बना है। सवाई माधोपुर मे सामेण्ट का उद्योग प्रगतिशील है। इसी तरह के अन्य उद्योग राजस्थान को शीघ्र ही अन्य राज्यो के समकक्ष बनाने म सफलता प्राप्त करेंगे।

यद्यपि चौथी पचवर्षीय योजना का अन्तिम रूप अभी तक निर्धारित नही हो सका है, तथापि प्रस्तावित योजना के अनुसार ४३८ ४० करोड रुपया व्यय होगा। इस मे उद्योग-सम्बधी योजनाओ पर निम्नलिखित रूप से व्यय का अनुमान किया गया है।

| तीसरी योजना | | | चौथी योजना |
|---|---|---|---|
| ११ १० करोड | सिंचाई और विद्युत | – | १०८ ६२ करोड़ |
| ८ ६० ,, | उद्योग और खनिज | – | १६ ०६ , |
| १३ २० ,, | परिवहन और सचार | – | ३० ०० ,, |

इसी योजना के अन्तगत राणा प्रताप-सागर की अणु-शक्ति-उत्पादन की क्षमता २०० मेगावाट से बढा कर ४०० मेगावाट की गई है। इस का अथ यह नही है कि उक्त राशिया ही औद्योगिक विकास पर खच होगी। इन मदा पर भारी व्यय के कारण जो सुविधाएँ प्राप्त होगी उनसे प्रोत्साहन पा कर निजी क्षेत्र भी करोडो रुपया नये उद्योगो की स्थापना मे व्यय करेगा। इस तरह औद्योगिक विकास का भविष्य बहुत उज्ज्वल है। चम्बल विद्युत के सहयोग से कोटा निकट भविष्य म राजस्थान का कानपुर बन जायगा।

१६६४ की गणना के अनुसार राजस्थान म निम्नलिखित उद्योगो के मासिक उत्पादन का औसत नीचे लिखे अनुसार था।

| | | | |
|---|---|---|---|
| सूती वस्त्र | ५,००० | मीटर | |
| सीमेण्ट | ६८,२२६ | मीट्रिक | टन |
| काँच | ३८ ६४१ | , | ,, |
| नमक | ३३ २४१ | , | ,, |
| बाल बियरिंग | ३,५३,००० | ,, | ,, |
| अभ्रक | ८६००० | , | , |

अब तक राजस्थान के विकास म गतिरोध इस कारण था कि वहाँ की रियासतो के राजाओ ने प्राकृतिक सम्पदा का दोहन करने की योजना नही बनाई थी। अब सब भूतपूर्व रियासतो की प्रतिभा, नये प्रगतिशील प्रशासन की योजनाएँ तथा विभिन्न राज्यो म फैले हुए राजस्थानियो की साधन सम्पन्नता और प्रतिभा का योग, इन सब के समन्वय से राजस्थान का औद्योगिक विकास आगामी ५-१० वर्षो म ही उसे अत्यन्त समृद्ध बना देगा।●

जगन्नाथ प्रसाद अरोडा

# औद्योगिक विकास

राजस्थान म अनेक प्रकार के खनिज जैसे लोहा, सीसा, जस्ता, चूना, पत्थर, मोडल, खड़िया मिट्टी, (जिप्सम) ग्रेफाइट तांबा आदि प्रचुर मात्रा मे उपलब्ध हैं। इन के अतिरिक्त अनेक प्रकार का महत्वपूर्ण कच्चा माल पाया जाता है, जिस से सूती वस्त्र, कागज, इस्पात, ताँबा और जस्ता गलाने के अलावा उवरक और ऊनी वस्त्रो के धागे तैयार करने व बुनने के उद्योग चलाये जाते हैं। अब यह स्थिति आ गई है कि राजस्थान मे औद्योगिक विकास को तीव्रता स गतिशील किया जा सकता है। अब तक राज्य म सब से बडी बाधा उद्योगो के लिए बिजली का अभाव रहा है। प्रथम पचवर्षीय योजना के समाप्त होन तक तो वस्तुत औद्योगिक कार्यों के लिए बिजली उपलब्ध नही कराई जा सकी थी। लेकिन भाखडा और चम्बल योजनाओ के प्रथम सोपान के पूर्ण होने के साथ ही राज्य देहाती-क्षेत्रो म बिजली उपलब्ध कराने की दिशा मे अग्रसर होता जा रहा है।

राजस्थान म घरेलू और छोटे पमाने के उद्योगो को पनपाने की दृष्टि से अनेक योजनायें प्रारभ की गई जिनकी स्थिति से आगे अवगत कराया जा रहा है।

**औद्योगिक बस्ती अथवा क्षेत्र —**

उद्योग-धधे चलाने के इच्छुक लोगो को कारखाने बनाने के स्थान उपलब्ध कराने हेतु ८३.३७ लाख रुपये व्यय कर जयपुर, जोधपुर, पाली, सुमेरपुर बीकानेर, श्रीगंगानगर, उदयपुर, भीलवाडा माखुपुरा (अजमेर), भरतपुर व कोटा म औद्योगिक बस्तियो मे ८३-ए १२२-बी, ७०-सी, ३८-डी, ४०-ई श्रेणी के शेड बनाये गये हैं। इन औद्योगिक बस्तियो म भावी उपकर्मियो को ३१२ शेड प्रदान किये जा चुके हैं। इन औद्योगिक बस्तियो मे शेड के निकट ही खुली जमीन की व्यवस्था भी की गई है। विभिन्न औद्योगिक बस्तियो म ऐसे १५२ भूखड उपलब्ध हैं। अब तक ५६ भूखड उन भावी उपकर्मियो को दिये जा चुके हैं जिन्होंने स्वय पैसे लगा कर शेड बनाये हैं। पाली और कोटा म उपकर्मियो के एसोसिएशन ने सहायता प्राप्त औद्योगिक बस्तियो का निर्माण किया। राज्य-सरकार ने उन्हें क्रमश ४६,००० रुपये और ७५,००० रुपये में ऋण प्रदान किये हैं। पाली की सहायता प्राप्त औद्योगिक बस्ती के लिए राज्य

सरकार द्वारा प्रदत्त गारण्टी के अन्तगत जीवन-बीमा निगम से ४१० लाख रुपये ऋण की और व्यवस्था की गई है।

इन राजकीय तथा सहायता प्राप्त औद्योगिक क्षेत्रो व बस्तियो मे काम करने वाली इकाइयाँ अनेक पदार्थों का उत्पादन कर रही हैं। इन वस्तुओ म आटोमोबाइल-पाटस, स्टील की चीजें, स्टोव्ज, रेडियाज, ट्राजिस्टस, एम्पलीफायस, मैच बाक्सेज, बाइसिक्लें व उन के पुर्जे, पाइप्स, स्टील-फर्नीचर, खेती के औजार, टाइल्स और सेनीटरी वेयस, क्लाक पाट्स, रोलिंग शटस, डाई कास्टिंग, रूम कूलस, लेमिनेटेड सफ्टी ग्लास, शल्य चिकित्सा व अस्पताल के उपकरण, वैज्ञानिक उपकरण और सूक्ष्म अणुवीक्षक, प्रिंटिंग, फेब्रिक, चाक्स, ट्रासफोमस, प्लास्टिक की चूडिया, और अन्य सामान, पानी के मीटस, हड्डिया के उवरक, ऊन की कताई व बुनाई, वेस्ट कॉटन यान, पॉटरी के सामान, स्टोन वेयर पाइप, रस्सियाँ, ट्रैक्टर के पुर्जे, सूक्ष्म मशीन-पुर्जे (प्रीसीजन पाटस) तथा गवार से गाद आदि का उत्पादन शामिल है।

राज्य म भावी उपक्रमिया को अपने कारखाने खडे करने के लिए जमीन उपलब्ध कराने की दृष्टि से ७,२१४ एकड भूमि को औद्योगिक भूमि करार दिया गया है। यह भूमि दीघ-कालीन लीज के आधार पर प्रदान की जाती है। अब तक उपलब्ध भूमि मे से १६,३०,०५०, एकड भूमि आवंटित की जा चुकी है।

चालू वित्तीय वप मे औद्योगिक-क्षेत्रो व बस्तियों के विकास के लिए ३,५६,००० लाख की धनराशि का प्रावधान किया गया है।

**औद्योगिक श्रम —**

घरेलू और छोटे पमाने के उद्योगो को ऋण प्रदान करने हेतु १९६४ ६५ के वप म ६,०२,००० रुपये का प्रावधान रखा गया है। इस प्रावधान मे से ०८० लाख और १०२ लाख रुपये क्रमश राजस्थान वित्त-निगम और रजिस्ट्रार सहकारी-समितियाँ, राजस्थान, को सौंप दिया गया है। राजस्थान वित्त निगम ने सूचित किया है कि ३४ पार्टियों को ८७,३६,५०० रुपये निगम तथा उद्योग-विभाग से स्वीकृत किय गये हैं तथा १७ आवेदन पत्र विचाराधीन हैं। इन आवेदन पत्रों से ४०,८७,४३५ लाख रुपये के ऋण की माग की गई है।

राज्य मे खादी तथा ग्रामोद्योगो के विकास के लिए ३७,७२,३२२ रुपये ऋण तथा ८,०१,००० रुपये आर्थिक सहायता प्रदान करने के लिये स्वीकृत किये गये हैं। यह प्रावधान चालू वित्तीय-वप के दिसम्बर तक के लिये है।

**दुलभ कच्चे माल का आवटन —**

राज्य की विभिन्न औद्योगिक इकाइयो क लिये कठिनाई से उपलब्ध होने वाले कच्चे माल का आवटन १९६५ म निम्न प्रकार से किया गया है —

| क्रम संख्या | कच्चा माल | इकाइयों की संख्या | मात्रा लाख टन |
|---|---|---|---|
| १ | लोहा व इस्पात (देशी) | १८०६ | ६०८६ |
| २ | लोहा व इस्पात (आयातित) | १८६ | ४६६ |
| ३ | जस्ता | ११५ | ३७१ ०० |
| ४ | तांबा | १०१ | ३४५ ०० |
| ५ | सीसा | २५ | २७४०० |
| ६ | टिन | ६० | २६ २०० |
| ७ | निकल (कलई) | ११ | ०० ७५० |
| ८ | एस एम शीटें | — | |
| ९ | वद्युतिक अलूमिनियम और वायर राडस | | |
| | (देशी) | १८ | १०६ ०० |
| | (आयातित) | ३ | ६३ ०० |

आयातित कच्चा माल —

राजस्थान में लोहे और इस्पात के लिये ८०,००,००० लाख रुपये तक के तथा अलौह और इस्पात की चीजों के लिये १,५०,००० रुपये तक के अनिवार्यता प्रमाण पत्र जारी किये गये हैं।

मशीनरी की पूर्ति —

राष्ट्रीय लघु उद्योग-निगम (लिमिटेड), नई दिल्ली की एक योजना के अनुसार लघु उद्योगों को देश में निर्मित एवं आयातित मशीनरी किश्त प्रणाली (हायर परचेज) के अन्तर्गत उपलब्ध कराई जाती है। चूंकि उपक्रमियों ने इस कार्यक्रम में भाग लेने में अधिक उत्साह नहीं दिखाया, फलस्वरूप राष्ट्रीय लघु उद्योग निगम ने राजस्थान में इस कार्यक्रम को गतिशील करने की दृष्टि से एक तीव्र अभियान सितम्बर, १९६५ में शुरू किया। इस के परिणाम-स्वरूप २,२०,००,००० रुपये के मूल्य की मशीनरी की पूर्ति के लिए लगभग १९६ आवेदन पत्र प्राप्त हुए हैं जिन में से अब तक निगम ने उन्हीं मामलों को स्वीकृति प्रदान की है, जिन का मूल्य ७० लाख के लगभग कूता गया है, शेष मामले अभी विचाराधीन हैं। इन की वजह से नये उद्योग प्लास्टिक चप्पलें व जूते, एनेमल्ड कापर वायर, पी० वी० सी० आदि शुरू किये जायेंगे साथ ही वर्तमान उद्योगों में इन मशीनों की पूर्ति से या इन उद्योगों में संतुलन पैदा करने वाली मशीनों के उपलब्ध हो जाने से आर्थिक दृष्टि से उत्पादन की लागत और किस्म दोनों में सुधार संभव होगा।

लघु-उद्योगों की नयी इकाइयाँ —

इस विभाग द्वारा, चालू वर्ष में नवीन उपक्रमियों द्वारा प्रस्तुत १८२ योजनाओं को, स्वीकार किया गया है तथा लघु उद्योगों की श्रेणी में ७६३ इकाइयों को पंजीकृत किया जा चुका है। कुल पंजीकृत लघु उद्योग-इकाइयों की संख्या ५,७१४ है।

औद्योगिक सहकारिता के क्षेत्र में ३,४४४ औद्योगिक सहकारी संस्थाओं का पंजीकरण, पंजीयक सहकारी समिति, राजस्थान के यहाँ, किया जा चुका है तथा चालू वर्ष में ३७५ नयी औद्योगिक समितियों का पंजीकरण किया गया है। अब तक विभिन्न औद्योगिक सहकारी समितियों से ३५,६८५ रुपया के ऋण के आवेदन-पत्र प्राप्त हुए हैं। इन औद्योगिक इकाइयों के कार्य में कुशलता लाने की दृष्टि से चालू वर्ष में २,२०,२६७ रुपया की मशीनरी हायर परचेज प्रणाली पर उपलब्ध कराने की सिफारिश राष्ट्रीय लघु उद्योग निगम, नई दिल्ली से की गई है।

ग्रामीण क्षेत्रों में हस्तकला एवं शिल्प के प्रशिक्षण की ५ संस्थाएँ कार्य कर रही हैं। ये संस्थायें डूंगरपुर, बांसवाड़ा, झालावाड, सिरोही व टोंक में कुशल कारीगरी का प्रशिक्षण प्रदान कर रही हैं। प्रत्येक संस्था ४५ प्रशिक्षार्थियों को विभिन्न व्यवसायों—बुनकरी, चमड़े के जूते बनाना, सुथारी, लुहारी, दरी, निवार, गलीचे आदि का प्रशिक्षण देती है। प्रत्येक प्रशिक्षार्थी को ४० रुपये प्रतिमास आर्थिक सहायता के रूप में प्रदान किये जाते हैं। अब तक जो प्रशिक्षार्थी इन संस्थाओं से प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके हैं, उन में से कईयों ने अपने निजी व्यवसाय शुरू कर दिये हैं।

इस के अतिरिक्त जोधपुर और बीकानेर में दो प्रशिक्षण संस्थायें कार्य कर रही हैं। बीकानेर स्थित संस्था में केवल ऊनी वस्त्र सम्बन्धी प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। जोधपुर स्थित संस्था में बुनाई, छपाई और ऊनी वस्त्र उद्योग सम्बन्धी प्रशिक्षण दिया जाता है।

**ग्रामीण क्षेत्रों में औद्योगीकरण —**

देश के विभिन्न राज्यों में भारत-सरकार के योजना-आयोग ने ४६ परियोजनायें देहातों में औद्योगीकरण की प्रारम्भ की हैं। राजस्थान में नागौर और चूरू जिले ऐसी परियोजनाओं को प्रारम्भ करने के लिये उपयुक्त समझे गये। लेकिन ऐसी योजनाओं पर कार्य वास्तव में १९६३ ६४ के मध्य में ही शुरू हुआ। हमारे यहां बहुत से प्राकृतिक स्रोतों का कोई उपयोग नहीं हो सका है। कुशल कारीगर उपलब्ध हैं, उन की बेरोजगारी अथवा अर्ध-रोजगारी की परिस्थिति को देखते हुए इन योजनाओं के अन्तर्गत प्रशिक्षण सुविधाएँ, कर्ज देने के लिये पर्याप्त धनराशि का प्रावधान, दुर्लभ और आयातित कच्चे माल का उदारता से आवंटन करने और आर्थिक सहायता की विशेष योजनाएं भी इन परियोजनाओं में शामिल की गई। परिणाम स्वरूप दोनों प्रकार की परियोजनाओं में आशाजनक प्रगति परिलक्षित हुई है जिस का संक्षेप में उल्लेख करना समीचीन होगा।

राजस्थान लघु उद्योग निगम जयपुर द्वारा २४ लाख रुपयों की लागत से ४०० करघा वाले दो ऊन के स्पिनिंग एवं कोम्बारडिनेशन के प्रतिष्ठान चूरू व लाडनूं में लगाये जा रहे हैं। ऐसी आशा है कि ये इकाइयां शीघ्र ही उत्पादन प्रारम्भ कर देंगी। परियोजना अधिकारी द्वारा एक वूलन डाइंग एण्ड फिनिशिंग सेंटर चूरू में स्थापित किया जा रहा है। लगभग ३३,३९९ रुपयों की लागत की मशीनें खरीद

कर लगाई जा चुकी हैं। चूरू-स्थित परियोजना-अधिकारी द्वारा बिजली प्राप्त करने की आवश्यक कार्यवाही की जा रही है।

नागौर और चूरू परियोजनाओं में से प्रत्येक के लिये चालू वर्ष में ४,७८,००० रुपया का कुल बजट का प्रावधान रखा गया है।

इन परियोजना-क्षेत्रों में एक आदर्श चर्म शोधन एवं कमाने के संयत्र स्थापित करने की योजना विचाराधीन है। पूरे राजस्थान में चमड़े को साफ कर, उस पर चमक लाने सम्बन्धी कोई संयत्र काम नहीं कर रहा है तथा देहाती चमड़ा कमाने वालों द्वारा कमाये हुए चमड़े को राज्य से बाहर, अन्तिम रूप देने और पुनः कमाने के लिये, भेजा जाता है।

उद्योग निर्देशालय ऐसी अनेक उपयोगी योजनायें तैयार कर रहा है, जिन का लाभ छोटा उद्योग-उपकर्मी उठा सकेगा। इन योजनाओं में स्थानीय रूप से उपलब्ध कच्चे माल और उत्पादन पर आधारित उद्योग लगाने के लिए लोगों को प्रोत्साहित किया जायगा। इस से ग्रामीण और अर्द्ध-शहरी इलाकों में छोटी छोटी औद्योगिक इकाइयों का विकास हो सकेगा। ऐसी लगभग २० योजनाओं को छपाया जा चुका है तथा शेष ४० योजनायें छपाई जा रही हैं। राजस्थान के लघु उद्योगों की एक निर्देशिका भी मुद्रणाधीन है।

लघु उद्योग सेवा-संस्थान, जयपुर —

केन्द्रीय सरकार ने प्रत्येक राज्य में ऐसे सेवा-संस्थान स्थापित किये हैं। इस संगठन के मुख्य काम हैं —

१ आयोजन और उत्पादन सम्बन्धी तकनीकी सलाह देना, नये उद्योग शुरू करने या वर्तमान उद्योग के विस्तार की सलाह देना, सुधरी हुई तकनीकी प्रक्रियाओं और आधुनिक मशीनों के उपयोग सम्बन्धी सलाह देना।

२ राज्य के विभिन्न स्थानों पर बने हुए संस्था के वर्कशाप और विस्तार केन्द्रों में सामान्य सेवा की सुविधा उपलब्ध कराना।

३ मशीनों के पुर्जों के लिए उपकरण, तैयार करना।

४ औद्योगिक कार्यों का प्रशिक्षण देना।

५ विभिन्न प्रकार के उद्योगों के लिए व्यापक पैमाने पर आदर्श योजनायें तैयार करना।

६ राजकीय उद्देश्यों के लिए इकाइयों की स्थापना करना।

७ खास-खास उद्योगों और क्षेत्रों का आर्थिक सर्वेक्षण करना तथा उद्योगों के विकास के लिए ठोस सिफारिशें करना।

८ आर्थिक सूचना-सेवा का संगठन करना ताकि आर्थिक व व्यवसायिक जानकारी प्रदान की जा सके।

९ सहायक औद्योगिक इकाइयों के विकास में मदद करना।

रासायनिक उद्योग —

नमक के स्रोत राजस्थान म सामर, डीडवाना, पचमदरा, फलौदी, और पोकरण मे स्थित हैं। सामर और डीडवाना म प्राप्त नमक मे कैंलशियम और मेगनेशियम नही मिलता। इस प्रकार नमक के अन्य स्रोतो की तुलना मे यह अधिक उत्तम सिद्ध हुए हैं। सामर और डीडवाना नमक के स्रोतो पर हिन्दुस्तान साल्ट कम्पनी का नियत्रण है, जब कि डीडवाना और पचमदरा के स्रोत हाल ही मे राजकीय उद्योगो से आयुक्त को हस्तातरित किये गये हैं। उपरोक्त नमक की इन तीन बडी झीलो के अतिरिक्त राज्य मे अन्यत्र भी नमक अनेक स्थानो म पाया जाता है। नमक के इन स्रोतो से राज्य-सरकार द्वारा बनाये गये *राजस्थान भू राजस्व (नमक वाले क्षेत्रो का आवटन)* नियम १९६२ के अन्तगत विभिन्न व्यवसायियो को नमक निकालने का काम सौंपा जाता है। एक अन्वेषक दल इस का सर्वेक्षण भी कर रहा है। ऐसी आशा की जाती है कि इस से राज्य को केवल राजस्व की प्राप्ति ही नही होगी, बल्कि इन इलाको के लगभग १५ से २० लोगो को रोजगार भी उपलब्ध कराया जा सकेगा।

भारत सरकार ने रगो और कीट-नाशक द्रव्य (डाई एण्ड पेस्टिसाइड) उद्योगो के लिए उन के उत्पादन कायक्रम को सरकार से स्वीकृत कराना आवश्यक कर दिया है। इस के अनुसार विकास आयुक्त ने तीन रग-उद्योग, एक चश्मा उद्योग, एक नव निर्मित मिश्रित रग बनाने के उद्योग, सफेनी पैदा करने वाले पदार्थ बनाने के उद्योग तथा ५ कीट-नाशक-द्रव्य उत्पादक उद्योगो के उत्पादन-कायक्रम स्वीकृत किये हैं।

अनूपगढ, पूगल, फलौदी और पचमदरा के सयत्रो से न केवल उत्तम किस्म की सज्जी पैदा होती है बल्कि काफी सख्या मे लोगो के लिए रोजगार भी मिलता है। वनो की उपज पर आधारित उद्योगो जैसे सुगधियो, खस, केवडा, आदि की भी अच्छी समावनायें हैं, राज्य मे प्राप्त गूदा के कच्चे माल ने अनेक उपकर्मियो को छोटे व बडे पैमाने पर कागज और काड बोड का उत्पादन शुरू करने के लिए प्रेरित किया है।

राज्य म प्लास्टिक की चूडिया बनाने का उद्योग आज देश के महत्वपूर्ण उद्योगो मे गिना जाने लगा है और राज्य से बनी चूडियो का देश के बाहर भी निर्यात होने लगा है। इस उद्योग का जमाव ज्यादातर पाली जोधपुर और जयपुर क्षेत्रो मे है। नायलोन के बटन बनाने के उद्योग का भी काफी हद तक विस्तार हुआ है।

*रासायनिक उद्योगो के नये क्षेत्रो मे किये गये साहसिक प्रयासो के उदाहरणो* की भी कमी नहीं है। काच के रेशा पर आधारित-लम्बाई-चौडाई नापने के फीते बनाने का काम जयपुर के एक व्यावसायिक प्रतिष्ठान ने शुरू किया है जो देश मे अपनी तरह का पहला उद्योग है। जयपुर म ही चिकित्सा मे *उपयोगी रुई वस्त्र उद्योग मे बेकार जाने वाली रुई* के उपयोग करने आक्सीजन और ऐसेटीलिन, जिन्क आक्साइड और केडमियम सल्फाइड उद्योग काय कर रहे हैं। राज्य मे उपलब्ध बेराईटस ने बेरियम साल्ट उद्योग की स्थापना के लिए प्रोत्साहन प्रदान किया है। धौलपुर म हाल ही म एक कारखाना थर्मामीटर बनाने का स्थापित किया गया है जो वहा पहले से चल रहे धौलपुर-ग्लास वक्स से पृथक है।

अलवर म सेनीटरी वेयस बनाने का एक उद्योग स्थापित किया गया है। इस के अतिरिक्त वहा पर इन्सूलेटर और क्रॉकरी बनाने के कई कारखाने पहले से चल रहे हैं।

राज्य म चल रहे उद्यागा को सुविधायें प्रदान करने की दृष्टि से उद्योग निदेशालय न एक रासायनिक प्रयोगशाला की स्थापना की है, जहा नाम मात्र के शुल्क पर विभिन्न उद्योगा के द्रव्यो की जाच की जाती है। इस प्रयोगशाला को भारतीय मापक सस्थान से सम्बद्ध करने के प्रयत्न किये जा रहे हैं।

राजस्थान मे प्राप्त महत्वपूर्ण खनिज ऐसबेस्टोज, बेराइटस, बेण्टोनाइट, बेरिल, क्लेसाइट, ताबा, डालोमाइट, फ्लोराइट, फुलस अर्थ, गारनट, ग्लास, ग्रेफाइट, जिप्सम, कच्चा लोहा, सीसा जस्ता, चादी, लिग्नाइट, मेगनीज, मोडल, स्टेटाइट (सोप स्टोन), टगस्टन, यूरेनियम, सिरमिक, माइका और सगमरमर आदि हैं। इन म से केवल लिग्नाइट, टगस्टन, यूरेनियम और ताबा को छोड कर शेष सभी खनिज निजी क्षेत्र द्वारा खनन किये जाते हैं। राज्य मे बड रासायनिक उद्योगो की स्थापना हो जाने पर, कास्टिक सोडा, सोडा एश, सल्फ्यूरिक एसिड तथा जल-विद्युत उपलब्ध हो जाने पर, राजस्थान की प्राप्त खनिज सम्पदा का सम्पूर्ण उपयोग नही करने का कोई कारण दिखाई नही देता।

राजस्थान पशु-धन की दृष्टि से भी बहुत समृद्ध राज्य है और यहा प्राप्त जानवरो की हड्डियो से गोद (ग्लू) और जिलेटीन जसे पदाथ बनाये जा सकते हैं, लेकिन फिलहाल केवल इन हड्डियो का चूरा बनाया जाता है। जयपुर स्थित एक कारखाने मे इन हड्डियो से गोद निकालने का प्रयास किया गया है। इस प्रकार यह प्रतीत हाता है कि राजस्थान म छोटे पैमाने के उद्योगो के क्षेत्र मे रासायनिक उद्योगा के विकास का पर्याप्त अवसर उपलब्ध है।●

राज्य सरकार ने निजी उद्योग का बिजली की दरा, स्थान की सुविधाओं तथा चुगी, बिक्री-कर आदि मे रियायत देकर औद्योगिक विकास की दिशा मे पर्याप्त सहयोग दिया है। मुझे राजस्थान के उज्ज्वल भविष्य का पूर्ण विश्वास है। जब राजस्थान नहर तथा सिचाई की अन्य योजनाए पूर्ण हो जायेंगी और राजस्थान के गावो को उसका पूर्ण लाभ मिलने लगेगा, तब केवल न राजस्थान ही आर्थिक दृष्टि से समृद्ध होगा, किन्तु देश के आर्थिक सकट को भी दूर करने मे राजस्थान का योगदान बहुत सन्तोषजनक होगा।

—रामनाथ पोद्दार

गगासहाय पुरोहित

# वित्त-निगम और राज्य का औद्योगिक विकास

विभिन्न पचवर्षीय याजनाम्रा की श्रवधि म देश में लघु, मध्यम एव भारी उद्योगो का विकास एव नय-नय उद्योगो की स्थापना हुई है। इन उद्योगा द्वारा उत्पादित वस्तुश्रो से केवल हमारे देश की श्रावश्यक्ता की ही पूर्ति नही होगी, श्रपितु श्रन्य देशो को निर्यात भी किया जायगा तथा बहुमूल्य विदेशी मुद्रा की हमें प्राप्ति होगी। देश का श्रौद्योगीकरण श्रभी शुरू ही हुश्रा है। श्राने वाले समय म हमे इस दिशा में बहुत कुछ करना है।

उद्योगा को प्रारम्भ करने के लिए वैसे तो श्रनक महत्त्वपूर्ण बाता की जरूरत होती है लेकिन प्रमुख जरूरत पूजी की होती है। केन्द्रीय सरकार न १९५१ मे "राज्य वित्त निगम विधेयक, १९५१" पास किया, जिसके द्वारा सभी राज्या मे वित्त निगमा की स्थापना हुई। इन निगमो के द्वारा श्रपने श्रपने राज्य के उद्योगा को दीघकालीन ऋण की सुविधायें दी जाती हैं।

राजस्थान वित्त निगम की भी स्थापना राज्य सरकार द्वारा उपयुक्त विधेयक के श्रन्तगत सन् १९५५ म की गई था। निगम की श्रधिकृत पूजी २ करोड रुपया है, जिसमे से १ कराड के शेयर जारी किये गय हैं। राज्य सरकार ने शेयर हाल्डरो का उनकी पूजी के लौटान की तथा कम से कम ३॥ प्रतिशत लाभाश प्रतिवप देन की गारटी दी है।

राजस्थान वित्त निगम उद्योगों की स्थापना, विकास, नवीनाकरण तथा श्राधुनिकीकरण के लिये १५ हजार रुपये से १० लाख रुपय तक की लम्बी श्रवधि के ऋण सभी प्रकार के उद्योगा को दता है। पब्लिक लिमिटेड कम्पनियो एव रजिस्टर्ड सहकारी समितियो का निगम २० लाख रुपय तक भी ऋण दे सकता है। काई भी श्रौद्योगिक सस्थान जा निम्नलिखित कार्यों मे से कोई काय करता हो श्रथवा करना चाहता हो, निगम से ऋण प्राप्त कर सकता है —

(१) वस्तुश्रो का उत्पादन,

(२) वस्तुश्रा की तयारी,

(३) सरक्षण,

(४) खनिज उद्योग अथवा

(५) बिजली या अन्य किसी प्रकार की शक्ति का उत्पादन अथवा वितरण ।

उपयुक्त प्रकार के कार्यों के अतिरिक्त निगम द्वारा अब होटल एव ट्रासपोर्ट उद्योगों के लिए भी ऋण दिये जाने लगे हैं। वित्त-निगम से औद्योगिक बस्तियों के निर्माण के लिए भी सहायता प्राप्त की जा सकती है।

निगम द्वारा दिये जाने वाले ऋणों की वर्तमान ब्याज दर ८ प्रतिशत (और अब एक वर्ष मे ८॥ प्रतिशत) प्रति वर्ष है जिसमे मूल तथा ब्याज की किश्तों की समय पर अदायगी पर ½% की छूट दी जाती है।

निगम द्वारा ऋण लम्बी अवधि के लिये दिये जाते हैं,जा साधारणतया १० से १२वर्ष के अन्दर वार्षिक किश्तों द्वारा लौटाये जा सकते हैं। किश्तों की अदायगी ऋण देने की तारीख से १ या २ वर्ष के बाद प्रारम्भ की जा सकती है। विशेष परिस्थितियों मे चालू पूजी (Working Capital) के लिये भी ऋण दिया जा सकता है।

निगम द्वारा ऋण औद्योगिक सस्थानो की वर्तमान तथा प्रस्तावित स्थायी सम्पत्ति (Fixed Assets) के रजिस्टर्ड रहन के जरिये दिया जा सकता है। निगम द्वारा राज्य सरकार अथवा अनुसूचित बैंक अथवा किसी राज्य सहकारी बैंक की गारंटी पर भी ऋण दिया जा सकता है। ऋण साधारणतया औद्योगिक सस्थान की स्थायी सम्पत्ति पर ५० से ६० प्रतिशत तक दिया जा सकता है। विदेशों से आयात की गई मशीनों पर ७५% तक भी ऋण दिया जा सकता है।

गत १० वर्षों की अवधि मे निगम ने अनेक औद्योगिक सस्थानों को सहायता प्रदान की है। निगम द्वारा जिन कारखानो एव उद्योगो को ऋण दिये है, उनमे प्रमुख है—सूती वस्त्र उद्योग, शक्कर उद्योग, इंजिनियरिंग, लोहे एव धातु उद्योग, स्ट्राबोर्ड फैक्टरी, नायलोन फैक्टरी, केमिकल काच, क्राकरी, सेनेटरी का विभिन्न सामान बनाने वाले उद्योग, बिजली के तार, पानी के मीटर, गैस आदि बनाने वाले उद्योग। निगम द्वारा अब तक दो होटलों को भी कर्जा दिया जा चुका है तथा और होटलो को भी शीघ्र ही ऋण दिया जावगा।

निगम का यह प्रयास है कि वह राज्य मे स्थापित ज्यादा से ज्यादा उद्योगों का सहायक बन सके एव राज्य के औद्योगिक विकास में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर सके। एक सूचना गृह (Information Cell) खोलने पर विचार हो रहा है। इस सूचना-गृह द्वारा राज्य के उद्योग पतियों को विभिन्न प्रकार की जानकारी मुहैय्या की जावगी। अपने कार्य को सुचारू रूप से चलाने के लिए निगम ने दो सलाहकार कमेटियों का भी गठन किया है। यह सलाहकार समितियां निगम के सचालक बोर्ड को होटल एव ट्रासपोर्ट उद्योगों से प्राप्त प्रार्थना पत्रों का अध्ययन करने के पश्चात ऋण देने के लिए अपनी सिफारिशें करती हैं। राज्य सरकार के एजेन्ट के रूप मे भी राजस्थान वित्त-निगम कुटीर उद्योगों के लिए ऋण स्वीकृत करता है। इन नियमों के अन्तर्गत निगम ने मार्च १९६३ तक ४८ सस्थानों को ७,४८,४०० रुपये के कर्जे स्वीकार किये थे।

यह स्पष्ट है कि आने वाले वर्षों म छोटे और मझल उद्योगो की ओर से राजस्थान वित्त निगम के पास सहायता के लिए अधिक प्रार्थना पत्र आयेंगे और इसके लिए निगम को और अधिक वित्तीय व्यवस्था करनी पडेगी निगम इसकी व्यवस्था कर रहा है। इसके लिए जनता से डिपाजिट लेने की योजना बनाई गई है। मई ६५ के अंतिम सप्ताह मे निगम ने ७५ लाख रुपये डिपाजिट बाड की जो माग की थी, वह पूरी हो चुकी है। १९६४ ६५ म वित्तीय निगम ने जो कारोबार किया है वह पिछले सब वर्षों की कीर्ति मान तोड चुका है। १३३ ७३ लाख रुपये की माग के ५५ प्रार्थना पत्र मिले और उनम से ४४ प्रार्थना पत्रो पर कार्यवाही हो चुकी है। निगम के कारोबार बढन का परिणाम यह हुआ है कि लाभ भी ज्यादा होने लगा है। १९६३–६४ म ५,९३,९११ रुपये का लाभ हुआ था, अब ६,७३,८५६ रुपये का लाभ हुआ है। रिजर्व कोष भी २०००० रुपये (१९६० से)बढकर अब ३१ मार्च १९६५ को ५,८३,३०० रुपये हो गये। पिछले दस वर्षों मे इस निगम ने १९१ कम्पनियो को ४ १४ करोड रुपये दिये है।●

यह अटूट है शक्ति जिसे बिजली पनपाती,
यह अटूट है राग, जो कि भरव कहलाती।
पारगत है आज प्रगति, रोके न सकेगा,
रस कर-बधी कमान, सहज ही नहीं झुकेगी ।।

मेरुदड भारत का अब मजदूर कहाता।
कदम बढ़ाकर यही, महा मानव है आता ।।
श्रम-जीवी जनता है मेरी भारत माता।
मेरा रक्त सवहारा को, विजय सुनाता ।।

# राजस्थान के मध्यवर्ग की आर्थिक स्थिति

केन्द्रीय साख्यिकी सगठन ने कुछ वप पहले (१९५८ ५९) विभिन्न राज्यो के मध्यम वग की आर्थिक स्थिति की जाच पडताल की थी।

इस जाच पडताल के आधार पर राजस्थान के तीन प्रमुख नगरो क मध्यम वग की आर्थिक स्थिति के सम्बध म आवश्यक जानकारी यहा दी जा रही है।

उक्त सर्वेक्षण में मध्यमवग का परिभाषा म उ ह सम्मिलित किया गया है जा शहरी क्षेत्रो के कृपीतर धधो में मुख्यतया बौद्धिक काम करते हैं। उपयु क्त परिवारा म से ६८ प्रतिशत परिवारो की मासिक आय ५०० रु० से कम है। भारत के बडे नगरो मे मध्यमवग के परिवारो का मासिक आय के अनुसार अनुमानित वर्गीकरण निम्नलिखित है —

| मासिक आय रु० | प्रतिशत | मासिक | आय प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| ०—७५ | ० ७६ | ३००—५०० | २३ ७७ |
| ७५—१०० | ३ ०८ | ५००—७५० | ८ ७३ |
| १००—१५० | १३ १० | ७५०—१००० | ३ ६६ |
| १५०—२०० | १७ ३७ | १०००—१५०० | २ ८३ |
| २००—३०० | २४ ९८ | १५०० या ऊपर | ७ ६४ |
| | | कुल | १०० ०० |

विभिन्न मदों पर प्रति परिवार औसत मासिक व्यय

| | जयपुर | | जोधपुर | | अजमेर | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | रुपये | प्रतिशत | रुपये | प्रतिशत | रुपये | प्रतिशत |
| भोजन, पेय और तम्बाखू | १२० ३० | ३८ ७३ | ११९ ५८ | ४२ ४० | १४० ४० | ३८ ८८ |
| रोशनी, ईधन | १२ ७० | ४ ११ | १२ ५९ | ४ ४६ | १३ ३९ | ३ ७१ |
| कपडा, बिस्तर, जूता | ४६ ७१ | १५ ०४ | ३८ ८१ | १३ ०५ | ५६ ०६ | १५ ५८ |
| घर, बतन और फर्नीचर आदि | ४५ ६२ | १४ ६९ | २७ ६८ | ९ ८२ | १३ ७४ | ८ ७९ |
| विविध | ८५ २० | २७ ४३ | ८५ ०४ | ३० २७ | ११९ ३२ | ३३ ०४ |
| कुल व्यय | ३१० ६० | १०० ०० | २८२ ०० | १०० ०० | ३६१ ११ | १०० ०० |

हम उपयु क्त अक पढने समय यह ध्यान रखना चाहिए कि कलकत्ता, बम्बई, मद्रास और दिल्ली आदि बडी आय वाले बहुत बडे नगर भी इस तालिका में सम्मिलित हैं। स्वभावत जयपुर, जोधपुर और अजमेर म आय के अनुसार परिवारा की सख्या उपयु क्त तालिका से भिन्न होगी।

| | जयपुर | जोधपुर | अजमेर |
|---|---|---|---|
| मध्यम वग के परिवारो की अनुमानित सख्या | १८,७०० | ६,६०० | ६,५०० |
| प्रति परिवार औसत कमाने वाले | १ १२ | १ १६ | १ १२ |
| प्रति परिवार मासिक व्यय रु० | ३११ | २८२ | ३६१ |
| प्रति व्यक्ति मासिक व्यय रु० | ४० | ५३ | ६८ |
| प्रति परिवार सदस्य | ४ ४ | ५ ३ | ५ ३ |
| प्रति परिवार औसत आमदनी रु० | ३६८ | ३३० | ३३३ |

उपयु क्त तालिका से विभिन्न नगरा के नागरिको के व्यय आय, जीवन-स्तर तथा विभिन्न मदों पर किए जाने वाले खच का ज्ञान होना है। यह अक पढते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि ये अक अनुमान मात्र हैं। बहुत से व्यक्ति अपनी आय कम और व्यय ज्यादा बताते है। इसलिए सर्वेक्षण कर्ताओ को इस बात का ध्यान रखना पडता है। बहुत से व्यक्ति अपनी गुप्त आय को प्रगट नही करना चाहते। जिस नगर मे आराम आदि की सुविधायें ज्यादा होती हैं, वहा उनके कारण कुछ खच भी बढ जाता है।

**कुछ खास मदो पर व्यय**

| | जयपुर | | जाधपुर | | अजमेर | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | रुपये | प्रतिशत | रुपये | प्रतिशत | रुपये | प्रतिशत |
| जूते | ४ ८६ | १ ५६ | ४ ७२ | १ ६७ | ६ ५२ | १ ८१ |
| किराया मकान | २८ ७९ | ९ ७२ | २० ४९ | ७ २५ | २० ८० | ५ ७६ |
| फर्नीचर | १ ५२ | ० ४९ | ० ५५ | ० २० | १ ५३ | ० ४ २ |
| चिकित्सा | १० २९ | ३ ३१ | ४ ६८ | १ ६६ | ११ १२ | ३ ०८ |
| शिक्षा व अखबार आदि | ११ ४८ | ३ ७० | १० ०४ | ३ ५६ | १६ ४९ | ४ ७० |
| यातायात और सवारी | १८ ४० | ५ ९२ | ८ ७० | ३ ०९ | १९ १२ | ५ ३० |
| पानी बिजली आदि आवश्यक सेवायें | ६ २५ | २ ०१ | ४ २४ | १५० | ४ ७२ | १ ३२ |

बी० डी० माथुर

# सडको का विकास

यातायात व परिवहन के साधनो का राज्य के आर्थिक विकास के लिये अत्याधिक महत्व है। आधुनिक समय मे सडकों के विस्तार को आर्थिक समृद्धि का सूचक माना जाता है। राजस्थान जसे कृषि प्रधान अर्थ-व्यवस्था वाले प्रदेश मे अच्छी सडकें होना एक प्राथमिक आवश्यकता है। यहा मुख्य समस्या आर्थिक उत्पादन-क्षेत्रो की उपज को,कमी या सूखे वाले क्षेत्रों मे पहुँचाने तथा समुचित वितरण की है। क्यो कि राजस्थान मे प्राय अकाल की स्थितिया उत्पन्न हो जाती हैं। अधिक सडकों का विकास होने पर ही कृषक अपनी उपज उचित कीमत पर बाजार मे बेच सकता है और अपनी आर्थिक स्थिति सुधार सकता है। प्रदेश का औद्योगिक विकास, खानो की बहुमूल्य सम्पत्ति का उपयोग और कुशल प्रशासन, सडको के विकास से ही सम्भव हो सकता है।

राजस्थान, एकीकरण के पूर्व देशी रियासतो का राज्य था, जिस म जोधपुर जैसे विशाल क्षेत्र और शाहपुर जैसा छोटा इलाका था। लेकिन इन देशी राज्यो के वित्तीय साधन सीमित थे, इस से परिवहन की उचित व्यवस्था नही थी। यहा तक कि राजधानी जयपुर नगर भी सभी सब-डिवीजन मुख्यालयों से पक्की सडको से सम्बद्ध न था।

राजस्थान के एकीकरण के समय (१९४९ म) क्षेत्रफल २,३०,२०७ वर्गमील था और जनसंख्या १ ५३ करोड थी, लेकिन सडकों की कुल लम्बाई केवल ८,४१८ मील थी। प्रथम पचवर्षीय योजना के प्रारम्भ म सडको की कुल लम्बाई १०,७७० मील थी।

राजस्थान के एकीकरण के पश्चात पुरानी सडकों में सुधार तथा नयी सडक-निर्माण के लिये सतत् प्रयत्न किये गये, सडक विकास कार्यक्रम बनाते समय नागपुर-योजना की सिफारिशो को ध्यान में रखा गया। सडक-विकास-योजना बनाते समय मूल उद्देश्य, प्रशासनिक इकाइयों को सडकों से सम्बद्ध करना तथा क्रमश सभी जिला-मुख्यालयों को, सब-डिवीजन मुख्यालय और तहसील मुख्यालयों से सडको से जोडना था। कृषि, औद्योगिक खनिज क्षेत्रो और पर्यटक स्थानो मे परिवहन-व्यवस्था को भी आवश्यक महत्व प्रदान किया गया।

प्रथम पचवर्षीय योजना-काल मे सडक निर्माण-योजना के लिये ५ करोड रु० का प्रावधान रखा गया था और कुल व्यय ४ ९८ करोड रु० का हुआ।

आर्थिक व अन्तर्राजीय महत्व की सडका (केन्द्र सचालित योजना) पर ५४ लाख रु० का प्रावधान रखा गया और ३६ ५८ लाख रु० व्यय हुआ।

१ ३०४ मील लम्बी नयी सडकें बनाई गई तथा १,०६५ मील की वतमान सडको म सुधार-काय किया गया, इस मे मे ६६ मील की सडकें केन्द्रीय सचालित योजना के अन्तगत निर्मित हुई । इस प्रकार राजस्थान म कुल सडको की लम्बाई प्रथम योजना काल के अत म अर्थात ३१ ३ ५६ तक १३,६८८ मील हो चुकी थी।

सुनियोजित कायक्रम के प्रथम दौर मे पहली पचवर्षीय योजना-काल मे आशातीत सफलता प्राप्त हुई, और विकासोन्मुख योजना के उज्ज्वल भविष्य के लिय द्वितीय पचवर्षीय योजना-काल मे सडको के लिये और अधिक विस्तृत कायक्रम बनाया गया।

द्वितीय पचवर्षीय योजना-बनाते समय भी नागपुर योजना के उद्देश्य ध्यान मे रखे गये थे और निम्न उद्देश्य निर्धारित किये गये थे –

१ ५,००० से अधिक जनसख्या वाले सभी गाँवो को सडको से जोडना।
२ तहसील व सब-डिवीजनल मुख्यालयो को सडको से मिलाना।
३ मुख्य-मुख्य खाना की सामान्य सडक-व्यवस्था से सम्बद्ध करना।
४ नव-विकसित भाकरा व राजस्थान नहरी क्षेत्रो मे पर्याप्त सडक-व्यवस्था करना।

सीमित वित्तीय साधनो के कारण नागपुर योजना के लक्ष्यों की प्राप्ति नही हो सकी।

**वित्तीय व भौतिक प्रगति –**

आरम्भ मे योजना आयोग ने राज्य को द्वितीय पचवर्षीय योजना म सडको के लिये केवल ८ ६६ करोड रु० की राशि स्वीकृत की थी, लेकिन १६५६, मे अजमेर का राजस्थान मे विलय होने पर ४२ ५० लाख रु० की राशि वढा दी गई। इस प्रकार राज्य द्वारा योजना म सडका पर सम्पूर्ण निर्धारित प्रावधान ६ ४१ करोड रु० का रखा गया। उपरोक्त प्रावधान के मुकाबिले योजना के अन्त तक कुल १० ०८ करोड रु० का व्यय हुआ, जो निर्धारित प्रावधान का १०७ प्रतिशत रहा। केन्द्रीय सचालित योजना के अन्तगत कुल ६८ लाख रु० का व्यय हुआ।

| भौतिक लक्ष्य व उपलब्धिया | प्रस्तावित लक्ष्य | उपलब्धियां |
|---|---|---|
| १ नवीन सडक निर्माण | २,७०८ मील | २,१७० मील |
| २ वतमान सडको मे सुधार | १,६४२ मील | १,६७५ मील |
| | ४,६५० मील | ४ १४५ मील |

द्वितीय पचवर्षीय योजना के अन्त तक (३१ ३-६१) कुल सडका की लम्बाई १६,७४४ मील हो चुकी थी, जिस म ८ २६३ मील पक्की सडकें थी, जिन का प्रति १०० वगमील क्षेत्र औसतन ६ मील था। यद्यपि

राजस्थान म सभी प्रकार की सडका की लम्बाई प्रति १०० वगमील क्षेत्र मे औसतन १२७ मील थी, लेकिन अखिल भारतीय औसतन, १२ मील पक्की सडकें व २६ मील सभी सडकें थी। इस प्रकार यदि तुलनात्मक दृष्टिकोण से राजस्थान म लक्ष्यो की उपलब्धियो का मूल्याकन किया जाय, तो यह ज्ञात होगा कि हमने नागपुर-योजना म निर्धारित लक्ष्या की केवल ५० प्रतिशत उपलब्धियाँ प्राप्त की।

द्वितीय पचवर्षीय योजना-काल म सडका पर पुल बनाने के काम को भी उचित महत्व दिया गया था, क्योंकि बहुत सी सडको पर पुला के अभाव म वर्षा काल म आवागमन अवरुद्ध हो जाता था। अत बडे-बडे पुला व रपटा का निर्माण किया गया।

तृतीय पचवर्षीय योजना (१६६१-६६)

विगत १० वर्षों मे पहली और दूसरी पचवर्षीय योजनाओ म परिवहन के साधनो के विकास की दिशा म राज्य ने निरन्तर प्रयत्न किये एव प्रगति सतोषप्रद रही, लेकिन समस्त राज्य म सडका का विस्तृत जाल बिछाने के उद्देश्य से इसे पर्याप्त नही कहा जा सकता है। सडक-विकास के लिये तृतीय पचवर्षीय योजना २० वर्षीय सड़क-विकास कार्यक्रम पर आधारित थी, जो भारत के समस्त राज्यो के मुख्य अभियन्ताओ द्वारा तैयार की गई थी, लेकिन राजस्थान म वित्तीय विषमताओ के कारण २० वर्षीय योजनाओ के निर्धारित लक्ष्या की प्राप्ति होना सम्भव नहीं हो सका।

तृतीय योजना के मुख्य-मुख्य निम्न उद्देश्य थे —

१ ५,००० या अधिक आबादी वाले सभी गाँवो को सडको से जोडना।

२ यातायात की आवश्यकतायें पूरी करने के लिये सडका को सुधारना।

३ प्रशासन के लिये सभी तहसील, जिला मुख्यालया को सडको से मिलाना।

४ राजस्थान नहर, भाखरा नहर और चम्बल नहर परियोजना-क्षेत्रा म अच्छी सडक-व्यवस्था करना।

५ खनिज-क्षेत्र व खाना के समीप सडक निर्माण-कार्य जारी रखना।

६ सभी राजकीय मार्गों और मुख्य जिला-सडको पर डाम्बर बिछाना, ताकि उन पर हर मौसम म आवागमन जारी रह सके।

इस सडक-योजना के लिये प्रारम्भ मे १३ करो रु० की राशि स्वीकृत की गई थी, लेकिन आर्थिक विषमता के कारण पुन १९६३ मे उपरोक्त प्रावधान ११ ५० करोड रु० का किया गया। इसी प्रकार वार्षिक प्रावधाना मे भी कमी की गई और वास्तविक खचा योजना के अन्त तक ९ ७६ करोड रु० ही हुआ।

तीसरी योजना के अन्त मे ३१ माच, १९६६ तक राजस्थान म कुल सडका की लम्बाई १८,६५४ मील के लगभग होने की सम्भावना है।

वर्षों मे प्रत्यक जिले मे क्षय रोग का एक-एक केन्द्र चिकित्सालय स्थापित करने का सामाजिक लक्ष्य पूरा कर लिया जायगा।

१७ राष्ट्रीय मलेरिया उन्मूलन दल राज्य के सम्पूर्ण क्षेत्र म कायरत हैं। राज्य के सब जिलो म मलेरिया-उन्मूलन का काय सम्पन्न किया जा चुका है और तृतीय योजना काल मे राज्य की ८० प्रतिशत जनसख्या का चेचक निरोधक टीके लगाए जाने का लक्ष्य भी पूरा किया जाने वाला है। राज्य म २५ रोग-निरोधक इकाइयाँ काय कर रही हैं तथा ३० इकाइया चतुथ योजना म और खोलनेका लक्ष्य रखा गया है।

प्रथम, द्वितीय एव तृतीय पचवर्षीय योजनाओ म इन समस्त समस्याओ पर राज्य सरकार पर्याप्त ध्यान दे रही है और यह खुशी की बात है कि तृतीय योजना के अत तक प्रति दस लाख जनसख्या के लिए ५२३ रोगी शयाए हो गई हैं जब कि द्वितीय पचवर्षीय योजना के अन्त तक ४०६ तथा राजस्थान-निर्माण के समय ३०० थी। राज्य म रोगी शयाओ की सख्या सन् १९६५ म ११,६६१ तक पहुँच गई है जबकि राजस्थान निर्माण के समय ४,७८८ रोगी शैयाए तथा द्वितीय योजना के अन्त तक ८,९२८ रोगी शैयाए थी।

शहरी क्षेत्रो के अस्पतालो म रोगियो की भीड लगी रहती है और ग्रामीण क्षेत्रो मे उपलब्ध चिकित्सा-सुविधायें भी अपर्याप्त हैं। जनसख्या में तीव्र वद्धि के होते हुए भी चतुर्थ पचवर्षीय योजना म प्रस्तावित योजनाओ से योजना के अन्त तक रोगी शयाओ का अनुपात ५९७ तक पहुँच जायगा।

राज्य म, जहाँ इस के निर्माण के समय ४९२ वगमील मे एक मेडीकल सस्थान था, तृतीय योजना के अन्त तक १५६ वगमील म ही इस प्रकार का एक एक सस्थान हो गया है। चतुर्थ पचवर्षीय योजना मे प्रस्तावित योजनाओ से १३९ वगमील म एक सस्थान होगा और इस दिशा में हमारी निरन्तर प्रगति से आगामी चौथी पचवर्षीय योजना म हम ४८ वगमील म एक सस्थान के अखिल भारतीय औसत के बराबर आ जायेंगे।

परिवार-नियोजन —

परिवार नियोजन का आशय, इच्छानुसार सतानोत्पत्ति करना है, न कि सयोगवश। इस के महत्व पर प्रकाश डालने की आवश्यकता नही है। इस योजना को देश की बढती हुई जनसख्या को ध्यान म रखते हुए, एक राष्ट्रीय प्राथमिकता के रूप म, शामिल कर लिया गया है। यदि समय पर जन सख्या की वद्धि नही रोकी गई तो इस से न केवल आर्थिक एव अन्य कठिनाइयाँ बढ़ेंगी बल्कि समाज के लिये तेजी से बढ़ रही चिकित्सा एव स्वास्थ्य सेवाओ पर भी कुप्रभाव पड़ेगा।

राज्य मे इस समय २३२ ग्रामीण परिवार नियोजन चिकित्सालय एव ५५ शहरी परिवार नियोजन चिकित्सालय चल रहे हैं। जिला-केन्द्रो पर परिवार नियोजन के २३ चलत फिरते शल्य चिकित्सा यूनिट काय आरम्भ कर देंगे। राज्य म इस कायक्रम म तेजी लाने के लिए एव उप-सचालक की नियुक्ति कर दी गई है। जयपुर मे एक परिवार-नियोजन प्रशिक्षण-केन्द्र स्थापित किया गया है, जिस म डाक्टरो, महिला-

स्वास्थ्य-निरीक्षकों एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं आदि को प्रशिक्षित किया जा रहा है और अब तक ६८९ व्यक्तियों को प्रशिक्षित किया जा चुका है। सरकार आई यू सी डी योजना को सफल बनाने का भरसक प्रयास कर रही है और राजस्थान में लोग इस में पर्याप्त रुचि ले रहे हैं। जयपुर, अजमेर, अलवर, भरतपुर, सीकर, सवाई माधोपुर तथा टोंक जिलों में परिवार-नियोजन की विस्तृत परिवार नियोजन योजना स्वीकृत किया जा चुका है तथा इस के अन्तर्गत राज्य-जिला तथा खण्ड स्तरों पर स्टाफ नियुक्त हो गया है। उक्त योजना, राज्य के शेष जिलों में भी आगामी वर्षों में, चालू की जायेगी।

राज्य में १४००० व्यक्तियों की जनसंख्या के लिये एक डाक्टर है जब कि ६,००० व्यक्तियों के लिए एक डाक्टर का अखिल भारतीय औसत है। द्वितीय पंचवर्षीय योजना में एक मेडीकल कालेज की स्थापना की गई। तृतीय पंचवर्षीय योजना में भी एक मेडीकल कालेज की स्थापना की गयी। द्वितीय योजना काल में बीकानेर में खुले मेडीकल कालेज से १९६४-६५ से डाक्टर तैयार हो रहे हैं। उदयपुर स्थित आर एन टी मेडीकल कालेज से १९६६-६७ में मेडीकल स्नातकों का प्रथम दल तैयार होगा।

राज्य में डाक्टरों की कमी को पूरा करने के लिये २ और मेडीकल कालेज जोधपुर और अजमेर में, १९६५-६६ में स्थापित किये गये हैं। अब इन पांचों मेडीकल कालेजों में भर्ती की क्षमता ६३०, प्रतिवर्ष हो गई है।

शिक्षण संस्थाओं एवं विभिन्न विशेषताओं में अग्रिम चिकित्सा विज्ञान के उपयोग द्वारा चिकित्सा सुविधायें उपलब्ध कराने के लिये स्नातकोत्तर मेडिकल व्यक्तियों की आवश्यकता है। विभिन्न विशेषताओं में शिक्षण देने के लिये स्नातकोत्तर चिकित्सा-संस्थान के रूप में जयपुर स्थित एस एम एस मेडिकल कालेज को विकसित करने का प्रस्ताव है। चतुर्थ पंचवर्षीय योजना की अवधि में अन्य बुनियादी विषयों की शिक्षण देने के लिये उदयपुर तथा बीकानेर मेडिकल कालेज को विकसित करने का विचार है।

**स्वास्थ्य शिक्षा ब्यूरो —**

राज्य में स्वास्थ्य सम्बन्धी शिक्षा के प्रचार एवं प्रसार करने हेतु तृतीय योजना-काल में स्वास्थ्य शिक्षा ब्यूरो की स्थापना की गई है। राष्ट्रीय स्वास्थ्य योजनाओं का पारस्परिक समन्वय करने हेतु तथा इस सम्बन्ध में प्रचार-वृद्धि हेतु इस ब्यूरो की शाखायें जिला स्तर पर स्थापित करने का प्रयास किया जा रहा है।

**विविध —**

जयपुर तथा अजमेर में स्कूल-स्वास्थ्य-दल कार्य कर रहे हैं। इस कार्यक्रम का विस्तार करने के लिये चतुर्थ पंचवर्षीय योजना में पांच और दल स्थापित किये जायेंगे। बाल-चिकित्सा एवं अस्थि चिकित्सा सेवाओं का जिला एवं अन्य छोटे अस्पताल के स्तर पर विस्तार किया जायगा तथा अस्थि-चिकित्सा सेवाओं के अन्तर्गत शारीरिक चिकित्सा की सुविधाएं भी उपलब्ध की जायेंगी।

**चतुर्थ योजना —**

क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थान भारत का एक बडा राज्य है। पिछली पचवर्षीय योजनाओ म उपलब्ध धन से राज्य के सभी जिलो मे चिकित्सा एव स्वास्थ्य सेवाए उपलब्ध किया जाना सम्भव नही था।

चतुथ योजना के प्रस्तावो के जिला-सब डिवीजन एव तहसील मुख्यालयों तथा ग्रामीण क्षेत्रो मे चिकित्सा-सुविधाए उपलब्ध किये जाने का लक्ष्य रखा गया है। पहाडी क्षेत्रो तथा उन क्षेत्रो मे जहा पीने का पानी खुले तालाबो अथवा बावडियो से ही प्राप्त होता है, नाहरू नाम का रोग प्राय फैल जाता है। चतुथ पचवर्षीय योजना मे इस रोग के, जो समाज के दुबल वर्गो, अनुसूचित एवम् जनजातियो में होता है, नियन्त्रण की भी एक योजना सम्मिलित की गई है।

इस के अतिरिक्त राज्य की चतुथ योजना मे गुप्त अगा की बीमारी की रोक-थाम के लिये १० जिलों म १० इकाइया स्थापित करने का प्रावधान रखा गया है।

राज्य की चतुथ योजना के अन्तगत चिकित्सा-सेवाओ के विकास के कायक्रम निर्धारित करते समय मुख्य रूप से, इस बात का ध्यान रखा गया है कि इस क्षेत्र की योजनाओ का लाभ साधारणतया सभी लोगो को तथा विशेषकर समाज के पिछड़े हुए वर्गों को मिले।

**अनुसधानीय सेवायें —**

द्वितीय योजना के अन्त तक राज्य म केवल १२ अनुसधान-शालायें थी, जिन की सख्या बढ़ कर तृतीय योजना के अन्त मे १५ हो गई हैं। प्रत्येक जिले म एक एक ऐसी अनुसधान शाला स्थापित करने के लक्ष्य को ध्यान मे रखते हुए, चतुथ योजना-काल म ११ ऐसी अनुसधान शालायें स्थापित करने का लक्ष्य रखा गया है। इस के अलावा जयपुर मे स्थित केन्द्रीय अनुसधान शाला का भी विकास करने का लक्ष्य रखा गया है।●

> गांधीजी के दल के लिए ऐसी ऐसी बातें रसायन का-सा काम देती रहती थीं। किसी ने बताया कि मीरा बहन एक मतबा जनाने डिब्बे मे यात्रा कर रही थीं। इतने मे टिकट कलेक्टर टिकट देखने आया। मीरा बहन का सिर तो मुडा हुआ है ही। टिकट कलेक्टर आया उस समय ओढ़नी सिर पर से उतर गई थी। टिकट-कलेक्टर ने समझा कि यह पुरुष है और कहने लगा "आपको पता है, यह जनाना डिब्बा है ?" मीरा बहन ने तुरन्त ओढ़नी सिर पर खींची। डिब्बे के लोग हस पडे और टिकट-कलक्टर बेचारा झेंपकर चलता बना।
>
> —घनश्याम दास बिड़ला

Narain Sinha

# Economic and Industrial Aspects of Tourism

To the layman the word "Tourism" conjures up a pleasant vision of travel combined with pleasure, and so it is. But a good deal of economics goes into making travel a pleasing and a pleasurable past time. In recent years Tourism has grown into an economic activity of staggering dimensions and its importance as a booster of national income, as a foreign exchange earner, as a job creater and at last but not the least as an indirect source of tax revenue, has come to be widely recognised. Among all the economic activities, perhaps, Tourism is the one, which can produce maximum foreign exchange for a relatively modest investment. Economists say that a tourist dollor has a "Multiplier effect" on the economy of host countries. The economic benefits from tourism need hardly emphasised. The report of a research team commissioned by the United States Government came to conclusion that tourist expenditure generates 3 2 to 5 5 as much economic activity in the recipient country. This takes into account the initial spending by the tourist and response from those, who receive the money. The same report says that the tax revenue accruing to the State Govt from Tourism works out to about 10% of the total turn-over from the tourist expenditure. The State exchequer thus stands to gain from Tourism.

Tourism is a highly labour oriented industry. It percolates the economy of the host country from the highest wring of the industrial and labour ladder to the lowest. Its beneficiaries range from the Multi-Million hotelier to the humble shoe-shine boy. Porters, guides, taxi drivers, bearers in hotels and professional entertainers reap rich harvests from tourist spendings in the State. It would be in the fitness of things to mention that the handicraft industry of the States and the country as a whole have had an unprecedented revival, especially when it was tottering on its last legs and fighting for survival.

In India in general and Rajasthan in particular Tourism is a new industry and a new "ism", but in this short span of its growth of 10 years in Rajasthan, it

has come to stay Tourism has been declared as an Industry and an economic gainer to the state and the country So much so, that it is responsible for an *inter-exchange of 10 million dollors of commercial transaction all over the world* Even in our country with such strict foreign exchange regulations, the tourist industry is the 5th largest foreign exchange earner The potentialities are immense—but have to be tapped in the right manner Ours is a developing country with limited resources, the development of tourism has, therefore, to be intelligently phased, so that the country derives maximum benefit for the investment made

Rajasthan has been the pioneer State in acknowledging the importance of the development of Tourist Industry and giving it an impetus The economic benefits from such a policy have been many, tourist spendings generate a chain-reaction of stepping up handicrafts—creation of more hotels, luxury tourist coaches, *Low Income Group Traveller s Bungalows and approach roads to the place of* Tourist interest Ten years of the development and promotion of Tourism have revealed a very clear picture of tourist potentiality of the State Tourist Traffic has increased from 2,500 in 1956 to 28,000 in 1964 The following figures will give an idea of economic activity generated in Rajasthan as a result of tourist traffic —

## Year-wise Tourist Statistics

| Year | NUMBER OF TOURISTS WHO VISITED | | | INCOME | |
|---|---|---|---|---|---|
| | India | Rajasthan | | | |
| | Foreign | Foreign | Home | Foreign | Home |
| 1955 | 30,000 | 1,500 | 6 0 Lac | 3 Lac | 90,00,000 |
| 1956 | 48,000 | 2,500 | 6 5 ,, | 5 ,, | 90,75,000 |
| 1957 | 80,544 | 6,000 | 7 0 ,, | 12 , | 1,05 00,000 |
| 1958 | 92,202 | 9 500 | 8 6 ,, | 19 ,, | 1 20,00,000 |
| *1959* | *1,09 464* | *11 000* | *9 5* ,, | 22 ,, | *1,42,50 000* |
| 1960 | 1,23,095 | 15,000 | 10 5 ,, | 30 ,, | 1,44,00,000 |
| 1961 | 1 39 804 | 20,000 | 11 0 , | 40 ,, | 1,50 00,000 |
| 1962 | 1,34,360 | 21,000 | 11 2 ,, | 42 ,, | 1,75,00,000 |
| 1963 | 1,40 821 | 25 000 | 11 5 ,, | 50 ,, | 2,00,00,000 |
| 1964 | 1,56,673 | 28,500 | 12 2 ,, | 57 , | 2,50,00,000 |
| 1965 | 1,48 000 | 25 200 | 12 0 ,, | 50 4 ,, | 2,40,00,000 |

## Income From Tourist Bungalows

| Place | 1959 60 | 1960-61 | 1961-62 | 1962 63 | 1963-64 | 1964 65 |
|---|---|---|---|---|---|---|
| Jaipur | 510 00 | 7,754 00 | 11,688 00 | 12 656 00 | 15,284 00 | 20,980 82 |
| Udaipur (Started in May, 60) | | 6,733 00 | 10,211 00 | 9,832 00 | 12,350 00 | 18,732 20 |
| Ajmer (Started since December, 62) | | | | 2,392 00 | 7 550 00 | 11,283 29 |
| Mt Abu (Started since October, 62) | | | | 168 50 | 8 950 00 | 18,556 79 |
| Pushkar (Started since August 64) | | | | | | 477 50 |

## Income From Tourists Visiting Amber

INCOME

| Year | Visitors Fee Rs 0 15 P per visitor | Cars Fee Rs 5/- percar | Elephants Fee Rs 2/-per Elephant | Total |
|---|---|---|---|---|
| 1959 60 | 17,385 00 | — | 3,904 00 | 21,289 00 |
| 1960-61 | 21,224 55 | 5,410 00 | 5,122 00 | 31,756 55 |
| 1961 62 | 21,209 40 | 6,025 00 | 5 926 00 | 33,160 40 |
| 1962 63 | 24,240 00 | 6,720 00 | 6,514 00 | 37,474 00 |
| 1963 64 | 27,596 70 | 8,585 00 | 7,428 00 | 43,609 70 |
| 1964 65 | | | | |
| 1965-66 | | | | |

150 Tourists Cars have been plying for tourists

These figures point out to the visible income added to the State exchequer But the benefits of Tourism are two fold—the visible income and the invisible income Invisible income percolates in the economy of the State and the profits are shared by all the components of the Industry e g the sale of handicrafts generates more employment, hotels are a source of employment and income to the taxi operators, the guides, the bearers, the handicraft owners, jewellers, etc The Travel Agent is another important component of the Tourist Industry He provides services and this distributes and circulates the earnings amongst these employed in this trade 50% of the income from Tourism goes for employment

A great advantage in tourism is that you do not have to invest as much money as in any other industry in order to earn a certain amount of foreign exchange But once foreign exchange by way of Tourism is injected into the economy of a country, the inevitable process of multiplying starts Every pound or dollor injected into the economy of our State multiplies and acts as a stimulator to other economic activities A number of further transactions starts taking place

Tourism is therefore, an industry which imports foreign exchange into our country and exports goodwill and understanding of culture and handicrafts

B N Bhargava

# Panchayatı Raj In Rajasthan

The village Panchayats as they exist today are not new to our way of life References to such local institutions in villages are there in some ancient works like Kautilya s "Arath-shastra The earliest references can be traced in the 'Rig vedas' These popular assemblies were known as Samitis and such bodies-existed at all levels In the Mahabharat Period India witnessed a remarkable development of republics, the "Maha janpadas

The institution of panchayats, thus flourished in ancient India When our nation became a battle field and foreigners started invading us one after another, the village institution suffered a set back, particularly under the British Government who tried to destroy these republics, but inspite of a great set back Panchayats could survive It was our father of nation, Mahatma Gandhi, who gave a call for the revitalisation of these dying republics Gandhiji knew that the soul of India lives in the villages and India s salvation was possible only if villages were cared for, and which also meant reviving of local village institution

Gandhiji visualized India as a nation consisting of small self sufficient village republics

Keeping in view, the importance of the village Panchayats, our constitution gave expression to this idea in the chapter of Directive Principles in the following words

"The state shall take steps to organise village Panchayats and endow them with such powers and authority as may be necessary to enable them to function as units of self Govt '

In 1952 community development programme was launched by the Govt of India to bring about changes in village life For the success of this programme, it was felt that the villagers should be associated with this programme Balwant Rai Mehta committee was constituted to report on the feasibility of the Panchayati Raj

On the basis of the commitee's report, Rajasthan was the first state to constitute rural local bodies at the District, Block and village levels throughout the state The State legislature passed the Rajasthan Panchayat Samiti and Zila Parishad Act in Sept 1959 Panchayat samitis and Zila Parishads were constituted on 2nd Oct 1959 The scheme was inangurated by our late Prime Minister Pt Nehru at Nagore on 2nd Oct 1959

Rajasthan Panchayat Samiti and Zila Parishad Act 1959 gave shape to 3 tier system of Panchayati Raj At the village level, Gram Panchayat was constituted and at the Block level Panchayat Samiti was formed and at District level Zila Parishad was constituted Thus on 2nd Oct 1959, a new era ushered in Rajasthan which was called as "Democratic Decentralisation and which is now known as ' Panchayati Raj "

First elections to these institutions save Panchayats took place in 1959 and the second General elections for all these three institutions were held in January 1961

The way of constituting these institutions in short is as follows —

For the purpose of constituting a Panchayat, every adult member of that Panchayat area is entitled to vote and to get el ctled Head of Panchayat is known as Sarpanch who is elected directly by the voters

All the Sarpanchas of a Block area are members of the Panchayat Samiti The non Official head of the Panchayat Samiti is known as Pradhan, who is elected by all the Panchas and Sarpanchas of the area M L A s from that Block area are also ex-officio members of Panchayat Samiti The S D O is also a member of the Panchayat Samiti, but has not got the right to vote

At the district level Zila Parishad is constituted by all the Pradhans of that District M L A s and M P s The head of the Zila Pasishad is known as Zila Pramukh who is elected by all the members of the Zila Parishad and all the Sarpanchas of that District

In Rajasthan these units of local elf-Government at the village, Block and District levels are based on democratisation and devaluation of power and the resources for the specific purpose of planning and implementing the community development programme with the active and spontaneous participation of the rural people with a view to develop their economic, Social and cultural life Panchayati Raj in Rajasthan occupies a position comparable to the urban local self Government institutions These institutions have been treated as institutions devoted for achieving a welfare state

These institutions, particularly Panchayats and Panchayat Samitis have to perform civil administrative and development functions These institutions have to act as agencies for central and state Governments with regard to planning and imple-

menting the community development programmes and serve as units of community self Government at their own levels These bodies act as community organisations through which the development programmes are planned and implemented and also act as units of self Govt at village Block and district levels

In our State Panchayat Samiti has been concieved as the most powerful unit out of these three units For the purpose of development activities some specific schemes have been transferred from the departments to the Panchayat Samitis Funds in shape of loans and grants are transferred accordingly by these departments for the execution of these transferred schemes The way of implementing these schemes has been left entirely to the Panchayat Samiti Of course, the technical guidance is given by the concerned department for the execution of the schemes But in the present shape the Panchayati Raj institutions are still dependent on the concerned Govt departments for the timely implementation of the plan and programme The main hurdle is paucity of funds These village bodies do not have sufficient funds of their own, which can be utilized for the development works Although the Act provides for imposition of taxes by the Panchayat Samiti and the Panchayats but the local leaders feel scared in imposing these taxes However, in due course when these local leaders would understand the need and necessity of such taxes, they would go for them But still, I feel that since Panchayati Raj, in Rajasthan is aiming at economic, Social and cultural upliftment of the rural people, it requires a flexible and dynamic type of Governmnetal machinery to help achieve its objectives There are other pre requisites such as adequate finance, delegation and devolution of powers, authority and responsiblity minimum control and maximum autonomy, which would help in achieving the objectives of Panchayati Raj

In our State the Panchayati Raj was launched with the aim of securing the all round development of the rural people and this has been partially achieved through the active participation of the rural people With the advanc ment of time more powers and functions should be delegated to these institutions and these would rise to the occassion to meet the challange of the time Panchayati Raj institutions have so far justified the faith put in them by our Government and let us hope the other States would also follow the suit ●

डॉ० एल० डगायच

# राजस्थान मे समाजक्रान्ति का वाहन पंचायती राज

२ अक्टूबर, १६५६ को पडित जवाहरलाल नेहरू न नागौर (राजस्थान) म पचायती राज का श्रीगणेश करते हुए ग्रामवासियो की विशाल समा म कहा "आपने दिल्ली और जयपुर की विधान-सभाओ के लिये अपने प्रतिनिधियो को चुना है। एक तरह से सही दिशा म यह पहला कदम था लेकिन जनता के प्रतिनिधियो को चुनने के बाद भी वास्तविक लोकतत्र की स्थापना नही हुई।"

दिवगत नेता के य उदगार राजस्थान के लिय समाज-क्राति का आह्वान था।

२६ माच, १६४६ राजस्थान का निर्माण हुआ। इस के पूव रजवाडा का निरकुश शासन राजाओ के नीचे छोटी बडी जागीरें थी, जिन पर सामत व छुटभाई एकाधिकार रखते थे। उस समय यह प्रदेश राजपुताना कहलाता था।

लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल ने आजादी (१६४७) के तुरत बाद देशी रियासता के विलीनीकरण का काय अपने हाथ म लिया और 'राजस्थान' बना। अब इस प्रदेश मे सामती शासन के स्थान पर लोक शासन का शुभारम्भ हुआ। जनता के चुने हुए जनप्रतिनिधियो की विधान-सभा बनी। मत्रि मडल का गठन हुआ। लोक-राज्य आगे बढ़ा।

**नया चरण पचायती राज —**

किन्तु गाधीजी की राम राज्य की कल्पना अपूर्ण थी। नेहरूजी का सच्चा लोकतत्र अधूरा था। राजस्थान इस दिशा मे अग्रसर हुआ। उस ने अपने कमठ नेता के नेतृत्व म "पच परमेश्वर वाले पचायती राज की स्थापना कर डाली।

**दाशनिक तत्व —**

इस नूतन, सम्मुन्नत व जागरूक समाज रचना म प्रदेश का ग्राम-ग्राम व ढाणी-ढाणी जाग सके तथा नव निर्माण मे हाथ बटा सके—इस के लिये व्यक्तिश महत्वाकाक्षा आवश्यक थी। अत पचायती राज के माध्यम से निम्न दाशनिक तत्वो का प्रादुर्माव हुआ—

(क) यह जनता का अधिकार है कि वह अपना शासन स्वय करे। मात्र पार्लियामट व विधान सभाओं के लिये वोट देना ही पर्याप्त नही है—अपितु व्यक्ति द्वारा प्रदेश के निर्माण में क्रियाशील होना तथा समान अवसरो का लाभ उठाते हुए आगे बढना है।

(ख) देश व प्रदेश की उन्नति तब सही मानी मे हो सकती है जब कि प्रत्येक गाव उन्नति की ओर अग्रसर हो। यह तभी सम्भव है जब कि ग्राम इकाई को ग्राम स्तर पर अधिकार व अवसर प्राप्त हो।

(ग) देश के योजनाबद्ध विकास की सफलता के लिये जरूरी है कि योजना की प्रक्रिया नीचे से शुरू हो —जिस के लिये ग्राम-स्तर पर जन जागरण, जन-सेवा व जन योजना आवश्यक है।

(घ) प्रशासन तन्त्र म एकात्मकता व तारतम्यता कायम हो सके तथा प्रगति के लिये सघप म सब का योग हो।

तीन महत्वपूर्ण अग —

'ग्राम पचायत' स्वायत्त शासन की महत्वपूर्ण सस्था है। यह सस्था दो हजार की आबादी पर बनाई जाती है। एक ग्राम की एक ग्राम पचायत होती है। जिन गावो की आबादी कम है व दो-तीन मिल कर एक ग्राम-पचायत बना लेते हैं। ग्राम पचायत का मुखिया सरपच होता है जो पचो की राय से काम करता है।

इस के बाद तहसील या विकास-खण्ड स्तर पर 'पचायत समिति' का निर्माण किया जाता है। पचायत समिति के सदस्य उस क्षेत्र की पचायतो के सरपच होते हैं। पचायत-समिति का मुखिया प्रधान कहलाता है जिसका निर्वाचन पच और सरपच करते है।

पचायती राज की तीसरी व अन्तिम सस्था 'जिला-परिषद' होती है। इस के सदस्य जिले की पचायत-समितियो के प्रधान, विधान सभा के सदस्य, लोक-सभा के सदस्य आदि होते हैं। जिला-परिषद का मुखिया 'प्रमुख' होता है जिस का निर्वाचन परिषद के सदस्य एव उस जिले के सरपच करते हैं।

इन स्वायत्त सस्थाओं मे पार्टी का प्रतिनिधित्व नही, अपितु ग्राम का प्रतिनिधित्व होता है। चुनाव किसी पार्टी के नाम से नही लडा जाता है। निर्वाचन काय काल प्राय ३ वष होता है। वस्तुत स्थानीय प्रगति व सेवा के लिये परम लाभकारी तरीका 'पचायती स्वराज्य' ही है।

पचायती सस्थाओ के काय —

सक्षेप में पचायती सस्थायें (ग्राम, तहसील व जिला) स्तर निम्न पर जन-हितषी काय करती हैं —

(१) शिक्षा विकास (२) सामान्य व सीमित फसले (३) निर्माण काय (४) चिकित्सा सेवा उप लब्ध कराना (५) कृषि सिंचाई व खाद के साधनो का प्रबन्ध (६) ग्रामोद्योग का विस्तार आदि।

वित्तीय साधन —

पचायती सस्थाओ की वित्तीय स्थिति अत्यन्त शोचनीय है। ये सस्थाए प्राय सरकार के अनुदान पर चलती हैं। फलत सस्थाओ म स्वावलम्बन नही पनप पाया है। अत जरूरी है कि य सस्थाए स्थानीय साधनो से अपनी वित्तीय स्थिति मजबूत बनायें। जिस से 'ग्राम' इकाई का विघटन न हो तथा सगठित प्रयास चालू रह सके।

पचायती सस्थायें आकडा मे —

राज्य म सन् १९५९ से लोकतान्त्रिक विकेन्द्रीकरण (पचायती राज) योजना लागू है। स्वायत्त शासन की इस तीसरी योजना के अन्तगत ग्राम स्तर पर ग्राम पचायतें, विकास-खण्ड स्तर पर पचायत समितियां तथा जिला स्तर पर जिला-परिषद काय कर रही हैं। सन १९६१-६२ के अन्त म राज्य मे ७,३९५ पचायतें, २३२ पंचायत-समितियां और २६ जिला परिषदें काय कर रही थी।

राज्य म पचायती राज सस्थाओ का गठन व काय 'पचायती राज कानून' के अन्तगत हो रहा है। उक्त कानून को अधिकाधिक व्यावहारिक व समयोचित बनाये जाने के लिये राज्य सरकार कृत-सकल्प है जिस से नूतन समाज की रचना हो और सच्चा लोक-शासन प्रवल व पुष्ट हो सके।

- अत पचायती राज को राजनतिक एव सामाजिक क्रान्ति का वाहन कहा जा सकता है। ●

एक बार मन व्यासजी से कहा 'शेरे राजस्थान तो आप हैं, परन्तु चीताए राजस्थान और भालुए राजस्थान कौन है ?" व्यासजी की आखें हंसी और उन्होंने छूटते ही कहा "तू चाहे उसे यह खिताब दे दे। मुझे शेर नहीं मानता हो तो गीदड ही मान ले। पर म तुझे भुझलाया हुआ चीता मानता हू।" म हँस पडा। यह चुभता हुआ परिहास नारों के प्रति उनकी कचोट को व्यक्त करता है।

—जर्नादन राय नागर

सिद्धनाथ शुक्ला

# श्रम कल्याण कार्य

राष्ट्र की औद्योगिक प्रगति के लिए श्रमिकों का सन्तुष्ट और खुशहाल होना अत्यन्त आवश्यक है। इसलिए यह आवश्यक है कि कारखाने के बाहर रहने वाले श्रमिका के लिए ऐसा स्थान उपलब्ध किया जाय जिससे मजदूर अपना स्वास्थ्य अच्छा रख सकें और सुखी सामाजिक जीवन व्यतीत कर सकें। कारखाने के अन्दर काय करने की परिस्थितिया को सुधारने के लिए कई श्रमिक-कानून बने हुए हैं लेकिन कारखाने के बाहर की कल्याणकारी प्रवृतियाँ राज्य-सरकार द्वारा श्रम-कल्याण केन्द्रा के माध्यम से चलाई जाती हैं।

राजस्थान सरकार ने श्रम कल्याण के महत्व को ध्यान मे रखते हुए सब प्रथम सन् १९५३ मे राज्य के तीन औद्योगिक कस्बा म श्रम-कल्याण केन्द्र स्थापित किए। यह श्रम कल्याण केन्द्र एक ओर श्रमिको को सुखी सामाजिक जीवन व्यतीत करने की सुविधा प्रदान करने तथा दूसरी ओर उन्हें जीवन की मुख्य आवश्यक चीजें (जसे प्राथमिक शिक्षा, सिलाई बुनाई व प्रशिक्षण इत्यादि) उपलब्ध करने के उद्देश्य से शुरू किए गए थे।

सन् १९५३ म प्रारम्भ किए गए केन्द्र श्रमिको के लिए बहुत ही लाभप्रद सिद्ध हुए। इससे अधिक केन्द्र खोलने तथा मौजूदा केन्द्रो के कायक्षेत्र को बढाने की दिशा मे प्रेरणा मिली। इन केन्द्रो की सख्या २९ कर दी गई है तथा सभी मुख्य मुख्य औद्योगिक कस्बे जन-कल्याण केन्द्र कायक्रम के अधीन लाये जा चुके हैं। केन्द्रा की गतिविधियाँ बढा दी गई हैं तथा श्रमिक और उनके परिवार के लडके लडकियो के जीवन के मुख्य पहलुओ को इनके अन्तगत ले लिया गया है।

अभी राजस्थान राज्य मे विभिन्न प्रकार के २९ श्रम कल्याण केन्द्र काय कर रहे हैं। जिनमें १३ अजमेर डिवीजन म, ४ जोधपुर डिवीजन मे, ३ बीकानेर डिवीजन मे, ३ उदयपुर डिवीजन म और ६ कोटा डिवीजन मे स्थित हैं।

सगठन —

श्रम-कल्याण केन्द्रो का वर्गीकरण अ, ब और स तीन प्रकार की श्रेणिया मे किया गया है। यह श्रेणिया उन केन्द्रो मे दी गई सुविधाओं के आधार पर बनाई गई है। प्रत्येक अ श्रेणी के कल्याण केन्द्र मे

क (डिस्पेंसरी) औषधालय, महिलाओं और बच्चों का विभाग, सिलाई-काम, खेल-कूद (इनडोर व आउटडोर) जिमनास्टिक, कुश्ती का अखाड़ा, खेलने का मैदान, वाचनालय और पुस्तकालय तथा रेडियो, हारमोनियम और तबला जैसे मनोरंजन के साधन उपलब्ध रहते हैं। सभी केन्द्रों में हस्तकलाओं का प्रशिक्षण दिया जाता है।

राज्य में ६ अ श्रेणी के केन्द्र, ८ ब श्रेणी के तथा १२ स श्रेणी के केन्द्र हैं। इसके अतिरिक्त भरतपुर व मोडक (खानों के केन्द्र) में दो और मनोरंजन-केन्द्र हैं जिनमें खेल कूद व रेडियो तथा छोटा पुस्तकालय जैसी मनोरंजन की सुविधायें उपलब्ध हैं।

राज्य सरकार ने जयपुर, भीलवाड़ा, ब्यावर, गंगानगर और लाखेरी के केन्द्रों के लिए भवन बना दिए हैं।

श्रमिकों की आवास योजना —

अल्प वेतन भोगी मजदूरों के रहने के लिए आवास की अच्छी व्यवस्था किसी भी श्रमिक-कल्याणकारी योजना का आवश्यक अंग होती है। अतः राजस्थान-सरकार ने औद्योगिक श्रमिकों के लिए मकान बनवाने की आवश्यकता को महसूस किया तथा सन् १९५४-५५ में भारत-सरकार द्वारा अनुदान दिये जाने वाली औद्योगिक आवास योजना के अन्तर्गत श्रमिकों के लिए मकान बनाने की योजना बनाकर भारत-सरकार को स्वीकृति के लिए भेजी गयी।

राज्य में द्वितीय योजना के अन्त तक राज्य के महत्वपूर्ण औद्योगिक कस्बों में ११२२ मकान बनाये जा चुके, जिनमें से ९१२ एक कमरे वाले तथा २१० दो कमरों वाले मकान थे। इस योजना के अन्तर्गत अब तक कुल १९८२ मकान बन चुके हैं। इन मकानों के निर्माण के लिए राज्य-सरकार करीबन ८१.९८ लाख रुपया व्यय कर चुकी है।

औद्योगिक आवास योजना के अधीन मालिकों और मजदूरों की सहकारी समितियों को निम्न प्रकार से सहायता तथा ऋण दिए जाते हैं।

| | ऋण | अनुदान |
|---|---|---|
| (अ) मालिकों को | ५० प्र० श० | २५ प्र० श० |
| (ब) मजदूरों की सहकारी समितियों को | ६५ प्र० श० | २५ प्र० श० |

मजदूरों के लिए बनाए जाने वाले मकानों में बिजली, खुला मैदान, शौचालय, इत्यादि सभी शहरी जीवन की सुविधायें प्रदान की जाती हैं। कुछ कालोनीज में स्कूल, पोस्ट ओफिस और अन्य सुविधायें भी प्रदान की गई हैं।

प्रत्येक श्रमिक-बस्ती में एक श्रम-कल्याण केन्द्र स्थापित किया जाता है, ताकि बस्ती में रहने वाले मजदूरों को डाक्टरी व मनोरंजन इत्यादि की सुविधायें भी उपलब्ध हो सकें।

फुर्सत का समय —

मजदूरा के फुर्सत के समय का सदुपयोग करने और उनमे शिक्षा के प्रसार को बढ़ावा देने के लिए प्रत्येक केन्द्र मे एक-एक पुस्तकालय व वाचनालय रखे गये हैं। प्रत्येक पुस्तकालय में कविता उपन्यास, नाटक व कहानिया इत्यादि सभी विषयो की पुस्तकें रखी जाती है। पुस्तकें उन लोगो को दी जाती हैं जो पुस्तकालय के नियमित सदस्य होते हैं। इसके अतिरिक्त कई दैनिक साप्ताहिक व मासिक पत्र पुस्तकालय के लिए मगाये जाते हैं तथा मजदूरा के बच्चा के लिए चन्दामामा और चुन्नू मुन्नू जसी पत्रिकाएँ भी मगवाई जाती है। अनपढ लोगा को केन्द्र के कर्मचारी समाचार पत्र पढकर सुनाते है, ताकि व लोग भी भारत व विश्व की दैनिक गति विधिया से अवगत रहें।

खेलकूद —

बच्चा के आमोद प्रमोद के लिए सभी अ तथा ब श्रेणी के केन्द्रा म खेल के मैदान सीसॉ मेरी गो राउण्ड, झूले, फिसलन की सीढी इत्यादि का भी प्रावधान रखा गया है। काफी तादाद म बच्चे इन केन्द्रा पर जा कर इन सुविधाओ का लाभ उठाते हैं।

इन केन्द्रा मे टेबिल टेनिस, कॅरम, साप सीढी लुडो इत्यादि कमरे के अन्दर खेलने के खेला की भी व्यवस्था है। बच्चा के मेले, वाद विवाद प्रतियोगिता और अन्य प्रतियोगितायें इन केन्द्रा के नियमित कार्यक्रम हो गए हैं।

नाटक :—

खुले मैदान म सिनेमा मजदूरा के लिए दूसरा आकर्षण है। इस काय के लिए श्रम-विभाग के पास एक १६ मिमि० का सिनेमा प्रोजेक्टर है। चुनी हुई अच्छी फिल्म तथा विभिन्न प्रकार की सामाजिक, एतिहासिक धार्मिक तथा शैक्षणिक फिल्म समय समय पर केन्द्रा व मजदूर बस्तिया म दिखाई जाती हैं।

समय समय पर कल्याण केन्द्रा पर सगीत के कार्यक्रम आयोजित किए जाते है जिसके लिए प्रत्येक अ व ब श्रेणी के केन्द्रा के लिए एक-एक पाट टाइम सगीत अध्यापक नियुक्त करने की स्वीकृति है। इसके अतिरिक्त वहा पर नाटक भी खेले जाते हैं।

खेल कूद प्रतियोगिता —

मजदूरा म परस्पर सदभावना बढाने के उद्देश्य से यह निश्चय किया गया था कि मुख्य-मुख्य केन्द्रो पर डिवीजनल स्तर पर केन्द्रीय खेल-कूद प्रतियोगितायें आयोजित की जाय। उचित तरीके से ये प्रतियोगितायें आयोजित करवाने के लिए एक प्रतियोगिता समिति का निर्माण किया जाता है।

क्षेत्रीय प्रतियोगिताओ म चुने हुए खिलाडी प्रत्येक वर्ष के अन्त मे अपने अपने डिवीजन की टीमा की ओर से भाग लेते हैं। बाहर से आए सभी खिलाडिया का यात्रा-भत्ता तथा ३ रु० प्रतिदिन के हिसाब से दैनिक भत्ता दिया जाता है।

अखिल राजस्थान श्रम-कल्याण केन्द्र खेल कूद प्रतियोगिताओं में करीब २०० प्रतियोगी हिस्सा लेते हैं। इनमें फुटबाल, वॉलीबाल, कबड्डी, रस्साकशी, गोला फेंकना और दौड़ (१०० मीटर, २०० मीटर और तीन टांग दौड़) तथा टेबिल टेनिस की प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती है।

**खेल-कूद —**

इन प्रतियोगिताओं के अतिरिक्त प्रत्येक केन्द्र फुटबाल वालीबाल तथा हाकी जैसे खेलों की प्रेक्टिस के लिए भी सुविधायें प्रदान करता है। इन दैनिक प्रेक्टिस की देख भाल तथा निर्देशन के लिए एक गेम्स सुपरवाइजर भी प्रत्येक केन्द्र में रखा गया है।

**व्यायाम —**

अधिकांश केन्द्रों पर एक कुश्ती का अखाड़ा तथा जिमनास्टिक का सामान भी रखा गया है। मजदूर लोग कुश्ती तथा दूसरी वर्जिश में पर्याप्त रुचि लेते हैं और रोजाना सुबह शाम अखाड़े जाते हैं। इन अखाड़ों पर जाने वालों को मालिश के लिए मुफ्त सरसों का तेल उपलब्ध कराया जाता है। विशेष अवसरों पर कुश्ती प्रतियोगितायें भी आयोजित की जाती हैं तथा श्रमिक इसमें बहुत रुचि दिखाते हैं।

**महिलाओं और बच्चों के लिए —**

प्रत्येक श्रम कल्याण केन्द्र में महिलाओं और बच्चों केलिए अलग कक्ष है। यह कक्ष महिला सुपरवाइजर के अधीन चलाया जाता है जो बच्चों की देख-भाल भी करती है। महिला सुपरवाइजर कर्मचारियों की मदद से उन्हें स्नान करवाती है तथा दूध वितरित करवाती है। गर्भावस्था में श्रमिकों की स्त्रियों को भी मुफ्त दूध पिलाया जाता है। उन्हें अपने छोटे बच्चों की सही तरह से मालिश करना भी सिखाया जाता है।

महिला सुपरवाइजर द्वारा श्रमिकों की स्त्रियों को प्रारम्भिक शिक्षा देने के लिए रोजाना कक्षायें भी चलाई जाती हैं। ६ वर्ष से कम आयु के बच्चों को केन्द्र पर महिला सुपरवाइजर पढ़ाती है तथा इससे अधिक आयु वाले बच्चों को प्राथमिक शालाओं में भेजा जाता है। महिला सुपरवाइजर केन्द्रों पर बच्चों के खेल कूद का भी प्रबंध कराती है।

**व्यवसायिक प्रशिक्षण —**

श्रमिकों की स्त्रियों के फालतू समय का उनको व्यवसायिक शिक्षा देकर सदुपयोग किया जा सकता है। श्रमिकों की महिलाओं व बालिकाओं को सिलाई-बुनाई, कशीदाकारी इत्यादि का कार्य सिखाने की शिक्षायें राज्य के श्रम-कल्याण केन्द्रों पर चालू की जा चुकी हैं सिलाई की कक्षायें सभी केन्द्रों पर नियुक्त महिला सिलाई अध्यापिकाओं द्वारा चलाई जाती हैं। इन कक्षाओं के लिए सिलाई की मशीन, कपड़ा ऊन व धागा भी उपलब्ध किया जाता है।

व्यक्तिगत कपडे सीन की सुविधा भी प्रदान की जाती है, प्रशिक्षार्थियो द्वारा तैयार किए गए कपडे उन्ही को वास्तविक दर पर बेचे जाते हैं और यदि वे नही लेना चाहे तो ये दूसरे को बेच दिए जाते हैं और प्रशिक्षार्थियो को उचित पारिश्रमिक दे दिया जाता है। इस प्रशिक्षण के लिए एक नियमित पाठ्यक्रम लागू कर दिया गया है।

खेल-कूद प्रतियोगिताओ के अवसर पर प्रशिक्षार्थियो द्वारा सिले हुए कपडे प्रदर्शित किए जाते है तथा इन्हे इस अवसर पर उचित दरा पर बेच दिया जाता है। इसके अतिरिक्त सावजनिक सम्पक विभाग द्वारा राज्य स्तर पर आयाजित प्रदशनियो म भी ये कपडे प्रदर्शित किए जाते हैं।

**बेबी शो —**

इन केन्द्रा पर समय-समय पर बेबी शो भी आयोजित किए जाते हैं। स्वस्थ तथा साफ बच्चो को पुरस्कार भी दिए जाते है।

**स्काउटिंग —**

श्रमिको तथा उनके बच्चो मे समाज-सेवा तथा अनुशासन की भावना उत्पन्न करने की दृष्टि स कई केन्द्रो पर स्काउटिंग का प्रशिक्षण आरम्भ कर दिया गया है।

**श्रमिकों की शिक्षा —**

राज्य-सरकार ने यह महसूस किया कि औद्योगिक श्रमिको को श्रमिक कानून तथा दूसरे विषयो मे प्रशिक्षित किया जाय। इस उद्देश्य को ध्यान मे रखते हुए क्षेत्रीय सचालक श्रमिक शिक्षा केन्द्र नई दिल्ली के सहयोग से अक्टूबर १९६२ म भीलवाडा मे एक श्रमिक शिक्षा केन्द्र स्थापित किया गया इस शिक्षा केन्द्र के प्रथम क्लास का उदघाटन राजस्थान के मुख्य-मन्त्री जी द्वारा १५ अक्टूबर, १९६२ को सम्पन्न हुआ था। यह माच, ६५ से पूण प्रादेशिक केन्द्र बना दिया गया है। इस श्रमिक शिक्षा-योजना के उद्देश्य निम्न प्रकार हैं —

१ अच्छे प्रशिक्षित कमचारियो व सदस्यो द्वारा अधिक कारगर ट्रेड यूनियना को प्रोत्साहित किया जाय।

२ मजदूरा मे नेतृत्व की भावना जागृत करना तथा ट्रेड यूनियन सगठन व प्रशासन म जनतत्रीय पद्धति को विकसित करना।

३ लोकतत्रीय समाज म मजदूर सगठना को उचित स्थान लेने के लिए तथा सामाजिक और आर्थिक कायक्रम व जिम्मेदारियो को निभाने के लिए प्रशिक्षित करना।

४ मजदूरो को उनकी आर्थिक स्थिति व उनका दी गयी सुविधाओ का भान कराना तथा उनकी यूनियन के सदस्य, कमचारी और नागरिक की हैसियत को समझने की भावना को विकसित करना।

प्रशिक्षार्थियो को, श्रमिको के दृष्टिकोण को विकसित करने के लिए, विभिन्न शैक्षणिक स्थानो पर भेजा जाता है।

प्रशिक्षार्थियों को श्रमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा कुछ शर्तों के आधार पर प्रति प्रशिक्षार्थी ३० रु० अनुदान के रूप मे दिए जाते हैं।

प्रशिक्षण कार्यक्रम मे प्रशिक्षार्थियों को सरल तरीके से प्रशिक्षित करने के उद्देश्यो से विभिन्न विषयों पर समूहों मे वार्ताओ का तरीका अपनाया जाता है।

प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात प्रत्येक श्रमिक अपने साथी श्रमिको को प्रशिक्षण देन के लिए कारखाने के आसपास अथवा श्रमिक बस्ती में युनिट स्तर पर कक्षायें चलाता है। प्रशिक्षित श्रमिको द्वारा ऐसी लगभग २०० कक्षायें प्रारम्भ की जा चुकी हैं। इन कक्षाओ के लिए मजदूरा ने पूरा उत्साह प्रदर्शित किया है।

प्रयोग के तौर पर प्रारम्भ किए गए केन्द्र की प्रगति यूनियन मैनेजमेण्ट और दूसरे स्थानीय अधिकारिया के सहयोग के परिणामस्वरूप बहुत ही सतोषप्रद रही है।

प्रशिक्षार्थियो ने अपने काय के समय के अतिरिक्त समय मे अपनी मर्जी से राइफल प्रशिक्षण तथा नागरिक सुरक्षा प्रशिक्षण मे भी रुचि ली। इसके अलावा उन्होंने राष्ट्रीय सुरक्षा-कोष म धन भी जमा किया।

> दिलीप राजा ने नन्दिनी की सेवा करके उसे अपनी कामधेनु बनाया। श्री जमनालालजी को कामधेनु मिली? लगता है, जिस गौ की सेवा करते उन्हें ऐसी धन्य मृत्यु प्राप्त हुई, उसे कामधेनु ही कहा जाय। वे स्वय गांधीजी की कामधेनु ही थे। उन्हीं के लिये गांधीजी वर्धा आये। उनके बिना सेवाग्राम में बसने की हिम्मत न करते। एक वही थे, जो बाहरी दुनिया के साथ गांधीजी के सबध को स्वय जीती-जागती जजीर बनकर जोडे रहते थे।
>
> —महादेव देसाई

कृष्ण कुमार सहगल

# सांख्यिकी

वर्तमान योजना युग में आंकड़ों का अत्यधिक महत्व है। योजना के निर्माण, योजना कार्यों को कार्यान्वित करने तथा किये गये कार्यों के मूल्यांकन हेतु आंकड़ों के विस्तार एवं सांख्यिकी प्रणाली के पुनर्गठन की आवश्यकता का अनुभव किया गया। इस हेतु द्वितीय पंचवर्षीय योजना के आरम्भ में ब्यूरो आफ स्टेटिस्टिक्स राजस्थान, जो एक छोटे से संगठन के रूप में विद्यमान था को आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय के रूप में पुनर्गठन किया गया। तब से ही यह, राज्य सरकार को विभिन्न उद्देश्यों के लिये आर्थिक एवं अन्य आंकड़ों को उपलब्ध कराता है एवं अपने विभिन्न प्रतिवेदनों तथा प्रकाशनों द्वारा जनता व सरकार को सांख्यिकीय सूचना प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त अन्य विभागाध्यक्षों के कार्यालयों की सांख्यिकीय शाखाओं के कार्यों का समन्वय करता है। यह निदेशालय पंचवर्षीय योजनाओं से संबंधित एवं राज्य सरकार द्वारा अन्य वांछित आर्थिक एवं सांख्यिकीय सामग्री भी उपलब्ध कराता है।

सांख्यिकी के उपक्षेत्र में सांख्यिकीय ब्यूरो के पुनर्गठन एवं विस्तार तथा जिला सांख्यिकीय कार्यालयों की स्थापना हेतु प्रथम बार द्वितीय पंचवर्षीय योजना में १० लाख रुपये का प्रावधान रखा गया था। जिसके फलस्वरूप निदेशालय के पुनर्गठन के साथ साथ ५ जिलों में सर्वांग पूर्ण सांख्यिकीय कार्यालयों की स्थापना तथा १७ जिलों में एक एक सांख्यिकीय निरीक्षक की नियुक्ति की गई जिन पर कुल १०.१८ लाख रुपये व्यय हुए। इसके अतिरिक्त ८.३० लाख रुपये आर्थिक एवं औद्योगिक सर्वेक्षण निदेशालय द्वारा एक जिले का गहन सर्वेक्षण तथा पांच डिवीजनों के सामान्य आर्थिक प्रतिवेदन तैयार करने के लिये दिये गये।

बढ़ती हुई सांख्यिकी की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय का और अधिक विस्तार करने का तृतीय पंचवर्षीय योजना में लक्ष्य रखा गया है। इसके अतिरिक्त शेष जिलों में सांख्यिकी कार्यालयों की स्थापना सांख्यिकी सेवीवर्ग का प्रशिक्षण, राष्ट्रीय न्यादर्श सर्वेक्षण के सहयोग से न्यादर्श सर्वेक्षण एवं राष्ट्रीय आय के अनुमानों हेतु अन्य सर्वेक्षणों का संचालन एक यान्त्रिक सारिणीयन एवं एक मुद्रण शाखा की स्थापना, छिद्रक वेरीफायर, सोटर तथा टेबुलेटर मशीनों के लगाने एवं आर्थिक व औद्योगिक सर्वेक्षण के संचालन का तृतीय पंचवर्षीय योजना में लक्ष्य रक्खा गया है।

उपरोक्त लक्ष्यों की पूर्ति के लिये तृतीय योजना में ३० लाख रुपये का प्रावधान रखा गया, जिसमें से ५ लाख रुपये आर्थिक एवं औद्योगिक सर्वेक्षण कार्यों पर तथा २५ लाख रुपये राज्य की सांख्यिकी योजनाओं पर व्यय किया जाना निर्धारित किया गया है। देश की संकट कालीन स्थिति के कारण उपरोक्त मूल प्रावधान ३० लाख रुपयों को घटाकर आन्तरिक प्रावधान के रूप में २६.७२ लाख रुपये कर दिया गया। तृतीय योजना काल में कुल २३.०८ लाख रुपये की धन राशि व्यय हुई।

वर्तमान में आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय का कार्य प्रमुख रूप से तीन अनुभागों द्वारा सम्पन्न किया जाता है —

१) आर्थिक ज्ञान, आयोजनों एवं अनुसंधान अनुभाग
२) न्यादर्श सर्वेक्षण अनुभाग
३) प्रशासन अनुभाग

इसके अतिरिक्त केन्द्रीय सरकार की योजनाओं के अन्तर्गत कुछ नये कार्यों को समय पर पूर्ण करने हेतु दो और अनुभागों द्वारा कार्य संचालन हुआ।

१) योजना के प्रभाव-अध्ययन कर्ता अनुभाग
२) विकेन्द्रीयकृत संस्थाओं द्वारा चतुर्थ पंचवर्षीय योजना में स्थानीय योजना हेतु भीलवाड़ा एवं नागौर जिला द्वारा सर्वेक्षण कर्ता अनुभाग

उपरोक्त समस्त अनुभागों द्वारा सम्पन्न किये गये कार्यों को निम्न अनुच्छेदों में दिया जा रहा है —

**आर्थिक ज्ञान, आयोजना एवं अनुसन्धान अनुभाग —**

इस अनुभाग द्वारा जलवायु मौसम की स्थिति के आंकड़े और फसलों के पूर्वानुमान तैयार किये जाते हैं। राज्य की कृषि संबंधी आंकड़ों की तालिकाएं भारत सरकार को भेजी जाती हैं। प्रमुख फसलों के अनुमान लगाने के लिये वैज्ञानिक विधि से फसल कटाई के प्रयोग करवाये जाते हैं तथा प्राप्त परिणामों का प्रकाशित किया जाता है। विकास खण्डों में हुई प्रगति के बारे में प्रगति सहायकों द्वारा आंकड़े एकत्रित करवाये जाते हैं। प्रत्येक पंचायत के कुछ चुने हुए ग्रामों में कृषि मजदूरी के आंकड़े एकत्रित करवाये जाते हैं। कृषि उत्पादन के सूचकांक, तथा फसलों के अन्तर्गत क्षेत्रफल एवं उत्पादकता के सूचकांक तैयार किये जाते हैं। ग्राम सूचना पत्रों में हर गांव की जन संख्या, भूमि, शिक्षा संस्थाएं आदि के बारे में आंकड़े एकत्रित किये जाते हैं।

योजना से संबंधित भौतिक एवं वित्तीय प्रगति के प्रतिवेदन निर्धारित समयावधि पर प्राप्त कर जांच एवं विश्लेषण के पश्चात त्रैमासिक, अर्धवार्षिक, नवमासिक एवं वार्षिक आधार पर तैयार करके राज्य सरकार को प्रस्तुत किये जाते हैं। जिला स्तर की योजनाओं के प्रतिवेदन जो जिला सांख्यिकी कार्यालय द्वारा तैयार किये जाते हैं उनकी जांच की जाती है। साथ ही सिंचाई, विद्युत, वन, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं चिकित्सा, सहकारिता एवं सामुदायिक विकास आदि के आंकड़े भी एकत्रित किये जाते हैं।

इसके अतिरिक्त विभिन्न क्षेत्रो से सबधित आकडे नियमित रूप से सकलित कर इस निदेशालय के विभिन्न प्रकाशनो तथा बेसिक स्टेटिस्टिक्स, त्रैमासिक अनुक्रमणिका, स्टेटिस्टिकल एबसट्रेक्ट आदि मे प्रकाशित किये जाते हैं। इनके अतिरिक्त साप्ताहिक थोक भाव का सकलन कर सूचकाक तैयार किये जाते हैं तथा जयपुर के उपभोक्ता सूचकाक तैयार किये जाकर राजपत्र मे प्रकाशनार्थ भेजे जाते हैं। अजमेर, ब्यावर केन्द्रो मे भाव सकलन कार्यों का पर्यवेक्षण कर मासिक स्तर पर सूचकाक तैयार किये जाते हैं। राज्य की खाद्य स्थिति के बारे मे पाक्षिक प्रतिवेदन नियमित रूप से तैयार किया जाता है। इसके अतिरिक्त उत्पादन निर्माणियो के वार्षिक सर्वेक्षण का काय किया जाता है तथा सकलित अको के आधार पर 'राजस्थान का औद्योगिक ढांचा नामक पुस्तिका प्रकाशित की जाती है।

अनुसन्धान एव राज्य आय शाखा द्वारा राज्य की आय के अनुमान लगाये जाते हैं। इसके अतिरिक्त जिलेवार आय के अनुमानो का निर्माण काय भी प्रारभ किया जाता है।

नियमित रूप से अर्धवार्षिक आधारपर राज्य कमचारियो की गणना के आकडे भी एकत्रित किये जाते हैं। 'राजस्थान आय व्ययक अध्ययन को तैयार किया जाकर प्रति वर्ष विधान सभा के बजट अधिवेशन के अवसर पर सभी विधान सभा सदस्यो को वितरित किया जाता है तथा राज्य आय का एक लघु प्रतिवेदन भी इस शाखा द्वारा प्रकाशित किया जाता है।

सर्वेक्षण अनुभाग —

इस अनुभाग द्वारा राज्य के आर्थिक एव सामाजिक महत्व के विषयो म सर्वेक्षण किये जाते हैं तथा सर्वेक्षण के प्रतिवेदन सरकार को भेजे जाते हैं। राष्ट्रीय न्यादर्श सर्वेक्षण के सहयोग से भारत सरकार के साथ समान आधार पर राज्य मे आर्थिक एव सामाजिक सर्वेक्षण तथा भूमि उपयोगिता सर्वेक्षण एव फसल कटाई के प्रयोग किये जाते हैं जिसका बीसवा सत्र सफलता पूवक समाप्ति पर है तथा २१ वें सत्र की प्रारम्भिक तयारिया की जा रही हैं। इसके अतिरिक्त समय समय पर अन्य विभिन्न प्रकार के सर्वेक्षण भी किये जाते हैं।

उन्नत कृषि क्रियाओ द्वारा लाभान्वित क्षेत्र का सर्वेक्षण, तीन तहसीलो मे बेरोजगारी का गहन अनुसधान राजस्थान शिक्षित व्यक्तियो का उपयोग, खेती के लगाने का मूल्य सर्वेक्षण ग्रामीण रोजगार बेरोजगार अन्तर्नियोजन, सवतोमुखी परिवार सर्वेक्षण शहरी श्रम शक्ति सर्वेक्षण भू उपयोग सर्वेक्षण, जनसख्या जन्म एव मृत्यु सर्वेक्षण तथा सवतोमुखी परिवार सर्वेक्षण (व्यापारिक परिवार) के काय इस अनुभाग द्वारा सम्पन्न किये गये सर्वेक्षणो की सारणिया यन्त्रो द्वारा तयार की जाती हैं।

जीवन सबधी आकडा सकलन शाखा द्वारा जन्म मृत्यु के अक सकलन का काय सम्पन्न किया जाता है। इस काय के लिये बीस हजार से ऊपर जन सख्या वाले नगरो की नगर पालिकाओ म सांख्यिकी कमचारियो की नियुक्ति की गई है।

साख्यिकी कर्मचारियो के प्रशिक्षण कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रगति सहायकों को प्रशिक्षण दिया जाता है। साख्यिकीय सहायको व निरीक्षको का प्रशिक्षण कार्यक्रम हाल ही में आरम्भ किया गया है।

**प्रशासन अनुभाग —**

इस अनुभाग में अन्य प्रशासन कार्यों के अतिरिक्त मुद्रण और चित्रण कार्य सम्पन्न किया जाता है। विभिन्न प्रकार के चार्ट्स एवं रेखा चित्र प्रकाशनार्थ तयार किये जाते है तथा सचिवालय एवं विभिन्न सम्मेलनो के द्वारा वाछित साख्यिकीय चित्र आदि तैयार किये जाते हैं।

उपरोक्त, कार्यों के अतिरिक्त प्रशासन प्रतिवेदन भी प्रति वर्ष तयार किया जाता है।

**योजना के प्रभाव अध्ययन कर्ता अनुभाग —**

इस अनुभाग द्वारा प्रशासकीय व विविध सर्वेक्षणो और स्रोतो से प्राप्त आकड़ो के आधार पर योजना के जीवन स्तर नियोजन और उपयोग पर प्रभाव के अध्ययन सबधी प्रतिवेदन तैयार किया जा रहा है।

**विकेन्द्रीकृत सस्थाओं द्वारा चतुर्थ पचवर्षीय स्थानीय योजना हेतु भीलवाडा व नागौर का सर्वेक्षण कर्ता अनुभाग -**

इस अनुभाग द्वारा निर्धारित कार्य के सबध मे प्रतिवदन तैयार किये जा रहे हैं।

सारा एशिया परिक्षाओ और मुश्किलों से गुजर रहा है। हिन्दुस्तान मे भी बड़ी जद्दव और मुसीबतें देखने मे आ रही हैं। लेकिन हमे घबराना नहीं चाहिए, क्योकि भारी इन्किलाब के जमाने मे ऐसा होना जरूरी है। एशिया भर मे तूफान-सा आ गया है। लेकिन हमे उससे डरना नहीं चाहिये, बल्कि उसका स्वागत करना चाहिये, क्योंकि उसी की मदद से हम अपने स्वप्नो का नया एशिया खडा कर सकेंगे। हमें उस बडी ताकत मे और उस नव-रचना में विश्वास रखना है और सबसे ज्यादा इन्सानियत मे विश्वास रखना है, जिसका प्रतीक एशिया बहुत पुराने जमाने से रहता आया है।

—जवाहरलाल नेहरू

# जनता और राज्य के बाच की कडी जन सम्पर्क

जन सम्पक निदेशालय का काम राज्य सरकार द्वारा सम्पन्न कार्यो से जन साधारण को अवगत कराना और विकास कार्यों के प्रति जनता मे रुचि पदा करने की चेष्टा करना है। इसके अतिरिक्त सार्वजनिक उपयोग के विचार, तथ्य, घटनायें और योजना आदि के बारे म कायालय द्वारा जानकारी भी दी जाती है।

जन सम्पर्क निदेशालय का मुख्यालय जयपुर मे है और राज्य के विभिन्न जिलो मे इसकी २१ क्षेत्रीय प्रचार शाखाए काय कर रही हैं। यह निदेशालय ७ स्थाना पर सूचना केन्द्र भी चला रहा है। दा नय स्थानो पर इस वप से सूचना केन्द्र खोलने की कायवाही की जा रही है।

जन सम्पक निदेशालय मे कुल ४४ विभाग और शाखायें हैं जो इस प्रकार हैं —

मुख्यालय मे —

(१) समाचार विभाग (२) साहित्य विभाग (३) क्षेत्रीय प्रचार विभाग (४) प्रदशनी विभाग (५) योजना सहयोजन विभाग (६) विज्ञापन शाखा (७) प्रस्थापन शाखा (८) चित्र शाखा (९) पत्र निरीक्षण शाखा (१०) लेखा शाखा (११) भण्डार शाखा (१२) शोद्ध सदन शाखा (१३) कला शाखा एव (१४) नाटय एव सगीत शाखा।

मुख्यालय से बाहर —

(१) जयपुर सूचना केन्द्र (२) अजमेर सूचना केन्द्र (३) उदयपुर सूचना केन्द्र (४) जोधपुर सूचना केन्द्र (५) कोटा सूचना केन्द्र (६) बीकानेर सूचना केन्द्र (७) अलवर सूचना केन्द्र (८) बाडमेर सूचना केन्द्र (९) गगानगर सूचना केन्द्र (८ व ९ का काम अभी आरम्भ नही हुआ है)।

जिला जन सम्पक कार्यालय (१) अलवर (२) भरतपुर (३) जयपुर (४) सवाई माधापुर (टोंक) (५) झुझुनू (सीकर) (६) अजमेर (७) कोटा (बूदी) (८) झालावाड (९) भीलवाडा (१०) चित्तौड

(११) उदयपुर (१२) डूंगरपुर (बांसवाड़ा) (१३) बीकानेर (१४) गंगानगर (१५) जोधपुर (१६) बाड़मेर (१७) सिरोही (जालोर) (१८) नागौर (१९) पाली (२०) चूरू (२१) जैसलमेर (कोष्टक में व जिले हैं जो उनसे पूर्व उल्लिखित जिला जन सम्पर्क कार्यालय के अन्तर्गत हैं)।

जिला जन सम्पर्क अधिकारी का काम जिले की गति विधि की सूचना प्रधान कार्यालय को देना व जिले की जनता को योजना संबंधी प्रचार व दूसरी घटनाओं, विचारों, नियमों आदि के बारे में सूचित रखना है। उनके पास दृश्य-प्रचार के लिए आवश्यक साधनों सहित प्रचार वाहन भी है। इन जिला कार्यालयों द्वारा प्रदर्शनियाँ, सभायें आदि आयोजित करने, साहित्य वितरित करने तथा जन कल्याण के कार्यों का प्रचार करने का काम भी सम्पादित होता है।

इस निदेशालय के अन्तर्गत ७ स्थानों पर जो सूचना केन्द्र चलाये जा रहे हैं उनका काम योजना-विकास व अन्य आवश्यक नियमों पर साहित्य का संकलन और उनके पठन पाठन की सुविधा प्रस्तुत करना है। वे चल चित्रों तथा अन्य साधनों द्वारा भी जनमानस को योजना में सहयोग देने के लिये तैयार करते हैं।

समाचार विभाग —

राज्य में चल रही विभिन्न सामाजिक प्रवृत्तियों, विकास योजनाओं की प्रगति, विभिन्न सरकारी कार्यालयों द्वारा किये जा रहे संबंधित कार्यकलापों एवं अन्य गैर सरकारी एवं महत्वपूर्ण सामाजिक संस्थाओं की रचनात्मक प्रवृत्तियों से जनता को निरंतर परिचित कराते रहने की दिशा में समाचार विभाग का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। विभिन्न सरकारी एवं गैर सरकारी सूत्रों एवं विभागीय जिला अधिकारियों से प्राप्त समाचार सामग्री का संकलन कर, उसे महत्व के अनुरूप सम्पादित कर प्रेस नोट एवं विशेष लेखों के माध्यम से, राज्य एवं राज्य से बाहर के लगभग ५०० पत्र-पत्रिकाओं को भेजा जाता है ताकि उनके माध्यम से जन साधारण राज्य में चल रही विभिन्न प्रवृत्तियों से परिचित रह सके। विशेष लेखमालाओं का प्रकाशन किया जाता है।

समाचार सामग्री उपलब्ध करने की व्यवस्था तक ही इस विभाग की गतिविधियाँ सीमित रहती आयी हों, सो बात नहीं है। राज्य में स्थित विभिन्न पत्रों एवं समाचार समितियों के प्रतिनिधियों व पत्रकारों को महत्वपूर्ण विकास योजनाओं की प्रत्यक्ष जानकारी सुलभ कराने हेतु समय समय पर प्रेस पार्टियों की व्यवस्था इस विभाग द्वारा की जाती है। साथ ही समय समय पर विभिन्न मन्त्रियों विभागों के सचिवों तथा अध्यापकों द्वारा और गणमान्य पत्रकारों व विशिष्ट (देशी विदेशी) पत्रकारों को व्यक्तिगत रूप से विभिन्न प्रकार की जानकारी देने के लिये प्रेस कान्फ्रेंसों एवं अनौपचारिक वार्ताओं का आयोजन भी किया जाता है।

गणमान्य विदेशी एवं राष्ट्रीय महानुभावों एवं नेताओं के राज्य में आगमन तथा राज्य में आयोजित विभिन्न महत्वपूर्ण आयोजनों एवं चित्रमय कवरेज की व्यवस्था भी इस विभाग द्वारा की जाती है।

इस प्रकार समाचार विभाग राज्य सरकार, समाचार पत्र जगत एव जनता क बीच की एक महत्वपूर्ण कडी है जो समाचार पत्रो के माध्यम से जनता तक न केवल सरकारी नीतियो एव योजनाओ की जानकारी पहुँचाने का काय सम्पादित कर रहा है, अपितु राज्य म चल रही अन्य सामाजिक एव सास्कृतिक गतिविधियो से भी जनता को परिचित कराता रहा है ।

समाचार विभाग —

समाचार विभाग पत्र-पत्रिकाओ म भ्रम अथवा असावधानीवश प्रकाशित भ्रामक समाचारो के सबध म जहा तक आवश्यक समझा जाता है स्पष्टीकरण अथवा प्रतिवाद करता है ।

अपने काय के लिये समाचार विभाग को राज्य के विभिन्न विभागो, कार्यालयो सस्थानो योजनाओं आदि से निरन्तर निकट सम्पक रखना होता है ।

साहित्य विभाग —

साहित्य शाखा द्वारा पोस्टरो, पुस्तको और फोल्डरो के प्रकाशन की व्यवस्था की जाती रही है । इस शाखा द्वारा राज्य सरकार के हर कार्यों पर लघु पुस्तिका प्रकाशित की जा चुकी है । इसस राज्य के कार्यों का पूरा पूरा ज्ञान होता है ।

रगमच —

राजस्थान की राजधानी जयपुर मे क्षेत्रीय प्रचार का एक नया प्रयोग गत दो वर्षों से सफलतापूवक चल रहा है । इस प्रयोग का जनता द्वारा बहुत स्वागत किया गया है । यहा जहा प्रतिदिन सिनेमा दिखाने की व्यवस्था है वहा सिनेमा के अतिरिक्त अन्य सास्कृतिक कायक्रम सम्मलन व गोष्ठिया का आयोजन भी किया जाता है । शहर के लगभग १ हजार व्यक्ति प्रति दिन इसका लाभ उठाते हैं । इस प्रकार यहा के कायक्रमो म एक तिहाई शिक्षा प्रशिक्षण और एक तिहाई सूचना समाचार विकास और प्रतिरक्षा कार्यों की उपलब्धी का उल्लेख रहता है ।

फिल्म लाईब्रेरी —

यहा एक फिल्म लाईब्रेरी बनाई गई है जो प्रारम्भिक अवस्था मे है जहा से मारे जन सम्पक कार्यालयो को फिल्म वितरण करने की व्यवस्था है ।

हमारा कायक्रम —

प्रत्येक माह के पहले सोमवार को दशक-पुरुष व मगलवार को दशक महिलाओ का स्वय सेवा सगठन अपने मनोरन्जन कायक्रम प्रस्तुत करता है ।

प्रदशनी शाखा —

प्रदशनी शाखा ने इस वष जिलो मे 'सुरक्षा 'अधिक बचाओ 'अधिक उगाओ' स्वण दान दो' पर प्रदशनियाँ आयोजित करने के लिए १७५ तस्वीरो का एक एक सेट दिया जिससे जिला अधिकारियो ने अपने-अपने जिलो म, विविध मेला, उत्सवों एव अन्य पर्वों पर प्रदशनियो का आयोजन किया ।

स्थाई प्रदशनी-स्थल —

जयपुर मे रामलीला मैदान के सामने एक प्रदशनी स्थल को स्थायी रूप दिया गया है और वहा छाया व स्थायी बिजली की ऐसी व्यवस्था कर दी गई है जहा राज्य के अन्य विभाग भी अब अपने विभाग की ओर से प्रदशनियों का आयोजन करने लगे हैं ।

क्षेत्रीय प्रचार शाखा —

वैसे तो चीनी आक्रमण के समय से ही क्षेत्रीय प्रचार विभाग सजगता व सक्रियता से प्रचार काय को प्रत्येक जिले व जनता के समक्ष भली प्रकार से सम्पन्न कर रहा था । परन्तु पाकिस्तानी हमले से, इस विभाग पर भी अधिक दायित्व आगया । आक्रमण के समय जनता के समक्ष सही सूचना पहुँचती रही जिससे इसका महत्व भी बढ गया । इस काय को तीन भागों मे बाट दिया गया —शहरो में, जिला स्तरीय एव गाव गाव म ।

जन सम्पक अधिकारियो को निर्देश दिये कि वे स्थानीय सुरक्षा समितियों एव जिलाधीश के निर्देश एव परामश पर जनता को यथासमव समय समय पर सूचना दें । साथ ही ऐसी बातो का तुरन्त खडन करें जिनसे देश की एकता पर जरा भी प्रभाव पडने की आशका हो ।

जब कि जोधपुर पर प्राय नित्य प्रति बम वर्षा हो रही थी इस विभाग का गीत व नाटक सविभाग, जनता जागरण हेतु कायक्रम आयोजित करने भेजा गया ।

जन मानस का मनोबल बनाए रखने हेतु फीचर फिल्मो का प्रदशन-अभियान भी राजस्थान के सीमावर्ती क्षेत्रो में कराया गया ।

फिल्मों के अतिरिक्त जनता के समक्ष कवि सम्मेलनो मुशायरो एव ऐसे सुरक्षा कायक्रम प्रस्तुत किये गए ताकि जन जागरण बना रहे ।

सीमान्त क्षेत्रो मे प्रचार के लिए एक राज्य स्तर की समिति का गठन किया गया है ।

नाटय एव सगीत शाखा —

गीतो नाटको के मनोरजनात्मक व प्रभावशील माध्यम से सरकारी नीतियो, हमारी पचवर्षीय योजनाओ मे अन्तर्निहित विकास कार्यों और प्रवृत्तियो आदि के प्रचार जन-सम्पक प्रतिपादन और उनके

प्रति जनसाधारण की अधिकाधिक रुचि व चेतना जागृत करने के उद्देश्य से निदेशालय द्वारा एक नाटय एव सगीत शाखा की स्थापना की गई। यद्यपि जन-सम्पर्क के इस माध्यम के बारे म बहुत पहले ही योजना बना ली गई थी फिर भी इस शाखा की स्थापना अप्रल, १९६५ के प्रथम सप्ताह मे ही की जा सकी। इस थोडे समय म ही शाखा ने जयपुर, उदयपुर मावली, डबोक, जोधपुर, बीकानेर गगानगर, रायसिह नगर, नागौर और लाडनू म विभिन्न सावजनिक स्थानो, स्कूलो, आर ए सी ट्रेनिंग सेन्टर सूचना केन्द्रो व कालेजो पर ७१ कायक्रम प्रस्तुत किये जिन्हे लगभग ९०,५०० व्यक्तियो ने देखा और सराहना की।

सूचना केन्द्र —

९ वष पूव ज्ञान प्रसार की बढती हुई आवश्यकता की पूर्ति के लिये भारत सरकार के सहयोग से राजस्थान सरकार ने जयपुर मे 'सूचना केन्द्र' नामक जिस बहुद्देशीय सस्था की स्थापना की थी उसने लोक शिक्षण की दृष्टि से जो अनुकरणीय काय किये उन्ही के कारण देश की इस प्रकार की सस्थाओ म इस केन्द्र का नाम विशेष रूप से लिया जाने लगा है। केन्द्र ने सभी प्रकार की स्थितियो मे उन्ही के अनुकूल कायक्रम अपना कर अल्पावधि म लोकप्रियता प्राप्त की है उसका प्रमाण इसके दशको की सख्या है जो सन् १९६४-६५ के वष म १,४९,५५६ था। केन्द्र प्रतिदिन प्रात ८ बजे से रात्रि के ८ ३० बजे तक जनता की सुविधा के लिये खुला रहता है। प्रतिदिन औसतन दशन सख्या लगभग ५३३ है।

जयपुर सूचना केन्द्र द्वारा किये जा रहे उपयोगी कार्यों से प्रभावित होकर राजस्थान सरकार ने अजमेर, जोधपुर बीकानेर उदयपुर, कोटा और अलवर म भी सूचना केन्द्र स्थापित किये है। बाडमेर और गगानगर म दो केन्द्र शीघ्र काय शुरू कर देंगे।

जयपुर सूचना केन्द्र सन्दभ साहित्य उपलब्ध कराने की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण काय कर रहा है। इसमे देश विदेश के समाचार पत्र और पत्रिकाएँ ही नही आती बल्कि सन्दभ सम्बधी जो भी अन्य साहित्य आवश्यक है उनका भी सग्रह नियमित रूप से किया जाता है। सन्दभ साहित्य मे जो पुस्तकें विश्व भर म विख्यात हैं उनमे से अधिकाश इस केन्द्र मे उपलब्ध है। जन मानस म चेतना उत्पन्न करने के लिये केन्द्र वष भर म अनेक समारोहो का भी आयोजन करता रहता है।

इनमे विचार गोष्ठिया, प्रदशनिया कवि गोष्ठियो वाद विवाद प्रतियोगिताए निबन्ध प्रतियोगिताएँ, सास्कृतिक कायक्रम और व्याख्यान आदि प्रमुख हैं। गत वष स्व० श्री जवाहरलाल नेहरू की स्मृति मे इस केन्द्र द्वारा प्रत्येक मास की २७ तारीख को जो आयोजन किये गये उनसे यह केन्द्र और भी अधिक लोकप्रिय हो सका है।

पुस्तकालय एव वाचनालय

केन्द्र की स्थापना २२ नवम्बर १९५६ को हुई थी और तब से अब तक इसके सन्दभ पुस्तकालय म २५,४२८ पुस्तकें व पुस्तिकाए एकत्रित की जा चुकी हैं। इनमे ६,९४७ लघु पुस्तिकाए हैं। गत वष पुस्तको

की कुल सख्या २२,०६५ थी। पुस्तका के सग्रह म गाधी साहित्य, नेहरू साहित्य, राजस्थानी साहित्य के अलावा भारत चीन सम्बधी साहित्य और पडौसी देशा सम्बधी साहित्य उल्लेखित है। भारत सरकार और राज्य सरकार के विभिन्न विभागो के प्रतिवेदन, राजपत्र आदि भी एकत्रित किये जाते हैं। वाचनालय म सभी विषया पर ४७१ पत्र पत्रिकाए उपलब्ध की जाती है। इनम २४१ शुल्क से और २३० नि शुल्क मगाई जाती है। पत्र पत्रिकाओं में कुल ४१ दैनिक, १०४ साप्ताहिक, १८६ मासिक और १४० अय प्रकार के है। सभी राज्यों व भारत सरकार के विभागों से प्रकाशित पत्र पत्रिकाए केन्द्र मे उपलब्ध की जाती हैं।

शिक्षण सेवा —

केद्र द्वारा छात्र छात्राओ के माग दशन के लिये शिक्षण सेवा की भी व्यवस्था है और उनके गम्भीर अध्ययन के लिये अध्ययन कक्ष भी पृथक रूप से बनाया हुआ है जहा अनुसधान मे रुचि रखने वाले लोग शाति से पाठन करते हैं। समाचार चित्रा और नये प्रकाशना को पाठका को दिखाने का विशेष प्रबध किया हुआ है। जनता द्वारा चाही जाने वाली सभी प्रकार की जानकारी, चाहे वह किसी भी माध्यम से चाही गई हो, सूचना केद्र द्वारा तत्काल दी जाती है और इसके लिये केद्र ने लगभग ३०० प्रकार की सदम सदर्भ सचायिकायें तैयार की हुई हैं जिसमे कि विविध प्रकार के प्रश्ना का शीघ्र और सतोषजनक उत्तर दिया जा सके।

विक्रय प्रकाशन —

सूचना केद्र एक और विशेष प्रकार की सेवा करता है और वह है राजकीय प्रकाशना की बिक्री। राजस्थान म यह एक अपने प्रकार का अकेला बिक्री केद्र है जहां से भारत सरकार के विभिन्न विभागो, अकादमियो, राजस्थान सरकार और अय राज्य सरकारों के लगभग ७०० स भी अधिक प्रकाशन बचे जाते हैं। गत वर्षों मे कुल २३,६०५ रु० के प्रकाशन बेचे गये हैं जिनम केद्र को कोई ५१३० रु० की धनराशि कमीशन के रूप मे प्राप्त हुई है।

वृत्त चित्र प्रदशन

केद्र के वाचनालय कक्ष मे दोहरा प्रबध किया हुआ है। वही चित्र प्रदशन गृह का भी काम करता है जहां प्रतिदिन भारत व राज्य सरकारों की फिल्मा को दिखाने की विशेष व्यवस्था है। प्रात काल छात्र छात्राओ के लिये फिल्म प्रदर्शन होते हैं। गत वष म कुल २५३ फिल्म प्रदर्शन हुए जिसस ४५,४८६ व्यक्तियों का मनोरजन हुआ। इसके अतिरिक्त सूचना केद्र द्वारा दी गई फिल्मो के रगमच पर ७६ फिल्म प्रदर्शन हुए जिसमे १,२२,७०० व्यक्तियो ने लाभ उठाया।

अन्य सूचना केद्र —

जयपुर की तरह अजमेर के सूचना केद्र का आधा व्ययभार भी भारत सरकार द्वारा उठाया जा रहा है। इस केद्र मे स्थायी प्रदशनी लगाने का भी प्रबध किया जा रहा है। जिस भवन म सूचना केद्र चल

रहा है उसे खरीद लिया है और आवश्यकता के अनुरूप भवन मे अदला बदली की कार्यवाही की जा रही है।

जोधपुर बीकानेर, उदयपुर, कोटा, अलवर मे भी सूचना केन्द्रो द्वारा उपयोगी काय किया जा रहा है। बाडमेर और श्रीगंगानगर मे सूचना केन्द्रो की स्थापना का काय चालू है।

जयपुर, अजमेर, जोधपुर बीकानेर और उदयपुर के सूचना केन्द्रो के साथ साथ माइक्रोफोन स्टेशन भी काम कर रहे है। इस वष बाडमेर और श्रीगंगानगर माइक्रोफोन स्टेशन खोलने की कायवाही विचाराधीन है।

इन सब केन्द्रा का पूर्ण विकास होना बाकी है।

पुस्तकालय —

कार्यालय मे पत्रकारो तथा अपने अधिकारियों एव कमचारियो के उपयोग के लिये एक पुस्तकालय भी है। पुस्तकालय मे इस समय तक लगभग ६००० पुस्तकें हैं, २५८ पत्र-पत्रिकाए आती है तथा पुस्तकालय के साथ साथ एक वाचनालय भी चलाया जाता है। आलोच्य वष म कार्यालय के अधिकारियो, कमचारियो, तथा पत्रकारों अलावा करीब ७३०० व्यक्तियों ने भी उपयोग किया है।

पत्र निरीक्षण शाखा —

कतरन शाखा मे १७ हिन्दी अंग्रेजी दैनिक पत्रो का विशेष रूप से रोज निरीक्षण होता है। इनके अतिरिक्त डाक से प्राप्त होने वाले देश के दैनिक एव साप्ताहिक पत्र जिनकी सख्या प्रतिदिन करीब एक हजार से अधिक पहुँच जाती है, देखे व काटे जाते हैं और कतरनो से कतरन पुज बनाये जाते हैं। इन पत्रो की करतनें कटने पर समाचार के महत्व रीति नीति और तथ्य आदि के बारे म ध्यान रखकर सुरुचिपूर्ण ढग से शाखा द्वारा पुजा के रूप मे प्रेषण का प्रयास किया जाता है। कतरन शाखा मे ३५ से ४० पुज प्रतिदिन तयार होते हैं और औसतन ३०० प्रतिदिन के हिसाब से कतरनें छटती है।

राजस्थान मे मुद्रित सब पुस्तकों का लेखा जोखा रखा जाता है तथा हर तीसरे महीने उनका विस्तृत विवरण सरकार को भेजा जाता है तथा साथ मे यह भी देखा जाता है कि इसमे कोई आपत्तिजनक बातें तो नही हैं।

चित्र शाखा —

निदेशालय की चित्र शाखा (फोटोग्राफिक सेक्शन) विभिन्न अवसरा, स्थानो कार्यों एव व्यक्तियो के चित्र लेती है तथा लिये हुए चित्रो से आवश्यकतानुसार प्रतिया तैयार करती है, उपलब्ध चित्रो एव निगेटिवो का सकलन करती है और इस प्रकार गतिशील राजस्थान के सम्बन्ध मे सबसे बडा दृश्य साधन प्रस्तुत करने में योग देती है। इस शाखा ने इस दृष्टि से अपने तात्कालिक कतव्य तो निभाये ही हैं लेकिन

इसके प्रयत्न से राजस्थान का देश-विदेशा म आकार प्रस्फुटित भी हुआ है जो निरन्तर अधिकाधिक आकर्षक होता जा रहा है।

शाखा म इस समय करीब २३० चित्र एलबम हैं जिनम लगभग ८०,००० चित्र हैं तथा अलग अलग विषय की अलग अलग एलबम हैं।

राज्य म विभिन्न जिलो पर विशेष चित्र सामग्री सकलित करने का प्रयत्न किया जा रहा है तथा मुख्य मुख्य प्रोजेक्टो का भी। इस तरह बाडमेर व बूदी का थोडा बहुत अभी शेष रहा है। हिन्द-पाक युद्ध का इस वर्ष विशेष ध्यान दिया गया है तथा इस तरह के करीब २,००० चित्रो का सकलन किया है।

चित्र शाखा के बनाये हर प्रकार के चित्रो का स्तर (क्वालिटी) साधारणतया उच्च कोटि का रहा है और इसकी सराहना ससार के पत्रकारो और विशेषज्ञो द्वारा बार बार की जा रही है।

शोध एव सदभ शाखा —

राजस्थान से सम्बन्धित अनेक विषयो पर शोध एव सदभ शाखा म सामग्री तयार की जाती है। शोध के योग्य कोई काय इस शाखा से अछूता नही रहता।

इस शोध सामग्री का उपयोग समाचार-पत्र, शोध-कर्ता, पत्रकार और राजकीय विभागो की प्रचार शाखाएँ भरपूर रूप म कर रही हैं।

विज्ञापन शाखा —

विज्ञापन वितरण मे समानता लाने की दृष्टि से राज्य सरकार ने विज्ञापन, नियम, १९६२ सावजनिक सम्पर्क परामश मण्डल के परामर्शानुसार, स्वीकृत किये हैं, जिनके अनुसार अगस्त, १९६३ से विज्ञापन वितरण की कायवाही की जा रही हैं। इस प्रकार के नियम बनाने और लागू करने वाला पहला राज्य कदाचित राजस्थान ही है।

उक्त नियम के अन्तगत राज्य सरकार और उसके विभिन्न विभागो की ओर से विज्ञापन निकलवाने, उनकी जाच करने और उनका भुगतान करने का काम निदेशालय की विज्ञापन शाखा करती है।

विज्ञापन दो प्रकार के होते हैं एक तो वर्गीकृत, जो खरीद की जाने वाली चीजो के टेण्डर या रिक्त पदो की पूर्ति के लिए सूचनाओ के रूप मे निकाले जाते हैं और दूसरे सजावटी, जो विभिन्न योजनाओ, सफलताओ, स्थानो एव अवसरो की ओर ध्यान आकर्षित करने के लिये होते हैं।●

आर० के० कौल

# शिक्षा का चतुर्दिश विकास

देश के स्वतन्त्र हो जाने के बाद तक राजस्थान के विभिन्न भागो म सामान्य शिक्षा की सुविधाओ का अभाव था। शिक्षा के क्षेत्र मे अब तक जो कुछ प्रगति हो पाई थी वह तत्कालीन रियासतो के साधनो और इस दिशा मे उनके शासको की दिलचस्पी का ही परिणाम था। १६५१ म साक्षरता का अखिल भारतीय प्रतिशत जहा १६ ६८ था, वहा राजस्थान का प्रतिशत केवल ८ ६५ था। यद्यपि राज्य के वित्तीय साधन सीमित और अल्प थे और सामाजिक सेवाओ के विस्तार एव विकास का कार्यक्रम विशाल और अभूतपूर्व था, फिर भी शिक्षण कार्यक्रमो की क्रियान्विति म अर्थाभाव को बाधक नहीं होने दिया गया। इसी का परिणाम है कि राज्य मे साक्षरता का प्रतिशत ८ ६५ से बढ़कर १६६१ मे १८ १ तक पहुच सका।

राज्य मे गत एक दशक म शिक्षण सस्थाओ मे तीनगुना से भी अधिक वृद्धि हुई है। १६५० ५१ मे सस्थाओ की सख्या केवल ६०२७ थी, किन्तु १६६२–६३ मे यह २७,५६० हो गई। छात्र सख्या भी साढे छह लाख से बढ कर लगभग १६ लाख तक पहुच गई। इतने बालको को पढ़ाने के लिए अध्यापको की सख्या भी २८ ००० से बढकर ६७,००० तक पहुच गई। इस प्रगति ने उस अन्तर को बहुत सीमा तक समाप्त कर दिया है जो शिक्षा के क्षेत्र म राजस्थान और सारे भारत की औसत के बीच रहता आया था। प्रति एक लाख की जन सख्या के पीछे देश म जब ५५ प्राथमिक शालायें थी, राजस्थान मे केवल २७ थी। आज यह स्थिति नही है। १६६०–६१ मे प्राथमिक शालाओ की अखिल भारतीय औसत एक लाख के पीछे ७३ थी और राजस्थान का आकडा भी ७२ तक आ पहुंचा था।

*छात्रो की सख्या बढाने मे राज्य मे गाव-गाव में आयोजित 'स्कूल चलो' अभियान का बडा योग रहा* है। प्राथमिक शिक्षा के स्तर पर छात्र सख्या की वार्षिक वृद्धि का औसत लगभग १३ प्रतिशत रहा है और इसम भी बालिकाओ का प्रतिशत बालको से अधिक है जो एक उल्लेखनीय सफलता है। राज्य म अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा का कानून बन चुका है। चालू वर्ष म पहली से पाचवी कक्षा के विद्यार्थियो मे १ ५० लाख की अतिरिक्त वृद्धि का लक्ष्य है। इसके पूरा हो जाने पर तृतीय पचवर्षीय योजना का १८ ६० लाख बच्चो के स्कूल मे भर्ती करने का लक्ष्य स्वत ही प्राप्त हो जायगा।

अक्टूबर १९५९ से जब कि राज्य में लोकतान्त्रिक विकेन्द्रीकरण की योजना लागू की गई, प्राथमिक शिक्षा पंचायत समितियों के अधिकार क्षेत्र में चली गई है। राज्य का शिक्षा विभाग इस स्तर पर भी शैक्षणिक एवं प्रशासनिक निर्देशन बराबर देता है। आशा की जाती है कि प्राथमिक शिक्षा का जिस गति से विस्तार होता जा रहा है, उससे इस पंचवर्षीय योजना के अन्त तक, राजस्थान ६–११ वर्ष की आयु के समस्त बालकों को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा देने में समर्थ हो जायगा।

## माध्यमिक शिक्षा —

राजस्थान में प्राथमिक शालाओं के अनुपात में माध्यमिक शालाओं की संख्या कम है। यहाँ १४ प्राथमिक शालाओं पर एक माध्यमिक शाला है जब कि अखिल भारतीय औसत सात पर एक की है। राज्य की माध्यमिक शालाओं में प्रति छात्र होने वाला व्यय भी अखिल भारतीय औसत से काफी अधिक है। इन दोनों ही स्थितियों को सम्भालने की ओर राज्य में काफी ध्यान दिया गया है किन्तु शालाओं की संख्या काफी बढ़ जाने के परिणाम स्वरूप शिक्षा के स्तर में गिरावट आने की आशंका बनी रहती है। इस आशंका का एक बड़ा कारण है माध्यमिक परीक्षाओं का परिणाम जिसका प्रतिशत ५५ से घट कर ४१.२ हो गया है। इस प्रश्न की जांच के लिए राज्य में एक समिति नियुक्त की गई थी जिसकी अधिकांश सिफारिशें मानी जा चुकी हैं।

राज्य में इस समय ६ से ८ वीं कक्षाओं में शिक्षा पाने वाले छात्रों की संख्या लगभग साढ़े तीन लाख है जो ११ से १४ वर्ष की आयु वर्ग के बालकों का २२ प्रतिशत है।

## उच्च तथा उच्चतर माध्यमिक शिक्षा —

राज्य के स्कूलों में उच्चतर माध्यमिक शिक्षा प्रणाली प्रचलित की जा चुकी है। १९६४-६५ में लगभग ७०० उच्च तथा उच्चतर माध्यमिक शालाएं चल रही थीं। इनकी कुल छात्र संख्या डेढ़ लाख से भी ऊपर थी। उच्चतर माध्यमिक स्तर की परीक्षाएं राज्य के उच्चतर माध्यमिक शिक्षा मण्डल द्वारा संचालित होती हैं। पाठ्य पुस्तकों का चुनाव एवं स्वीकृति भी यही मण्डल करता है।

## उच्च शिक्षा —

कालेज स्तर पर त्रि-वर्षीय डिग्री पाठ्यक्रम की योजना राज्य में द्वितीय पंचवर्षीय योजना में अपनाई गई थी। इसके परिणामस्वरूप पुराने इंटर कालेज शनैः शनैः डिगरी कालेजों में परिणत किये गये और ६१-६२ समाप्त होते एक भी इंटर कालेज नहीं रहा। १९५३-५४ में राज्य में सामान्य उच्च शिक्षा के लिये केवल ८६ कालेज थे। किन्तु १९६२-६३ के अन्त तक इनकी संख्या ६२ हो गई थी। तीसरी योजना के अन्त तक दो और कालेज खुलने की बात थी जिनमें से एक महिलाओं के लिये था। यह उल्लेखनीय है कि लड़कियों की उच्च शिक्षा के क्षेत्र में राज्य में विगत दस वर्षों में प्रायः पांच गुनी प्रगति हुई है।

उच्च शिक्षा के विकास पर दृष्टिपात करने के लिए निम्नलिखित कुछ आकडे सहायक सिद्ध होगे। राजस्थान मे १० लाख की जनसख्या के पीछे कालेजो की सख्या तीन है। कालेजा और उच्च माध्यमिक विद्यालयो की सख्या का अनुपात ११८ है। उच्च शिक्षा के लिए राजस्थान म प्रति विद्यार्थी ४२० रुपये के वार्षिक व्यय की औसत है जबकि अखिल भारतीय औसत ३०२४ रुपय हैं। राज्य म उच्च शिक्षा की सुविधाओ का विस्तार वस्तुत उच्चतर माध्यमिक विद्यालया की आवश्यकताओ से कही आग रहा है और यह शीघ्रगामी विकास ही समवत कारण है कि यहा उच्च शिक्षा के प्रति विद्यार्थी लागत अधिक आती है। राजस्थान निश्चय ही यह दावा करने की स्थिति मे है कि उसकी उच्च शिक्षा सस्थाओ मे विद्यार्थियो की ओर अध्यापक व्यक्तिश अधिक ध्यान दे सकते हैं और इस प्रकार यहां शिक्षा का स्तर अपेक्षाकृत उन्नत बने रहने की अधिक समावनाए हैं। राजस्थान की उच्च शिक्षा सस्थाओ म १४ विद्यार्थिया के पीछे एक अध्यापक की व्यवस्था है जबकि अध्यापक एव विद्यार्थिया की अखिल भारतीय औसत १२५ है।

### लडकियो की शिक्षा —

लडकियो की शिक्षा के विषय म भी राजस्थान की प्रगति अत्यन्त सतोषजनक और उल्लेखनीय रही है। केवल १५-२० वष पूव ही इस क्षेत्र म लडकिया की शिक्षा, खास तौर से, उच्च शिक्षा के लिए कालेज भेजना तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था म एक अटपटी वात समझी जाती थी। इस दिशा म लोगो का दृष्टिकोण बदलना और शनै शनै उनमे अपनी लडकियो को भी लडका के समान ही शिक्षित करने की आकाक्षा जागृत करना शिक्षा विकास के साथ-साथ-समाज सुधार का भी अभियान रहा है। अभी १० वष पूव तक सारे राज्य म लडकियो के केवल १० हाईस्कूल, १०२ मिडिल स्कूल, और ४०५ प्राइमरी स्कूल चलते थे, किन्तु अब २५० से भी ऊपर उच्च एव उच्चतर माध्यमिक बालिका विद्यालय चल रहे हैं।

### विश्वविद्यालय शिक्षा —

राजस्थान म विश्व विश्वविद्यालयो की सख्या अब तीन हो गई है राजस्थान (जयपुर), जोधपुर और उदयपुर। जयपुर स्थित राजस्थान विश्वविद्यालय १९४७ मे स्थापित राज्य का पहला और सबस पुराना विश्वविद्यालय है आवास और अध्ययन की सुविधाओ से सुसज्जित इस विश्वविद्यालय म १८ शिक्षण विभाग हैं और राज्य के ६५ कालेज इससे सम्बद्ध हैं। पिछले दस वर्षों म यह विश्वविद्यालय अपने विभिन्न भवना एव खण्डो के निर्माण काय का केन्द्र रहा है और जयपुर के दक्षिण म इसका सुविस्तृत प्रागण आज अनेक भव्य इमारता से नगर की सुन्दरता म भी अभिवृद्धि कर रहा है।

१९६२ म स्थापित उदयपुर विश्वविद्यालय एक इकाई है जिसके अन्तगत पाच कालेज काम करते हैं। ६ कालेज इस विश्वविद्यालय से सम्बद्ध भी हैं। इन ग्यारह कालेजा की छात्र सख्या ४ हजार से अधिक है।

राज्य का तीसरा विश्वविद्यालय जोधपुर मे १९६२-६३ से काय कर रहा है। इसके अतगत भी पाच कालेज है।

यहा उल्लेखनीय है कि राजस्थान मे विश्वविद्यालयों मे प्रवेश पाने वाले विद्यार्थियों की सख्या आज उस सख्या की दुगनी से भी अधिक है जो १०-११ साल पहले थी।

**आधुनिक एव आयुर्वेदिक चिकित्सा —**

राज्य मे तीन मेडिकल कालेज थे—जयपुर, बीकानेर, उदयपुर। विश्व स्वास्थ्य सगठन का अनुमान है कि राजस्थान को ६७०० सामान्य चिकित्सा (डाक्टर) और ४,४२२ विशेषज्ञो की आवश्यकता है। इसके विपरीत अभी केवल एक हजार सामान्य चिकित्सक और १३० विशेषज्ञ उपलब्ध हैं। इस कमी को पूरा करने का प्रयत्न यह मेडिकल कालेज कर रहे हैं। जोधपुर व अजमेर में दो मेडिकल कालेज और खोले गये हैं।

राज्य में दो राजकीय आयुर्वेदिक कालेज हैं जिनके अन्तर्गत दो अनुसधान केन्द्र भी चलते हैं। यह कालेज जयपुर और उदयपुर मे हैं। इनमे भिषगाचार्य तक की प्रशिक्षण व्यवस्था है। इनके अतिरिक्त विभिन्न स्थानो पर पाच अन्य आयुर्वेदिक कालेज काम कर रहे हैं।

**इजीनियरिंग एव तकनीकी —**

आज के टेक्नालाजी और विज्ञान के युग में तकनीकी शिक्षण संस्थाओं की महत्ता निर्विवाद है। यह आश्चर्य की बात नहीं कि राजस्थान में जो सामान्य शिक्षा मे ही इतना पिछड़ा रहा, १९५३ तक केवल एक ही इजीनियरिंग कालेज था। अब राज्य म तकनीकी शिक्षा के प्रसार को प्रोत्साहन देने के लिए १९५७ मे एक पृथक निदेशालय की स्थापना की गई और अब तक जोधपुर, अजमेर, उदयपुर, अलवर, कोटा और बीकानेर मे पॉलीटेक्नीक सस्थाओं की स्थापना की जा चुकी है जिनमे लगभग १,१०० छात्र प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं।

जोधपुर का एम बी एम इजीनियरिंग कालेज देश म तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र मे अपना एक विशिष्ट स्थान बना चुका है। पिलानी के बिडला इन्स्टीट्यूट आफ साइन्स एण्ड टेक्नालाजी को तो विश्वविद्यालय का दर्जा दिया गया है। जयपुर मे मालवीय रीजनल इजीनियरिंग कालेज चल रहा है और इसकी तथा जोधपुर और पिलानी की प्रवेश क्षमता में भी पर्याप्त वृद्धि की गई है। अगले दो वर्षों में राज्य के इजीनियरिंग कालेजों में सात सौ से भी अधिक प्रवेशार्थियो को स्थान दिया जाने लगेगा।

**कृषि शिक्षा एव पशु-चिकित्सा —**

राज्य में कृषि शिक्षा के लिए उदयपुर और जोबनेर (जयपुर) में कृषि महाविद्यालय हैं जिनमें २४० प्रशिक्षार्थी हैं। कृषि शिक्षा का सयोजन उदयपुर विश्वविद्यालय के तत्वावधान में होता है।

बीकानेर का पशु चिकित्सा विज्ञान महाविद्यालय भी उदयपुर विश्वविद्यालय से सम्बद्ध है। यह अब तक लगभग ४०० स्नातक प्रशिक्षित कर चुका है।

संस्कृत शिक्षा —

राजस्थान संस्कृत के विद्याध्ययन के लिए सदियों से विख्यात है। जयपुर तो काशी के समान संस्कृत शिक्षा का एक बड़ा केन्द्र माना जाता रहा है। राजस्थान की अधिकांश संस्कृत शिक्षण संस्थाएं आज भी जयपुर खण्ड में ही हैं। संस्कृत शिक्षा को समयानुकूल बनाने और इसके विकास को सही दिशा देने के लिए १९५८ में राजस्थान सरकार ने एक पृथक संस्कृत शिक्षा निर्देशालय स्थापित किया जो राज्य में संस्कृत की शिक्षण संस्थाओं को समुचित सहायता एवं मार्ग दर्शन देता है।

राज्य में इस समय कुल ३७ सरकारी तथा ८३ सरकार द्वारा मान्य एवं सहायता प्राप्त संस्कृत शिक्षण संस्थाएं हैं।

समाज शिक्षा —

राजस्थान में समाज शिक्षा योजना के अन्तर्गत साक्षरता प्रचार, सांस्कृतिक गतिविधियाँ, पर्व त्यौहारों का आयोजन और प्रशिक्षण शिविर आदि आते हैं। इसके लिए शिक्षा विभाग में ही एक पृथक खण्ड है।

राज्य में कोई साढ़े छः हजार प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र चलते हैं। प्रौढ़ों को साक्षर बनाने और तत्सम्बन्धी सुविधाओं में विस्तार के लिए प्रति पंचायत समिति एक हजार रुपये के ११ पुरस्कार दिये जाते हैं। पुरस्कार उसी पंचायत समिति को मिलता है जो कम से कम ५० प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र चलाती हो।

अजमेर में समाज शिक्षा संगठन का एक दृश्य-श्रव्य विभाग है। इसमें समय-समय पर दृश्य-श्रव्य उपकरणों के उपयोग, सार संभाल और मरम्मत के लिए प्रशिक्षण क्रम आयोजित किये जाते हैं। यहीं एक फिल्म पुस्तकालय भी बनाया गया है।

समाज शिक्षा के अन्तर्गत पुस्तकालय और वाचनालय भी चलते हैं। डिवीजनों और जिला केन्द्रों के अतिरिक्त कुछ तहसील केन्द्रों में भी यह सुविधा उपलब्ध है। एक केन्द्रीय पुस्तकालय के अलावा ५ डिवीजनल, २४ जिला, ७ तहसील, ५ चलित, ८८ ग्राम और १३०० प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र पुस्तकालय हैं।

मूक, बधिर, एवं अंधों की शिक्षा —

राजस्थान में अजमेर और जयपुर में मूक बधिर एवं अन्धों के लिए भी शिक्षण संस्थाएं हैं। इनमें अजमेर की संस्था तो केवल अन्धों के लिये ही है।

ललित कलाओं की शिक्षा —

राजस्थान में संगीत नृत्य एवं चित्रकला की शिक्षा के लिए एक कालेज और ५ स्कूल चलते हैं जिनमें लगभग ३५० प्रशिक्षार्थी हैं।

**शारीरिक शिक्षा एव खेल कूद —**

जोधपुर मे एक शारीरिक प्रशिक्षण कालेज है जिसम, डिप्लोमा के लिए २७ तथा सार्टिफिकेट पाठ्यक्रम के लिए ६८ प्रशिक्षार्थी लिये जाते है। सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम के लिये प्रवेशार्थी की योग्यता मटिक तथा डिप्लोमा के लिये ग्रेजुएट है।

राज्य की शिक्षण सस्थाओ म विद्यार्थियो के खेल-कूद की व्यवस्था वस्तुत शिक्षण-क्रम की पूरक है। इसके लिए राज्य मे एक सलाहकार मण्डल है जो प्रति वष खण्ड, जिला, एव राज्य स्तर पर खेलकूद प्रतियोगिताएँ आयोजित करता है। इस बात का विशेष प्रयत्न किया जाता है कि विभिन्न खेलो मे उदीयमान खिलाडी आगे आयें। इसके लिए उन्ह उचित पारितोषिक भी दिये जाते है विभिन्न नगरो म खेल के मदानो के अभाव की पूर्ति की ओर भी समुचित ध्यान दिया जा रहा है। राजस्थान राज्य खेल कूद परिषद् के प्रयत्न इस दिशा म विशेष उल्लेखनीय है।

**स्काउट व गाइड आन्दोलन एव सनिक शिक्षा —**

राजस्थान के शिक्षा क्षेत्र म स्काउट और गाइड आन्दोलन का भी विशेष स्थान है और इसने अनक वार राष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी साख जमाई है। विद्यार्थियो म अनुशासन पदा करने और सेवा भावना जगाने वाली यह प्रवृत्ति कितनी लोकप्रिय है, इसका अनुमान तो राज्य की स्काउट गाइडो की सख्या से ही हो जाता है जो अब सवा लाख के लगभग है। राज्य भर म भारत स्काउटस व गाइड्स की ६ खण्ड स्तरीय तथा ६५ स्थानीय शाखाए अभी चल रही हैं।

राजस्थान मे बालको को राष्ट्रीय प्रतिरक्षा अकादमी मे प्रवेश के लिये तैयार करने के उद्देश्य से दो स्कूल खोले गये हैं जो चित्तौडगढ और धोलपुर मे हैं। इनमे चित्तौडगढ का स्कूल पुराना हैं जो १९६१ ६२ से चल रहा है और लगभग ३०० बालक इसमे शिक्षा पाते हैं। राज्य के सभी कालेजो म अब एन सी सी अनिवार्य है और किसी विद्यार्थी के परीक्षा म बठने के लिये जयपुर और उदयपुर के विश्वविद्यालयो ने तो एन सी सी की परेडो मे ८० प्रतिशत उपस्थिति आवश्यक कर रखी है। जोधपुर मे यह ६० प्रतिशत है।

**विशिष्ट सुविधाए —**

राजस्थान की भावी पीढियो को शिक्षित और प्रबुद्ध बनाने के इस राज्य व्यापी प्रयत्न म वह विशिष्ट सुविधाए और रिआयतें भी उल्लेखनीय हैं जो राज्य सरकार न वाछित उद्देश्यो की प्राप्ति के लिए समय समय पर दी हैं। राज्य म १९५० ५१ म छात्राओ की सख्या जहा केवल ६७ ००० थी वहा १९६३ ६४ में ४ लाख ३० हजार हो गई। राजस्थान म महिलाओ की शिक्षा सभी स्तरो पर नि शुल्क है और उच्चतर माध्यमिक परीक्षा म महिलायें प्राइवेट छात्राओ के रूप म भी बैठ सकती है। महिला शिक्षा को प्रोत्साहन दने के लिए ६ से ९ वी कक्षाओं म प्रतिवष ६०० लडकियो को पुस्तको आदि क लिए छात्रवृत्तिया दी जाती हैं

श्रौर १२० छात्राम्रो जा, उच्चतर माध्यमिक परीक्षा म उत्तीए होने के बाद शिक्षा विभाग की सेवा करने को उद्यत होती हैं, उन्हें तीन वप तक २५) रु० के वजीफे भी दिये जाते हैं। ५) रु० प्रति माह की ७५० छात्र-वृत्तिया विद्यालय म उपस्थिति के लिये दी जाती हैं राजस्थान के सभी बडे नगरो में छात्राम्रा तथा अध्यापिकाम्रो के लिए रिम्रायती दरो पर यातायात व्यवस्था भी है।

अनुसूचित-जातियो एव जन-जातियो के छात्रो को भी पूव मैट्रिक कक्षाम्रो मे छात्रवृत्तिया दी जाती हैं। मैट्रिकोत्तर कक्षाम्रों मे परिवार के श्राय के श्राधार पर सभी जातियो को छात्रवृत्तिया मिल सकती हैं, जिन परिवारो की श्राय १५००) रु० वार्षिक है, उनके लडकों व लडकियो को इन छात्रवृतियो मे प्राथमिकता दी जाती है श्रौर १,५००) रु० से २,०००) रु० तक की वार्षिक श्राय (तकनीकी पाठयक्रमो के लिए २४००) रु० वाले परिवारो के आवेदनो पर भी विचार किया जाता है।

राज्य मे दी जाने वाली योग्यता छात्रवृत्तिया शिक्षा प्रसार श्रौर स्तर-सुधार दोनो दृष्टियो से बडी महत्वपूए हैं। सावजनिक परीक्षाम्रो मे प्रथम श्रेणी म उत्तीए होने वाल किसी भी छात्र को, जिसके माता पिता की श्राय ३,८४० रु० वार्षिक से अधिक न हो योग्यता छात्रवृत्ति मिल जाती है। इसकी दर प्री-यूनिवर्सिटी से लेकर मेडिकल व इजीनियरिंग परीक्षाम्रो तक ३५०) रु० से लेकर ७५०) रु० तक है। योग्यता छात्रवृत्तियो में श्रतिरिक्त 'योग्यता एव निघनता' छात्रवृत्तिया भी १००) रु० से २५०) रु० तक दी जाती हैं। यह छात्रवृत्तिया उन छात्रा को मिलती हैं जो श्रपनी कक्षाम्रो म योग्यता दिखाते हैं किन्तु जिसके पास शिक्षा प्राप्ति के लिए आवश्यक भौतिक साधनो का श्रभाव होता है।

दिवगत सरकारी कमचारियो, श्रत्यधिक निघन श्रौर श्रपाहिजा के बच्चो को भी छात्रवृत्तिया देने का प्रावधान है। भूतपूव सैनिक कमचारियो के बालको को भी वजीफे मिलते हैं श्रौर राजनीतिक पीडितो के बच्चा को भी। छात्रवृत्तियो की सुविधा का अनुमान इसी से किया जा सकता है कि १९६२ ६३ म ३७,९१३ लडको श्रौर ३३६३ लडकियो ने इसका लाभ उठाया था।

छात्रवृत्तियो एव वजीफा के अतिरिक्त राज्य सरकार राजस्थान अथवा राजस्थान के बाहर तकनीकी एव व्यावसायिक प्रशिक्षए प्राप्त करने वाले विद्यार्थियो को अध्ययन ऋए भी देनी है। ऋए प्रति वप एक निश्चित पाठ्यक्रम के लिए दिया जाता है। अध्ययन ऋए की अधिकतम सीमाए इस प्रकार हैं —

इजीनियरिंग-१५००) रु०, आयुर्वेदिक–८००) रु०, मेडिकल १५००) रु० कृषि ऐव पशु चिकित्सा-१०००) रु० शोध एव श्रनुसधान तथा अन्य जो राज्य सरकार उपयुक्त समझे १५००) रु०।

विदेशो मे उच्च अध्ययन के लिये जाने वालो को भी ५०००) रु० वार्षिक की दर से उनके पाठयक्रमो के लिए ऋए मिलने की सुविधा है।

राज्य मे छात्रो को उपलब्ध विशिष्ट सुविधाम्रो मे ६-११ आयु वग के बालका को दोहपर मे दूध वितरए की जो सुविधा जुलाई १९६२ से उपलब्ध है वह भारत भर म अपने ढग की एक ही है। अमरिका के केयर सगठन द्वारा लगभग ५ लाख बालको को अपने स्कूलो मे ही प्रतिदिन यह पाउडर का दूध दोपहरी मे पिलाया जाता है। ●

# सहकारी जीवन-पद्धति

सहकारिता भारत के लिये कोई नई जीवन पद्धति नही है। इसका उल्लेख हमारे यहाँ आदि काल से मिलता है। यह हमारे यहा एक जीवन पद्धति के रूप मे प्रचलित थी और अधिकाश काम परस्पर सहयोग से ही किय जाते थे। वेदो म हम सहकारी भावना को समृद्ध बनाने के बारे मे अनेक स्थानो पर निर्देश प्राप्त होते हैं। ऋगवेद व अथर्ववेद मे अनेक स्थाना पर आपस म एक दूसरे के सहयोग से काम करने को कहा गया है।

सगच्छध्व सवदध्व,<br>
सवो मनासि जानताम्,<br>
देवा भाग यथापूर्वे,<br>
सजनानाभुपासते ।।

ऋगवेद के इस श्लाक म परस्पर मिलकर एक साथ काय म लगने के साथ साथ एक मत से परस्पर सद्भाव पूवक एक ही माग पर चलने एक साथ बोलने, प्रत्येक काय को सगठित होकर करने एक मत से हा या ना का निणय करने की बात को दृढता पूवक अपनाने के लिय कहा गया है। इससे यह स्पष्ट है कि हमारी प्राचीन परम्परा मिल जुलकर काम करने और सहयोग को महत्व देने की रही है।

हमारा पारिवारिक जीवन भी इस सहयोग और परस्पर सहायता में सहकारी सिद्धान्तो के आधार पर खडा है। परिवार मे जिस प्रकार से परस्पर एक दूसरे की सहायता करके प्रत्येक को अपने व्यक्तित्व को विकसित करने का अवसर प्राप्त होता है वह सहकारिता का एक अनुपम उदाहरण है।

**महात्मा गांधी व नेहरूजी के सहकारिता पर विचार —**

सहकारिता के महत्व को राष्ट्रपिता महात्मा गाधी ने भी स्वीकार किया है तथा इस हमार गावा के कार्यों का मुख्य आधार बनाने की बात कही है। उन्होंने इस बार पर बल दिया है कि मनुष्यो को सहयोग से रहना चाहिये और सबकी भलाई के लिये काम करना चाहिये। जहा तक सम्भव हो

गावो के सार काम सहयोग के आधार पर किय जावें। सहकारिता की पद्धति किसाना क लिये ज्यादा जरूरी है। जमीन को सहकारिता के आधार पर जोता जायगा तो उसमे किसान को ज्यादा आमन्नी होगी। यह याद रखना चाहिये कि सहकारिता का आधार पूर्ण अहिंसा पर होगा।"

श्री जवाहरलाल नेहरू ने ग्रामीण अर्थ व्यवस्था को सहकारी आधार पर गठित करन और खेती म सहकारिता के प्रयाग को एक आवश्यकता माना है। उन्होंन भारतीय समाज के तीन आधार मे से सहकारिता को एक आधार बतलाते हुए कहा है कि भारतीय समाज के तीन आधार स्तम्भ होने चाहिये-ग्राम पचायत, ग्राम सहकारी समिति और ग्राम पाठशाला। ये ही तीन चीजें है जिन पर भारत का सम्पूर्ण राजनतिक, सामाजिक और आर्थिक ढाचा खडा होना चाहिये।"

भारत में सहकारिता का जो नया स्वरूप, कानूनी जामा पहन कर विकसित हुआ है उसका इतिहास ज्यादा पुराना नही है। सन् १९०४ म भारत का प्रथम सहकारिता कानून बनाया गया था। इस कानून का मूल उद्देश्य यह था कि किसानो को मामूली ब्याज पर फसल के लिये कर्जा मिल सके और वह महाजनो के शोषण से छुटकारा पा सके। इस कानून के बनन के पश्चात धीर धीरे सहकारिता का उद्देश्य व्यापक बनता गया। वास्तविक सहकारी भावना को-जीवन पद्धति और सामाजिक व्यवस्था के रूप मे-स्वतत्रता प्राप्ति के बाद ही महत्व मिला। प्रथम, द्वितीय, तृतीय योजनाओ मे सहकारी क्षेत्र के लिये, निरतर क्रमिक रूप से अभिवृद्धि के लिये प्रावधान रखे गये। सहकारिता को राष्ट्रीय नीति के रूप म स्वीकार किया गया और उसे समाजवादी समाज रचना के लिय एक प्रमुख माध्यम के रूप म स्वीकार किया गया। आज सहकारिता आर्थिक व सामाजिक क्रान्ति लाने की दिशा म सहायक सिद्ध हो रही है। इसके द्वारा एक लोकतत्रीय शोषण-विहीन समाज की स्थापना की दिशा म महत्वपूर्ण काय हा रहा है।

तृतीय पचवर्षीय याजना के अन्त तक ३२ ५ प्रतिशत ग्रामीण परिवारो एव ८५ प्रतिशत गाव सहकारिता के क्षेत्र म लाये जा चुके थे।

राज्य म सहकारिता को सुदृढ आधार प्राप्त हो चुका है जिससे समाजवादी समाज रचना के काय मे योग देने मे यह सहायक बना है। बिचालियो के शोषण से छुटकारा दिलाने उपभोक्ता और उत्पादक दोनो को ही उचित मूल्य पर सामग्री प्राप्त कराने तथा वज्ञानिक साधना के द्वारा कृषि उत्पादन म वृद्धि के लिय सहकारिता एक सबल साधन है। इन उद्देश्या को पूरा करने के साथ-साथ समाज के पिछडे वग के लोगो के जीवन स्तर का समुन्नत बनाने की दिशा मे सहकारिता का बहुत महत्व है। राज्य म इन उद्देश्यो की प्राप्ति म अब तक इस दिशा मे हुई प्रगति ने सहायता की है परन्तु अभी भी हम इन उद्देश्यो को पूरी तरह स प्राप्त करने म सफल नही हा सके हैं। यद्यपि हमारी अब तक की उपलब्धि पूर्णत सतोष जनक है परन्तु फिर भी हम इस दिशा मे और ठोस प्रयत्न करने की जरूरत है ताकि एक शोषण विहीन समाज और अर्थ-व्यवस्था की स्थापना की जा सके जिसम सबको अपनी मेहनत का वाजिब हक समानता के आधार पर प्राप्त हो सके। ●

# गो सम्वर्धन

राज्य गोसम्वर्धन परिषद का गठन केन्द्रीय गोसम्वर्धन परिषद के ढंग पर ही किया गया है। राज्य सचिवालय का एक अधिकारी परिषद का पदेन सचिव होता है तथा प्रतिदिन का कार्य करने के लिए एक गैरसरकारी सचिव भी नियुक्त किया हुआ है। परिषद में राज्य के भिन्न क्षेत्रों में गोसम्वर्धन का कार्य कर रही स्वयंसेवी संस्थाओं के प्रतिनिधि, कुछ गो-विकास के विशेषज्ञ तथा पंचायत राज के प्रतिनिधि स्वरूप कतिपय जिला प्रमुख व प्रधान भी सदस्य के तौर पर लिये गये हैं। गोसम्वर्धन परिषद राजस्थान में गो-विकास के लिए निश्चित योजनाएं बनाकर उन्हें राज्य सरकार द्वारा लागू किये जाने का परामर्श देती है, तथा सरकार उनके सुझावों को अपने पशुपालन विभाग के द्वारा कार्यान्वित करती है।

राज्य गोसम्वर्धन परिषद की यह स्पष्ट नीति है कि राजस्थान में गाय को सर्वाङ्गी पशु बनाने के लिए तथा उसे भैंस की तुलना में खड़ी करने के लिए सरकार की ओर से पूरी सहायता दी जाय। गांवों में गोसम्वर्धन के लिए अच्छी नस्ल की गायें व बैल रखवाने के लिए भी परिषद काफी रुचि लेती है। परिषद चाहती है कि गोपाल को उसके उत्पादन के दाम पूरे मिलें ताकि वह अपनी गाय की अच्छी तरह से सेवा कर सके। गोरक्षण का कार्य तभी सम्भव हो सकता है जब गाय गोपालक के लिए भार रूप न रहे। राज्य गोसम्वर्धन परिषद गोशालाओं या अन्य निजी संस्थाओं द्वारा आसपास के क्षेत्रों में गायों की उन्नति के लिए अच्छे सांडों के वितरण के अतिरिक्त पशुओं को हरा चारा उपलब्ध कराने की दृष्टि से गोपालकों को काफी प्रोत्साहन देती है। परिषद की क्षेत्रीय गोशाला विकास योजना, इस शिक्षा में एक ठोस कदम कहा जा सकता है।

**परिषद का नीति प्रस्ताव —**

(१) उन क्षेत्रों में जहां गाय आज भी अच्छी स्थिति में है वहां हमारा यह लक्ष्य होना चाहिये कि पशुओं की दूध शक्ति व कृषि जोत-शक्ति को विकसित किया जाय ताकि वे अच्छे सर्वाङ्गी पशु बन सकें।

(२) उन क्षेत्रों में जहां गाय की भैंस से कोई प्रतियोगिता नहीं है वहां हमें भैंस के प्रवेश को रोकने के लिये कदम उठाना चाहिये।

(३) उन क्षेत्रो म जहा गाय और भैंस साथ साथ रहती हैं वहा हमारे प्रयत्न केवल सर्वांङ्गी नस्ल की गायें को ही विकसित करने पर केन्द्रित होने चाहिये।

(४) उन क्षेत्रो म जहा न तो गाय है और न भस ही पनपी हुई है, वहा हम उन क्षेत्रा के अनुकूल अच्छी नस्ल की गायो को बढ़ावा देने की तरफ कदम उठाने चाहिये।

भारत सरकार ने इन सिफारिशो को स्वीकार कर लिया है। अत उन्ह सफल बनाने के लिये हम भी कठिन परिश्रम करना होगा। राजस्थान के लिये हमारे प्रयत्न इस प्रकार हो सकते हैं —

यह एक सवमान्य तथ्य है कि राजस्थान, सौराष्ट्र व कच्छ के अधिकाश भागो मे तथा मद्रास राज्य के कुछ हिस्सो म आज गाय अच्छी स्थिति म है। आबू सेमिनार द्वारा निर्धारित नीति के अनुसार सबधित राज्यों पर यह उत्तरदायित्व आ गया है कि वे अपने यहा उस दिशा मे प्रयत्न जारी करें कि, जिस स उन क्षेत्रो मे अच्छी नस्ल की गाया का विकास हो। वहा भसो के प्रवश को हर सभव उपायो द्वारा कम किया जाय। इस मे विशेष महत्व की बात यह हो कि, उन क्षेत्रो म भैस को बढावा देने के लिये कोई सरकारी सहायता न दी जाय। इसके अतिरिक्त समस्त सरकारी व गैर सरकारी दुग्ध योजनाओ म केवल गोदुग्ध को ही स्थान देने का हमारा लक्ष्य होना चाहिये। कम-से कम दूध रूप मे जितनी स्थानीय खपत हो उस तक पहुचने का प्रयत्न हो, यदि कही इसमे कुछ कमी रह जाय तो नई योजना प्रारम्भ करके गोदुग्ध के अभाव की पूर्ति यथाशीघ्र की जाय।

इस सदभ म राज्य गोसवधन परिषद प्रस्तावित करती है कि —

(क) समस्त डेयरी योजनाओ म सरकारी सहायता केवल गाय को ही दी जाय एव देहाती क्षेत्रो मे सहायता गोदुग्ध उत्पादन के लिए तथा शहरी क्षेत्रो मे उचित मूल्य के (मार्केटिंग के) विकास के लिए ही दी जाय।

(ख) राज्य के समस्त पशु पालन केन्द्रो को चाहिये कि व गो-विकास व गोपालन के काय म लगे पशुपालको को पूरी मदद दें। यह भी सवमान्य है कि विकसित पशु-उद्योग के जरिए कृषि और दूध का उत्पादन बढेगा एव उसके द्वारा रोजगार भी दिया जा सकगा। गाय की उत्पादन शक्ति बढाने की काफी गु जाइश है एव उसके जरिए राष्ट्रीय सम्पत्ति बढ़ाई जा सकती है।

(ग) राज्य की जयपुर व अन्य दुग्ध योजनाओ मे गोदुग्ध का ही आग्रह रखा जाय ताकि अनन्तोत ग राज्य के अथशास्त्र मे गाय को विकसित करने के लक्ष्य की पूर्ति हो।

(घ) गायो के पुनसस्थापन काय को तेजी से बढाने के लिए कर्ज, अनुदान सेवा व बाजार-व्यवस्था आदि के रूप में समस्त सहायता केवल मात्र गाय को ही दी जाय।

राजस्थान के क्षेत्रीय विकास की योजना इस प्रकार हैं —

गोशाला क्षेत्रीय विकास योजना—

उद्देश्य —

योजना का उद्देश्य प्रगतिशील गोशालाओ या निजी सस्थाओ के साधनो का, गोशालाओ व ग्राम्य क्षेत्रो मे दुग्धोत्पादन व पशु विकास के लिये उपयोग लेना तथा उनम (अ) नस्ल सुधार के लिये अच्छे साड

मुहैय्या करना (ब) गो दुग्ध के सग्रह व बिक्री का प्रबन्ध करना (स) अच्छे छटे हुए बछड़ों का पालन-पोषण करना एव (द) गो-दुग्ध तथा पशुओं के चारे व दाने के उत्पादन में वृद्धि करना है।

**योजना का कार्यक्रम —**

प्रत्येक चुनी हुई गोशाला या निजी सस्था इस योजना के कार्यक्रम को निम्न आधार पर हाथ में लेगी –

(अ) राज्य के पशु पालन विभाग की सलाह से गोशाला के पास एक क्षेत्र चुन कर वहा के उत्पादन के वास्तविक भण्डार व तथा चारे की फसलों को उगाने तथा दूध के उपयोग के बारे में तसल्ली करना।

(ब) उस क्षेत्र में सवर्धन योग्य मान्य साडों को रखकर इनकी उचित देखभाल करना तथा उनकी सेवाओं का पूरा हिसाब रखना।

(स) राज्य पशुपालन विभाग की सहायता से घटिया साडों व अन्य नर पशुओं को जो सवर्धन के लिए उपयुक्त नहीं हैं, बधिया कराने का काम हाथ में लेना।

(द) उस क्षेत्र में चारा पैदा करने के कार्य को लोकप्रिय बनाना तथा क्षेत्र के अनुकूल मान्यता प्राप्त चारों के बीज व अन्य साधन बाटना।

(इ) गोदुग्ध के उत्पादन, सग्रह एव बिक्री की व्यवस्था करना।

(फ) लागत मूल्य पर पशु पालकों के लिए पशु खाद्य वितरण की व्यवस्था करना।

(ग) अच्छी नस्ल के पशुओं को पालकर क्षेत्र में पशुपालन के नये विकसित तरीकों का अधिक से अधिक प्रचार करना।

(ह) राज्य पशुपालन विभाग की सहायता से पशु चिकित्सा सुविधा का प्रबन्ध करना।

**गोशालाओं का चुनाव —**

इस योजना के अन्तर्गत चुनी जाने वाली गोशालायें व निजी सस्थायें पजिकृत (रजिस्टर्ड) समितियां होनी चाहिये। तथा उनके पास मकान, पूजी, प्रशिक्षित व्यक्तियों के अतिरिक्त कम से कम २५ मान्य नस्ल के गायों का झुण्ड होना लाजमी है। ऐसी प्रत्येक गोशाला अथवा निजी सस्था उपयुक्त कार्यक्रमों के अनुसार राज्य पशुपालन विभाग अथवा राज्य गोसवर्धन परिषद के निर्देशानुसार कार्य करने के लिये तैयार हों।

**लक्ष्य —**

(क) प्रति वर्ष उस क्षेत्र से (गोशाला में भी) ५ अच्छी नस्ल के सांड तैयार करके उपलब्ध करना।

(ख) गो-दूध के सग्रह व वितरण की व्यवस्था करना जिसकी मात्रा दर योजना के दूसरे वर्ष की समाप्ति तक १० मन प्रतिदिन से कम नहीं होगी।

(ग) प्रति वर्ष चुने हुए ३० या ४० बछड़ों के पालन में सहायता देना।

(घ) योजना के १ साल बाद हर वर्ष कम से कम १०० एकड़ जमीन में पर्याप्त चारा उगाने के लिये बीज या पौध उपलब्ध कराने की व्यवस्था करना।

नाथूराम मिर्धा

# गो सम्वर्धन की संभावनाएं

राजस्थान एक बहुत बडा विशाल प्रदेश है। इसमे सब तरह की भूमि और सब तरह की जलवायु है। यहां २०-२५ फीट पर भी पानी मिलता है और ऐसे इलाके भी हैं जहा ३०० फीट से भी गहरा पानी है। यहा ४० इच से ऊपर वर्षा का क्षेत्र है और ७-८ इच से नीचे की औसत के भी क्षेत्र है। राजस्थान का एक विशाल भूमि-भाग खासकर चुरू, बीकानेर जैसलमेर, जोधपुर, बाडमेर और जालौर आदि म जमीन बहुत पडी है। आबादी कम है केवल वर्षा ५-७ इच ही होती है। इस क्षेत्र मे राजस्थान की बढिया गो-नस्लें हैं जसे-हरियाणा, राठी थारपारकर, नागौर और काकरेज आदि। पशु सख्या १,३१, ४०,००० है। यदि गायों का सही तरीके से सम्वधन हो तो नस्ल सुधार के लिए बहुत गु जाइश है। चारे की तथा सतुलित खुराक की व्यवस्था हो सके तो इस क्षेत्र का उत्पादन बहुत अधिक बढ सकता है। खेती से भी अधिक उत्पादन गोपालन मे हो सकता है। केवल नागौरी नस्ल के मेले मेडता, पवतसर, नागौर म विशेष रूप से लगते हैं जिसम ८ १० करोड के पशु हर वष बिक्ते हैं। काकरेज के मले मे ३ ४ करोड के पशु बिकते हैं। बीकानेर मे केवल ३० गावो स दूध उठाया जाता है जो २५० मन से ऊपर होगा। उसकी कीमत सालाना करीब २० लाख रुपये हाती है। यदि भली प्रकार से सारे क्षेत्र का दूध इकट्ठा किया जाय तो केवल दूध की आम्द २ करोड से कम नही होगी। इसके अलावा बल और खाद की आमद और जुडेगी। बीकानेर की तरह ही अन्य जिला म भी पशुपालन से आमदनी हो सकती है।

राजस्थान के गोधन विकास के लिए पहली आवश्यक्ता है पीने के पानी की पर्याप्त व्यवस्था। बीकानेर क्षेत्र की कुछ गायो को तो केवल पानी पीने के लिए ८-१० मील तक चलना पडता है। उन गायो को दो या तीन दिन मे एक बार पानी मिलता है। दाना देने का रिवाज ही कम है, केवल घास पर पलती हैं। दिल्ली दूध योजना ने दूध खरीदने की कुछ व्यवस्था की तो लोग अपने आप गायो को दाना खिलाने लगे और देखते दखते दूध बढ गया। जहा २०० मन दूध होना कठिन मालूम हाना था वहा आज २००० (दो हजार) मन दूध होने की सम्भावनायें प्रकट हो गई। दूसरी बात चारे की है। बहुत सारा क्षेत्र ऐसा पडा है जहा पर कोई भी अच्छी घास पदा नही हाती है। उस जमीन पर अच्छा चारा उगाया जा सकता है। गुवार की फसल भी अधिक हो सकती है। पशुओं का जो दाना उद्योगों के निमित्त जाता है उसे रोकने की जरूरत है।

नस्ल-सुधार की दृष्टि से काफी काम की गु जाइश है। देश की वढिया से-वढिया नस्लें हरियाणा, गीर, राठी, काकरेज, मेवाती, नागौरी, मालवी, थारपारकर आदि इस प्रान्त मे हैं। भोंगोल नस्ल छोडकर देश की ऐसी कोई सर्वांगी नस्ल नहीं है जो राजस्थान मे नही हो। यह आवश्यक है कि यहा जो भी नस्ल सुधार की नीति हो वह सर्वांगी विकास की नीति हो यानी गायो के बछडे खेती के लायक हो और बछडियाँ अच्छा दूध देने वाली हो। दोना ही पशु काम लायक हो। बेकार पशुओ का उत्पादन कम से कम होगा तभी सम्पूर्ण गोवध बन्दी की नीति सफल रह सकती है।

मुझे यह कहते हुए बहुत हर्ष होता है कि सरकारी प्रयत्न के साथ साथ गर सरकारी प्रयत्न भी यहा हो रहे हैं। गोशालाओ की सख्या राजस्थान मे सर्वाधिक ही होगी। अनेक गोशालाएँ सम्वधन की ओर बढ रही हैं सबसे बडा सहयोग राजस्थान गोसेवा सघ का मिल रहा है। जबसे श्री ढवर भाई ने गोसेवा का काय सम्भाला है और सव-सेवा-सघ कृषि गोसेवा समिति के अध्यक्ष बने हैं तब से गोसेवा का देश भर मे चालना मिली है राजस्थान को विशेषरूप से उनकी प्रेरणा मिल रही है। जयपुर दूध योजना मे केवल गाय का ही दूध लेने का जो सकल्प किया गया है, यह भी उन्ही की प्रेरणा है। उन्ही की प्रेरणा से राजस्थान गोसेवा सघ पूरी ताकत के साथ इस काय को सफल बनाने मे जुटा है। जयपुर दूध योजना मे केवल गाय ही का दूध लेने का निश्चय किया गया था, उस समय ५० मन भी गो-दुग्ध मिलना कठिन था, आज जयपुर के आसपास ही १५० मन के करीब गोदुग्ध होने लगा है, ७५ मन गोदुग्ध बीकानेर से आ जाता है। इस प्रकार जयपुर शहर को काफी मात्रा म गोदुग्ध मिलने लगा है। बचे गोदुग्ध का घी भी बनाया जाता है आज ५० मन गोघृत जयपुर डेरी के पास हो गया है। घी की माग भी काफी बढ रही है।

इस सारे अनुभव का एक ही सार है कि दृढ सकल्प करके २० २५ वष तक सर्वांगी नस्ल को विकसित करने की निश्चित नीति अपनावें और पूरी शक्ति के साथ गो विकास का काम करें तो कम-से-कम पू जी म अधिक-से अधिक उत्पादन इस गाय से होगा एव उसका सानी कोई नही रह सकेगा। यही गाय राजस्थान के लिए कामधेनु साबित होगी।

मैं चाहता हूँ कि सरकारी, गर सरकारी हम सब मिलकर एक बार गोसम्वर्धन मे पूरी शक्ति लगावें और गाय की खूबियाँ आजमावें।●

> गाय कहू या तुमको धाय ?
> आर्य आबाल वृद्ध हम सबकी जीवन भर की धाय,
> घर की नहीं खेत की भी तू सबकी एक सहाय।
> न्योछावर है उस पशुता पर यह नरता निरुपाय,
> आ, हम दोनों आज पुकारें-कहाँ कन्हैया हाय!
>
> —राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

एम० एल० धोंकरिया

# होटल, हलवाई उद्योग

सन् १९४९ मे राजस्थान म निर्माण के बाद होटल व हलवाई उद्योग भी एक अच्छा उद्योग सिद्ध हुआ है। राजस्थान मे यह उद्योग अब केवल प्रान्तीय न रहकर अन्तर प्रान्तीय और अन्तर्राष्ट्रीय रूप ले चुका है। वष मे पर्याप्त विदेशी मुद्रा भी इस उद्योग से अर्जित होती हैं। स्वतन्त्रता से पूव होटल-हलवाईयों का महत्व केवल स्थानीय ही होता था। प्रान्तीय भी नही इस धन्धे का देश के विकास से कोई सम्बन्ध नही था।

## सगठन का प्रादुर्भाव —

सन् १९५० म प्रान्तीय स्तर पर पाक कला के विकास एव इसकी समस्याओ के समाधान हेतु इकाईयाँ एकत्र हुई। यह सगठन था अखिल राजस्थान-श्री हलवाई सघ। आवश्यकतानुसार सन् १९६० मे इसका पुनगठन हुआ और अब राज्य के २९३ नगर–उपनगरो से इस सघ का सम्बन्ध है। सन् १९६१ मे सघ का वार्षिक सम्मेलन अजमेर म हुआ, जिसका उद्घाटन तत्कालीन वित्त मत्री श्री हरिभाऊ उपाध्याय ने किया था।

## प्रान्त के सर्वांगीण विकास मे योग —

कई देशा म राजस्थानी मिठाई की बहुत माग है। बीकानेर के रसगुल्ले तथा जयपुर की कुछ मिठाईयाँ काफी तादाद म विदेशो को जाती हैं। यदि निर्यात की समुचित व्यवस्था हो तो इससे देश का आर्थिक लाभ तो होगा ही साथ ही राजस्थानी (भारतीय) पाक कला की छाप विदेशो पर पडेगी। साधारण से उपकरणो से काम चल जाता है। काम करने वालो को सिखाने म भी, अधिक व्यय नही करना पडता है। अन्य उद्योगो के समान इसम भी कच्चे माल की व स्थानीयता की समस्या है।

यह खुशी की बात है, कि राजस्थान सरकार इस उद्योग को प्रोत्साहन दे रही है। होटल खोलने के लिये राजस्थान सरकार ऋण देती है। चीनी कोयला आटा, आदि सामान की उपलब्धि म भी पूरा सहयोग सरकार से मिलता रहता है। आशा यही है कि भविष्य म यह उद्योग अधिकाधिक विकसित हो कर राज्य की अथ व्यवस्था को सुधारने म सहायक होगा। ●

# समाज कल्याण और जन सहयोग

आगामी १५ अगस्त को स्वतन्त्रता प्राप्त किए हमे १६ साल पूरे होंगे । जो बात एक समय स्वप्न जान पडती थी वह साकार होकर प्रौढत्व की ओर बढ रही है । शिक्षा, स्वास्थ्य, सिंचाई, कृषि और अन्य विकास कार्यों मे हमने आगे कदम बढाया है, नदी घाटी योजनाओ मे कुछ पूर्ण हुई है और कुछ पूर्णता की ओर अग्रसर है । पिछडे और कमजोर वर्गों के कल्याण कार्यों को भी भुलाया नही गया है । हा यह अवश्य है कि हमारे सभी मनोरथ अभी पूरे नही हो पाये हैं । देश मे मगलकारी राज्य का पूर्णोदय अभी बाकी है । किन्तु १६ वी स्वतन्त्रता जयन्ती की घडी मे हम अतीत के वर्ष के लेखे-जोखे को सन्तोष और गौरव के साथ देख सकते हैं । जो कार्य सैकडो वर्ष मे नहीं हुए वे स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात हुए हैं और उसके लिए हमारे कर्णधार अभिनन्दन के पात्र हैं ।

राजस्थान मे भी देश के अन्य भागो की तरह सदियो के अभाव अभियोगो को दूर करने और लोगो की सुख-समृद्धि बढाने के लिए योजनाबद्ध प्रयत्न किए जा रहे हैं । जन तान्त्रिक पद्धति से सबको सामाजिक न्याय उपलब्ध कराने, शोषण व असमानता का अन्त करने के प्रयत्न किए जा रहे है जो मोटे तौर से सामाजिक कल्याण के विस्तृत दायरे में आते हैं ।

हमारी योजना मे आर्थिक पहलू पर ध्यान देने के साथ अनुसूचित जाति, जन जाति विमुक्त जाति, घुमन्तु जाति, असहाय महिलाओ और बच्चो, भिखारियो, अपराधियो, बाधितो आदि कमजोर वर्गों के कल्याण कार्यों के लिए भी सरकार ने काफी जिम्मेदारी ली है । प्रथम पचवर्षीय योजना काल मे विकास कार्यों की केवल बुनियाद रखना सम्भव हो सका है द्वितीय पचवर्षीय योजना काल के प्रारम्भ से हम तेज गति से निरन्तर आगे बढते रहे हैं । एक ओर सरकार देश आगे बढाने के लिए प्रयत्नशील है, और दूसरी ओर विभिन्न स्थानो पर अनैतिकता, भ्रष्टाचार, विषमता, द्वेष, अन्याय की शिकायत आती रहती हैं । इन सबका मूल कारण स्वार्थ एव अहभाव है । जिस प्रकार श्रीकृष्ण, भगवान रामचन्द्र, महात्मा बुद्ध ने मानवता के कष्टो से व्याकुल होकर कष्टो को दूर किया था । क्या हम उनसे कोई सबक नही ले सकते ? क्या हम भी अपने आसपास अभावो, कष्टो तथा दुखो से और अत्याचार से पीडित प्राणियो की सहायता नही कर सकते ?

हम काई भी घधा करते हा समाज की विपमता, अनानना और अभाव का दूर करने म कुछ न कुछ याग दे ही सकते है।

हमारे सविधान मे सब लोगो को समान अधिकार प्राप्त है, किन्तु समता और बन्धुत्व का यह सदेश हम घर घर पहुँचाना है। गाधीजी न रचनात्मक काय द्वारा विभिन्न लक्ष्य स्थापित किये थे। उनके द्वारा सिखाये हुये सर्वोदय सिद्धान्त का हम पूरा पालन करें तो समाज मे सच्ची समता और सौहाद्र उत्पन्न हो सकेगा। आइये यह विचार करें कि किस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति समाज कल्याण-कार्यो मे अपना योग दे सकता है और इसका प्रारम्भ कैसे करें।

सर्वोदय का मूल-मत्र यह है कि समाज म जो सबसे अधिक शोपित और पीडित वग है उसको भी कल्याण के पूरे अवसर उपलब्ध कराये जायें। अब तक शक्तिशाली लागो के हित साधन के लिये कमजोर वर्गों का शोपण होता रहा है। अत समाज सेवका को अपना काय ऐसे लोगा के बीच प्रारम्भ करना चाहिये जो समाज मे अधिक से अधिक दुखी और दरिद्र हा। जसा कि महात्मा गाधी ने बताया है सर्वोदय समाज की स्थापना के लिये हमे साधन सम्पन्न लोगो से इर्षा नही करना है किन्तु सेवा का श्रीगणेश निम्न स्तर से होना चाहिये। इस सम्बन्ध म एक प्रश्न के उत्तर मे गाधीजी ने बताया कि जो लोग समथ है, सुशिक्षित हैं, अपनी देखभाल कर सकते हैं उन्हे दूसरो को सहारा देना चाहिये। दबे हुए लोगो को सहारा देना, उपर उठाना है, जिससे वे समृद्ध और समथ बन सकें।

कमजोरो की शीघ्र से शीघ्र सेवा हम भूमिहीना को भूमि देकर कर सकते है। गरीब और दबे हुए लोगो की कष्ट से मुक्ति के लिये खादी ग्रामोद्योग तथा अन्य जन सेवायें सगठित की जानी चाहिये। इस प्रकार आर्थिक सामथ्य प्राप्त करने पर परस्पर समता के आधार पर बन्धुता भी बढेगी।

ईर्षा और घृणा के कारण आज हमारा सामाजिक जीवन विषाक्त हो गया है। अत हम जात-पांत व छूआछूत के दानव का सहार करने के लिये कटि-बद्ध होना चाहिये। अन्तर्प्रान्तीय विवाहो को प्रोत्साहन देना चाहिये। कुछ भी न कर सकें तो कम स कम इतना तो कर ही सकते है कि सामाजिक सावजनिक एव शासकीय जीवन म जातिवाद का आश्रय न दें। ●

दीपक प्रतिपल जला करता है, यही उसका जीवन है, यदि तुम जीना चाहते हो तो तुम्हें भी प्रतिक्षण मरना होगा।

—स्वामी विवेकानन्द

आशा शर्मा

# उपेक्षित महिलाये और अभागे बच्चे

महिलाओ ने हमारे सामाजिक जीवन को उन्नत करने मे महत्व पूर्ण योग दिया है किन्तु कुछ वर्षों से
उनकी सामाजिक स्थिति गिरती जा रही है। विधवाओ की दयनीय स्थिति, बाल विवाह, व बहुपत्नी प्रथा
बहनो के नतिक पतन के लिये जिम्मेदार है। वयस्क लडकियाँ जिन्हे समुचित नतिक शिक्षा नही मिलती है, वे
भी विलासी भेडियो की शिकार बन जाती हैं।

इन बुराईया को समाज से दूर करने के लिये भारत सरकार ने १९५६ से सप्रेशन आफ
इममोरलट्राफिक एक्ट पास किया जो मई १९५९ स समस्त राज्यो म लागू किया गया है। इस कानून के
अन्तगत ऐसी महिलाओ और उनके बच्चा की देख रेख के लिये जयपुर म एक महिला सदन, अजमेर म उत्तर
रक्षा गृह और जोधपुर, कोटा, उदयपुर, धौलपुर और जयपुर मे रक्षा गृह चलाये जा रहे हैं। इन सस्थाओ का
उद्देश्य इस रोग की चिकित्सा और रोकथाम करना है। इनमे अनतिक व्यापार के अड्डो मे मुक्त लडकियो
गभवती विधवाओ व कुमारिया को तथा माग भटकी और घर से तग होकर निकल पडने वाली बहनो को
प्रवश दिया जाता है। अनेक महिलाओ को मेल-जोल कराने के पश्चात उनके पतियो और पिताओ के सपुर्द
कर दिया गया है बहुत-सी महिलाओ की उनकी इच्छानुसार शादी करदी गई है और कइया को लाभदायी
धधो म लगा दिया गया है। इन सस्थाओ म गभवती महिलाओ व प्रवासिनिया के साथ आने वाले बच्चा की
देखभाल और शिक्षा की भी समुचित व्यवस्था की जाती है।

नारी के पुनस्थापना का सबसे अच्छा तरीका विवाह समझा गया है। शादी के पश्चात भी इन
बहिनों मे सम्पक रखा जाता है जिससे ज्ञात होता कि वह सफल गृहणी सिद्ध हुई हैं और उनका विवाहित
जीवन आनन्द से बीत रहा है। यह हष का विषय है कि सदिया की रूढियाँ, कुरितियाँ और सामाजिक बधन
शिथिल हो रहे है और साहसी युवक इन बहिनो का जीवन साथी बनाने लिय आगे आ रहे है। केवल
जयपुर महिला सदन में ही १४ विवाह सम्पन्न हुये हैं। किन्तु नारी का आत्म गौरव तो नारी के अपने
प्रयत्न से ही समव है। विधान द्वारा समान दर्जा दिये जाने पर भी नारी के प्रति आदर की भावना नही के
बराबर है। इस दयनीय स्थिति के विरुद्ध समूची नारी जातिको सगठित होकर यह प्रयत्न करना चाहिए।
बहनें यह सकल्प करें कि समाज को असभ्यता से सभ्यता की ओर तथा अविवेक से विवेक की ओर ले
जाने की भरसक कोशिश करेंगी तो अपना उचित स्थान प्राप्त कर सकेंगी। ●

प्रेम शकर शर्मा

# आयुर्वेद

आयुर्वेद चिकित्सा के बारे मे वदिक काल स लेकर अब तक प्राप्त होने वाले चिकित्सा सम्बन्धी साहित्य मे समय समय पर पर्याप्त प्रकाश डाला गया है। जीवन-रक्षा क लिए ससार का सबसे उत्तम पदार्थ अमृत माना गया है। "(आयुर्वेदोऽमृतानाम्)" महर्षि चरक के इस वाक्य से भी यह स्पष्ट है कि अमृत के समान काम करने वाली समस्त चिकित्सा प्रणालियो मे आयुर्वेद चिकित्सा प्रणाली सर्व साधारण को स्थायी लाभ पहुँचाने म समय मानी गई।

इस चिकित्सा विज्ञान के द्वारा ही यूनानी चिकित्सा का रूपान्तर हुआ है। ऐलोपथी, होम्योपैथी, नेचरोपथी आदि चिकित्सा पद्धतियो ने भी आयुर्वेद चिकित्सा विज्ञान स बहुत कुछ लिया है बल्कि आधुनिक चिकित्सा विज्ञान (मैडीकल साइन्स) द्वारा आयुर्वेद की प्लास्टिक सर्जरी को ज्यो का त्यो लेकर उसका नाम इण्डियन सिस्टम (प्लास्टिक सर्जरी) कहने म आज भी कोई सकोच नही करते। इससे यह स्पष्ट है कि किसी भी चिकित्सा पद्धति का ज्ञान जो जन जीवन के लिए हितकर हो उस ज्ञान को आत्मसात करके भी सभी चिकित्सा विज्ञानो का द्वार खुला हुआ है।

राजस्थान राज्य ने आयुर्वेद चिकित्सा विज्ञान को विकसित करने के लिए सुयोग्य चिकित्सक परिचर्या-दक्षकल्पद (कम्पाउण्डर नर्स) उत्तम द्रव्यो से शास्त्र विधि द्वारा निर्मित औषधियो के निर्माण तथा आतुर शय्याओ की सुव्यवस्था का प्रथम, द्वितीय एव तृतीय योजनाओ म राजस्थान आयुर्वेद विभाग के बजट म उत्तरोत्तर वृद्धि की है। राजस्थान निर्माण के समय आयुर्वेद मद मे १०-११ लाख का बजट था और इस समय १ करोड से भी अधिक वित्तीय प्रावधान आयुर्वेद विकास के लिए राजस्थान मे हो रहा है। निम्नांकित विकास योजनाए आयुर्वेद चिकित्सा विज्ञान के लिए राज्य क आयुर्वेद विभाग द्वारा सफलता सेचलाई जा रही है।

आयुर्वेद विकास योजनाए —

(१) सुयोग्य चिकित्सको को तयार करने के लिए आयुर्वेद महाविद्यालयो का स्टाफ उपकरण भवन आदि सुविधाओ से उन्नत स्तर पर लाया जाकर अष्टाग आयुर्वेद महाविद्यालय क रूप मे परिवर्तित करना।

(२) धात्री और उपवद्यो के प्रायोगिक और सद्धान्तिक ज्ञान के लिए धात्री उपवद्य प्रशिक्षण व्यवस्था।

(३) उत्तम वनस्पतियो और खनिज द्रव्यो का क्रय किया जाकर शास्त्रीय विधियो द्वारा औषधि निमाण के लिए रसायनशालाओ का एकीकरण और उच्चस्तरीयकरण।

(४) शहरी और ग्रामीण जनता को स्वास्थ्य लाभ पहुँचाने के लिए आयुर्वेद यूनानी औषधालयो का खोलना व औषधालय मे आवश्यक स्टाफ की पूर्ति करना।

(५) ग्राम औषधालयो के भवन निमाण के लिए उचित धनराशि देना।

(६) प्राईवेट चिकित्सा सस्थाओ एव शिक्षण सस्थाओ को आर्थिक सहायता देना।

(७) आयुर्वेद महाविद्यालयो के अन्तगत अनुसधान योजनाओ को सफल बनाना।

उक्त योजनाए सफलता के साथ प्रगति के चरणों पर आश्रित हैं। राजस्थान सरकार ने चतुथ पच-वर्षीय योजना मे १ करोड ७५ लाख की आयुर्वेद विकास योजना बनाई है। इस तरह से राजस्थान म आयुर्वेद योजनाओ को पूण सफल बनाने के लिए राज्य मे सचालकालय की पृथक स्थापना एव पृथक आयुर्वेद मत्रालय स्थापित कर अधिक विकास की ओर ले जाने का दृष्टिकोण सरकार न अपनाया है।

राजस्थान निर्माण के पूव राजकीय स्तर पर जयपुर और उदयपुर मे दो आयुर्वेद महाविद्यालय आचार्य तक की कक्षा के चालू थे तथा ५ आयुर्वेद महाविद्यालय भिपग्वर के चालू थे। उदयपुर आयुर्वेद कालेज का बजट २१,७०० और जयपुर आयुर्वेद का बजट १०२ ३०० था और कुल मिलाकर लगभग २०० छात्र पढते थे।

सन् १६५१ में जब द्वितीय पचवर्षीय योजना प्रारम्भ हुई तब से आयुर्वेद शिक्षा का बजट द्वितीय एव तृतीय पचवर्षीय योजनाओ म ७५ लाख तक स्वीकृत हुआ। इसके अन्तगत दोना आयुर्वेद महाविद्यालयो म सौ सौ रोगी शय्याओं की व्यवस्था के साथ साधन सम्पन्न प्रयोगशालाओ आवश्यक साधनो एव उपकरणो की पूर्ति कर अष्टाग आयुर्वेद कालेज के रूप म परिवर्तित किये गये। जयपुर आयुर्वेद कालेज का भवन द्वितीय बनाया गया और पडित मदन मोहन मालवीय राजकीय आयुर्वेद महाविद्यालय उदयपुर का भवन परिपूर्ण होने को है।

द्वितीय और तृतीय योजनाओं मे १०० स्नातक प्रतिवष तयार करने का लक्ष्य है।

वर्तमान मे दो राजकीय आयुर्वेद महाविद्यालय एव ६ अन्य स्वतन्त्र आयुर्वेद महाविद्यालय हैं। सरदार शहर का आयुर्वेद महाविद्यालय भी भिषगाचाय तक मान्यता प्राप्त है। कुल आठ आयुर्वेद महाविद्यालयो मे करीब १००० छात्र हैं जिनम मे ५०० छात्र दोनो राजकीय आयुर्वेद महाविद्यालयो मे एव ५०० अन्य सभी प्राईवेट सस्थाओं मे पढ रहे हैं द्वितीय श्रेणी होने वाले सुयोग्य छात्रों का योग्यता एव आवश्यक छात्रवृत्ति के रूप म भिषगाचाय को ५० रु० मासिक एव भिषग्वर म ३० रु० मासिक छात्रवृत्ति सरकार की ओर से दी जाती है।

**वद्यों का प्रशिक्षण (रिफ्रेशस कोर्स) —**

विभाग म वाछित योग्यता के अभाव वाल वैद्यो को उचित सद्धान्तिक एव प्रायोगिक शिक्षण के लिए १ वष का प्रत्यास्मरण पाठ्यक्रम (रिफ्रेशस कोस) विभाग द्वारा मान्यता प्राप्त विश्व भारती आयुर्वेद महा-

विद्यालय सरदार शहर मे चालू है, जिसमे २५ वैद्यो को प्रतिवर्ष भेजा जाता है अब तक करीब १५० वद्यो ने प्रशिक्षण प्राप्त कर लिया है ।

उपवैद्य धात्री प्रशिक्षण —

जयपुर और उदयपुर राजकीय आयुर्वेद महाविद्यालयों म दो धात्री उपवद्य प्रशिक्षण केन्द्र चालू हैं। जिसमे ६० ६० विभागीय उपवैद्य धात्रियो को राजकीय व्यय पर १ वर्ष का प्रशिक्षण दिया जाना है और प्रत्येक केन्द्र मे १०-१० धात्रियो को ४० रु० मासिक छात्रवृत्ति प्रशिक्षित धात्रियो की कमीपूर्ति की जाती है । १ वर्ष का पाठ्यक्रम राज्य सरकार द्वारा स्वीकृत है ।

इस तरह आयुर्वेद शिक्षण और प्रशिक्षण स सुव्यवस्थित राज्य के आयुर्वेद चिकित्सालयो म प्रशिक्षित स्टाफ से चिकित्सा एव स्वास्थ्य सेवाए उत्तरोत्तर समृद्ध होती जा रही है ।

शिक्षा सस्थाओ को आर्थिक अनुदान —

प्राइवेट सस्थाओ को भिषगाचार्य, भिषग्वर तक शिक्षा के लिए आवश्यक स्टाफ और उपकरण व्यवस्थार्थ भिषगाचार्य तक मान्यता प्राप्त महाविद्यालय को ७५ प्रतिशत व भिषग्वर मान्यता प्राप्त महा विद्यालयो को ५० प्रतिशत तक सहायता की जाती है इस वक्त महाविद्यालयो को दी जाने वाली सहायता १ लाख २ हजार है । छात्रा म पारस्परिक स्वास्थ्य एव आयुर्वेद विज्ञान आदि के विचार विनिमय के लिए वाद विवाद प्रतियोगिता के साथ अन्तर प्रादेशिक क्रीडा प्रतियोगिता का कार्यक्रम प्रति वर्ष रखा जाता है ।

औषध निर्माण —

राज्य द्वारा गठित स्टोर पर्चेज कमेटी के तत्वावधान में उत्तम नमूने के अनुसार निम्नतम मूल्य मे टेण्डर प्रथा से औषध क्रय करने की व्यवस्था है । अजमेर और उदयपुर में दो बडी रसायनशालाएँ हैं जिनमे ४ मे ५ लाख तक की कच्ची औषधियो का क्रय करके औषधियो का निर्माण किया जाता है, सभी निर्माण शास्त्रीय विधि मे यान्त्रिक और देशी साधनो स किया जाता है ।

चिकित्सा व्यवस्था —

प्रत्येक जिला हैडक्वाटर पर अ श्रेणी का औषधालय खोलने की व्यवस्था तथा १४००० की जनसख्या पर एक ग्राम औषधालय और पिछडे क्षेत्रो मे ८,००० की जनसख्या पर एक औषधालय की क्षति पूर्ति तृतीय पचवर्षीय योजना तक हो जावेगी । राज्य मे इस समय आयुर्वेद, यूनानी होम्योपथी के अ' श्रेणी की सख्या १८ है और 'ब श्रेणी के औषधालयो की सख्या १३० है और स श्रेणी के १३५२ हैं । यानी कुल १५०० औषधालय चल रहे हैं ।

औषधालय भवन व्यवस्था —

राज्य द्वारा दी जाने वाली आर्थिक सहायता से ८० भवन बने हैं तथा केवल जनता की आर्थिक सहायता एव श्रमदान से बनने वाले औषधालयो की सख्या ७०० हैं, जिनकी लागत लगभग ६० ७० लाख की हैं।

प्रतिवर्ष चिकित्सा से लाभ उठाने वाले रोगियो की सख्या लगभग १ करोड वार्षिक नवीन पुरातन मिलाकर है।

चिकित्सा शिविर —

चिकित्सा अभाव ग्रस्त क्षेत्रो मे समय-समय पर इन्फ्लूएजा, महामारी फैलने तथा सार्वजनिक मेलो व पशु मेलो के अवसर पर विभाग द्वारा चिकित्सा शिविर आयोजित किये जाते हैं एव प्रदर्शनिया भी लगाई जाती हैं जिससे जन साधारण को स्वस्थ रहने एव खान-पान के नियमों से अवगत कराया जाता है। डूगरपुर आदि नाहरू ग्रस्त क्षेत्रो मे स्नायुक चिकित्सा शिविर भी अनेक बार आयोजित किये गये हैं चिकित्सा अभाव ग्रस्त क्षेत्रों मे प्राइवेट चिकित्सा सस्थाओ को ५० प्रतिशत तक आर्थिक सहायता दी जाती है। इस समय दी जाने वाली सहायता की राशि १,४८,००० रु० है। चिकित्सा पर होने वाला व्यय अग्रिम वर्ष का १,०७ ८२,००० रु० होगा जब कि वर्तमान मे ६० ७६,००० रु० है।

अनुसधान —

क्लिनीकल रिसर्च के लिए राजस्थान मे जयपुर आयुर्वेद कालेज के अन्तर्गत सग्रहणी, अम्लपित्त मधुमेह तथा त्वचा रोग मर एव उदयपुर आयुर्वेद कालेज के अन्तर्गत बाल पक्षाघात (पोलियो) और स्नायुक (सिनीवम) रोगों की चिकित्सा पर अनुसधान कार्य प्रचलित है और सकडो रोगियों को लाभ हुआ है। उत्तोत्तर यह अनुसधान कार्य सतोषजनक स्थिति की ओर बढ रहा है। दोनो अनुसधान केन्द्रो का बजट २ लाख वार्षिक है।

यह व्यक्त करना अनुपयुक्त नही होगा कि चतुर्थ पचवर्षीय योजना के अन्तर्गत राजस्थान मे आयुर्वेद चिकित्सा द्वारा अधिकाधिक चिकित्सा सुविधाएँ सुयोग्य व क्रिया कुशल चिकित्सको द्वारा पहुँचाई जा सकेंगी।●

> आसान और शानदार रास्ता यह नहीं है कि हम दूसरों की हत्या करके अपने को सुरक्षित समझें। आसान और शानदार रास्ता यह है कि दूसरों की रक्षा करके अपने को रक्षित समझें।
>
> —सुकरात

परमानन्द शर्मा

# राजस्थान में समाज कल्याण कार्यों की प्रगति

अन्य विकास कार्यों की भांति राजस्थान मे समाज कल्याण के कार्यों का भी स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद काफी विकास हुआ है। इस दिशा मे अभी बहुत कुछ करना शेष है और कठिनाइया भी अनेक हैं, किन्तु जो काय हुए हैं, वे उत्साहवद्धक और सतोपजनक हैं। सदियो पुरानी राष्ट्रव्यापी सभी समास्याएं कुछ ही वर्षों म हल करना समव नही है। इनके पूण निराकरण करने म समय लगना स्वाभाविक है। इस क्षेत्र में हुई प्रगति का सही मूल्याकन करने के लिए यह आवश्यक है कि स्वतन्त्रता के पूव की स्थिति की ओर नजर डालें और उस स्थिति की तुलना वतमान स्थिति से करें तब कुछ तुलनात्मक जानकारी प्राप्त हो सकेगी।

राजस्थान मे समाज-कल्याण-सेवाएं दो प्रकार की हैं। प्रथम श्रेणी मे निराश्रित और पतित महिलाओ अनाथ अन्धे, लूले लँगडे, बहरे, गूंगे, बालका, अपराधिया और भिखारियो के कल्याण काय सम्मिलित हैं।

द्वितीय श्रेणी में ऐसे वर्गों के पुनरोत्थान के कार्य आते हैं जो सदिया के शोषण और उत्पीडन के फलस्वरूप पिछडे हुए रहे हैं। इनमे जगलो और पहाडो मे बसने वाली आदिवासी जातिया अनुसूचित जातियो वश-परम्परा के आधार पर अपराधी समभी जाने वाली विमुक्त जातियो और वे घर-बार घुमन्तु जीवन व्यतीत करने वाली जातियो के कल्याण-काय सम्मिलित हैं। सदियो की उपेक्षा के कारण ये वग आर्थिक, शैक्षणिक और सामाजिक दृष्टिकोण से बहुत ही पिछडे हुए हैं। इन लोगा को स्वतन्त्र राष्ट्र के अनुरुप नये उन्नत और सम्मानित जीवन की सुविधाए उपलब्ध कराना है।

राजस्थान की कुल जनसख्या सन् ६१ की जन गणना के अनुसार लगभग दो करोड है। इनमे से अनुसूचित जाति के ३३ लाख अनुसूचित जन जाति के २३ लाख लोग हैं जो कुल आबादी का चौथाई भाग है। इनमे विमुक्त जाति घुमन्तु जाति और अन्य पिछडे वर्गों की आबादी सम्मिलित की जावे तो ज्ञात होगा कि राजस्थान की कुल जनसख्या म से ५० प्रतिशत लोग पिछडे वर्गों के हैं। विभिन्न परिस्थितिया के कारण इन वर्गों की समस्याए भी विभिन्न हैं। अत उनके हल के लिए तदनुरुप अलग अलग योजनाए कार्यान्वित की जा रही हैं।

अनुसूचित जन जातिया —

राजस्थान म अनुसूचित जन जातिया मे भील, मीणे डामोर, डामोरिया गरासिया और सहरिया है। जिनका सामाजिक और आर्थिक स्तर भिन्न भिन्न है। वैसे अनुसूचित जन-जातियो की आबादी प्राय राजस्थान के सभी भागा मे पायी जाती है। किन्तु डूगरपुर, बासवाडा जिले और चित्तौडगढ जिले की प्रतापगढ़ तहसील म भीलो की आबादी घनी है। अत इस क्षेत्र म सघन विकास के द्वारा इसे समीपवर्ती उन्नत क्षेत्र के बराबर लाने के लिए अनुसूचित क्षेत्र घोषित किया गया है।

अनुसूचित जन-जातिया की मुख्य समस्या आर्थिक है। इनके विकास की मुख्य योजनाए आर्थिक, शैक्षणिक, यातायात, स्वास्थ्य और आवास सुविधाए जुटाने सम्बन्धी हैं।

अनुसूचित जन-जातियो की शैक्षणिक योजनाओ म छात्रवृत्तिया प्रदान करना, प्राथमिक तथा बुनियादी स्कूल, आश्रम स्कूल चलाना मुख्य हैं। अनुसूचित जन-जातियो की शैक्षणिक याजनाओ पर राज्य योजनाओ और केन्द्रीय अनुदान से सचालित योजनाओ के अन्तगत तीसरी योजना के अन्त तक लगभग ५२ ३७ लाख रुपये व्यय होने को थे। इनमे जो लक्ष्य प्राप्त हुए है उनम उल्लेखनीय ६७४ मट्रिक से ऊपर उच्च शिक्षा और ४१,६८३ अन्य छात्रा को छात्रवृतिया प्रदान करना, ४२ नि शुल्क छात्रावास चलाना, ४ आश्रम स्कूल चलाना और प्राथमिक स्कूला को छात्रावासो के लिये स्वय सेवी सस्थाओ को अनुदान देना मुख्य है।

तृतीय पचवर्षीय योजना-काल के अन्त तक अनुसूचित जन जातियो के आर्थिक विकास पर राज्य योजना व केन्द्रीय योजनाओ द्वारा १७ लाख रुपये व्यय होने का लक्ष्य था।

इस धनराशि से २०५ तालाबा और बांधा का निर्माण, ७८० परिवारो को सिंचाई के कुओ के लिए अनुदान, ७६८ परिवारों को कृषि-भूमि पर पुन सस्थापन करना, पिछडे हुए आदिवासी क्षेत्रो मे सघन विकास के लिए १३ आदिवासी विकास खण्ड एव एक बहुउद्देशीय विकास खण्ड का सचालन किया जाना था। आदिवासिया के आर्थिक स्तर को उन्नत करने म उनके लिए कार्यान्वित पुन सस्थापन काय का बडा महत्व है। जिसके अन्तगत उन्हे नि शुल्क कृषि, मकान बनाने के लिए जमीन और बैलो और कृषि के लिए औजारो और सिंचाई सुविधाओ के लिए अनुदान दिया जाता है।

अनुसूचित जातिया —

अनुसूचित जातियो की प्रमुख समस्या अस्पृश्यता निवारण की है। हमारे सविधान म अस्पृश्यता निषध है। अब अनुसूचित जातिया को भी सावजनिक मन्दिरो, कुओ जलाशयो दुकाना और होटला आदि का उपयोग करने का समान अधिकार प्राप्त है।

कानून से अपराध घोषित अस्पृश्यता आज भी कई रूपा म प्रकट होती है। अत इसका जड से नाश करने के लिए बहुमुखी प्रयत्न करने होगे। अनुसूचित जातियो के सामाजिक व शैक्षणिक विकास के लिए राज्य के विभिन्न भागो म सास्कृतिक केन्द्र भी चलाये जा रहे है। इस काल म राज्य-योजना व केन्द्रीय योजनाओ के अन्तगत उनके लिए सचालित शैक्षणिक योजनाओ पर ५५ १० लाख रुपया व्यय होगा।

अनुसूचित जातिया के लोग आबादी से दूर गदी बस्तियो म रहते जा रहे हैं। उन्ह साफ सुथरे मकान उपलब्ध कराने के योग्य अनुदान दिया जाता है। महतरो की काय प्रणाली मे भी सुधार किय जा रहे हैं।

अनुसूचित जातिया के ८३२ परिवारों को अच्छी भूमि पर बसाया जायेगा। २४३ पानी के कुआ के लिए और १२४ परिवारा को कुटीर उद्योग के लिये अनुदान दिया जायेगा।

मेहतरो और अय अस्वास्थ्यप्रद धन्धा मे लगे लोगा की काय-प्रणाली म सुधार करने के लिये २०४ नगरपालिकाओ को अनुदान दिया गया और २,५६० मेहतरों को गृह निर्माण के लिये सहायता दी गयी।

इस प्रकार अनुसूचित जातियो की आर्थिक, स्वास्थ्य व मकान सहायता सम्बन्धी योजनाओ पर ४२ ०७ लाख रुपये व्यय होंगे।

पिछडे वर्गों को उन्नत आर्थिक धन्धे उपलब्ध कराने के लिये प्रशिक्षण-केन्द्र चलाये जा रहे हैं। इनमे प्रशिक्षार्थियो को १५ रुपये माहवार वृत्ति दी जाती है और प्रशिक्षण के पश्चात स्वतन्त्र रूप से उद्योग धन्धे चलाने के लिये आवश्यक यन्त्र व कच्चा माल खरीदने के लिय एक मुश्त सहायता दी जाती है। आई० टी० आई० केन्द्रो मे भी अनुसूचित जातियो के लिय १२ प्रतिशत व अनुसूचित जन-जातिया के लिय ५ प्रतिशत स्थान सुरक्षित हैं। वहा ४५ रुपये प्रति शिक्षार्थी को माहवार वृत्ति दी जाती है। इनके अतिरिक्त-वेटिनरी आदि टेकनिकल कालेजो मे भी उनके लिये स्थान सुरक्षित हैं।

**विमुक्त जातियां --**

सासी, कजर, नट आदि अनेक जातिया हैं जो जन्म से अपराधी समझी जाती रही है। विशेपज्ञा का यह दृढ मत है कि अपराध जन्मजात नही है, अपराध के सामाजिक व आर्थिक कारण हैं। इन जातिया का अपराधी जीवन व्यतीत करने का कारण यह है कि उन्ह जीविकोपाजन के सम्मानित धन्धे उपलब्ध नहा थे। यह देखा गया है कि सम्मानित रोजगार उपलब्ध होने पर ये लोग शान्ति से रह रहे हैं।

विमुक्त जातियो के पुन सस्थापन के कार्यों मे बच्चो की शिक्षा का बडा महत्व है। उनको घर के दूषित वातावरण के कारण स्कूल मे दी जाने वाली शिक्षा का कोई असर नही होता। अत उनके बच्चो को घर से दूर स्वस्थ वातावरण मे रखने और शिक्षा देने के लिए उनके छात्रा को रेजिडेसियल स्कूलो और छात्रावासो मे रखा जाता है। उनका सब व्यय समाज कल्याण विभाग द्वारा वहन किया जाता है। विमुक्त जातियो के कल्याण-कार्यो पर लगभग २० ०५ लाख रुपये व्यय होगे। इस धनराशि से सचालित प्रवृत्तियो म उनके ३४६० छात्रो को छात्रवृत्तिया देना और १२ छात्रावास खोलना मुख्य है।

इन योजनाओ का मूल्याक इतना शीघ्र करना सम्भव नही है। इस विषय म इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि भावी पीढी अपराधी वृत्तियो से बच गई है।

महिलाओ, बच्चो, अपराधिया, भिखारियो आदि कमजोर वर्गो के कल्याण कार्यो को भी भुलाया नहा गया है। भूली भटकी महिलाओ परित्यक्त पत्नियो, कुवारी और विधवा माताओ के नि शुल्क रहन सहन खान पान और पुन सस्थापन के लिये १ उत्तर रक्षा गृह और ५ जिला-आश्रय गृह चलाये जा रहे है।

जेल से मुक्त अपराधियो के रहन सहन और पुन सस्थापन व्यवस्था के लिये उदयपुर में एक पुरुष उत्तर रक्षागृह और जयपुर और अजमेर में एक जिला रक्षागृह भी चलाया जा रहा है। उनके अतिरिक्त सामाजिक सुरक्षा कायक्रम के अन्तगत ६ जिलों मे बन्दी कल्याण अधिकारी, १६ परिविक्षा अधिकारी काय कर रहे हैं, ब्याज-वस्त्र चलाये जा रहे है और भिक्षुओं के पुन सस्थापन के लिय एक भिक्षुक गृह चलाया जा रहा है।

समाज कल्याण विभाग द्वारा अनाथ बच्चो के रहने और शिक्षा के लिये बीकानेर, जोधपुर, बामवाडा और कोटा मे अनाथालय, अन्धे छात्रों के लिये बीकानेर मे एक गृह चलाये जा रहे हैं।

देहाती क्षेत्रों मे महिलाओं और बच्चो के कल्याण कार्यों के लिये समाज कल्याण बोड का १६ सी० डी० पैटर्न की विस्तार कल्याण योजनाओं और राज्य समाज सेवा सघ को १० मूल पैटन की विस्तार कल्याण योजनाओं के लिए भी समाज कल्याण विभाग द्वारा अनुदान दिया जाता है।

इस प्रकार पिछडे और कमजोर वर्गों के पुनसस्थापन के लिये यथा-सम्भव प्रयत्न किये जा रहे है। किन्तु समस्या के विस्तार का देखते हुए हम अभी तक इसके एक छोर को छू ही पाये हैं। वह दिन भी दूर नही है, जब कि ये वग देश की सामान्य जन शक्ति म घुलमिल कर राष्ट्र को समृद्ध एव शक्तिशाली बनाने मे अपना पूर्ण याग दे सकेंगे। ●

जीवन

नन्ही चिडिया के जब पख आये, तो अपनी मां के साथ वह घोंसले से बाहर निकली। देखा, तो हक्काबक्का हो गयी—कोई अपनी जगह स्थिर नहीं, सब गतिवान। चारों तरफ भागदौड़ और चहल-पहल। चतुर मां चिडिया की उलझन ताड गयी— "यह पहला सबक है, गाठ बांध लो! चलने का नाम ही जीवन है—रुको और चूको हां, फैलाओ पख उस फुनगी तक।

—श्री माताजी

(अरविन्द आश्रम-पांडेचरी)

मोहनलाल सुखाड़िया

# उसूलो की लडाई और राजस्थान का हौसला

हमारे देश की शान्ति की नीति और परम्परा के कारण तथा महात्मा गाधी और प० नेहरू जसे महान् नेताओ की प्रेरणा के अनुसार हम न युद्ध लडना चाहते हैं न दुनिया मे कही युद्ध की बात करते है, हम दुनिया म शान्ति चाहते हैं। हम दूसरो की जमीन लेने के लिये नहीं लड रहे हैं लेकिन यह भी स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि हम दूसरो को भी कभी हमारी जमीन नहीं लेने देंगे।

पाकिस्तान का हमारे देश पर सशस्त्र हमला, एक चुनौती थी, एक परीक्षा थी, यह काश्मीर की लडाई नहीं वरन् सारे देश की लडाई थी। लडाई मुसीबतें और कठिनाइयाँ लाती है। राजस्थान मे भी जोधपुर के लोगो ने मुसीबतें झेली। जोधपुर और आसपास के गाँवो में पाकिस्तान ने एक हजार पौण्ड तक के बम डाले। बाडमेर, गदरा रोड व गगा नगर के गाँवो म पाकिस्तान ने बराबर बमबारी की। परन्तु पाकिस्तान ने देखा कि जनता न डरेगी और न ही झुकेगी। पाकिस्तान हमे डर से नही दबा सकता। हमारी लडाई हमारी स्वतन्त्रता की रक्षा और सार्वभौमिकता को कायम रखने के लिये है। हम जनतन्त्र और धर्मनिरपेक्ष सिद्धान्त पर आधारित इस देश की अखडता के लिये लड रहे थे।

पाकिस्तान को अपनी फौजी ताकत पर बडा घमड था परन्तु उसे पता चल गया कि हिन्दुस्तान क्या है? किसका सिपाही बुजदिल है? हमारी फौज और उसके सिपाहियो की बहादुरी का आज सारी दुनियाँ को पता चल गया है। हमारी यह ताकत शान्ति और एकता की ताकत है, जिसकी बात हिन्दुस्तानी सदा से करता आया है। हम लोगो मे कितनी हिम्मत है और हमारा हौसला कितना बुलन्द है, यह बात जैसलमेर सीमा पर भुट्टो वाली चौकी के रक्षक सिपाहियो ने अपनी बहादुरी का परिचय देकर सिद्ध कर दिया है।

पाकिस्तान द्वारा थोपी गई इस लडाई ने दुनियाँ के सामन एक सवाल पदा कर दिया है। ४५ करोड का यह जनतन्त्र कायम रह सकता है या इसको समाप्त होना है? दुनिया मे जनतन्त्र के भविष्य का फसला ४५ करोड हिन्दुस्तानी करेंगे। हमने किसी मजहब पर हमला नही किया। हमारी लडाई 'उसूलो की लडाई है। अन्य राज्यो की तरह राजस्थान ने भी इस सकट-काल मे अच्छा उदाहरण प्रस्तुत किया। नागरिक सुरक्षा के लिए रात दिन प्रयत्न करते रहे है। मैंने ग्रामीणो को खुद अपने आप बस्तियो का इन्तजाम करते देखा है।●

कलाश दान उज्जवल

# जहाँ बलिदानो की फसल उगती है

सदा रहो आगे सगलो सू,
दवण विवध मात रा दान,
बलिहारी घर शेखा बकी
सीशा सूप जीते समान,

गौरवशाली सैनिक परम्पराओं की दृष्टि से झुंझुनु जिला राजस्थान में ही नहीं सम्पूर्ण भारत में अग्रणी है। यह जिला सचमुच वीर भूमि है। आये दिन यहा सैनिक भर्ती मेले आयोजित होते रहते थे जिनमें विशाल सख्या में नौजवान भरती की कामना लिए उपस्थित होते थे। मेले मे शरीर की नाप चोक के लिए जब सकडो नौनिहाल एक साथ सीना खोल कर खडे होते वह दृश्य देखते ही बनता था। ऐसा लगता था कि जान को जोखिम मे डालना और मातृभूमि की रक्षा के लिए प्राणों की आहुति देना यहां के बहादुर युवकों के लिए खेल है। झुंझुनु के भर्ती कार्यालय पर प्रतिदिन ही झुण्ड के झुण्ड नवयुवक आते रहते थे। उनमे पढे-लिखे अनपढ अर्द्ध-शिक्षित सभी प्रकार के व्यक्ति होते थे। यहां की धरती धन्य है कि इसके लाल जवानी की देहली पर चरण धरते ही भर्ती के स्थान का पता पूछने लगते हैं।

राजस्थान की सीमा को पजाब से मिलाने वाला जिला अंग्रेजी शासन के समय से ही सेना के लिए जवान अर्पित करता रहा है। २३१० वग मील में फले हुए इस जिले में बेरी, मिर, कुहाडवास, नुआ जावासर, वाढो की ढाणी आदि गाव तो बिल्कुल सैनिक गांव हैं जहा प्रत्येक घर से कोई न कोई सेना में है, किन्तु राजपूत, जाट और कायमखानी सनिक, जातियो के रूप में विशेष प्रसिद्ध है। इस समय ३५ हजार व्यक्ति झुंझुनु जिले मे ऐसे है जो या तो सक्रिय सनिक है अथवा सेना से अवकाश प्राप्त कर चुके हैं। यहा

की सख्या म जन्म लेते हैं। यद्यपि यहा वर्षा की कमी के कारण पानी का अभाव रहता है, किन्तु देश की आजादी के रक्षाय अर्पित करने के लिए रक्त की कमी नहीं है।

पाक आक्रमण से नव जाग्रति —

पाक ने जब भारत पर आक्रमण किया तो इस जिले से हजारो की सख्या म नौजवान मातृभूमि की रक्षार्थ सेना म भरती हुए। वयोवृद्ध अवकाश प्राप्त सनिक भी दुबारा अपनी सेवायें भारतीय सेना को अर्पित करने के लिए उद्यत हो गये।

पाक हमले का दृढता से मुकाबला करने के लिए जिले के ग्रामो मे भी उत्साह की अभूतपूव लहर व्याप्त थी। खेतडी पचायत समिति म २०० घरो का भिर नामक एक ग्राम है, जहां के २०० जवान फौज मे तनात हैं तथा १५० भूतपूव सनिक पेंशन पाते हैं। इस गांव के घरो मे बचे हुए १५० नौजवान और पेंशनर सैनिको म से भी ५० व्यक्तियो ने फौज म भरती होने के लिए अपनी सेवायें अर्पित करने का प्रस्ताव किया। समूचा गाव फौज मे भर्ती होने को उद्यत हो उठा।

घायल सनिको के लिए रक्तदान करने के लिए हजारो व्यक्तियो ने अपने नाम दिए।

शहीद सनिक —

मातृभूमि की रक्षार्थ प्राण निछावर करने वालो मे झुझुनु जिले का स्थान राजस्थान में सर्वोपरि है। जनसख्या की दृष्टि से शहीद सनिको का अनुपात समवत भारत भर मे सब से अधिक होगा। इस जिले से २७ सनिको ने युद्ध भूमि मे बहादुरी के साथ लडते हुए वीर गति प्राप्त की। देश की आजादी की रक्षा में अपने प्राणो का उत्सग करने वाले ये शहीद धन्य हैं और धन्य हैं इनकी वीर मातायें जिन्होने ऐसे पराक्रमी पुत्र अपनी कोख से उत्पन्न किये।

प्राणोत्सग करने वाले सनिको की नामावली इस प्रकार है — रामजीलाल, ग्राम थली, हरिसिंह ग्राम गोरीर, नत्थूराम, ग्राम कुसकनी, भगवानसिंह, ग्राम भूरीवास रामस्वरूप, ग्राम जयसिंहपुरा, रामसिंह, ग्राम पचूराना, ढाणी नाडान की ताराचन्द, ग्राम चूना का बास, जुगलाल ग्राम भरडवता, हीरालाल, ग्राम मीमसा मदनसिंह ग्राम दीनवा, गुरुदयाल, ग्राम मनोता।

राज्य सरकार की ओर से इन सनिको के आश्रितो को एक एक हजार नकद रुपये तथा एक एक हजार रुपये के रक्षा पत्र प्रदान किए गए इन्हे खेती के लिए जमीन दिए जाने की भी व्यवस्था है।

वीरता के अलंकार —

झुझुनु जिले के २६ जवान अब तक सेना मे वीरता प्रदर्शित करने के उपलक्ष मे भारत सरकार द्वारा अलकृत किए जा चुके है। बेरी ग्राम के हवलदार मेजर पीरूसिंह को जिन्होने, १९४८ में कश्मीर के तिथवाल मोर्चे पर लडते हुए वीरगति प्राप्त की थी मरणोपरान्त परमवीर चक्र से विभूषित किया गया।

शहीद-स्मारक, जयपुर

शौर्य और
उत्सर्ग के
ये
स्मारक ईंट पत्थर
से
नही, वीरो
के
लहू से बने
हैं।
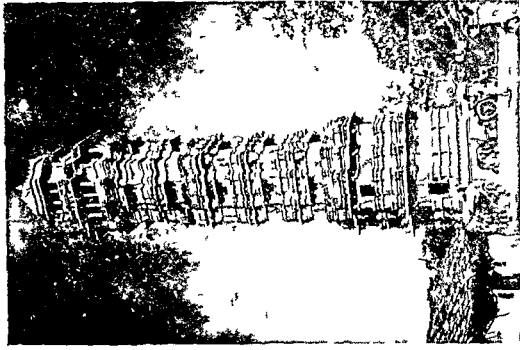
विजय स्तम्भ, चित्तौड
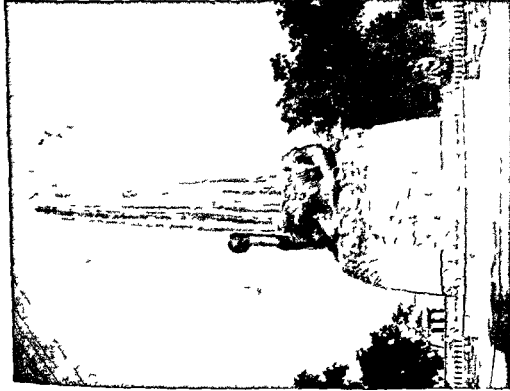
क्या
नागरिक
क्या
सिपाही
सभी
सुरक्षा
के
लिये
तत्पर

पुर मे खंडहर श्री लालबहादुर शास्त्री को अपनी कहानी सुना रहे हैं।

ख रात मे मिले हथियार भला क्या साथ देते ? यह बिना फटा बम इसकी गवाही दे रहा है।

जवानो ! तुम्हारी वीरता के गीत युगो तक गाये जायेंगे।

—इन्दिरा गाधी

श्री चव्हाण    श्री हरिभाऊ उपाध्याय    श्री सुखाडिया

श्री चव्हाण जवानो के बीच उनकी बहादुरी के किस्से सुनने भी पहुँचे

२

ग्रथ–सग्रह

सुरक्षा के दो मोर्चे —

प्रशिक्षण
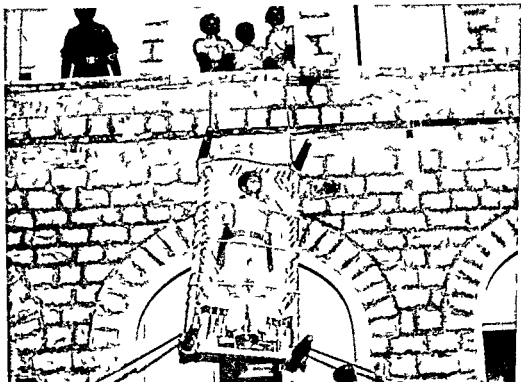
मुख्य मन्त्री श्री सुखाडिया जवानों का हौसला बढ़ाने अग्रिम मोर्चों पर

अयूब-शाही के शिकार—कुछ पाकिस्तानी बंदी

भारत की शान

जय किसान जय जवान

इन पर हमको है अभिमान

तत्कालीन स्थल सेनाध्यक्ष जनरल करिअप्पा के अनुसार 'जो मिसाल वीरता की उन्होंने कायम की उस पर हमारी फौज को नाज है। उन्होंने अपनी जान वतन पर निछावर की और उससे सारा देश उनका एहसानमन्द है।' परमवीर चक्र प्राप्त करने वालो म पीरूसिंह राजस्थान के पहले तथा भारत के दूसरे वीर थे।

झुंझुनु जिले के १० जवानो को वीर चक्र से विभूषित किया गया। राणासर के जमादार सावलराम, मगेरा के जमादार बसन्ताराम, बाकरा के हवलदार रिछपालराम, मेहरपुर के नायक बीरबल राम, गरला के रायफलमैन हनुमानाराम, सान्तोर के नायब सूबेदार हरिराम, पापडा के लास नायक लादूराम, विढाना के सिपाही मोहरसिंह तथा चिरानी के नायब सूबेदार हनुमानाराम और नुआ के नायब रिसालदार अयूब खा इस समय भी सनिक सेवा मे हैं।

इनके अतिरिक्त घुलवा के कप्तिन मूलसिंह, शाहपुर के सूबेदार भूधाराम, भाटीवाड व हवलदार लेफ्टीनेन्ट कुरडाराम को "आडर आफ ब्रिटिश इडिया' मिर के नायक बगराज, मगीना के लास नायक काशीराम और नुआ के रिसालदार महताब खा को "इडियन डिस्टिंगविश्ड सर्विस मेडिल तथा मिर के हवलदार नौरगराम को 'मिलिट्री मेडिल प्राप्त हुआ है।

वीरो का अभिनन्दन —

यह वीर प्रसविनी भूमि वीरो को यथोचित सम्मान देना भी खूब जानती है। वीरचक्र विजेता भारतीय अयूब जब अवकाश पर अपनी जन्म भूमि आये तब जिले के अन्य ग्रामों ने उनका भव्य स्वागत किया। नुआं झुंझुनु धन्धूरी और कायम सर ग्रामो ने उनका अभिनन्दन किया। झुंझुनु म आयोजित नागरिक अभिनन्दन म जिले के अवकाश पर आए हुए अन्य सैनिको का भी सम्मान किया गया।

परमवीर चक्र विजेता पीरूसिंह के ग्राम बेरी रामपुरी मे उनकी प्रस्तर प्रतिमा स्थापित की गयी जिसका अनावरण सीकर के रावराजा श्री कल्याण सिंह ने किया।

नगर पालिका झुंझुनु ने झुंझुनु कस्बे के तीन मार्गो का नाम वीर पथ, परमवीर पथ और विजय पथ रखकर जिले के शौर्य को समाहृत किया है। जिला परिषद ने भी वीर शहीदों का स्मारक बनाने का निर्णय लिया है।

झुंझुनु जिले की सनिक परम्परा बहु प्रशंसित है। स्वर्गीय प्रधान मत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री, रक्षा मत्री श्री वाई० बी० चव्हाण, राज्यपाल डा० सम्पूर्णानन्द, प्रभृति नेतागण समय समय पर भाषणों मे झुंझुनु जिले के सनिक गौरव को आदरपूर्वक स्मरण करते रहते है। जनरल चौधरी ने झुंझुनु म २७ नवम्बर को आयोजित भूतपूर्व सनिको की विशाल रैली म झुंझुनु जिले द्वारा भारतीय सनिको को दिए गए योगदान की प्रशसा करते हुए कहा था 'इस जिले के जाट, राजपूत व कायमखानी जवानो की बहादुरी पर देश को गर्व है।' उसी अवसर पर राजस्थान के मुख्य मत्री श्री मोहनलाल सुखाडिया ने कहा था कि वे मोर्चे पर भी गए उन्हें वहा झुंझुनु के जवान मिले।

प्रकाशवीर शास्त्री

# जोधपुर कसौटी पर

कश्मीर के बाद पजाब मे तीन मोर्चों पर चोट खाकर पाकिस्तान ने राजस्थान की सीमाम्रा पर हमले शुरू कर दिये। बाडमेर, जसलमेर, और बीकानेर के कुछ क्षेत्रो को उसने अपना मुख्य निशाना बनाया। राजस्थान ग्राम्स कान्स्टेबुलरी के जवानो ने अपनी शक्ति से उसका मुकाबला किया। देश के दूसरे और भागो की तरह राजस्थान म भी सीमा का कोई प्राकृतिक विभाजन न होने स चोरी छिपे मुजाहिदो और नियमित पाक सनिको का आना जाना बराबर कुछ दिन पहल तक जारी था। सैनिक गति विधियो से सम्बधित हमारे कई मूल्य समाचार भी इनके द्वारा बीच बीच मे पाकिस्तान पहुचते रहे। अधिकृत आकडे तो इनके नही दिये जा सकते, पर लगता है कि राजस्थान के सीमावर्ती क्षेत्रो में आज भी ये अच्छी सख्या मे मौजूद है। मिलने वाल सीमा क्षेत्रा म रहने वाली कई जातिया स्वभाव से ही बडी बहादुर है। सीमावर्ती क्षेत्रो के निवासिया को हथियार देना और कुछ विशेष स्थानों पर सुरक्षित पट्टी बनाना और भी कई दृष्टिया से हमारे लिय आवश्यक हो गया है।

जोधपुर पा० सीमा से लगभग पौने दो सौ मील है और बाडमेर मे करीब साठ मील। पा० फौजो ने उस क्षेत्र मे जहा गदरा रोड स्टेशन की ओर बढने का कई दिन तक असफल प्रयास किया। उसके बम वषक विमान कराची और बादिन के हवाई अड्डो से उडकर जोधपुर पर लगातार भारी बम वर्षा करते रहे। इतने भारी बम और वे भी इतनी अधिक सख्या मे शायद ही किसी शहर पर पाकिस्तान ने गिराये हो। अमृतसर के मुहल्ला पर जो बम पाकिस्तान ने गिराये है उन्ह देखकर हर भारतीय का खून खौल उठता है। पर जब जोधपुर म हुई बमवर्षा के दृश्य देखे जायें तो ऐसा लगेगा कि वह उनके मुकाबले म कुछ भी नही हैं। १६६ बम जो चार हजार पौण्ड से लेकर ढाई सो पौण्ड तक थ, उनकी मार से जोधपुर शहर बच कसे गया ? इस पर सब हैरान है, पन्द्रह भारी वजनी बम जो बाद म बिना फटे मिले है उनम सरदार क्लब के पास साढे सात सौ पौण्ड का बिना फटा बम भी एक था। उसके चारा ओर रेत के ऊचे ऊचे कई हजार बोरे लगाकर उसका विस्फोट किया गया। विस्फोट से बोरा का चिन्ह भी वहा नही रहा। कही कही पडो पर छोटे २ टुकडे बारियो के जरूर टगे मिले। लेकिन सरदार क्लब का विशाल भवन भी साथ २ आधा क्षतिग्रस्त हो गया। कनल मोहनसिंह के फाम म जोधपुर हवाई अड्डे के पास

जहां चार हजार पौण्ड का एक बम गिरा है, वहां बहुत गहरी लगभग पांच सौ फुट चौड़ी बावड़ी बन गई है जो उन बमों की भयंकरता की कहानी स्वयं सुनाती है। जोधपुर उस भाग में सुदृढ़ रक्षा पंक्ति का काम करता है।

भारत विभाजन से पूर्व जोधपुर का हवाई अड्डा अन्तर्राष्ट्रीय अड्डों में से एक प्रमुख अड्डा था। विदेशों से कराची होकर भारत आनेवाले विमानों का यही सीमा-शुल्क चुकाना होता था। अविभाजित भारत में यह हवाई अड्डा विमान चालकों का ट्रेनिंग सेंटर भी रहा है। पा० के पुराने विमान चालकों में से अधिकांश चालकों ने भी यहीं ट्रेनिंग ली है। इसलिए उनको यहां की पूरी जानकारी है और उन्होंने जोधपुर के हवाई अड्डे को नष्ट करने में कोई कसर नहीं रखी।

सत्तर भारी बम हवाई अड्डे की चारदीवारी में और तीस बम उसके आसपास पाकिस्तानियों ने गिराये। पड़ोस के कुछ मकानों को क्षति जरूर पहुंची, पर हवाई अड्डा सुरक्षित रहा। वहां तैनात अधिकारी हैरान थे कि यह सब संभव कैसे हुआ? कोई कोई तो हँस कर यह भी कहते 'अरे भाई! पाकिस्तानी विमान-चालकों ने यहीं ट्रेनिंग ली है इसलिये उनके बाण गुरुचरणों में ही पड़ने स्वाभाविक हैं भला बाण सर छूकर अपना नाम क्यों कलंकित करने लगें?' पर हवाई अड्डे के पास वायुपुरा मुहल्ले में और केन्द्रीय कारागार पर तथा पड़ोस के अन्य भवनों का जो विनाश बमों ने किया, वह भी कुछ कम दर्दनाक नहीं है। पाकिस्तानी-विमान जोधपुर के रेलवे स्टेशन, टेलीफोन एक्सचेंज, बिजली घर, पेट्रोल भण्डार और नगर की पानी वितरण व्यवस्था भी भंग करना चाहते थे। जेल तो बेचारी बीच में आ पड़ने से निशाना बन गई जेल अस्पताल का दर्दनाक दृश्य आज भी कंपा देता है। लोहे के बीस बीस और तीस तीस मन के भारी दरवाजे और पत्थर की मजबूत इमारतें बमों की मार से कागज की तरह चारों ओर बिखरी पड़ी है, तब मरीज बिचारे क्या बचते? बहुत से रोगियों की तो लाश का भी पता नहीं चला। कुछ जो खन्दकों और खाइयों में किसी तरह रेंग रेंग कर चले गये थे वे जरूर बचे। पर वह भी क्या बचना है? जीवन भर उन्हें सिसकना ही पड़ेगा। वे बेचारे तो मरे हुओं से भी बदतर है।

जोधपुर राजभवन और पुराना किला इस नगर की अपनी ही शान है। पहाड़ियों पर बने ये दोनों ही स्थान जोधपुर नगर के दो प्रमुख पहरेदार से लगते हैं। पर इस बार हवाई हमले में मालूम होता है पहरेदार भी कुछ न कर सके। उल्टे पाकिस्तानी विमान चांदनी रात में इन दोनों को आधार बनाकर अपने ठिकानों पर पहुँचते रहे। नगर में कितना ही ब्लैक आउट क्यों न रखा गया हो, पर मकानों की सफेदी चांदनी में और भी खिल उठती थी लगता था जोधपुर शहर हवाई हमलों के समय खिल खिलाकर कहता हो—'भेड़ियो! जी भरकर अपनी हसरत निकाल लो पर याद रखो 'अरक्षितं तिष्ठति दैवरक्षितम्।

मनुष्य का हाथ यदि किसी के सिर पर न हो, तो मन समझो परमात्मा का हाथ भी उसके सिर से उठ जाता है। तभी उस महा विनाश में भी अधिकांश जोधपुर सुरक्षित रहा। लगता है रणबंका राठौर और जोधपुर का पुण्य संचित होकर स्वयं ही उन दिनों जोधपुर की ढाल बन गये थे। देश के दूसरे भागों की तरह पा० विमानों के आते ही जोधपुर वासियों को भोंपू सुनकर खन्दकों में जाने की आदत नहीं थी।

वे तो प्रतिदिन और नियत समय पर आने वाले पाक विमानों की आवाज पहचानते थे और स्वयं ही खन्दकों में चले जाते थे। आवाज बन्द हो जाने पर अपने कामों में लग जाते थे। हमारे राष्ट्रीय पक्षी-मोर भी हमारे आगाह करता रहा। पाक विमानों का शोर सुनकर भोंपू से पहले ही मोर चारों ओर बोलने लगते थे। एक कसक जोधपुर निवासियों के मन में जरूर रह गई। पंजाब और काश्मीर में जैसे बहुत से पाक विमान मार गिराये गए। राजस्थान की धरती उस सौभाग्य से क्यों वंचित रह गई? अपनी हानि से भी कहीं अधिक खिझ उन्हें इसी बात की है!

राजस्थान के जोधपुर, बाड़मेर और दूसरे सीमावर्ती क्षेत्रों के निवासियों का मनोबल कितना ऊँचा था, संघर्ष के दिनों में वे किस प्रकार काम करते रहे।

इसकी प्रशंसा करना तो राजस्थान की पुरानी परम्परा का उपहास करना होगा। अपने पुरखों से वसीयत में जो बहादुरी उन्हें मिली है कदम कदम पर उसके दर्शन वहां हुए। शहरों और गांवों में सामान्य दिनों की तरह जनता का अपना काम बराबर चलता रहा। स्कूलों के विद्यार्थियों और महिलाओं का उत्साह तो और भी सराहनीय था। जवानों के स्वागत सत्कार तथा सुरक्षा प्रयत्नों में उनके योग में जो हार्दिकता और भावना शीलता थी उससे मन गद्‌गद हो जाता था और जवान या ललकते हुए मोर्चे पर जाते थे मानों माँ से मिलने जा रहे हैं। ●

"भेरी बज गई है और हमें बुलाया जा रहा है—इसलिए नहीं कि हम हथियार लें, यद्यपि हथियारों की हमें जरूरत है, इसलिए नहीं कि हम लड़ाई के मोर्चे पर उतरें, यद्यपि लड़ाई के पाटों के बीच हम दबे हुए हैं, बल्कि इस लिए कि हम, प्रतिवर्ष लम्बे धुंधलके की लड़ाई का दायित्व संभाले —हम मनुष्य जाति के इन सर्वव्यापी शत्रुओं से युद्ध ठाने आतंक, दारिद्रय, रोग और स्वयं युद्ध से।"

—जान केनेडी

# सीमा-रक्षा

राजस्थान की शौर्य परम्परा भारत के इतिहास में अद्वितीय है। मातृभूमि रक्षा के लिए यहां के वीरों ने जिस अदम्य उत्साह और लगन के साथ बलिदान दिया है वह एक अनुकरणीय और श्लाघनीय उदाहरण है। महाराणा प्रताप, महाराणा सांगा, जयमल, पत्ता, वीर दुर्गादास और इन जैसे सहस्त्रों अन्य वीरों ने हर सम्भव कठिनाइयों का मुकाबला कर हँसते हँसते अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए अपने प्राण न्योछावर कर दिए, परन्तु पराधीनता स्वीकार नहीं की। इस भूमि की वीरांगनाओं ने जौहर की ज्वाला तक में आत्माहुति दे दी ताकि देश के निवासी स्वतन्त्रता की रक्षा हेतु निःसंकोच युद्ध कर सकें। इसी भूमि के भामाशाह जैसे दानवीर, शूरवीरों को प्रोत्साहित करने में अपना निजी स्थान रखते हैं।

सन् १९४७ में स्वतन्त्रता के बाद जब विशाल राजस्थान का सृजन हुआ, तो इस शौर्य परम्परा का नया रूप सामने आया और ऐतिहासिक रूप से एक नयी राष्ट्रीय चेतना का प्रादुर्भाव हुआ। स्वतन्त्रता के पश्चात हमने अपने आपको आर्थिक और सामाजिक रूप से सुदृढ करने में लगा दिया।

यह आशा नहीं थी कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद इतने थोडे समय के अन्दर ही कुछ विस्तारवादी और साम्राज्यवादी शक्तियां हमारी सार्वभौम सत्ता पर इस प्रकार बर्बरता से आक्रमण करेंगी जिस प्रकार चीन ने हमारी उत्तरी सीमाओं पर अक्टूबर, १९६२ में प्रहार किया। वह समय देश की सही परीक्षा का समय था। राष्ट्रनायक, तत्कालीन प्रधानमन्त्री पं० जवाहरलाल नेहरू ने २२ अक्टूबर १९६२ को देश के भाइयों बहनों साथियों और हमवतनों को सम्बोधित करते हुए कहा था—

'इस आजादी को और मुल्क के हर किसी हिस्से को मुल्क में रखने के लिए हमें पूरी तैयारी करनी है, कमर कसनी है और उस खतरे का सामना करना है जो इस वक्त सबसे बडा खतरा हमारे सामने आया है—जब से हम आजाद हुए हैं'। राष्ट्रीय भावनाओं से ओत प्रोत वाणी में प्रधान मन्त्री ने उद्घोष किया था कि—"आजादी की कीमत पूरे तौर से देनी होती है और कोई कीमत जरूरत से ज्यादा नहीं है, जबकि हमारे मुल्क की आजादी और हमारे लोगों की आजादी का सवाल हो।"

कृतज्ञ राष्ट्र ने अपने प्रिय नेता के शब्दों का अक्षरशः पालन किया। 'आजादी की कीमत' को चुकाने के लिए सारा राष्ट्र एक लौह पुरुष की भांति खडा हो गया—अडिग और अनुशासित। राजस्थान के जन मानस में

मी राष्ट्रीय चेतना की लहर दौड गयी । जनता का प्रत्यक वग राष्ट की सुरक्षा क लिए मुह मागा बलिदान देने को तैयार था । राज्य क जवान' दश क जवानो क साथ कधे स कधा मिला कर राष्ट्राय सुरक्षा सना म हजारो की सख्या म भर्ती हुए ।

अक्टूबर १६६२ के महीने का प्रत्यक दिन देश के हर नागरिक के लिए उत्सुकता, नये सवाद और दृढ सकल्प का दिन था । चीन के साथ हमारी उत्तरी सीमाओ पर सघष मात्र दो राष्ट्रा की सेनाओ का सघष ही नही था बल्कि सिद्धान्तो की लडाई थी और उन सिद्धान्तो की लडाई म हमारे "जीवन-दशन' शासन प्रणाली दोनो ही कसौटी पर थे । जिस अभूतपूव राष्ट्रीय एकता और दृढ सकल्प के साथ हमने 'वेशम' और दगाबाज' दुश्मन को ललकारा—वह हमारे जीवन दशन की उपादेयता और शासन-तन्त्र, जिसका आधार जनतन्त्र और व्यक्तिगत स्वतन्त्रता है, सफलता का प्रतीक था । चीन के साथ युद्ध मे यद्यपि हमे सामरिक सफलता प्राप्त नही हो सकी, लेकिन इस युद्ध मे सम्भवतया पहली बार हमे यह अनुभव हुआ कि काश्मीर से कन्याकुमारी तक और कच्छ स आसाम तक सारा भारत एक राष्ट्र है जिसके निवासिया म व्यक्त विविधताओ के बावजूद एक सशक्त एकता मौजूद है जो समय पडने पर किसी भी चुनौती का सामना करने म समथ हो सकती है ।

राजस्थान भी उसी राष्ट्रीय परम्परा म ढला हुआ राज्य है । चीन के साथ सीमा सघष म सामा के सभी अगो मे राजस्थान के जवान अग्रणी रहे और हरावल की परम्परा को निभाया । 'परमवीर चक्र' प्राप्त मेजर शतानसिंह न चशूल क्षेत्र म १६ हजार फीट की ऊचाई पर असाधारण साहस, शौय पूण नतृत्व और अनुकरणीय कतव्य निष्ठा का परिचय दिया और टिड्डी दल की तरह आये हुए दुश्मन के सनिको के भारी हमलो के बावजूद, अपनी टुकडी का मनोबल बनाये रखा और युद्ध क्षेत्र मे ही अपने प्राणो की आहुति दे दी । राजस्थान के इस वीर सपूत का बलिदान देश के हजारो नवयुवको के लिए आदश बन गया । देश की अक्षुण्णता की रक्षा करने की परम्परा मे सम्बन्धित त्याग और बलिदान का यह उदाहरण वास्तव म देश के सर्वोच्च सम्मान 'परमवीर चक्र' के योग्य ही था ।

और इसी प्रकार तवाग क्षेत्र मे विशिष्ट सेवा-मडल प्राप्त मेजर जनरल कल्याण सिंह की चीन के साथ सघष मे ऊचे दर्जे की सनिक सूझ बूझ साहस और प्रत्युत्पन्नमति वीर चक्र प्राप्त नायब सूबेदार हरिराम द्वारा लद्दाख क्षेत्र मे अपनी चौकी की रक्षाथ दिखायी गयी कतव्य परायणता एक उत्तम उदाहरण है । उत्तरी सीमा पर चीनी विस्तारवादियो के विरुद्ध मातृभूमि की रक्षा म रत राजस्थान के सैनिको का बलिदान देश के नौजवानो के लिए एक अनुकरणीय उदाहरण बन गया जो इतने बडे राष्ट्र के लिए एक अभूतपूव घटना थी । यही नही सीमा रक्षा मे अतुलनीय वीरता स लडने वाले राजस्थानी सनिको के घायल होने और घायल अवस्था म भी देश की सीमा-रक्षा करने का दृढ सकल्प दश के इतिहास की वीरगाथा का एक नया अध्याय बन गया ।

इसी योगदान का परिणाम था कि १६६५ के सितम्बर माह म पाकिस्तान द्वारा अविवेक पूण आक्रमण के समय भारत के सनिको ने दुश्मन को मुह तोड जवाब दिया । यह सघष तो राजस्थान की सीमा पर ही

था। राजस्थान के मुख्यमन्त्री, श्री मोहनलाल सुखाडिया ने जनता के मनोबल का प्रतिनिधित्व करते हुए यह आह्वान किया कि राजस्थान की वीर प्रसूता भूमि को अपनी सीमा की रक्षा करने का अवसर स्वतन्त्रता के बाद, इतिहास मे पहला बार प्राप्त हुआ है और इस पुनीत कार्य की सफलता के लिए राजस्थान के निवासी, देश के किसी हिस्से के निवासियों से पीछे नहीं रहेंगे। और ऐसा ही हुआ। राष्ट्रीय सुरक्षा सेना की राजपूताना राइफल्स, १३ ग्रेनडियस और आर्टीलरी के अधिकांश जवान राजस्थान के निवासी थे जिन्होंने वीरता का परिचय दे, विजयश्री प्राप्त की देश के नागरिकों मे एक नया विश्वास जागृत किया और विश्व के राष्ट्रों में भारत की प्रतिष्ठा को बढाया।

"भारतीय अयूब" के नाम से प्रसिद्ध वीर-चक्र प्राप्त नायब रिसालदार अयूबखां ने भीषण टैंक युद्ध मे स्यालकोट क्षेत्र में शत्रु सेना के व्यूह को भेद कर शत्रु पक्ष के मनोबल को तहस नहस कर दिया। उन्ही के शब्दों मे "हम आगे बढते गये और रेंगते हुए पैंतरे से इतनी शीघ्रता से टैंकों तक पहुँचे कि शत्रु हक्का-बक्का रह गया। उन्हें कल्पना भी नही थी कि हम इतनी जल्दी मुडकर फिर हमला कर देंगे। जब तक वे सँभलें तब तक हम चार टैंको का खातमा कर चुके थे।' राजस्थान के वीर-चक्र प्राप्त लेफ्टीनेण्ट कर्नल मेघासिंह की मोर्चाबन्दी व ले० कर्नल रघुवीरसिंह का पराक्रम और विंग कमाण्डर मदनसिंह की हवाबाजी, युद्ध के हर क्षेत्र मे राजस्थानी जवानों का अदम्य शौर्य, गलत उसूल के लिए लडने वाले पाकिस्तानी सिपाहियों के लिये एक करारा सबक था। इस २२ दिन के संघर्ष में राजस्थान के १६२ सैनिकों ने वीरगति प्राप्त की और ४२२ सैनिक घायल हुए। यह विजय देश की सुरक्षा-तैयारी की सफलता थी और देश के न्यायोचित संकल्प का पुष्टीकरण।

देश की सीमा-रक्षा के लिए राजस्थान के वीरों का योगदान मात्र उत्तरी सीमा पर चीनियों के साथ संघर्ष में और पाकिस्तान के साथ हुए सितम्बर १९६५ के युद्ध तक ही सीमित नही रहा, बल्कि जहां कहीं भी देश की सार्वभौमिकता और अक्षुण्णता पर आंच आई है, राजस्थान के सैनिकों ने वहाँ देशभक्ति का परिचय दिया है। देश की भूमि-गोवा से पुर्तगाली साम्राज्यवादियों को दूर करने में राजस्थान के वीर मेजर मलसिंह और ले० हवलदार शिशुपालसिंह ने जिस निडरता और साहस के साथ ड्यू द्वीप पर कब्जा किया उस वीरता के लिए उन्हें अशोक चक्र तीसरा वर्ग से सुशोभित किया गया। नागालैंड में विद्रोहियों का जो राष्ट्रीय अखंडता के लिए खतरा था सफाया करने में राजस्थान के सूबेदार बाघसिंह को अशोक चक्र तीसरा वर्ग प्रदान किया गया और मेजर राजमोहन शर्मा और हवलदार लालसिंह को अशोक चक्र दूसरा वर्ग। इसी प्रकार १९४७ के तुरन्त बाद स्वतन्त्रता की रक्षा और काश्मीर को भारत का अविभाज्य अंग बनाने के संघर्ष में राजस्थान के हवलदार मेजर पीरूसिंह ने जिन्हें मरणोपरान्त सर्वोच्च पुरस्कार 'परमवीर चक्र' प्रदान किया गया, अद्भुत पराक्रम का परिचय दिया। ले० कर्नल किशनसिंह राठौड को "महावीर चक्र" सेकण्ड लेफ्टिनेण्ट रामस्वरूप, सूबेदार मेजर गोपालराम सूबेदार दसन्ताराम, जमादार छोटूसिंह, जमादार प्रभातीसिंह, रायफल मैन रावतसिंह नायब सूबेदार हनुमानाराम, सूबेदार मावन्दराम को "वीर चक्र" प्रदान किये गये। इस प्रकार भारत की सीमा-रक्षा में राजस्थान के वीरों का योगदान अपना अलग स्थान रखता है।

सीमा-रक्षा म केवल फौजी ताकत ही काफी नही होती। फौजी ताकत देश के निवासियो के मनोबल पर निर्भर करती है। 'मनोबल राष्ट्रीय चरित्र का प्रतीक होता है। सीमा रक्षा में राजस्थान के योगदान की कहानी यहा के निवासियो के राष्ट्रीय चरित्र और मनोबल के परिचय के बिना अधूरी रहेगी। राजस्थान के निवासियो म देश प्रेम, चरित्र-बल और राष्ट्रीय भावना कितनी गहरी है, इसका परिचय तो चीनी आक्रमण और पाकिस्तानी आक्रमण के दिनो ही प्रत्यक्ष रूप से लग पाया था। अक्टूबर १९६२ और सितम्बर, १९६५ के महीने देश के नागरिको के लिए परीक्षा के थे। देश की आजादी की रक्षा करने के लिए हर एक नागरिक मुँह माँगा दाम देने को तैयार था। राष्ट्रीय सेना म भर्ती होने के आह्वान पर राज्य में भर्ती के सभी केन्द्रो पर जवानो, की खतम नही होन वाली, कतारें खडी हो गयी। जहा ५० जवानों की भरती करनी थी, वहा हजारो का सख्या मे जनता के सभी वग के जवान भर्ती के लिए आ गये। युद्ध मे घायल जवानों को खून देने के लिए आबाल-वृद्ध हँसी खुशी से अपना खून दने को तयार थे। घायल सैनिको की सुश्रूषा के लिए महिलाओ ने बीडा उठाया। "नागरिक सुरक्षा' एक जाना पहचाना शब्द बन गया। "राष्ट्रीय सुरक्षा कोष' के लिए नागरिको ने जी खोल कर चन्दा दिया। कृषको न खेतो म पैदावार बढाने का सकल्प किया और मजदूरो ने उत्पादन बढान का। "आराम हराम है' का नारा अमली रूप लेने लगा। हर व्यक्ति, चाहे वह किसी भी काम म क्यो न लगा हो, अपनी जगह अधिक काम करने लगा। "अफवाह न फैलाओ और न सुनो का नारा आम हो गया। "सतर्कता' जन-धर्म बन गया। इन अवसरो पर जन-शक्ति, उत्साह और शत्रु के प्रति रोष का ऐसा अभूतपूर्व उदाहरण कभी देखने को नही मिला। सरकार की ओर से भी जन शक्ति की इस बाढ को नियन्त्रित करने का और सही राह पर लगाने की भरसक कोशिश की गयी।

चीनी आक्रमण के तुरन्त बाद राजस्थान सरकार ने भी अपने कर्तव्य का परिचय दिया और तुरन्त "मुख्यमन्त्री सुरक्षा सेवा कल्याण कोष' की स्थापना की। उल्लेखनीय है कि पूरे देश के लिए राष्ट्रीय सुरक्षा कोष' राजस्थान द्वारा निर्मित मुख्यमन्त्री सुरक्षा सेवा कल्याण कोष के बाद बनाया गया। आगे चल कर दोनो कोष मिला दिये गये। इस कोष म गरीब-अमीर सभी ने मुक्त दान किया। राज्य कर्मचारियो ने अपनी तनखा मे स राशि कटवा कर सुरक्षा-कोष मे जमा करायी। मजदूरो ने अतिरिक्त मजदूरी कर, उसकी आय "सुरक्षा कोष" मे अर्पित की। पढने वाले बच्चो ने अपना 'जेब खर्च' सुरक्षा कोष मे जमा कराया। रियासतो के राजाओ ने प्रीवीपर्स का कुछ हिस्सा सुरक्षा कोष मे दिया और नेताओं ने अपनी तनखा और भत्ता का महत्वपूर्ण भाग "सुरक्षा कोष' मे जमा कराया। सुरक्षा-कोष मे चन्दा एकत्र करने के लिए जो उत्साह जनता मे पदा हुआ उसने कई नये रूप धारण किये। विशेष सास्कृतिक समारोह आयोजित किये गये। प्रदर्शन खेल खेले गये—सुरक्षा-कोष कैण्टीन चलायी गयी। उत्साही नवयुवकों ने बूट पालिश कर और अखबार बेच कर जो राशि अर्जित की, उसे सुरक्षा-कोष मे जमा करा देशभक्ति का परिचय दिया। इस प्रकार सारे देश म मई १९६६ तक ७७ करोड ९९ लाख रुपया सुरक्षा कोष मे एकत्रित किया गया। राजस्थान से जनवरी ६६ तक आठ करोड चौबीस लाख सत्तर हजार और तीन सौ उन्नतीस रुपये एकत्र किये गये जो समय-समय पर राजस्थान म आये महत्वपूर्ण नेताओ को राजस्थान की

ग्रोर से देश प्रेम के प्रतीक के रूप में भेंट किये गये । पडित जवाहरलाल नेहरू की माच १९६३ म गगानगर जिल की यात्रा ग्रौर स्व०लालबहादुर शास्त्री की ग्रक्टूबर १९६५ मे जोधपुर ग्रौर जयपुर की यात्रा राजस्थान के निवासियो की स्मृति मे ग्रब भी ताजा है जब कि इन प्रधान मत्रियो को राजस्थान की ग्रोर से लाखो रुपये की थलियाँ राष्ट्रीय सुरक्षा-कोष के लिए भेंट की गयी थी । राजस्थान के मुख्य मन्त्री द्वारा स्वर्गीय लालबहादुर शास्त्री को राजस्थान की ग्रोर से "राजस्थान स्क्वेडोन" के लिए राशि प्रदान करने का वचन, राजस्थान की जनता का पुनीत सकल्प था ।

देश की सुरक्षा के लिए स्वर्णदान एक सामयिक नारा बन गया । राजस्थान उन ग्रग्रणी राज्यो मे से है जिन्होने सबसे ग्रधिक सोना देश की सुरक्षा के लिए दान म दिया । ग्रगस्त १९६५ तक राजस्थान से १,३५ ७३० ग्राम सोना राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए दान मे दिया गया ।

राजस्थान के परम्परा प्रेमी निवासियो ने, जिन्हें सोने से विशेष व्यक्तिगत लगाव था राष्ट्रीय हित को सर्वोपरि मान, सोने के जेवर देश की सुरक्षा के लिये न्योछावर कर दिए । सौभाग्यवती महिलाग्रो ने ग्रपनी चूडिया ग्रौर मगलसूत्र देश की सुरक्षा के लिए सहर्ष दे दिये । इस दान के ग्रतिरिक्त हजारो ग्राम सोना राजस्थान के निवासियो ने सोने के बाण्ड खरीदने मे लगाया । राजस्थान ही ऐसा राज्य था, जहा से तत्कालीन प्रधानमन्त्री जवाहरलाल नेहरू, वित्त मत्री मोरारजी देसाई ग्रौर इन्दिरा गाधी के वजन के बराबर सोना रक्षाकोष मे दान दिया गया । इसके ग्रतिरिक्त १६, ६४, ०२ २७० तोला चादी कई बन्दूकें-जमीन ग्रौर सनिको की सहूलियत की वस्तुए कई सख्या मे दान म दी गयी । सनिको के लिए मिठाइया रजाइया ग्रौर ग्रन्य उपहार नागरिको के प्रेम के प्रतीक बन गये । गरम स्वेटर ग्रौर जर्सी तोहफे के नये माप दण्ड बने । युद्ध म रत सनिक सारे देश के सच्चे सपूत बन गये । जिन रास्तो से सैनिक मोर्चे पर जाते वहा उनका विशेष स्वागत किया जाता ग्रौर नि शुल्क स्वल्पाहार शुभकामनाग्रो ग्रौर विजय की दृढ ग्राशा के साथ समर्पित किया जाता । स्नेहासिक्त छोटी बातो का प्रभाव जवानो के मनोबल को द्विगुणित कर देता । राज्य-स्तर पर एक "राजस्थान नागरिक परिषद" का निर्माण किया गया, जिसकी ग्रध्यक्षता राज्य के मुख्य-मत्री ने स्वीकार की । इसके ग्रतिरिक्त "ग्रन्न सग्रह", 'जन-सम्पर्क', "जन सहयोग', 'चिकित्सा ग्रौर महिला प्रतिरक्षा सम्बन्धी राज्य-स्तरीय समितियो का निर्माण किया गया जिसम सभी वर्ग के प्रतिनिधियो का समाविष्ट किया गया ।

जिला-स्तर पर भी इसी प्रकार की समितियो का निर्माण किया गया ग्रौर ग्रनुशासित ढग से सीमा रक्षा के प्रयत्न किये गये ।

नागरिक-सुरक्षा के लिए देश के नौजवानो को शिक्षित किया गया ग्रौर राज्य-व्यापी नागरिक-सुरक्षा की योजना लागू की गयी । राजस्थान मे १४,७२६ पुरुषो ग्रौर ५७० महिलाग्रो को होमगार्ड की ट्रेनिंग दी गयी ।

पाकिस्तानी ग्राक्रमण के समय 'ब्लैक ग्राउट" का रिहर्सल राजस्थान के इतिहास मे ग्रभूतपूर्व घटना था ग्रौर जिस उत्साह तत्परता ग्रौर शालीनता के साथ राज्य के निवासियो ने नियमो का पालन किया वह यहा के निवासियो के चरित्र-बल ग्रौर देश प्रेम का प्रतीक था ।

देश की सीमा रक्षा मे रत सनिकों को विभिन्न सुविधायें प्रदान करने के लिए अनेक कदम उठाये गए। राज्य के मुख्यमत्री और अन्य वरिष्ठ मत्रिया ने सभी अग्रिम क्षेत्रा का दौरा किया और सनिका को आश्वासन दिलाया कि उनके परिवार की सुरक्षा की जिम्मेदारी राज्य-सरकार की है। इसी आश्वासन के अनुरूप सनिका के परिवारा को राज्य सरकार ने कई सुविधायें प्रदान की हैं। जो सनिक युद्ध म वीरगति प्राप्त करते हैं उनके परिवारा को उचित पेंशन और पुरस्कार देने की योजना है। सनिक परिवारो के बच्चा की शिक्षा और आवास का विशेष प्रबन्ध किया गया है। राज्य सरकार के सिविल कमचारी, जो सुरक्षा-सेना या इसस सम्बन्धित सेनाम्रा मे जाना चाहत हैं उनक लिए विशेष प्रावधान रखा गया है और सुरक्षा सना के जो सनिक सिविल सेवा म जाना चाहत हैं उनके लिए एक विशेष प्रतिशत सीधी भर्ती के काटे म निश्चित की गयी है। जो सनिक फारवड एरिया म हैं वे दशरक्षा म लगन के साथ काम करत रह इस दृष्टि से उनके विरुद्ध सभी प्रकार की वसूलिया स्थगित कर दी गई है और उन्ह नि शुल्क कानूनी सलाह प्रदान की जाती है।

राजस्थान केनाल एरिया मे २ लाख एकड भूमि सनिको क परिवारा के लिए अलाटमट के लिए सुरक्षित है।

राज्य के सभी स्कूल और कालेजा म ए० सी० सी० और एन० सी० सी० की ट्रेनिंग आवश्यक कर दी गयी है। पाकिस्तान की सीमा से लग बीकानेर बाडमेर, जसलमेर और जालोर जिलो म राजस्थान आमड कान्स्टेबुलरी विशेष सतकता रखती है और राज्य सरकार प्रतिरक्षा-मत्रालय सीमा-सुरक्षा सम्बन्धी मामला म निरन्तर सम्पक स्थापित रखती है।

यह सारी तयारी देश की अखडता और सीमा-रक्षा के लिए त्याग व बलिदान की तयारी है। यह सारी तैयारी किसी व्यक्ति विशेष या दल विशेष की न होकर सारे देश की है और उन सिद्धान्ता के लिए है जिनके लिए सघष करना देश के सभी वर्गो न उचित माना है इसी कारण से बिना किसी भेद भाव के राज्य के सभी वर्गो के प्रतिनिधियो ने देश की ससद और राज्य विधान सभा के इस सकल्प का स्वागत किया है कि जब तक आक्रमक देश की एक एक इन्च भूमि म चला नही जाता, हम चुप नही बठगे, हमारी तयारी देश की रक्षा के लिए चालू रहेगी और इस तयारी म राजस्थान के वीर नागरिक अपनी कत्तव्य परायणता और देशभक्ति का परिचय हमेशा दते रहगे। दुनिया की कोई शक्ति हमसे हमारी स्वतन्त्रता नही छीन सकती और जा हस्ती हमारी ऐतिहासिक और सास्कृतिक धराहर है उसे काई मिटा नही सकती।

बरसो रहा है दुश्मन दौरे जमाँ हमारा<br>
कुछ बात है कि मिटती हस्ती नही हमारी

V N Kak

# Sports Activities

## Sports and changing times —

Rajasthan, since its early days of recorded history, has been known for its place of pride in the realm of games and sports During the princely days distinction of the classes and the masses was marked in the fields of sports and allied activities The changing times have made their impact in this arena also and no game today is out of bounds for even the lowliest in the land The flight of time, shift in attitudes impact of western liking and fashions in the sphere of games and the quantitative and qualitative changes in the ne ds of recreation and relaxation have pushed some games in oblivion and some others have become the favourites of the younger generation, the mainstay of all activities of sports

In days of yore Rajasthan was known for the interest that the games of swordmanship, wrestling, weightlifting, boating horsemanship archery and more than anything else that enternal game of the rural masses the kabaddi aroused in the people With the advent of modern times and infection of western tastes, these old sports have lapsed into back-ground, while hockey, volleyball and football which appear to be variations of older games to some, came in vogue The princely order extended its patronage to the two aristocratic games of the day the Cricket and the Polo In the latter, Rajasthan carved out for itself the leading place in the whole world

## Expansion and democratisation —

During the last decade, sports activities have been expanded and democratised in the all directions The formation of Rajasthan Sports Council is an important achievement in the field of co ordinating sports activities and has contributed in a substantial measure in extending the facility of various games to all regions and to numerous educational institutions in the State All this has been able to inculcate in younger generation of Rajasthan the spirit of sports Training programmes have

opened up opportunities for talented youngmen to come up to the national standards and thus secure for their State a place of honour in the sports world

## Associations and activities —

During this decade Rajasthan has become centre of sports events of national importance *National basketball championships, North India Table Tennis championship*, Major Badminton championship, Women s Hockey Exhibition matches, Lawn Tennis championships All India Football tournaments etc have placed Rajasthan on the sports map of India First Class cricket matches of Ranji Trophy and of the visiting foreign teams have also lent honour to the State Sportsman of international fame from Soviet Union Hungary Denmark, U S A and other countries were invited and their visits greatly benefited the sports activities Twenty three State level Associations have been formed and are looking after the expansion of various branches of sports viz, Athletics Badminton, Basketball, Boxing, Boating, Cricket Cycling, Football, Gymnastics, Hockey, Indian Style Wrestling Kabaddi, Kho-Kho Lawn Tennis Polo, Swimming, Table Tennis, Volleyball, Weightlifting and Womens Hockey An Association of Voluntary Sports Coaches and Rajasthan Olympic Association are also doing valuable work

## District Sports Councils —

District Sports Councils have been organised during this decade in all the twenty-six districts of Rajasthan and it has been able to wield the sports lovers in a coordinating organisation These councils have become the nucleus of expansion and popularisation of various sports and games in accordance with the aptitude and inclinations of young Rajasthanis Grants-in aid are given to institutions for various activities of strengthening and developing sports activities Coaching, tournaments and training have received adequate attention

## Coaching and Regional Coaching Centre 'Mt Abu —

The State Sports Council has been the pioneer in coaching in India and specially its annual feature the Central Coaching Camp at Mt Abu during the summer vacations (May, June) has been lauded from all quarters for the contribution it is doing towards upbringing and training the younger generation and imparting the correct techniqes of the respective sports and games

The State *Sports Council has also started six Regional Coaching Centres which* run throughout the year at Jodhpur, Jaipur, Udaipur, Bikaner, Kota and Ajmer Coaching is imparted by qualified coaches both from the National Institute of Sports, Patiala and who have undergone special training abroad Apart from the coaches working in the Regional Coaching Centres over 30 coaches are working for the Rural Coaching Centres

A galaxy of international coaches from all countries of the world including Russia, Hungary, England, Germany and U S A have imparted training within our State and in the Camps

As a result of special coaching our boys and girls have given outstanding results at the national championships

## Rural Sports —

The first State in India to take up and develop the concept of spreading sports to rural areas has been the Rajasthan The State Sports Council after deep consideration and deliberation and consultations with the Zila Parishads has started 70 Rural Coaching Centres in the first instance which are spread throughout the 26 districts of Rajasthan Special consideration is being given to indigenous sports including athletics, volleyball football, kabaddi and wrestling The work of these centres is being carried out with close and active collaboration of Zila Parishads and Panchayat Samitis of the respective areas

## Recognition and achievements —

The Council both at the administrative and organisational level has been applauded as the best in India and the Ministry of Education has recommended to all the States to follow its example Its work has won appreciation at the All India Sports Congress, from the National Institute of Sports, All India Council of Sports, International and National Coaches, Sports Writers National Federations, outstanding Sportsmen of India and abroad

In the few years of its existence and through close contacts and mutual understanding with the State Level Bodies which now number 23 in the State, the highest probably in the country in any State, has won outstanding results in national competitions in Polo, Wrestling Volleyball, Basketball, Football, Badminton and Athletics

## Stadium —

A modern Stadium is being constructed at Jaipur which will cost about Rs 30 lacs and will seat about 27 thousand people Special attention is being given to the construction of Stadium at Jaipur and Utility Stadia at the District Headquarters

Realizing the relative importance of sports and games and their important role in the development of the young and future citizens of the Country, the State Government headed by the Sports minded Chief Ministet Shri Mohanlal Sukhadia is doing his best for the promotion of the Sports and games ●

चन्द्रगुप्त वार्ष्णेय

# पत्र-पत्रिकाएं और पत्रकारिता

राजस्थान मे पत्र पत्रिकाएँ प्रकाशित होने का सिलसिला करीब ८० वर्ष पहले शुरू हुआ और जहा तक मेरी जानकारी है, इसका प्रारम्भ अजमेर से हुआ। स्वामी दयानन्द ने सबसे पहले अजमेर म ही वदिक यत्रालय के नाम से छापाखाना खुलवाया था। इसके बाद स्वामी जी के एक शिष्य मुशी समर्थदान ने जो वदिक यत्रालय के प्रबन्धकर्ता रह चुके थे, अपना निजी प्रेस 'राजस्थान यत्रालय स्थापित किया। इसी प्रेस से मुशी समर्थदान ने १८८५ के लगभग राजस्थान समाचार नामक साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन शुरू किया। यही राजस्थान का सबसे पहला समाचार पत्र माना जाना चाहिए और मुशी समर्थदान को राजस्थान का सव प्रथम पत्रकार होने का गौरव मिलना चाहिए। इस त्यागी तपस्वी कमवीर ने पत्र निकालने के अलावा कई ग्रन्थ भी लिखे और प्रकाशित किये। १९१४ म उनकी मृत्यु पर चन्द्रधर शर्मा गुलेरी ('उसने कहा था' के कहानीकार) का जो लेख 'सरस्वती म प्रकाशित हुआ था उसके कुछ अश यहा उद्धृत करता हूँ। मुशी समर्थदान अपने नाम के आगे उर्दू शब्द 'मुशी' के बजाय सस्कृत शब्द 'मनीषि' का प्रयोग करते थे।

गुलेरी जी ने लिखा था—मनीषि जी ने पत्र का अपने से पृथक नही समझा। सकडो उससे कमाये और हजारो उसी मे होम दिये। पत्र पहले साप्ताहिक था, फिर अर्द्ध-साप्ताहिक हुआ। रूस-जापान के युद्ध की उमग मे इन्होने अपने पत्र को दनिक कर दिया। सच पूछिये तो यही हिन्दी का पहला व्यवसायी दनिक पत्र था। मनीषि जी ने वम्बई से तार-समाचार सीधे मगवाना आरम्भ किय। हिन्दी भाषा की अखबार-नवीसी में और राजपूताने के पत्र-पाठको मे उस दिन हर्ष और विस्मय का विचित्र सघर्ष हुआ जब टसुशिमा के युद्ध का समाचार आवू पहाड पर पायनियर से आठ-दस घण्टे पहले राजस्थान समाचार ने पहुँचा दिया। इस गुप-चुप काम करने वाले वृद्ध साहित्यसेवी के अध्यवसाय का उल्लेख करना उचित है।

'इनकी आशा, अपने उदार आदर्शों को क्षण मात्र भी न छोडती हुई क्षीण शरीर का छोड गई! घरबार प्रेस, ऋण, कन्या सब अव्यवस्था म रह गया, और रह गया इनके मित्रो का इनके कार्यों का स्मरण!"

खेद है कि आज राजस्थान के लोगो को इनके कार्यों का तो क्या, नाम तक का स्मरण नही है । यहाँ तक कि भारत-सरकार द्वारा प्रकाशित हिस्टरी आफ इण्डियन जनलिज्म' मे भी राजस्थान समाचार' का कोई जिक्र नही है । राजस्थान मे पत्रकारिता तथा साहित्य सेवा के इस अग्रणी को मैं शत शत नमस्कार करता हुआ श्रद्धाञ्जलि अर्पित करता हूँ ।

'हिस्टरी आफ इडियन जनलिज्म' के अनुसार राजस्थान समाचार से भी पहले १८६१ मे अजमेर से दो समाचार पत्र प्रकाशित होते थे । मेरे खयाल से एक थी 'मुन्नालाल नागरी प्रचारिणी पत्रिका' और दूसरा था 'भारतोद्धारक' । बहुत वर्षों बाद दयानन्द अनाथालय का एक मासिक पत्र 'अनाथ रक्षक' शुरू हुआ । यह वैदिक यन्त्रालय मे छपता था ।

राजस्थान की राजनीतिक समस्याओ मे सबसे पहले गणेश शकर विद्यार्थी के 'प्रताप' (कानपुर) ने दिलचस्पी लेना शुरू किया था । बीजोलिया सत्याग्रह के समाचार 'प्रताप' म ही प्रकाशित हुआ करते थे । इसके बाद पथिक जी ने वर्धा से 'राजस्थान केसरी' निकाला । अजमेर मे राजस्थान सेवा सघ की स्थापना होने पर पथिक जी के ही सम्पादकत्व मे 'तरुण राजस्थान' प्रकाशित होने लगा । सघ के भग बाद म यह पत्र मणिलाल कोठारी को सुपुर्द कर दिया गया और जयनारायण व्यास के सम्पादकत्व मे ब्यावर से निकलने लगा । पथिक जी न अजमेर से 'राजस्थान केसरी' फिर निकाला और जब इसमे जमानत तलब की गई तो उन्होने 'राजस्थान सदेश' के नाम से दूसरा पत्र निकाल दिया । यह भी थोडे दिन बाद बन्द हो गया । ब्यावर से रामनारायण चौधरी ने 'यग इडिया' नामक अग्रेजी साप्ताहिक निकाला जो कुछ ही दिन बाद बद हो गया ।

१९२८ म अजमेर स हरिभाऊ उपाध्याय के सम्पादकत्व म मासिक 'त्यागभूमि' का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ । इसम साहित्यिक तथा राजनीतिक दोनो विषयो की रचनाएँ छपती थी । कुछ वष बाद 'त्यागभूमि' ने राजनीतिक साप्ताहिक का रूप धारण कर लिया । राजस्थान मे राजनीतिक पत्रकारिता का युग यही से आरम्भ होता है । 'तरुण राजस्थान' के बन्द होने पर ऋषिदत्त मेहता ने, जो उसी मे काय करते थे, अजमेर से 'राजस्थान' साप्ताहिक निकाला जो कई वष बन्द रहने के बाद फिर चालू हुआ और आजकल बूदी से निकल रहा है । जयनारायण व्यास ने पहले 'राजस्थान' फिर राजस्थानी भाषा मे 'आगीवाण' निकाला, और जयपुर से लाडलीनारायण गोयल ने 'प्रभात' निकाला । ये भी कुछ दिन की झलक दिखा कर बन्द हो गय । 'प्रभात' का प्रकाशन फिर सत्यदेव विद्यालकार के सपादन मे शुरू किया गया लेकिन यह भी ज्यादा दिन नही चला । फिर बाबाजी (नृसिंह दास) ने इसे लगभग डेढ वष तक पुनर्जीवित रखा । इन समाचार पत्रो के बन्द होने का मुख्य कारण सरकार की कोप दृष्टि थी ।

१९३६ म अजमेर से 'नव ज्योति' साप्ताहिक का प्रकाशन आरम्भ हुआ जिसके सम्पादक दुर्गाप्रसाद चौधरी हुए । इस पत्र को जमानतो के मामले मे बडी मुसीबतें उठानी पडी, किन्तु यह इन विघ्न बाधाओ को पार करके चलता रहा और १९४७ मे दैनिक हो गया जो आज भी निकल रहा है । १९४५ म अजमेर स रामनारायण चौधरी ने 'नया राजस्थान' दैनिक निकाला जो एक वष चल कर बन्द हो गया ।

रियासतो से प्रकाशित होने वाले साप्ताहिको मे जोधपुर के 'प्रजा सेवक' का नाम उल्लेखनीय है । इसके सम्पादक अचलेश्वर प्रसाद शर्मा हैं और यह आज कल भी निकल रहा है । शर्मा जी एक निर्भीक

# यह
# राजस्थान है

अरावली की पर्वतीय उपत्यकाओं से घिरा, शोणित की धार से सींचा गया, सरस्वती की आँखों का अनुराग, जीवट, शौर्य, और सौंदर्य की त्रिवेणी। बलखाती नदियां, कलकल छलछल करते हुए नाले, कला कल्पना और सत्य का साकार रूप—

यह राजस्थान है। भारत का माथा गौरव से ऊँचा करने वाला राजस्थान। कोमल ऐसा कि छू लो तो हिया भर आये, आँखें छलछलाएं और कठोर ऐसा कि बलिदानों को सुनकर हिया फट जाये। अपूर्व समन्वय है। यह राजस्थान है।

गौरव की गाँठ बाँधकर चलता है। इसकी हर धड़कन जवान है। कहीं आँसुओं से झोली भर लीजिये और कहीं रक्तरंजित गाथाओं से तन मन रंग लीजिए। कलम और तलवार का धनी। दोनों एक दूसरे से बढ़कर। इसका इतिहास स्याही से नहीं लिखा जा सका, रक्त से लिखा गया है।

हिमालय जैसा स्वाभिमान बर्छी सी तीखी आन, शब्द गौरव का धनी बात का पक्का। नर ऐसे कि जैसे नाहर और नारियाँ ऐसी कि जैसे आग की कलियाँ। सिर काट कर प्यार की निशानियाँ भेजने वाली। कहीं मरुधरा, तो कहीं अंगड़ाइयाँ लेते डांग डूंगर, कहीं जौहर कुंड, तो कहीं घबरा देने वाले मौन और सन्नाटे। बबूल, बेर, सेहुंड, ऐरंड और कैक्टस के कंटीले पेड़ों से लदा। कहीं डबडबाते पुखर सी झीलें तो कहीं कटारी सी तीखी चुभन वाली रातें। प्रताप, पृथ्वीराज, दुर्गादास, साँगा, भामाशाह गोरा-बादल और जयमल पत्ता जैसे तूफानी साहसिक राष्ट्रवीरों का पिता। दुर्गावती, करणावती, पन्नाधाय, पद्मिनी और हाड़ा रानी जैसे अंगारों में खेलने वाली महिमामयी सती कुलांगनाओं की माँ। माँ और बाप दोनों एक साथ यह राजस्थान है।

जीवट साहसिकता और शृंगार का अप्रतिम समन्वय। आप ही कहिए कैसी सरस्वती होगी इसकी। एक हाथ में भाव गरिमा और शृंगार का आसव और दूसरे हाथ में बर्छी ढाल, कृपाण और कटारी। एक पर में रक्त का साहुर तो दूसरे में महंदी की मिठास। एक आँख में अमृत तो दूसरी में हलाहल। चंद और मीरा की जन्म-भूमि। दालामाह व महेंद्र मूमल जैसे प्रणयी प्राणियों का परिवेश। सचित्र ब्यासो—

चित्र, मूर्ति, वास्तु, सगीत तथा काव्य आदि का प्रतिपाद्य। बात बात में युद्ध और शरणागत वत्सलता का महान पुजारी। युद्ध की गोद मे शृ गार पल रहा है। यह राजस्थान है।

निसग के वैभव मे आकण्ठनिमग्न, अलकापुरी की भाँति उदग्र प्रासादो से अभिषिक्त, पाच पाच नीली झीलो के अ चल मे खिलता खिलखता और मचलता उसका सुरम्य नगर उदयपुर, जिसकी स्मृतिया ही किसी रसन को सिहरा देने के लिए पर्याप्त हैं। महाराणा बाप्पारावल, कु भा, सागा और प्रताप जसे इतिहास प्रसिद्ध वीरो की प्रसव भूमि। जिनकी साधारण शौय गाथाओ से यहा का कण कण बोलता है यह राजस्थान है। गोगुन्दा की निसग डूबी रम्य स्थली से कौन आख मूद सकता है। इसके वैभववान परिसर के साक्षी हैं श्री एकलिगनाथ। मदिरो के शिल्प मे भारतीय कला की जागरुक हँसती मुस्कराती तस्वीर, भक्ति और भावना के परिवेश मे सपोषित। श्री एकलिगनाथ, जिसम शिलालेखो और पुरातत्व के महान प्रामाणिक प्रमाणो की निधानकलश सामग्री है। पास मे राजसमद और जयसमद जसे ससार प्रसिद्ध कृत्रिम सागर। डबडबाते पुलक की भाति छलकने तार। आसमान से बातें करने वाला सज्जनगढ और दूसरी पिछोला, जो इस सुरम्य नगरी के इतिहास प्रसिद्ध जगमदिर और जगनिवास के भावना पूरित होकर सदव चरण प्रक्षालित करता है। किसी भी यायावर को उदयपुर प्रवश के साथ ही यह प्रतिध्वनि सुनाई पडेगी—यह राजस्थान है।

और उधर पास ही म, वीरो के शोणित से सनी (वीर भी ऐसे जो तलवार की धार पर चलन वाले) गुलाबा स लदी, हल्दायी देही वाली यशवीर, धमवीर, दानवीर, और युद्धवीर प्रताप के शौय का स्वच्छ दपण हल्दी घाटी है। जी हा यह वही हल्दीघाटी है जिसम जलबिहार महका करते थे और आज ? कौन जान ?

हा, तो आप उन स्तम्भो का दख रहे हैं। यह विजय स्तम्भ है बडा वाला गगन चुम्बी, जिसमे यह वीर कुम्भा की शौय गाथाओ अकबर और सलीम जसे मुगलवीरो को भी पानी भरना पड गया था। पास मे उधर तो देखिये वह स्मृति वह चबूतरा चेटक की यादें। आखे बरबस ही गीली हो जाती हैं जिसको देख कर याद आ जाती है वे पक्तिया 'राणा की पुतली फिरी नही, तब तक चेटक मुड जाता था। हमारे देश का प्रताप हमारी जाति का प्रताप, शौय का प्रताप हमारी सस्कृति आन और मर्यादा का प्रताप जिसकी आवास स्थली रूमानी भील फतहसागर पर खडी पहाडियो के भग्नावशेषो जिस दखकर सहसा स्मरण हो जाता है कि यही वह जगह है जहा से किसी दिन बच्चो के हाथ से बन बिलाव घास की रोटी भी छीनकर ले गया था, जहा शहशाह अकबर भेष बदल कर उस हिन्दुत्व के जागरुक सूय के दशन के लिए नगे पाव आया था। जिसकी समाधि को देखकर आज भी सुनाई पडता है जो "दृढ राखें धम को तेहि राखे करतार" वह 'अण नागल असवार प्रताप जिसकी स्मृति को लाख-लाख अभिनन्दन। जिसके शौय की गाथायें समय की धार म बही नही, तूय घोष की भाति आज भी मारी उदघोष करता है—

माई ? एहडा पूत जण जेहडा राणा प्रताप' यह राजस्थान है।

लीजिए आप आगे तारागढ़ पहुँचने के लिए निकल है, पर बीच मे बहुत कुछ छोड आये है। विश्वविख्यात दुर्ग चित्तौड जिसका अक्षय यश लोह लेखनी से पाषाण खण्डों पर खुदा है आइये चित्तौड चलें—मदिरा का चित्तौड, कला और कृपाण का धनी, शौर्य का अम्बार, शौर्य का शृंगार, और शौर्य का दर्पण। त्रिवेणी है त्रिवेणी। जी हा, यह सामने दीवार है दीवार उस इतिहास के कलक बनवीर की जिसके उस ओर उदयसिंह की सच्ची धर्म मा पन्ना का घर है जिसकी पन्ना था जिसने मालिक के रक्त का अपने बेटे के बलिदान से उज्ज्वल किया और यह पास ही पद्मिनी का जौहर कुण्ड है जिसकी लपटा मे अलाउद्दीन के दम की कालिख है, उसके मुह पर भारी तमाचा है।

चित्तौड? तुम्हारी स्मृतियो ने हमे आगे बढने से रोक दिया है तेरे सातो द्वार सप्तऋषियो की भाति जागरूक। तीन तीन साके साके भी ऐसे जिसम हजारों रानियो ने अग्नि स्नान किया, अग्नि स्नान। यह अवगाहन जीवन्त है—न भूतो न भविष्यति। इतिहास की अनोखी गरीब दासतां।

आप परेशान हो रहे है न? इन हवाओ से। जी हा, ये सन्नाटे की हवायें आपके अन्तराल का भेद रही हैं, अरावली की सासे है ये। इनमे कभी कुम्भा और कभी सागा की तलवारें चमका करती थी और कभी रानियो के जलविहार महका करते थे और आज ?कौन जाने?

हा! तो आप उन स्तम्भो को लग रहे हैं। यह विजय-स्तम्भ है बडावाला गगन चुम्बी। जिसमे यशवीर कुम्भा की शौर्यगाथाओ का इतिहास लिखा है जिसने जीवन भर युद्ध किया और अपनी अम्लान विजय श्री को यह विजयस्तम्भ बनवाकर अक्षय कर दिया है पराजय क्या होती है इसको महाराणा कुम्भा ने जाना ही नही। कुम्भा जिसके युद्धो की छाया म कलायें पली। भवन निर्माण कला, मदिर वभव सगीत शास्त्र। आज कुम्भा के "सगीतराज" की कोई सानी हो तो बताइये। और पास मे खडा यह कुम्भ श्याम का मदिर।

जनियो की धर्मयात्रा प्रतीक यह पास का छोटा कीर्ति स्तम, जिसके बने मदिरो की कला को देखकर आबू के देलवाडा जैन मदिरो का महमा स्मरण हो आता है।

यही कही आवाजें सुनाई पडेगी शौर्य के जीवन्त प्रतिमान गोराबादल की, जयमल पत्ता की। ये जुगल जोडिया जिन पर साहित्य म कुछ नही लिखा गया। जिनकी हुँकारो से चित्तौड सन्तुष्ट है, प्रफुल्ल है, गर्व से सिर ऊचा किये है। जयमल और पत्ता, गोरा और बादल-जी हा, यह राजस्थान है।

आप जानते हैं-पद्मा के महल के आगे यह मदिर क्या है। यह मीरा का मदिर है। जी हा, वही मीरा, प्रणय की दीपशिखा मीरा, जिसके भक्ति पूरित गीतों ने देश म तूफान मचा रखा है। शौर्य के ससार म भक्ति का वचस्व। शृगार की ओट म भक्ति का नवोन्मेष। महान कवियित्री और कृष्ण की असाधारण आराध्या जिसके नाम मात्र से पावनता का पुलक होता है। अनुराग के अगराग से आपूरित भक्ति के पराग से मधुरावेष्टित तथा आन और मर्यादा के राग से अनुप्राणित—यह मीरा का पावन परिवेश है, जिसके गीतो का एक बार गगाजल पी लीजिये, मन का सारा कल्मष धुल जायगा और सहसा कोई मन के पास आकर कहेगा "जोगी मतजा मतजा, मतजा, पांव पड़ूं मैं तेरे'।

आगे चलिये—वह कालिका मदिर और उसके आगे पद्मिनी के भव्य प्रासाद, जिसकी एक दर्पण झलक से पापी अलाउद्दीन अपने होश भूल गया था और जिसकी पालकियो मे से उतरे सहस्रो वीरो की तलवारो

के वारो से जिसकी नींदें हराम हो गई थी। सतीत्व, मानमर्यादा और राजपूती अभिमान से यह पूरित नारियो की आवास स्थली—चित्तौड जिसे शत शत नमन कोटि कोटि अभिवादन। चित्तौड जिसके लिए शताब्दियों से प्रसिद्ध है 'गढ तो चित्तौडगढ"। अनलकुंड और असिधार, यही इस तीर्थ के महात्म्य हैं। जिसकी आग, आजके अकर्मण्य मनुष्यो को चुनौती देकर परिचय देती है सुलगाती है यह कहकर कि—यह राजस्थान है।

चित्तौड दुर्ग पर खडे होकर बायीं ओर देखियेगा तो दिखेगी नर्मदा की पावन भूमि मालव। इतिहास प्रसिद्ध दशपुर, उज्जैन और तीर्थ ओंकारेश्वर। और इधर सामने डूंगरपुर, बांसवाडा, प्रतापगढ, जिसके आदिवासी भीलो के भालो और तीरो की नोको से मुगलसेना हाहाकार करती थी। और उसके पीछे दृष्टि डालियेगा तो दृष्टिगत होंगे कोटा बूंदी के इलाके। जहां के डाग, डूंगर, जहां की बरसाती नदियां और उसके जैसा उमडता वीरता का सैलाब। वही कोटा, जो आधुनिक डिंगल साहित्य के महान कवि केशरीसिंह बारहठ की जन्म भूमि और वह बूंदी, जिसमें वीर सतसई के रचयिता महाकवि सूर्यमल मिश्र का अवतरण हुआ था। "वीर सतसई" को पढ लीजिये राजस्थान क्या है और क्या था, यह सहज ही में समझ मे आ जायेगा।

कल कल छल छल करते नालो, पहाड की कटकाकीर्ण धरती और डूंगरो के कठोर कलेवर से निर्मित बूंदी के हाडा अपनी वीरता के लिए प्रसिद्ध है। हाडी रानी का नाम ससार प्रसिद्ध है प्यार के लिए सिर कटाकर निशानी भेजने वाली सिहरन होती है जिसका नाम सुनकर। कौन भूल सकता है उसे —यह राजस्थान है।

चलिये, अब चित्तौडगढ से तारागढ जसे गगनचुम्बी दुर्ग पर चलते हैं अर्णोराज का अजमेर और उसका एक सशक्त प्रहरी तारागढ जिसकी यश प्रशस्ति के निर्माता पृथ्वीराज का सहसा स्मरण होता है। जिसकी छाया मे जिसके कीर्ति पृष्ठ को कलकित करने वाला कहा कही एक नाम दिखाई पडेगा, *'जयचन्द'। ऐसे स्वार्थियो के पीछे देश ह्रास के गर्त मे गया। चौहान वश का सिर ऊंचा करने वाले* महाराजा पृथ्वीराज जिसकी तलवार वीरो के लिए एक स्मरण करने वाली वस्तु रही। हिन्दु राज्यो के वैभव एव शौर्य का अन्तिम दीप।

*और आगे कृष्णगढ (आधुनिक किशनगढ) जिसकी चित्रकला अपने मर्म के लिए विख्यात है* तथा जिसके राजघराने ने साहित्य की अजस्र सेवा की। महाराज रामसिंह महाराज सावर्तसिंह (नगरीदास) बनीठनी, बाकावती ब्रददासी आदि कवियो और कवियित्रियो ने साहित्य की अजस्र सेवा की। इसी कृष्णगढ के पास निम्बार्क सम्प्रदाय की महान गद्दी परशुरामपुरी का स्मरण होता है, जो भक्तिकालीन साहित्य के क्षेत्र मे अपना विशिष्ठ महत्व रखती है।

और आगे बढिये थोडा तो नजर आयेगा वैभव मे डूबा जयपुर नगर। कलाकीर्ति और चित्रकला के क्षेत्र मे उसका अपना महत्व है। जयपुर कलम के कई नमूने आप को यहा मिल जायगे और यह वही दरबार है जिसने बिहारी जैसे महान कवियो से सतसई की रचना करवाई जिसने कुलपति मिश्र जसे आचार्य कवि को सिरजा। दान मान और वैभव का अम्बार, पर आत्मा स्वाभिमान और इतिहास के क्षेत्र मे धर्म और वश

गौरव के क्षेत्र म जयपुर के अध्याय का एक ऐसा पन्ना भी है  जिसे पढ़ने म पीडा होती है और वही इसका कृष्ण पक्ष है । जयपुर यदि ऐसा नही करता तो देश का उस समय का इतिहास कुछ और ही होता ।

जयपुर से लगे है अलवर और भरतपुर । जिनके यश शौर्य म कोई कमी नही । अलवर पर प्रकृति बहुत प्रीत है । सुन्दर शल श्रेणियाँ, का निसग वभव अत्यन्त जीवट पूर्ण है जिनसे अनेक वर्षो तक कला और साहित्य की सेवा की ।

पिंगल साहित्य का उमेश्वर्ना भरतपुर, जिसने अनेक ब्रजभाषा के उत्कृष्ट कवि साहित्य को दिये सूदन एव बुद्धसिंह को नही भुलाया जा सकता । जहा के जाट आज भी अपने वीरत्व के लिए विख्यात हैं ।

भरतपुर मे थोडा आगे बढ़िये तो धौलपुर और करौली के पहाडी प्रदेश, जो चम्बल जसा उत्ताल शैवालिनी और प्रकृति के अक मे सजे हुए सुन्दर शृगार के जागरूक नमूने है । विचित्र वभव, विचित्र वेश भूषा, विचित्र मादव, हर बात म अपना एक वैशिष्टय हर बात मे अपनी एक मौलिकता 'यह राजस्थान है' ।

और आईये अब एक सिंहावलोकन मरुधरा का भी करलें । जिसके यश के प्रतीक नगर है बीकानेर जोधपुर और जसलमर । बीकानेर का अपना सौंदर्य है । वहा की भवननिर्माण कला, चित्रकला, और साहित्य सेवा सभी का अपना वशिष्टय है । कहते है, सरस्वती की धारा किसी समय यहा बहा करती थी लेकिन मरु के विशाल आकार मे जाने कहा विलीन हो गई । साहित्य और कलाओ की जितनी सेवा यहा के राजवशो ने की है, उतनी शायद ही कही हुई हो ।

यहां की रातें अपने शीत और मादव के लिये प्रसिद्ध है ग्रीष्म की प्रचण्डता म लू के थपेडे और बालू के बगूले, जिन्होंने देखे और सहे है वे जानते है कि बीकानेर क्या है । बीकानेर का सावन अत्यन्त आकर्षक है । यहा के तीज के लोक गीत हृदयहारी है । फागुन मे उफ के ठमके और नृत्य आकर देखिये तो सही । केवल मरुभूमि कहकर मत कतराइये ।

बीकानेर के बाद जोधपुर का सौंदय भी अपने ढग का है बीकानेर और जोधपुर से सटे शेखावाटी प्रदेश म भी विद्या का केन्द्र है जोधपुर अपन सौन्दय, कला, और साहित्य सेवा के लिए प्रसिद्ध है । इतिहासकार गौरीशकर, हीराचन्द ओझा ने अपने इतिहास म मरुधरा का मम स्पश किया है । जोधपुर ने साहित्य की प्राचीनकला से सेवा की है । मरुधरा के हृदय म इतना रमणीय नगर भी हो सकता है उसकी आपने कल्पना भी नही की होगी । इसी मरुधरा को देखकर सहसा ढोलामारू जैसे प्रणयी प्राणियो का स्मरण हो आता है । ढोलामारू के साथ ढोला का वाहन करहा (ऊट) यहा का प्रसिद्ध पशु है । जिसे लोग मरुभूमि का जहाज कहते है । इटली का प्रसिद्ध विद्वान स्वर्गीय डा० एल० पी० तेस्सीतोरी वर्षों तक इन प्रदेशो मे रमा और यही देह छोडी । यहा के तूफानी और रूमानी आकर्षण म एक बार फसा उस पर कामरूप हो गया समझियें । मुमियर दे नरबद ससी पन्नु और हीर राझा जसे ही प्रणयी है । यहा के कण कण म इस तरह के जाने कितने प्रेमियो के इतिहास छिपे है । शताब्दियो का इतिहास इनमे लिपटा है । समय का झोका इन रूमानी पात्रो के शाश्वत सौंदय को धूमिल नही कर सका—जी हा,-यह राजस्थान है ।

और अब हम जैसलमेर मे हैं। मरुभूमि का प्राचीनतम नगर, विद्याओ और कलाओ का केन्द्र। भवन निर्माण कला, यहा के भडार और हस्तलिखित प्रतियो की प्राचीनतम उपलब्धियाँ जैसलमेर की ही देन है। यहा के भडारों ने ताडपत्रीय प्रतिया के प्राचीनतम रूपो की रक्षा की है।

यही उधर देखिये—एक मेडी दिखाई पडती है खडहर हो गई लेकिन बोलती है पास जाकर बैठने पर बात करती है। जी हा, उसम दद है इतिहास के जागते पन्ने हैं। नाम है, मूमल की मेडी। महान प्रेमी महेन्द्र की प्रणयगाथा की प्रतीक मूमल। जिसके लोकगीता न तहलका मचाया था। जिसके स्वाभिमान ने महेन्द्र जसे प्रणयी को आश्चय म डाल दिया और जो कभी अपने सकल्प से च्युत नही हुई।

भवना का शिल्प एक इतिहास ही अपने म समेटे है। मीलो तक रेत ही रेत। लेकिन कभा कभी युगा से शुष्क नदियो मे ऐसी बाढें भी आ जाती हैं जिनका वणन हम कहानियो म पढते है। शरीर यहा के ऐसे सुगठित एव मासल कि मृत्यु पयन्त न ढलें।

*प्रेम और शौय का अपूव सम्मिश्रण देखना हो तो आप राजस्थान आइए। कला, कल्पना, सत्य और सौन्दय का मार्मिक समन्वय भारत भर मे अन्यत्र नही मिलेगा —यह राजस्थान है।*

वीरा के शौय से यहा का कण कण रगा है। यह धरती यदि एक ओर अपने माथे पर कठोर स्वाभिमान का टीका लगाय है तो दूसरी ओर अपनी सुरम्यता और निसग डूबी कोमलता के लिए प्रसिद्ध है। निश्चित रूप से इस इलाके का निर्माण किसी उदग्र निसग प्रेमी रूमानी कलाकार के हाथा हुआ होगा, ऐसा हमारा विश्वास है। इस धरती को जसा सुना, उसस हजार गुना अधिक पाया। यहा की ठडी रातें अपने सान्द्रस्पर्शों से जीवन्त हैं तो मरभूमि के तूफान और डाग डूगरा के पहाडी रूप अपनी घुमन और सन्नाटो से अनुप्राणित है। झीला का सौन्दय यहा का दपण है। ढलते सूरज की परछाईयो जिन्होने राजस्थान की झीलो मे देखी है यहा की भोरकालीन मोहक हवाओ को जिन्हाने सासा से पिया है, यहा के एतिहासिक भग्नावशेषा एव प्राचीरा से जिन्होने अकेले मे बातें की है वे ससार के भाग्यशाली प्राणिया में से हैं।

इसकी धडकनो मे यौवन है–शौय की गाठ बाधकर चलता है। बात कलम और तलवार का धनी।

जीवट का शृगार का सगुम्फन। इसकी सरस्वती ऐसी जिसके हाथ म बर्छी और तलवार और दूसरे हाथ म शृगार का आसव। चद्र और मीरा और बिहारी की जन्मभूमि। कुलपति सूदन, दुरसा, पृथ्वीराज ईसरदास, नगरीदास, सूयमल और करणीदान की मातृभूमि। सरस्वती के वरदपुत्रो का परिवेश, दूधिया शवरी की शात स्निग्ध एव सौम्य मुस्कानो से स्नान इस धरती मे एक बार आईये तो। *यहा की हवायें आमन्त्रित करती है। यहा के मौन सन्नाटे अजीब सिहरन देते है। यहा के मनुष्यो का* व्यवहार एक दम पारिवारिक, स्नेह डूबा और आत्मीयता पूण है।

शात नीले नभ-मडल मे सध्या समय जब सफेद बक पक्तिया किसी अज्ञात दिशा म उडाने भरती है तो इस धरती मे आकर उनसे आपको सहज ही किसी मेघदूत पवनदूत या हसदूत की स्मृतिया पुलकित करने लगेगी। *भगवती सरस्वती का यह प्रसाद यहा कला और कृपाण स्नेह और सौन्दय तथा* प्यार और पूजा को लेकर मुखरित हुआ है। कलाओ को पोषक, लोकगीतो का अचल तथा साहित्य का उन्मेष सबकी त्रिवेणी है। जी हा त्रिवेणी—'यह राजस्थान है।'

# हमारी सांस्कृतिक धरोहर

संस्कृति शब्द का अर्थ बडा गहन एव विशाल है केवल साहित्य और सगीत ही इसके अतगत नही आते, बल्कि कला-कौशल शिल्प, महल, किले हमारी पोशाक, हमारे त्यौहार रहन सहन, खान पान, तहजीब, तमीज, सभी सस्कृति के अन्तगत आ जाते है। थोडे शब्दो म कहा जाय तो, जो मनुष्य को मनुष्य बनाती है वह सस्कृति है।

राणा प्रताप पर हम गौरव करते हैं हमारी पीढिया इन पर गौरव करती आयी है, सारा देश उन पर गव करता है, उस शूरवीर प्रताप मे भी एक बार कमजोरी आ गयी, उस नाजुक समय म हमारा साहित्य काम आया, दो पक्तियो के एक दोहे के प्रताप ने प्रताप को जागृत कर दिया। महान् पराक्रमी प्रताप को डिगते हुए पहाड को, सहारा दकर थाम लिया, ऐसे साहित्य का भला कोई मोल हो सकता है ?

वीररस की बात रहने दें, भक्ति रस को ही लें। आज तक दुनिया के पर्दे पर मीरा जसी स्त्री पैदा हुई है ? साहित्य ममनो और विद्वानो का मत है कि साहित्य की दृष्टि से, भक्ति की दृष्टि से और लोक-प्रियता की दृष्टि से मीरा जसी अन्य महिला न जन्म नही लिया। इसके भजन हमारे देश मे गाव गाव और घर घर मे चाव से गाये जाते हैं। देश के हर कोने म, चाहे वहा पजाबी बोली जाती हो चाहे गुजराती या बगाली मीरा के भजन गाये जाते हैं। म्हे तो लियो सावरिया ने मोल' ये शब्द क्या किसी साधारण नारी के मुँह स निकल सकते थे ? ये शब्द उसी मुँह से निकल सकते हैं जो पवित्र भावनाओ से ओत-प्रोत हो। ऐसे शब्द उसी कलेजे से निकल सकते हैं जो जन मानस मे बसा हुआ हो। राजस्थान की सस्कृति के लहराते ध्वज की मीरा उजली पट्टी है।

वीररस और भक्तिरस सा ही उज्ज्वल और ऊचा हमारा शृगार रस है। वह काल का शृगार है। हमारे राजस्थान की, राजस्थान के साहित्य की और राजस्थान की सस्कृति की यह खूबी है कि यहा वीररस और शृगार रस मिलाकर एक हो जाते हैं। नव विवाहिता हाडी रानी की 'सहनाणी' मे से कोई शृगार से वीररस को अलहदा कर सकेगा ? विवाह मडप मे अधूरे फेरे छोड, गेठ जोडे की गाठ खोल, गाया की रक्षा के लिए दौडने वाले पाबूजी की गाथा म कितना वीर रस है और कितना शृगार, कोई बता सकता है ?

राजस्थान के लोक साहित्य की मोटी खूबी उसकी लोक-वार्ता म है । यो तो लोक-वार्तायें कहा नहीं मिलती ? उत्तर प्रदेश मे आल्हा ऊदल, सिंध मे शशि-पुनु, पजाब म हीर रांझा, हर जगह की अपनी लोक वार्तायें हैं । पर राजस्थान तो लोक-वार्ताओ का खजाना है । कथा की दृष्टि से, नायक की दृष्टि से, उनके चरित्रो की दृष्टि और पात्रो की दृष्टि से यहाँ की गाथाओ की कोई तुलना नही ।

का हडदे वीरमद, जगमाल मालावत जैसी अनेको पराक्रम और वीरता से भरी कहानिया को सुनते सुनाते रोगटे खडे हो जाते हैं । बलिदानो से सराबोर, प्रेम से छलकती सोरठ बीझाँ, जलाल बूबना, आभलद खीवजी आदि वार्ताओ के सौरभ से अभी तक राजस्थान महक रहा है । इनकी याद से जहा हमे गौरव होता है, हमारी छाती फूलती है, प्रसन्नता होती हैं, वहा कलेजा फटता है और आखें आसूओ से भर आती हैं । हमारे ये अमूल्य रत्न मिट्टी म दबे पडे हैं, कोई उन्हें सँभालने वाला नहीं । कोई इनकी कद्र करने वाला नही, कीमत आकने वाला नही, हिफाजत करने वाला नही ।

हम देखते हैं अपने पडोसी राज्य को, व अपनी लोक-वार्ताओ पर गौरव करते । थकते नही । वहाँ के विद्वान उन पर शोध-काय करते हैं । उन्होने, उन पर नाटक लिखे हैं रग मच पर लाये हैं, पर हमारे राज्य मे किसी का ध्यान ही उधर नही गया, न के बराबर काम इस क्षेत्र मे हुआ है । यदि हमने बदलते हुए युग मे इनको खो दिया, भुला दिया,-तो आने वाले युग मे कौन सी वार्ताओ के ऊपर हमारे यहा ऑपेरा के स्वरसाधे जायगें । गान रचे जायेंगे ? राजस्थान के कलाकार के पास राजस्थानी रग मच पर प्रस्तुत करने को रहेगा क्या ? अभी हमने जो टैगौर थियेटर बनाया है उसम इन विस्तृत लोक-गाथाओ को नवजीवन मिले तो हमारे पूवजो की आत्मा तृप्त होगी ।

सस्कृति का एक बडा अग लोक-सगीत है । वियोगाग्नि से जले, अन्तरतम से कल-कल कर बहते हुए प्रेम के अमृत से भरे राजस्थान के लोक गीता का क्या कहना ? सौभाग्यशाली देशा के पास ही होने हैं एसे अमूल्य खजाने । जैसलमेर की रमणीय रातो की 'मूमल मारवाडी की 'मन मावनी माड अरावली पवत मालाओ मे गूजती हुई, 'जलामारू की रस-भीनी रागें, उदयपुर की झोला लेती पनिहारी' कालिदास के मेघदूत की पवन गामिनी कुरजा घूम घूमाती घुम्मर,' 'लू ब लू बाला गौरबन्द,' हमारे इन भाव भीने गीतो को कौन सँभालेगा ? कौन सँवारेगा ? नये युग म हमे इन्हे नये ढग से प्रस्तुत करना है ।

लोकगीत ही क्या, गति और यति से छनकते हमारे लोक नृत्य कौन से कम हैं ? 'घूम घूमाली घुम्मर' आज और जीवन से परिपूर्ण है । गर, चचल चमल फूदी राजस्थान के जन-जीवन की सजीवनी बूटिया हैं इसी बूटी की घूटी ले ले राजस्थान का जन-जीवन नगा भूखा रहते हुए भी मस्ती से जिया है । यदि हमने उससे उसकी यह सजीवनी बूटी छीन ली या दूर कर दी, तो जन-जीवन मानसिक भूख के मारे तडप-तडप कर मर जायेगा । भीलवाडा के भील-भीलनियो के थाली मादल के नाच अबुद-पवतवासी गिरासियो के सामूहिक नाच, जहा सहस्रो नर नारी एक साथ मिल कर नाचते हैं, पर मजाल कि एक ताल कोई चूक जाय यह सब देखते ही बनता है । इस मदमानी लोक-सस्कृति को क्या लुप्त होने दिया जाय ? यदि नही, तो इसकी रक्षा का काम हमे प्रयत्न पूवक करना है ।
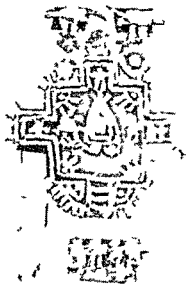
षोडष-कला निधि नट-नागर, कलाकारों के प्रेरणा-स्रोत भगवान् श्रीकृष्ण की एक रस-परिपूर्ण छवि, देवकिशनजी पाणेरी की रग भवन के घोटाई के चित्र की एक सरल रेखाकृति

वशीवट

सांभी बानि वाओ ओर महि लाग्रा के

उल्लास का पव है जिसमे नारी जीवन की कोमलतम भावनायें सइया वाई की वगत विदाई ग्रादि के रूप मे गुथी हुई है। माडना के दो नमूने

राजस्थान भर म गणगौरी तीज उत्साह से मनाई जाती है। तीजोत्सव के मेले का एक दृश्य

गौ पूजन मी हमारी सस्कृति का एक अग है

वृक्षों के प्रति
ऐसा
कृतज्ञता ज्ञापन
और कहाँ मिलेगा ?
पीपल, बरगद,
आवली, और तुलसी
हमारी
सांस्कृतिक
भावना के प्रतीक
बन गये
हैं

दीपावली
की
शोभा
विभिन्न
प्रकार
के
मांडना
से
और बढ़
जाती

चबा घाटी के १८ वी
शताब्दी के
जीर्ण महल
से
उद्धार कर के नई दिल्ली
के
सग्रहालय मे लाई गई
एक
सुदर कला कृति
का
रेखा चित्र

राजस्थानी लोक जीवन
के
सास्कृतिक मडन
'साझी
का
एक नमूना
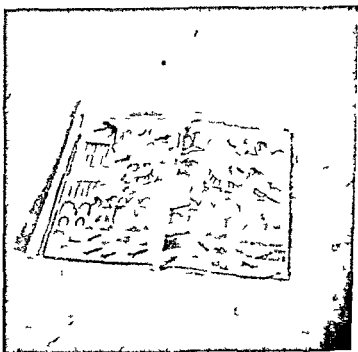
अंगड़ाई लेती कोमलांगी, बापना की हवेली, उदयपुर का घोटाई चित्र

मृगावती पाणेरी देवकिशनजी के रंग महल, उदयपुर का घोटाई चित्र
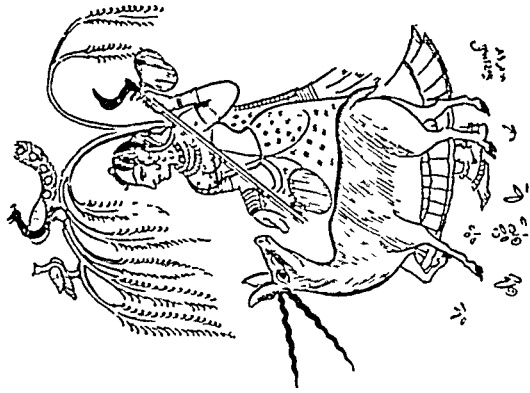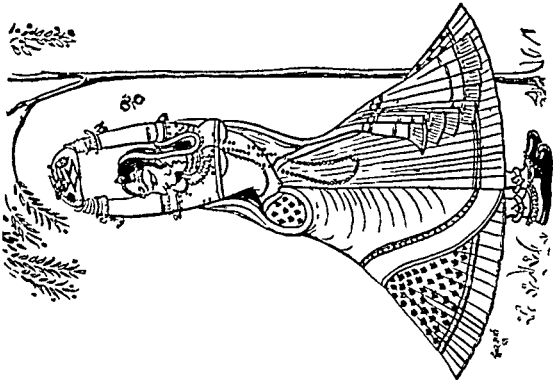
शिव पचायतन त्रिवाडी दौलतराम जी की हवेली उन्यपुर, के लाक्षा रस-गृह
(रगमहल) म चित्रित अनुपम लाक्षा-रस चित्र

राजस्थानी लोक-सस्कृति के अनेक रूप हैं। हमारे त्यौहर राग-रग, आनन्द उमग उत्साह और प्रेरणा से तो परिपूर्ण हैं ही, पर एक बडी विशेषता है उनकी सामूहिक भावना। भावनाओ की जसी बारीकी है, वसा ही उनम जोश और ओज भी है। हमारे यहाँ की सावन के होड और तीजें दशहरे के चौगानिये, सक्राति क दडे (खेल), गणगौर की गेरें, और जगह ऐसे कहा हैं जोश खरोश भरे त्यौहार ? अफसोस कि यहाँ भी अब य बडी तेजी के साथ लुप्त होने जा रहे है। यह हमारा दुर्भाग्य है किसी का ध्यान इस ओर नही। दूसर स्थाना के लोग सजग हैं जागरुक हैं। वे अपन त्यौहारो के द्वारा नव-जागृति पदा कर रह हैं नव ज्योति जगा रहे हैं। महाराष्ट्र की मिसाल हमारे सामन हैं। गणेश चतुर्थी वहा राष्ट्र त्यौहार बन गया है। बगाल की दुर्गापूजा तो एक पव है। पूजा के दिना म नाटक, नृत्य, भाषण कवि सम्मेलन, काव्य पाठ सगीत, और अनेक प्रकार की सजावटो के द्वारा वहा की कला और सस्कृति का प्रदशन बडे आकषक ढग से किया जाता है। पूजा के त्यौहार के द्वारा वहा के जन जीवन को बल दिया जाता है प्रेरणा दी जाती है, नवजीवन और नव-ज्योति उनमे जगायी जाती है। क्या हमारे त्यौहारो म नव-जागृति पैदा करने की क्षमता नही है ? बल नही है ? है क्या नही, बहुत है। परन्तु कौन कराये ? आज हमारे राज्य मे एक ऐसी सस्था की आवश्यकता है जो हमार त्यौहारो को पुनर्जीवित करने म हमारा माग निर्देशन करे।

केवल त्यौहार ही नही, अपनी पोशाको की ओर भी तो हम ध्यान दें। हमारी पोशाको म कितने प्रकार के रग हैं ? विदेशी हमारे रगो को देखकर चकित रह जाते हैं। राजस्थान जसी बहुरगी और सुरगी पोशाकें कदाचित ही कही और देखन को प्राप्त हो। पोशाको का जिक्र आते ही मुझे एक घटना याद आ जाती है—श्री नेहरू उदयपुर आये थे, सभा जमी हुई थी चारो ओर बहुरगी, सुरगी, पोशाकें लेहरिये, चूदडिया, मोठडे पीलिये, फागणिये, साफे पगडिया और केशरिया कसूमल दिखाई दे रह थे। नेहरूजी ने चारो ओर दृष्टि डाली ध्यान से देखा, मुस्करा कर बोले–राजस्थान वासियो ! और आप चाहे अपनी दूसरी बातें भूल जायें, पर अपने रगो को मत भूलना।

नेहरूजी ने हमारी सस्कृति का मूल्य समझा प्रशसा की यह तो हमारे लिये खुशी की बात हो सकती है, पर उन्होने जो हमे एक काम सौंपा, उस का मम हमम से कितने लोगो ने समझा ? क्या हमने उस काय को पूरा करने के लिये कोई कदम उठाये ? नही बल्कि सच कहा जाय तो पिछले पन्द्रह बीस वर्षो से हमसे हमारी सस्कृति को बडी हानि पहुची है। हमने उसकी उपेक्षा ही नही की अनादर किया है। डूगरपुर की भीलनियो के वस्त्रो म जो कला और सौन्दय था उसे हमने छीन लिया सुधार के नाम पर उन्हें सफेद कला विहीन कपडे पहना दिये, उनके जीवन से मस्ती छीन ली नेहरूजी ने हम जो काम सौंपा था अपनी सस्कृति की रक्षा का उसे पुनर्जीवित करने का तथा उसका विकास करन का इस काय को हम न कर पाये।

हमारी सस्कृति की खूबियो को कहा तक गिनाया जाय ? हमारी शिल्प कला भी अपने ही ढग की अनोखी है। कितना सौन्दय है कितनी सुघडाई है ? जसलमेर के जालीदार झरोखे मडावर के मालिये, उदयपुर की कमानीदार छतरियाँ, पीछोला के पानी को चूमते छज्जे वाले नोमडे, दलवाडा का मन्दिर,

रणथम्भोर का किला, ये हैं हमारे शिल्प के नमूने। देश विदेश के लोग दूर-दूर से इन्हें देखन के लिए आते हैं, उनकी प्रशसा करते हुए थकते नही।

सभी विकसित देश अपनी लोक सस्कृति के उत्थान और विकास के लिए पूरा प्रयत्न करते हैं। मैं उन बडे-बडे रूस जैसे मुल्कों की बात नही करती जो बहुत बडी धन राशि, लोक-सस्कृति का विकास करने के लिए खच करता है, मैं लेनिनग्राद के पुश्किन इस्टीटयूट की बात भी नही करती जहा लोक सस्कृति के प्रत्येक अग का अलग विभाग है ताशकद की अकादमी की नजीर भी नही रखना चाहती जहा एक अकादमी के अन्तगत पूरी अटठारह इन्स्टीटयूट काम कर रहे हैं अमेरिका की नजीर भी नही रखती हूँ जहा के कालेजो म लोकगीतो के लिए दो सौ अध्ययन केन्द्रो की व्यवस्था है, मैं वाशिगटन म स्थित अमेरिकी काग्रस की नजीर भी नहीं देना चाहती, जहा के पुस्तकालय मे साठ हजार लोकगीत रिकाड किये हुए रखे हैं। मैं नजीर आपके आगे रखती हूँ रूमानिया और नार्वे जसे छोट छोटे देशो की। रूमानिया हमारे देश से बहुत छोटा मुल्क है वहा की आबादी भी हमारी आबादी से लगभग तीन चौथाई है। ऐसे छोटे मुल्क न भी अपनी लोक-सस्कृति का विकास करने के लिये बहुत काम किया है, परिश्रम किया है पुराने घरा को बुनियाद सहित उठा-उठा कर लोक सस्कृति म्यूजियम म रख दिया है। एक-एक नृत्य की फिल्मे उतार ली है। एक एक लोकगीत के एक एक बोल को रिकाड कर लिया है। लोक-सस्कृति के एक-एक अग पर शोध कर के उन्हें सग्रह किया गया है। उन्हे पुनर्जीवित कर उनके द्वारा जन-जाग्रति पदा की जा रही है। वहा के बच्चे-बच्चे को अपनी सस्कृति पर गव है। नार्वे का लोक सस्कृति म्यूजियम तो पूरी की पूरी नगरी है। सभी जागरूक देश अपनी-अपनी लोक-सस्कृति के विकास के लिए प्रयत्नशील हैं। हम ही ऐसे हैं जो आख मूदकर बठे हैं, गाफिल है।

यदि हम अब भी समय रहते न चेते, तो हमे पछताना पडेगा। यदि हमने अपनी सस्कृति की धरोहर को सँभाल कर नही रखा, तो राजस्थान, राजस्थान नही रहेगा। आने वाली पीढी हमे कभी माफ नही करेगी। ●

सभी कुछ हो रहा है इस तरक्की के जमाने मे,
मगर गजब ये है कि आदमी इन्सां नहीं होता।

—फिराक

# कला का स्वरूप

प्रत्येक युग में जीवन की मान्यताओं के मूल्य बदलते रहते हैं तथा परिस्थिति विशेष में जीवन की आवश्यकतायें घटती बढ़ती रहती है। हमारे देश के कला-कौशल को भी यदि इस दृष्टि से देखा जाय, तो उसकी मान्यताओं पर ऐसी ही प्रतिक्रिया होती रही है। कभी उसका स्तर चरम सीमा तक पहुंचा और कभी उसकी गतिविधियों पर पतन की छाया दिखलायी पड़ी। उसका उपयोग विविध रूपों में हुआ।

हमारे देश की आजादी के पहले कला कौशल का उद्देश्य पूंजीपतियों की इच्छाओं को तृप्त करना ही था, उसमें कलाकार की अपनी अभिव्यञ्जना, स्वतंत्र विचारों की परिपुष्टि और मर्यादाओं के बाहर पाँव रखने की आज्ञा नहीं थी। जो कुछ व्यक्त किया जाता था, एक रूढ़ि के अन्तर्गत और नियमों की सीमा में सुरक्षित था। शासक वर्ग की आज्ञाओं पर तथा धर्म गुरुओं के संकेतों पर कलाकार फूंक फूंक कर पाँव रखता था, अपने आश्रयदाता की अभिरुचि पर कलाकार सृजन कर आगे बढ़ता था। धर्म के प्रति कठोर नियमों की अर्गला सदैव उसकी कल्पना के द्वार पर लगी रहती थी। आदेशों के स्वर-संकेतों का अंगुली-निर्देश, कलाकार की तूलिका का पथ निर्देशन करता था। कलाकार का अस्तित्व भी एक अच्छे आज्ञाकारी भृत्य के सिवा कुछ नहीं था।

मुगल काल की शासन तिथियों से लेकर राजपूत काल तक के कलाकार का यही रूप था, किन्तु उस प्रभुत्व के भय से सृजन के स्तर में असाध्य श्रम की अभिवृद्धि भी इतनी हो गयी थी कि श्रम और साधन रहित कोरी कल्पना हेय दृष्टि से देखी जाती थी। शिकार, सवारी, जनाने-मरदाने, आम और खास उपस्थितियों में कलाकार हाथ बाँधे खड़ा रहता था। शेरों की गर्जना और बन्दूकों की दिल हिला देने वाली कठोरतम ध्वनियों में तूलिका भेलती रहती थी। भागते हुए घोड़ों पर दौड़ते हुए चित्रकार को अपनी कुशलता का परिचय देना पड़ता था। साथ ही मौत और स्वर्ण मुद्रायें एक ही जगह पर रहती थीं। दोनों में से कोई भी एक वस्तु हाथ लग जाय। इस युग के आगे धर्म की पग-डण्डियों पर कलाकार को चलना पड़ा। आरती और उत्सव, शयन और उत्थापन की भांकियाँ चित्रित करता रहा। कलाकार के इस कृतित्व में आदेशों के स्वर थे। देवताओं के कृपा-कटाक्षों का निक्षेप ही परम तुष्टि थी। सूरदास और तुलसीदास के भक्ति अभियानों का ही कलाकार एक अंग था, यद्यपि मर्यादा काल के अन्तर्गत कलाकारों की उच्छृंखल प्रवृत्तियां शान्त हो गयी थीं। उसके सम्मुख

एक उद्देश्य था, एक पगडण्डी बन गयी थी, जिस पर उसे चलना था। सहसा अँग्रेजो के आगमन के पश्चात कलाकार का काम सस्ती शबीहे बनाना तथा अँग्रेजी तसवीरो की प्रतिकृति करना शेष रह गया था। उसकी धार्मिक निष्ठायें छिन्न भिन्न हो गयी और वह पथ भ्रष्ट होकर इधर-उधर भटकने लगा कि वह क्या करे? अँग्रेज मेमो की तसवीरो को मुकुट पहना कर राधा बना लेना, अग्रेज पुरुषो के चित्रो को कृष्ण का रूप दे देना उसकी कला बन गयी। राजा रविवर्मा ने अग्रेजी चित्रकला को अपना कर एक नये युग की स्थापना की। विषय वस्तु भारतीय तथा शैली अग्रेजी कला से ली गयी। वह वर्ण शकर कला कुछ दिनो चली, पुन एक नवजागरण अवनीद्रनाथ और उसके शिष्यो ने उपस्थित किया, किन्तु कलाकार के लिए राजा रईसो के दरवाजे खटखटाने के सिवाय कोई उपाय आजीविका के लिए नही था। शिक्षा मे कला का स्थान दिया जाने लगा, किन्तु उपेक्षा की दृष्टि से ही इस विषय को देखा गया। उसके लाभो पर, उसकी महत्ती देन पर किसी ने दृष्टिपात नही किया। कलाकार भूखा, नगा, तिरस्कृत और आवारा समझा जाने लगा। केवल मासिक पत्र एक मात्र आधार थे, जिसके द्वारा कला के महत्व को प्रकाश मे लाया गया। कलकत्ते के माडर्न रिव्यू मासिक ने, इलाहाबाद की मासिक सरस्वती ने यह बीडा उठाया और कलाकार के लिए एक स्थान बना। साहित्यिक क्षेत्र मे उसका पदार्पण हुआ तथा कलाकार को एक सम्मान मिला, जो बहुत दिनो तक नही टिक सका। रगीन फोटोग्राफी ने कलाकार का यह क्षेत्र भी हस्तगत कर लिया। कला, कलाकार, कला, कलाकार एक ध्वनि ऊपर उठी। स्वदेशी आन्दोलन ने कलाकारो के प्रति, कला के प्रति सौहार्द प्रदर्शित किया और हमारी कला, हमारे देश की कला, एक नारा आसमान को छूता हुआ निकल गया। इन्ही क्षणो मे आजादी के दर्शन हुए। आजादी एक खूबसूरत सपने की तरह आयी। आशाओ के असीम कल्पित आश्वासनो की गाठे बाधे, वह सामने आ खडी हुई। कलाकार ने भी सुनहरी किरणो की तरह आजादी के आलोक को देखा। आजादी के साथ ही कलाकार अन्तर के सारे बन्धन तोड कर आगे आया। पाश्चात्य प्रभावो से घिरा वह अपने देश की कला का कोई रूप निर्धारित कर ही रहा था कि विदेशो के आधुनिक आन्दोलन ने उसे अपनी ओर आकर्षित कर लिया। कलाकारो की भीड उस प्रलोभन पर टूट पडी और आधुनिक कला का युग हमारे सामने आ खडा हुआ। क्रान्ति की हुकार भरता मर्यादाओ को छिन्न-भिन्न करता, कला के पुरातन प्रासादो को ढहाता हुआ, नग्नता के नारे लगाता हुआ विध्वस की आधियो का चित्रित करता हुआ आजादी के वातावरण मे आधुनिक कलाकारो का यह जत्था अपने लिए एक स्थान बना पाया। सरकार ने ललित कला अकादमियो का निर्माण किया। कलाकार पुरस्कृत हुए। मासिक पत्रो ने उन कृतियो की आलोचना की। साथ ही विदेशी जनता ने भारतीय कलाकार का मूल्याकन किया। सरकार ने धन की बहुत राशि कला के उत्थान के लिए लगायी, किन्तु अभी भी जितना होना चाहिये, नही हो सका है। हमारे इम्पोरियम,हमारी अकादमियो के कलाकारो की आजीविका के लिए कोई अच्छा हल नही सोच पाये हैं। अभी भी कलाकार अपनी कृतियो से किस प्रकार उपार्जन कर सके, यह प्रश्न चिन्ह हर घडी हमारी आखो के आगे आ जाता है। आजीविका की दृष्टि से कलाकार आज से सौ बरस पहले अधिक निश्चिन्त था कारण कि उसे जनता का सहयोग मिल चुका था, किन्तु आज कलाकार को जनता का सहयोग प्राप्त नही है। कुछ तो कलाकार जनता से दूर चला गया कुछ जनता ने उसे समझने मे कठिनाई का अनुभव किया। सक्षेप मे आजकल का मूल्याकन केवल सिद्धान्तो मे रह गया है। उसकी व्यावहा-

रिक उपयोगिता नही के बराबर है । तब भी हम यह कहन म सकोच का अनुभव नही करते कि कला के क्षेत्र मे बहुत बडी प्रगति हुई है और कला के सरक्षण की ओर हमारी रुचि बढने लगी है । इस दिशा मे हमारी प्राचीन कला ने बहुत बडा जादुई प्रभाव फैलाया है । विदेशी लोग हमारी प्राचीन कला पर इतने मुग्ध हैं कि प्राचीन कला की वस्तुग्रा का एक मार्केट तैयार हो गया है, जिससे विदेशी मुद्रा हमार देश मे आन लगी है ।

आजादी के पश्चात कलाकार और कला का जो स्थान बना है उसकी सुरक्षा के लिए, उसकी व्यावहारिकता के लिए, अब कोई समझबूझ का कदम उठाया जाना आवश्यक है । आज का कलाकार जाग्रत है, किन्तु उसकी कला जनता के मस्तिष्क और मन से इतनी दूर चली गयी है कि जनता और कलाकार के बीच बहुत बडी खाई बन गयी है । न कलाकार जनता के निकट आता है न जनता कलाकार के निकट जाती है । एक भय है एक उपेक्षा है, तब भी सरकार चाहे तो कलाकार की और जनता के बीच की यह दूरी हटायी जा सकती है । शिक्षा के द्वारा कला का प्रसार प्रदशना के द्वारा कला का प्रसार एक युक्ति है । किन्तु उसके लिए निस्वाथ निर्देशन की आवश्यकता है । हमारे देश की कला ससार के सभी देशा मे आदर पाती जा रही है, यह बहुत अच्छा लक्षण है कि तु इसके पीछे प्राचीन कला का प्रलोभन ही मुख्य है । आधुनिक कला तो विदेशो म भी सुलभ है और वह विदेश ही से आयी है इसलिए उसकी अधिक माग हा यह सम्भव नही है, कि तु प्राचीन कला म एसा जादू है, जो विदेशी जनता का लुभा लेने के लिए बहुत अधिक सक्षम है । कौन हमारे कलाकारो, हमारे देश की कला को प्रकाश म ला कर उससे लाभ उठाये ? कौन हमारी प्राचीन कला के सिद्धान्तो को शिक्षा म स्थान दे और कौन उसकी व्यापकता को सब सुलभ बनाने की चेष्टा करे ? हमारी हस्तकलायें भी प्राचीन कला के व्याकरणो से सज्जित रह कर ही अपने लिए विशेष स्थान बना सकती है । विदेशी कला की नकल किसी भी आजाद देश के लिए शोभा की वस्तु नही है । हम अपनी ही कला को अपने द्वारा प्रकाश मे लायें तो बुद्धिमानी है । आधुनिकता के नाम पर हमारी कला की शास्त्रीय पद्धति की उपेक्षा की दृष्टि से देखना हमारे नतिक पतन और हीनता के अतिरिक्त कुछ भी नही है । ●

जीते तो सभी हैं लेकिन, जहर पीकर जीना बहुत मुश्किल है ।
जलते तो सभी हैं लेकिन, जगमगाना बहुत मुश्किल है ।
यू तो गमगीन चेहरे बहुत होते हैं, इस दुनिया मे साथी ।
लेकिन बुझे ओठो पर हसी लाना बहुत मुश्किल है ।

# लोकधर्मी नाट्य-परम्परा

अपने पूवजो एव ऐतिहासिक महत्व के महान चमत्कारिक व्यक्तियो की पावन स्मृति के रूप म गाथायें रचने, कहने तथा उन्ह स्वाग स्वरूप के रूप मे प्रस्तुत करने की परम्परा न केवल भारतवष म बल्कि विश्व के अनेक भागो म अनादिकाल से चली आई है। ये स्वाग स्वरूप गीत, नृत्य तथा गुणानुवाद से प्रारम्भ होकर धीरे-धीरे अभिनय का रूप धारण करते गय। शन शन वेशभूषा आदि क सामजस्य स मूल ऐतिहासिक व्यक्तित्व की हूबहू प्रतिकृति उत्पन्न करने की चेष्टा जोर पकडने लगी तथा त्यौहारा, उत्सवो पर्वों तथा सावजनिक समारोहो के साथ जुड कर जन-जीवन को अह्लादित करने लगी। मानव स्वभाव की यह अनुकृति मूलक प्रक्रिया धीरे धीरे रगमचीय प्रदशनो का रूप धारण करने लगी और जन-समुदाय के मनोरजन तथा समाज की भावात्मक अभिव्यक्ति का एक प्रबल साधन बन गई। समाज के पाडित्य और साहित्यपूण पक्ष ने इसको शास्त्रीय स्वरूप प्रदान किया और मदिरो, प्रासादो तथा समाज के समृद्धिशाली अगो के प्रश्रय से वह उच्च-कोटि के कलापूण रगमचीय अभिनय के रूप म विकसित हुई, साथ ही लोकधर्मी नाटक परम्परा भी अपनी प्राथमिक अवस्था से ऊपर उठ कर सधे हुए रगमचीय प्रदशना म विकसित हुई उसके नाना-रूप भारत के विविध क्षेत्रो मे अपनी रग-बिरगी छटा दिखलाने लगे।

१७ वी शताब्दी मे आगरा के निकट—ख्याला की एक लोकधर्मी परम्परा शुरू हुई, जिसका दायरा केवल काव्य रचना तथा किसी ऐतिहासिक तथा पौराणिक व्यक्ति के जीवन से सम्बधित कवित्त रचना की प्रतियोगिता तक ही सीमित था। यही परम्परा प्रथम बार १८ वी शताब्दी म राजस्थान के रगमचीय ख्यालो के रूप मे परिवर्तित हुई जो आज अनेक रूपो मे राजस्थान के जन-जीवन का अह्लादित कर रही है। यह 'ख्याल' सवप्रथम कवित्त रचना का ही दूसरा नाम था परन्तु जबस वे रगमच पर खेल तमाशे का रूप धारण करने लग व खेल या ख्याल कहलाये।

**राजस्थानी ख्यालो के विशेष तत्व —**

राजस्थानी ख्याल, नृत्य, नाटय गीत का एक सम्मिलित स्वरूप है जा रगमच पर अनौपचारिक रूप से प्रस्तुत होता है। इन ख्यालो म सगीत की प्रधानता रहती है और नृत्य और नाटय का पक्ष गौण। इनका

कथानक भी गुथा हुआ नही होता और बहुधा अनेक प्रासगिक कथानको म उलझकर अपना लक्ष्य भी खो देता है। प्रासगिक और अप्रासगिक कथाओ के धरातल पर नाना प्रकार के चरित्र प्रकट होते हैं और अपना पूर्ण उत्कर्ष बतलाये बिना ही लुप्त हो जाते हैं चरित्रो के साथ ही अनेक घटनायें घटित होती हैं और निरुद्देश्य इधर उधर भटकती रहती है। इन लोकधर्मी नाटयो के कथानक बहुधा प्रचलित प्रेम-कथाओ वीर-कथाओ तथा धार्मिक प्रसगो पर आधारित रहते हैं। इनके रगमच बहुत ही सरल, आडम्बरहीन तथा विविध दृश्य विधानों से रहित होते हैं। इन ख्यालो की सफलता मे अभिनेताओ का जितना प्रयास रहता है उतना ही दशकों का भी रहता है। अभिनेता स्थितियाँ उत्पन्न करता है कुछ कल्पनाए प्रस्तुत करता है और दशक उसकी पूर्ति करते हैं किसी भी स्थिति या स्थल के लिये रगमच पर उनका कोई प्रतीक आवश्यक नही होता। वे सब प्रतीक दशक स्वय ही अपने मन म उत्पन्न करते है। लोकधर्मी नाटय, विषय की दृष्टि से नीचे लिखे अनुसार वर्गीकृत हो सकते हैं —

ऐतिहासिक नाटय —

लोकधर्मी ऐतिहासिक नाटयो के लिए यह बिल्कुल आवश्यक नही है कि वे अपनी विषय सामग्री किसी लिखित इतिहास या तथ्य सिद्ध स्रोत से प्राप्त करें। जो गाथा समाज को हृदयगम हो चुकी हो तथा जिसका जन-जीवन से घनिष्ट लगाव हो वही इन नाटयो का इतिहास बन जाती है विश्वास और श्रद्धा पर आधारित ये पात्र तथ्य अतथ्य से कोई सम्बन्ध नही रखते। इन गाथाओ में वर्णित चमत्कारिक व्यक्तित्व जो इन ख्यालो के सर्वाधिक प्रिय विषय बन गये हैं, इस प्रकार हैं —गोगा चौहान, पृथ्वीराज, तेजाजी, अमरसिंह राठौड़, डूगजी बलजी, भूरजी जुहारजी, दुल्हो तथा दयाराम धाढी।

शृगारिक नाटय —

इन नाटयो के विषय भी सवमान्य ऐतिहासिक तथ्यो से सम्बन्धित नही होते। जन मानस को उल्लसित करने वाली जितनी भी प्रेम-गाथायें हैं, वे ही इन नाटयो का विषय सामग्री बनने की सामर्थ्य रखती हैं। जसे लला मजनू, रिसालू-चेलादे, पठान शाहजादी, सौदागार वजीरजादी, ढोलामारू, माधवानल, कामकदला, पन्ना, वीरमदे, सुल्तान निहालदे, वच्च मुकुट पद्मावती, तथा खीवो आमलदे।

धार्मिक नाटय —

धार्मिक नाटयो मे भी वे ही धार्मिक प्रसग प्रयुक्त होते हैं जो सामान्य जनता की आकाक्षाओ को छूते हैं। बडे-बडे अवतार चाहे वे कितने ही चमत्कारिक क्यो न हो, यदि वे जन साधारण के हृदय को नही छूते तो उनका स्थान इन नाटयों मे नही के बराबर है। जो धार्मिक प्रसग या व्यक्तित्व इन नाटयो म सर्वाधिक प्रकट होते हैं वे इस प्रकार हैं —

नरसी मेहता, वज्रमुकुट, राजा हरिश्चन्द्र, नल-दमयन्ती, द्रोपदी-स्वयवर, गोपीचन्द-भरथरी। उक्त प्रसगो के ख्याल राजस्थान मे बहुत लोकप्रिय हैं जो विविध शलियो म राजस्थान के विविध क्षेत्रों म अभिनीत होते हैं। इनमे अधिकाश ख्याल छप भी चुके हैं। कुछ ख्याल परम्परा के रूप म केवल अभि-

नेताम्रा के कठा पर विराजमान हैं, जिनका कोई लेखा-जोखा नहीं है। एक ही व्यक्तित्व या प्रसग पर अनेक लेखको तथा रचयिताओं ने अनेक प्रकार के प्रयोग किये हैं। इन ख्याला की काव्य रचनाओ म साहित्यिक तत्व देखने की चेष्टा उतनी ही गलत है जितनी उनके अभिनय म शास्त्रीय पक्ष की। लोक गीतों की तरह इन ख्यालो की रचनायें भी सामाजिक धरोहर बन जाती हैं और लेखको का नाम उन पर अकित होते हुए भी उनका व्यक्तित्व उनमे तिरोहित हो जाता है। अनेकों वर्षों से अनेको कठा के हार बन जाने के कारण तथा सामाजिक रुचि के अनुरूप सशोधन परिवधन तथा परिमाजन होते होते वे लोक काव्य की दृष्टि से सामाजिक कसौटी पर कचन की तरह खरे उतरते हैं। उनम साहित्यक और शास्त्रीय पक्ष की खोज निरथक ही नही अयुक्तियुक्त भी है। उनम छद गीत और ताल पक्ष की प्रधानता होने के कारण शब्द गौण बन जाता है तथा अथ का बहुमुखी चमत्कार विद्यमान होते हुए भी, साहित्य पक्ष रगमच पर उतरने से पूव कुछ फीका सा लगता है। परन्तु लोक-काव्य और लोक-कला की भाषा म वह सशक्त और जीवित साहित्य की श्रेणी म ही गिना जायेगा।

इस समय राजस्थान म लोक धर्मी नाटया की निम्नलिखित शलिया प्रचलित हैं, जो रगमचीय प्रस्तुति करण की दृष्टि से निम्नप्रकार के रगमचा पर प्रस्तुत होती है —

१ भूमिगत, सव दिशीय रगमच —

इस शैली का नाटय स्थान ऊचे ऊचे मकानो, ऊचे चबूतरो, वृक्षो की सशक्त शाखाओं तथा पहाडियो के ऊचे टीलो के बीच घिरा समतल स्थान होता है, जिसके चारो ओर इन उपकरणों पर दशक गण बैठकर दशन लाभ लेते हैं और प्रदशक अपनी कला का प्रदशन करते हैं।

२ साज सज्जाओं से युक्त अलकृत मच —

इस तरह का रगमच बहुधा जमीन से उठा हुआ होता है तथा जिसके तीन या चारो तरफ दशकगण बैठते है। ऊपर अत्यन्त आवश्यक चदोवा भी तना होता है, जिसका सम्बन्ध नाटय के दृश्य विधान से नही होता।

३ त्रिदिशीय रगमच —

इस प्रकार के रगमच बहुधा जमीन से उठे हुए होते हैं पिछवाडा या तो किसी स्थायी दीवार से आवृत होता है या कोई इकरगी परदा पीछे लगा दिया जाता है। दशकगण रगमच के तीनो ओर बठ कर अभिनय का लाभ लेते हैं। रगमच की यह शैली राजस्थान की सर्वाधिक लोकप्रिय शली है।

४ चतुर्भित्ति आवत रगमच —

इस रगमच को डिबियावाला रगमच भी कह सकते हैं। वह चारो तरफ से दीवारो तथा परदा से घिरा हुआ होता है तथा दशकगण अभिनय का लाभ केवल सामने से लेते हैं। इस प्रकार के रगमच की परम्परा पारसी नाटक शली स हम प्राप्त हुई है। जो निश्चय ही भारतीय परम्परा के विरुद्ध है। इस रगमच पर अनेक दृश्यो के परदे लगाये जाते हैं और अभिनय के लिये कलाकारो को छिपे हुए तथा

चमत्कारिक ढग से अगल बगल मे लटकी हुई पर्दियों मे से प्रकट होना पडता है। इस शली के अभिनय दशका के साथ अपनत्व स्थापित करने मे असफल रहते हैं।

५ स्थल परिवतनीय चलायमान रगमच —

रगमच की यह शली सर्वाधिक प्रभावशाली शैली है। इस शली के अभिनय कई दिनो चलते है और स्थिति के अनुकूल कई स्थानो पर वास्तविक दृश्यमूलक रगमच तयार करने पडते हैं। दशक और प्रदशक अभिनय के साथ ही साथ एक स्थल तक नियोजित ढग से प्रस्थान करते हैं तथा दशक स्वय भी प्रदशन के अग बन जाते हैं। जसे रामलीला के प्रदशन मे राम की बरात के साथ अयोध्यावासियो के रूप मे समस्त दशकगण भाति भाति की मागलिक वेशभूषा पहन कर जनकपुरी की तरफ प्रस्थान करते हैं। तथा राम की वानर सना म सम्मिलित होकर समस्त दशकगण मु ह पर बदर के चेहरे पहने लकापुरी की तरफ प्रस्थान करते हैं।

६ माच शली के रगमच —

रगमचीय शलियों मे यह न केवल राजस्थान बल्कि समस्त देश की शलियो मे सर्वाधिक आकपक और मनोरम शली है। इस शली का रगमच चित्तौड तथा घोसुण्डा के तुर्रा किलगी रगमचीय प्रदशना म प्रयुक्त होता है तथा कई रगमचो के सम्मिलित योग से प्रमुख रगमच की सृष्टि करता है। मुख्य रगमच क दोना तरफ दो भव्य अट्टालिकायें निर्मित की जाती है जिनसे स्त्री तथा पुरुप पात्र नीचे उतर कर मुख्य रगमच पर आते हैं। इनके पास ही दो सादे रगमच होते है, जिनम से एक पर साजिन्दे बठते है और दूसरे पर गायक तथा नाटय वाचक अपना आसन ग्रहण करते हैं। रगमच रग बिरगे और विविध साज सज्जाआ से सजाये जाते हे। दशकगण इस रगमच के चारो तरफ बठते हैं।

## राजस्थानी ख्यालों की विशेषतायें —

उक्त विवेचन में रगमच के विविध प्रकारो की ओर इशारा किया गया है। इन रगमचो पर अभिनीत होने वाले नाटक, अभिनय तथा प्रस्तुतीकरण की विविध शलिया भी रगमच की विविधताआ की तरह ही ववध्यिपूण हैं। उनम से कुछ इस प्रकार है —

१ राजस्थानी लोकनाटया मे दशक और प्रदशको का भेद न्यूनतम रहता है। अनक अवसरो पर रगमचीय अभिनेताओ की कमी को दशकगण स्वय पूरा कर लेते हैं। उन्हे नाटय के लगमग सभी गीत याद रहते हैं।

२ इन नाटया के दृश्य विधान अधिकाश दशको की कल्पना पर आधारित रहते है। अभिनय के समय तनिक सकेत मात्र से ही दशक समस्त दृश्य की कल्पना कर लेते हैं।

३ प्रदशन से पूव बहुधा इन नाटया मे किसी प्रकार के पूर्वाभ्यास की आवश्यकता नही होती। एक ही प्रकार की पोशाक एक ही प्रकार की अभिनय शली, एक ही प्रकार के नृत्य प्रयुक्त होते हैं चाहे नाटयो के विषय पृथक हा। किसी विशिष्ट पात्र के लिए विशेप पोशाक का नियोजन नही होता। एक शली के समस्त नाटया मे राजा रानी चौबदार सनिक, पुरोहित मत्री, परिपद, विदूपक आदि की

पोशाकें एकसी हाती हैं। चाहे वह राजा हरिश्चन्द्र हो, चाहे राजा अमरसिंह राठौड, चाहे मोरध्वज। इन नाटयकारो का यह विश्वास हैं कि अभिनय गीत नृत्य आदि यदि सशक्त हैं तो य बाहरी उपकरण अधिक ध्यान देने याग्य नही है।

८ राजस्थानी ख्याल म प्रधान कथा नायक के चारो ओर प्रासगिक कथानक घूमते रहते हैं जो कभी कभी एक दूसरे से सम्बन्धित भी नही हाते और कई बार मूल नाटय प्रसग का क्षति भी पहुँचती है। परन्तु इस व्यवधान की दशकगण काई विशेष चिन्ता इसलिए नही करते क्योकि वे मूल प्रसग स पूण अवगत होते हैं, और प्रासगिक प्रसग को केवल मनोरजन मात्र समझते हैं।

## राजस्थानीय लोक नाट्यों के विविध प्रकार

### १ भीला का गवरी नाटय —

भीला का यह गवरी नाटय समस्त भारतवष का एक मात्र लोक नाटय है जो दिन म प्रदर्शित हाता है और जिनके पीछे काई भी व्यावसायिक दृष्टिकाण नही होता, सावन और भाद्रपद म भील लाग धार्मिक अनुष्ठान की दृष्टि स अपना दल बना कर डेढ माह के लिए घर से बाहर निकल पडते हे। निमत्रण या पारिश्रमिक देकर गवरी नाटय नहा कराया जा सकता। भील दल अपने आराध्यदव बूढिया की आराधना म यह नाटय केवल वही प्रदर्शित करते है जहा उनके गाव की कोई भी लडकी ब्याही गई हा। सबसे पहले अपने आराध्य त्रिशूल को धरती पर प्रस्थापित करत हैं तथा झालर वादन मे गाव वालो को अपने आने की सूचना दते हैं। प्रदशन प्रात स ही प्रारम्भ हा जाता है और सूर्यास्त तक चलता है। अडोस पडास के गावो वे सहस्रा नर नारी वहा जमा हो जाते हैं तथा गवरी दल के गाव की ब्याही हुई बालिका गवरी दल के लिए नारियल तथा अपने आराध्य देव बूढिया और राइया के लिए वेशभूषा आदि की भेंट चढाती है। गवरी नाटय दल पूरे डेढ माह तक प्रदशनाथ दौरा करता है। उस अवधि म वे मदिरा मास तथा गृहस्थ जीवन स दूर रहकर सारी रात अपने आराध्य देव की आराधना म लीन रहत है। गवरी दल की कथा का भस्मासुर वध से सम्बन्ध हात हुए भी उसकी अपनी विशेषता है। राक्षस भस्मासुर भगवान शिव का महान् भक्त था। वह भगवान से वरदान प्राप्त करने हेतु सहस्रो वर्षों की तपस्या म लीन हा गया। भगवान शिव ने उसकी तपस्या से प्रसन्न होकर उसे मनोवांछित वर मागने की अनुमति दे दी। भस्मासुर न भगवान शिव से उनके हाथ का वह कडा मागा जिसम विपुल ज्वाला प्रकट करने की शक्ति थी। भगवान ने अत्यन्त अनिच्छा पूवक वह कडा भस्मासुर को द दिया। भस्मासुर ने उस कडे के बल से भयकर आग की सृष्टि की जिसस स्वय भगवान शिव को माता पावती सहित एक गुफा म शरण लेना पडी। भगवान शिव का इस सकट म देख विष्णु ने मोहनी का रूप बना कर भस्मासुर को मोहित करन का उपक्रम किया मोहिनी के सौंदय पर मुग्ध होकर भस्मासुर नाचने लगा। मोहिनी ने अपनी मायावी शक्ति से भस्मासुर को इस तरह नचाया कि उसका कडा उनके सिर पर आ गया जिससे भस्मासुर स्वय भस्म हाने लगा। उसी अवस्था म भस्मासुर ने मोहिनी स्वरूप भगवान विष्णु से यह

वरदान मागा कि भगवान शिव की कुछ शक्ति उन्हें प्राप्त हो जाय और वह शिव के स्वरूप में सन्त के लिए पृथ्वी पर गवरी नाचा करे। भीलों का विश्वास है कि उनका गवरी नाट्य भस्मासुर का मिले इसी प्रकार वरदान का परिणाम है।

गौरी नाट्य में अनेक प्रासंगिक कथानक भी जुड़े हुए हैं जिनका सम्बन्ध बुढ़िया के चरित्र से नहीं है। यह संपूर्ण नाट्य, नृत्य की मुद्राओं में चलता है और सुबह से शाम तक अपने आकर्षक और भव्य नृत्य नाट्य विधान द्वारा जनता का मनोरंजन करता है। गवरी नृत्य की वेशभूषा अत्यन्त आकर्षक और कल्पना प्रधान होती है। पात्रों का अभिनय हास्य, विनोद तथा रौद्र और शृंगार से युक्त होता है। इस नाट्य में कोई रंगमंच नहीं बनाया जाता, धरती पर ही गोलाकार घूमते हुए पात्र अभिनय करते हैं और चारों ओर दर्शकगण मुग्ध से सुबह से शाम तक अपनी सुध बुध भूलकर देखते रहते हैं।

तुर्रा किलगी के खेल —

तीन सौ वर्ष पूर्व दिल्ली तथा आगरा के मध्य तुकुन गिरी और शाहअली नामक दो महान् सन्त और विद्वान हो गये हैं। उनकी शिष्य परम्परा में आज भी सैकड़ों व्यक्ति ऐसे हैं जो तुर्रा किलगी के विषय पर काव्य रचना करते हैं और रात रात भर काव्य प्रतियोगिता में लीन रहते हैं। तुर्रा भगवान, शिव का प्रतीक माना जाता है और किलगी, पार्वती का। यह शिष्य परम्परा केवल दिल्ली आगरा तक ही सीमित नहीं रही बल्कि समस्त उत्तर भारत में फैल गयी। आज से लगभग १५० वर्ष पूर्व यही तुर्रा किलगी की काव्य प्रतियोगिता चित्तौड़ के आस पास के क्षेत्रों में भाव के खेलों के रूप में परिवर्तित हो गयी। प्रारम्भ में तुर्रा किलगी विषय पर ही खेल रचे गये और खेले गये, परन्तु बाद में हिन्दुओं की अन्य प्रचलित धार्मिक कथायें तुर्रा किलगी के नाम पर नाट्य स्वरूप में विकसित होने लगीं। तुर्रा और किलगी के दलों में जिस तरह कई रातों तक काव्य प्रतियोगिता चलती थी, उसी तरह इन दलों के नाट्य दंगल भी होने लगे जिससे धीरे धीरे तुर्रा किलगी नामक एक विशिष्ट तथा परिपक्व नाट्य परम्परा राजस्थान को उपलब्ध हुई। तुर्रा विषयक विशिष्ट ख्याल जो-प्रचलित हुए, वे इस प्रकार हैं—भक्त पूरणमल, राव राजा केवट राजा रिसालू चौबोली, अनूपसिंह हरिश्चन्द्र रुक्मणी मंगल गोपीचन्द-भरथरी। किलगी के विशेष ख्यालों की सूची भी इस प्रकार है—तुर्रा किलगी की शादी निहालदे सुल्तान, सीता सतवन्ती, चौबोली मदनपाल, पूरणमल सत्वन्ती, मोर ध्वज, रूप बसंत नरसिंह, ध्रुव चरित्र।

तुर्रा किलगी के खेल विशिष्ट रंगमंच समूह पर प्रस्तुत किये जाते हैं। पात्र तथा पात्रायें ऊँची ऊँची अट्टालिकाओं से नीचे उतर कर तुर्रा किलगी की विशेष धुनों पर तथा नृत्य मुद्राओं में अपना अभिनय करते हैं। रात को प्रारम्भ हुआ यह खेल प्रातः सूर्योदय तक चलता रहता है और जनता हजारों की संख्या में उसका आनन्द लेती है। तुर्रा किलगी के खेल शैली, वेशभूषा, काव्य रचना तथा नृत्य मुद्राओं की दृष्टि से राजस्थान के अन्य ख्यालों से बिल्कुल भिन्न हैं। उनमें काव्य तत्वों की प्रधानता है तथा उनमें अभी तक व्यावसायिक तत्वों का समावेश नहीं हुआ है। इस शैली की विशेषता उसके गायन वादन तत्वों में विशेष

रूप से परिलक्षित होती है। पात्र-पात्रायें हाथ मे छडिया लिए हुए गाते नाचते हुए जब पारस्परिक सवाद मे निरत होते हैं तब शहनाई और नक्काडा बजाने वाले उनकी सगत नही करते, जब वे गा चुकते हैं तब उन्ही धुनो को अत्यन्त कलात्मक ढग से शहनाई वाले पकडते हैं और नक्काडा वाले उनके नाच पर विभिन्न गीतो की सृष्टि करते हैं।

३ कुचामणी ख्याल —

कुचामन निवासी श्रीयुत लच्छीराम आज से ८० वष पूव इस विशिष्ट शैली के उन्नायक थे। इस शैली की गायन वादन तथा नतन शैली अन्य ख्याल शैलिया से अधिक परिपक्व तथा परिमार्जित हैं। श्री लच्छीराम स्वय निम्नलिखित ख्यालो के रचयिता थ, जो आज भी प्रचलित है —मन्द्र मिलागिरी पारस पिताम्बरी, हरिश्चन्द्र, राव रिडमल, ख्याल जसल लीलादे, नौटकी शाहजादी, राजा चन्द्रसेन, विक्रम भगवनी, ख्याल धुलिया भटियार का, भक्त पूरणमल, जगदेव कवाली, ख्याल खेमसिंह आमलदे ख्याल निहालदे, सुल्तान, भक्त प्रहलाद, ख्याल गोगा चौहान मीरा मगल। कुचामणी शली मे ख्याल लिखने वाले डीडवाने के मोतीलाल तथा बशीधर भी हैं, लेकिन वे लच्छीराम की दक्षता और परिपक्वता को नही प्राप्त कर सके। कुचामणी शैली के ख्याल बहुधा जमीन पर ही अभिनीत होते हैं। उनम प्रयुक्त होने वाली धुनें अत्यन्त मन-मोहिनी तथा रगीन होती है। दोहा, लावणी, चौपाई कवित्त, शेर, दुबोला तथा चौबाला, म गाये जाने वाले गीत धुनो तथा लयकारी की दृष्टि से कुचामणी ख्यालो के प्राण हैं। ये छद अन्य ख्याल शैलियो मे भी प्रयुक्त होते है परन्तु उनकी कलात्मक अदायगी तथा स्वरो की बारीकियो की कोई भी दूसरी शली मुकाबला नही कर सकती।

४ शेखावाटी ख्याल —

शेखावाटी शली के ख्याल भी अन्य ख्याल शलियो से बिल्कुल भिन्न हैं। शेखावाटी के फतेहपुर क्षेत्र मे आज से लगभग १०० वष पूव सालीराम और प्रहलादराम नामक दो भाइया ने रगमचीय प्रयोग में काफी सफलता प्राप्त की। शेखावाटी शली के ख्यालो के वे ही जन्मदाता थे। उनके प्रमुख शिष्यो म नानू राणा प्रमुख थे, जिन्होने बाद मे अपना स्वय का दल बनाया तथा इस क्षेत्र म आशातीत सफलता प्राप्त की, नानू राणा के दल मे उजरा तेली भी एक अत्यत प्रतिभावान व्यक्ति था जिसने बाद म अपना स्वय का दल बनाया। इन दानो ही व्यक्तियो ने इस क्षेत्र म बडा नाम कमाया और अनेक ख्यालो की रचना की। शेखावाटी शैली के प्रमुख ख्यालो की नामावली इस प्रकार है —जगदेव कवाली चववावेन, इन्द्रसभा, खीव-यासवदे, सौदागर वजीरजादी पृथ्वीराज, दुल्हा धाडवी राजा चन्द्रमुकुट, हरिश्चन्द्र, शाहजादा सुल्तान, दयाराम धाडवी रूप बसत, पदमावत आदि।

शेखावटी ख्याल ऊचे रगमच पर प्रदर्शित होते हैं। कभी-कभी ऊपर चदोवा भी तान दिया जाता है। इन ख्याला म नृत्य की प्रधानता होती है और गीत अत्यन्त ऊचे स्वरो म गाये जाते हैं। इन ख्याला की सगत नक्काडा ढोलक तथा सारगी से की जाती है। सब प्रथम पात्र रगमच पर आकर गीतमय-स्तुति के रूप म अपना परिचय देकर रगमच पर ही बैठ जाता है। शेखावटी ख्याला म राजस्थानी लोकगीतो की अनुपम

रगत होत हुए भी, इन रागा की अत्यन्त मनोरम छाया विद्यमान रहती है—माड चन्द्रावली काफी जजवन्ती कालिगडा, भैरवी, आसावरी, सिन्धु, सोरठ, मल्हार, देश आदि। इन रागा का समावेश इन ख्याला म लोकधुनो के रूप म ही हुआ है। उनके शास्त्रीय पक्ष को उनम कोई स्थान नही है। शेखावाटी ख्याला की नृत्य शैली की तरह उनकी सगीत शैली भी अत्यन्त पेचीदा बन गई है। इनके छन्द इतने क्लिष्ट होते हैं कि सधे हुय कलाकार ही उनमे कमाल हासिल कर सकते हैं। इन छन्द-बद्ध धुनों और नृत्य-बोला की बदिश इतनी क्लिष्ट होती है कि उनकी सगत करने वाले शेखावटी म कुछ ही नक्काडेबाज बच गए हैं। सच पूछिये तो लयकारी, स्वरकारी की पचीदगिया ने इस ख्याल शैली के नाट्य-तत्व का बहुत क्षति पहुँचाई है। सवाद गीतो की समाप्ति पर नक्काडा का प्रवाह चलता है और नृत्यकार के पाव उसका तूफान की तरह साथ देत हैं। इसलिये शेखावटी के ख्याला के रगमच अत्यन्त मजबूत और फौलादी तख्तो स बनाये जाते हैं। इन ख्याला म जो छद प्रयुक्त हुये है, व इस प्रकार हैं—चन्द्रायनी, घुमना गजकी तथा लावणी। लावणी भी तीन प्रकार की हैं—ख्यालकी, लगडी तथा रात्री। शेखावाटी ख्याला म गीत-नृत्य की पचीदगिया ने इतना अधिपत्य जमाया है कि अभिनेताओ के चेहरो के भाव तथा अन्य अग-मुद्राएँ भी गौण बन जाती हैं।

५ राजस्थान की रम्मतें —

बीकानेर और जैसलमेर की रम्मतें अपनी लोकप्रियता के लिये सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं। वे अभी तक साम्प्रदायिक स्तर पर ही खेली जाती हैं तथा उनका व्यवसायिक स्वरूप विकसित नही हुआ है। नाटय तत्वा की दृष्टि स ख्याला की यह शैली सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। ये रम्मतें जसलमेर और बीकानेर म हर मोहल्ले म खेली जाती हैं। और जनता उनम दिल खोल कर भाग लती है। जैसलमेरी रम्मतें बिना रगमच के नीचे धरती पर होती है और बीकानेरी रम्मता के लिये ऊँचा मच बनाया जाता है। कुछ प्रमुख जसलमेरी रम्मतें इस प्रकार हैं—मूमल, महेन्द्रा, शैल तम्बोलन, भरथरि पिंगला, पूरण भगत सती सावित्री। इन रम्मता के प्रमुख रचयिता गौड कवि हैं। जसलमेरी रम्मतो म लोच और भावो की बारीकियो की आवश्यकता होती है। इनकी गायन शैली भी बहुत ही मधुर और सरल होती हैं। इन रम्मतो के काव्य तत्व अन्य रम्मता से कही ऊँचे स्तर का है।

बीकानेरी रम्मता म चौबोलो का प्रयोग होता है। जो उन्हे जसलमेरी रम्मतों से अलग करता है। इन रम्मता का भाव बहुत ही आकर्षक ढग स सजाया जाता है। गायक तथा साजिन्दे मच के एक ओर अपना आसन ग्रहण करते हैं और पात्र, वेशभूषा मे सुसज्जित होकर रगमच पर रखी हुई कुर्सिया पर आसीन होत हैं। अपने पाट के लिये व मैदान म उतर जात हैं और उसकी समाप्ति पर पुन अपना स्थान ग्रहण कर लेते हैं। कुछ प्रमुख बीकानेरी रम्मता के नाम इस प्रकार हैं—गोपीचन्द हरिशचन्द्र, भर्तृहरि, पूरण चरित्र, अमरसिंह, पूरणमल ललामजरू, अमरसिंह राठौड। बीकानेरी रम्मता म सर्वाधिक लोक-प्रिय और पुरानी रम्मत हिडाउ मेरी' की है। इसम एक आदर्श पति और पत्नि की कहानी अकित की गई है। इन रम्मता म सगीत और नृत्य अन्यगति से चलता है। परन्तु अभिनय और आगिक क्रियाओ के लिए उनम अधिक स्थान है। इन रम्मता म एक विशिष्ट प्रकार की रम्मत और हैं जो स्वाग-रम्मत के नाम से प्रख्यात है। स्वाग-

रम्मत का नाट्य पक्ष बहुधा नही के बराबर है। प्रधानता केवल स्वाग की है। पात्र भाति भाति के स्वाग बना कर शहर मे जुलूस की शक्ल म निकलते हैं और अत म रगमचीय प्रदर्शनी म परिवर्तित हो जाते हैं। इन रम्मतो का नाट्य वियोजन बहुत ही दुबल होता है। कभी-कभी पात्र अनियमित ढग से जो दिमाग म उपजा वही कह देता है। परन्देसी बालम नामक रम्मत इन स्वाग रम्मतो म सब से अधिक लोकप्रिय रम्मत है, जिसम एक पति जो अपनी स्त्री को अकेली छोडकर आजीविका उपाजन हेतु परदेस चला गया था, उसकी जीवन कहानी अकित है। स्वाग रम्मतें अधिकाश शृगारिक होती हैं तथा कभी-कभी अश्लील भी होती ह। कुछ प्रमुख स्वाग रम्मतें इस प्रकार हैं। कमल सुदरी का अठारह मासिया, विरहिणी का बारह मासिया देवर भौजाई का बारह मासिया, य सब रम्मतें नाट्य तत्त्व विहीन होते हुय भी सगत प्रधान होती हैं।

६ राजस्थान का भवाई नाट्य —

लगभग ४०० वष पूव जाट जाति मे बघाजी नामक एक कलाकार हुआ जिसको अपनी कलात्मक प्रवृत्तिया के कारण अपनी जाति से अलग होना पडा। उसे अपनी जाति से यह भी आदेश मिला कि वह भूगल, भाल तथा नक्काडे के साथ अपना नृत्य दल बना कर जाट जाति का मनोरजन किया कर। जाट जाति मे जितने भी कलाकार थे उनका दल बना कर बघाजी अपनी आजीविका का साधन जुटाने लगा। जाटो की देखा देखी अन्य जातिया ने भी अपनी जाति के कलाकारो को जाति से बाहर कर दिया तथा उन्ह भी वही आदेश दिया जो जाटो के कलाकारो को दिया गया था। इन सब जातिया स निष्कासित कलाकार एक ही भवाई जाति म गठित हो गय और वे विविध दल बना कर अपनी मूल जातियो का मनोरजन करने लग।

भवाई नाट्य तत्व तथा तत्र की दृष्टि से अन्य सभी लोक नाट्यो से भिन्न होता है। भवाई नाट्य के लिय किसी प्रकार के रगमच की आवश्यकता नही होती। किसी भी समतल भूमि पर तथा अपने यजमानो के आगन म यह नाट्य अभिनीत हो सकता है। भवाई अपने हुनर म इतने प्रवीण होते हैं कि किसी भी प्रकार का नाट्य प्रभाव पैदा करने म उन्हे खास रगमचीय उपकरण तथा विशिष्ट वेश विन्यास की आवश्यकता नही होती। समस्त नाट्य उच्चकोटि की भाव-भगिमाओ से युक्त होता है तथा पद सचालन नाट्य को अत्यधिक प्रभावशाली बना देते हैं। कही कही तो ये वक्र चालें जो ढोलक पर तूफान की गति से चलती है अतिशय रोमाचकारी स्थितिया म गीत सवादो तथा वाचन का स्थान ग्रहण कर लेती हैं। अपने आशय को स्पष्ट करने का चमत्कार भवाई के अलावा किसी भी नाट्य परम्परा म आज विद्यमान नही है। राजस्थानी ख्यालो मे भवाई नाट्य ही ऐसा है जिसम गीत सवादो को अग मुद्राओ तथा चेहरे की विचित्र भगिमाओ द्वारा इतने सुदर ढग स किया जाता है।

भवाई नाट्य अभी तक भी लिखा नही गया है। परम्परा से भवाईयो को अपने नाट्य कठस्थ होते हैं अत अन्य किसी को सिखाने की दृष्टि स भी वे बडे कुठित और सकीर्ण होते हैं। भवाई नाट्य पूर्णत लोक नाट्य का प्रकार होने हुये भी उसकी क्लिष्टता तथा लयकारी की पचीदगिया किसी भी शास्त्रीय प्रकार से कम नही है। भवाई नाट्य रगमचीय औपचारिकता से कोसो दूर है। कलाकार दशको के बीच ही पोशाक धारण कर लेते हैं तथा खेल के समय दशको से पूर्ण सामजस्य स्थापित रखते हैं। हास्य विनोद म तो

मवाई कलाकारों का कहीं मुकाबला नहीं है। परम्परागत नाट्य के साथ ही वे समय तथा स्थानानुकूल ऐसी परिस्थितियां पैदा करते हैं कि दर्शक दंग रह जाते हैं। ऐसी काल्पनिक परिस्थितियों के लिये वे दर्शकों में से ही अपने पात्र ढूंढ लेते हैं और अपना मनोवांछित अभिप्राय पूरा कर लेते हैं। नृत्य गीत तथा अंग संचालन की दृष्टि से यह नाट्य तंत्र इतना कठिन है कि भवाईयों के अतिरिक्त किसी का भी सामर्थ्य नहीं है कि वह उसे कर सके। इनकी वेशभूषा आदि अत्यन्त सरल होती है। उनका प्रमुख आधार ढोलक नृत्य का वक्र चालें तथा संगीत की जटिल लहरियां हैं, जिनसे वे नाट्य की लड़ियां पिरोते हैं और दर्शकों को सारी रात आश्चर्य चकित करते रहते हैं।

भवाई कलाकार वर्ष भर में आठ माह अपना घर छोड़ कर दल बल सहित अपने यजमानों के यहां प्रदर्शनार्थ निकल पड़ते हैं तथा चातुर्मास में अपने घर लौट आते हैं। एक औसत भवाई आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न होता है तथा लोकप्रिय होता है। वह एक प्रकार से सुधारक भी है क्योंकि वह अपने प्रदर्शन में अनेक सामाजिक कुरीतियों पर अत्यन्त विनोदपूर्ण ढंग से कटाक्ष करता है। भवाई नाट्य में अनेक नृत्य भांकियां ऐसी हैं जो दर्शकों की उत्सुकता और तल्लीनता को बढ़ा देती है। वे सिर पर अनेक मटके तथा जलती हुई बोतलें उठाने, अपार रंग बिरंगी पगड़ियां के नाचते हुए फूल बनाने तथा अपने भाले को आसमान में फेंककर सारे नृत्य क्षेत्र का चक्कर लगाते हुये पुनः समय पर उसे उसी स्थल पर पकड़ने में अपना सानी नहीं रखते।

राजस्थान के अलीबख्शी ख्याल —

अलवर रियासत के मंडावर नवाबी ठिकाने में अलीबख्श जी का जन्म १०० वर्ष पूर्व हुआ। वे जन्म से ही साधुवृत्ति के थे। कला और साहित्य में अत्यधिक रुचि होने के कारण उन्होंने नवाबी आनन्द की अपेक्षा कला की सेवा को ही अपने जीवन का ध्येय बनाया। वे साधु संतों तथा कलाकारों के संसर्ग में सर्वाधिक आनंद प्राप्त करते थे। जब वे दस वर्ष के थे तब उन्होंने नौटंकी का प्रदर्शन देखा। अपने को नवाबी कुल से सम्बन्धित समझ वे नौटंकी के रंगमंच पर बैठ गये। उनकी यह हरकत नौटंकी वालों को अच्छी नहीं लगी और उन्होंने उनको चुनौती दी कि उन्हें यदि रंगमंच पर बैठने का शौक है तो वे स्वयं अपना दल बना कर यह आनन्द प्राप्त करें। बालक अलीबख्श के हृदय को इस बात से अत्यधिक आघात पहुंचा और वे अपने गुरु करीबदास जी के पास उचित परामर्श के लिये पहुंचे। अपने गुरु की अनुमति और आशीर्वाद प्राप्त कर अलीबख्श, ख्याल शैली में कवितायें लिखने तथा अपने एक स्वतंत्र दल का संगठन करने में लगे। परिवार वालों तथा अन्य सजातीय लोगों को उनका यह कृत्य बहुत अखरा और वे उनके रास्ते में रोड़े अटकाने लगे। अलीबख्श जी को अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए गांव गांव भटकना पड़ा पर अंत में उनका मनोरथ पूरा हुआ। घर वालों ने अलीबख्श जी का यह आग्रह देख कर उन्हें स्वतन्त्र कर दिया। इस निश्चय के फलस्वरूप उन्हें अपने पिता की सम्पत्ति का अधिकार भी छोड़ना पड़ा। अलीबख्श जी का बचपन से ही हिन्दू धर्म दर्शन तथा हिन्दू-जीवन के तौर तरीकों में अत्यधिक विश्वास था। वे अपने हिन्दू साथियों के साथ राम, कीर्तन और भजन में लीन रहते थे। उन्हें धीरे धीरे रस्म रिवाज तथा हिन्दू शास्त्रों का अच्छा ज्ञान हो गया और मत प्रेरणा से वे कई धार्मिक ख्याल लिखने में समर्थ हुए।

इनका सबसे पहला ख्याल कृष्णलीला था जो ख्यालशैली के नाटयो मे सर्वश्रेष्ट समझा गया । वह कृष्ण जीवन सम्बन्धी राजस्थान का सर्वप्रथम ख्याल था । अलीवक्षी ख्याला मे साहित्यिक तत्व विद्यमान थे और उनमे निम्नस्तरीय अभिनय तत्वो का सर्वथा अभाव था । वे राजस्थान के सभी ख्यालों से बढकर धार्मिक, साहित्यिक तथा कलात्मक तत्वो से युक्त थे ।

अलीबक्षजी को सगीत तथा नृत्य की विधिवत् शिक्षा प्राप्त नही हुई थी । परम भक्त होने के नाते अपनी अत प्रेरणा से उन्हे अद्वितीय रचना कौशल प्राप्त था । वे अपनी मडली को स्वय अभ्यास कराते थे और आज भी मडावर म उनके घर के खडहरो के बीच वह चौक मौजूद है, जहा वह टूटी हुई शिला भी है, जिस पर बैठ कर वे अपने कलाकारो को अभ्याम कराते थे । वे अपने कलाकारो का अपने परिवार की तरह रखते थे और उनका समस्त खर्च वहन करते थे । अलीबक्षी ख्याल आडबरहीन रगमच पर अभिनीत होते थे । और दर्शक नि शुल्क उन प्रदर्शनो का आनद ले सकते थे । प्रदर्शन के समय जो भेंट सामग्री आती थी । वह उनके दल का खर्च वहन करने को पर्याप्त थी । अलीवक्षी ख्यालो के प्रदर्शन इतने अच्छे होते थे कि लोग शाम को शुरु होने वाले प्रदर्शनो के स्थानाभाव के भय से सुबह से ही अपना स्थान ग्रहण कर लेते थ । जहा ये ख्याल होते थे, वहा भारत का अन्य कोई नाट्य मडल अपने प्रदर्शन प्रस्तुत करने की मूर्खता नही करता था । क्योकि वे उनके सामने किसी भी तरह नही टिक सकते थे । अलीवक्षी ख्यालो का प्रचलन केवल अलवर क्षेत्र तक ही सीमित नही रहा । दिल्ली, रेवाडी तथा आगरा तक भी उनके प्रदर्शनो की धूम थी । अलीवक्षजी की मृत्यु को आज लगभग ६५ वर्ष हो गये हैं परन्तु उनकी महिमा आज सर्वत्र व्याप्त है । अलीवक्षजी के छुट पुट गीत, जो उनके ख्यालो मे प्रयुक्त होते हैं, लोक जीवन मे सूर, तुलसी कबीर के गीतो की तरह भजन मडलिया द्वारा गाये जाते हैं । अलीबक्षजी स्वय एक सत थे तथा उनके सहयोगी भी उनकी विशिष्ट भक्त परम्परा मे ही समझे जाते थे । अलवर क्षेत्र के निम्न जाति के लोग जैसे कोली धोबी चमार कहार आदि आज भी अपना आराध्य देव मानते हैं । वे अपनी कला के प्रचार मे कोसो दूर थे इसलिये अब तक भी उनके ख्याला का प्रकाशन नही हुआ ।

अलीवक्ष जी के ख्याल भक्ति से ओतप्रोत और नृत्य सगीत की सुरम्य भाव लहरियो से सराबोर होते थे । अभिनेतागण स्वय भक्तिरस मे सराबोर होकर नाचते थे । इन ख्यालो का अभिनय और भाव पक्ष अत्यत बारीक और सारगर्भित होता है । अभिनेता गीतो की पक्तियो को अपनी नृत्य तथा भाव मुद्राओं की अत्यत कमनीय ढग स प्रदर्शित करते हैं । कभी कभी यह भी भान होने लगता है कि जैसे बहुत ही कुशल कलाकार ठुमरिया गाकर उन्हे अग भगिमाओ द्वारा अपने शरीर पर उतार रहा हो । अलीबक्षी ख्याला का सगीत और भाव पक्ष बहुत ही प्रबल और उच्चकोटि का है । पद सचालन पर अधिक जोर नही दिया जाता । तबला, ढोलक, सारगी तथा नक्काडे जो इनकी सगत करते हैं इस अभिनय पक्ष के पीछे पीछे चलते हैं उन्हे किसी भी तरह आतकित नही करते । वेश विन्यास आदि म भी बडी सरलता बरती जाती है । कहते हैं अलीबक्षजी स्वय रगमच पर नही उतरते थे, परतु जब भी कभी प्रेरणावश ऐसा करते तो वे कमाल ही कर दिखलाते थे और जनता को अपनी भाव भगिमाओ से रुला रुला कर

छोड़ते थे। अलीबक्षी ख्यालो की यह भक्तिमयी तथा उच्चस्तरीय साहित्यिक तथा भावात्मक पृष्ठभूमि ही अलीबक्षजी के बाद उन्हें कायम नही रख सकी। उनके बाद उनकी परम्परा निभाने के लिये सुयोग्य पात्र नही थे जो उस पावन पृष्ठभूमि को निभा सकते। यही कारण है कि अलीबक्षजी की मृत्यु के बाद पूरे दस वर्ष तक भी यह धारा कायम नही रह सकी। आज तो अलीबक्षी ख्यालो को प्रदर्शित करने वाला एक भी दल राजस्थान मे विद्यमान नही है। उनके भक्त अवश्य हैं, जो इन ख्यालो के गीतो को भजन कीर्तन के रूप मे गाते है। अलीबक्षजी के निम्नलिखित ख्याल भी काफी लोक प्रिय बने, १ नल का बगदाव २ नल का छुडाव, ३ पद्मावत, ४ कृष्णलीला, ५ फसाने आजाद ६ निहालदे, ७ चद्रावत ८ गुलबकावली, ९ महाराज शिवदान सिंह का बारह मासा १० अलवर का सिफ्तनामा।

अलीबक्षजी का सर्वाधिक प्रिय शिष्य गोपाल था। जिसन उनकी परम्परा को बहुत ही सुन्दर ढग से निभाया। गोपाल का परमप्रिय शिष्य ८० वर्षीय बालिया आज भी जीवित है। उसने गोपाल और अलीबक्षजी का स्वर्णकाल देखा था तथा उनकी मडली म वह आज से ६५ वर्ष पूर्व कृष्णलीला मे राधा की भूमिका अदा करता था। मैं अपन शोधकार्य के सम्बन्ध म जब मडावर पहुँचा तो बालिया ने जो आज अधा हो गया है रो-रो कर अलीबक्षजी के ख्यालो का बखान किया था। मेरे विशेष आग्रह पर उसने लगभग दो घटे तक राधा का अभिनय दिखलाया। अभिनय के समय वह इस बात को भूल गया कि वह बूढा और अधा है। उसके अभिनय की बारीकियां और अग—भगिमाओ ने सबको चकित कर दिया। वह इस ढग से अभिनय कर रहा था जसे उसे अपने खोये हुये नेत्र पुन मिल गये हो। अभिनय के बाद वह लगभग घटे भर तक भावोद्रेक तथा गुरु भक्ति के कारण अध मूर्छित रहा।

अलीबक्षजी ने अपने कलाकारो पर जो नतिक बधन लगाय थे वे इतने कडे थे कि आज उन्ह पालने का किसी मे सामर्थ्य नही है और न इन उच्चकोटि के साहित्यिक ख्यालो को प्रदर्शित करने की किसी म योग्यता ही है। अलीबक्षजी के हस्तलिखित ख्याल आज भी अलवर के राजकीय सग्रहालय मे सुरक्षित हैं। मडावर के एक अलीबक्षी भक्त के पास भी मुझे कुछ हस्तलिखित ख्याल उपलब्ध हुए।

उत्तर प्रदेश की नौटकिया से अलबक्षी ख्याला का कुछ साम्य अवश्य है परन्तु अभिनय तथा भाव-भगिमाओ की दृष्टि स अलीवक्षी ख्याल उनसे कई गुना अच्छे हैं। अलीवक्षी ख्यालो म नाटकीय तत्व विशेष है और नौटकियो म सगीत के तत्व।

**राजस्थान की नौटकिया, रामलीलाए तथा रास लीलाए —**

लोक नाटया के ये सभी प्रकार उत्तर प्रदेश की विशेषतायें हैं, राजस्थान की नही परन्तु पूर्वी राजस्थान म कश्चित उत्तर प्रदेश के सपर्क से इन स्वरूपो का विकास काफी अच्छे ढग से हुआ है। ब्रजभूमि की रास लीलायें केवल ब्राह्मणा की ही धरोहर समझ जाती थी और अब्राह्मण उनमे अभिनेता के रूप मे किसी प्रकार भी प्रवेश प्राप्त नही कर सकता था। उन रामलीलाओ म पखावज, सारगी आदि बजाने का काम राजस्थान

की कुमावत जाति ही करती थी, परन्तु उन्हें रासलीला के स्वरूप भरने का अधिकार प्राप्त नही था। इसलिये इन कुमावतो ने लगभग ६० वर्ष पूर्व फुलेरा के शिवलाल नामक कुमावत के नेतृत्व में सर्वप्रथम रासलीलायें शुरू की। ये लीलायें राजस्थानी भाषा में लिखी और खेली गई। शेष तत्व लगभग ब्रज की रासलीलाओं के समान ही थे। राजस्थानी रासलीलाओं की गायन और नृत्य शैली ब्रज की रासलीला की अपेक्षा अधिक पचीदा है, इसका मूल कारण यह था कि ये कुमावत नटवरी नृत्यकला तथा पखावज बजाने मे अत्यत पारगत थे, बल्कि ब्रज की रासलीलाओं में भी नृत्य गीतो की तालीम बहुधा इन्ही कुमावतो से प्राप्त होती थी। दोनो ही लीलाओं में अतर केवल उद्देश्यो का था। ब्रज की रासलीलाओं में व्यवसायिक पक्ष की अपेक्षा भक्ति तथा श्रद्धा का पक्ष प्रधान था। रासलीलाओं में स्वरूप बनने वाले लगभग सभी बाल ब्रह्मचारी होते थे और अपने गुरू अथवा रासधारी से कृष्णभक्ति की शास्त्रोक्त शिक्षा प्राप्त करते थे। उनका दैनिक जीवन की चर्या भी अत्यन्त नियोजित तथा सस्कार सयुक्त होती थी। अत इन रासलीलाओं का सास्कृतिक और भावात्मक धरातल अत्यन्त पवित्र तथा प्रभावात्मक था। राजस्थानी रासलीलाओं की पृष्ठभूमि केवल व्यवसायिक होने के कारण उनमें कला की पुट अवश्य था, परन्तु उनका सास्कृतिक तथा धार्मिक धरातल प्राय नही के बराबर था। इस अभाव के कारण धीरे धीरे इन लीलाओं में कुछ अशिष्ट और निम्न श्रेणी के प्रसग भी प्रविष्ट होने लगे और उनसे लोक रुचि में सुधार के बजाय बिगाड होने लगा। ये रासलीलायें ब्रज की रासलीलाओं की तरह केवल धार्मिक स्थानो में ही प्रदर्शित न होकर कही भी किसी आगन में मनोरजनार्थ प्रदर्शित होने लगी। अन्य सभी तत्व ब्रज की रासलीलाओं के समान ही होते हैं। समतल भूमि ही इनका रगमच होता है तथा कृष्ण जीवन के विविध मनोहरी पक्ष नृत्य गीत की मुद्राओं में अभिनीत किये जाते हैं। मडली रासधारी पद गाता है और स्वरूप उनका अर्थ करते हुये अपना अभिनय दिखलाते है। अभिनय स्थली के चारो तरफ जनता बैठ जाती है और स्वरूप अपनी लीला का घूम घूम कर प्रदर्शन करते हैं। राजस्थानी रासलीलाएँ रासधारियो के कठ पर ही विराज रही है उनका प्रकाशन अभी तक भी नही हुआ है। इन रासलीलाओं का प्रचार क्षेत्र भी बहुत सीमित है और अब तो इनका प्राय लोप भी हो गया है।

रासलीलाओं की तरह ही राजस्थान की रामलीलायें मथुरा की रामलीलाओं से प्रेरित हुई हैं। इन रामलीलाओं का आधार भी तुलसी कृत रामायण ही है। शैली भी प्राय वही है। जिस तरह मथुरा की रामलीलाओं पर पारसी रगमच का कुप्रभाव पडा है इसी तरह राजस्थान की रामलीलाओं पर पारसी रगमच की गहरी छाप परिलक्षित होती है। इनमें भी विविध दृश्यावली के ऊपर नीचे उतरने चढने वाले परदों का प्रयोग होता है। रामलीला का आचार्य चौपाईयो का सुसगीत वाचन करता है और पात्र अभिनय की शैली में उनका अर्थ बताते हैं। अभिनय के बाहर के अश केवल कथा वाचन के द्वारा ही पूरे कर लिये जाते हैं। इन रगमचीय रामलीलाओं का प्रमुख केन्द्र जयपुर है जहा मथुरा शैली की रामलीलाओं का ही अनुशीलन होता है। अलवर, धौलपुर, करौली क्षेत्रो की रामलीलायें इन रामलीलाओं से बिल्कुल ही भिन्न हैं। ये रामलीलायें कई दिनो तक विविध स्थलो पर कथानक की स्थितियो के अनुसार अभिनीत होती है। और [illegible] खेली हैं। इनके लिये कोई औपचारिक रगमच नही बनाया जाता बल्कि

विविध उपयुक्त स्थलो को अयोध्या जनकपुरी, पचवटी चित्रकूट, लका आदि का रूप दे दिया जाता है और पात्र एक स्थान से दूसरे स्थान तक जुलूस बनाकर नाटय की विविध स्थितियो के अनुसार प्रस्थान करते हैं। जसे राम विवाह के लिये समस्त नगरवासी रग-बिरगी पोशाको मे राम की बारात सजा कर जनकपुरी को जाते है इसी तरह समस्त दशकगण बदरो का स्वरूप बनाकर राम की वानर सेना मे सम्मिलित हो जाते हैं और लकापुरी की तरफ प्रस्थान करते हैं। इन लीलाओ की तैयारी महीनो चलती है और समस्त जन समुदाय उनमे तन मन और धन से सक्रिय भाग लेता है। लीला के पात्र व्यवसायी पात्र नही होते। वे साधारण नागरिक होते हैं, जिन्हें इस शैली के अभिनय का पूर्ण अनुभव होता है। तुलसीकृत रामायण का इनमे पूर्ण आधार रहता है और पात्रो का अपना वाचन खूब अच्छी तरह कठस्थ होना है। समस्त नगर ही इस लीला की रगस्थली बन जाता है। रामलीलाओ का यह स्वरूप वास्तव मे सर्वाधिक प्राचीन स्वरूप है जो कालान्तर मे पारसी नाटक के प्रभाव से मथुरा शैली की रामलीला मे परिवर्तित हो गया। सौभाग्य से भरतपुर करौली, धौलपुर के क्षेत्रो मे ये सजीव और प्राणवान लीलायें आज भी विद्यमान हैं। इन लीलाओ मे वेषभूषा तथा साज-सज्जा की अनुपम छटा दृष्टिगत होती है और जनता भी इस महान धार्मिक पर्व मे दिल खोल कर भाग लेती है।

भरतपुर तथा धौलपुर क्षेत्रो मे नौटकियो का भी अच्छा रिवाज है। परन्तु उसकी समस्त परम्परा आगरा, मथुरा तथा हाथरस से ही प्राप्त हुई है। इन नौटकियो के पात्र भी बहुधा वे ही होते है जो उत्तर-प्रदेश की नौटकियो मे होते हैं। ये सब नौटकियाँ व्रज भाषा मे ही रची हुई हैं। राजस्थान की नौटकियो का अपना कोई विशेषता नहीं है, जिसका यहा विवेचन किया जाय।

## राजस्थान की रासधारियाँ —

रासधारी का परम्परागत अर्थ रास को धारण करने वाले से है। वह भगवान कृष्ण के बहुमुखी चरित्र अपने स्वरूपो द्वारा रामलीलाओ के रूप मे प्रस्तुत करता है। धीरे धीरे यह शब्द किसी विशिष्ट नाटय शैली के साथ रूढ हो गया और कृष्णलीला की अपेक्षा अन्य कई लीलायें इसमे सम्मिलित हो गई। इस शैली का प्रमुख क्रीडास्थल मेवाड तथा राजस्थान रहे है। सर्वप्रथम रासधारी शैली का नाटय मेवाड मे आज से ४५ वर्ष पूर्व मोतीलाल जाट द्वारा प्रस्तुत किया गया, जिसमे भगवान राम के चरित्र को लोक शैली मे प्रदर्शित किया गया था। इन रासधारियो के लिये रगमच की कोई आवश्यकता नही होती, समतल भूमि पर ही उनका प्रदर्शन होता हैं और जनता चारो ओर से इनका अवलोकन करती है। रासधारी के खेल न तो लिखे हुए हैं और न पुस्तकाकार ही प्रकाशित हुए हैं। इन रासधारियो मे अभिनेता राजस्थानी पोशाको मे बडे बडे भाले लेकर अवतरित होते हैं और ऊंचे स्वरो मे नाचते गाते हैं तथा अपने भालो को हिलाते हुए पारम्परिक गीत-सवादो मे लीन होते हैं। इन रासधारियो मे पोशाको की ओर विशेष ध्यान होता है। समस्त सवाद गीतो मे होते हैं तथा उनका नृत्य पक्ष बहुधा दुर्बल होता है। धीमी चाल मे चलने वाली इन रासधारियो मे अभिनय पक्ष की प्रधानता रहती है। पात्रो के सवादो मे अग भगिमाओ का सुन्दर सामजस्य रहता है तथा भालो की मदद से उनकी प्रभावशीलता भी

बढ जाती है, ये माले भी अत्यत कलात्मक ढग से सजाये जाते हैं। समस्त मालो मे एक सुदर सा कपन उत्पन्न होता है, जो वातावरण को भक्त करने म सहायक होता है। ये सब रासधारिया,मेवाडी तथा मारवाडी भाषा म होती है और लोक धुना का उनम अत्यन्त सुदर समावेश होता है। उनमे ढोलक नक्कारा का चमत्कार नही के बराबर है। सीधी साधी ताल म नाटय गीत शुरू होते हैं और उसी लय मे समाप्त भी हो जाते हैं। अब तो ये रासधारिया प्राय लुप्त होगई हैं। इन रासधारियो के सामुदायिक, व्यवसायिक दोनो ही स्वरूप विद्यमान थे। मारवाड म ये रासधारिया व्यवसायिक मडलियो द्वारा प्रदर्शित होती थी और मवाड म शौकिया मडलियो द्वारा। मेवाड की रासधारियो मे राम चरित्र ही प्रमुख होता था, परतु मारवाड की रासधारियो मे मारध्वज भतृ हरि, अमरसिंह राठौड आदि खेलो की प्रधानता थी। मेवाड की रासधारी म राम का चरित्र तुलसीकृत रामायण के आधार पर न होकर प्रचलित किंवदतियो के आधार पर होता था। रामचरित्र का लोक पक्ष ही सर्वाधिक सामने आया और उनके साथ अयोध्या के राजसी ठाठ बाट न जुड कर उनमे गावो की सादगी, समानता तथा आडम्बरहीनता के ही दशन होते थे।

**राजस्थान का कठपुतली नाटय —**

कठपुतलियो के नाटय यद्यपि मानवी नाटया मे शुमार नही होते फिर भी मानव सचालित होने के नाते वे नाटय परम्परा म अपना विशेष स्थान रखते हैं। भारतीय शास्त्रो के अनुसार तो वे मानवी नाटय परम्परा के जन्मदाता समझे गये हैं। यह बात कुछ हद तक तकसगत इसलिये समझी गई है क्योकि किसी भी महान् व्यक्ति की स्मृति उसके चित्र तथा उसकी मूर्ति के रूप म कायम रखी जाती है। य चित्र तथा मूर्तिया मदिर, प्रासाद तथा घर के किसी प्रमुख स्थान म प्रतिष्ठापित की जाती है और मनुष्य अपने विगत श्रद्धालु पात्रो की स्मृति बनाये रखते हैं। यह कभी भी नही होता कि इन भूतपूव व्यक्तिया की स्मृति कायम रखने के लिये किसी मानव को ही उस पात्र की वेशभूषा से सज्जित कर तथा उसकी हूबहू अनुकृति बना कर दीवार या आले म स्मृति के रूप म स्थापित कर दिया जाय। न कभी यह कल्पना साकार हुई है और न यह सम्भव ही है, क्योकि किसी भी जीवित प्राणी के अग वाछित पात्र के अनुसार काटे या तराशे नही जा सकते हैं यह कल्पना असम्भव ही नही हास्यस्पद भी हैं। इसीलिये कालातर म इन स्मृति प्रतीको के रूपम चित्रा तथा पाषाण और काष्ठ की मूर्तिया का आधार लिया गया है। इन्ही प्रतिष्ठित पूज्य पात्रो की जीवन गाथाओ का कायम रखने के लिये, इन्ही स्थिरभावी मूर्तिया तथा पुतलियो को चलायमान करके उनसे विविध नियाए करानेकी कल्पना हमारे पूवजो म जाग्रत हुई और उसे नियात्मक रूप प्राप्त हुआ। उनके अग प्रत्यगो को लचकीला बनाया गया तथा उन्हे सूत्रा द्वारा सचालित किया गया। उनको सचालित करने वाला सूत्रधार एक विशिष्ट कलाकार के रूप मे प्रतिष्ठित हुआ तथा उसके ये धार्मिक प्रदशन समस्त समाज म पूज्य बन गय। इन्ही कठपुतलियो के नाटयों से प्रेरित होकर मानव स्वय उनकी अनुकृति मूलक मानवी प्रतियो भारतीय नाटयो का सूत्रपात हुआ। इन कठपुतली प्रदशनी के प्रति उसका इतना पूज्यभाव था कि उसने अपने मानवी नाटयो मे भी रचयिता तथा नाटय निर्देशक को सूत्रधार की सज्ञा प्रदान की।

इन आदि कठपुतली नाट्य की जन्मभूमि राजस्थान है इसे मान लेने में अब हम कोई संकोच नहीं होना चाहिये, क्योंकि उसके लिये हमारे पास पर्याप्त प्रमाण हैं, जिनका उल्लेख इस निबंध में विषयान्तर की दृष्टि से नहीं किया गया हैं। राजस्थानी कठपुतलियों का संचालन तथा अभिनय विधि नाट्य विज्ञान की दृष्टि से अत्यंत वैज्ञानिक और पूर्ण है तथा इन्हें संचालित करने वाले कठपुतली नटों की वंश परम्परा तथा नाट्य विधि से यह भली प्रकार ज्ञात हो सकता है कि भारत के आदि कठपुतली नट इन्हीं के पूर्वज थे। इन्हीं पूर्वजों ने विक्रमादित्य के समय 'सिंहासन बत्तीसी' नामक पुतली नाट्य की रचना की। तदुपरान्त पृथ्वी-राज चौहान के वक्त भी इन्हीं के पूर्वजों ने 'पृथ्वीराज-संयोगिता' नामक पुतली नाटिका का सृजन किया। आज से ४०० वर्ष पूर्व नागौर के राजा अमरसिंह ने इन्हें पर्याप्त संरक्षण प्राप्त दिया तथा अपने जीवनकाल ही में अपने जीवन वृत पर अमरसिंह राठौड़ नामक कठपुतली नाटिका की रचना कराई थी। यह रचना आज भी अपनी परिवर्तित अवस्था में विद्यमान है। यही ऐसी कृति हैं जिससे राजस्थानी कठपुतली नाट्य के विशेष तत्वों का पता लगता है। इन कठपुतली नटों की मान्यता है कि इनके कठपुतली पात्र इस लोक के नहीं किसी दूसरे लोक के हैं, पृथ्वीलोक के मनोरंजन के लिये इस लोक में अवतरित हुए हैं और मानवी कथानक पर ही अपने नाट्य प्रस्तुत करते हैं। इन पुतलियों की भाषा मानवी भाषा न होकर किसी दूसरे लोक की भाषा है जो सीटी की आवाज के रूप में प्रतिस्फुटित होती है। इसी सीटी की भाषा का कठपुतली पात्रों की अंग भंगिमाएँ तथा अन्य मुद्रायें प्रदर्शन करती हैं। जो अपना विशेष अर्थ रखती हैं। इन सब प्रतीकवादी मुद्राओं और भंगिमाओं की अपनी विशिष्ट भाषा है, जो इन कठपुतलीकारों का प्राय शास्त्र हो बन गई है। इन कठपुतलियों के नाट्य तत्व मानवी नाट्य तत्वों से बिल्कुल भिन्न हैं। ये पुतलियाँ निष्प्राण होने के नाते गंभीर भावात्मक तथा उत्तेजनात्मक स्थितियों से दूर रहती हैं और केवल हल्की फुल्की तथा हास्यविनोद से परिपूर्ण कुतूहल-वर्धक परिपाटी से नाट्य के सभी गंभीर तत्वों का बहुत ही चतुराई से प्रदर्शित करती हैं। इन पुतली नाट्य का भी कोई लिखित नाट्य नहीं होता। निरन्तर अभ्यास तथा वर्षों के अनुभव से इन विशिष्ट नाट्यों के संवाद गीत आदि बनते रहते हैं। कठपुतलियाँ स्वयं बोलती नहीं है, इसलिये वाचन तथा शब्दोच्चार का उनका अपना निराला ही ढंग है जो दर्शकों पर मानवी संवादों की तरह ही असर पैदा करने वाला होता है। कठपुतली नाट्य के इस विशिष्ट विधान से अनभिज्ञ होने के कारण ही आज का नवीन कठपुतली रचयिता बुरी तरह अपने प्रयोग में असफल होता है और उसके वर्षों के प्रयत्न-स्वरूप जो पुतली रचना हजारों रुपयों के खर्च से बनती है, वह इन परम्परागत पुतलीकारों की कुछ ही खर्च से बनी हुई रचना के सामने पानी भरती है।

राजस्थान का एक मात्र पुतली नाट्य अमरसिंह राठौड़ शैली विशेष की दृष्टि से ख्यालों की परम्परा में नहीं आता। क्योंकि इसकी शैली अपनी अनोखी है। ये मानवी शैली का अनुसरण करें तो बुरी तरह असफल हों। कुछ रचनाकार तो ऐसे हैं जो अपने मानवी नाट्य प्रयोग में पुतली नाट्य के टक्नीक का अनुसरण करते हैं और जिन्होंने मानवी पात्रों का कठपुतली पात्रों की तरह ही व्यवहृत करते हैं। राजस्थानी कठपुतली नाट्य की गीतों की लय तथा स्वर रचना कठपुतलियों की क्रियाओं के अनुरूप ही होना है उनका

समस्त वाचन ही एक अनोखी शब्द रचना की छटा प्रस्तुत करता है। कठपुतलीकारों का यह कहना है कि ये पुतलियां अपने गीत तथा संवाद अपने आप बना लेती है, जो उन्हें अंत प्रेरणा से ही मालूम हो जाती है और वे तुरंत ही उन्हें आत्मसात कर लेती है। इन पुतलियों का लड़ना, झगड़ना, युद्ध, प्रेम, अभिवादन तथा हंसी मजाक करने का अपना विशेष तरीका है। इनकी चालें, अंग मुद्रायें तथा नृत्य की भंगिमायें भी अपनी विशेषता रखती हैं। दो घंटे के अपने प्रदर्शन में ये अमरसिंह राठौड़ के दैनिक जीवन, उसकी वीरता तथा लोकप्रियता का बहुत ही सुन्दर ढंग से चित्रण करती है। यह कठपुतली नाट्य धीमी गति से शुरू होकर भावनाओं का ताना बाना बुनते हुए चरम उत्कर्ष पर पहुँच कर दर्शकों को अद्वितीय आनन्द का अनुभव कराता है। इन पुतलियों का रंगमंच भी बहुत ही सरल होता है। दो खाटों को खड़ा करके बांस के सहारे रंगमंच बना लिया जाता है। सामने परदे की जगह तिबारीनुमा एक पर्दा लगा दिया जाता है जिसमें ये पुतलियां लगभग ढाई घंटे तक अपने करतब दिखला कर एक विशिष्ट नाट्य परम्परा का दर्शन कराती है।●

डा० हरीश

## राष्ट्र वीरों से

**फौलाद ढला करता है**

फूल कांटों में पला करता है
दीप तूफां में जला करता है
मेरी बगिया के दुश्मनों से यह कह दो साथी!
मेरे भारत में तो फौलाद ढला करता है

**हर चिराग में उजाला है**

मेरे वतन को आंधियों ने ही तो पाला है
मेरे चमन का खार ने बहुत संभाला है
अरी ओ मरियल पीली हवाओ! लौट जाओ, न आओ इधर
मेरे वतन के हर चिराग में उजाला है

**उठो जवानी है**

मेरे हमउम्र साथियो! उठो, जवानी है
मां के आंचल की तुम्हें लाज जो बचानी है
पास के देश में दुश्मनों ने फसल रौंदी है
इनको लोहे की गोलियां तुम्हें चबानी है

# संगीत परम्परा

वीरत्व और शौर्य की जसी अप्रतिम कहानी राजस्थान की है वसी ही परपरा यहा के कलात्मक सृजन की भी है। उपयोगी और ललित दोनो कलाओ का जीवन दपण। इसका परिचय एक खुली किताब है। ओजस्व और वचस्व का ऐसा अलकार समिश्रण अयत्र दुलभ है। आइये ऐसी वीर प्रसविनी भूमि के एक इतिहास प्रसिद्ध नगर उदयपुर की ओर आपको ले चलें। सूयवशी राजाओ की धरती। झीला की इस नगरी के क्या कहन। तूफानी हवायें वरागिन सुबहें और शबनमी शाम। पाच पाच झीलें एक से एक रूमानी। चादनी रातो में जब लाख लाख सितारा के साथ चाद इन लहरो म खेलता है तो आप सोचेंगे आप किसी इद्रजाल या सपनो के देश में हैं।

यहा के शासक साहित्य और सगीत के चूडात प्रेमी थे। निष्णात विद्वाना को बाहर से लाकर बसाना राजदरबारो म कवि गोष्ठिया और सगीत के कायक्रम इनके व्यसन रहे हैं। हम इस प्रसग म आपका ध्यान यहा की सगीत परम्परा की ओर आकर्षित करना चाहते हैं जिसके महान विद्वान महाराणा कुभा थे। स्वनामधय महाराणा कुम्भा ने सोलह हजार श्लोको का सगीत राज' नामक शीषक ग्रथ लिखा। एक ओर उनके युद्धो की विजय का यह चित्तौड स्थित गगनचुम्बी कीर्ति स्तभ और दूसरी ओर उस कीर्ति स्तभ से भी ऊचा यह "सगीत राज'।

महाराणा कुभा सगीत के अपूव साधक थे। युद्ध वीर होने के साथ उन्होने सगीत जगत को जो और जितना दिया है वह सदैव कीर्ति गाथाओ म लिखा जायगा।

मेवाड म सगीत को राज्याश्रय

महाराणा कुम्भा क बाद भी मेवाड के महाराणाओ का सगीत प्रेम अव्याहत चला। या कुम्भा की सुदृढ परम्परा की उपेक्षा भी असभव थी। सगीत की पुष्ट प्रेरणा और निसग का लोमहषक सौन्दय सभी ने इस कला का नवोमेष किया है। साधक खूब पनपे। अदम्य साधना और मा वीणा वादिनी का वरद हस्त।

मेवाड के महाराणाओ को सगीत का जसे व्यसन हो। श्रेष्ठतम गायकों और वादको की शोध-पिपासा सतत रहती। गहराई मे प्रविष्ट होने वालो को तो मोती मिलते ही हैं। मेवाड में सगीत क्षेत्र म उदयपुर का

इस सदर्भ म विशिष्ट योगदान रहा । इन सभी एतिहासिक चेतना ज यमूल तत्वो की ओर एक सकेतात्मक दृष्टि डाल रहा हूँ ।

राजस्थान के मेवाड राज्य म सगीत को क्रियात्मक प्रोत्साहन स्वर्गीय महाराणा स्वरूपसिह जी से मिला । उनकी तीक्ष्ण एव सगीत प्रेमी दृष्टि ने यू० पी० का एक अदम्य कलाकार खोज निकाला । नाम था श्री हुसनवक्ष । अपने जमाने का अलौकिक बीनकार । महाराणा इनकी कला पर मुग्ध थे । उस जमाने म भी उनको तीन रुपया रोज पारिश्रमिक देते थे और उन्होने उस कलाकार को किसी भी हालत म उदयपुर से बाहर नही जाने दिया । श्री हुसनबक्ष के समकालीन राजस्थान क अन्य राज्यो मे भी सगीत के महान कलाकार थे—उदाहरणाथ जयपुर म स्वर्गीय श्री बहराम खाँ गायक थे । इनके दो पौत्र थे श्री जाकरुद्दीन और श्री अलाबदे खाँ । दादा बहराम खाँ जी ने इन्ह सगीत की शिक्षा दी । ये अम्बेरे के निवासी थे । ये दानो वरिष्ठ कलाकार भी सगीत प्रेमी महाराणा श्री स्वरूप सिह की दृष्टि से नही बच पाये और वे इनको जयपुर से उदयपुर ले आये ।

इस समय और भी कई प्रसिद्ध गायक और वादक थे जिनका नाम अविस्मरणीय रहेगा । ये थे—श्री नन्ह खा जी सितारिये । गुलाम मीर जी आबादान जी, दायरे खा तथा चिम्मन खा । ये सभी सगीत के उत्कृष्ट गायक रहे । स्वय महाराणा भी सितार बजाया करते थे उनके साथ दलमीर खा ढोलकिए ढोलक बजाते थे । ये सभी कलाकार उनके साथ ही गुजरे । महाराणा स्वरूपसिह जी के बाद महाराणा सज्जन सिह जी व महाराणा फतेहसिंह जी का युग आया । इनके शासन काल ने अनेक भारत विख्यात गायको और वादको का प्रश्रय दिया । ये शासक स्वय शौय और कला के पुजारी थे । इनके युग के प्रसिद्ध गायक थे—सवश्री जाकरुद्दीन अलाबदे खा, अहमद खा, नियाज मुहम्मद सितारिए । अतरौली के इब्राहिम खाँ को भी नही भुलाया जा सकता । इनके जमाने के श्री सुगरलाल जी प्रसिद्ध सितारिये और श्री मन्नुलाला विख्यात तबलिए थे । इन दोनो महाराणाओ का युग सगीत कला की वृद्धि के लिए ऐतिहासिक महत्व का युग कहा जायगा । कहते हैं श्री भातखडे जी भी डागर घरान की ध्रुपद से प्रभावित होकर यहाँ आये थे और उन्होने कई नोटेशन भी तैयार किए ।

उनके बाद यह उत्तराधिकार स्व० महाराणा श्री भूपाल सिह जी ने सँभाला । इनके युग मे अनेक ख्यातिलब्ध कलाकार पनपे । महाराणा भूपाल सिह ने कलाओ की प्रगति-साधना की असाधारण सेवा की । इनके युग के प्रसिद्ध गायको ने सारे देश मे नाम किया । इनके शासन काल के प्रसिद्ध गायक और वादक थे-सवश्री जियाउद्दीन डागर इब्राहिम खाँ (गायक) नियाज मुहम्मद (सितारिए) । एक श्रम साध्य और मौलिक वाद्य को बजाने वाले थे श्री एमू खा साहब । इस वाद्य का नाम था कानून । आज इस कठिन वाद्य को कोई नही बजाता । इनके साथ श्री इमामुद्दीन (गायक) और अब्दुल हफीज खाँ तबलिए थे । श्री हैदर बक्ष गायक थे पर सारगीवादन मे परम प्रवीण थे ।

यही नहा, उदयपुर के अतिरिक्त पाश्व प्रतिवेशी गावो म भी सगीत के परम साधक पैदा हुए । जिनम प्रमुख थे सादडी के गायक श्री रहीम खा और नाथद्वारे के श्री फिदा हुसन । नाथद्वारे के श्री गोवधनलाल

और श्री घनश्याम जी का नाम चिरस्मरणीय रहेगा। श्री घनश्याम जी ने तो "मृदग सागर" जैसी अनूठी कृति की रचना की। भारत विख्यात श्री पुरुषोत्तमदास पखावजी इन्ही के पुत्र हैं। श्री भूपाल सिंह जी स्वय ऐसे महान गुणी और सगीतानुरागी महापुरुष थे कि उनकी गिद्ध दृष्टि कलाकारो का चुनाव करती, वे बाहर से बुलाये जाते और उनका कला प्रदशन होता। यही नही, उनको उचित सम्मान भी दिया जाता था। एसे कलाकारो मे प्रसिद्ध थे श्री उमाशकर जी, श्री गिरधारीलालजी और श्री जमनाशकरजी। इस तरह श्री भूपाल सिंह जी के युग ने देश से चोटी के गायका, वादको और कलाकारो का निर्माण किया और स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद राजस्थान के पहले महाराज प्रमुख ने अन्य सभी कलाओ के साथ सगीत कला को उन्नयन की ओर अग्रसर किया।

श्री भूपालसिंह जी के उत्तराधिकारी उदयपुर के वतमान महाराणा श्री भगवतसिंह जी का सगीत प्रेम उल्लेखनीय है। वतमान महाराणा साहब स्वय सगीत के ऊँचे पारखी और कलाकार हैं। उदयपुर के भारत विख्यात गायक और सितारवाद श्री जियाउद्दीन खाँ डागर इनको सितार की शिक्षा देते थे।

वतमान शताब्दी ने उदयपुर को मूर्धन्य कलाकारो को जन्म देने का श्रेय प्रदान किया है। उस्ताद हफीज खाँ के शिष्य विश्वविख्यात तबलावादक श्री चतुरलाल देश के उन चोटी की तबलावादको मे हैं, जिनका अपना कोई सानी नही। सारगीवादक श्री रामनारायण भी उदयपुर की निधि है इन दोनों वादक बधुओ ने ससार भ्रमण कर अन्तराष्ट्रीय ख्याति अर्जित की है। प० ओकारनाथ ठाकुर के शब्दो म वे देश के होनहार लाल हैं', जिनकी साधना अप्रतिम कही जायेगी।

ध्रुपद शैली के देश प्रसिद्ध गायक श्री डागरबधु इसी उदयपुर के आकषण केन्द्र हैं। श्री पुरुषोत्तम-दास पखावजी का वादन कौशल अपूव है।

**डागर घराना और सगीत —**

उदयपुर नगर के सगीत को मौलिक देन है डागर परिवार और उनकी साधना। इनका सगीत डागर-वाणी के नाम से प्रसिद्ध है। ध्रुपद शैली म सगीत प्रस्तुत करने वाले इस वश के भारत प्रसिद्ध महान गायक हुए जिनकी ध्रुपद धमार आज भी अपनी प्रभुसत्ता जमाए है। ध्रुपद की गायकी बडी कठिन साधना है। स्वरो का विस्तार करना उन्हे पुन समेटना, ध्रुपद की श्रुतियाँ उसकी नोमतोम, उसकी उपज का अग आदि सभी अपना मौलिक महत्व रखते हैं। इस घराने के गायको का सक्षिप्त परिचय यहा दिया जा रहा है। इस घराने के कलाकार जयपुर से यहाँ लाये गए। ये कलाकार थे श्री गुलाम खा और उनके छोटे भाई श्री बहराम खा। गुलाम खा को तान तौल खा साहब भी कहते थे। उनके पुत्र इनायत खा और याजुद्दीन हुए। महान साधक और भारत विख्यात ध्रुपद गायक श्री जाकरुद्दीन और स्वर्गीय अलाबदे खाँ दोना अपने दादा के छोटे भाई बहराम खाँ से सगीत सीखते थे। महाराणा श्री सज्जन सिंह जी इन्हें जयपुर स माँग कर उदयपुर ले आये। जाकरुद्दीन के श्री जियाउद्दीन एकमात्र पुत्र था। जियाउद्दीन का मातृपक्ष भी प्रवीण सगीतानुरागी था। इनके नाना बन्देअली खाँ ग्वालियर के महान साधक एव बीनकार

थे। निस्संतान होने से इन्होने श्री जियाउद्दीन को गोद ले लिया। वे १२ वर्ष तक उदयपुर में संस्कृत सीखते रहे। इस तरह उनमे संस्कृत, वीणा और ध्रुपद की साधना की त्रिवेणी थी। जियाउद्दीन के चार पुत्र हुए। श्री मोहयुद्दीन आजकल बम्बई म है। उदयपुर म उनके छोटे पुत्र श्री फरीदुद्दीन डागर हैं जा गायकी व सितारवादन दोना के साधक हैं और उदयपुर के श्रेष्ठ कलाकारा मे से हैं। इन्होने ध्रुपद की गायकी अपने पिता से और सितारवादन अपने बडे भाई से सीखा। इनसे दो छोटे भाई सगीत सीख रहे हैं। यही जियाउद्दीन *डागर मेवाड के वतमान महाराणा श्री भगवतसिंहजी के सगीत शिक्षक थे।*

अलावदे साहब के परिवार के ४ पुत्रा मे से नसीरद्दीन के पुत्र श्री डागर बधु उल्लेखनीय है। ये हैं श्री महिनउद्दीन और श्री अमीनउद्दीन। इनके शिक्षक थे श्री जियाउद्दीन और श्री याज्जुद्दीन। श्री रहीमउद्दीन इन दिनो लखनऊ कॉलेज म प्रिंसिपल है। श्री इमामुद्दीन के दो पुत्र हैं। याजुद्दीन के भानजे श्री अश्वाक्उद्दीन ने श्री जियाउद्दीन तथा रहिमउद्दीन से शिक्षा पाई और आजकल ये कलकत्ते मे है। डागर परिवार ऐसा लगता है कि सगीत को वसीयत मे पाता रहा है। आज भी इस गायकी पर इनका पूरा अधिकार है। समस्त *सगीत जगत को डागर बधुओ की यह सेवा साधना एक अनूठी देन है।* आज भी ध्रुपद, धमार गायका मे डागर बधुआ के नाम का सबसे पहले स्मरण किया जाता है। इस तरह उदयपुर के सगीत क्षेत्र म डागर घराने की डागर-वाणी, सगीत-जगत के लिए अभूतपूर्व मौलिक देन कही जायगी।

**उदयपुर का वतमान और सगीत —**

ध्रुपद गायको के अतिरिक्त उदयपुर के खयाल गायका और साधको की चर्चा भी महत्वपूर्ण है। *सन् १९३४ म पहली बार श्री पन्नालाल पीयूष ने उदयपुर म गधवकला भवन नामक शास्त्रीय सगीत की* सस्था खोली। उदयपुर के तत्कालीन शिक्षा सचालक श्री लक्ष्मीलाल जोशी ने शिक्षा मे सगीत का श्रीगणेश किया। श्री देवदत्त नादमूर्ति बाहर से बुलाए गए। खयाल गायका मे श्री कालिका प्रसाद जी और उनके परिवार की सेवायें महत्वपूर्ण कही जायेंगी। वादको मे सवश्री उस्ताद अब्दुल हफीज खा उदयपुर के एकमात्र ख्यातिलब्ध तबलावादक हैं। या इनकी शिष्य परपरा मे गधव परिवारो के कुछ नवयुवक तबलावादन करते हैं कुछ सीख रहे है, पर य सब अभी राहो के अन्वेषी हैं। इनकी सफलता इनकी साधना पर निर्भर है।

गायको मे श्री देवदत्त नादमूर्ति व श्री देवगधव का नाम उल्लेखनीय है। श्री नादमूर्ति बडादा के सगीतालकार हैं तथा स्थानीय एम० बी० कॉलेज उदयपुर म सगीत शिक्षक हैं। श्री देवगधव ने अपने समकालीन छात्रगायका म सन् ६२ मे राष्ट्पति पुरस्कार प्राप्त किया है। इनके बडे भाई श्री चद्र गधव भी सगीत प्रेमी हैं पर उनका मन लोक धुनो से अभिमडित गीतो को गान मे ही अधिक रमता रहा है। वे वर्षों से अपनी पत्नी श्रीमती शशि गधव के साथ भारत भ्रमण करते रहे हैं तथा दोनो न लोक गायन मे पर्याप्त ख्याति पाई है।

इन्ही कलाकारो मे बाहर से आए हुए कई श्रेष्ठ कलाकार हैं, जिनमे श्री रामलाल माथुर का नाम उल्लेखनीय है। श्री माथुर, अली अकबर की शिष्य परपरा मे हैं तथा विद्याभवन उदयपुर के सगीत शिक्षक है। सितारवादन और गायन दोनो मे श्री माथुर की खूब दखल है। श्री रामलाल जी जोधपुर के निवासी हैं। उनकी निरतर साधना मे उनका उज्वल भविष्य दृश्यमान होगा ऐसी आशा है। श्री माथुर के साथ श्री आठले, श्रीपाद पागे, फडके आदि नाम भी स्मृतव्य है।

नृत्यकारो मे श्री मथुराप्रसाद उदयपुर के ख्याति लब्ध कलाकार थे। उनके अकाल देहावसान के बाद इनके दो छोटे अनुज श्री बद्रीप्रसाद और जगन्नाथ प्रसाद नृत्यकला की सेवा कर रहे हैं। वे कत्थक नृत्य के प्रचारक व प्रसारक है।

भारत नाट्यम् की सेवा उदयपुर मे करने वाले हैं—श्री कृष्णमूर्ति। भूपालपुरा उदयपुर मे उनकी नृत्य शिक्षा देने वाली सस्था है। अत्याधुनिक नये कलाकारो मे है—सर्वश्री राखीलाल (तबलावादक) भँवरलाल शर्मा (सितारवादक), श्री दयानन्द दातिया (वायलिनवादक) तथा श्री रामनारायण आर्य व श्री ललित (तबलावादक)। इनमे सितारवादक श्री शर्मा ने डागर बधुओ से शिक्षा ली है। नवयुवक कलाकारो की सारी साधना उनके रियाज और तपस्या पर निर्भर है।

इस प्रकार उदयपुर मे सगीत की चेतना अव्याहत रूप से रही है। शिक्षा विभाग की सगीत प्रवृत्ति के श्रीगणेश होते ही उदयपुर नगर मे सगीत सिखाने वाली कई सस्थायें बनी, जिसमे प्रमुख है—कलाकेन्द्र, सगीत नाट्य निकेतन तथा मीरा कलामदिर। अनेक शिक्षा सस्थाओ ने भी पाठ्यक्रम मे सगीत का समावेश किया। इनमे प्रमुख है—विद्याभवन-राजस्थान, महिला विद्यालय, महिला मडल, विद्यापीठ व बालाश्रम। श्री देवीलाल सामर ने भारतीय लोक कला मडल की स्थापना कर नृत्य तथा लोक साहित्य के पोषण और अनुसधान मे सराहनीय योग दिया है। श्री सामर ने कला मडल मे अपनी युगो युगो की साधना लगाई है। श्री सामर की यह स्थापना अपने युग की उल्लेखनीय घटना कही जाएगी।●

हम आग्रह पूर्वक आलस छोडें, वहमो को दूर करें, फूट को मिटा दें कायरता को निकाल फेंकें, हिम्मत और आत्म-विश्वासपूर्वक प्रयत्न करते रहें तो जो भी पाना चाहेंगे स्वत प्राप्त होगा। जो मनुष्य जिस वस्तु के लायक होता हैं वह उसे अवश्य मिलती है।

डा० प्रेमलता शर्मा

# संगीत राज

कला और सम्कृति के महान् उन्नायक उन्न साहित्यिक प्रतिभा के धनी, हिन्दू धम के तेजस्वी रक्षक, अपराजित योद्धा, अप्रतिम सगीत-शास्त्री तथा वीणावादक, स्थापत्य की अनुपम कृतिया से पूरी मेवाड भूमि के अलकर्ता, युद्ध-धम दान दया—इस चतुर्विध वीय से अलकृत, शस्त्र और शास्त्र, शौय और औदाय, वीय और धैय, पराक्रम और कला साधना क्षात्र, ओज, ब्राह्म प्रसाद और रसिकजनोचित माधुय के उदात्त प्रतीक महाप्राण महाशील महाशूर महाराणा कुम्भा के सगीतराज की रचना पूण होने के अर्थात ई० सन् १४५६ के ठीक पाँच सौ वष पश्चात सन् १९५८ म प० ओकारनाथ ठाकुर की प्रेरणा से काशी हिन्दू विश्वविद्यालय स्थित हमारे सगीत महाविद्यालय 'श्री कला सगीत भारती' के शोध-विभाग (Research Section) मे इस विराट ग्रन्थ के सपादन का विचार किया गया। अनूप सस्कृत लाइब्रेरी बीकानेर, मे इस ग्रन्थराज की एक सपूण पाण्डुलिपि तथा ग्यारह खण्डित प्रतिलिपिया सग्रहीत हैं, यह ज्ञात होने पर सपादनाथ उन प्रतिलिपिया के प्राप्ति का यत्न आरम्भ किया गया। प्रथम दो प्रयासो म सफलता न मिलने पर पुन प० ओकारनाथजी के माध्यम से यत्न किया गया और पाण्डुलिपियो को एक एक करके हमारे यहाँ मँगाने का प्रबध किया जा सका। इस प्रकार दिसवर, १९५८ मे प्रथम प्राप्त सम्पूण पाण्डुलिपि की शुद्ध प्रतिलिपि बनाने का काय आरम्भ हुआ। प्राय तीन वष के कठोर परिश्रम के पश्चात मान्यवर डा० वासुदेवशरण अग्रवाल की प्रेरणा से हमार विश्वविद्यालय ने नेपाल एण्डाउमेण्ट ग्रन्थ माला के अन्तगत इस वृहत् ग्रन्थ को दो खण्डा म प्रकाशित करने का निणय गत वष किया।

भारतीय सगीत का यह वृहत्तम ग्रन्थ दुर्दैववश दीघ काल तक विस्मृति के आवरण मे पडा रहा। इसके पश्चात मध्ययुग मे जितने भी सगीत शास्त्र के ग्रन्थ लिखे गए प्राय उन सभी म इस ग्रन्थ से अनभिज्ञता दिखाई देती है। इने गिने अपवादो को छोड कर इसका नामोल्लेख भी पूरे मध्ययुग के ग्रन्था म दुलभ है। जो अपवाद हैं वे भी नामोल्लेख तक ही सीमित हैं। (सोमनाथ के "रागविबोध' म द्वितीय विवेक के श्लोक ८ की सोमनाथकृत टीका म सगीतराज का 'वीणादण्ड के सवध मे एक उद्धरण मिलता है। इसके अतिरिक्त अन्य कोई उद्धरण मुझे अभी तक कही उपलब्ध नही हुआ है।) कही पर भी इस ग्रन्थ के गभीर विषय प्रतिपादन की चर्चा नहीं मिलती। इस शोचनीय परिस्थिति का मुख्य कारण तो यही जान पडता है

कि इस ग्रन्थराज की प्रतिलिपियां को विभिन्न स्थानों पर भेजा नहीं जा सका होगा और फलत अन्य ग्रन्थकार इस से अपरिचित रह गए होंगे। इस प्रसंग मे यह अवश्य विचारणीय है कि राजस्थान म जो ग्रन्थ लिखे गए उनम 'संगीतराज' का उल्लेख मिलने की संभावना है, क्योंकि उस प्रदेश मे तो इस की प्रतियाँ सुलभ रही ही होंगी। इस संभावना म कितना सत्यांश है यह खोज करने पर ही निर्णय किया जा सकेगा। दूसरा एक कारण यह भी हो सकता है कि 'संगीतराज' के निर्माण के पूर्व 'संगीत-रत्नाकर' का भारतीय संगीत जगत् मे इतना एकाधिपत्य छा चुका था कि उसके बाद आकार मे प्राय तिगुने 'संगीतराज' को जो महत्व मिलना चाहिए था उस का शतांश भी नहीं प्राप्त हो सका। किन्तु पूर्ण विश्वास है कि प्रस्तावित प्रकाशन से पांच शताब्दियां तक उपेक्षा और विस्मरण से तिमिराच्छन्न रहा हुआ यह ग्रन्थराज अब अपने आलोक से भारतीय संगीत जगत को दीपित करेगा और हमारे संगीत शास्त्रा म अपना न्याय्य-स्थान प्राप्त कर सकेगा। आज यह कहना तो संभवत शोभन न होगा कि 'संगीतराज' का स्थान 'संगीत-रत्नाकर' की तुलना म भी उच्चतर होगा, किन्तु अनुकूल समय और परिस्थितियाँ आते ही प्रस्तुत ग्रन्थ अपना स्थान स्वयं बना लेगा इस म कोई संदेह नहीं। तब सत्य स्वयं ही अपने को प्रमाणित कर देगा।

इसके पूर्व दो बार इस ग्रन्थराज के आंशिक प्रकाशन के यत्न हो चुके हैं, एक तो सन् १९४६ म अनूप संस्कृत लाइब्रेरी, गंगा ओरिएण्टल सीरीज म डा० कुन्हन राजा द्वारा संपादित "पाठ्यरत्नकोश" का प्रकाशन हुआ था और दूसरे राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर, जोधपुर की ओर से "नृत्यरत्न कोश का पूर्वार्द्ध सन् १९५७ म प्रकाशित हुआ था। ये प्रकाशित अंश पूरे ग्रन्थ के अति लघु अंश के ही प्रतिनिधि थे। संपूर्ण ग्रन्थ का संपादन अवश्य ही दुरूह कार्य है क्योंकि उस म संगीत शास्त्र का प्रौढ ज्ञान तथा संपादन की वैज्ञानिक पद्धति से अभिज्ञता—ये दोनों ही अनिवार्य रूप से अपेक्षित हैं। इसी दुरूहता के कारण अद्यावधि इस ग्रन्थराज का संपादन नहीं हो सका। अब प्रभुकृपा से संपूर्ण ग्रन्थ का संपादन और प्रकाशन होने पर इस का अज्ञातपूर्व गौरव उद्भासित होने जा रहा है इस से मुझे अपार हर्ष और संतोष का अनुभव होता है और अपने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रति भी गर्व की सुखद अनुभूति होती है।

षोडश सहस्र श्लोक मे रचित यह ग्रन्थराज भरत के 'नाट्य शास्त्र से प्राय ढाई गुना और संगीत रत्नाकर' से प्राय तिगुना होने के कारण अपने आकार मे तो अद्वितीय है ही साथ ही अधुना उपलब्ध साहित्य म स संगीतशास्त्र की प्राचीन परंपरा का सर्वोत्कृष्ट प्रतिनिधि भी है। उदाहरणार्थ आज मतंग का 'बृहद्देशी' हम बहुत ही खण्डितावस्था मे उपलब्ध है। किन्तु 'संगीतराज' म मतंग के मत का पूर्ण प्रतिनिधित्व है और याष्टिक विशाखिल, दत्तिल आदि प्राचीन आचार्यों के मत का भी उल्लेख यत्र-तत्र मिलता है। इस प्रकार जिन प्राचीन आचार्यों को आज हम नाममात्र को जानते है उनके मतो का न्यूनाधिक परिचय 'संगीतराज म अन्य उपलब्ध ग्रन्थों की अपेक्षा विस्तृत रूप मे मिलता है। इस प्रकार पन्द्रहवीं शताब्दी म रचित यह ग्रन्थ प्राचीन परंपरा का अंतिम तथा सर्वोत्तम प्रतिनिधि है।

प० ओंकारनाथजी के लेखनों और प्रकाशनों से यह स्पष्ट हुआ है कि मतंग के पश्चात संगीत रत्नाकर म स्वर श्रुति ग्राम संबंधी अनेक अस्पष्टताएँ स्थान पा गई थीं जो मध्ययुग के ग्रन्थकारों के लिए भ्रान्तियाँ

बन गई और जिन के फलस्वरूप शुद्ध-विकृत स्वर द्वग्रामिक-व्यवस्था मूच्छना-जाति आदि के विषय म घोर अन्धकार शताब्दियो तक व्याप्त रहा। यह विश्वास पूवक कहा जा सकता है कि यदि हमारे मध्ययुग के ग्रथकारो का आधार केवल'सगीत रत्नाकर ही न होकर सगीतराज भी रहा होता तो यह भ्रान्ति परपरा इतनी दीघ और विस्तृत न बनती।

इस ग्रथराज के विषय विभाजन का स्वल्प परिचय प्रासगिक होगा। पूरा ग्रथ पाच कोशो मे विभाजित है जिन के नाम इस प्रकार हैं —

१ पाठ्यरत्न कोश २ गीतरत्नकोश

३ वाद्यरत्नकोश ४ नृत्यरत्न कोश

५ रसरत्नकोश।

पाठ्यरत्नकोश का आकार लघुतम और गीतरत्नकोश का वृहत्तम है। प्रत्येक कोश म चार-चार उल्लास हैं और प्रत्येक उल्लास म चार-चार परीक्षण है। इस प्रकार पूरा ग्रथ पाँच कोशो बीस उल्लासो तथा अस्सी परीक्षणो मे विभाजित है।

ग्रथ के विषय-विभाजन के इस सक्षिप्त परिचय के पश्चात, इसके विषय-प्रतिपादन की कतिपय विशषताओ का उल्लेख स्थानीय होगा।

(१) *भरत-दत्तिल-मतग की परपरानुमार 'ग्राम, का विशुद्ध शास्त्रीय निरूपण।* इस का कुछ विवरण ऊपर दिया जा चुका है।

(२) प्राचीन मत के प्रति आग्रह होने पर भी अधानुकरण नही, आलोचनात्मक दृष्टि स विचार। *उदाहरणाथ मतग की द्वादश स्वर-मूर्च्छना पद्धति का खण्डन किया है।*

(३) प्राचीन परपरा ग्रहण करने पर भी आवश्यकतानुसार नवीन धाराओ का समन्वय। उदाहरणाथ, राज वर्गीकरण म मतग-परपरा का पूरा अनुसरण करते हुए ग्राम राग देशी राग वर्गीकरण प्रस्तुत *करते हुए भी, देशी रागो म राग ध्यान-पद्धति के स्वल्प ग्रहण द्वारा तत्कालीन प्रवृत्ति का भी समन्वय* कर लिया गया है।

ग्रथ की विशेषताओ का विस्तृत विवरण देने का यह अवकाश नही है। उसके प्रकाशित होने पर *विद्वज्जन स्वय ही उसकी विशेषताओ का अनुधान करेंगे।*●

'मेरे लिए तो सगीत ही सब से बडी औषधि है"

—महात्मा गांधी

# रंगमंच

राजस्थान में लोक नाट्यो द्वारा शहरी व ग्रामीण जनता का मनोरंजन होता है। कही कही मेले व उत्सवो पर लोक नाटय देखने को मिलते हैं। आज भी कुछ लोग अपनी आजीविका का साधन लोक नाट्यों को बनाये हुये हैं। पश्चिमी टेकनिक के आधार पर खेला जाने वाला प्रथम नाटक सन् १८५३ ई० म लखनऊ के केसर बाग म मुन्शी अमानत साहब का लिखा हुआ इन्द्र-सभा था। स्त्री-पात्र भी पुरुष हुआ करते थे। लखनऊ म खेले गये 'इन्द्र सभा' नाटक की तारीफ सब जगह फैली। अनेक नाटक कम्पनियाँ बनी। पारसी, खोजा व मुसलमानो ने इस व्यवसाय को अपनाया और कलकत्ता, बम्बई नाटक कम्पनियो के गढ बन गये।

मारवाड कम्पनी की स्थापना —

वि० सम्वत १९५४ मे सब प्रथम बरेली के जमादार साहब की थियट्रिकल कम्पनी का आगमन राजस्थान म हुआ। उसके अनुसरण मे स्वर्गीय लक्ष्मण दास डागी ने सम्वत १९५६ म मारवाड नाटक सस्था की स्थापना की। उन दिनो मारवाड मे अकाल पडा था। यह अकाल छपने के अकाल के नाम म प्रसिद्ध है। मारवाड म गायक जातियाँ थी जिनका पोषण राग को रग व विवाहोत्सवो, पर निर्भर था। आजीविका डाँवाडोल हो गई थी। लक्ष्मण दास जी डागी न उन ७५ कलाकारो को मारवाड नाटक कम्पनी की छत्र छाया म ले लिया तथा जानकी-स्वयवर हरिश्चन्द्र, पूरण भगत आदि कई नाटक खेले। कम्पनी न श्री माधोसिंह जी महाराज से आज्ञा लेकर कुछ नाटक जयपुर म भी खेले। जयपुर से कम्पनी कानपुर भी गई, कानपुर से लखनऊ। वहा शीशमहल नवाब के यहा कच्चा थियेटर बनवा कर कुछ नाटक दिखाये। ४ वष बाद ही बीकानेर राज्य मे श्री प्रेम सुख जी व्यास ने जे० बी० थियट्रिकल कम्पनी जोधपुर बीकानेर कम्पनी के नाम म सस्था कायम की। जिसके निर्देशक स्वय व्यास जी थे और पहला नाटक हरिश्चन्द्र, बीकानेर म कोट दरवाजे के अन्दर कसाए वालो की कोटडी म कच्चा थियेटर बनवाकर खेला गया। व्यास जी की कम्पनी ने जोधपुर, कलकत्ता, बम्बई, दिल्ली पटना भागलपुर आदि स्थानों पर प्रदशन किये।

स्वर्गीय महाराजा गगासिंह जी ने भी कई बार लालगढ पैलेस म व्यास जी के नाटक देखे और हरिश्चन्द्र नाटक की बडी प्रशसा की। जनता का शुद्ध मनोरजन किया और नाट्य जगत मे भी राजस्थानियो का नाम प्रसिद्ध किया। नाट्य रूपी बीज जो इन दो महान विभूतिया द्वारा मरुधरा की धरती पर बोया गया आज अपनी शाखाए कलकत्ता, बम्बई, देहली, मद्रास और भारत के कोने कोने म फली और उसने राजस्थानी सगीत नृत्य, और नाटय की तरफ सबको आर्कषित किया।

नरेश और रगमच —

झालावाड नरेश, भरतपुर नरेश श्री किशन सिंह जी, जयपुर नरेश श्री माधोसिंह जी आदि को नाटक मण्डलिया म रुचि थी। भरतपुर नरेश ने भारत की आदश नाटक कम्पनी 'यू अलफ्रेड' को भरतपुर बुलाया। जयपुर मे भी खटाऊ अल्फ्रेड और यू अल्फ्रेड कम्पनिया आई। नवाब टाक और झालावाड नरेश की कम्पनिया म भी अच्छे अच्छे कलाकार थे। जोधपुर बीकानेर, समदडी और जोधपुर राज्य के आस पास के गावो म खेड, गुन्दव मोकलाव फलौदी, शेखाला मतोडा के निवासी पेशावर गायकों ने राजस्थान क बाहर बडे बडे नगरो म अपनी कला की छाप बिठाई।

हिन्दुस्तान की कोई भी नाटक कम्पनी ऐसी न थी जिसम दस पन्द्रह कलाकार राजस्थान के न हो। बम्बई मे अहमदाबाद, बडौदा आदि गुजरान के बडे नगरो मे गुजराती कम्पनियो में भी राजस्थान के कलाकार काम करते है। ध्यान देने योग्य बात यह है कि राजस्थान के गावो मे रहने वाले कलाकारो ने किस तरह गुजराती भाषा पर काबू पाया और ख्याति प्राप्त की। अमृतसर की कथनी क्लब का रामलीला म और भवाना की राम-लीलाओ म राजस्थानियो का बहुत कुछ योग रहा है। हर वष अजमेर राज्य मे ऊस के दिना म कल्लू बादशाह की नाटक कम्पनी खेल किया करती थी। उनमे भी राजस्थान के कई कलाकार काम करते थे।

अजमेर मे सन् १६४२ मे स्वय लेखक के ही निर्देशन मे दि बार एक्ट थियेट्रिकल कम्पनी की स्थापना हुई।

सन् १६३६ मे कलकत्ते मे स्व० श्री मानिक लाल डागी ने 'कारोनेशन कम्पनी' की स्थापना की। उन्होने करीब १५० कलाकारो के दल के साथ कई बार भारत का भ्रमण किया और सन् १६३६ से १६६२ तक स्वर्गीय मानिक लाल जी डागी अनेक बाधाओ को पार कर सस्था चलाते रहे।

सन् १६३३ मे सव प्रथम पजाब के श्री मदनपुरी और मुलकराज पुरी के सहयोग से स्व० श्री मानिक लाल डागी ने हेबलिंग डान्स पार्टी आरम्भ की और पूरे भारत का भ्रमण किया। चित्र जगत मे प्रसिद्ध हास्य अभिनेता सुन्दर, माया बनर्जी प्रमीला, आदि उस सस्था के प्रमुख कलाकार थे।

राजस्थानी नाटक —

सम्पूरण राजस्थानी भाषा का प्रथम नाटक श्री भरत व्यास द्वारा लिखित 'रामूचरण' व्यवसायी कम्पनी के रगढग म कुछ नये शौकिया कलाकारा और पुराने व्यवसायी कलाकारो के प्रयत्न से सन् १६४१ म

'ग्रनर्फ ड थियेटर' कलक्त्ता मे 'दीपक' खेला गया। तब से राजस्थानी दशको व कलाकारों का झुकाव राजस्थानी नाटको की ओर हुआ। आज भी कलकत्ते और बम्बई मे राजस्थानी नाटक खेले जाते हैं। राजस्थान से बाहर बम्बई व कलकत्ता मे राजस्थानी नाटको को खेलने का श्रेय प० रुद्र, पडित भरत व्यास, श्री जमुनादास पचरिया, बाबू मानिक लाल डागी आदि को है।

कलकत्ते मे न० ३०, ताराचन्द दत्त स्ट्रीट मे 'मून लाईट थियेटर मे राजस्थानी नाटक कभी-कभी खेले जाते हैं। बम्बई मे भी मारवाडी थियेटर मे राजस्थानी नाटक खेले जाते हैं।

**स्वतन्त्रता-सग्राम और राजस्थानी कलाकार —**

राजस्थान के नेता रियासती शासन से मुक्ति पाने के लिये सघर्ष कर रहे थे। रगमच ने भी अपना कर्तव्य पूरा किया। इसका श्रेय स्वर्गीय मानिकलाल डागी का है। सन् १६३६ मे कलकत्ता मे 'जागो बहुत सोय' नाटक खेला। सन् १९४० मे 'हिटलर' नाटक खेला। सन् १६३६ म कलकत्ता मे लीगी मत्री मडल ने 'राठौड दुर्गादास' नाटक बन्द कर दिया और इसी तरह दिल्ली मे सन् १६३६ म 'जयहिन्द नाटक बन्द किया गया। स्वर्गीय मानिकलालजी डागी को उपरोक्त नाटकों पर ब्रिटिश शासन द्वारा पाबन्दी लगाने से लाखों का नुकसान हुआ। सन् १९४६ मे 'जयहिन्द' नाटक को स्वर्गीय श्री रफी अहमद किदवई ने पढा और खेलने की अनुमति दी।

**स्वतन्त्रता के बाद —**

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद स्वर्गीय मानिकलालजी डागी अपना थियेटर लेकर जोधपुर आ गये और दुर्गादास नाटक स्वर्गीय जोधपुर नरेश श्री हनुमन्तसिहजी की उपस्थिति मे जनता को दिखाया। देहली मे 'हैदराबाद' 'कश्मीर जयहिन्द 'आपका सेवक घर की लाज 'धरती के सपूत आदि नाटक मानिकलालजी डागी ने खेले। राजस्थान मे उन्होने अल्प बचत पर आधारित एक पथ दो काज 'राणा आपणा करसारो कालजो 'ग्रानासिंह' आदि राजस्थानी नाटक बडी सफलता से खेलकर 'माणिक थियेटर्स की स्थापना की।

स्वतन्त्रता के बाद राजस्थान मे सगीत-नाटक अकादमी की स्थापना हुई। जयपुर म रवीन्द्र मच बना। राज्य सरकार की ओर से सहकारी विभाग मे सहकारी रगमच की स्थापना हुई। नाटक प्रतियोगिता व नाटक लेखक प्रतियोगिता आरम्भ हुई, पुरस्कार मिले। पूरे राजस्थान मे एमेच्योर सस्थाओ का जाल बिछ गया। मण्डल परिषद, कलानिकेतन आदि नामों से अनेक सस्थाओ का जन्म हुआ। 'तरुण कलाकार परिषद' न जयपुर मे अनेक आयोजन किय और किये जा रहे हैं। राजस्थान सगीत नाटक अकादमी के भूतपूर्व अध्यक्ष स्वर्गीय गोवधनलालजी काबरा ने सगीत, नृत्य एवम् लोक-सगीत उत्थान के लिय अनेक प्रयत्न किये हैं। वतमान स० ना० अकादमी के अध्यक्ष श्री सवदानन्दजी, ने जो स्वय नाटक लेखक एव कलाकार हैं अभी 'भूमिजा' का सफलता पूर्वक रवीन्द्र मच पर प्रस्तुत किया।



रगमच

B

'भारतीय-लोक-कला मडल' उदयपुर के सचालक श्री देवीलाल सामर ने लोक कलाओ के क्षेत्र मे बहुत काम किया है । यूरोप मे भी राजस्थानी कठपुतलिया के खेल म ख्याति प्राप्त की । श्री सामरजी ने भी अपनी सस्था द्वारा अनक नृत्य नाटिकाएँ तैयार की । उदयपुर के श्री प्रकाश द्वारा स्थापित 'मीरा मडल' ने भी नृत्य नाटिकाएँ तयार की है ।

उदयपुर के श्री भगवानदास वर्मा ने राजस्थान और राजस्थान से बाहर जाकर राजस्थान का मस्तक ऊचा किया हैं । भारत की प्रसिद्ध रामलीला और कृष्णलीला म उन्होने प्रमुख योग दिया । राजस्थान के नृत्यकार, सगीतज्ञ, वाद्यवादक राजस्थान के बाहर भी अपने काय मे तल्लीन हैं ।

अप्रल सन् १६५५ मे जब जयपुर मे आकाशवाणी केन्द्र स्थापित हुआ, उस समय से लोक गीत गायको को बहुत प्रोत्साहित किया गया और राजस्थानी नाटक सकडो की सख्या मे प्रसारित किये गये । अब भी समय समय म प्रसारित होते रहते हैं ।

जयपुर म रवीन्द्र मच बनने के बाद नाटक खेलने वालो को बहुत सुविधा हो गई है और राजस्थानी रगमच का भविष्य बहुत उज्ज्वल प्रतीत होता है ।

कुछ सुझाव —

(१) राजस्थान के व्यवसायी कलाकारो के लिये 'कलाकार वेल फेयर' सस्था की स्थापना करना ।
(२) राजस्थान मे आर्थिक सहायता देकर व्यवसायी नाटय सस्था की स्थापना करना ।
(३) कलाकारो के लिये जयपुर म कलाकार कालोनी की स्थापना करना ।
(४) नाटय कला सम्बन्धित मासिक पत्रिका का प्रकाशन करना ।●

**जो कला आत्मा को आत्मदर्शन करने की शिक्षा नहीं देती, वह कला नहीं है ।**
**—बापू**

**मानव की बहुमुखी भावनाओं का प्रबल प्रवाह जब रुक नहीं सकता, तभी वह कला के रूप मे फूट पडता है ।**
**—रस्किन**

डा० प्रभाकर माचवे

# साहित्य शोध : कुछ प्रश्न

स्वराज्य से पहले जोधपुर मे, कुमार साहित्य-सम्मेलन के अध्यक्ष के नाते, जाने का मिला । दो वर्ष पूर्व राजस्थान साहित्य अकादमी की ओर से "युद्ध और साहित्यकार' सेमिनार का समापतित्व चार दिन तक किया उदयपुर म । इस बीच मे कई लेखकों, भाषा वैज्ञानिकों शोध काय निरत व्यक्तियों से मिलना हुआ, कलकत्ते, म पिलानी मे, अजमेर म, जयपुर म और भी कई स्थानो म । सबके मन म यही भावना जाग्रत है कि राजस्थानी भाषा के लिए कुछ करना जरूर चाहिए । मैथिली के लिए मैथिली प्रदेशवासी कितना कर रहे हैं। कोकणी के लिए गोवा मे बकायदा आंदोलन है । एक स्तर तो राजनैतिक सामाजिक कार्यकर्ताओं का है जो राजस्थानी को हिन्दी से स्वतत्र भाषा मनवाने के पक्ष मे है । डा० सुनीतिकुमार चटर्जी जसे भाषाविद से लगाकर 'मरु-वाणी' मरुधार के सपादक तक कई लोग जो राजनीति मे बाहर हैं, इस मत के समर्थक हैं। दूसरी ओर लोग वाग इस तरह की बात को, विकेन्द्रीकरण के हर विचार को राष्ट्रीयता के लिए खतरा मानते हैं । उनमे से कई अन्ध राष्ट्रवादी हैं, उन्नीसवी सदी की राष्ट्रीयता के समर्थक हैं । एक 'राष्ट्र एक भाषा एक लिपि' का मानते हैं । हम उस राजनतिक विवाद म पडना नहीं है । पर राजस्थान की भाषा राजस्थानी हो या न हो, शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हो या न हो, इतनी बात सच है कि राजस्थान म कई स्थानो पर बहुमूल्य ऐतिहासिक साहित्य हस्तलिखित और दुलभ सामग्री बिखरी पडी है, उस पर शोध आवश्यक है । वैयक्तिक स्तर पर अगरचन्द नाहटा, मुनि जिन विजयजी, मुनि कान्ति सागर, मोतीलाल मेनारिया आदि न नरोत्तमदास स्वामी और सुयकरण पारीक की परम्परा को जरूर बढाया है । हिन्दी शोध सस्थान ने बहुमूल्य लोकगीत सीरीज, कोशकार्य, भीलो कहावतें आदि प्रकाशित किय हैं फिर भी बहुत कुछ करना बाकी है । इस काम के पीछे विशुद्ध एतिहासिक गवेषणा और भाषा वैज्ञानिक शास्त्रीय दृष्टि आवश्यक है ।

मेरी जानकारी के अनुसार जो अब तक काय हुआ उसे जो आर्थिक सहायता मिली वह तीन स्रोत सूत्रो से मिली, जसे (१) भूतपूर्व राजा महाराजाओं स्वय अपने वश के प्राचीन वीर विरुदावली की रक्षा मे व्यस्त रहते हैं उसके लिए कुछ भी खच करने को कम नहीं करेंगे (२) सेठ साहूकार स्वय कलकत्ता आदि अपने देश से दूर स्थानो म बसकर अपनी सस्कृति विशेषतया पारिवारिक, जातिगत, मिश्रण व रीति-रिवाज आदि को अक्षुण्ण बनाये रखने की लालसा म, पुरानी पीढ़ी व रूढ़ियाँ सुरक्षित रखने का स्वप्न म, मान

देते हैं (३) धार्मिक संस्थाएं जैसे जैन उपासरे जो अर्द्ध मागधि में सुरक्षित साहित्य की हस्तलिखित पोथियों के रक्षण या पुनः मुद्रण के लिए काफी बड़े कोश' रखते हैं या नाथद्वारा व मंदिर जैसे देवस्थानों में अनेक सुन्दर हस्तलिखित ग्रन्थ पड़े हैं जिन पर काय आवश्यक है इत्यादि। (४) लोककला सम्बन्धी आधुनिक मनोरंजन प्रधान संस्थायें व सांस्कृतिक नृवंशशास्त्र में उतनी वैज्ञानिक रुचि नहीं रखती जितनी कि उस प्रकार के शोध से हमारे आदिवासी या अन्य दूर के अपरिचित भू-भागों से। चमत्कारपूर्ण और आनन्द की उपलब्धि के विचार से 'टेप रिकार्डिंग या फोटो चित्र आदि जमा करती हैं। देवीलाल साल का काय बहुत सराहनीय है।

अब राजस्थान में भी तीन चार विश्वविद्यालय हैं उनमें राजस्थानी लोकभाषाओं पर कहां तक 'फील्ड वर्क' हो रहा है, उनके लिए विशेष भाषा वैज्ञानिक विशेषज्ञों की आसक्तिया है या नहीं, मैं नहीं जानता। पर जन-जीवन यदि ज्ञान विज्ञान को, सांस्कृतिक इतिहास और कला शोध को मिलाना जरूरी माने तो ऐसा काय शीघ्रातिशीघ्र करना चाहिये। बल्कि मेवाती, मारवाड़ी हाड़ोती जैसलमेरी से क्षेत्रिय शब्दों, मुहावरों, कहावतों, को जमा करना चाहिये। शहरी संस्कृति का आक्रमण इन ग्राम वालों पर इतनी तीव्रता से हो रहा है कि यदि इस दिशा में कोई कदम शीघ्र न उठाया गया तो आने वाली पीढ़िया इस विशाल समृद्ध परम्परा से पूरी तरह कट जायेंगी।

राजस्थान सरकार इस विषय में आवश्यक काय कर ही रही होगी? पर उस काय को अधिक गतिशील और वैज्ञानिक बनाना जरूरी है अभी तो राजस्थानी लोकगीतों पर एक उत्तम पुस्तक हिन्दी से बाहर किसी भाषा मे उपलब्ध नही है। मेरा सुझाव है कि अंग्रेजी और अन्य भाषाओं में भी अनुवाद होने चाहिए।●

प्रश्न यह नहीं है कि, अपने जीवन लक्ष्य की ओर आज कितने आगे बढ़े।
प्रश्न यह है कि किस तरह आगे बढ़े। रोज रात को अपने हाथ से पूछो कि, उसने आज किसी के मुंह का कौर तो नहीं छीना। अपने पैर से पूछो कि, किसी का सिर कुचलकर तो ऊपर नहीं चढा वह। यदि उत्तर मिले नहीं, तो समझो, जीवन का वह दिन सार्थक हुआ।

—टालस्टाय

# राजस्थानी साहित्य का सिंहावलोकन

राजस्थान भारत का विशाल और महत्वपूर्ण प्रदेश है। इस प्रदेश के वीरो, सतियो और सतो की कीर्ति-गाथाओ ने बडी ख्याति प्राप्त की है। इन्होने राजस्थान की ख्याति भारत मे ही नही विदेशो मे भी फलायी। इटली जसे दूरवर्ती प्रदेश के डा० तेसीतोरी को राजस्थानी भाषा और साहित्य ने इतना अधिक आकर्षित किया कि उन्होने अपना सारा जीवन राजस्थानी भाषा और साहित्य अध्ययन प्राचीन ग्रन्थो के सम्पादन, जगह जगह घूम कर पुरातत्व एव शिलालेखो आदि के सग्रह तथा प्रकाशन काय मे लगा दिया। डा० ग्रियसन जसे भाषा वज्ञानिक ने राजस्थानी भाषा को एक स्वतन्त्र भाषा के रूप मे विवेचित किया और कनल टाड ने राजस्थान का इतिहास लिख कर देश विदेश मे राजस्थान की गौरव गाथा प्रचारित की।

९ वी शताब्दी के "कुवलय माला' नामक जन ग्रन्थ मे भारत की प्रान्तीय १६ भाषाओ तथा उन प्रान्तो के निवासियो की विशेषताओ पर सक्षेप मे प्रकाश डाला है। उसमे मरु प्रदेश और उसकी भाषा का भी उल्लेख है। मरु और गुजर प्रदेश दोनो का घनिष्ठ सम्बन्ध शताब्दियो तक रहा है। इतना ही नही गुजर शब्द सव प्रथम वतमान राजस्थान के एक हिस्से के लिए ही प्रसिद्ध हुआ था। वतमान गुजरात का उस समय यह नाम नही था और वह प्रदेश भी कई भागो मे अलग अलग नामो से बटा हुआ था। फिर भी राजस्थान और गुजरात का सामाजिक भौगोलिक साहित्यिक और सास्कृतिक सम्बन्ध सर्वाधिक घनिष्ठ रहा है। इसलिए १८ वी शताब्दी तक राजस्थान और गुजरात की भाषा बहुत कुछ एक जसी ही थी। यह उस समय तक की प्राप्त रचनाओ मे स्पष्ट है। मालवा प्रदेश मे भी वसी ही भाषा बोली जाती थी अर्थात प्राचीन राजस्थानी भाषा का क्षेत्र काफी विशाल रहा होगा। गत कुछ शताब्दियो मे तो राजस्थान के निवासी व्यापारी आदि के निमित्त से भारत के कोने कोने मे बस गये है पर वे अपने घरो मे मूल प्रान्तीय मातृभाषा का ही व्यवहार करते है और उन सभी के लिए 'मारवाडी' शब्द का ही व्यापक प्रयोग किया जाता है।

उत्तर भारत की प्रान्तीय भाषाओ की जननी अपभ्र श भाषा है उसी से हिन्दी, राजस्थानी गुजराती मराठी बगाली पजाबी आदि भाषाओ का विकास हुआ। छठी, सातवी शताब्दी से लेकर ११ वी, १२ वी शताब्दी तक प्रान्तीय भाषाओ का साहित्य मिलने लगता है। अन्य प्रान्तीय भाषाओ का साहित्य इतना

सुरक्षित नही रह पाया जितना कि राजस्थान और गुजरात का। विशेषत इसलिए इस दिशा म जन समाज न बहुत ही सावधानी बरती। जन मुनियो का निवृतिमय जीवन सार राजनतिक और सामाजिक हलचलो से बहुत कम आन्दोलित हुआ। वे निरन्तर साहित्य निर्माण करते रहे और साहित्य के सरक्षण के लिए भी बहुत अधिक प्रयत्नशील रहे। जन श्रावको ने लाखा रुपये खच करके प्राकृत, सस्कृत अपभ्र श, राजस्थानी और गुजराती रचनाओ की प्रतिलिपिया काफी परिमाण म करवा कर अनेक स्थाना म ज्ञान भडार स्थापित किय। बिना किसी भेद भाव के जन और जैनेतर प्रत्यक विषय और भाषा के अच्छे अच्छे ग्रथो को उन्होने अपन भडारो म सुरक्षित रखा। इसी का परिणाम है कि लाखो प्रतिया अन्य प्रान्तो व विदेशो म चले जाने पर भी, राजस्थान गुजरात म सर्वाधिक हस्तलिखित प्रतिया आज भी प्राप्त है। प्राचीन राजस्थानी साहित्य विशेषत जन विदवाना और चारणो की देन है। चारणो एव भाटो का साहित्य मौखिक रूप से ही अधिक रहा इसलिए ११ वी से १४ वी शताब्दी तक के दोहे छप्पय आदि कुछ फुट कर पद्य ही जन ऐतिहासिक प्रबन्धो म प्राप्त हैं। चारणा की स्वतन्त्र रूप से रची गयी उल्लेखनीय रचनाओ म, 'अचलदास खीची री बचनिका' सवत् १४८० के आस पास की रचना है। यह गद्य पद्यात्मक ऐतिहासिक रचना बडे महत्व की है और शार्दू ल राजस्थान रिसच इन्स्टीटयूट से प्रकाशित हो चुकी है। इससे पहले की राजस्थानी बोल चाल की भाषा मे रचित ब्राह्मण कवि की एक रचना बीसलदेव रासो' है। जिसे नरपति नाल्ह ने सम्भवत १४ वी शताब्दी म रचा होगा। वसे 'ढोला मारू रा दूहा भी जनेतर प्राचीन रचनाओ म उल्लेखनीय है पर इसमे रचियता का नाम और सवत नही मिलता।

जन कवियो की राजस्थानी रचना १३ वी शताब्दी से निरन्तर प्राप्त होती है। १४ वी शताब्दी स तो गद्य रचना भी प्राप्त हाने लगती है। मरु गुजर भाषा का प्रसिद्ध काव्य 'भारत बाहुबलि रास सम्वत १२४१ की रचना है और जिस के २ ३ सस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। १५ शताब्दी तक जन कविया की राजस्थानी व गुजराती रचनाओ पर अपभ्र श भाषा का प्रभाव दिखायी देता है। १६ वी शताब्दी स राजस्थानी व गुजराती भाषा म कुछ पृथक्ता दिखायी देने लगती है। १३ वी से १५ वी शताब्दी तक की जनेतर मरु गुजर रचनायें इनी गिनी है जब कि इस समय की छोटी मोटी सकडो रचनाय जन कवियो व लेखको की गद्य और पद्य की आज भी प्राप्त हैं और उनमे से कुछ के सग्रह बडौदा से प्रकाशित हो चुके है। हमारे एतिहासिक जन काव्य सग्रह, बडौदा से प्रकाशित प्राचीन गुजर काव्य मुनि जिन विजय जी द्वारा सम्पादित 'प्राचीन गुजराती गद्य सदभ आदि एसे ही ग्रन्थ हैं।

राजस्थानी विदवाना ने राजस्थानी साहित्य को प्रधानतया ३ काला और ३ भदो म विभक्त किया है। स्वामी नरोत्तमदासजी ने प्राचीन काल सवत ११५० स १५५० मध्य काल १५५० स १८७५ और अर्वाचीन काव्य सवत १८७५ के बाद का माना है। इसी तरह जिन ३ शलियो म राजस्थानी साहित्य को विभक्त किया है व हैं —

(१) जन शली (२) चारणी शली। (३) लौकिक शली इनम से जन साहित्य सर्वाधिक प्राप्त है। अपभ्र श साहित्य की सबसे अधिक विधाओ का जन कविया न ही अपनाया और लौकिक साहित्य और

शलिया को भी सर्वाधिक आत्मसात किया। रास, चौपाई, प्रबंध आख्यान फागु वेलि विवाहला आदि शताधिक काव्य रूपों का प्रयोग जन कवियों ने किया है।

लोक प्रिय गीतों की हजारों देशियों या तर्जों का उपयोग भी जैन रास स्तवन, सज्झाय आदि म मिलता है। इसी तरह सैकड़ो लोक-कथाओं सम्बन्धी पद्य रचनायें जन कवियों की रचित प्राप्त है। राजस्थानी जन साहित्य कितना विशाल है इसका अनुमान पाठक इसी से लगा सकते है कि गत २०० वर्षों म केवल तेरह पंथी सम्प्रदाय के मुनियो एवं आचार्यों ने गद्य और पद्य म करीब ४ लाख श्लोक लिखे हैं। इसी तरह और भी कई जन सम्प्रदाय हैं जिन्होंने गत २०० वर्षों म निरन्तर साहित्य निर्माण जारी रखा।

हिन्दी साहित्य के आदिकाल की प्रामाणिक रचनायें बहुत ही कम प्राप्त है। जब कि इस काल की राजस्थानी रचनाओं की सख्या ५०० तक पहुँचेगी। डा० हरिशकर हरीश' ने अपने आदि-कालीन हिन्दी जन साहित्य नामक वृहद् शोध प्रबंध म इस काल की राजस्थानी जैन रचनाओं का अच्छा विवरण दिया है।

हिन्दी साहित्य के आदि काल की प्रामाणिक रचनायें बहुत ही कम प्राप्त हैं जब कि इस काल की राजस्थानी रचनाओं की सख्या ५०० तक पहुचेगी। डा० हरिशकर हरीश ने अपने आदि कालीन हिन्दी जन साहित्य नामक वृहद शोध प्रबंध मे इस काल की राजस्थानी जन रचनाओं का अच्छा विवरण दिया है।

इसके बाद करीब २००—२५० वर्षों का राजस्थानी साहित्य सम्बन्धी शोध प्रबंध डा० हीरालाल माहेश्वरी का प्रकाशित हो चुका है। उसमे चारणी और जन दोनो शलियो के राजस्थानी साहित्य का विवरण दिया है। चारणो की शली डिंगल के नाम से प्रसिद्ध है और जनो ने बोल चाल की सरल भाषा को अधिक अपनाया है।

डिंगल भाषा के सर्वश्रेष्ठ कवि बीकानेर के महाराज पृथ्वीराज राठौड माने जाते हैं जिनका कृष्ण रुक्मणी काव्य तो इतना प्रसिद्ध है कि उस पर राजस्थानी म ही नही सस्कृत म भी टीकायें लिखी गई और हिन्दी के भी दो प्राचीन पद्यानुवाद प्राप्त हैं। इस काव्य के कई सस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। डिंगल शली का यह सर्वोत्कृष्ट काव्य है। वैसे चारण कवियो मे ईसरदास, दुरसा आढा साइया झूला बाकी दास, सूर्यमल मीसण आदि सकडो कवि हो गये हैं जिनके रचित बडे बडे ऐतिहासिक काव्य तथा हजारो डिंगल गीत राजस्थान के वीरों के सम्बन्ध मे लिखे प्राप्त हैं। कई भक्त एव नीति निर्माता कवि भी हो गये हैं। चारणी साहित्य के सम्बन्ध मे डा० मोहनलाल जिज्ञासु का शोध प्रबन्ध उल्लेखनीय है, जो राजस्थान साहित्य अकादमी से प्रकाशित होने वाला है गुजरात, सौराष्ट्र और कच्छ के चारणों ने भी साहित्यिक भाषा डिंगल को ही अपनाया। राजाओं, ठाकुरों की राज सभाओं म चारण कवियो को सदा म स्थान व सम्मान मिलता रहा है। फलत लाख पसाव, कोड-पसाव शासन, जागीरी, तथा विशिष्ट पद प्राप्ति का सम्मान उन्हें प्राप्त हुआ। हजारों चारण कवियो ने डिंगल गीत बनाये हैं पर अधिकतर मौखिक रहने के कारण चारण कवियो की बहुत सी रचनायें लुप्त हो गई। फिर भी बीकानेर की अनूप सस्कृत लायब्रेरी, जोधपुर के राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, राजस्थानीय शोध सस्थान और उदयपुर के साहित्य सस्थान आदि म राजस्थानी चारणी साहित्य का अच्छा सग्रह है।

राजस्थानी लोक साहित्य म लोक काव्य 'बीसल देव रासो' और ढोला मारु रा दूहा का उल्लेख पहले किया जा चुका है इसी तरह 'रुकमणी-मगल' और 'नरसी जी रो माहरा' भी बहुत प्रसिद्ध काय हैं। मौखिक रूप म छाटे बडे अनेका लोक काव्य एव लोक गीत प्राप्त हैं जिनम मे 'बगडावत' पाबूजी रा पवाडा निहालदे' 'सुल्तान रा पवाडा 'डू गजी जवाहर जी रो गीत' जीएा माता रा गीत' आदि विशेष प्रसिद्ध हैं। राजस्थानी लाक गीता के छोटे बडे अनेक सग्रह निकल चुके हैं। राजस्थानी कहावता और लोक कथाओ का भी गत कुछ वर्षों म बहुत अच्छा सग्रह किया गया है। लोक गीतो, कहावतो व बाता के ३ शाध प्रबन्ध लिखे जा चुके हैं। इन म से कहावतों सम्बन्धी डा० कन्हैयालाल सहल का शोध प्रबन्ध बहुत ही उत्तम है और छप चुका है। लोक गीता सम्बन्धी डा० स्वर्णलता अग्रवाल का शोध प्रबध 'राजस्थान साहित्य अकादमी' से प्रकाशित हो रहा है। राजस्थानी बाता पर डा० मनोहर शर्मा ने शोध प्रबन्ध लिखा है। राजस्थानी साहित्य वीररस प्रधान है यह तो सभी जानते है पर शृगार भक्ति, नीति और सत साहित्य की भी कमी नही है। १६ वी शताब्दी के सत जामाजी और जसनाथ जी की वाणी का सम्पादन हो रहा है। चारण भक्त कवि ईसर दास और पीरदान लालस आदि की रचनायें प्रकाशित हा चुकी हैं। शृगार रस के कई काव्य और बातें भी प्रकाश म आयी हैं।

फुटकर राजस्थानी काव्या म दोहे और डिगल गीतो की सख्या बहुत बडी है। करीब १५, २० हजार दाहे और इतन ही डिगल गीत आज भी प्राप्त हैं। राजस्थानी दोहो सम्बन्धी डा० ओमानन्द सारस्वत का शोध प्रबन्ध अभी अप्रकाशित है और डिगल गीतो पर कविवर नारायणसिंह भाटी को गत वर्ष ही डाक्टरेट मिली है। ड० नरेन्द्र मनावत न राजस्थानी 'वेलिकाया पर शोध प्रबन्ध लिखा है जो राजस्थानी साहित्य अकादमी स प्रकाशित हो रहा है। इसी तरह कई राजस्थानी काव्यो और राजस्थानी साहित्य सबधी विषया पर शोध काय हो चुका है और अनेक विषयो म अब भी हो रहा है। राजस्थानी साहित्य प्रकाशित तो बहुत ही कम है। शोधकर्ताओ को राजस्थानी साहित्य सबन्धी अनेक अछूते महत्वपूर्ण विषय मिल सकते हैं।

राजस्थानी साहित्य की दूसरी विशेषता है प्राचीन गद्य की प्रचुरता। राजस्थानी गद्य के सम्बन्ध म डा० शिवस्वरुप शर्मा का शोधग्रथ प्रबध प्रकाशित हो चुका है। १५ वी शताब्दी से तो निश्चित तुकान्त वर्णानात्मक गद्य भी मिलने लगता है। इस सब ध म मेरा सभा शृगार नामक ग्रथ दृष्टव्य है। राजस्थानी भाषा का हिन्दी की स्वीकृत भाषाओं मे चाहे नाम न आया हो पर वह गुजराती की तरह ही एक स्वतत्र भाषा है जिसकी कई बालिया और शाखायें है करोडो व्यक्ति जिसके बालने वाले हैं तथा साहित्यिक परम्परा भी प्राचीन और समृद्ध है। *गत शताब्दी से राजस्थान म हिन्दी का प्रभाव बढता जा* रहा है। फिर भी राजस्थानी भाषा म काफी साहित्य निर्माण हो रहा है। जिसका सक्षिप्त परिचय नीचे दिया जा रहा है।

राजस्थानी भाषा के कई व्याकरण ग्रन्थ एव औक्तिक तो १४ वी से १७ वी शताब्दी तक के प्राप्त हैं पर अधुनिक ढग के ३ व्याकरण भी प्रकाशित हा चुके हैं। डा० एल० पी० टेसीटोरी के प्राचीन

'राजस्थानी व्याकरण' का हिंदी अनुवाद नागरी प्रचारिणी सभा से छप चुका है। श्री रामकरण आसोपा, और नरोत्तम दास स्वामी के मारवाड़ी और राजस्थानी व्याकरण भी प्रकाशित हो चुके हैं। इसी तरह राजस्थानी शब्द कोष का काम जोधपुर, बीकानेर और पिलानी में वर्षों तक चला और श्री सीताराम लालस का राजस्थानी शब्द कोष तो प्रकाशित भी हो चुका है। जिसका प्रथम भाग कई वर्ष पूर्व प्रकाशित हुआ था और दूसरा भाग भी शीघ्र ही प्रकाशित होगा। चार भागों का यह शब्द कोष अपने ढंग का बहुत ही महत्व पूर्ण ग्रन्थ सिद्ध होगा। वैसे नाम मालाओं की तरह पद्य बद्ध डिंगल शब्द कोष गत ३००-३५० वर्षों में कई रचे गये हैं।

आधुनिक साहित्य की सभी दिशाओं में राजस्थानी में साहित्य का निर्माण हो रहा है। 'रामूदत, 'मरु मयंक' आदि महाकाव्य, 'सीसदान', 'मानखो', दुर्गादास' आदि कई खण्ड और प्रबन्ध काव्य, 'कलायण', 'लू 'बादली,' 'साझ' आदि ऋतु काव्य, तथा अनेक कवियों के कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके है। श्री मुरलीधर व्यास, नृसिंह राजपुरोहित आदि के कहानी संग्रह श्रीलाल जोशी का 'आभ पटकी' उपन्यास और हास्य रस की रचनाओं का 'सवडका' नामक संग्रह छप चुका है। श्री मुरलीधर व्यास के रेखाचित्रों के भी सुन्दर संग्रह राजस्थान साहित्य अकादमी से व हास्य रस की रचनाओं का संग्रह 'इक्केवालो' राजस्थान साहित्य परिषद से प्रकाशित हो चुका है। रानी लक्ष्मीकुमारी चूडावत वर्तमान समय की राजस्थानी साहित्य की सब से बड़ी लेखिका हैं। उनके कई कहानी संग्रह व बात कथाओं आदि के संग्रह निकल चुके हैं। रूपायन संस्थान बोरूंदा से प्रकाशित 'राजस्थानी लोक कथा संग्रह', 'बातो की फुलवाडी' के ३-४ भाग छप चुके हैं। श्री मनोहर शर्मा (सम्पादक वरदा) राजस्थानी के सुकवि और लेखक हैं जिनकी 'अरावली गीत कथा' तथा दो पुस्तकें तो पहले निकल ही चुकी है तथा कई लघु काव्य व गद्य रचनायें भी 'वरदा' एवं 'मरु-वाणी' आदि में प्रकाशित हुई हैं। कवि तो राजस्थानी में अनेक है। जिन में से कुछ ने तो कवि सम्मेलनों में बड़ा नाम कमाया है। श्री मदन व्यास, विमलेश बुद्धिप्रकाश, कल्याणसिंह राजावत, गजानन्द वर्मा, मेघराज 'मुकुल' आदि कई कवियों ने बड़ी ख्याति प्राप्त की है। बीकानेर के श्री गिरधारीसिंह परिहार भी उच्चकोटि के कवि हैं। जिनका कविताओं का संग्रह 'जागती जोत' और खंड काव्य 'मानखो' प्रकाशित हो चुका है।

राजस्थानी भाषा में विविध प्रकार की स्वतन्त्र रचनाओं के साथ साथ अनेकों महत्वपूर्ण प्राचीन और अर्वाचीन रचनाओं का गद्य और पद्यानुवाद भी हुआ है। 'गीता' और 'मेघदूत' के तो कई पद्यानुवाद हो चुके हैं। रवीन्द्र के कई ग्रन्थों के राजस्थानी अनुवाद छप चुके हैं। 'कुमार सम्भव' 'शकुन्तला', 'रघुवंश', 'ऋतुसंहार', 'पंचतंत्र' आदि अनेक संस्कृत ग्रन्थों के अनुवाद हो चुके हैं। कामायनी' जैसे हिन्दी के महाकाव्य और कई अंग्रेजी काव्यादि का राजस्थानी अनुवाद भी विशेष रूप से उल्लेखनीय है। 'बिहारी सतसई' के कुछ पद्यों का राजस्थानी अनुवाद भी कवि राव मोहनसिंह ने किया था। नाथूदान महियारिया की 'वीर सतसई' नामक रचना वीर रस की उल्लेखनीय रचना है। पाठकों को जानकर आश्चर्य होगा कि सहस्राधिक राजस्थानी ग्रन्थ अब तक प्रकाशित हो चुके हैं और बहुत सी नवीन रचनायें अभी अप्रकाशित पड़ी है।

राजस्थानी भाषा की कई पत्र पत्रिकाएं भी गत ३०-४० वर्षों से समय-समय पर प्रकाशित होती

रही हैं। 'मरु वाणी' (जयपुर) 'ओलमो' (रतनगढ़) नामक मासिक पत्र निकल रहे हैं। राजस्थान में अनेको सस्थायें राजस्थानी साहित्य की खोज, सग्रह, सम्पादन-प्रकाशन आदि का काय कर रही हैं। हिन्दी जगत को राजस्थान मे होने वाले इस साहित्य सम्बन्धीकाय की जानकारी प्राय नही है। इसलिये बहुत सक्षेप मे प्रस्तुत निबन्ध में उसका परिचय दिया गया है। राजस्थान की कई शोध पत्रिकायें बहुत ही महत्व पूण हैं। जिन्हें पढ़ने पर राजस्थान म हो रहे हिन्दी व राजस्थानी साहित्य सम्बन्धी कार्यों का अच्छा परिचय मिल सकेगा।●

**आह्वान**

उठो, कुछ करो वीर, या मर मिटो धीर
न बाधक बने अब, हमे जाति या धम
बनें राष्ट्र कतव्य वह आज तो कम
हृदय में बसे बस यही सत्य यह मम
चुकावें उसे आज दे प्राण का मोल
लिया या पिया, जो यहाँ अन्न या नीर
उठो, कुछ करो वीर या मर मिटो धीर
कहाँ कौन है जो करें आज आदेस
बने राष्ट्र की मूर्ति ही आज सन्देश
न खोजो न देखो अरे मीन या मेष
न देखो विकलता निकलता नयन नीर
सुनो तो सुनो मातृ-भू की कठिन पीर
उठो कुछ करो पीर, या मर मिटो धीर
मिले क्रिश्चियन, सिक्ख, हिन्दू मुसलमान
मिले बाइबिल, ग्रथगुरु, वेद कुरान
करें देश पर, कौम पर जान कुरबान
छिडा आज सब ओर सग्राम घनघोर
पुजारी बनें आज रणधीर—प्रणवीर
उठो कुछ करो वीर या मर मिटो धीर
उठायो गरज शख का घोष गम्भीर

(स्वर्गीय सुधीन्द्र की सन ३६ मे लिखी एक ओज पूण रचना)

# राजस्थान मे ब्रज भाषा साहित्य

स्वतत्रता के उपरान्त राजस्थान का नया रूप निर्मित हुआ है। इस रूप को प्रतिष्ठित करने का दायित्व
राजस्थान के मुख्य मत्री श्री० मोहनलाल सुखाडिया के कधो पर आया। सुखाडिया जी के मत्रित्व काल
मे साहित्यक क्षेत्र मे एक नवीन उन्मेष उभरा और प्रत्येक व्यक्ति अपने राजस्थान की सपत्ति को आकने,
उसका सवधन करने और उसको लोक के समक्ष प्रस्तुत करने के लिए प्रयत्न शील हुआ।
जहाँ तक शिक्षा का सबध है इस काल में ३ नये विश्व विद्यालय प्रारम किये गये। शैक्षणिक उन्नति
के साथ-साथ राजस्थान मे कई साहित्यिक शोध सस्थायें उठ खडी हुई। इनम सबसे प्रमुख है पुरातत्व
सग्रहालय। इस पुरातत्व सग्रहालय मे मुनि जिनविजय जी जसे अनुसधान मातण्ड और विद्यावारिधि के
निर्देशन मे काय हो रहा है। समस्त राज्या के सरकारी कागज पत्र बीकानेर मे एकत्र हो गये हैं और
श्री० खडगावत जी के निर्देशन मे व्यवस्थित किये जा रहे हैं। इन सग्रहालयो मे राजस्थान के इतिहास
की कडियाँ सुरक्षित रहेंगी। इतिहास के अनुसधान कर्ता के लिये इनका महत्व कम नही।
इन्ही कुछ वर्षों मे कई स्थानो पर हस्त लिखित ग्रथो का वृहद भडारो का पता चला है जिसके
फलस्वरूप हिन्दी साहित्य के इतिहास का रूप ही कुछ का कुछ हो चला है। अनेक नय ग्रथो और कवियो
का पता चला है जिससे राजस्थान का गौरव हिन्दी साहित्य के इतिहास मे और भी बढा है। हिन्दी की दो
भाषाओ बृज भाषा तथा राजस्थानी क्षेत्रो मे बोली जाने वाली बोलियों का तो अक्षय भडार है।
राजस्थान वास्तव मे हिन्दी भाषा का ही क्षेत्र रहा है। हिन्दी का आदिकाल-वीरकाल राजस्थानी
कविया की रचनाओ से भरा पडा है। राजस्थान के राजा महाराजा, काव्य रचना मे प्रयत्न शील रहे।
कवियों को चाहे वे बृज भाषा के ही कवि क्यो न हो आश्रय देने मे वे कभी भी नही हिचकिचाये। इस
प्रवृत्ति के कारण अनेक राजस्थानी कवियो ने बृजभाषा में रचना की।
धौलपुर, भरतपुर, जयपुर, अलवर और किशनगढ आदि अधिकाश क्षेत्रो की भाषा मूलत बृजभाषा
ही है। अत इस प्रदेश के प्राय सभी कवि बृज मे ही रचना करते रह। बीकानेर, जोधपुर, उदयपुर,
बूदी आदि अन्य क्षेत्र भी किसी प्रकार पिछडे हुए नही हैं। उदाहरण के लिए राजस्थान के प्रसिद्ध कवि
चन्द्र बरदाई का ही लें। इनके पृथ्वीराज रासो की भाषा राजस्थानी (डिंगल) ही समझी जाती रही

है। किन्तु शोध कर्ताओ मे रासो की भाषा के सबध म पर्याप्त विवाद चल रहा है। इस सबध मे आज तीन मत हैं। एक के अनुसार यह डिंगल दूसरे के अनुसार अपभ्र श और तीसरे के अनुसार पिंगल या बृज भाषा का ग्रथ है। 'रासो' को डिंगल का ग्रथ मानने वालो के सबध म नरोत्तम स्वामी ने लिखा' डिंगल क्या है इससे अपरिचित होने के कारण अनेक पिंगल रचनाओ को डिंगल की कह डाला है। केवल इसलिए कि उनकी रचना राजस्थान मे हुई। पृथ्वीराज-रासो के साथ भी यही बात हुई है। और आज अनेक बडे-बडे विद्वान तक, रासो' का डिंगल या राजस्थानी की रचना समझते है। इसी प्रकार कवि सूयमल की 'वश भास्कर को भी डिंगल की रचना मानने वाला की कमी नही है यद्यपि उसके ६०% अश बृजभाषा की रचना है और कवि ने अपनी भाषा को स्पष्ट प्राकृत मिश्रित बृज देशीय भाषा लिख दिया है। इसका कारण यही है कि ग्रन्थ को देखे बिना उसे राजस्थान के एक चारण की रचना जानकर ही यह भ्रान्त धारणा बनाली गई है। (राजस्थान भारती' भाग १, अक २ ३, पृष्ठ ५१ ५२)

इसकी भाषा को अपभ्र श मानने वाले डा० दशरथ शर्मा का निष्कष इस प्रकार है —

वास्तविक वस्तु तो मूल ग्रथ है और उसके विषय म प्राय सभी अधिकारी विद्वान इस परिणाम पर पहुँचने लग हैं कि इसकी भाषा अपभ्र श है। हेमचन्द्र और राज शेखर के अनुसार अपभ्र श का विशेष प्रयाग मरु, टक्क और भयानक प्रदेशो म था अर्थात यह इन प्रदेशा की मूल भाषा थी। य तीनो मरुदेश के अन्तगत या सवथा पार्श्ववर्ती थे। इन प्रदेशो की देशी भाषा मे रचित राजस्थान के सम्राट और सामन्तो की गौरवमयी गाथा को हम चाहे अपभ्र श की कृति मानें चाहे प्राचीन राजस्थान की देश्य भाषा, इसमे वास्तविक भेद ही क्या है? (राजस्थान भारती, भाग १, अक ४, पृष्ठ ५१)

'रासो का मूल रूप क्या था आज यह प्रश्न महत्वपूण हो गया है। बृजभाषा के उदय से पूव अपभ्र श का साम्राज्य था इसम सदेह नही। अपभ्र श यस भादा नन्द और टक्क की ही भाषा नही थी, मिथिला के विद्यापति की भी थी और इन दोनो छोरो के बीच के भाग की भी थी। अत अपभ्र श मे और राजस्थानी म भेद नही तो अपभ्र श और बृज म ही भेद कसे हो सकता है? किन्तु प्रश्न यह है कि कसे माना जाय कि पुरातन प्रबध सग्रह मे दिये गये रासो के छद की भाषा ही चद की भाषा थी। मीरा और कबीर की भाषा का विवाद भी सामने है। साथ ही सभव है सग्रहकर्ता न अपनी दृष्टि से उसम सशोधन कर लिया हो। जो भी हो, राजस्थान के कवियो ने अपने काव्य ग्रथा से काव्य भण्डार को समृद्ध बनाया है। भाषा 'बहता नीर है । उसको किसी एक हिस्स या तरीके से बाध रखना सभव नही है। इसी स एक प्रदेश की भाषा का प्रभाव दूसर प्रदेश की भाषा पर पडना स्वाभाविक ही था। स्पष्टत यह प्रतीत होता है कि पिछले हजारा वर्षो स अनेक राजस्थानी कविया ने डिंगल के साथ साथ पिंगल या बृज भाषा मे भी अनेक काव्य रचे हैं। नरपति नाल्ह का बीसलदेव रासो, नल्लसिंह का विजयपाल रासो आदि ग्रथ, भाषा की दृष्टि से अपभ्र श व पिंगल के ही अधिक समीप हैं। मीराबाइ के अनेक पदो की भाषा शुद्ध बृज है। कविवर बिहारी का सतसई और नरसिंह दास की रचनायें बृजभाषा की ही कही जा सकती हैं। इनके अतिरिक्त महाराना जसवन्त सिंह महाराजा अजीत सिंह, आदि अनेक राजस्थानी कवियो के कृतित्व पर बृजभाषा

का छाप है। यहा बठकर शुद्ध बृजभाषा म काव्य-साधना करने वालो म कवि वृन्द का नाम भी लिया जा सकता है। यहा अकबर के समकालीन कवि देवीदास की कविता के दो छन्द प्रस्तुत करना अप्रासगिक नहा कहा जा सकता ।

नीत ही तें धरम धरम तै सकल मिद्धि नीत ही त ग्रादर सम्मान बाच पाइय ।
नीत तें अनीत छट नीत ही तें सुख लुट नीत सीयें बोलें भलो वक्ता कहाइय ।
नीत ही तें राजराज नीत ही न पातिसा हैं नीत ही कौं नवषड माहि जस गाइयें ।
छोट न कु बडे करे बडे महाबडे कर ताते सब ही को राजनीत ही सुनाइय ।।

कीरत कौ मूल एक रन दिन दान देवौ धरम को मूल एक साच पहिचानिवौ ।
वढिवें कौं मूल एक ऊचो मन राषिवौ है जानिवें कौं मूल एक भलीबात मानिवौ ।
व्याधि बहु भोजन ऊपाधि मूल हासी देवीदास दारिद कौं मूल एक ग्रालस बषानिबौ ।
हारिव कौ मूल एक ग्रातुरी है दिनमाक चातुरी कौं भूल एक बात कहि जानिवौ ।।

देवीदास बहुत बुद्धिमान और राजनीतिज्ञ थे। ये अमरसर के रावसूजा के पुत्र लूणकरण जी के मत्री रहे थ किन्तु उनसे अनबन होने पर उनको छाडकर चले आये और अपन छाट भाई रायमल के यहा लाम्मा म रहने लग। कालान्तर म देवीदास जी की बुद्धिमानी से रायमल जी के दिन पलटे और व अकबर के कृपापात्र बन गये। अकबर के दरबार म रायमल जी राजा रायमल दरबारी कहलाये। अकबर ने अपनी जनानी डयोढी का प्रधान प्रबधक इन्ही को बनाया था। प्रसिद्ध है कि एक युद्ध म मुगल सम्राट के प्राण बचाने के फलस्वरुप रायमल जी को अकबर की कृपा प्राप्त हुई। इस प्रकार देवीदास जी अकबर के समकालीन ठहरत हैं। इनके कवित्तों म राजनीति, धमाधम कत्तव्याकतव्य, व्यवहार ज्ञान तथा सामान्य नाति-निरूपण है। उनकी भाषा बहुत ही प्रवाहपूर्ण बृज है। जिसम यत्रतत्र शेखावाटी म प्रचलित मरुभाषा के प्रयोग भी है। इस प्रकार इनकी भाषा का पिंगल कहना अधिक उपयुक्त होगा।

इधर राजस्थान में शोध प्रवृत्ति को ज्यो ज्यो प्रोत्साहन मिल रहा है त्या त्यो अनेक नाम प्रकाश म आ रहे हैं। विश्नोइ सम्प्रदाय पर डा० माहेश्वरी ने अनुसधान किया है। उसके द्वारा भी राजस्थान के बृज भाषा के अनेक कवियो के नाम सामने आये हैं। इनम अधादास महात्मा गोविन्दराय, केसोना आदि उल्लखनीय हैं। इन सभी की भाषा मे मरु के साथ बृज का योग है।

राजस्थान आज भी इस क्षेत्र म योग दे रहा है। अब भी बृज-भाषा म रचना करने वाले एक दो कवि यहा मिल ही जायेंगे पर इधर कई कारणा स राजस्थानी कवि का ध्यान खडी बोली-हिन्दी की ओर अधिक हो गया है। पिंगल और डिंगल दोना ही पीछे छूट गई हैं ।●

महेन्द्र भानावत

# सांझी

साझी अथवा सझ्या राजस्थानी कुमारिकाओ का अत्यन्त रगीन एव कलापूर्ण व्रतोत्सव है। श्राद्धपक्ष म अश्विन की प्रतिपदा से लेकर पितृपक्ष के पन्द्रह दिनो तक घरो के बाहर द्वार के एक ओर की दीवार पर सूर्यास्त के पश्चात प्रतिदिन बालिकाए हडमची, पीली अथवा गोबर की छोटी बडी कई प्रकार की गोहलियो मे नाना प्रकार के रगबिरगे फूलो से गोबर की सझयाए शृगारती हैं। राजस्थान म इन सझयाओ के कई रूप देखने को मिलते हैं। इनकी सबसे बडी विशेषता यह होती है कि प्रतिदिन एक ही प्रकार की साझी न माडकर विविध प्रकार की सझयाए चित्रित की जाती हैं जिनका क्रमश विकास होता है और अमावस्या तक ये सझ्याए विशाल कोट का रूप धारण कर लेती हैं। नन्हीं-नन्ही बालिकाए भी सीखने की दृष्टि से अपनी नन्ही अगुलियो से सझ्या कोरती हैं। इन्हें पूर्ण करने म उनकी माताए, बहिनें तथा पडोसी औरतें सहायता करती हैं। प्रतिदिन बनने वाली इन सझ्याओ पर एक कोने मे काले कपडे का एक टोपा लगा दिया जाता है। उस पर हरी अथवा लाल मिर्च लगादी जाती है। इसे सझ्या का कागला (कौआ) कहते हैं। यह प्रतिदिन प्रात होते ही वहाँ से हटा लिया जाता है, ऐसा माना जाता है कि रात्रि को यह सझ्या की रखवाली करता है। पर प्रात होते होते यदि उसे वहा से नही हटाया गया तो वही सझवा से शादी करने को मचल पडता है।

**सझया की विभिन्न आकृतियाँ —**

पितृपक्ष के पूरे पन्द्रह दिन साझी की आकृतियाँ कनेर, कटहल, तुरई, हजारी तथा छोट्यांगल के फूलो से सिणगारी जाती हैं। इनका क्रम एकतारा से प्रारम्भ होकर पाच पचेरा सूरज, चाद, बादरवाल, केला, पखा, चोपड, पाच सात्या, मोर छाबडी बीजणी, जनेऊ तथा सझया बाई की बरात के रूप म अकित किया जाता है। मालवे मे इनका क्रम पाच पाचा, बीज तथा पूनम पाटलो छाबडी, बिजारो, गोर बेसन्या, घेवर कु वारा कु वारी चोपड सात्या, सप्तऋषि, पखूडी का फूल तथा नगारे की जोड डोकरा डोकरी, पखा, केले का फूल घूघरा, ऋद्धिसिद्धि खोड्या बामण, जाडी जसोदा, बादरवाल जलेबी की जोड एव छडी (मालवी लोकगीत, श्याम परमार, पृ० ५३) तथा व्रज म बीरन बेटी, पाच थपिये, डोले म बठी औरत, दो

तीन तिबारिया, चौपड, पान सुपारी, मिठाई भरी डलिया, स्वस्तिक, अठकलिया फूल, नाव, दसपान, इक्कीस सिंघाडे फरिया ओढनी, निसनी पर चढती सभ्या, लगडा बामण तथा काना कउग्रा रहता है। (साभी जो विवाह के बाद पीहर मे व्याकुल रही, मोहन स्वरूप भाटिया, धमयुग, सितम्बर १९६१ का अक) ।

दीवार की यह साभी धीरे धीरे मदिरो मे प्रविष्ट हुई। पुष्टिमार्गियो ने इसे विविधता प्रदान की। फलत आगन पर मिट्टी की वेदी बनाकर विविध रगो मे कागज की परिकल्पनाओं के सहारे कृष्णलीला विषयक विविध दृश्यावलिया दिखाई जाने लगी। साभी के रूप मे कृष्णलीला की इन भाकियो को जनता जनादन ने श्रद्धा, भक्ति और आस्था से अपनाया। नित्य नई नई सझ्याए बनने लगी। और उनमे कृष्ण जन्म से लेकर कस वध तक की समस्त लीलाए दिखाई जाने लगी धीरे-धीरे आगन की यह साभी पानी मे भिलमिलाने लगी और शन शन पानी से इसका रूप व्यापक होता हुआ केले के पत्तों, फूलों, फलो साग सब्जियों तथा पक्वान मिठाईयों के विस्तार मे जाकर अपनी विरासत ढूढने लगा।

आंगन की साभी —

यह मोटे कागज के सचो की सहायता से आगन मे बनाई जाती है। आधार भूमि ठोस होने के कारण इस सभ्या को अधिक सवारा जाता है। कुछ वर्षों से इनका अकन केवल सात दिन ही होना प्रारम्भ हो गया है।

कोन के भाकी मे कृष्ण का सुन्दर बगीचा दिखाया जाता है। नीचे यमुना नदी का सुन्दर दृश्य दिखाया जाता है। इसम कछुए मगर, मढक, रगबिरगी मछलिया तथा अन्य जलजीवा के सुन्दर दृश्य उतारे जाते है। विविध रगो की ये भाकिया स्वत ही दशको का मन मोह लेती हैं। उदयपुर मे मछन्दरनाथ के मन्दिर की जमीन की सभ्याए विशेष लोकप्रिय रही हैं। इसी लोक प्रियता के कारण उक्त मन्दिर को सभ्या का मन्दिर भी कहा जाता है।

पानी की साभी —

आगन की तरह पानी भरे किसी समतल बतन में जो सभ्याए माडी जाती हैं, वे पानी की सभ्याएँ कहलाती हैं। यह सभ्या भी कागज के नाना प्रकार के साचों की सहायता से बनाई जाती हैं। आगन और पानी की ये सभ्याए राजस्थानी लोक कला का सुन्दर अकन तो प्रस्तुत करती ही है साथ ही कृष्ण लीला की विविध दृश्यावलियो मे जन मन रजन के दायित्व को भी बखूबी निभाती हैं।

केला की सभ्या —

नाथद्वारा मे सुप्रसिद्ध श्री नाथजी के मदिर की केला सभ्या भी अत्यत प्रसिद्ध है। मदिर के कमल चौक मे श्री नाथजी की दहली पर इसका भव्य अकन देखते ही बनता है। कहा जाता है कि इन्ही दिनो कृष्ण ने चौरासी कोस की बन यात्रा की थी। मथुरा से प्रारम्भ हुई यह यात्रा द्वारिका जाकर पूरी हुई थी केला की सभ्याओ मे इसी यात्रा लीला का दृश्य केले के पत्तो की सहायता से दिखाया जाता है।

सभ्झ्या कोट —

राजस्थान मे ये कोट कई रूपा मे देखने को मिलत हैं। मालव म इसे किलाकोट तथा उत्तर भारत म नरवर कोट कहते हैं। गोहली पर फूल पत्तो एव गोबर की सहायता के बिना केवल रग बिरगी पत्तिया से भी कोट सजाया जाता है। इसे पक्का काट करते हैं। यह साल भर बना रहता है। अब तो बाजारो म भी इस प्रकार के बने बनाये कोट मिल जाते हैं।

सभ्या का दिवाल पर जो कोट बनाया जाता है वह बडा ही भव्य एव कलात्मक होता है। इसे बनाने म काफी श्रम, समय और सूझ की आवश्यकता रहती है। गावो तथा शहरा की सझ्याम्रो की तरह कोटों मे भी विभिन्नता देखने को मिलती है। इनम सझ्या बाई की डोली, कौच, कागसी सझ्या के आभूषण, सखी सहेलिया तोता, चौपड पासे, बादरवाल, चाद, सूरज, पुतलिया, पनवाडिया, जोगिया की जमात, कोचवान आदि दिखाये जाते हैं। कोट के नीचे जाडी जसोदा (जोधा) पतली पेमा, खापटया चोर गूजरणी भगए तथा ढोला आदि दिखाये जाते हैं। इनम जोधा डील डौल से बहुत मोटी तथा पेमा पतली दिखाई जाती है। गूजरणी के सिर पर दूध दही की मटकिया रहती हैं। चोर उल्टा लटका रहता है। इसके भुट्टे के बालो की मूछे लगाई जाती हैं। ढोली के आगे ढोल के रूप म हू डा लगा दिया जाता है। भगन के हाथ मे झाडू के रूप मे दो चार तिनके लगा दिये जाते हैं। कहीं कही कोट के नीचे केवल जोधा पेमा ही बनाई जाती हैं। ये जमीन के ऊपर तथा भीत पर इस ढग से बनाई जाती हैं कि वे जमीन पर दीवार के सहारे बैठी हुई लगती हैं। इनके कौडी की आखें लगाई जाती हैं तथा ज्वार मक्ई के दाना से इनका शृ गार किया जाता है। जोधा के सिर की चोटी लम्बी, किन्तु टेढी रहती है। उसके एक हाथ मे नगी तलवार रहती है। पेमा के सिर पर दो घडे रखे रहते हैं। इनके पीछे छोटी छोटी गालियां देदी जाती हैं।

कोट सिराना, ककड पूजना —

श्राद्ध समाप्त होने पर कोट को पानी मे सिरा दिया जाता है। परन्तु कही कही श्राद्ध के पश्चात दशहरा को जाकर यह क्रिया सम्पन्न की जाती हैं।

कोट सिरा कर लौटते समय लडकियाँ अपने साथ दस ककड लाती हैं। पीली मिट्टी अथवा गोबर की गाहली पर रख देती हैं। गोहली के चारो ओर गोबर के दस कोने बना कर नवरात्रि तक उनकी पूजा की जाती है। यही बालिकाए कहानियां कहती हैं। अतिम दिन डूमडे को पत्ता का दोना देकर विदा करती हैं। इस दोने म बीस मालपुए, एक कसरिया कपडा चार आने के पैसे तथा नौ हरे दान होते हैं। इनमे प्रत्येक मे दस दस कौडियां तथा एक एक पसा रखा रहता है।

भित्ति कोट व पन्नी कोट —

विवाह शादी के अवसर पर बनाये जाने वाले भित्तिचित्रा म भी सझ्या कोट कोरने की परम्परा रही है। इसमे सझ्या की बारात का दृश्य दिखाया जाता है। ये कोट भी कई प्रकार के होते हैं। इनमे बीच मे हाथी का रथ होता है। इसमे सझ्या की विदाई का दृश्य दिखाया जाता है। उसके पीछे डावडिया चवर

डालती हुई तथा मगल आरती करती हुई दिखाई जाती हैं। अणु बाजु मे चारा ओर शेर शिकारी सतरी सारस, घोडा, बतख, चाद, सूरज आदि बनाये जाते हैं।

**पन्नी कोट —**

परणी लडकियो का कोट भाति भाति की पनिया से मोटे कागज पर बनाया जाता है। यह कोट उनके पीहर म सुरक्षित रहता है। इसे आगामी वप श्राद्ध पूरा कर डूमडा दिया जाता है। इस दिन मक्ई की घुघरी बनाई जाती है। कुमकार के यहा से सोलह कुल्हड लाकर उनम एक एक पसा तथा लाल टिकिया रख कर उन पर लच्छा बाध दिया जाता है। इनम से एक एक कुल्हड खास खास सबधिया के यहा दे दिया जाता है।

**सझ्या की अणबोली —**

परणी लडकिया शादी के बाद प्रतिवप अमावस्या की सझ्या को अणबोली करती हैं। इस दिन सभी एकासणा रखती हैं। आस पास की सभी अणबोलिया पूजा की थाली लेकर ब्राह्मणी के यहा जाती हैं और महादव पावती की मूर्ति की पूजा करती हैं। ब्राह्मणी उन्हें महादेव पावती की कहानी सुनाती हैं। नारिया कहानी सुनती जाती हैं और हाथो से महदी देती जाती हैं। इस दिन वे किसी व्यक्ति (पुरुप वाचक का) मुह नही देखती हैं। रास्ते म कही गधा घोडा कुत्ता आदि पुरुप वाचक मिल जाय तो घूघट निकाल लेती हैं। इस दिन वे नमक मिच भी नही खाती हैं। ब्राह्मणी के वहां से निवृत्त हो व घर आकर एकासणा पूरा करती हैं। पूडिया तथा खीर आदि वह स्वय अपने ही काम म लेती हैं, और तो और उसके बाल बच्चे भी उसे नही खा सकते।

**अणबोली उझमाना —**

यह अणबोली कम से कम ग्यारह वप तक करनी पडती है और उसके बाद भी जब तक अणबोली उणमाई (जिमाई) नही जाती तब तक उसका क्रम चलता रहता है। ग्यारह वप के पहले अणबोली उझमाने सम्बन्धी आवश्यक क्रियाए करली जाय तो भी ग्यारह वप तक अणबोली तो करनी ही पडती है। इसे पूरी करने के लिए ग्यारह औरतो को दही तथा मालपुए जिमाने पडते हैं। अणबोली इन सभी को टीकिया देती हैं और श्रद्धानुसार उन्हे उकारया नारेल तथा एक एक कपडा देती है। अणबोली उझमाने के लिए दो कुडिये भी देने पडते हैं। प्रथम कुण्डिया सझ्या को ही दे दिया जाता है। इसे छोटा कुडया कहते हैं। बडा यानी दूसरा कुडिया ननद, भौजाई अथवा भुआ के घर कभी भी रख दिया जाता है जब तक यह कुडिया नही रखा जाता है तब तक अणबोली पूरी हुई नही समझी जाती है।

यदि कोई औरत अत्यन्त गरीब घर वाली है तो ग्यारह औरतो को भोजन न कराने के बजाय ग्यारह ग्यारह पुए ग्यारह सम्बन्धियो के घर देने से भी उसकी अणबोली पूरी हुई समझ ली जाती है। अणबोली के दिन यदि किसी सम्बन्धी की मृत्यु हो जाती है तो अणबोली स्वत ही पूर्ण हुई समझ ली जानी है।

पूजा करते समय ब्राह्मणी जो कहानी सुनाती है वह इस प्रकार है —

एक समय पारवती जी ने एकासणा किया, उस महादेव जी का मु ह नही देखना था । दासी उनके स्नान करने के लिए पानी लेने गई, महादेव जी को इस बात का पता चला तो वे भी उनके पीछे पीछे चल पडे । दासी ने अपना बेवडा भरा मगर उससे तुका नही इतन म महादव जी उससे बोले-मैं उठवा दू क्या ? वह बोली, 'नही आज बाई जी के अणबोली का एकासणा है इसलिए मैं किसी पुरुष से नही तुकवाऊगी ।' महादेवजी ने अपने मन्त्र बल से उसे ज्यादा वजनी बना दिया । दासी को विवश होकर उसे महादेव जी से तुकवाना ही पडा । महादव जी ने उसे उठाते समय उसम अपनी मू दडी (अगूठी) डालदी । दासी घर आई । पावती जी नहाने लगी तो उसम मूँदडी दिखाई दी, जान लिया कि हो न हो यह मू दडी तो महादेव जी की है । उसने दासी को बुला कर कहा 'दासी जब मैं एकासणा करू तब सारी खिडकिया तथा दरवाजे बन्द कर देना ताकि महादेव जी का मैं मुह न देख सकू । परतु महादेव जी तो उससे भी चालाक निकले, उनस रहा न गया वे मकान की ऊपरी छत पर पहुचे और कवलू उठा कर अन्दर भाकने लगे भाकते २ पावती को दख कर वे बोल पडे 'पावती भ्रूया ' तभी से ऐसा कहा जाता है कि एकासणा पूरा कर चुकने के बाद जो कुछ सामग्री बच जाती है उसे पुरुष अपने लिए काम मे ले सकता है।

**सभ्रूया गीत और साहित्य —**

लोक जीवन म साभी के कई गीत प्रचलित हैं । इन्हे सभया के दिना म लडकियो से सुना जा सकता है ।

स्वतन्त्र रूप से भी कुछ कवियो ने साभी के पद और गीत लिखे हैं । अष्टछापी कवियो में सूरदास के साभी के उत्सव विषयक पद लिखे मिलते है । भारतेन्दु हरिश्चन्द्र तथा मेवाड के महाराणा जवान सिंह ब्रजराम ने भी साभी को लेकर दो एक पदा की रचना की है । इसके अलावा कीतन सग्रह नागर समुच्चय, वर्पोत्सव के कातन नामक पुस्तको मे भी विविध राग तालो मे साभी क पद मिलते हैं । उदाहरणाथ एक गीत यहा दिया जाता है —

आया सराध सखी मिल आओ साभी रा लाडू लडावा ।
कृष्ण कु वर ने राधा री कु जा हिलमिल रास रचावा ।
पान फूला-री भरा चगेडी, कूकू फूलर चढावा ।
रूडी रुपाली सभया साथण हाजर हरख बधावा ॥
सूरज चाद बादरवाल चौपड पखा बीजणी मडावा ।
मोर पछेटा सात्या सजावा मोत्या माग पूरावा ॥
कोट बणावा कलस चढावा, सभ्रूया ने परणावा ।
गुडधाणी घूघरी गोठा को अणबोली उमभावा ॥
आरती गावा तुल तुल जावा मगल मोद मनावा ।
पदरा दना रा पामणा वाई, कई-कई साग सरावा ॥●

# मेहन्दी

मेहन्दी के नाम से ही रसिकों के मन में सरस कल्पनाओं का उन्माद होने लगता है। सुन्दर नारी और मेहन्दी का परस्पर सम्बन्ध है और वही हमें उसकी कल्पना से तादात्म्य कराता है। मेहन्दी की लाली से ही नारी के कर पल्लवों की कमनीयता और एड़ियों की कोमलता में सौन्दर्य की अभिवृद्धि होती है।

मेहन्दी का उपयोग प्राचीनकाल से होता चला आ रहा है परन्तु पहले इसका रूप आलक्तक था जो लाख से निकाला जाता था और गहरा लाल होता था। इस रंग को महावर या महावड कहते थे।

कालीदास के काव्यों में स्थान-स्थान पर आलक्तक का वर्णन आता है। 'ऋतुसंहार' के ग्रीष्म वर्णन में "नितान्त लाक्षारस राग रंजितैर्नितम्बिनीनां चरणैः सनूपुरैः" स्त्रियों के उन महावर के रंग पैरों को देखकर लोगों का जी मचल उठता है जिनमें हंसों के समान रुनझुन करने वाले नूपुर बजा करते हैं। 'शाकुन्तल' में भी कालीदास ने महावर का वर्णन किया है। 'निष्ठ्यूतश्चरणोपभोग सुलभो लाक्षारसः केनचित्' दुष्यन्त के घर जाने के समय सखियों ने शकुन्तला के पांवों में महावर लगाई।

पैरों में लाल चन्दन का भी लेप किया जाता था। 'मालविकाग्निमित्र' नाटक में प्रतिहारी राजा से कहता है, "प्रवातशयने देवी निषण्णारक्त चन्दन धारिणी" इस समय महारानी बयार वाले भवन में पलंग पर बैठी है, उनके पैर में लाल चन्दन लगा हुआ है।

महावर का रंग प्राचीन चित्रों में हाशिया में लगाया जाता था। बूंदी चित्रों में महावर का बहुलता से उपयोग किया जाता था। इसके अतिरिक्त प्राचीन पुस्तकों के पन्ने मेहन्दी के पानी में रंग जाते थे।

महावर का उपयोग समाप्त हो गया और मेहन्दी ने उसका स्थान ले लिया। शृंगार रस की मधुर कल्पना को तीव्रतर बनाने वाली मेहन्दी उर्दू, फारसी, हिन्दी व मुख्यतः लोक काव्यों में स्थान-स्थान पर वर्णन का विषय बनी है। उर्दू के एक शायर ने लिखा है 'कटी कुटी, पिसी, छनी, गुंधी, मेहन्दी इतने दुःख सहे तब उनके कदमों में लगी मेहन्दी।' उनके कदमों में लगने को भी मेहन्दी तरसता है। आशिक की कितनी नाजुक खयाली है। एक राजस्थानी लोकगीत के अनुसार बालू रेत में मेहन्दी बोई, यमुना के पानी से सींची, कच्चे दूध से सींची, नाजुक नार ने चूंटी, चक्की में पिसी, रतन कटोरे में भिगोई फिर बड़ी बहन ने मांडी,

भाभी ने माडी, और अन्त म नणदल बाई के वीर ने निरखी । निरख कर पति ने पत्नी से कहा, तेरे मेहन्दी किसने माडी ? ये तेरे हाथ मेरे हृदय पर रख, मेह दी रचे हाथ बडे सु दर लगते हैं । इन पर पन्ना जवाहरात निछावर करदू । प्रेम रस मे भरी मेह दी बडी रचने वाली है ।" सत्रहवी शताब्दी के बाद राजस्थानी व कागडा चित्रो मे नायिकाओ के हाथ पावो म मेह दी के आलेखन बहुलता से मिलते हैं ।

राजस्थान मे जन्म से लेकर मृत्यु तक स्त्री के जीवन मे मेह दी का महत्व है । विवाह के समय, बच्चा पैदा होने के समय, त्यौहार के समय, पीहर या ससुराल जाते समय, चूडा पहनते समय, नया कपडा पहनते समय, सधवा स्त्री के मरने पर कदम कदम पर मेहन्दी की जरूरत पडती है ।

विवाह म हथलेवे मे मेहन्दी लगा कर ही वर-वधु के हाथ जुडाये जाते हैं । जो मेहन्दी लगे गोरे हाथ जीवनपयन्त वर के हाथा म रह कर उस जीने की प्रेरणा देते रहत है उन्ही हाथा का फेरो के समय युद्ध का आवाहन होते हैं वीर वर को सदा के लिए छोड देना पडता है । उन्ही हाथो से वधु को अपना सिर काटकर पति को युद्ध रत होने के लिए भेज देना पडता है । यह केवल इसी वीर भूमि की परम्परा है जिसकी ससार मे कही मिसाल नही मिलती ।

मेह दी की कला का, राजस्थानी आभूषणो और वेशभूषा के साथ परस्पर योग है । गोखरू पहुची, हथफूल, मू दडी आदि से सजा मेह दी लगा हाथ किसे विचलित न कर देगा ? किवाड की ओट मे छिपी हुई कामिनी का मेहन्दी लगा हाथ उसके रूप का बोध करा देता है । कभी कभी प्रेम की शुरुआत हाथ या पाव देखकर ही हो जाती है ।

राजस्थान कलाओ का केन्द्रस्थल है । माडने व मेह दी की कला यहा की वह स्वाभाविक कला है जो प्राय प्रत्येक स्त्री को परम्परा से प्राप्त होती है । इस अलकारिक कला का, स्त्री की जीवनोपयोगी वस्तुओ से गहरा सम्बन्ध है जिनकी परिकल्पनायें वह अपनी सहज निपुण रेखाओ मे मेह दी की पिष्टी द्वारा हाथ पावो पर आलेखित करती है ।

रेखाओ की सुदृढता मात मे रिक्त स्थानो की पूर्ति द्वारा सयोजन पिष्टी का समरस आलेखन, इस कला के आवश्यक अग है । जिन परिकल्पनाओ का मेह दी की कला म उपयोग किया जाता है वे त्यौहार पर काम आने वाली वस्तुयें मिठाईया, कपडो की मातें, माडनो की मातें, फूलपत्ते, पक्षी इत्यादि है । गणगोर पर चू दीडी, गुणा औ शकरपारा (मिठाई विशेष) की माते माडी जाती हैं । तीज के त्यौहार पर लहरिया व घेवर (मिठाई) का विशेष आलेखन किया जाता है । बच्चे के जन्म पर सारे घर मे साथिया (स्वस्तिक) माडा जाता है तथा मेहन्दी मे भी उसका विशेष उपयोग किया जाता है ।

विवाह के समय हथलेवे पर, क्योकि गीली मेह दी वर वधु के विवाह के समय हाथ जोडने से बिगड जाती है केवल मूठ का उपयोग किया जाता है अर्थात मुटठी म लगाकर भीच ली जाती है।

दीपावली के अवसर पर चौपड और हाटडी की मात विशेषतया बनाई जाती है । हाटडी लक्ष्मी के आगे मक्के क फूले भरने के काम आती है और चौपड जुआ का प्रतीक है जा उस दिन विशेष कर शुभ का प्रतीक समझा जाता है इसी से इनके प्रतीकात्मक आलेखन किये जाते हैं ।

स्त्रिया के खेला की वस्तुग्रा का भी मेहन्दी मे चित्रण होता है। चकरी फिराना प्राचीन समय मे स्त्रिया का मनोरजन था इसी हेतु चकरी की भात भी मह्दी मे देखने का मिलती है। प्राचीन चित्रा म स्त्रियाँ चकरी फिराती देखी जाती हैं। कपडो म घाट, चुन्दडी व लहरिया की भातें स्त्रिया को विशेष रूप स प्रिय हैं इस हेतु उनका प्रयोग मेह्दी म बहुलता से किया जाता है।

फलों मे करी व सिघाडा अधिक बनाया जाता है क्यों कि उनका अकन सहज पाया गया है। त्रिभुज सिघाडे का प्रतीक है। फूलो मे छ पाखडी कमल व अन्य अलकारिक प्रयोग साधारणतया प्राप्त होने हैं। लौंग इलायची व जीरा भी आलेखन का विषय बने है कारण है इनका सहजाकन।

छडिया व फुलडी बनाने की मेह्दी म बडी प्रथा है। प्रकृति की जो वस्तुयें राजस्थान म देखने को दुलभ है उनकी पुनरावृत्ति आलेखन द्वारा स्वाभाविक ही है। गुलाब की छडियो से प्रेमाभिभूत होकर वर को मारने का लोकगीतो मे वणन है और कई जगह वास्तव मे विवाह के समय वधू का वर का फूला की छडी से मारना देखा जाता है।

माडने के रिक्त स्थानो की भरती देखने के लिए चौरण ढबके व डोरा के आलेखना का प्रयाग किया जाता है। डोरे समानान्तर रेखाओ को कहते है जिनके बीच वेल भर दी जाती है। वेलो म दाख छुहारे का प्रयोग उल्लेखनीय है।

जयपुर सग्राहलय के वेशभूषा कक्ष म मेह्दी के आलेखनो का प्रदशन किया गया है। प्लास्टर के हाथो पर मेहन्दी की परम्परागत भाता का आलेखन दिखलाया गया है एव कुछ नई भातो का भी उपयोग किया गया है, बीछूडा, सूआमोर की भात, मछली व कमल की भात तथा बगडी का जाल आदि---

इसके अतिरिक्त छाया चित्रो म अन्य कितने आलेखन देखने को मिलते हैं, जिनका निरन्तर महन्दी म उपयोग इस कला मे सवधन कर सकता है। देश और विदेश की स्त्रिया ने इन भातो की बडी सराहना की है। कभी कभी तो विदेशी नारिया उन मेहन्दी लगे हाथो को देख कर बोल उठती हैं 'काश वे भी एसी मेहन्दी रचा सकती।

मेहन्दी आयुर्वेद सिद्धान्त से ठडी होने के कारण नेत्रा व हाथ पैरो को शीतल कर स्वास्थ्य का लाभ पहुँचाती है। काम शास्त्र की दृष्टि से मेंहदी कामोद्दीपन करती है।

आधुनिक स्त्रिया ने कालीदास के युग का अलक्तक और चनार के पेड की वक लगाना छोड कर केवल नेल पालिश लगाना शुरू कर दिया है। अब मेहन्दी महावर की अधिक आवश्यकता नही रही है, फिर भी समय समय पर त्यौहार, महत्वपूर्ण दिवस, शादी विवाह, सतानात्पत्ति, पूजा आदि के समय मेह्दी आज भी चाव से लगाई जाती है। इस लुप्त होती कला को हमे बचाना है। ●

# भित्ति चित्रकला

भारत म ससार की प्राचीनतम सभ्यता के अवशेप हडप्पा मोहनजोदडो की सभ्यता के रूप म प्राप्त हुए। राजस्थान मे हडप्पा सभ्यता के प्रागतिहासिक अवशेप विपुल मात्रा मे मिले हैं। यही नही राजस्थान मे तो आज तक हडप्पा की कला, पहनाव पूजा पद्धति आदि की परम्परा पूववत विद्यमान है। राजस्थानी चित्र शली भारत की एक मात्र प्रतिनिधि जीवित शैली मान्य हुई है। विदेशो म राजस्थानी चित्रो की लोक प्रियता यहा तक वढ गई है, कि राजस्थानी चित्र एक व्यवसाय बन गया है। कई जाली राजस्थानी चित्र भी ससार व्यापी हो गय हैं। राजस्थान के चित्रकारा की प्राचीन पुष्ट परपरा के कारण असली नकली चित्र म भेद कर पाना भी आसान नही है। इससे जनता तो ठगी जाती है, पर राजस्थान की प्रतिष्ठा मे जो हानि होती है वह इससे भी गभीर है।

### भारत मे भित्तिचित्र परपरा

अयोध्या म सूयवशी गुप्त सम्राटो के पश्चात मेवाड ही भारतीय सस्कृति का केन्द्र हुआ। शिल्प कला कौशल मे अजन्ता के बाद के युग मे मेवाड चरमोन्नति पर था। मेवाड के भित्तिचित्रो के हाथी अजन्ता,साची हाथी गुफा, अशोक की लोम ऋषि गुफा व धोली के हाथी की जीवित परपरा म है।

प्रसिद्ध तिब्बती इतिहासकार लामा तारानाथ प्राचीन भारत म तीन चित्र शैलियो का उल्लेख करते हैं। ।१। दव शली मगध उत्तर प्रदेश म (६००=३०० ई० पू०) ।२। यक्ष शली राजस्थान म अशोक द्वारा (३०० ई० पू०) ।३। नाग शली - बगाल, कश्मीर, मद्रास आदि म (३०० ई० पू०) से रही है। लामा तारानाथ ने यक्ष शली के एक विख्यात चित्रकार श्रीरगधर का महाराज शील के राज्य मरु देश म होना लिखा है।

गुप्त साम्राज्य के बाद की राजनैतिक अव्यवस्था से ७ वी सदा के लगभग २०० वप बाद तक भित्ति चित्रो म अवनति के लक्षण दिखाई देने लगते हैं। मध्य कालीन भारत के भित्ति चित्रो के नमूने, बीकानेर जोधपुर और खास तौर से उदयपुर मे मिलते हैं। उदयपुर के भित्ति चित्र आज भी एक जीवित परपरा है, जो अजन्ता के भित्ति चित्रो और मध्ययुगीन भित्ति चित्रो की अविच्छिन्न शृखलायें हैं। दिल्ली, आगरा,

लाहौर आदि मे १७ वी सदी म भित्ति चित्रा की जो विभिन्न स्थानीय शैलियाँ चलीं उन पर भी राजस्थानी भित्ति चित्रो का प्रभाव रहा है। इसी तरह दक्षिण मे भी राजस्थानी चित्र कला समाहत हुई जिससे तजौर और मसूर शलिया विकसित हुई। तजोर शैली के राजस्थानी चित्र, शिवाजी (१८३३ ५५) के राज्य काल मे बहुत उन्नत हुए। उस समय तजोर म राजस्थानी चित्रकारो के १८ परिवार थे जो हाथी दात व लकडी पर सर्वोत्कृष्ट चित्र बनाते थ।

मेवाड राजस्थानी चित्रों की जन्मभूमि —

लामा तारानाथ न भारत के प्राचीन पश्चिमी क्षेत्र (वतमान राजस्थान) में प्रचलित यक्ष शैली के प्रमुख चित्रशिल्पी श्री रगधर का उल्लेख किया है, जिसन ७ वीं सदी म मरदेश म एक विशिष्ट शली की स्थापना की। ये महाराजा शील के आश्रय में थे। श्री पर्सी ब्राउन महाराजा शील को मेवाड राजवश के मूल प्रवतक शिलादित्य ही मानते हैं।

मेवाड मे अब तक प्राप्त प्राचीनतम राजधानी चित्र 'आघाट दुग (अहाड उदयपुर) म गुहिल तेजसिह (१२६० ई०) के राज्यकाल मे चित्रित 'सावग पडिक्कमना सुत्त चुन्नी' (श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र चूर्णी) के हैं। इसी शली म चित्रित 'सुपाहनाह चरिय' (सुपाश्वनाथ चरित्र) एक मनोहर उदाहरण है, जो सन् १४२२-२३ म राणा मोकल (महाराणा कुम्भा के पिता) क राज्यकाल में 'देव कुल वाटक' (दलवाडा मेवाड) स्थान पर मेदपाट (मेवाड) दश म लिखा गया है। इस प्रकार के कई ग्रथ गुजरात मे मिलते हैं। समीक्षका न इस १५वी सदी की राजस्थानी शली को प्राचीन राजस्थानी शली की सज्ञा दी है। राणा प्रताप की सक्टकालीन राजधानी चावड मे मिला 'रागमाला चित्र सपुट' सन् १६०५ का है। यह ध्यान देने की बात है कि प्रारम्भिक भावना प्रधान ये सबल चित्र मेवाड मे प्राप्त हुए जो 'प्राचीन राजस्थानी शैली' का अत्यन्त ही महत्वपूर्ण केन्द्र था और लगभग १६८० तक अपना वचस्व निभाता रहा। राणा जगत सिंह (१६२८-५२) क समय यह शली चरमोत्कर्ष पर थी। इसी प्राचीन मेवाड शैली की एक मनोहर शाखा 'प्राचीन बूदी शैली' है। जिसका प्राचीनतम नमूना १६६२ का मिलता है। इसमे मेवाडी शैली का प्रभाव स्पष्ट है। मारवाड मे कोई प्राचीन 'राजस्थानी शली' नही मिलती, यहा भी मेवाड शली का ही प्रचलन था, जिसमे कुछ स्थानीय विशेषतायें युक्त कर दी गई थीं (मार्ग १६५६, राजपूत पेंटिंग)।

डा० मोतीचन्द्र ने मवाड पेंटिंग मे 'सुपासनाहचरियम' के नमूने देकर इसे जो पश्चिमी भारत शली (अर्थात गुजरात या जैन शैली) नाम दिया वह भ्रातिपूर्ण है। वास्तव मे गुजरात मे ऐसी तथाकथित शली भी तत्कालीन मेवाडी शिल्प की मूर्तियों पर ही आधारित हैं। अकबर के मेवाड पर किय गये आक्रमणा के फलस्वरूप महाराणा प्रताप की घर फूक युद्ध नीति से शत्रु को तो हैरानी मिली ही पर साथ ही मवाड की प्राचीनतम परम्परा भी पूर्णत नष्ट हो गई। इसीलिये राजस्थानी चित्र कला के १६वी व १७वी सदी के इतिहास निर्णय मे कई मतभेद हैं। यदा कदा मेवाड शली के कई नमूने मिलते रहने से अनेक भ्रान्तियां पैदा हो गई हैं, जिन्हें सुलझाना अभी सम्भव नही हुआ है।

राजस्थान मे १७वी सदी मे चित्रकला का प्रचलन उदयपुर और मारवाड तक ही सीमित था। १८वीं सदी मे कई राजपूत रियासतो मे चित्रकला के प्रति अनुराग हुआ जिससे जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, किशनगढ, बू दी, कोटा आदि भी सास्कृतिक केन्द्र बने। कई भव्य महल इस काल मे बने और भित्तिचित्रों से अलङ्कृत हुए। चित्रो के विषय पुराण गाथाओ व तत्कालीन दरबारी जीवन पर आधारित थे। सन् १८५५ म राजस्थानी चित्र कला के पतन के दिना मे भी बू दी के रगमहल के चित्रकारो ने उत्तम नमूने दिये जो सराहनीय है।

राजस्थान म सबसे प्रथम वास्तविक चित्रशाला (स्टुडियो) महाराणा जगतसिंह (१६२८—५२) के राज्यकाल म प्रारम्भ हुई जिसे 'चितारा की ओवरी' के नाम से जाना जाता रहा है। महाराणा के राज तिलक के कक्षो मे इसी चित्र शाला के सूत्रधार चित्रकारो ने अत्यन्त मनोहर भित्तिचित्र बनाये जो सूक्ष्म अध्ययन की अपेक्षा रखते हैं। चित्रो के विषय राजदरबार, उत्सव, सवारिया आदि हैं।

*भित्तिचित्रों के प्रकार —*

प्राय भित्तिचित्र दो प्रकार से बने मिलते हैं। १ फ्रेस्को (घोटाई चित्र) व २ मुराल (लाक्षारस चित्र)। ये प्राय अब फ्रेस्को नाम से ही जाने जाते हैं, परन्तु शिल्पगत परिभाषा म फ्रेस्को उन चित्रो को कहते हैं जा दीवार पर चूने के चिकने पलस्तर पट पर, गीले रहते ही चित्रित करके रग भर कर व घोट कर पालिश कर दिये जांय। अत देशी भाषा मे इन्हें घोटाई चित्र कहते हैं। इसके विपरीत मुराल सामान्य अथ म पहल ही बनी दिवार पर विभिन्न रगा से चित्रित होने वाले चित्र को कहते हैं। इन्हे रग चित्र या लाक्षारस चित्र कहा जा सकता है।

राजस्थानी भित्ति चित्रो मे घोटाई चित्र और लाक्षारस चित्र बहुतायत से पाए जाते हैं। ये चित्र प्राय दरीखानो, बठक या रग महल और विलास कक्ष में फश से लगभग दो ढाई फीट ऊची पट्टी के रूप मे भित्ति पर बने होते हैं। इन्हे पट्टी इजारा के कारण ही इजारा चित्र कहते हैं।

घोटाई चित्र फ्रेस्को शैली मे चित्र फूर्ति से बनते हैं अत वृथा अलकरण युक्त न होकर सादे परन्तु सबल और सजीव होते हैं। रेखाओ का लय प्रवाह व बल, कलाकार के अतरतम के भावो को सफलता पूवक व्यक्त करते हैं। इनमे प्रयुक्त होने वाले पार्थिव रग सीमित होने से इनकी सादगी को और भी बढा दते हैं। *यह रग हिडमची, प्यावडी, पीला सिंदूर, नील व काली स्याही मात्र हैं। रगो की कमी, कलाकार* की जोशीली भावना और बलवान रेखाओ से चित्र को प्राणवान बनाने म बाधक नहा होनी। इसमे भूल सुधार की तनिक भी सुविधा न होने से दक्ष चित्रकार ही इसे सफलता से बना सकते हैं।

लाक्षारस चित्र इसके विपरीत, रगा की विविधता और लम्बे समय तक काम करने की सुविधा युक्त होते हैं। धीरज से काय करते रहने से ये चित्र अलकरण प्राचुर्य और रग सौष्ठवता, बारीकी, रग वैचित्र्य आदि म फ्रेस्को से अधिक आकषक होते हैं। सामान्य जन तो इनके चमकदार रगो से ही सम्मोहित हा जाते हैं। वास्तव म इनसे चित्रित भवन ही रगमहल कहलाने के अधिकारी हैं। लाक्षारस से

बने चित्र, कुशल शिल्पि की कला मे चमत्कारी प्रभाव ले आते हैं । पर सामान्य चित्रकार भी इन रगों की महक से दर्शक को प्रभावित कर देते हैं । लाक्षारस में प्राय सभी प्रकार के रगो की आभा दिखाई जा सकती है ।

घोटाई चित्र और लाक्षारस चित्र दोनों ही पक्के होते हैं और इन पर पानी का कोई असर नहीं होने से प्राचीन राजस्थानी दरीखानो, व रगमहलो मे बने भित्तिचित्र सैकडो वर्षों से अपनी आभा लिए हुए हैं ।

भित्ति चित्रों के विषय —

भित्ति चित्रों के विषय प्राय श्रृगारिक, साहित्यिक, दार्शनिक व काल्पनिक जीवजन्तुओं के रूप पेड, पौधों के कलापूर्ण समावेश को लिए होते हैं । उन्हें प्रमुखत निम्न विभागो म बाट सकते हैं —

प्रेमाख्यान —

प्राचीन और मध्यकालीन लोक-जीवन मे सभ्य समाज के साहित्यिक प्रेमाख्यान बडे लोकप्रिय रहे हैं । अत उनके सजीव चित्रण कल्पना को साकार रूप देते हैं । राजस्थान मे प्रेम का प्रतीक 'ढोला-मारु', महाभारत का 'उषा अनिरुद्ध', मध्यकालीन गुजरात का प्रेमाख्यान 'सोरठ व बीजा माणेज और राणकदे' सूफी सतों के 'लैला मजनू' उत्तर गुप्तकालीन 'माधवानल काम कदल', 'मधुमालती' आदि सयोग और विप्रलभ श्रृगार की अनूठी झाकी देते हैं ।

नायिका भेद —

राजस्थानी भित्ति चित्रो के प्राण यहा की गज गामिनी नायिकायें हैं, जिनकी क्षीण कटि, पीन पयोधर और भरे पूरे नितम्ब, रीति-कालीन कवियो की परेशानी का कारण रहे हैं । चराचर को मोह पाश में बांध, पचशर के कुसुमायुध से विद्ध करने मे समर्थ ये माया-मूर्तिया राजस्थानी कलाकारो के दक्ष हाथों से पुष्प की भाति प्रयुक्त हो सर्वत्र अपने सौंदर्य के साथ ही सुरभि का भी बिखेर रही हैं । अगडाई लेती हुई कामलागी विप्रलम्भ की आकुलता का मूर्त रूप है तो कदुक प्रिया उल्लास की उछाल का । शुक प्रिया तृप्त रति सुख की साकार प्रतिमा पोपट से अपने प्रियतम के कटाक्ष सुनने को इठलाती है, तो मातृ का अपने सफल नारीत्व के फल को श्रृगार, रति सुख और विलास की सजीव वातावरण देती उल्लसित हो गोद मे लिए हुये विचरती है । चकरी प्रिया व पतग प्रिया अपने सुनहरे बचपन को पुन लौटा लाने मे मस्त हैं, तो मृगावती मृग को सितार की तान पर मुग्ध करके अपने मृगनयनी नाम को सार्थक करने में शकुन्तला की याद दिलाती है । कहा काटे का बहाना कर देवर म अपने पति के रूप की झांकी का अनुभव करके इठला कर कहती है "काटो लागो रे देवरिया मो सो सग चल्यो ना जाय ।"

विविध —

इस सरस वातावरण म गाभीय व उभार लाने के लिये यत्र तत्र शिव पार्वती, वीर गाथा म पृथ्वीराज चौहान, रजवाडा और ईस्ट इण्डिया कम्पनी के युद्ध प्रसग शिकार के दृश्य, अत पुर के विनोद, नाव की सवारी आदि के दृश्य होते हैं ।

राजस्थानी शौर्य के प्रतीक वीरो का सिंह से द्वंद्वयुद्ध, हाथी और सिंह का युद्ध, हाथियो की लडाई मदोन्मत हाथियो को खिजाते साडी सवार, हाथी मक्षी काल्पनिक अनलपक्ष, गजमुखसिंह बुर्राक, अष्टपद शरभादि पशु युग्म, आदि मे वीर श्रृंगार रस का अदभुत साम्य हैं। उनसे दार्शनिक भावो की प्रतीकात्मक अनुभूति होती है।

पच्चीकारी —

पिछली सदियो म राजस्थानी भित्ति चित्रा मे रग रेखाओं के अतिरिक्त अन्य अलकारिक उपाय भी प्रयुक्त हुए हैं। इनम रगीन मीनाकारी पन्नी की चमक (foil) तथा काच के भीतर की ओर १८वी १९वी सदी मे युरोपीय नवागनाओ के यौवन का उभार चित्रण करने की प्रवृत्ति दिखाई देती है। पुर्तगाली लिबास की कुछ नवागनाओ के चित्र एसे चीणी की चित्रशाला (उदयपुर के राजमहल) का आभूषण है।

दूसरी प्रवृत्ति म रगीन काच को मनोवाछित आकृतियो मे काट छाट कर, बेल बूटो की घोटाई म पच्चीकारी की जाती है। इजारा म काच की कटाई मे वन के विभिन्न पशु जीवन की सर्वोत्तम झाकी उदयपुर के शिवनिवास, गोलमहला की क्लोमइस शैली का विकास, शिल्पी सूत्रधार कुदनलालजी ने अपने १९वी सदी के अतिम चरण म लदन म किये गय परीक्षणा के आधार पर किया। ये भारत के तत्कालीन महान चित्रकार राजा रवि वर्मा के समकक्ष रहे है। मेवाड मे विकसित यह शली काच का काम नाम से विख्यात हुई है और यहा से शिल्पिया द्वारा कोटा, बूदी झालावाड जाधपुर, जयपुर आदि मे समादृत हुई।

मेवाड राज महलो मे मोर चौक के अलकारिक मयूर, पच्चीकारी कला के अद्वितीय उदाहरण हैं जो देश विदश के पयटका के आकपण केन्द्र है। काच के माध्यम म यह पच्चीकारी भित्ति-चित्रकला रगमहलो के स्थान पर शीश महला के निर्माण मे अग्रसर हुई। मेवाड मे प्राय सभी महलो और सम्पन्न घरानो म इसका प्रचार २०वी सदी मे एक फशन हो गया था। जैन मन्दिर तो आज भी इस काच के काम के बिना अलकरण को पूरा ही नही मानते। इसम मीना कटाई ईरानी आदि सनाए विविधता की सूचक हैं। ●

आपत्तिया जीवन मे अवश्य होनी चाहिए क्योंकि बिना उन पर विजय पाए जीने का सच्चा आनद नहीं आ सकता।

—शोपेनहावर

# राजस्थान की कलायें

राजस्थान तलवार का ही धनी नही कला का भी धनी रहा है। यहा की कलायें प्रागतिहासिक युग से अपने इतिहास का आरम्भ करती हैं, जबकि शौर्य का इतिहास ऐतिहासिक युग से ही प्रारम्भ होता है। आधुनिकतम खोजो के आधार पर राजस्थान का इतिहास आदिमानव युग से क्रम बद्ध जाना जा सकता है। यह इतिहास मात्र राजनैतिक उथुल पुथल का इतिहास नही, कला व संस्कृति का इतिहास है, राजस्थान के जन-जीवन का इतिहास है। जिससे पता चलता है कि राजस्थान संस्कृति के कलात्मक पक्ष से कभी भी अनभिज्ञ नही था राजस्थान की कला शताब्दियो का इतिहास अपने अंक मे छिपाये हैं। हम यहाँ की कलाओं का विवेचन दो भागो मे बांट कर करेंगे। एक है ललित कला पक्ष दूसरा हस्त कला पक्ष। आलंकारिक कलायें, भी हस्तकला पक्ष मे ही स्थान पाती है।

ललित कलाओं के क्षेत्र यद्यपि मृण्मय कला कृतियाँ प्रागैतिहासिक युग से ही भारतीय क्षेत्र को भर रही हैं जैसा कि गगानगर क्षेत्र की खुदाई से प्राप्त कला कृतियो से विदित होता है, पर प्रागतिहासिक युग के पाषाण युग के प्राप्त पाषाण के अनगढ औजार एव हथियार तथा बाद के युग के चिकने तथा छोटे औजार एव हथियार हम आदिम निवासियो की हस्तकला का भी दिग्दर्शन कराते हैं। ऐसे हथियार हमे आज से लगभग ३५०० वर्ष पूर्व तक के मिलते हैं। ये औजार मानव सिर्फ तब ही नहीं प्रयोग करता था जब वह खाद्य सामग्री संकलन की स्थिति मे था बल्कि उस समय भी इनका प्रयोग करता था जब वह खाद्य-सामग्री उपजाने की स्थिति मे था। उसने कला को अपनी नित्य प्रति की वस्तुओं मे भी स्थान दिया। इसका प्रमाण कालीबगा से पूर्व सिंधु-सभ्यता-युगीन नित्य प्रति के प्रयोग के चित्रित मिट्टी के बर्तन हैं। इसके अतिरिक्त बच्चों के खिलौने जो मृण्मय कला-कृतियो के रूप मे पाये गये हैं उस युग के मानव की कलात्मक प्रवृत्ति के द्योतक हैं।

पाषाण-निर्मित कोई भी प्रतिमा अभी तक हम उत्तर मौर्य काल से पहले के नही प्राप्त हो सकी है। राजस्थान को ही ऐसी प्राचीनतम प्रतिमा भारतीय कला के कोष मे देने का श्रेय है। यह ८ फीट ऊंची यक्ष की प्रतिमा नोह (भरतपुर आगरा राजपथ पर भरतपुर से ४ मील दूर तथा राजपथ से लगभग २ फर्लांग पर स्थित गांव) में अब भी देखी जा सकती है। इस युग के पश्चात से सभी युगो की कोई न कोई

पाषाण प्रतिमा राजस्थान मे मिल जाने से अब राजस्थान की मूर्ति कला प्रवृत्ति का क्रमबद्ध इतिहास लिख सकते हैं। यह परम्परा अब तक सजीव है और इसका प्रमाण जयपुर के सिलावट मोहल्ले के २०० घर हैं जहाँ अब भी मूर्तियाँ बनाई जाती हैं। इनकी कृतियो पर परम्परागत कला की छाप तो नही है जो ८वीं शताब्दी से १२वी शताब्दी तक की कला कृतियो म है फिर भी वे किसी प्रकार परम्परा को जीवित रखे हुए है। इसके अतिरिक्त अलवर के आस पास के स्थानो पर सस्ती अनुकृतियाँ कुछ शास्त्रीय पद्धति से बनी मूर्तिया भी उपलब्ध हो रही हैं। इनम जो काम हो रहा है वह मकराना के पत्थर पर न होकर स्थानीय पत्थरो पर किया गया है।

पाषाण निर्मित मूर्तियो के अतिरिक्त मण्मय कला-कृतियो की परम्परा भी सिधु घाटी की सभ्यता के युग के बाद से बराबर चलती है। इसका ज्वलत उदाहरण हैं आहाड, गिलु ड, नोह वैराठ, रढ आदि स्थलो की खुदाई से प्राप्त मण्मय कला-कृतिया के असख्य नमूने। इन सब म अति रोचक रैढ से प्राप्त एक नारी शरीर का ऊपरी भाग है जिसमे नारी पगडी धारण करने के साथ २ २ चोटी भी किये है। यही नही, साभर के उत्खनन से प्राप्त सुराही के हत्थे पर गगावतरण का अकन बडा ही सुदर है।

मध्य युगीन कला के नमूने यद्यपि कम मिलते हैं। पर राजस्थान के विभिन्न भागा मे यत्र-तत्र खिलौनो का पाया जाना इस बात का द्योतक है कि यह कला विभिन्न युगो मे होती हुई वतमान युग मे उत्तरोत्तर वृद्धि प्राप्त कर कुट्टी आदि के खिलौनो के रूप मे राजस्थान की अपनी कला-निधी सी होगई है।

चित्र कला के क्षेत्र मे विद्वानो एव कला ममनो की सदा से यह धारणा रही है कि राजस्थानी चित्रकला मुगल चित्रकला से निकली है या इसका सबध अजन्ता की चित्रकला से है। अजता और जन चित्रकला के बीच एक अधकार युग आता है और राजस्थानी चित्रकला का प्रारम्भिक युग अकबर के समय से अर्थात् १६वी शती से प्रारम्भ होता है। पर नवीनतम खोजो से यह सिद्ध सा है कि राजस्थानी चित्रकला परम्परा प्रत्यगैतिहासिक युग से आरभ होकर कई युग सोपानो से होती तथा विभिन्न परिस्थितिया का सामना करती, अपनी विभिन्न स्थानीय शलियो के रूप मे, एकता मे विभिन्नता का दशन कराती है। भरतपुर से लगभग ३० मील की दूरी पर स्थित दर नामक स्थान की पहाडी चट्टाना मे पायी जाने वाली कुछ गिरि-गुहाओ की स्थिति का ज्ञान हुआ है जिनकी दीवारो और छता के चित्र ब्रुश से न बनाये जाकर हाथ की अगुलियो से बनाये गये प्रतीत हाते हैं। ये चित्र राजस्थान के माडनो के पूवज कहे जा सकते हैं। चम्बल के तट पर, राजस्थान और मध्य भारत की सीमा पर स्थित चट्टानो से भी जो मोडी केदारेश्वर, हिंगलाजगढ आदि मे पाई जाती है, आदि मानव की चित्रकला प्रवृत्ति का ज्ञान होता है। यह परम्परा किस प्रकार नित्य प्रति प्रयाग मे आने वाले बतनों पर स्थान पाती गइ यह कालीबगा, नोह आहाड आदि स्थानो पर पाये गये बतना के टुकडो से जानी जा सकती है। मिट्टी के बतनो पर इस प्रकार की चित्रकारी मध्य युग तक मिलती है। बतनो पर रोगनी काम भी इसी कला की देन है।

बोस्टन सग्रहालय मे प्राप्त ताडपत्र पर चित्रित सवग्ग पदक्मल सुत्र चुन्नी जो मेवाड के आहाड स्थान पर रचा एव चित्रित किया गया है, इस धारणा की पुष्टि करता है कि चित्रकला की परम्परा

राजस्थान म १२वी शताब्दी में भी जीवित थी और १६वी शताब्दी म भी यहा की चित्रकला परम्परा जैन
उपासरों में जीवित रखी गई। महाराणा कु भा के महल तथा आल्हा कावरा की हवेली यद्यपि किसी भी
मानव आकृति को स्थान नही देते पर उनकी अलकृत छतें चित्रकला के प्रयोगो के अवशेष अवश्य प्रस्तुत
करती हैं। भवनो को चित्रित करने की प्रणाली ने जयपुर, बीकानेर, बू दी, कोटा आदि मे बल पकडा और
कागज पर चित्रो के निर्माण के साथ राजभवना एव साधारण हवेलियों म भी इनका प्रचलन प्रचुर
मात्रा मे हुआ।

बर्तनों को चित्रित करने का प्रारम राजस्थान मे पूव हडप्पा काल मे हुआ। उत्तर मुगल काल म
जयपुर ने दिल्ली और मुल्तान के कलाकरो के सम्पक से चमकदार रोगनी, नीली सज्जा वाले बतन आरम्भ
हुए। लेकिन खुदाई से प्राप्त बतनो के अवशेपो से अनुमान होता है कि गुप्त काल मे भी एमे बतन राजस्थान
में बनते थे। बीकानेर के सडिया पर सुनहरे, लाल, पीले, चमकदार वेल बूटों के स्थान देने वाले बतन
राजस्थान की अमूल्य कला निधि हैं।

राजस्थान मे ताबें का उपयोग आज से ३५०० वप पूव प्रारम्भ हुआ है ऐसा हम आहाड आदि स्थाना
की खुदाई से प्राप्त अवशेपा से ज्ञात होता है। नोह से प्राप्त ताम्बे की चिडिया ताम्बे मे आकृति लाने का
अति प्राचीन प्रयास है। पीतल पर कलात्मक कारीगरी की कला ने उत्तर मुगल काल म अधिक उन्नति
की। महाराज सवाई जयसिंह ने इस कला को प्रोत्साहन दिया एव बहराम सिह जी के समय मे कई
बडी बडी कलाकृतिया बनी। इन कला कृतियो पर मीने का काम काज काम, हथौडे का काम तथा छेनी
से किया दानेदार काम है। गगा जमनी काम (चादी और सोने का मिश्रित काम या रुपहला सुनहला काम
कहा जाता है) १६ वी शताब्दी म पर्याप्त हुआ। ये काम अब भी होने हैं पर इतने सुन्दर नही जितन कि
पहले होते थे।

हाथी दाँत पर काम प्रथम शताब्दी ई० पू० होना आरम्भ हुआ पर उत्तर मुगल काल म इस कला पर
मुगल काल की छाप पडी। पहले इस कला का क्षेत्र उदयपुर, जयपुर व भरतपुर था पर अब अधिकतर जयपुर
मे ही यह काय होता है।

सोने पर मीने का काम भी मुगल काल की देन है। यह काम जयपुर व प्रतापगढ मे होता था। अब
जयपुर म यह काम बहुत कम होता है और प्रतापगढ मे भी लगभग समाप्ति पर है। चादी पर कटाई व
जालदार काम जयपुर की विशेपता है। यहाँ यह काम बहुत हल्का और सुन्दर होता है। जयपुर म नगीना
की कटाई व जडाई का काम भी हाता है। गोटा किनारी के काम के लिये भी राजस्थान प्रसिद्ध है। यहाँ
सच्चा भूठा दोनो प्रकार का गोटा बनाया जाता है और गोटे के काम के विभिन्न कलात्मक प्रयोग होने हैं।
लकडी व लाख का काम जयपुर, जोधपुर व बीकानेर मे लगभग २०० वर्षों से हो रहा है। यह घरू कला
है और इसे प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है।

बीकानेर मे लाख के रगो के साथ सोने के वकों का काम, ऊट की खाल के बने पत्रों पर बडी कला
त्मकता से किया जाता है। अब यह कला ह्रास पर है और एक ही परिवार इसका नाता बचा है।

सिरोही तलवारा और कटारा के लिये प्रसिद्ध रहा है । इन अस्त्रो पर सुनहरा काम जयपुर और अलवर आदि स्थानो पर १८ वी और १६ वी शताब्दी म किया जाता था । इस काम को करने वाले भी अब बहुत कम हैं क्योकि ये कारीगर अधिकतर मुसलमान है और पाकिस्तान चल गये है । लकडी पर सुदर कढाई का काम फूल पत्ती, पेड, पक्षी आदि का निर्माण काय शेखावाटी, बागड प्रदेश एव बीकानेर म, १८वी व १६वी शताब्दी से होता आ रहा है । लकडी की पुतलिया भी इस युग मे अच्छी बनी । राजस्थान कपडे की रगाई, छपाई कढाई आदि के लिय भी प्रसिद्ध है । जयपुर, बीकानेर और अजमेर कभी गलीचो के समृद्ध केन्द्र थ । जयपुर म इस काल का इतिहास १७वीं शताब्दी से मिलता है । अजमेर और बीकानर की जेला म १६वी और २०वी शताब्दी म बन गलीचे बहुत उत्कृष्ट होते थे । जयपुर १८वी शताब्दी म मखमल पर सोन के तारो की कढाई का प्रमुख केन्द्र था । यह कला यहा १६वी और २०वी शताब्दी तक खूब पनपी । बीकानेर और जोधपुर कपडे पर बधेज और काच के काम के लिये अत्यन्त प्रसिद्ध थे । अब यह काम जयपुर मे भी होने लगा है । कपडे पर छपाई क लिये बगडू सागानेर चित्तौड बाडमेर कोटा आदि प्रसिद्ध हैं । इस कला का आरभ राजस्थान म १८वी शताब्दी से हुआ । सोने चादी के काम की छपाई भी कोटा व किशनगढ म कभी अच्छी होती थी । अब इस प्रकार का काम राजस्थान मे कई स्थाना पर हो रहा है पर वह इतना पक्का नही होता जितना पहले होना था ।

सक्षेप म कहा जा सकता है कि राजस्थान अपनी रचनात्मक परम्पराओ म विभिन्नता रखते हुए भी एकता का दशन कराता है और उसके कला सम्बन्धी इतिहास के ज्ञान के बिना हम भारतीय सस्कृति एव कला का इतिहास ठीक प्रकार स समझ नही सकते । ●

ट्रेन से यात्रा करने वालो के लिए यह आवश्यक है कि व ट्रेन आने के कुछ पहले ही स्टेशन पर पहुच जाय, अन्यथा गाडी मिलने का कोई भरोसा नहीं । जाजूजी की यह शीघ्रता लोगा के लिए विनोद का विषय बन गयी थी । उन्होने इसका नाम ही रख दिया था—"जाजू टाइम" ।

जाजू टाईम—ट्रेन के समय से एक घटा पहले स्टेशन पर जाकर धरना देना ।

गाधी टाइम—ट्रेन छूटने से एक या आधा मिनट पहले स्टेशन पहुचना ।

मालवीय टाइम—ट्रेन छूटने पर स्टेशन पहुचना ।

नेहरू टाइम—ट्रेन के टाइम पर भी व्याख्यान देते रहना और उसके छूट जाने पर कार से अगले स्टेशन पर जाकर गाडी पकडना ।

कोमल कोठारी

# लोकगीतो मे परिवार

परिवार हमारे जीवन की धुरी है जिसम माता पिता, पति पत्नी, भाई बहन सभी का समावेश है। लोकगीता म परिवार के सुन्दरतम चित्र प्रस्तुत किये हैं। लोकगीता म पति-पत्नी का कोमलतम और स्नेहपूर्ण सूक्ष्म सम्बन्ध भी चित्रित हुआ है। अत जहा इन गीतो म एक ओर भावना प्रवलता एव कलात्मकता (काव्य और सगीत) रहती है वहा दूसरी ओर सामाजिक चेतना तथा आवश्यक समाज शास्त्र भी। लोकगीत इसीलिये कत्तव्य और उपयोगिता की कसौटी पर भी खरे उतरते हैं। लोकगीतो न वैवाहिक सम्बन्धो की पवित्रता के साथ ही प्रेम के धर्मनिरपेक्ष और वैयक्तिक आकाक्षाओ के स्वरूप का ही सराहा है।

राजस्थान के लोकगीतो म पति-पत्नि के सम्बन्धो को लेकर अतुलनीय अलौकिक और अनोखा साहित्य रचा गया है। यहा विवाह के पूर्व 'अकन कवारी' की पवित्र कामना से लेकर विवाह विवाह के पश्चात सीख सीख के बाद कन्या का पीहर और ससुराल के बीच मोह विवाह की स्मृति, सहेलियो की चुहल बाजी, पति से रूठना और पति को मनाना, पुत्रोत्पत्ति की कामना पति से एकान्तिक विरह-भेंट, पखेरू की भांति दूर काय हो जाना आदि अनेक मार्मिक विषय चुने गये हैं। पति पत्नि के पारिवारिक स्थूल सम्बन्धो के बीच प्रेम की जो सूक्ष्म लौ जलती है—उसके प्रखर मनोहर रूप को लोकगीतो न पहचानने की कोशिश की है। ऐसा एक गीत है 'पणिहारी'।

हमारे जीवन म विवाह जितना स्वाभाविक है उतना ही विवाह के बाद सामाजिक जिम्मेदारियो का निभाने के लिये नौकरी के लिये जाना रहता है। नौकरी नहीं भी हो तो पत्नि से अलग होने का कोई न कोई अवसर तो आ ही जाता है। उस छोटे से विरह म मन की आकुलता किसे अनुभव नहीं होगी। राजस्थानी लोकगीतो म तो ऐसे सैकडो गीत मिल जाते हैं जिनमे पत्नि, अपने पति से कुछ दर रहने के लिये मिन्नतें करती है। कान्ता की इस लालित्यपूर्ण कामना को या भी इन्कार करना कठिन होता है। फिर उन्हे काव्य और सगीत का सहारा भी होता है। 'इकथमिया महल' और 'कसूबा' आदि गान इसी प्रकार के हैं। नायक और नायिका अपने निश्छल प्रेम की निश्चित रातें बिता रहे हैं और यहीं से नौकरी या जिम्मेदारी का बुलावा आ गया है। स्त्री रुकने को कहती है बहाने बनाती है पति उसका सहज उत्तर देता है अन्त म दुखी विरह, कातर मार की तरह कुरलाती हुई स्त्री को छोडकर चला जाता है।

घवरी प्रसाद साकरिया

# राजस्थानी साहित्य और पाठ-शोध

किसी भी राष्ट्र की रीढ उसकी सस्कृति है। उस रीढ को दृढ, शक्तिमान और चिरस्थायी बनाने वाला है उसका सर्वांगीण साहित्य। साहित्य, व्यक्ति, समाज (जाति) और राष्ट्र का यथावत और यथार्थ दर्शन कराता है। साहित्य, इन तीनो (व्यक्ति, समाज और राष्ट्र) के मन, रुचि, आचार विचार, धर्म, ज्ञान-विज्ञान, कला-कौशल और उत्थान-पतन आदि विविध क्षेत्रो में इनके बौद्धिक विकास के व्यापक रूप से दर्शन कराता है। साहित्य और सस्कृति ही राष्ट्र की सभ्यता का आधार है। जिस राष्ट्र या जाति का साहित्य नही, वह राष्ट्र या जाति जीवित नही रह सकते।

भारत की सस्कृति बहुत ही गौरवपूर्ण है और उसका साहित्य भी आदि काल से गौरवपूर्ण रहा है। विधर्मियो और आक्रमणकारियो द्वारा अनेको बार नष्ट होने पर भी जितना प्राचीन साहित्य हमारी सस्कृति से सम्बन्धित आज हमे प्राप्त है, उतना प्राचीन और उच्च कोटि का साहित्य विश्व के किसी भी राष्ट्र की सस्कृति को उपलब्ध नही है। आज आवश्यकता है उसके सही मूल्याकन की और उसे यथावत् रूप में प्रकाश मे लाने की।

हस्तलिखित ग्रन्थो के छुटपुट सग्रह और ग्रन्थागारो की दृष्टि से राजस्थान भाग्यशाली है। वह अनेक राजकीय, प्रजाकीय और वैयक्तिक शोध-सस्थाओ और ग्रन्थागारो का धनी प्रदेश है। अकेले जोधपुर और बीकानेर के ग्रथागार ही विविध विषयो के लक्षाधिक अमूल्य हस्तलिखित ग्रथो के अद्वितीय सग्रह हैं जो शोधार्थियो के आकर्षण केन्द्र बने हुए हैं। जसलमेर के प्राचीन ग्रथ भण्डार तो विश्व-विख्यात है उनकी समता का और उतना पुराना (कागज और ताडपत्रीय) साहित्य अन्यत्र दुर्लभ है। (ताडपत्रीय ग्रन्थ दशवी शती के और कागज पर लिखे ग्रथ बारहवी शती के जैसलमेर के ग्रथ भण्डारो मे सुरक्षित हैं। कागज पर लिखे गये इतने पुराने ग्रथ कदाचित ही कहीं मिल सकें। बहुत से ताडपत्र और कागज पर लिखे ग्रथ अपने ढग से सुरक्षित रखे रहने पर भी काल-कवलित हो गये। अब अनेक महत्वपूर्ण ग्रथो को अपने अपने नाम की एलुमिनियम की पेटियो मे वैज्ञानिक प्रकार से सुरक्षित कर दिया गया है। भारत सरकार ने अनेक ग्रन्थो के कोई ३००० पत्रो को जो काल के मुख म जारहे थे, फोटो स्टेट के रूप मे उन्हे नया जन्म दे दिया

है और कइया पर पारदर्शक कागज चिपका कर उनका काया कल्प कर दिया है। बडे भडार के ग्रन्था मे ताडपत्रीय ग्रन्थो की सख्या ४०० के लगभग है।)

जिस ग्रथ का हम सम्पादन करने अथवा शोध प्रबन्ध लिखने जा रहे हैं उसके लिये अधिक से अधिक हस्तलिखित प्रतिया इकट्ठी करने के बाद ग्रथ को मूल और शुद्ध रूप के जितना भी निकट लाने का प्रयत्न किया जाता है उसके लिये सर्व प्रथम आवश्यकता रहती है उसके पाठ शोध की। शुद्ध पाठ के बिना साहित्य की परिभाषा के भीतर समाहित होने वाले किसी भी विषय का हम सही रूप से मूल्याकन या विवेचन नही कर सकते। अशुद्ध पाठ का मूल्याकन और विवेचन विवेच्य ग्रथ के मूल म ही आघात कर देता है। वस्तु के सत्य स्वरूप को विकृत करके असत्य रूप मे प्रगट कर देता है जिससे अनेक भ्रान्तिया उत्पन्न हो जाती है। पाठशोध, ग्रथ मे ग्रथित एक ऐसे सत्य की खोज है जो उसकी शब्द-सृष्टि मे आत्मसात हुआ है। पाठशोध–ग्रथकार की अक्षर-आत्मा के तत्व को पहिचानने की एक ऐसी प्रक्रिया है जो अशुद्ध पाठावरण स आवृत्त होकर उसके यथात्मस्वरूप को ढके हुए या भ्रमत रूप मे प्रगट किये हुए है। तात्पय कि पाठशोध एक ऐसी साधना है जिससे ग्रथ का अशुद्ध आवरण हटकर उसके शुद्ध स्वरूप का दशन हो जाता है। प्राचीन साहित्य की किसी भी भाषा या लिपि के हस्तलिखित ग्रथ को लें, सबसे पहले और अत्यावश्यक समस्या हमार सामने पाठशोध की ही आकर खडी होती है। इसको हल किये बिना हम अपने शोध और सम्पादन के काम म आगे नही बढ सकते। यहा हम राजस्थानी साहित्य पर शोध करने वालो के लिये इसी विषय पर कुछ प्रकाश डालने का प्रयत्न कर रहे हैं।

पाठशोध के सम्बन्ध मे कुछ मुख्य बातें हैं जिनके सम्बन्ध मे पहले जानकारी प्राप्त कर लेना आवश्यक होता है। जिससे सशोधन और सम्पादन का काम बहुत कुछ सरल हो जाता है। वे निम्न प्रकार हैं —

१ आदि और पूर्व-मध्यकालीन तथा सम्बन्धित प्रान्तीय भाषाओ के ग्रथो म लिखे हुए नागरी लिपि के कुछ अक्षरो के रूप।

(प्राकृत और अपभ्रश एव कुछ प्रादेशिक भाषाओ की नागरी लिपियो मे बहुत से अक्षर ऐसे होते हैं जिन्हे पढना कठिन होता है। एक ही अक्षर कई प्रकार से भी लिखा जाता है। वर्ण विज्ञान म इनका कोई विवेचन नही मिलता। एक ही ग्रथ मे 'ए' की मात्रा कही उपर लगी होती तो कही बाजू म। ऐसी स्थिति म किसी ऐसी हस्तप्रति की प्रतिलिपि करने म कोई अक्षर समझ मे नही आ सके तो शब्द और वाक्य का आशय ही बदल जाता है। ऐसे कुछ अक्षरो का चार्ट लेख के अन्त म दिया जा रहा है।)

२ प्राकृत और अपभ्रश भाषाओ के व्याकरण और शब्दो के रूप आदि।

३ वर्तमान राजस्थानी भाषा के हस्तलिखित ग्रथो में इन अक्षरो का प्रयोग प्राय नही होता —ऋ, ख ड, ढ, श ष क्ष और न। ऋ के लिये रि, ख के लिये ष, ड के लिये ढ, श के लिये स, क्ष के लिये छ और क वर्गीय ख का ष रूप और ण के लिये ग्य (गन, गिन और ग्न उच्चारण भी लिखे मिलत हैं) ब के लिये व और व के लिये नीचे बिंदीवाला व का प्रयाग भी बहुत सी प्रतिया में देखने को मिलता है।

राजस्थानी मे प्राय अनुनासिक वर्णों के पूव आने वाले आकार और ऊकार का उच्चारण सानुनासिक हो जाता है, अत उनके ऊपर अनुस्वार का प्रयोग किया जाता है। जस —राणो, जाणणो, जान, काम इत्यादि। परन्तु कुछ ऐसे शब्द भी (*प्राय क्रिया पद*) *हैं जिनम अनुनासिक के पूव किसी स्वर या व्यजन* का लोप हो गया हो अथवा अनुनासिक के पूव किसी वण के आगम हो जान पर भी उसके अथ मे कोई अतर नही आता हो तो उम अनुनासिक के पूव के आकारादि के ऊपर अनुस्वार नही लगता और अनुस्वार युक्त उच्चारण भी नही होता। 'जाणो' (जाना) गमन करने के अथ वाला क्रिया पद है। इसम 'जा' के पश्चात'णो' अनुनासिक वण होने पर भी 'जा' के ऊपर अनुस्वार का उच्चारण इसलिये नही होता कि इसमें 'णो के पूव 'व' का लोप हो गया है और उसको पुन वहा रख कर 'जावणो बना देने पर भी उसके अथ मे कोई अन्तर नही आता परन्तु यही शब्द 'मानो (गोया) अथ के रूप म प्रयुक्त होगा तो उसका उच्चारण सानुस्वार 'जाणो' ही होगा, क्योकि इसमे किसी वण के आगम की सम्भावना नही है। इसी प्रकार खाणो (खाना) आणो (आना) इत्यादि शब्द है जिन पर अनुस्वार का उच्चारण नही होता, क्योकि इनके अदर 'व' वण के लोप की ध्वनी का अप्रत्यक्ष उच्चारण हो रहा है।

४ जनवाणी की परम्परागत परिवतनशील वृत्ति से भाषा और भावो म कालानुक्रम से आता हुआ अतर और उसका लिपिकारा और टीकाकारो द्वारा किये गये सशोधन, परिवर्तन, परिवद्ध न आदि मे पडा हुआ प्रभाव।

५ राजनैतिक क्रातियो और युद्धो के कारण इतिहास, भूगोल, सस्कृति और भाषा इत्यादि मे आये हुए परिवतनो का पाठान्तारो पर पडने वाला प्रभाव।

६ शोध या सम्पादन से सबधित विषय की आवश्यक जानकारी और तत्सबधी सहायक साहित्य सामग्री का सकलन तथा अध्ययन।

७ हिन्दी और राजस्थानी साहित्य से सबधित बहुत से ग्रथा की फारसी लिपि मे लिखी हुई हस्तलिखित प्रतिया भी मिलती है (जयपुर राज्य के पोथीखाना मे [जो महाराजा की निजी सपत्ति हैं] हिन्दी और राजस्थानी साहित्य से सबधित बहुत बडा सग्रह फारसी-उर्दू लिपि के ग्रथो का है।) उन्हे पढना समझना और उन पर शोध का काम करना और भी कठिन होता है क्योकि उसमे एक ही वण या शब्द अनेक प्रकार से पढा जा सकता है जीम-स्वाद-वाव-लाम इन चार अक्षरो से "जसोल' लिखा जाता है। यह एक गाव का नाम है। इस गाव से अपरचित व्यक्ति इसको "जसूल' और जसवल भी पढ सकता है। "वाव को लिखने से उसकी छोटी सी गाठ म खाली जगह नही रह सकी, जसा कि प्राय शिकस्तानवीसी मे हो जाया करता है तो उसे जसदल' भी पढा जा सकता है, वाव अक्षर ओ औ उ और ऊ' इन चारो स्वरो की मात्रा है और वह 'व व्यजन भी है। लिखने मे जरासी सावधानी नही रखने से वह दाल अक्षर जसा रूप बनकर द का उच्चारण करा देता है। फारसी लिपि मे सूक्ष्मातिसूक्ष्म नुक्ते और शोशा का भी वण के निर्माण में बडा महत्व है। इनके एकाध कम ज्यादा लगजाने से मानोए, अक्षर और शब्द के शब्द बदल जाते हैं। (उर्दू फारसी की लिपि की वणमाला मे कई अक्षरा के ऊपर नीचे

तीन-तीन नुक्ते एक साथ लगते हैं और सिंधी लिपि मे तो चार चार नुक्ते एक साथ लगते हैं।) इसलिये उर्दू-फारसी लिपि के हस्तलिखित ग्रथो पर काम करना और भी कठिन हो जाता है। लेखनशैली भाषा के शब्द, शब्दो के अर्थ, मुहावरे और उसकी दूसरी बारीकियो को समझना जरूरी होता है। ग्रथ की यदि देवनागरी प्रतिलिपिया मिल जाय तो लिपि से सबधित समस्याओ का बहुत कुछ हल निकल आता है।

उपरोक्त बातो की आवश्यक और सम्यक जानकारी के द्वारा पाठ-शोध के काम म आने वाली बहुत सी रुकावटें कम हो जाती है।

पाठशोध के लिए जितनी भी अधिक और रचनाकाल के निकट की हस्तलिखित प्रतिया मिल सकें अधिक उपयोगी होती है। यदि उसकी ग्रथकर्त्ता के हाथ की लिखि हुई ही प्रति मिल जाय तो सम्पादन काय मे पाठशोध जसे कठिन और झु भलाहट के परिश्रम और बहुत से समय की बचत हो जाती है और पदच्छेद, शब्दाथ और भावाथ आदि अन्य कामों को अधिक निपुणता के साथ सम्पादन करने के लिए पर्याप्त समय मिल जाता है। पर बहुत पीछे के रचनाकारो को छोडकर किन्ही प्राचीन ग्रथकारो के हाथ की लिखि हुई प्रतिया देखने मे नही आती। अधिकतर कवि और ग्रथकार राज दरबारी और राज सम्मान प्राप्त होते थे। उनका पद बहुत ऊचा माना जाता था। उनकी रचनाओ को लिपिबद्ध करने के लिये राज्य की और से लेखक और लिपिक नियुक्त होते थे। इसलिये वे अपनी रचनाए अपने हाथ से नही लिखकर व्यवसायी लिपिको के द्वारा ही बोलकर लिखवाते थे। प्रथम लेखन के समय ही भूल हो जाया करती थी। व्यवसायी लिपिक अक्षरों को सुदर और उन्हे भिन्न भिन्न प्रकार से लिखने के अभ्यासी तो होते थे, पर पढे हुए बहुत कम होते थे, इसलिए शुद्धाशुद्धि का ध्यान उन्हें नही रहता था। इस प्रकार बोलकर लिखवाई हुई मूल प्रतियो से प्रतिलिपिया करते रहने का जो सिलसिला चलता रहता है उससे मूल रचना म अन्तर पडता ही जाता है।

पाठशोध की परिभाषा —

किसी ग्रथ के मूल या आदि लेखन की लिपिकारो या साहित्यको द्वारा समय समय पर प्रतिलिपिया की जाति रहने के दीर्घकालीन सिलसिले मे दृष्टिस्खलन, असावधानी व अज्ञानता से अथवा हस्तप्रति के फटे हुए, गले हुए व परस्पर चिपके कागजो के कारण अस्पष्ट और त्रुटित अश के नही पढे जा सकने के अनुमान से अशुद्ध पाठलेखन पाठवर्द्धन और परिवतन कर दिया जाता है। पाठो की इन अशुद्धियो और प्रक्षेपो को उसकी अन्य प्राचीन और शुद्धतम हस्तलिखित प्रतियो से जाच करके उन अशुद्ध पाठो की तुलना मे किसी एक शुद्धतम आधार-प्रति के मूल पाठ के नीचे पाद टिप्पणी के रूप म पाठान्तरो का कालक्रम से सकलन करना मोटे रूप से पाठशोध कहलाता है। इस प्रक्रिया से सपूर्ण शुद्ध पाठ हमारे सामने आ जाय या उन पाठों म से कौनसा शुद्ध पाठ है यह कहना या पहचानना तो कठिन है पर यह सभावना की जा सकती है कि सकलित पाठातरों म से कोई पाठ, मूल पाठ के हो सकते है और कालान्तर म ग्रन्थ निर्माण के अति निकट काल की कोई अन्य शुद्धतम प्रति की प्राप्ति हो जाय तो पाठ का निर्णय करने मे बहुत अशो मे

सफलता प्राप्त की जा सकती है। जब तक ऐसी कोई प्रति नहीं मिलें, हमें सकलित पाठान्तरों के आधार से ही अपना विवेचन युक्त निर्णय करना रह जाता है।

**प्रतियों का वर्गीकरण —**

पाठ सकलन में प्रतियो का एक क्रम से वर्गीकरण करना आवश्यक होता है। एकत्र की हुई प्रतियो भिन्न-भिन्न भाषाई प्रदेशो की हैं और उन पर वहा की भाषा का प्रभाव वहा के लिपिको द्वारा उतरा हुआ प्रतीत हो तो उन्हे उन प्रादेशिक भाषाओ की शाखाओ के रूप मे विभक्त कर देना चाहिये, जिससे पाठान्तर छाटते समय पदच्छेद करने मे भाषा की दृष्टि से होने वाली कठिनाई कुछ कम हो जाय। शाखा विभाग के अन्तगत हो या उसके बिना ही कालक्रम विभाग तो मुख्य है ही। पर जिन प्रतिया मे लेखन काल का उल्लेख नही किया हुआ होता है उनका लेखन काल तत्कालीन लिपि, लेखनशैली, पाठान्तरो की परपरागत भाषा शैली, कालोल्लेख वाली प्रतियो के पाठान्तरो की समानता कागज की बनावट और उसकी स्थिति, स्याही इत्यादि बातो पर विचार करके अनुमान करना होता है। (हस्तलिखित प्रतियो के सम्बन्ध मे भी चित्रो और मूर्तियो की तरह ठगीका व्यापार चालू हो गया सुना जाता है। नवलिखित प्रतियो का पुरानी बताकर पुरानी प्रतियो के सामिल ग्रन्थालयो और विन्शी दूतालयो को अधिक मूल्य मे वेचकर साहित्यिक धोखे का धधा शुरू कर दिया है। प्राकृत और अपभ्रश काल की लखक शली से लिखकर उन्हे धूल, धुआ, नमी और पानी इत्यादि विक्रियाओ से जीर्ण-प्रतिजीर्ण बनाकर प्राचीन साहित्य के रूप मे बेचा जा रहा है। भारत के लीपिकों ने दीघ काल तक अपनी इस महत्व पूर्ण लेखन कला द्वारा भारतीय सस्कृति का उन्नत बनाये रखने म बडा योगदान दिया है। उसका महत्व अमुक सीमा तक आज भी बना हुआ है, पर आज उसमे भी इस सडाध के घुस जाने की बात को सुनकर बडा दुख होता है। साहित्य क्षेत्र मे यह प्रवृत्ति अवश्य निन्दनीय है।)

**प्रतियों का नामांकन —**

अपनी आधार प्रति के निमित्त पाठान्तरो को पाद टिप्पणी के रूप मे देने के लिए जिन-जिन प्रतियो का उपयोग किया जाय उन सभी प्रतियो के परिचय के सकेतों क रूप म ( १ २ ३, आदि) अकों की बजाय (अ,आ इ, आदि) एकाक्षर नाम सुविधा जनक रहते हैं। यह नाम क्रम प्राय कालोत्तर क्रम से रखा जाता है। इस एकाक्षर क्रम के साथ कभी कभी प्रति के स्वामी के नाम का सकेताक्षर भी लगा दिया जाता है।

**पाठशोध-पद्धति —**

पाठ शोध की मूलत एक ही पद्धति है जिसे साहित्यिक-पद्धति के सामने वज्ञानिक-पद्धति के नाम मे सबोधित किया जाता है। वज्ञानिक-पद्धति की अपेक्षा साहित्यिक-पद्धति थोडी सरल है। वज्ञानिक पद्धति मे

मक्खी की टाग को भी पाठान्तर मे स्थान देना जहा आवश्यक समझा जाता है वहा साहित्यिक पद्धति में ऐसा प्रतिबध नही समझा गया है । वैज्ञानिक-पद्धति मे पाठान्तर सामग्री का भारी अबार लग जाता है और वह मूल ग्रथ से भी बडा हो जाता है । पाठ के रूप ( पदच्छेद ) और शब्दार्थ पर ध्यान देकर पाठान्तरों को छाटने की ओर इस पद्धति मे प्राय ध्यान कम दिया हुआ रहता है, जिससे पाठ निर्णय मे बडी उलझनें खडी हो जाती है । साहित्यिक पद्धति मे वतनी के वे शब्द जिनके साधारण परिवर्तित रूपो से शब्दो के अर्थ और काव्य की मात्राओ म कोई अन्तर नही आता हो, पाठान्तर म दिये जाने की आवश्यकता नहीं समझी जाती । एक प्रति मे गाव शब्द है, दूसरी मे गाम है और तीसरी म ग्राम है । गाव के इन तीनो रूपा मे से मूल प्रति म इसका कोई भी रूप है तो अन्य सहायक प्रतियो के उक्त किसी भी पाठान्तर को देने की आवश्यकता नहीं रहती । इसी प्रकार ध्वनि,धुनि या धुनी इत्यादि शब्द है । बशर्ते कि ग्राम शब्द के आस पास किसी सगीत ग्राम का और धुनि के पास किसी तापस की धूनी का वर्णन न हो । ऐसे ही ह्रस्व दीर्घ मे भी पद्य की मात्राओ और शब्द के अर्थ परिवर्तन को ध्यान मे रखते हुए, कोई पाठान्तर नही दिया जाता । आवनौ के लिये आवनो और चावल के लिये चावल पाठान्तर की आवश्यकता नही रहती ।

इन दोना पद्धति के अतिरिक्त पाठ चयन पद्धति भी एक है जो वास्तव में साहित्य-पद्धति का ही एक भेद है । बहुतो ने इसे ही साहित्य-पद्धति माना है । चयन पद्धति का सम्पादन गहन विमर्श-सम्मत होना आवश्यक है । भाषा शैली, तत्कालीन भाषा परम्परा की स्थिति, पदच्छेद की सतर्कता, और प्रकरणानुमोदित शब्दो के अर्थ इत्यादि बातो पर बहुत बारीकी स विचारते हुए यथा प्रसग पाठ का चुनाव करना पडता है । चयन पद्धति म, अपढ लिपिको द्वारा अशुद्ध लिखे गये वतनी रूप और ह्रस्व दीर्घ मात्राओ को तत्कालीन भाषा परम्परा और काव्य की स्थिति के अनुसार पाठ-चयन के रूप मे मूल प्रति में ही सशोधन करके लिख दिया जाता है । किन्तु वतनी और मात्राओ को सुधारने मे यह ध्यान रखना भी अत्यन्त जरूरी होता है कि ककू (कुकुम जैसी सुन्दर वर्ण की कन्या) के बदले काकू (एकाक्षी और कुरूप कन्या) का पाणिग्रहण करवा देने के इतिहास की घटना को ही नहीं बदल दिया जाय । पाठ चयन पद्धति में सात्विक सूक्ष्म और तात्पर्यवृत्ति द्वारा प्रकरण क सभी सम्बन्धो और भावो को विशेष गहराई से सोचने की जरूरत रहती है । इस पद्धति का काम जहा अपनी पूर्णता या मौलिकता के विशेष निकट पहुचने का सरल प्रयास समझा जाता है, (जो कि वास्तव म सरल है नही) उतना ही यह सशयस्थ भी है । किन्तु सत्यनिष्ठा और परिश्रमपूर्वक किये गये काम में ऐसी भूलें यथा समव कम ही होने पाती है और उसमे मौलिकता अपने आप दृश्यमान हो जाती है ।

राजस्थानी ग्रन्थो के सम्पादन और उन पर लिखे जाने वाले शोध प्रबन्धों तथा उनके विवेचनों का देखने से ऐसा मालूम होता है कि इस विषय की ओर बहुत कम ध्यान देने से सम्पादन और विवेचन यथार्थ रूप म नही होने पाते । इस विषय पर कोई निबन्ध अथवा पुस्तक नही होने की कमी खटकती है । राजस्थानी साहित्य के विद्वानो से और विशेषकर राजस्थान के विद्वाना से सानुरोध निवेदन है कि व इस विषय पर विस्तृत प्रकाश डालें ।

अपभ्रंश तथा राजस्थानी के मध्यकालीन देवनागरी अक्षरा के कुछ रूप ऐसे होते हैं जिन्हे पढने में बडी कठिनाई अनुभव होती है और आज वे रूप प्रचलित नही है। ऐसे कुछ अक्षरो के रूप हिन्दी अक्षरो के साथ यहा दिये जा रहे हैं जिससे सम्पादको और शोधार्थिया को उन्हें पहिचाननें मे असुविधा न हो।

| इ | ॅ | ल | ल, ल ळ |
|---|---|---|---|
| ई | ॅ ई | कु | कु |
| उ | उ ज | के | ाक |
| ऊ | ऊ क्रु | कौ | ाको |
| ऋ | ऋ, ऋ | क्क | क्क |
| ए | प्रे प्र | क्ष | क्ष |
| औ | ाग्रो | च्छ | छ |
| क | क, क, क | र्ण | र्ण |
| ख | ष ख | त्त | त्त, त्र त्र |
| च | व व द | त्त | त्र |
| छ | छ छ छ छ | स्त | स्त |
| ज | ज ज | र्त्त | र्त्त |
| झ | झ | तु | तु |
| ड | ड | दु | दु |
| भ | न, स न | य | ख |

•

रिटायर्ड' यानी निवृत्त नहीं, 'रि-टायर्ड'-नये चक्के चढ़ाए हुए है। यानी काम करते-करते पुराने पहिये घिस गये, तो नये पहिये चढ़ाये हैं। अब गाडी और ताकत से दौडेगी। केवल बढकर पेंशन पानेवालों के बारे मे, जिसको पेंशन देना पडता हैं, उसके दिल मे शुभ कामना रहना मुश्किल है। कब यह खत्म हो और कब पेंशन देना बद हो, ऐसा विचार विशेषतया गरीब देश मे आना स्वाभाविक हो जाता है। लेकिन ऐसे आदमी वानप्रस्थ-वृत्ति धारण करके निष्काम भाव से अपनी शक्ति समाज को समर्पित करते हैं तो समाज उनकी दीर्घ आयु की कामना कर सकता है। —विनोबा

हरिमोहन मालवीय

# मिर्ज़ा राजा जयसिंह और महाकवि बिहारी

आमेर के कछवाहा राजाओं की प्रतापी परम्परा में संवत १६६८ वि० में मिर्जा राजा जयसिंह का जन्म हुआ था। उनके पराक्रम की गाथाओं के साथ ही काव्यानुराग के भी अनेक उदाहरण प्राप्त होते हैं। मिर्जा राजा को यदि नीतिनिपुणता, कूटनीति और शौर्य के कारण इतिहास याद करता है तो साहित्य में वे महाकवि बिहारी के संरक्षक के नाते चिरस्मरणीय बन गये हैं। लल्लूजी लाल ने निरर्थक ही लाल चन्द्रिका में बिहारी कवि का सम्बन्ध महाराजा सवाई जयसिंह से जोड़ा है, जबकि यह विख्यात है कि वे मिर्जा राजा के कृपा-पात्र कवि थे। बिहारी ने जयसिंह ( जयसाहि ) की आज्ञा से ही सतसई का प्रणयन किया था। जैसा कि इस छन्द में संकेत है —

> हुकुम पाइ जयसाहि को हरि राधिका प्रसाद।
> करी बिहारी सतसई भरी अनेक सवादि ॥ वि० र० ७१३

सतसई के लिखे जाने के सम्बन्ध में एक कथा प्रचलित है जिसके अनुसार एक समय महाराज जयसिंह रत्नाकरजी के अनुसार संवत १६९१ ९२ में ( ३५ दे० कविवर बिहारी पृ० ३२९ ) किसी नवोढ़ा रानी के प्रेम में निमग्न होने के कारण राज्य शासन से उदासीन होकर राजमहल में ही रहने लगे थे। राजा जयसिंह की चौहानी रानी अनन्त कुमारी अपने पति के इस व्यवहार से दुखी थी। बिहारी जब वर्षासन लेने के निमित्त आमेर गये, वहां उन्होंने चौहानी रानी के कहने पर महाराज जयसिंह के पास एक दोहा लिख कर भेजा —

> नहिं परागु नहिं मधुर मधु नहिं विकासु इहिं काल।
> अली कली ही सों बंध्यो आगे कौन हवाल ॥ ३८

इस अन्योक्ति गर्भित उपदेश से मिर्जा राजा जयसिंह को प्रबोध हुआ और उनका प्रेमोन्माद उतर गया। उन्होंने बिहारी के प्रत्येक छन्द पर मोहरें प्रदान की और चौहानी रानी ने भी प्रसन्न होकर काली पहाड़ी ग्राम बिहारी को प्रदान किया। ( ३६ दे० कविवर बिहारी पृ० ३२९ ) रत्नाकर जी ने इस घटना का काल १६९२ माना है। इस वृत्त के पूर्वार्ध में बिहारी की 'विहार' नामक एक अप्रामाणिक कृति के अनुसार

शाहजहा के पुत्रोत्सव के अवसर पर आए हुए नृपतिया से शाहजहा के द्वारा बिहारी का परिचय अन्य राजाओ के साथ ही जयसिंह से हुआ था ।

मिर्जा राजा जयसिंह के प्रतापी और सघपरत जीवन के साथ मधुर रसिक्ता से युक्त इस दोहे, 'नहि पराग नहि मधुर मधु के भाव बिहारी को सस्कृत और प्राकृत का य परम्परा से मिले थे और इस भाव के छद पूव और परवर्ती सस्कृत काव्य म विविध रूपो मे मिलते हैं । बिहारी ने अनेक दोहे की भाति ही इस दोहे को भी सस्कृत प्राकृत मुक्तको के भावरस से अनुप्राणित किया था । हाल की 'गाथा सप्तशती' के अलावा इसी भाव के मुक्तक गोवधनाचाय, कवियित्री विक्टनितबा तथा पडितराज जगन्नाथ के भी मिलते हैं । भाव साम्य को द्योतित करने वाले छद निदशनाथ प्रस्तुत हैं । 'गाथा सप्तशती' का छद है —

जावरण कास विकास पावइ इसी स मालई कलिआ ।
मअरन्द पाए लोहिल्ल भमर ताव च्चिअ मलेसि ।। ५-४४

'जब तक मालती-कलिका काप कुछ बढ नही जाता तब तक रसपान लोलुप भौंरे तुम मदन मात्र से ही सतोष कर रहे हो । तथा —

अविहत्तसधिबन्ध पठमसुम्भेअपाणलोहिल्लो ।
उव्वेलि उ ए जाणइ कलिआ मुह मारो ।। ७-१३

'कली के प्रथम मकरन्द रस का लोभी भ्रमर उसको अविकसित सधि वध ( मुह का जोड ) खण्डित कर रहा है उसे विकसित होने देना वह नही जानता ।'

गोवधनाचाय ने भी इसी भाव को 'आर्या सप्तशती मे लिखा है ।

पिव मधुर । बकुल कलिका दूरे रसनाग्रमात्रमाधाय ।
अधर विलेपसमाप्ये मधुनि मुग्धा वदनमपयसि ।। ३९७ ।।

'हे मधुप दूर से जिह्वाग्र भाग मात्र रखकर बकुल कली का रस पान करो । अधर सम्पक म ही समाप्त हो जाने योग्य ( अल्प ) मकरन्द पर व्यथ मुह न लगाओ, यह नायिका अत्यन्त सुरत क्लेश को न सह सकेगी ।'

कवियित्री विक्टनितवा का मुक्तक भी इसी प्रकार के भाव का आस्वादन कराता है —

अन्यासु तावदुपमदसहासु भृड गलोल विनोदय मन सुमनोलतासु ।
मुग्धाम जातरजस कलिकामकाले व्यथ कदथयसि किं नवमल्लिकाया ।।

'हे भ्रमर ! अपन चपल मन को उपमदन ( मसलना ) सहने मे समथ फूलो से लताओ मे बहलाओ । नव मल्लिका की मुग्धा कली का जिसमे अभी पराग नही आया हैं क्यो कष्ट दे रहे हो ?

बिहारी क समकालीन आचाय पण्डितराज जगन्नाथ की भी इसी भाव की उक्ति है जिसमे महाकवि ने कहा है —

यनामन्द मरन्दे दलदरविन्देदिनान्यनायिपत ।
कुटजे खलु लेने हा मधुकरेण कथम् ।। ११ ।।

जिसने अमन्द मकरन्द, वाले कमलो मे अपने दिन बिताए हैं उस मधुकर ने आहा कुरया के फूलो मे अपनी इच्छा की है, भला क्यो ?

बिहारी का छन्द भी इसी परम्परागत कथन की भित्ति पर है। इस आधार पर स्वत सिद्ध है कि लोक प्रचलित सतसई प्रणयन की प्रेरक कथा कपोल कल्पित एव सारहीन है। यह हो सकता है कि अपने काव्य का परिचय बिहारी ने सब प्रथम महाराज जयसिंह को इसी छन्द के माध्यम से दिया हो। वास्तव में बिहारी ने पूववर्ती रसिक काव्यकारो की कथन परम्परा मे अपना ही कथन जोडा था। लोक मानस प्रणय कथाओं मे विशेष आस्वाद लेता है। राजा और रानी की प्रणय-केलि के प्रति उत्कठा के कारण ही यह कथा प्रचलित हो गई और उसे हिन्दी के विद्वानों ने सत्य मान लिया जिसका कोई भी सामजस्य जयसिंह जैसे प्रतापी राजा के जीवन के साथ सभव नहा है।

महाकवी बिहारी ने जयसिंह के जीवन की कुछ घटनाओ पर बिहारी सतसई के अन्तिम तीन दोहों में प्रकाश डाला है जिसमे बलख की चढाई मुख्य है।

बिहारी ने जयसिंह द्वारा सेना को बलख से निकाल लाने की सराहना विशेष रूप से की है। इसका कारण यह था कि भारत जैस गरम मुल्क के सनिक यहा की सर्दी के मारे परेशान थे। मुगल इतिहासकार ने लिखा है कि जो घर से बाहर निकलते, वह ठडे होकर मर जाते और जो भीतर रहते, वह अपने को गरम करने क लिए आग के सामने भुनसते रहते। भारतीय सेना ने इसम शक नहीं हिन्द को पार करके इस इलाके को बहुत बरबाद कर दिया, जिसके कारण बलख मे अकाल पड गया। १०६० हि० ४ जनवरी, १६५० ई० से १५ नवम्बर, १६५० ई० के जाडों मे खरवार-गदहे का बोझ अनाज का दाम, हजार फ्लोरिन (रुपये) था। जाडा बहुत ही सख्त था। अन्त मे जब हिन्दू सेना को लौटने के लिए मजबूर होना पडा तो एक ओर हिन्दुकुश के ऊचे दर्रों की सर्दी ने भारी सख्या मे बलि लेनी शुरू की और दूसरी ओर उजबेक सनिको ने उन्हे गिद्ध की तरह नोचना शुरु किया। हजारो की सख्या म लाग रास्ते म मर गए। अगले साल तारीख मुकीम खानी का लेखक जब दूत बनकर इसी रास्ते से भारत की ओर आ रहा था तो उसने देख सब जगह भारतीयो के ककालों के ढेर देखे। ४२९ रत्नाकर जी ने भी इसी प्रकार की दुस्थिति की आर इगित किया है। इस घटना स सम्बधित बिहारी के तीन दोहे सतसई के अन्त मे मिलते हैं —

> सामा सेन सयान की सबै साहि क साथ।
> बाहुबली जयसाहि जू, फते तिहार हाथ ॥ ७१० ॥
> यौं दल काढे बलक तैं तैं जयसिंह भुवाल।
> उदर अघासुर क परै ज्यौं हरि गाइ गुवाल ॥ ७११ ॥
> घर घर तुरकिनि हिंदुनी देति असीस सराहि।
> पतिनु राखि चादर चुरी तै राखी जयसाहि ॥ ७१२ ॥

सतसई के रचनाकाल के निर्धारण की समस्या साहित्यकारों के सामने रही है इसका निर्धारण भी जयसिंह के जीवन की घटनाओं के आधार पर सम्भव है। रत्नाकर जी के बलख की घटना के वर्णन के आधार पर सतसई का रचनाकाल सवत १७०४ के जाडे की ऋतु माना है। (कविवर बिहारी पृ० ३७८) किन्तु अब्दुलरज्जाक लिखित मैआसिरूल उमरा मे जयसिह का जो वृत्त मिलता है उसके अनुसार मिर्जा राजा की पदवी पाने के बाद जयसिंह को सवत् अनेक जिम्मेदारिया दी गई जिनका विवरण इस प्रकार है —

१४ वें वर्ष सन १६४० ई० मे सवत १६९७ मुराद बख्श के साथ काबुल म नियुक्त हुए। १५ वर्ष मऊ दुर्ग विजय और कधार मे नियुक्त हुए। १६ वें वर्ष देश चले गए। १६४४ ई० मे पुन दक्षिण गए। और २० वें वर्ष लौटे। इसी वर्ष औरगजब के साथ बलख की चढाई पर गए। २२ वें वर्ष कधार की लडाई में सम्मिलित हुए। २३ वर्ष दरबार मे आये और वर्ष के अत मे देश जाने का अवकाश लेकर चले। माग मे कामा पहाडियो के विद्रोहियो को दण्ड देन के लिए नियुक्त हुए और २५ वें वर्ष अर्थात १७०८ मे औरगजेब के साथ कधार की चढाई म हरावल के अध्यक्ष बनाए गये।

इसके अनुसार सवत् १७०६ के अन्त तथा स० १७०७ मे जयसिंह आमेर म रहे और बलख के युद्ध का विशेष विवरण उसी समय वहा के लोगो का मिला होगा इस आधार पर बिहारी द्वारा इसी समय सतसई को पूर्ण करने की सम्भावना युक्ति सगत है। सवत् १७०४ के जाडो मे सकल्पित सतसई पूरी करने (वही) की बात रत्नाकर जी ने कही है वह शुद्ध नही है। वास्तव मे सवत १७०७ मे ही सतसई की रचना पूर्ण हुई थी।

जयसिंह की दानशीलता

बिहारी सतसई मे बिहारी ने जयसिंह के गुणो एव उनके व्यक्तित्व के विविध पक्षो को अपने मुक्तकों का विषय बनाया था। ऐसे छन्द अल्प हैं किन्तु फिर भी जो कुछ प्रशस्तिया बिहारी ने की है उनम जयसिंह का अति उदात्त रूप प्रकट होता है। जयसिंह के हृदय मे बिहारी के प्रति आदर का भाव था। कृष्णदत्त कवि ने अपनी बिहारी सतसई की टीका मे लिखा है कि जयसिंह बिहारी को आदर और प्रेम की दृष्टि से देखते थे। बिहारी के सम्मान मे महाराजा ने लाखो रुपये भी दिये थे।

रघुवशी राजा प्रकट पुहमि धर्म अवतार।
विक्रम निधि जयसाहि रिपु दण्ड विहण्डन हार ॥
सुकवि बिहारी दास सौं तिन कीन्हों अति प्यार ॥
बहुत भाति सनमान करि दीन्ही लक्षि अपार ॥

बिहारी ने भी जयसिंह की दानशीलता के सम्बन्ध मे लिखा है —

चलत पाइ निगुनी गुनी धनु मनि मुत्तिय माल।
भेंट होत जयसाहि सौं भागु चाहियातु माल ॥ १५६ ॥

'मूख और पण्डित क्या सभी धन, मणि और मोतियो की माला लेकर जाते हैं, केवल जयसिंह से मिलने का भाग्य ही चाहिये।'

बिहारी ने जयसिंह को युद्धवीर और दानवीर दोनो लिखा है —

रहतिन रन जयसाहि मुखु लखि लाखनु की फौज।
जाचि निराखरऊ चलै लै लाखनु की मौज ॥ ८० ॥

'लाखों की सेना भी रण मे जयसिंह के सम्मुख नही टिक पाती और निरक्षर याचक भी लाखो का दान पाकर आनंदित होकर चल देता है। रत्नाकर जी ने लाखनु का अर्थ लाखन नामक व्यक्ति कल्पित किया है किन्तु यहा लाखनु का अर्थ सख्या मूलक ही है।

जयसिंह का व्यक्तित्व

बिहारी ने आमेर किले के शीश महल के बीच जयसिंह के प्रतिभाशाली व्यक्तित्व को सहस्त्र बिंबो के बीच देखा था, शीश महल की दीवारा पर जयसिंह का प्रतिबिम्ब इस प्रकार पड रहा था मानो समस्त संसार की विजय के लिये कामदेव ने काय व्यूह की रचना की हो।

प्रतिबिम्बित जयसाहि दुति दीपति दरपन धाम।
सब जगु जीतन को करयो काय व्यूह मनु काम ॥

आज भी आमेर किले मे स्थित शीशमहल के जडे हुए धुधले दपण के टुकडा मे मानवाकृति को सहस्त्र रूपा देखकर पर्यटक बिहारी द्वारा खीचे गए जयसिंह के कान्तिमय व्यक्तित्व की झलक पा लेता है।

मिर्जा राजा जयसिंह की छाया मे महाकवि बिहारी कब तक साथ साथ रहे इसका इतिहास अनात हैं। महाकवि के जीवन की घटनाओं के सम्बन्ध मे पुष्ट एव ऐतिहासिक तथ्यो का नितान्त अभाव है। जो कुछ जीवन चरित्र के रूप मे प्रचलित है वह भी अप्रामाणिक है। इतना सब होते हुए भी बिहारी ने अपने मुक्तकों मे जयसिंह का स्मरण करके तथा मिर्जा राजा जयसिंह ने अपना राजकीय सरक्षण प्रदान करके बिहारी सतसई सदृश सरस छोटी कृति को प्रस्तुत कराने का योग उत्पन्न किया था जो अकेली कृति व्रज भाषा काव्य की सिरमौर आज तक बनी हुई है।●

जमनालालजी मेरी कामधेनु थे। —महात्मा गान्धी

# गीत

देश के सैनिको। देश के हलधरो। देश के लेखको।
प्रण करो हम विजय के ग्रमर छद को।
रक्त के ग्रक्षरो से लिखे जायगे।।
ग्राज हिम गिरि बुलाता हमारा हमे
ग्राज मरुधर ने ग्रावाज दी है उठो।
पचनद ने हृदय से पुकारा हमे
ग्राज केसर के ग्रावाज दी है उठो॥
शत्रु के वक्ष पर गाड दो निज ध्वजा
देश के सनिको। दश के हलधरो। दश के बुन करो।
प्रण करो ग्रब विजय की ध्वजा को सदा
सांस के तार से हम बुने जायगे।।
गोद जो लुट गई वह शपथ दे रही
दूध की ग्रान को सब निभाते चलो।
माग जो लुट चुकी वह शपथ दे रही
शान सिंदूर की सब बढाते चलो।।
युद्ध के देवता को नये शीश दो
देश के सैनिको। देश के हलधरो। देश के याज्ञिको।
प्रण करो हम विजय के नये यज्ञ मे
प्राण को होमते ही चने जायेंगे।।
टूट पावे किसी के खिलौने नही
मिट न पावें कभी प्रेम की पातियाँ।
तान टूटे नही लोरियों की कभी
लुट न पाये बहिन की कभी राखियाँ।।
युद्ध करना पडेगा उठो शस्त्र लो
देश के सनिको। देश के हलधरो। देश के शिल्पिको।
प्रण करो हम विजय के ग्रमोघास्त्र को
वज्र की ग्रस्थियो से रचे जायगे।।
ग्रादमी के सुनहरे सपन के लिए।
सभ्यता के महकते चमक के लिए।।
इस घरा के लिए इस गगन के लिए।
बस ग्रमन के लिए बस ग्रमन के लिए।।
नव सृजन के लिए, एक ग्रावाज दो
देश के सनिको। देश के हलधरो। देश के रह बरो।
प्रण करो हम विजय के नये तीथ पर
ग्रादमी के लिए ही जिये जायगे।।

# पुण्य स्मरण

# ठाकुर केसरीसिंह बारहठ

ठा० केसरीसिह जी वतमान शताब्दि के आरम्भ मे हुए । ये राजस्थान के प्रसिद्ध राजनतिक क्रातिकारी थे । इनके पिता ठा० कृष्णसिहजी शाहपुरा राजाधिराज के पोलपात्र और मेवाड नरेश के कृपापात्र थे । व हिन्दी, डिंगल और सस्कृत के गहन विद्वान थे । शास्त्रो मे उनकी इतनी अच्छी गति थी कि जब महर्षि स्वामी दयानन्द महाराज का चित्तौड मे भाषण हुआ तो उसकी अध्यक्षता कृष्णसिंह जी ने की थी । बूदी के प्रसिद्ध कवि और इतिहासकार सूरजमल जी मिश्रण के लिखे हुए काव्यात्मक इतिहास वशभास्कर' की ठा० कृष्णसिह जी ने बडी अच्छी टीका की है । कृष्णसिह जी के तीन पुत्र थे—केसरीसिंह, किशोरसिंह और जोरावरसिंह । इनमे केसरीसिह सस्कृत, ज्योतिष, वेदान्त और राजनीति के अच्छे विद्वा थे । किशोरसिंह की इतिहास और राजनीति मे बडी अच्छी गति थी, जोरावरसिंह अधिक विद्वान नही थे । परतु उनमे उत्कट देशप्रेम और देशाभिमान था । इन तीनों मे सर्वाधिक प्रसिद्धि अपने विचार सम्पक और कार्यों के कारण ठा० केसरीसिह की ही हुई । केसरीसिह जी शाहपुरा के जागीरदार थे । इनकी आय लगभग १२ हजार रुपये वार्षिक थी । परन्तु इनका झुकाव राजनीतिक क्रान्ति की ओर था । जयपुर के अर्जुनलाल सेठी, खरवा के राव गोपालसिंह जी और विजयसिंह पथिक आदि क्रान्तिकारी इनके घनिष्ठ साथी थे । साथ ही, स्व० कर्नल प्रतापसिंह, सीतापुर के महाराजा रामसिंह महाराणा फतेहसिंह और कोटे के महाराव उम्मेदसिंह की भी उन पर बडी कृपा थी ।

सन् १९१२ के लगभग अर्जुनलाल सेठी के मकान की तलाशी हुई जिसमे खुफिया पुलिस को दो पत्र ऐसे मिले जिनका अर्थ स्पष्ट नही था और उनकी भाषा सांकेतिक थी । इसकी टोह मे खुफिया पुलिस के एक अफसर श्री धर्मसिंह को लगाया गया । इस पत्र मे लिखा था कि पुराना आटा मछलियों को डाल दिया जाय। ठा० केसरीसिह के एक मित्र श्री रामकरण थे जो मारवाड मे कहीं के रहने वाले थे । इनकी बहन का नाम प्रभावती था । वह भी क्रांतिकारी विचारो की थी । एक बार धर्मसिंह ने रामकरण और प्रभावती को २३ अन्य लोगों की मण्डली में बात करते हुए देखा । धर्मसिंह ने उस समय हिन्दू साधू का भेष बना रखा था । प्रभावती ने अपने भाई रामकरण से कहा कि मछलियां आटा खाकर मोटी हो गई होंगी । इन शब्दो के आधार पर धर्मसिंह को विश्वास हो गया कि उक्त पत्र का इस वाक्य से सम्बन्ध है और यह किसी षडयन्त्र

का समझने की कुंजी है। रामकरण को गिरफ्तार कराया और फिर इस सिलसिले मे ठा० केसरीसिंह, राम करण, लाहेरी, हीरालाल जालोरी, लक्ष्मीलाल भटनागर आदि कई व्यक्तियो को गिरफ्तार किया गया और पुलिस ने यह मुकदमा बनाया कि एक धनवान साधु को, जिसका नाम प्यार राम था, जोधपुर से इस बहाने लाया गया कि बद्रीनारायण की यात्रा की जाय और माग म कोटा के एक मकान म ठहराया गया जिसकी कुंजी ठा० केसरीसिंह के पास रहा करती थी। यह मकान उस समय एक राजपूत बोडिंग हाउम था जिसकी कायकारिणी के अध्यक्ष स्व० मेजर जनरल सर ओकारसिंह थ। जब प्यारेराम साधु को लाया गया तो स्कूलो मे गर्मियो की छुट्टिया थी और राजपूत बोडिंग हाऊस बन्द था। पुलिस ने यह आरोप लगाया कि प्यारेराम को बोडिंग हाऊस म ठहराकर कत्ल किया गया जिसमे ठा० केसरीसिंह लाहेरी, रामकरण, हीरालाल जालोरी और लक्ष्मीलाल शामिल थ। इसी मामले मे डा० गुरुदत्त, प० कृष्णगोपाल और एक बल्लू मोची को भी उलझाया गया। मुकदमे की सुनवाई ८-१० महिने तक हुई। उस समय कोटा, खुफिया पुलिस के उच्च कमचारियो का केन्द्र सा बना और सारे नगर मे त्रास सा बना रहता था कि क्या जाने किस की तलाशी हो जाय। खुफिया पुलिस के कई लोग साधु का भेष बनाकर नगर म घूमा करते थे। ये लोग ठा० केसरीसिंह जी और उनके साथियो की गतिविधियो को बडी सूक्ष्मता और सतकता से देखा करते थे।

पुलिस ने इस्तगासा म सिद्ध किया कि धनवान साधु प्यारेराम को उपयुक्त क्रांतिकारी लोग कोटे तक लाये। परन्तु उसके बाद उसका कही पता नही लगा। इसके आधार पर अदालत ने यह मान लिया कि प्यारे राम का कोटे मे कत्ल हुआ और ठा० केसरीसिंह लाहेरी, रामकरण और हीरालाल को कारावास का दड दिया गया। प्रथम तीन व्यक्तियो को २० २०वर्ष और हीरालाल जालोरी को ७ वर्ष की कद की सजा दी गई। लक्ष्मीलाल को इसलिए क्षमा कर दिया गया कि वह सरकारी गवाह बन गया था। ठा० गुरुदत्त, प० कृष्णगोपाल और बल्लू मोची को रिहा कर दिया गया उनको प्रमान के लिए पर्याप्त सामग्री नही थी और जो कुछ आरोप लगाए गए थे उसको अदालत ने पर्याप्त नही माना।

ठा० केसरीसिंह, रामकरण और लाहेरी कोटा राज्य की सेन्ट्रल जेल मे रखे गए जहा ठा० केसरीसिंह जी से मिलने के लिए कोटे के बडे म बडे लोग जाया करते थे। इसकी सूचना पालिटिकल डिपाटमट को मिलती ही रहती थी। इसलिए पोलिटिकल एजेन्ट ने कोटा नरेश पर यह दबाव डाला कि ठा० केसरीसिंह को बाहर ब्रिटिशभारत की किसी जेल मे भेज दिया जाय और इसका खर्चा कोटा राज्य वहन करे। इसके अनुसार उनको हजारीबाग जेल मे रखा गया। वहा के अध्यक्ष ले० कनल मीक नामक एक अंग्रेज सज्जन सनिक थे जिनकी पत्नी को संस्कृत मे रुचि थी। इनके साथ ठा० केसरीसिंह जी का निकटतर परिचय हो गया। इससे पहले हजारीबाग जेल में ठा० केसरीसिंह को अनेक यातनाए भोगनी पडी। जेल मे एक दिन बहुत से कन्दी मिल कर दाल की सफाई कर रहे थे। वहा सयोगवश कनल मीक ने देखा कि ठा० केसरीसिंह ने दाल से भारतवष का नक्शा बना रखा है और कदियो को राजनीतिक भूगोल सिखा रहे हैं। उन्होने यह भी देखा कि दाल के द्वारा वे अक्षर ज्ञान भी करवा रहे थे। इस क्षमता से प्रभावित होकर उन्होने ठा० केसरीसिंह जी से बातचीत की तो उन्हें पता लगा कि व संस्कृत के बडे पडित थे।

उसी दिन से कर्नल मौर, ठा० केसरीसिंह जी के साथ भद्र व्यवहार करने लगे और जब ठा० केसरीसिंह ने बिहार राज्य के मार्फत केन्द्रीय सरकार को अपने कारावास के विरुद्ध अपील की तो कर्नल मौर ने उन्हें सब प्रकार की उचित सहायता दी जिसके फलस्वरूप और सन् १९१९ की राजनीतिक सुधार घोषणा के कारण ठा० केसरीसिंह भारत सरकार की आज्ञा से हजारीबाग जेल से मुक्त कर दिये गये ।

जिन दिनों ठा० केसरीसिंह हजारीबाग जेल में थे उनके ज्येष्ठ पुत्र प्रतापसिंह को बम निर्माण के अपराध में पकड़ कर बरेली जेल में रखा गया था और वहीं पर उनका देहान्त हुआ । जब ठा० केसरीसिंह कारावास से मुक्त हो कर कोटा आये तब स्टेशन से अपने मकान के लिये रवाना होते समय डा० गुरुदत्त ने उनसे पूछा कि आपको प्रताप के देहावसान की सूचना कब मिली तो केसरीसिंह जी ने अदभुत धैर्य के साथ उत्तर दिया कि अभी आप से ही मिली है ।

जेल से वापिस आने पर उनके लिए कोटा नरेश महाराव उम्मेदसिंह जी ने एक बड़ी अच्छी कोठी बनवा दी जिसमें वे आजीवन निवास करते रहे और उसमें ही उनका देहान्त हुआ । ठा० केसरीसिंह जी डिंगल भाषा के बड़े अच्छे कवि थे लेकिन रचना बहुत कम करते थे । १९१२ के दिल्ली दरबार में जब महाराणा उदयपुर उपस्थित होने के लिए रवाना हुए तो केसरीसिंह जी ने उनको बड़े मर्मस्पर्शी सोरठे लिख कर भेजे थे जिनमें उन्हें अपने पूर्व गौरव और कुलक्रमानुगत देशाभिमान का स्मरण दिलाया गया था । इसके फलस्वरूप महाराणा फतेहसिंह जी दिल्ली दरबार में उपस्थित नहीं हुए ।

ठा० केसरीसिंह जी ने अपनी कोठी के द्वार पर एक शिलालेख लगाया था जिसमें उन्हीं की रचना में उनकी संक्षिप्त जीवनी दी हुई है । एक सोरठा है—विपदा घन घिर घिर घुटे, छूटे सकल परिवार, धन वैभव सारे लुटे आदि ।

शाहपुरा राजाधिराज ने केसरीसिंह जी की जागीर और हवेली जब्त कर ली थी और उनका बहुमूल्य पुस्तकालय भी छिन्न भिन्न हो गया था । उसमें से बचे हुए कुछ दुर्लभ ग्रंथ उनके छोटे पुत्र ठा० रणजीत सिंह के पास अब भी विद्यमान होंगे । लेखक ने लगभग २० वर्ष पहले इस संग्रह का अवलोकन किया था । इसमें केसरीसिंह जी के विद्वान पिता ठा० कृष्णसिंह जी का लिखा हुआ राजस्थान का २० वर्ष का बड़ा रोचक और निर्भीक इतिहास भी है ।

ठा०केसरीसिंह अंग्रेजी तो नाममात्र की जानते थे परन्तु आधुनिक राजनीतिक प्रगतियों से वे पूर्णतया परिचित थे । उनकी बोलचाल की भाषा बड़ी परिमार्जित और संतुलित होती थी । किसी विषय की गहनता में घुसने की उनमें क्षमता थी । किसी भी स्थिति में उनका संतुलन नहीं बिगड़ता । उनका रहन-सहन अत्यन्त सादा था और प्रकृति तथा स्वभाव बड़ा स्नेहशील था । उनका परिचय भी बड़ा विस्तृत था । जेल से छूटने के बाद वे सीधे देशबन्धु चितरंजनदास के पास गये और वहीं ठहरे थे । लोकमान्य तिलक के देहान्त की सूचना उन्हें तार द्वारा दादा साहब खापरडे ने भेजी थी । पुरुषोत्तमदास टंडन के वे घनिष्ठ मित्र थे । अपने मन पर उनका इतना काबू था कि प्राणान्त के दस मिनट पहले तक वे बातचीत कर रहे थे । उस समय भी उनका संतुलन पूर्ववत बना हुआ था और मुखमुद्रा पर किसी प्रकार की विकृति नहीं थी ।

ठाकुर केसरीसिंह बारहठ

घनश्यामदास बिड़ला

# सरदार पटेल

स्व० सरदार पटेल ने अनेक बड़े काम किये। खेडा के सत्याग्रह में उन्हें सरदार की पदवी जनता से मिली। बापू के विश्वास पात्र और स्नेहभाजन बने जवाहरलाल जी को भी अनेक गम्भीर स्थलो पर सम्भाला, सहारा दिया। जवाहरलाल जी और सरदार भारत की दो आखें थी। यह हमारा सौभाग्य ही था कि दोनो आखें मिलकर एक ही लक्ष्य को देखती थी। स्वतन्त्रता के बाद हिन्दुस्तान को सही माने मे एक सूत्र मे बाधा ऐसे हम सबके सरदार कैसे निर्लिप्त थे—यह नीचे लिखे लेख से स्पष्ट हो जाता है। निष्काम कर्म का इससे बढिया उदाहरण और क्या हो सकता है।

वृहत राजस्थान के तो सरदार जनक ही थे। युगो तक राजस्थान की जनता उन्हें सराहेगी और ऋणी रहेगी। जिन सरदार ने भारत के करोडो दुबल, दलित और गुलाम का सा जीवन बिताते, असहाय मनुष्यो को स्वातन्त्र्य का स्वाद चखाया, उनका जीता-जागता चित्र मैं यहा दे रहा हूँ।

शारीरिक भोगो का त्याग कइयो ने किया। कइयो के पास भोग की सामग्री ही नही थी, फिर भी बिना त्याग किये ही त्यागी कहलाये। पर सरदार ने सचमुच मे त्यागा, क्योकि बरिस्टरी पास करके उन्होने सग्रह किया, अग्रेजी ठाठ का उन्होने जीवन-क्रम चलाया, बच्चो को पादरियो की स्कूल म भेजकर विद्यारभ कराया, पैसे बचाये और फिर त्यागा। त्यागा तो ऐसा कि फिर मुह मोडकर नही देखा।

राज सत्ता आई, तो भी उनकी जीवन-शैली मे कोई फर्क नहीं पडा। वही सादा जीवन वही रहन सहन, वही खान-पान और वही वेश-भूषा।

सरदार गाधीजी के दृढतम अनुयायी थे। आत्म-सयम के विषय म तो और भी अधिक। "लौह-पुरुष" कहलाते थे, पर उनकी इस ओढी हुई कठोरता के नीचे कोमलता और उदारता की अपरिमित राशि छिपी थी। वे स्वतन्त्र विचार के व्यक्ति थे, तभी हर मामले म, चाहे वह राजनैतिक हो या सामाजिक वे अपने गुरु के चरण-चिन्हो पर ही चलते थे। व्यक्तिगत तौर पर अकेले मे, वे उनसे झगड लेते थे, किन्तु बाहर सदैव उनका अनुकरण ही करते थे। गाधीजी की मृत्यु के बाद सरदार हृदय रोग से पीडित हो गये। गाधीजी की मृत्यु से उनके हृदय को बडा तीव्र आघात लगा था। कोई साधारण मनुष्य होता तो

शोक के आवेग का राकर हल्का कर लेता, किन्तु सरदार ने शोक को प्रकट नहा होने दिया। फलत यह उनके हृदय मे समाकर रह गया।

१९४५ की जाडे की बात है। दिल्ली म कडाके की सर्दी पडती थी मरदार राज प्रकरण को लेकर दिल्ली आये थे। रात का हम लोग रोज कमरा बन्द करके अगीठी जलाकर तापते थे। सरदार को इसी कारण हम लोगा पर तरस आता था। क्योकि वे स्वय तो एक खादी का कुर्ता और एक गम जाकेट से ही कडाके की सर्दी का सामना कर लेते थे। मणीबेन की आवश्यकता तो इससे भी कम थी। खादी की मोटी साडी और सफेद जाकेट यही उनके लिये पर्याप्त था, चाहे कैसा ही हडकप जाडा क्यो न पड रहा हो। काम करती ही रहती थी।

मणिबेन के प्रति सरदार का वात्सल्य मूक था। मणिबेन एक बार बीमार पडी तो सरदार की जबान का ताला टूट गया—'यह मरी, तो मैं मरा ' पर व तो पहले ही चल दिये।

मृत्यु-शैय्या पर पडे-पडे वे गुन-गुनाते रहते थे—"मगल मदिर खोलो दयामय।" पिता-पुत्री का मौन जारी रहा, सरदार ने कभी पुत्री से नही कहा, मैं अब जाऊँगा, और तुम्हे यह करना है। और न मणि-बहन ने पूछा, 'तुम्हारा कोई आदेश है क्या ?' दोनो ही ईश्वरवादी ठहरे, इसलिये भविष्य भगवान को सौंपकर निश्चित रहा करते थे।

सरदार १९४९ के जाडे मे दिल्ली आये और १९५० के जाडे मे दिल्ली से उन्होने अन्तिम विदा ली। वे जानते थे कि यह अन्तिम विदा है। प्लेन के दरवाजे के पास कुर्सी पर बैठे मुस्कुराकर वे सब से विदा ले रहे थे। उनका वह चेहरा भूल नहीं सकता। शरीर अत्यन्त दुर्बल और नितान्त अशक्त हो गया था। चेहरा पीला पड गया था। पेट म असह्य पीडा थी पर वे मन को कडा करके कुर्सी पर बठे बैठे मखौल करते जाते थे और हस हसकर अन्तिम विदा ले रहे थे। बम्बई पहुँचकर सरदार केवल तीन दिन जिन्दा रहे। मगल मन्दिर के द्वार खुल गये थे।

सरदार की मृत्यु के बाद मित्रो ने कहा,' सरदार का दाह चौपाटी पर होना चाहिए' तो मणिबेन ने कहा, मेरी दादी सोनापुर गई, बम्बई का हर गरीब सोनापुर जाता है, मेरा बाप भी और कहा जायगा' ? फिर भी मित्रो ने आग्रह किया, पर मणिबेन अचल रही। आखिर दाह चौपाटी म न होकर सोनापुर में ही हुआ।●

# जमनालाल जी

शायद सन् १६१७ की बात है। जमनालालजी कुछ मित्रो के साथ कलकत्ते के बोटेनिकल बाग म घूमने गये। वहा साइकल की दौड लगाने की बात चली तो जमनालालजी सब से पहले तयार। लोगों ने कहा, 'आप इतने माटे आदमी हैं, साइकिल से गिर पडेगें। वह बोले 'मैं तो देहाती ठहरा। वहा तुम्हारे कलकत्ते जसी मोटरें थोडे ही हैं। जल्दी का काम हाता है, तो साइकिल ही काम आती है। खर साहब, जमनालालजी साइकिल पर चढे। कई लोग जो अपने को साइकिल मे बडा तेज मानते थे उनम भी जमनालालजी मीर निकले। परन्तु अन्त मे एक मोटर साम ने आगई और वह सम्भल नही सके, गिर पडे। सब सहम गये। उन्होने समझा मोटर का धक्का लगा है मगर जमनालालजी तुरत खडे हुए और बाले कुछ नही हुआ। लेकिन दाहिनी घुटने से बराबर खून बह रहा था। ज्यो त्यो पोछ पाँछ कर घर आये।

दर्द सख्त था, लेकिन मुह से कहते नही थे। डाक्टर को बुलाया गया उसने कहा, 'चोट मामूली नही है'। तब उस समय के सब से बडे डा० सुरेश सर्वाधिकारी को बुलाया गया। उन्होंने कहा, मास के भीतर ककर घुस गये हैं, आपरेशन करना पडेगा। आपरेशन के लिये क्लोरोफाम भी देना पडेगा। जमनालालजी न कहा, इसकी क्या जरूरत है?' डाक्टर बोला, बिना क्लोरोफाम के आपरेशन नही हो सकता'। जमनालालजी ने कहा, 'अच्छी बात है, आप क्लोरोफॉम का इन्तजाम रखिये और ऑपरेशन बगर क्लारोफाम के शुरू कर दीजिये। अगर मैं न सह सका तो बेशक क्लोरोफाम दीजिये। डाक्टर को यह बात पसद तो नही आई पर उसने सोचा—यह अपने आप ही क्लोरोफाम मागने लगेंगे, इतना दद सहना कोई हँसी खेल थोडे ही है।

बिना क्लोरोफाम के ऑपरेशन शुरू हुआ। आपरेशन के वक्त मास के अन्दर से डाक्टर ककर को चिमटे से खीच कर निकालता था उस दृश्य को देखना भी मुश्किल था। लेकिन जमनालालजी ने चू भी न किया। डाक्टर दग रह गया, बोला, ऐसा सहने वाला आदमी आज तक नही देखा। ऐसी थी जमनालालजी की सहन शक्ति और धीरज।

ऐसा ही एक और प्रसग है। जयपुर मे जब वह नजर बन्द मे थे, तो उनके पर म दद हुआ। उसपर बिजली का इलाज किया गया। डाक्टर ने कहा, मैं बिजली का प्रवाह तेज करता जाऊगा, यदि आप थोडा

बर्दाश्त कर सकें तो असर अच्छा होगा'। डाक्टर प्रवाह बढाता ही गया, पैर जलता रहा यहा तक कि घाव हो गया, तब डाक्टर को पता चला कि इनका पैर ही जल गया मगर जमनालालजी बदाश्त करते ही रहे।

जमनालालजी से पहले पहल मैं उस आपरेशन के वक्त ही मिला था। उस समय उनकी उम्र कुल २७ साल की था पर इसके पहले ही वे कई सावजनिक काय शुरू कर चुके थे और देश के अच्छे से अच्छे लोगो के सपर्क म आ चुके थे। जहा कही व जाते बराबर यह कोशीश करते कि किसी कार्यकर्ता से परिचय हो जाय, कोई नया कार्यकर्ता तैयार हो जाय। शाम को उनके पास कलकत्ते के मारवाडी नवयुवको का जमघट लगता और अन्य लोग भी आते जिनमे थी अम्बिकाप्रसाद बाजपेयी, स्व० जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी आदि प्रमुख थे। समाज सुधार और राजनतिक विषयो पर बात चीत होती रहती।

थोडे ही दिनो बाद, १९१७ म बडे दिनो की छुट्टियो म, श्रीमती एनी बसेन्ट की अध्यक्षता म कांग्रेस का अठ्ठाईसवा अधिवेशन हुआ। उसम कर्मवीर गांधी भी आने वाले थे। लोकमान्य के नाम की धूम थी। गाधीजी तो जमनालालजी के अतिथि थे ही। उन दिनो वे काठियावाडी वेशभूषा म रहते थ। वही बलदार पगडी और लम्बा अगरखा, लकिन जूते नदारद। हम लोगो को जमनालालजी ने गाधीजी से मिलाया। वसे तो वहा का सारा काम हमी लोगो के जिम्मे था। उस समय जिन्होने जमनालालजी को गाधीजी का आतिथ्य करते देखा है, उन्हें याद है कि उस समय भी गाधीजी के साथ उनका सम्बन्ध कितना गहरा था और उन्हें गाधीजी के प्रति कितनी गहरी श्रद्धा थी। बाद मे तो गाधीजी महात्मा बन गय और सारे देश के बापू बन गय। जमनालालजी की विशेषता यह थी कि उन्होंने गाधीजी को पहले ही पहचान लिया था और वह अपने को उन्हें सौंप चुके थे।

सन् १९२० मे लाला लाजपत राय के सभापतित्व मे कांग्रेस का विशेष अधिवेशन हुआ जिसमे गाँधी जी ने असहयोग का प्रस्ताव पेश किया। कांग्रेस के सभी पुराने महारथियो ने उसका विरोध करने पर भी जमनालालजी गाधीजी के साथ थे। उनके कारण बड़ेबजार के सभी वोट गाधीजी के पक्ष मे पडे। उन दिनों आजकल की तरह प्रतिनिधियो का चुनाव तो होता ही नही था। हम लोग बहुत बडी सख्या मे प्रतिनिधि बन गय। और यही मानते रहे कि हमारे वोटों की बदौलत ही महात्माजी की जीत हुई। बगाल के मुख्य नेता देश बन्धु चितरजनदास विपिनचन्द्र पाल, व्योमकेश चक्रवर्ती, सर श्याम सुन्दर, तथा महामना मालवीय जी महाराज और अन्य सभी धुरन्धर नेताओं ने गाधीजी के प्रस्ताव का घोर विरोध किया था। प्रस्ताव की एक कलम यह भी थी कि सरकारी उपाधियाँ लौटा दी जाँय। जमनालालजी ने तुरन्त अपनी राय बहादुर की उपाधि छोड दी।

१९२७ की नागपुर कांग्रेस के बाद आन्दोलन का जोर बढ़ा। कई कार्यकर्ता, कालेजों के प्रोफेसर, वकील बैरिस्टर और अन्य प्रसिद्ध लोग आन्दोलन में शरीक हुए। जमनालालजी ने सोचा, इनम आज, जो देश के काम के लिय आगे आये हैं उनके पास कमाई का कोई जरिया नही है न जाने इनके परिवार पर क्या बीतती होगी! इनके सिवा और भी कितने ही ऐसे लोग होंगे जो अपनी कमाई छोड कर आन्दोलन में शरीक होना चाहते होंगे। लकिन उनके सामने अपने स्त्री बच्चों का सवाल होगा। उन्होंने एक निधि गाली। अपने पास से दो लाख रुपये दिये, और जो लोग अपना धधा छोड कर आन्दोलन में १५ व और

जिनके परिवार के लोगो के लिए दूसरा कोई इन्तजाम नही था, उनको महायता की। इसी विचार से बाद मे गाधी सेवा सघ का जन्म हुआ।

उनके जिस विशेष गुण का मेरे चित्त पर गहरा असर पडा, वह थी कार्य-कर्ताओं के प्रति उनकी आस्था। १९३१ के गाधी इर्विन समझौते के बाद की बात है, देश म चारो तरफ एक तरह से उल्लास, उत्साह, और जोश की लहर सी उठ रही थी। कांग्रेस जीत गई, हमारा आन्दोलन सफल हो गया, इसी खुशी म लोग मस्त थे। लेकिन जमनालालजी को यह फिक्र थी कि आन्दोलन की वजह से कितने कार्यकर्ता बीमार हो गये हैं। सरकार की दमन नीति से कितनी प्रमुख सस्थायें नष्ट हो गई मारपीट और गोला बारी की बदौलत कितने आदमी अपग और अपाहिज हो गये हैं। उनसे मिलना चाहिये। उन्हें दिलासा देकर उनकी मदद करनी चाहिये।

वह कलकत्ते आये। जिन मारवाडी युवको ने आन्दोलन मे भाग लिया था उनसे वह बहुत प्रेम से मिले। उन्हे इस बात की विशेष खुशी थी कि मारवाडी समाज के युवक राजनैतिक आन्दोलन म ज्यादा हिस्सा लेने लगे हैं। वह चाहते थ वे कोरे व्यापारी ही न बने रह। वे उनको देश और समाज की अधिक से अधिक सेवा करने को प्रेरित करते रहते थे।

यहा से हम सुरेश बनर्जी से मिलने कुमिल्ला गये। सुरेश बाबू तो अभिभूत हो गये। सुरेश बाबू को प्लास्टर ऑफ पेरिस म सुला रखा था। ऊठना बैठना तो दूर वह करवट तक नही बदल सकते थे। जमनालालजी सीधे उनक पास गये, उनके गले से लिपट गये। सुरश बाबू बोले, जमनालाल जी, मैं क्या कहू। आप इतनी दूर से खास मुझ स मिलने आये और इतने प्रेम से मुझे गले लगाया उससे तो मेरी बीमारी दूर हुई सी लगती है। मैं अपने मे नया बल और स्फूर्ति अनुभव करता हूँ। जमनालाल जी कार्य-कर्ताओ की तकलीफ समझ सकते थे। उनक त्याग और देश प्रेम की कद्र करते थे। वह कार्य कर्ताओ के प्रशसक ही नही, उनके भक्त थे। जब वे उनकी सहायता करते थे तो यो नही मानते थे कि मैंने कोई एहसान किया है। बल्कि यह मानते थे कि पुण्यवान कार्यकर्ताओं की सेवा का सुअवसर मुझे मिला, यह मेरा अहोभाग्य है। उनकी निगाह मे कार्य-कर्ता का स्थान बहुत ऊचा था।

कुमिल्ला मे ही मैंने पूछा आप इतनी दूर सिर्फ मिलने क्यो आए ? तब उन्होने अभय आश्रम का जो परिचय कराया अद्भुत था। यह सस्था १९२१ के आन्दोलन के बाद स्थापित हुई। डा० सुरेश बैनर्जी और प्रफुल्ल घोष ने उसकी स्थापना की। इसके २६ आजीवन सदस्य हैं उनमे से २८ अविवाहित हैं और देश के आजाद होने के पहले विवाह न करने का उनका प्रण है। वे अपने व्यक्तिगत खच के लिये केवल १५ रु० मासिक लेते हैं। इसमे भोजन, वस्त्र डाक तथा अन्य खच जो उनका अपना खच कहा जा सकता है शामिल है। एक सदस्य जो विवाहित है पचास रुपया लेते हैं। वह एक कालेज मे एक अच्छे प्रोफेसर थे। वेतन भी अच्छा पाते थे। सुरेश बाबू और प्रफुल्ल बाबू तो हजार हजार, आठ आठ सौ की सरकारी नौकरिया छोड कर सस्था म आये हैं। अन्य सभी सदस्य डाक्टर, वकील या वैज्ञानिक हैं और विश्वविद्यालयो की उच्च परीक्षायें पास हैं। डा० नृपेन बोस, जो एक अच्छे डाक्टर है आश्रम के दवाखाने वहा के एकसौ दस

कार्यकर्ताओं की सेवा करते हैं और उनके बाद डाक्टरी का पेशा करते हैं जिसमें करीब बारह सौ रुपया मासिक की आमदनी होती है। वे आश्रम से सदस्या का नियत वेतन, केवल १५ रु० ही लेते हैं।

जमनालालजी बोले, "बताओ अगर ऐसे लोगों से मिलने या उनके दर्शन करने न आऊं तो किससे मिलने आऊं? यही लोग तो आज गांधी जी की भावना और विचारों के अनुसार उनके कार्यों को चला रहे हैं। तुम्हारे बंगाल में आज जो खादी का काम हो रहा है, इस आंदोलन में जितना कुछ काम हो सका है, वह सब इन की या ऐसे ही दूसरे लोगों की मेहनत का फल है।'

गांधी जी की आज्ञा से जमनालालजी ने 'गो-सेवा-संघ' का काम अपने ऊपर लिया उसी समय गोपुरी(वर्धा) का नामकरण हुआ और वहीं एक टीले पर एक सुन्दर घास फूस की झोपड़ी में वे रहने लगे। एक दिन कुछ जोर की वर्षा होने लगी। मैंने कहा कि, 'झोपड़ी में तो बौछार आयेंगी, शायद पानी चूने भी लगे'। उन्होंने मारवाड़ी बोली में कहा 'मैं तो जाट जन्मा था, और जाट ही मरना चाहता हूँ। मुझे वर्षा का क्या डर है? यहां तो तुम जैसे नवाबों को तकलीफ हो सकती है।' मुझे वे मजाक में नवाब कहा करते थे।

जमनालालजी का कहना था कि मैं किसी की भी सेवा लिये बिना मरना चाहता हूँ। मेरे एक घनिष्ठ मित्र की हार्ट फेल से मृत्यु हो गई थी उस वक्त जमनालालजी ने मुझे लिखा था कि, 'ऐसी मृत्यु तो भाग्यशाली व्यक्तियों की होती है। वह ईश्वर की कृपा का लक्षण है। आदमी इस कमरे में मरे तो बगल के कमरे वाले को बाद में पता चले ऐसी मृत्यु होनी चाहिये'।

जमनालालजी की मुराद पूरी हुई। उनके जैसी मृत्यु तो सचमुच ईश्वर की कृपा का ही लक्षण है। वह तो अमर हो गये। हजारों हृदयों में उनकी स्मृतियां सदा हरी-भरी रहेंगी।●

> दूसरे बहुतेरे दानी हैं, पर कुछ दान पूंजी के रूप में लगाये जाते हैं, कुछ अहसान जताने के लिए दिये जाते हैं, कुछ दया की भावना से प्रेरित होकर। ऐसे विरले ही मिलेंगे, जो दान को दान नहीं समझते हों और लेनेवाले पर अहसान नहीं रखना चाहते हों। जमनालालजी उन विरले लोगों में से थे, जो इसको अपना सद्भाग्य समझते थे कि उनको धन जैसे तुच्छ साधन द्वारा सेवा करने का सुअवसर मिला।
>
> डा० राजेन्द्र प्रसाद

शकुन्तला पाठक

# श्री कृष्णदास जाजू

श्री कृष्णदास जी जाजू का जन्म २६ अगस्त १८८२ को बीकानेर से लगभग १५ मील दूर अवासर नामक ग्राम मे माहेश्वरी परिवार मे हुआ था। इनका विद्यारम्भ पाच वर्ष की आयु मे हुआ। तेरह वर्ष की आयु मे जाजूजी ने मिडिल पास किया। १८९८ मे नागपुर के नीलसिटी हाई स्कूल से प्रथम श्रेणी मे मैट्रिक की परीक्षा पास की। मारिस कालेज नागपुर से जाजूजी ने १९०२ मे बी ए की परीक्षा पास की, तथा १९०४ मे कलकत्ता विश्वविद्यालय से बी एल की परीक्षा पास की। बी एल, मे आपने सर्व प्रथम स्थान प्राप्त किया।

इसके पश्चात इन्होंने आर्वी मे वकालत शुरू की, फिर अक्तूबर १९५० मे वे वर्धा आ गये और वहीं वकालत करने लगे। जाजूजी की वकालत दो चार साल के बाद ही चमक उठी। इन्होने कभी भी झूठे मुकदमे को हाथ मे नही लिया। वकालात के दौरान उनको यह महसूस होने लगा कि सत्य को सत्य साबित करना भी आसान नही है, इस बात से उनका हृदय विचलित होने लगा, और वे वकालात छोडने की बात सोचने लगे। इसके साथ ही सार्वजनिक सेवा की ओर भी उनका मन उत्तरोत्तर खिंचता जा रहा था। इसलिए उन्होंने बीस हजार रुपया एकत्रित करके एक दिन वकालात छोड दी। यह रुपया उन्होने भतीजो के ऊपर चढे कर्जे को उतारने मे खर्च किया। वकालत इन्होंने १९२०-२१ मे छोडी जिस समय *गाधीजी ने असहयोग आदोलन शुरू किया था।*

जमनालालजी बजाज, मथुरादास जी मेहता, व जमनादास पोद्दार जैसे बडे २ सेठ इनकी प्रतिभा के कायल हो चुके थे,। इन सबके अनुरोध पर जाजूजी इनकी फर्मों के कानूनी सलाहकार बन गये। वर्धा मे जमते ही जाजूजी ने सामाजिक प्रवृत्तियो मे भाग लेना आरम्भ कर दिया था। सबसे पहले गोरक्षण सस्था के मन्त्री बने। उस समय के मारवाडी समाज मे कई बुराइया थी इन बुराइयो को दूर करने के लिये शिक्षा का सहारा आवश्यक था, अत सन् १९१० मे मारवाडी विद्यार्थी गृह और १९१२ मे मारवाडी हाई स्कूल की स्थापना की। १९२२ मे अखिल भारत माहेश्वरी महासभा का पचम अधिवेशन जाजूजी की अध्यक्षता मे कलकत्ता मे हुआ। अगले वर्ष इन्दौर के अधिवेशन मे कोलवार माहेश्वरियो का विवाद खडा हुआ। इसी बात का लेकर बाद मे जाजूजी का जाति से बहिष्कार किया गया परन्तु इन्होने कुशलता से इस

विवाह को समाप्त किया। इन्होंने समाज मे यह भावना जागृत की कि जाति-पचायत के अनुचित आदेशो की अवहेलना होनी चाहिए। लेन देन का बहिष्कार इन्होंने अपने पुत्र और पुत्री के विवाह से शुरू किया, और अपने इन सिद्धान्तो पर अटल रहे।

१६३५ में ग्रामोद्योग सघ की स्थापना पर इनको ही बापू ने इस सस्था का अध्यक्ष बनाया और १६४० तक इस सघ के सभापति रहे। इसके साथ ही चरखा सघ म इनका प्रवेश हुआ। जाजूजी की विपशेता थी, कार्यकर्ताओ के प्रति सहृदयता, सिद्धान्तो के प्रति सतकता और बारीकी से पालन करने का आग्रह। इसम वे किसी को नहीं बख्शते थे। गीता मे जिस निस्पृहता और निष्काम कम का उपदेश दिया गया है उसे उन्होंने जीकर दिखाया था। भूदान यज्ञ म सम्पत्तिदान का समावेश भी जाजूजी ने ही कराया। इनके जीवन म जेल जाने का मौका एक ही बार आया था, और वह था सन् १६४२ म। इन्होंने अपने आप को भूदान की पुकार पर समर्पित कर दिया। लोगों के आग्रह पर इन्होंने मध्यप्रदेश भूदान यज्ञ-मडल का अध्यक्ष पद स्वीकार किया। इन्ही के प्रयत्नो से मध्यप्रदेश मे भूदान यज्ञ कानून बना जिसके नियम सबसे अच्छे है। उन्होंने लोक सेवाके कार्यों म स्वास्थ्य की भी विशेष परवाह नही की। लेकिन ऐसा नहीं लगता था कि वे इतनी जल्दी चले जायेंगे।

दुर्भाग्य से वे भी, जमनालालजी की तरह, अचानक चले गये। जयपुर म हर्निया का आपरेशन कराया था। एक दिन आधी रात को अचानक तबीयत खराब हुई और वे हम लोगो को छोडकर चल दिये। जीते-जी भी उन्होंने सासारिक माया मोह छोड दिया था, विरक्त साधु की तरह रहते थे। सत्याग्रह दर्शन, सत्य पर दृढ़ आस्था, साथ ही व्यवहार-बुद्धि, विवेक के आदेश पर चलने की तत्परता, निरहकार वृत्ति, उनके विशेष गुण थे। उनकी शीतल छाया से हम लोग वचित हो गये। ऊपर से रूखा, भीतर से अत्यन्त स्निग्ध उनका स्वभाव आज भी हम प्रेरणा देता है। ●

जाजूजी लोगों की इस प्रवृत्ति को सवथा नापसन्द करते थे कि कोई केवल शोभा के लिए किसी सस्था का कोई पद ग्रहण कर लें। उनका कहना था कि ऐसे लोग न तो खुद काम करते हैं और न दूसरों को करने देते हैं। ऐसा करना असत्याचरण है।

शकर सहाय सक्सेना

# विजयसिंह पथिक

राजस्थान म जिन क्रान्तिकारियो ने देशी राज्यो की दुहरी गुलामी से पिसने वाली प्रजा मे साहस और निर्भयता की भावना भर कर उन्हे देशी राज्यो के अत्याचार के विरुद्ध खडा कर दिया और परोक्षरूप से ब्रिटिश साम्राज्यवाद की भारत पर जकडी हुई कठोर शृ खलाओ को काटने का प्रयत्न किया उनमें विजयसिंह पथिक का स्थान बहुत ऊचा है। पथिकजी उन थोडे से राजनीतिक नेताओ म से हैं जिन्होने अपनी हड्डियो की नीव पर राजस्थान का आधुनिक भवन खडा किया है।

पथिक जी के त्याग और बलिदान, उनकी सगठन शक्ति और दासता की शृ खलाओ को नष्ट करने के लिए निरन्तर सघष करने की प्रवृत्ति ने ही राष्ट्रपिता गाधी को देशबधु ऐन्ड्रयूज से यह कहने पर विवश किया था, "मैं तुम्हें पथिक के बारे मे सब कुछ बतला सकता हूँ। पथिक काम करने वाला है और दूसरे सब बातूनी है। पथिक एक सनिक है, बहादुर और जोशीला है लेकिन जिददी हैं। जब महादेव देसाई बिजोलिया गये तो पथिक उनके माग दशक थे। विशेष महत्व की बात यह है कि बिजोलिया की जनता का उन पर पूरा-पूरा विश्वास था।'

**प्रारम्भिक जीवन —**

उत्तर प्रदेश में बुलन्दशहर जिले के गुठावली ग्राम मे पथिक जी का जन्म एक गूजर परिवार मे हुआ था। परन्तु वे स्वय जाति मे विश्वास न रखने के कारण कभी जाति बतलाते नही थे। उनका जन्म किस वष हुआ इसका कही उल्लेख नही मिलता परन्तु पथिक जी ने स्वय लिखा है कि होली के दूसरे दिन प्रात काल ४ और ५ के बीच हुआ था।

पथिक जी का जन्म उस परिवार मे हुआ था जिसने मातृभूमि की स्वतन्त्रता के लिये बलिदान किया था। १८५७ की सशस्त्र क्रान्ति में पथिक जी के पिताने मालागढ के युद्ध मे मालगढ की सेना का नेतृत्व किया था और वीरगति को प्राप्त हुए थे। उसके उपरान्त उनके परिवार के लोग अपना गाव छोडकर अग्रजो से गुरिल्ला युद्ध करते रहे और क्रान्ति के असफल हो जाने पर कई वष उपरान्त अपने गाव मे आकर बसे थे।

उनकी माता कमल कुमारी भी बडी जीवट का महिला थी । जब उनका परिवार क्रान्ति के असफल हो जाने पर गुठावली मे आकर बस गया तो पुलिस पथिक जी के पिता जी को गिरफ्तार करने आई । उनके पिता ज्वर से पीडित थ इस कारण चौपाल पर सोये हुए थे । पुरुष सब खेती पर काम करने गए थ । केवल स्त्रियाँ घरों म थी । पथिक जी की मा ने लाठी से पुलिस पर प्रहार किया और अन्य स्त्रियो की सहायता से थानेदार और कास्टेबलो को मार कर भगा दिया । पथिक जी के हृदय म अपनी दादी और मा स अपने पूर्वजो की वीर गाथा को सुनकर देश भक्ति के भाव बालपन से ही उत्पन्न हो गये थे ।

पथिक जी का वास्तविक नाम भूपसिंह था । राजस्थान मे आकर उन्होंने अपना नाम बदल कर "पथिक" रख लिया था । बालक भूपसिंह की प्रारम्भिक शिक्षा मालगढ के प्राइमरी स्कूल म हुई । उसके उपरात वे किसी स्कूल या कालेज म नही पढे । क्योकि उनके पिता और माता का स्वर्गवास बालपन म ही हो गया और वे अपनी बडी बहन के पास चले गए । उनके बहनोई इन्दौर राज्य म नौकर थ । भूपसिंह का वहा प्रसिद्ध क्रान्तिकारी शचीन्द्र सान्याल स सम्पर्क हुआ । सान्याल ने देखा कि भूपसिंह म एक क्रान्तिकारी के सभी गुण उपलब्ध है अस्तु उन्होंने भूपसिंह को क्रान्ति के मत्र से दीक्षित किया और देश के लिए मर मिटने वालो की टोली म सम्मिलित कर लिया । शचीन्द्र सान्याल ने उनको उस समय के सर्वोच्च क्रान्तिकारी नेता रास बिहारी बोस से मिलाया और भूपसिंह क्रान्तिकारी दल के सक्रिय सदस्य बन गये । एसा प्रतीत होता है कि भूपसिंह की शिक्षा दीक्षा क्रान्तिकारी दल मे सम्मिलित होने पर हुई हो । क्योकि भूपसिंह को कही विधिवत शिक्षा मिली नही मिली थी परन्तु वे कई भाषाओ के ज्ञाता तथा इतिहास और राजनीति के ऊचे विद्वान थ और वे ऊचे दर्जे की साहित्यक प्रतिभा के धनी थे ।

रास बिहारी ने राजस्थान म क्रान्तिकारी सगठन करने के लिए भूपसिंह और भाई बालमुकुन्द को राजस्थान मे भेजा । भाई बालमुकुन्द जोधपुर महाराज कुमार के शिक्षक और अभिभावक नियुक्त हो गए और भूपसिंह रेलवे वर्कशाप म नौकर हो गये । वर्कशाप मे काम करने का मात्र उद्देश्य अस्त्र शस्त्रो को बनाने तथा उनकी मरम्मत करना सीखना और कारीगरो को क्रान्तिकारी दल म भर्ती करना था । भूपसिंह राजस्थान म अस्त्र शस्त्रो का एक कारखाना स्थापित करना चाहत थे । उधर यह लोग अग्रेज विरोधी राजाओ का भी क्रान्ति के लिए उपयोग करना चाहते थे इसी कारण भाई बालमुकुन्द जोधपुर महाराजकुमार के अभिभावक बने थे । राजस्थान के प्रसिद्ध क्रान्तिकारी ठाकुर केसरीसिंह बारहठ और उनके पुत्र महान क्रान्तिकारी कुवर प्रतापसिंह राजस्थान म मौजूद ही थे । उन्होने कई राजपूत नरेशो मे देश प्रेम की भावना जागृत की थी । भूपसिंह जब राजस्थान आये तो रास बिहारी बोस के आदेशानुसार वे उन राजाओ से मिले और जोधपुर तथा अन्य नरेशो से उन्होंने अच्छा सम्बन्ध स्थापित कर लिया वे खरवा नरेश ठाकुर गोपालसिंह के निजी सचिव बन गए और राजाओ को भावी विप्लव म सहायता देने से लिए प्रेरित करने लगे ।

रास बिहारी बोस सैनिक क्रान्ति की तयारी कर रहे थे । क्रान्तिकारियो ने सनिको से सम्बन्ध स्थापित कर लिया था । राजस्थान म खरवा नरेश तथा देश भक्त व्यवसायी दामोदरदास राठी की सहायता स भूपसिंह को अजमेर,ब्यावर व नसीराबाद पर अधिकार कर लेने का भार सौंपा गया । भूपसिंह तेजीसे राजस्थान

की क्रान्तिकारी शक्तियो को सगठित करने का प्रयत्न करने म लग गए। २१ फरवरी को विद्रोह प्रारम्भ होना था। पजाब, देहली, उत्तर भारत तथा राजस्थान म एक साथ सशस्त्र विद्रोह आरम्भ करने की योजना थी। परन्तु दुर्भाग्यवश १६ फरवरी को ही सरकार को इस षडयन्त्र की सूचना मिल गई और पजाब के क्रान्तिकारी पकड लिए गए। राजस्थान मे भूपसिंह, खरवा नरेश गोपालसिंह ठाकुर, मोडसिंह तथा सवाईसिंह आदि २१ फरवरी १६१५ को खरवा स्टेशन से कुछ दूर जगल म कई हजार सनिक व क्रान्तिकारी दल लिए विप्लव आरम्भ करने का सकेत पाने की प्रतिक्षा कर रहे थे। रात्रि को दस बजे के बाद अजमेर से अहमदाबाद जाने वाली गाडी से रास बिहारी का भेजा हुआ क्रान्तिकारी खरवा के स्टेशन से गाडी आगे निकलने पर बम का धडाका करता। यह अजमेर, ब्यावर तथा नसीराबाद पर आक्रमण करने का सकेत था। किन्तु सकेत नही मिला। अगले दिन सदेश वाहक ने आकर लाहौर म घटी घटनाओ की उन्हे सूचना दी। तुरत ही भूपसिंह ने तीस हजार बदूका तथा अन्य अस्त्र शस्त्रो तथा गोला बारूद को गुप्त स्थानो म छिपा दिया और क्रान्तिकारी सैनिको का बिखर जाने का आदेश दिया।

भूपसिंह राजस्थान मे अपने सभी सहयोगियो को जाकर सावधान कर आये। वे जानते थे कि पुलिस को उन पर सन्देह हो गया है अस्तु उनका पकडा जाना सम्भव है। सात आठ दिन बाद ही भूपसिंह को तथा खरवा नरेश को गिरफ्तार करने के लिए अजमेर कमिश्नर ५०० सैनिको की टुकडी लेकर खरवा आया। पहले तो खरवा नरेश और भूपसिंह आत्मसमपण करने के लिए तैयार नही हुए परन्तु यह आश्वासन दिये जाने पर कि उन्हे नजरबन्द किया जावेगा जेल मे नही रक्खा जायगा, आत्म समपण किया। सरकार ने उन्हे मेवाड और मारवाड की सीमा पर स्थित टाटगढ मे नजरबन्द कर दिया, तीन मील तक जगल मे उन्हे शिकार करने की छूट थी।

किन्तु उसके पन्द्रह दिन बाद ही लाहौर षडयन्त्र के मामले म भूपसिंह का नाम भी आया और लाहौर से वारन्ट निकाला। भूपसिंह साधू का वेष बनाकर पहरेदारो की आखो मे धूल झोककर चल गये।

अब भूपसिंह ने अपना नाम बदलकर पथिक रख लिया और दाढी बनाना छोड दिया। टाटगढ के सघन वन मे वे रास्ता भटक गए। दिन भर तजी से चलते रहने के कारण वे बहुत थक गये थे और कुछ खाया पीया नहीं था। सघन वृक्षों से आच्छादित एक चट्टान पर विश्राम करन के लिये बैठ गये। थकान से शरीर चूर चूर हो रहा था, और वे गहरी निद्रा की गोद म विश्राम करन लग। उस समय एक जगली जानवर, सम्भवत सुनहरी चीते ने उनकी टाँग पकडी और उन्हे घसीट कर ले चला। जब उनकी निद्रा टूटी देखा कि वे एक मनुष्य भक्षी जगली पशु के कब्जे मे हैं। परन्तु पथिक जी घबडाये नही उन्होने धय के साथ बिना हिले डुले रिवाल्वर निकाला और जानवर को गोली मार दी। उनके प्राणो की रक्षा तो हो गई किन्तु उनके पैर मे असहनीय पीडा हो रही थी। वन म सुरक्षित स्थान खोजकर उन्होने रात्रि काटी। प्रात पौ फटते ही वे वन से निकले। थोडा चलने पर कुछ दूर एक झोपडी दिखाई दी, उसके दूसरी ओर गाव था। जब पथिक जी गाव से बचकर झोंपडी के पास से निकले तो उसम रहने वाली वृद्धा ने उन्हे रोका। वह अपनी सहज कुशाग्र बुद्धि से समझ गई थी कि यह टाटगढ से भागा हुआ अग्रेजो का विद्रोही युवक है।

बुन्यिा ने उन्हें समझाया कि आगे जाना इस समय खतरे से खाली नही है और तुम्हारा पैर घायल है। उसने पथिक जी को अपनी झोपडी मे छिपा लिया। घावों की मरहम पट्टी की, भोजन कराया और सुला दिया। सायकाल के समय वृद्धा ने अपने लडके को भेज कर एक घोडा मगवाया और कहा, बेटा अब तुम जाओ भगवान तुम्हारी रक्षा करगे। पथिक जी श्रद्धा से वृद्धा को नमस्कार कर चल पडे। खरवा नरेश के एक सम्बधी जागीरदार के यहा गए। परन्तु उन्होने सहायता करने से साफ इनकार कर दिया। उस समय पथिक जी का शरीर बहुत थक गया था, पैर मे बेहद पीडा थी उन्हें विश्राम की आवश्यकता थी। वे जगल जगल भटकते हुए 'गुरला" गाव म पहुचे वह जागीर का गाव था। उनके पास उस समय कवल सात आने पसे शेष रह गए थे। गुरला के ठाकुर साहब ने उन्हें अपने जनाने (रनिवास) म छिपा दिया और उनकी चिकित्सा कराई। इससे ठाकुर साहब की देश भक्ति और क्षत्रित्व का परिचय मिलता है। जब पथिक जी स्वस्थ हो गए तो उन्होने गुरला छोड दिया और साधु के वेश मे रहे। वहा उनके व्यक्तित्व से प्रभावित होकर अधिक लोग आने जाने लगे और गुप्तचर भी चक्कर काटने लगे तो उन्होने वह स्थान छोड दिया और खारी तट म छिपे हुए अस्त्र शस्त्र निकाल कर राजपूत का वेष धारण किया और उस कुटिया को छोड कर चल पडे। वहा से मेगटिया होते हुए काकरोली पहुँचे। पथिक जी को काकरोली म कुछ देश भक्त युवक मिले उनका एक छोटा सा दल था। उस युवक दल ने राजा समुद्र के तालाब माणा नाम गाव म पथिक जी के रहने का प्रब ध किया। पथिक जी ने उन युवको का माग प्रदशन करना प्रारम्भ कर दिया और एक पाठशाला खोली जिसके द्वारा वे बालको मे भी देश भक्ति के भाव भरने लगे। काकरोली का युवक दल पथिक जी के माग दशन मे सक्रिय हो उठा तो पुलिस तथा गुप्तचर विभाग उस क्षेत्र म अधिक सतक हो गया।

पथिक जी को यह सूचना मिली की गुप्तचर विभाग को उन पर सदेह हो गया है। उन्होने माणा यकायक छोड दिया वहा स हटकर वे मोही चले गये और अपने एक परिचित डूगरसिह भाटी के पास रहे। वहा भी उन्होने एक पाठशाला स्थापित की। वहा कुछ समय रहकर अधिक सुरक्षित स्थान की खोज मे जहाजपुर पहुँचे। वहा भी उन्होने एक पाठशाला स्थापित की। जब उन्हे लगा कि जहाजपुर भी उनके लिए सुरक्षित स्थान नही है तो वे चितौरगढ चले गए। उनकी कल्पना थी कि चितौरगढ़ मे वे एक सबल क्रान्तिकारी सगठन खडा करेंगे।

चितौरगढ से दो मील ओछडी गाव म वहा के जागीरदार ठाकुर भूपालसिह के फुफेरे भाई कुवर प्रतापसिह राठौर ने जो राजस्थान क्रातिकारी दल के सक्रिय सदस्य थे, ठाकुर भूपालसिह को पथिक जी का परिचय दिया और अज्ञातवास मे अपने यहा आश्रय दन के लिए कहा। पथिक जी को ठाकुर साहब चितौरगढ से ओछडी ले आये। ओछडी के समीप ही स्थित पुठोली ठाकुर साहब से भी पथिक जी का घनिष्ठ परिचय हो गया था और वे कभी कभी पुठोली भी जाकर रहते थे।

उसी समय बिजोलिया मे ठिकाने के भयकर अत्याचार से त्रस्त किसानो ने साधू सीताराम दास के नेतृत्व म आन्दोलन किया था परन्तु सबल नेतृत्व न होने के कारण ठिकाने ने भयकर दमन करके उसको

दबा दिया। विजोलिया का ठिकाना उस समय कोर्ट आफ वाडस के अधीन था। वहा के नायब मुसरिम मोही निवासी श्री डूगरसिंह भाटी ने साधू सीताराम दास को सलाह दी कि यदि वे पथिक जी को चितौड (ओछडी) से बिजोलिया आने के लिए राजी करलें और वे आकर यहा का नेतत्व करें तो सबल सगठन खडा किया जा सकता है। इस प्रकार पथिक जी विजोलिया पहुँचे।

थाडे ही दिनो म ठिकाने के अधिकारियो ने उनके विरद्ध राज्य का सूचित किया कि पथिक जा यहा के किसानो को भडका रहे है। राज्य ने उनकी गिरफतारी का वारट निकाल दिया परन्तु पथिक जी को उसकी पूव सूचना मिल गई। पथिक जी की काय पद्धति का एक प्रमुख अग यह था कि वे अपने शत्रु के खेमे मे भी अपना कोई गुप्तचर रखत थे। अस्तु पथिक जी ने रात्रि मे बिजालिया को छोड दिया। और समीप ही एक ग्राम उमा जी के खेडे म एक निजन स्थान पर अपना गुप्त अडडा बनाया और वहा से ही वे आन्दोलन का सचालन करने लगे।

उस समय बिजोलिया के किसानो की ओर से पथिक जी ने प्रताप' के यशस्वी सपादक गणेश शकर विद्यार्थी क पास राखी भेजी और प्राथना की कि बिजोलिया के किसानो की 'प्रताप' सहायता करे। तभी से विद्यार्थी जी और 'प्रताप विजालिया के किसाना के प्रबल सहायक बन गए। पथिक जी न लोकमान्य तिलक जी की भी सहानुभूति प्राप्त कर ली और मराठा के द्वारा उन्होने बिजोलिया के किसानो का समथन किया। उस समय माणिक्य लाल वर्मा जो पहले ठिकाने के कमचारी थे ठिकाने की नौकरी छोड कर पथिक जी के साथ आ गए। पचायत ने लगान बन्दी का आन्दोलन खडा कर दिया। राज्य ने पथिक जी को गिरफ्तार करने की बहुत चेष्टा की किन्तु वह सफल नही हुआ। उधर पथिक जी ने देश भर के समाचार पत्रो मे विजालिया किसान आन्दोलन तथा ठिकाने के दमन की रोमाचकारी कथा नियमित रूप से प्रकाशित करवाना आरम्भ कर दिया। समस्त देश का ध्यान बिजोलिया की ओर आकर्षित हो गया। विवश हो कर राज्य ने एक कमीशन बिठाया और किसान कायकर्ताओ को छोड दिया। गाधी जी भी बिजोलिया के किसान आन्दोलन से बहुत प्रभावित हुए और उन्होने पथिक जी को बम्बई बुला भेजा। जब पथिक जी ने बिजोलिया के किसाना की करुण कथा गाधी जी को सुनाई तो महात्माजी बहुत प्रभावित हुए और महादेव देसाई को वहा की जाच के लिए भेजा।

बम्बई मे ही यह निश्चय हुआ कि राजस्थान के जन जीवन को सतेज बनाने के लिए वधा से पत्र निकाला जावे पथिक जी उसका सम्पादन कर और जमनालाल बजाज उसका आर्थिक भार लें। पथिक जी बिजोलिया से वर्धा चले आए और वहा से राजस्थान केसरी' पत्र निकालने लगे। "राजस्थान केसरी' शीघ्र ही राजस्थान तथा मध्यभारत के देशी राज्यो म अत्यन्त लोकप्रिय हो उठा। उसका प्रभाव इतना बढा कि देशी नरेश भयभीत होते लगे। परन्तु पथिक जी की विचार धारा से सेठ जमनालाल बजाज की विचार धारा का मेल नहीं बैठा और उन्होने राजस्थान केसरी को छोड दिया और अजमेर आकर राजस्थान सेवा सघ की स्थापना की। नया 'नवीन राजस्थान पत्र निकालना आरम्भ किया।

बिजोलिया आन्दोलन का प्रभाव मेवाड के अन्य ठिकानो पर भी पडने लगा। राजस्थान सेवा सघ के नेतृत्व मे मेवाड के किसान उठ खडे हुए तब ब्रिटिश सरकार चौंकी। मेवाड राज्य के द्वारा ब्रिटिश सरकार ने ठिकाने पर दवाब डाला कि ठिकाने पचायत से सघी कर लें—स्वय ए जी जी इस मामले को तय कराने बिजोलिया पहुचा। पथिक जी पर मेवाड मे आने पर प्रतिबन्ध लगा हुआ था। जब ए जी जी, ने किसानो को बातचीत के लिए बुलवाया तो किसान पचायत ने उत्तर दिया कि राजस्थान सेवा सघ का प्रतिनिधि बुलाया जावे। पथिक जी ने रामनारायण चौधरी को भेजा, सधि हो गई। बिजोलिया के किसाना की यह अभूतपूव विजय थी। इससे राजस्थान सेवा सघ का राजस्थान मे प्रभाव बढ़ गया और सभी देशी राज्य उससे भयभीत हो उठे।

राजस्थान सेवा सघ की स्थापना पथिक जी ने राजस्थान के देशी राज्यो की प्रजा की सेवा के लिए की थी। उसके सदस्य आजीवन सेवा करने का व्रत लेते थे। वे अपना जीवन देश सेवा के लिए अर्पित करते थे। पथिक जी की मान्यता थी कि फक्कड राजनीतिक सन्यासी ही देश सेवा का काय कर सकते हैं। इसलिये उन्होने राजस्थान सेवा सघ की सदस्यता का एक नियम यह बनाया कि सदस्य की व्यक्तिगत कोई जायदाद नही होगी। उसको सघ से केवल निर्वाह व्यय मिलेगा, जो उस समय एक व्यक्ति के लिये १५ रु० मासिक और गृहस्थ के लिये ३० रु० मासिक नियत किया गया। पथिक जी स्वय भी १५ रु० मासिक लेते थे और जो बचता वह सघ को लौटा देते थे। उनका मासिक व्यय आठ रु० से कम होता था। पथिक जी के अतिरिक्त रामनारायण चौधरी, हरिभाई किंकर, शोभालाल गुप्त, माणिक्यलाल जी वर्मा, लादूराम जोशी, प्रेमचन्द भील, मोर्डसिंह नयनूराम शर्मा सघ के सदस्य बन गए। सघ ने राजस्थान मे बेगार के विरुद्ध आन्दोलन आरम्भ किया। सिरोही, मेवाड, अलवर, बूदी इत्यादि राज्यो मे जो भी जन आन्दोलन हुए उनका नेतृत्व किया। राजस्थान सेवा सघ की देश भर मे धाक बैठ गई, देशी नरेश उससे भयभीत रहने लगे यहा तक की इग्लैंड की पालियामेन्ट के कई सदस्य भी सघ के हितैषी बन गए।

बिजोलिया के उपरान्त बेंगू आन्दोलन हुआ पथिक जी ने उसका भी सचालन किया। पथिक जी को मेवाड म आने की मनाही थी। बेंगू आन्दोलन के समय वे छिप कर रहते थे। पथिक जी पकडे गए उन पर साढे तीन साल तक मुकदमा चला। मेवाड सरकार ने त्रिभुवन नाथ सुपारी की अध्यक्षता मे पथिक जी के मुकदम के लिए विशेष न्यायालय स्थापित किया। पथिक जी का बयान अपूव तथ्यपूर्ण था। पथिक जी पर राजद्रोह और विद्रोह फैलाने का आरोप था। पथिक जी के बयान से प्रभावित होकर न्यायालय ने उनको छोड दिया परन्तु सरकार ने उन्ह नही छोडा। इस बार अर्धशिक्षित दरबारियों का एक कमीशन बिठाया गया और उसने पथिक जी को पाच वष के कारावास की आज्ञा दे दी। पथिक जी जेल म बन्द कर दिए गए।

उसी समय एक अत्यन्त दुर्भाग्य पूर्ण घटना घटी। राजस्थान सेवा सघ म ही भयकर दरार पड गई। पथिक जी म तथा रामनारायण चौधरी तथा शोभालाल गुप्त मे गहरा मतभेद उठ खडा हुआ और राजस्थान सेवा सघ समाप्त हो गया।

राजस्थान सेवा सघ के समाप्त हो जाने के उपरान्त पथिक जी एकाकी हो गए। रेलवे मजदूरो में काम करत रहे तथा दशी राज्यो की जनता की सेवा अपने ढग से करत रहे। अन्त मे ब्रिटिश सरकार के गुप्तचरो

से बचने के लिए उन्होने अजमेर छोड दिया। मध्यभारत तथा उत्तर प्रदेश मे जमे। आगरा से 'नव सदेश' भी निकाला। उनका यह पत्र बहुत लोकप्रिय हुआ। परन्तु १९४२ भारत छोडा आन्दोलन मे सरकार ने, उसे पत्र जब्त कर लिया।

जब देश आजाद हुआ और महात्मा गाधी का काग्रेस सरकार से निराशा होने लगी, उन्ही दिनो पथिक जी देहली म गाधी जी से मिले। गाधी जी ने उनसे आग्रह किया कि पथिक जी को राजस्थान म ही जम कर बिजोलिया की शली पर काम करना चाहिए। अस्तु पथिक जी राजस्थान आए और महात्मा जी के आदेश के अनुसार वे अजमेर में जमने की व्यवस्था कर रहे थे। वे "राजस्थान सेवा श्रम" नाम सस्था स्थापित करना चाहते थे उसी के लिए दौड धूप कर रहे थे, कि उन्हे लू लग गई और २८ मई, १९५४ को दिन के दो बजे वह महान क्रान्तिकारी चिरनिद्रा म सो गया।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के उपरान्त पथिक जी उपेक्षित जीवन व्यतीत करते रहे। मरने के कुछ समय पूव एक युवक ने चित्तौड म उनसे पूछा था स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद अब आप क्या करेंगे? पथिक जी हसे और बोले "हम से पूछते हो हम क्या करेंगे? तुम करोगे। आगे बढने मे तुम्हें खाइया मिलेंगी तो हमारे शवो से खाइयो को पाट कर तुम आगे बढोगे। यद्यपि तत्कालीन सत्ताधारी अपने सहयोगी मित्रो द्वारा पथिक जी उपेक्षित हुए परन्तु इतिहासकार उनकी पावन स्मृति म अपनी श्रद्धा के सुमन बिना चढाए नही रह सकता।

वे राजस्थान मे ही नही वरन भारत मे किसान सत्याग्रह के जनक के रूप मे बिजोलिया और बेंगू के अदभुत किसान सघष के नेता के रूप मे देशी राज्यो की प्रजा के मागदशक के रूप म तथा देश की स्वतन्त्रता के लिए अपना सवस्व बलिदान कर देने वाले क्रातिकारी के रूप मे सदव याद किए जावेंगे। उनके असीम त्याग, शौय और वीरता से देश की आने वाली पीढिया अनुप्राणित रहेंगी।

आज भी पथिक जी के सहयोगी और प्रशसक राजस्थान म मौजूद हैं। क्या ही अच्छा होता कि वे पथिक जी के विचारो के अनुरूप उनके स्मारक स्वरूप कोई सस्था स्थापित कर सकते और इस प्रकार उनके प्रति राजस्थान ने जिस कृतघ्नता का परिचय दिया है उसका कुछ परिमाजन हो सकता।●

> यह शरीर देवों की नगरी है, ऋषियो का पवित्र आश्रम है, अमृत से युक्त स्वगधाम है। इसे हीन न मानो, परम देव का मदिर मानकर, इसकी पूजा करो। "म इन्द्र हूँ, मेरी पराजय नहीं हो सकती"—इस अजेय आत्म-विश्वास का अनुष्ठान तो शरीर मे देवताओं के निवास की अनुभूति से ही सभव है। "म इन्द्र हूँ, मेरे अधीन ततीस कोटि देव हैं, म उनका सचालक हू"—इस वेद घोष की प्रेरणा मे, अपने भीतर निहित दवी शक्तियो को पहचानो।
>
> —श्रीपाद दामोदर सातवलेकर

# हमारे दादा साहब

मैं पण्डित हरिभाऊजी उपाध्याय को दादा साहब कह कर पुकारता हूँ। यह प्रथा—दादा, काकाजी, माँ आदि गुरुजनों के आगे साहब लगा देने की टेव—हमारे मालवे की है। वय मे दादा साहब मुझसे प्राय पाँच वर्ष—ठीक हिसाब लगाऊ तो चार वर्ष नौ मास—बडे हैं। अत वे मेरे अग्रजन्मा हैं और वे मेरे दादा हैं। उन्हें आज मुझे अपनी श्रद्धाञ्जली चढाने का अवसर मिला, इसके लिए मैं अपने को धन्य मानता हूँ। हरिभाऊजी मालवे के निवासी हैं। मैं भी मालवीय हूँ। मेरे गाँव से उनका गाँव कोई सात आठ कोस होगा। पर, मालवे में रहते समय मुझे कभी भी दादा साहब के दर्शनों का अवसर नहीं मिला।

आज, जब मैं सोचता हूँ कि प्रथम बार मैंने उनके कब दर्शन किये, तो गत ४० वर्ष पूर्व की घटना आँखो के आगे चित्रपट वत् आ जाती है। हाँ ४० वर्ष पूर्व की बात है। सन् १९१७ की बात है। पूज्य हरिभाउजी उन दिनों, कानपुर के जुही नामक उपग्राम में पुण्यश्लोक महावीरप्रसादजी द्विवेदी के सहायक के रूप में 'सरस्वती' में काम कर रहे थे। मैं कालेज में शिक्षा प्राप्त करने के लिए कानपुर आ गया था और पुण्य कीर्ति स्वर्गीय गणेशशङ्कर विद्यार्थी की छत्रछाया मे विद्यार्जन कर रहा था। हरिभाऊजी को ज्ञात हुआ कि एक मालवे का जीव कानपुर में है। उन्होंने अपने घर, जुही में, मध्यान्ह भोजन के लिए निमन्त्रित किया। मैं पहुचा।

देखता क्या हूँ कि एक युवक उघाडे शरीर, दुबला पतला, केवल एक धोती पहने, नंगे पाँव, चश्मा लगाए मेरे स्वागत को खडा है। मैं जान गया कि यही हरिभाउजी उपाध्याय है। मैंने उन्हें अञ्जलिबद्ध प्रणाम किया। दादा साहब का वह रूप आज भी मेरे नेत्रों के सम्मुख आ जाता है। प्रथम दिन उनके व्यक्तित्व का जो छाप मेरे ऊपर पडी वह आज तक वैसी ही है और मुझे यह अनुभव करके बड़ा सुख मिलता है कि गत चालीस वर्षों में उनका वह व्यक्तित्व उसी रूप में निखरा है जिसकी कल्पना मैंने प्रथम दर्शन में उस दिन मन में कर ली थी।

जब मैंने उन्हें उस दिन देखा तो मुझे ऐसा लगा कि मैं किसी अल्हड नवयुवक से नहीं, एक गहर गम्भीर व्यक्ति से मिल रहा हूँ। यदि उदाहरण के रूप मे किसी अन्य युवक की बात कहूँ तो अनुचित न

होगा । हन्त ! वे दूसरे युवक अब हमे छोडकर चले गये । वे थे स्वर्गीय बन्धुवर देवदास गान्धी । जब मैंने सब प्रथम उन्हे लखनऊ कारागार मे देखा तो मुझे लगा था कि मैं एक परिपक्व जन को देख रहा हू । वैसी ही बात मुझे सन् १९१७ मे हरिभाऊजी को देखकर अनुभूत हुई ।

नासिका पर चश्मा, गम्भीर मुख, सहानुभूति पूर्ण व्यवहार, चिन्तन पूर्ण नयन, विचार पूर्ण भ्रू आकुञ्चन, "खड खड काया, निमल नेत" की झलक, ऐसे लगे हरिभाऊजी मुझे उस दिन । उसी समय मुझे लगा कि यह व्यक्ति "सरस्वती" के धाम मे बधकर रहने वाला नही है । यह वह पछी है जो मुक्त आकाश में अपने पख तौलेगा ।

मेरा अनुमान ठीक निकला । हरिभाऊजी ने भारत के एकाधिक प्रान्तो म रहकर "जन पद दस्सनाय" लोक सेवात्मक कार्यों मे अपना मूल्यवान् योगदान दिया है । उनका जीवन किस दिशा म मुडेगा इसका अनुमान उनके विद्यार्थी जीवन काल की एक दो बातो से लगाया जा सकता था । जिस प्रकार मैं मालवा छोड कर विद्याध्ययन के लिए कानपुर पहुचा था, उसी प्रकार हरिभाऊजी सन् १९१० म विद्याध्ययन के लिए काशी पहुँचे थे । वही से उन्होंने मट्रिक परीक्षा पास की । पर, अग्रेजी कहावत के अनुसार जिस खटमल काट लेता है ( He who has bitten by a bug ) वह चुपचाप कसे बठ सकता है ? मुझे लगता है, जन-सेवा, समाज-सेवा, के खटमल ने उन्हे बहुत पहले ही काट लिया था । इसीलिए तो जब वे काशी में विद्याध्ययन कर रहे थे तभी उन्होने "औदुम्बर" नामक मासिक पत्र का प्रकाशन और सम्पादन आरम्भ कर दिया । यह पत्र तीन वर्षों तक वे चलाते रहे और तदनन्तर सन् १९१७ म "सरस्वती' के सहायक सम्पादक होकर कानपुर आ गए । औदुम्बर जातीय पत्र तो था, पर उसमे हमारे समाज की समस्याओ पर विशद दृष्टि से विचार किया जाता था ।

कानपुर के उपरान्त वे इन्दौर चले गए । वहाँ कुछ दिनो अध्यापन काय करने के उपरान्त वे बापू के पास अहमदाबाद चले गए । वहां साबरमती आश्रम मे, बापू के साथ सन् १९२१ से सन् १९२५ तक रहे और हिन्दी नवजीवन का सम्पादन काय करते रहे । उन दिनो "हिन्दी नवजीवन को हरिभाऊ जी के रूप मे एक ऐसा सम्पादक मिला जो बापू के क्रान्तिपरक विचारो को सुष्ठु मे हिन्दी भाषी जनता के समक्ष रखता रहा । इसी बीच अहमदाबाद में रहते हुए ही उन्होंने श्री जीतमल लूणिया के सहयोग से "मालव मयूर" मासिक पत्र का प्रकाशन और सम्पादन आरम्भ किया ।

अभी तक ऐसा लगता है कि मानो हरिभाउजी की रचनात्मक शक्ति विकास की दिशा ढू ढ रही थी । उनमे सस्था निर्माण का जो अद्भुत सामर्थ्य है वह अभी प्रकट नही हुआ था । वह मानो समय की बाट जोह रहा था । अन्त में अवसर आया । स्वर्गीय सेठ जमनालालजी बजाज की प्रेरणा ने हरिभाऊजी की रचनात्मक वृत्ति को बल दिया । गुजराती मे 'सस्तु साहित्य मडल नामक सस्था न सस्ते तथा उदात्त साहित्य के प्रचार मे बडा काम किया हैं । स्वर्गीय जमनालालजी ने हिन्दी म इस प्रकार की सस्था की आवश्यकता महसूस की तथा उनके सहयोग और सहायता से हरिभाऊ ने सन् १९२५ म "सस्ता साहित्य मडल की स्थापना की । जिनदिनो की यह बात है उन दिना हिन्दी पुस्तको का विक्रय अत्यन्त सीमित तथा अनिश्चित था । हमारा

दुर्भाग्य है कि आज भी हिन्दी पुस्तकों की खपत बहुत कम है। पर उन दिनों तो ऐसा प्रतीत होता था कि हरिभाऊजी 'सस्ता साहित्य मंडल' खोल कर एक दुस्साहस का काम कर रहे हैं। पर, वे प्रतिकूलता से पराजित नहीं हुए। आज का वर्धिष्णु "सस्ता साहित्य मंडल" हरिभाऊजी की लगन, निष्ठा, परिश्रम और कल्पना शीलता का परिणाम है। मैं यह नहीं कहता कि अन्य जनों का श्रम उसके निर्माण में नहीं है। (आयुष्मान् भाई मार्तण्ड उपाध्याय ने, हरिभाऊजी के उपरान्त, अपने स्वेद से उसे सींचा है) अन्य मित्रों का भी सहयोग उसे प्राप्त है। बिड़लाजी का आश्वासन प्रद हस्त तो उसके ऊपर है ही। पर मेरे कहने का सार यह है कि "सस्ता साहित्य मंडल" संस्था पूज्य हरिभाऊजी की दूर दृष्टि, परिश्रमशीलता, सहकार क्षमता और निष्ठा का परिणाम है।

"त्यागभूमि" नामक मासिक पत्रिका का स्थान हिन्दी मासिक साहित्य में आज भी गणनीय है। आज भी हम "त्यागभूमि" का स्मरण आदरपूर्वक करते हैं। वह पत्रिका हरिभाऊजी की लेखनी की उदाहरण थी।

सस्ता साहित्य मंडल की स्थापना के उपरान्त हरिभाऊजी का रचनात्मक कार्य क्षेत्र दिनों दिन बढ़ने लगा। अजमेर के पास हटूंडी नामक स्थान में सन् १९२७ में उन्होंने गांधी आश्रम की स्थापना की। सन् १९२६ से ही हरिभाऊजी ने राजस्थान को अपना कार्य क्षेत्र बना लिया था। उस सन् में वे वहाँ खादी, हरिजन सेवा, आदि रचनात्मक प्रवृत्तियों को प्रोत्साहन देने के लिए, जमनालालजी की प्रेरणा से चले गये थे। दो तीन वर्ष वहां कार्य करने के उपरान्त वे सक्रिय रूप में कांग्रेस राजनीति में भाग लेने लगे। सन् १९२९ में वे मध्य-भारत राजपूताना अजमेर-मेरवाड़ा प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के प्रधान मंत्री चुने गए। अब हरिभाऊजी का कार्य क्षेत्र विस्तृत, व्यापक हो चुका था। वे केवल रचनात्मक राजनैतिक क्षेत्र के मुख्य संचालकों में परिगणित होने लगे। वे अनेक बार—सन् १९३०, १९३२ तथा १९४२ में—जेल यात्रा कर चुके हैं। वे हमारे स्वातन्त्र्य संग्राम के विदग्ध सेनानियों में हैं। कारागार से छूटने के उपरान्त सन् १९४५ में उन्होंने हटूंडी (अजमेर) में 'महिला शिक्षा सदन' की स्थापना की। इसकी देखरेख हरिभाऊजी की पत्नी श्रीमती भागीरथी उपाध्याय अत्यन्त परिश्रम और कुशलतापूर्वक कर रही हैं। यह संस्था भी हरिभाऊजी के रचनात्मक सामर्थ्य का उदाहरण है।

स्वातन्त्र्य युग के उपरान्त हरिभाऊजी ने सत्तापरक शासनात्मक राजनीति में भी उल्लेखनीय भाग लिया है। वे हमारे राष्ट्र के प्रथम साधारण चुनाव में अजमेर की विधान सभा के सदस्य चुने गये। सन् १९५२ में वे अजमेर शासन के मुख्य मंत्री बने। तदुपरान्त गत साधारण चुनावों में वे फिर विधान सभा के सदस्य चुने गए और इस समय राजस्थान शासन के वित्त मंत्री हैं। अजमेर मेरवाड़ा का प्रदेश राजस्थान प्रदेश में विलीन हो गया है।

हरिभाऊजी का कार्य क्षेत्र विस्तीर्ण रहा है। जो स्थान उनकी कर्म भूमि रहे वे स्वातन्त्र्य प्राप्ति के पूर्व अधिकतर देशी राज्य कहे जाते थे। राजस्थान तथा मध्य भारत ही हरिभाऊजी के कर्म स्थल रहे हैं। ये दोनों प्रदेश राजनैतिक दृष्टि से तत्कालीन ब्रिटिश भारत की अपेक्षा पिछड़े प्रदेश कहे जाते थे और पिछड़े हुए थे भी। ये न केवल पिछड़े प्रदेश थे, अपितु परिस्थितियां वहां कुछ ऐसी थीं कि राजनैतिक कार्य करना

प्राय सभव नही था । इन प्रन्शो म उन्होन रचनात्मक काय का मूत्रपात किया ग्रौर शनै शनै राजनतिक जागरण का सदेश तत्-स्थत प्रदेशवासियो को सुनाया ।

उदयपुर के बिजोलिया ठिकाने के जन समूह म "वन्दे मातरम्' के उन्बोधक तथा राजनतिक चेतना के प्रथम निर्भीक प्रचारक स्वर्गीय भाई विजयसिंह पथिक थ । पथिकजी निश्चय ही बडे कमठ ग्रौर लगन के व्यक्ति थे । जब वृद्ध राजस्थानी मित्रा ने पथिक जी का विरोध ग्रारम्भ किया तो स्वय बापू न पथिक जी के सम्बन्ध म लिखा था (Pathik is a worker, others are talkers) पथिक कमनिष्ठ व्यक्ति है, ग्रय जन केवल बात बनाते हैं । हरिभाऊजी से पथिकजी को सहयोग मिला । हरिभाऊजी न बिजोलिया, धौलपुर, बीकानेर इन्दौर, ग्रादि सस्थाना की राजनीति म प्रमुख रूप से कार्य किया । देशी राज्या की प्रजा के ग्रान्दोलना म हरिभाऊजी सदा ग्रग्रणी रहे ।

दशी राज्या म प्रतिकूल परिस्थितियाँ थीं । हरिभाऊजी उनसे विचलित नही हुए । एसी स्थितियो म काम करने वाले को सूभ-बूभ ग्रौर दूरदर्शिता स काम लेना पडता है । हरिभाऊजी ने उन विपरीतताग्रा ग्रौर प्रतिकूलताग्रो म भी काम किया ग्रौर राजनतिक जागरण को उन सोये हुए प्रान्ता म पहुचाया । यह बात उनकी कुशलता काय-क्षमता तथा दूरदर्शिता की परिचायक है । एसी परिस्थितिया म कायकर्ता या तो ग्रति उग्रतावान हो जाते हैं या दिङ्मूढ ग्रौर हताश होकर बैठे रहते हैं । हरिभाऊजी सतत कायरत रहे । निरालस भाव से, निष्ठापूवक व काय करते गए । स्थानीय कायकर्ताग्रो का मागदशन करते रहे । सगठन का स्वरूप खडा किया । देशी राज्यो की प्रजा की राजनतिक भावना को मुखरित होने का ग्रवसर प्रदान किया । य सब काय—राजनतिक, सामाजिक, सगठनात्मक, सस्था निर्माणपरक—हरिभाऊजी की काय-क्षमता के द्योतक हैं ।

थोडे म मैंने उनके जीवन की मुख्य घटनाग्रो को देने का प्रयास किया है । उनके साहित्यिक एव रचनात्मक कार्यों का किंचिन्मात्र परिचय पाठक प्राप्त कर सकेंगे । पर मुझे सदा यह ग्रनुभव होता रहा है कि हरिभाऊजी का मानव उनके कार्यों से भी बडा है । वे स्वय सत् ग्राचार के एकनिष्ट उपासक हैं । पर, वे उतकठ धुकाठ नही हैं । वे क्षमाशील तथा उदार जन हैं । जो व्यक्ति चरित्रवान होना हैं वह थोडा ग्रनुदार हो जाता है । दूसरा के ग्रवगुण देखकर वह ग्रसहनशील हो उठता है । हरिभाऊजी म यह कट्टरता नही है । ग्रपने से निकट से निकट के जनो का पदस्खलन वे शान्तिपूवक सहते हैं ग्रौर ग्रपने उदाहरण से उन्हे ठीक माग ग्रहण करने की प्ररणा प्रदान करते हैं ।

ग्रपरिग्रह को उन्होंने ग्रपनाया है । वे एक निष्कांचन ब्राह्मण परिवार म जन्मे । ग्रत्यन्त नि साधनता म उन्होने जीवन ग्रारम्भ किया । ग्राज भी उनकी ग्रवस्था एक निधन, नि साधन ब्राह्मण की सी है । उनका यह विश्वास है कि 'तीन गाठ कोपीन मे, ग्रर भाजी बिन लौन, तुलसी रघुवर ग्रासरे इन्द्र बापुरो कौन ?' वे ग्रसग भाव से काम करते हैं । सेवा के मेवा की मिठास की उन्होने कभी इच्छा नही की । यदच्छया यदि सेवा के फलस्वरूप मेवा मिला तो उन्होने "इद न मम" का मन्त्र जपकर उसे भगवत् प्रसाद के रूप म ग्रहण किया ।

गाधी विचार धारा मे उन्होंने गहरे प्रवेश किया है । पर उनका मानस मुक्त है । वह काराबद्ध नही है । ग्राज भी व ग्रन्य विचारा को तौल सकते हैं ग्रौर उनम जो कुछ मगलमय ग्रौर कल्याण-कर है उसे ग्रहण करने मे उन्ह रचमात्र भी सकोच नही ।●

रामनिवास मिर्धा

# बेजोड़ व्यक्तित्व

श्री जयनारायण व्यास का जन्म १८९८ में एक पुरातनपंथी ब्राह्मण कुल में हुआ था। वे जोधपुर के रेलवे दफ्तर में काम करने वाले श्री सेवाराम जी व्यास के इकलौते बेटे थे। उनकी माताजी का कुल कट्टर पुरातन पंथी था। सुप्रसिद्ध चंडू पंचांग जन्त्री के प्रवर्तक का वह कुल उत्तराधिकारी था। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा अपनी बिरादरी की एक पोशाला में हुई थी। मैं यह सब चर्चा यह दिखलाने के लिये कर रहा हूँ कि ऐसे नैष्ठिक कुल में जन्म लेने और ऐसी पोशाला में पलने व पढ़ने वाला कैसा विद्रोही बन गया। व्यासजी केवल राजनैतिक दृष्टि से ही क्रान्तिकारी न थे प्रत्युत सामाजिक दृष्टि से भी बड़े विद्रोही थे। सब नेताओं के सम्बन्ध में ऐसा नहीं कहा जा सकता। वे राजनीतिक दृष्टि से कैसे भी क्रान्तिकारी क्यों न थे परन्तु वे अपने सामाजिक जीवन में वैसा क्रान्तिकारी दृष्टिकोण नहीं अपना सके।

मैट्रिक की परीक्षा में उत्तीर्ण होने के बाद व्यासजी ने जोधपुर रेलवे में नौकरी कर ली। उसको छोड़कर वे अध्यापक बन गये। अध्यापक का पेशा अपनाने से वे मास्टर साब कहलाने लगे। प्रथम विश्व-युद्ध (१९१४-१८) के बाद भारत और बाहर के देशों में जो राजनीतिक और सामाजिक उथल पुथल हुई उसका व्यासजी पर गहरा असर पड़ा। उनकी अपनी बिरादरी और समाज की धार्मिक कट्टरता ने उन्हें विद्रोही बना दिया। वह समाज का पूरी तरह काया पलट करना चाहते थे जिसमें सामाजिक सुधार के लिये आन्दोलन के अतिरिक्त राजनीतिक परिवर्तन की भी जरूरत थी। और इसी उद्देश्य से उन्होंने १९[illegible] में श्री मारवाड़ हितकारिणी सभा की स्थापना की।

इस तरह मारवाड़ राज्य में राजनीतिक आन्दोलन का बीजारोपण हुआ। व्यासजी ने [illegible] से प्रकाशित होने वाले साप्ताहिक पत्र 'तरुण राजस्थान' का सम्पादन किया वह उनके निर्भीक [illegible] लेखों के कारण शीघ्र ही लोकप्रिय बन गया। १९२७ में शुरू किये गये आन्दोलन के [illegible] एक निर्भीक सम्पादकीय लेख के कारण उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। अपने दो [illegible] आनन्दराजजी सुराणा और श्री भंवरलालजी सराफ के साथ अदालत ने उन्हें ६ वर्ष [illegible] दी, जिसको अपील में चीफ कोर्ट ने हटाकर २॥ वर्ष कर दिया। अपने जीवनकाल में [illegible] यात्रायें कीं। उनमें यह पहली और लम्बी थी।

१६३० मे गाधी इरविन समझौते के फलस्वरूप व्यासजी का अवधि पूरी होने से पहले ही साथियों सहित रिहा कर दिया गया। लेकिन १६३१ मे समझौता टूट जाने पर सत्याग्रह फिर शुरू हो गया। व्यासजी ब्यावर मे गिरफ्तार कर लिये गय और उनको एक वप की कडी कैद की सजा दी गई। उसको उन्होंने अजमेर सेन्ट्रल जेल मे बिताया। १६३३ मे अपनी रिहाई के बाद वह दिल्ली चले गये। कुछ समय वहा रहे। वाद म अपनी गतिविधियो का केन्द्र बम्बई बनाया। १६३६ मे उन्होंने बम्बई से 'अखण्ड भारत' नाम का हिन्दी दनिक पत्र निकाला उनके जोरदार जोशीले और निर्भीक सम्पादन के कारण शीघ्र ही पत्र रियासती जन आन्दोलन की आवाज बन गया। उसके महत्वपूर्ण प्रभाव तथा लोकप्रियता का पता इसी से लग जाता है कि राजस्थान की प्राय सभी रियासतो मे उस पर प्रतिबन्द लगा दिया गया था।

१६३६ मे मारवाड लोकपरिषद की स्थापना हुई और जब व्यास जी १६३८ मे जोधपुर लौटे तो उन्होने उसका नेतृत्व अपने हाथ म ले लिया। १६४० मे जोधपुर राज्य मे एक केन्द्रीय सलाहकार बोड की स्थापना हुई, जिसमें व्यास जी को सरकार की ओर से नामजद किया गया। उन्होने बोड की सदस्यता यह सोचकर स्वीकार की थी कि वह राज्य को कुछ रचनात्मक सहयोग दे सकेंगे। लेकिन उन्होंने यह सारी योजना खोखली पाई तो उसको छोडकर चले गये।

*जोधपुर सरकार ने व्यास जी और उनके ६ साथियो को गिरफ्तार करके बस्तियो से दूर जगली किलों* म नजरबन्द कर दिया। दरबार के इस काले कारनामे की जनता म प्रतिकूल प्रतिक्रिया हुई, और उनकी रिहाई के लिये आन्दोलन छिड गया। तीन माह की नजरबन्दी के बाद उन्हें रिहा कर दिया गया। रिहा होते ही रियासत के अंग्रेज दिवान के साथ समझौता वार्ता शुरू हो गई। समझौता वार्ता असफल रहने पर १६४२ म उत्तरदायी शासन के लिये सत्याग्रह फिर शुरू कर दिया गया। व्यास जी और उनके साथी फिर गिरफ्तार कर लिय गये। और १६४५ तक जेल मे रहे।

लोगो के दिमाग मे यह बात बिठा दी गई कि व्यास जी अच्छे आन्दोलन कारी तो हैं परन्तु प्रशासन की दृष्टि से सफल नही हो सकते। इतनी अल्प अवधि मे उन्होने और उनकी सरकार ने जो महत्व पूर्ण काय किये उनसे इस भ्रम का स्वत ही निराकरण हो गया। अत्यन्त आवश्यक भूमि सुधार के साथ *व्यास जी ने शिक्षा के विस्तार पर विशेष जोर दिया और ६ से ११ वय की आयु के बच्चो के लिये* अनिवाय शिक्षा की योजना भी चालू की। एक इजीनियरिंग कालेज कायम करने की योजना तैयार की गई और एक नई रेलवे लाइन के निर्माण का भी कायक्रम बनाया गया। आयकर चालू किया गया और नियमित रूप से काम करन वाला आकाशवाणी केन्द्र भी स्थापित किया गया। जिलो की शासन प्रणाली मे परिवतन करके उसको आधुनिक ढाचो मे ढाला गया। व्यास जी ने इस प्रकार जिस लोकप्रियता व तेजी से सुधार के काम किय और जिस रीति नीति का अवलम्बन किया उससे अधिक कोई भी भावी सरकार विशेष प्रगति या विकास नही कर सकी।

राजस्थान सघ के निर्माण के बाद राज्य के इतिहास मे एक नया अध्याय शुरू हुआ। यदि केवल कुबानी और लोक प्रियता ही किसी उच्चपद की प्राप्ति की कसौटी होती तो व्यास जी निश्चय ही राजस्थान

के मुख्य मन्त्री बने होते । इस तथ्य को रहस्यमय बनाये रखने का कोई मतलब नहीं है, उनकी और लौह पुरूष सरदार वल्लबभाई पटेल की आपस मे नही पटी । सरदार पटेल उन दिनो मे केन्द्रीय गृह मन्त्री और रियासतविभाग के भी कर्ता धर्ता थे । व्यास जी और उनके साथियो के विरुद्ध जोधपुर मे फौजदारी के मामले चलाये गये । वे मिथ्या निराधार और द्वेष पूर्ण थे । वह दो विशिष्ट विभूतिया के बीच का सघर्ष था । दोनो की अपनी अपनी विशेषतायें थी । परस्पर विरोधी निम्नस्तर और जोड तोड की राजनीति पर निर्भर रहने वाला व्यक्ति सरदार पटेल के साथ समझौता या जी हज़ूरी करके राजनीतिक क्षेत्र मे अपना स्थान सुरक्षित रख सकता था । लेकिन व्यास जी वैसे नही थे । वे बहुत साहसी और गम्भीर थे । उनमे अपने उद्देश्य की सच्चाई के प्रति बडी गहरी आस्था थी । उसका परिणाम और उसके बाद जो कुछ हुआ वह सब विदित है ।

परिणाम स्वरूप व्यास जी राजस्थान के मुख्य मन्त्री बने । पहले आम चुनावो मे हारे, उप चुनाव म जीते फिर राजस्थान के मुख्य मन्त्री बने । १९५४ मे दलगत सघर्ष में मुख्य मन्त्री पद खो बठे । फिर ससद सदस्य बने यह सब विदित इतिहास है और उस पर विस्तार से प्रकाश डालने की आवश्यकता नही ।

राजस्थान मे बार बार मन्त्री मण्डल बदलते रहने से बडी सख्या मे मुख्य मन्त्रियो और मन्त्री मण्डल बनन का अपना ही लेखा जोखा है । व्यास जी उनमे अकेले ही ऐसे है जो पद छोडने के बाद भी लोकप्रिय बने रहे । और उन्होने अपने महत्व, को नही खोया । व्यास जी के व्यक्तित्व की एक विशेषता यह थी कि देश के राजनीतिक जीवन मे उनका महत्व प्रशासन और काग्रेस सगठन मे उच्च पद पर बने रहने पर निर्भर न था । वह ऐसी आकस्मिक घटना न थी जो क्षण भगुर होती है । इस दृष्टि से वह बेजोड और अपने ढग के अकेले ही थे । यह भी सर्वविदित है कि उन्होने १९६१ ६२ मे आम चुनावो म कुछ काग्रेसी उम्मीदवारो का खुलकर विरोध किया था । इसमे सन्देह नही कि उन्होंने अनुशासन भग किया । जिसकी अपेक्षा किसी मान्य काग्रेसी से नहीं की जा सकती । लेकिन उन्होंने ऐसा अपने आदर्श और सिद्धान्त की रक्षा के लिय ही किया था । इसी कारण छोटे बडे सभी काग्रेसियो और यहा तक कि काग्रेस उच्चसत्ता के कुछ सदस्यो न भी उनकी प्रशसा ही की थी ।

काग्रेस सही माने मे एक राजनीतिक दल नही है । वह एक विशाल व व्यापक आन्दोलन है । जिसमें वे सभी तत्व शामिल है जो राष्टीय जीवन मे असन्तुष्ट अथवा एक दूसरे से भिन्न मत रखने वाले कह जा सकते हैं । इसी मे उसकी शक्ति और कमजोरी निहित है । । काग्रेस सरीखी सस्थाओ को बल या शक्ति ऐसे लोगा से नही मिलती जा उसमे सामान्य सगति बिठाने मे लगे रहते हैं । प्रत्युत्त उनसे मिलनी है जो सारी स्थिति पर नतिक एव व्यापक दृष्टि से विचार करके अपने, कर्तव्य कम निश्चित करते हैं ।

व्यास जी हम म से उठ गये परन्तु उनका आदर्श और व्यक्तित्व हममे विद्यमान है। भविष्य मे सदा ही उनकी स असदिग्ध इमानदारी और सच्चाई हम निरन्तर प्रेरणा देती रहेगी । उनकी इमानदारी केवल बाहरी दिखावे और व्यवहार की नहीं थी, प्रत्युत वह उनके दिल और दिमाग मे ऐसी व्यापी थी कि किसी भी ज्यादती के सामने झुकना और ताड जोड बिठाकर जसे तैसे अपना मतलब साधना वह जानते ही न थे । हमें अपन विचारा और जरा दृष्टिपात करके यह देखना चाहिय कि क्या किसी भी राजनीतिक दल में ऐसा कोई राजनीतिज्ञ है जो उनकी प्रेरणा के स्रोत हो उन जसा कोई नहीं दीख पडता । क्या कोई इस कसौटी पर पूरा उतर सकता है ? ●

बेजोड़ व्यक्तित्व

C

Shri V P Naik

# Shri Mohanlal Sukhadia A Man of Robust Commonsense

Shri Mohan Lal Sukhadia has been in active politics for nearly thirty years now Inspired by the teachings of Gandhiji and Pandit Jawahar Lal Nehru in his young days, he was an ardent freedom-fighter in the 42 movement, which shook the foundations of the British Empire The great services he has rendered to Raja than as a leading worker of the Mewar State Praja Mandal in the pre-Independence days were most valuable and it was in the fitness of things that a leader of his experience and standing wasi ncluded in the first Rajasthan Ministry in 1948 His three terms as Chief Minister of the State only show the great confidence placed in him by the Congress Party and the people of the State

Under his leadership Rajasthan has taken big strides in many fields It is most gratifying that as a result of the land reforms and agricultural improvement programmes Rajasthan which was one time deficit State in foodgrains, is today producing a a sizeable surplus

Rajasthan and Maharashtra have much in common, Geographically, both the regions have a rugged countryside and an unfavourable soil-climate complex, which make agricultural development rather a difficult proposition Historically the Rajput and the Mahathas were the sentinels of India s freedom throughout history and have played a glorious part in defending her honour and integrity against foreign invaders In the recent war with Pakistan Rajasthan, along with the Punjab, bore the main brunt of vile aggression The people of Rajasthan under the inspiring leadership of Shri Mohan Lalji, faced the aggressor in a most disci

plined and courageous manner, for which the nation is not only grateful to Rajasthan and its able Chief Minister but is also proud of their heroic conduct

In recent years, I have had many occasions to know Shri Mohan Lalji from a close quarter, We have met in many conferences and meetings and what impressed me most about Shri Mohan Lalji was his straight forward approach to various problems and his candid frankness He is a man of robust commonsense and has almost unerring judgement of men and matters He does not mince matters and speaks his mind without any fear or favour These qualities in him have always been a great source of strength to his colleagues and co workers With his long experience of public affairs and Government administration, Shri Mohan Lalji s word carries weight and he can be relied upon for guidance He is essentially a man of action and the formidable effort he has made to develop his State, which suffered from many handicaps, will be always remembered by his people and also by the country as a whole with a feeling of gratitude to him I know he loves his people as much as they love him

An able administrator and a leader of the people, Shri Mohan Lalji is a good friend and I set a great store by my friendship with him On his 50th birthday he can look back to the years that have gone by with a feeling of quiet satisfaction and fulfilment for having done his duty to the nation as best as he could On this happy occasion, I wish him many happy returns and a long life ●

*Be to the world as the lion in fearlessness and lordship, as the camel in patience and service as the cow in quiet, for bearing and material beneficence Raven on all joys of God as a lion over its prey, but bring also all humanity into that infinite field of luxurious ecstacy to wallow there and to pasture*
*—Sri Aurobindo*

*There is no substitute for hard work*
*—Thomas A Edison*

डा० रामसुभग सिंह

# गौरव भूमि राजस्थान और सुखाडिया जी

राजस्थान ! यह नाम आते ही अपनी आन और मर्यादा पर मर मिटने वाले वीर राजस्थानी योद्धाओं तथा पतिव्रत की प्रतिमूर्ति राजस्थानी वीरांगनाओं की छवियां मानस पटल पर उभर आती है । जाज्वल्यमान देश भक्ति वीरता और शौर्य की स्वप्निल घाटियों से परिपूर्ण राजस्थान की वीरप्रसू भूमि भारतीय इतिहास का ऐसा भाग है, जिस पर हम सदैव गर्व रहा है और जो भावी पीढियां को भी प्रेरणा देता रहेगा । राणा सांगा की वीरता, राणा प्रताप का प्रण, शक्तिसिंह का भातृ प्रेम, पृथ्वीराज चौहान का औदार्य, हमीर का हठ, पद्मिनी का जौहर, पन्ना धाय की स्वामी भक्ति और भामाशाह का दान ये सभी इतिहास के गौरव पूर्ण पृष्ठ है । आज भी इनकी गाथायें हमारे लिये रोमांचक तेजस्विता का स्रोत है ।

आज जो वृहत्तर राजस्थान हम देखते हैं वह कई चरणों मे वर्तमान रूप में आया है । सबसे पहले अलवर, भरतपुर, धौलपुर और करौली को मिलाकर मत्स्य संघ बना । उसके एक सप्ताह बाद बांसवाडा, बूंदी, डूंगरपुर, झालावाड, किशनगढ, शाहपुरा और टोंक राज्यों को मिलाकर राजस्थान संघ की स्थापना हुई । उसके तीन दिन बाद ही महाराणा उदयपुर ने राजस्थान मे शामिल होने का निश्चय किया । उदयपुर में राजधानी बनाकर नये राजस्थान संघ का उद्घाटन १० अप्रेल १९४८ को हुआ । चार बडी रियासतें जयपुर, जोधपुर, बीकानेर और जैसलमेर बाद मे मार्च, १९४९ मे राजस्थान में शामिल हुई और इस प्रकार मार्च १९४९ मे बृहत्तर राजस्थान बना । उसके दो महीने के भीतर ही मत्स्य संघ भी राजस्थान मे मिल गया और आज हम जिस राजस्थान के दर्शन करते है उसका स्वरूप राज्य पुनर्गठन आयोग ने निर्धारित किया जिसमे छोटे बडे २२ राज्य और अजमेर का केन्द्र प्रशासित क्षेत्र भी शामिल है ।

इन छोटे बडे राज्यो को मिलाकर एक सुगठित प्रशासकीय इकाई बनाना अपने आप मे बडा भारी काम था क्योंकि असमानतायें विद्यमान थी । सैकडो वर्षों से पृथक अस्तित्व बनाये हुए चले आ रहे छोटे-बडे इन राज्यो मे से कुछ काफी प्रगतिशील थे जिनका उज्ज्वल इतिहास था और कुछ पीछे पडे हुए थे । इनकी सब आतरिक असमानतायें दूर करके एक प्रशासनिक व्यवस्था मे उनका सुगुम्फन करना था । यही नही राजस्थान को शेष भारत के साथ प्रगति की दौड मे भी उचित हिस्सा बटाना था । इस प्रकार राजस्थान को दुहरा काम करना था । उसे अपने आर्थिक और सामाजिक जीवन से सामन्ती अवशेषो को सदा

सदा के लिए समाप्त करके एक प्रगतिशील राज्य बनाना था। यह काम राजस्थान ने बखूबी किया और आज राजस्थान के मुख्यमन्त्री श्री मोहनलाल जी सुखाडिया के नेतृत्व मे एक सुव्यवस्थित प्रशासकीय इकाई बन गया है।

राजस्थान निर्माण के प्रारम्भिक वर्षों में राज्य का प्रशासन बडा अस्थिर रहा। १९४९ से १९५४ तक पाच बार मुख्य मन्त्री बदल गये। आखिर १३ नवम्बर १९५४ का जब श्री सुखाडिया (उस समय आयु ३८ वर्ष) मुख्य मन्त्री बने तो वह अस्थिरता समाप्त हुई और तब से अब तक वह राजस्थान के प्रगतिरथ के सारथी की भाती बाधाओ से बचाते हुए चतुरता के साथ आगे बढाये जा रहे है। राजस्थान की खनिज सम्पदा का प्रयोग करके वे उसे एक सबल औद्योगिक राज्य बना रहे हैं।

सच्चाई के साथ कहा जाये तो आज का राजस्थान मुख्यत श्री सुखाडिया जी के युवकोचित प्रेरक नेतृत्व तथा कमठता का ही परिणाम है। जब वे मुख्य मन्त्री बने थे, तो राजनीतिक अस्थिरता चरम सीमा पर थी, चोरो तथा रेगिस्तान के डाकूओ की तूती बोलती थी तो गावो मे जागीरदारो, जमीदारो एव रिश्तदारो व सामन्तवाद के अन्य अवशेषो का बोलबाला था और प्रशासन मे तो अराजकता ही फली थी। ऐसी अवस्था को ठीक ढर्रे पर लाना एक भारी काम था जिसे सुखाडिया जी ने बहुत ही साहस, दूरदर्शिता, लगन और कमठता से सम्भाला है। उन्होने सामाजिक आर्थिक क्रांति की ऐसी नीव डाल दी है जिस पर प्रगतिशील राजस्थान का सुन्दर भवन खडा हो सकेगा।

सुखाडिया जी ने यह सब कुछ जादू की छडी से नहीं किया है, वरन् अपने सौम्य, दृढव्रती, सघर्षजयी, निर्णय-पटु, व्यवहार-कुशल व्यक्तित्व एव मेहनत की चक्की जोतकर किया है। वे राजस्थान के रेगिस्तान से लकर खारों तक चप्पे चप्पे मे घूमे हैं।

राजस्थान की वीरभूमि देशभक्ति और कमठता के ताने बाने से बनी हुई है जिसमे उसकी प्रखर सस्कृति, कला और साहित्य ने रग-बिरग परिवेश की चुनरी मे चार चाद लगा दिये। मुस्लिम शासन काल मे राजस्थानी सस्कृति एव कला पर कुछ मुस्लिम प्रभाव सा हुआ था जो स्थापत्य कला मे दिखता है किन्तु फिर भी इसका स्वरूप और अन्त चेतना पूर्णत स्वदेशी ही रही। यही कारण है कि सस्कृति साहित्य और कला सभी क्षेत्रो म राजस्थान की अपनी ही छाप रही है।

विकास और आर्थिक प्रगति के क्षेत्र म राजस्थान जिस मनायोग से जुटा है उसके फलस्वरूप आने वाले वर्षों मे राजस्थान का भविष्य बहुत उज्जवल है। सीमावर्ती राज्य होने के कारण राजस्थान की समूचे देश की रक्षा के प्रति एक विशिष्ट जुम्मेवारी भी है। विकास और रक्षा प्रयास के दोहरे उत्तरदायित्व को लेकर राजस्थान चल रहा है और जिस 'मनायोगपूर्वक राजस्थान के मुख्यमन्त्री श्री सुखाडियाजी इस काम म लग हुए है उससे मुझे पूर्ण विश्वास है कि राजस्थान कालान्तर मे न केवल अपना पूर्ण विकास करेगा, बल्कि आवश्यकतायें पूरी करने म पूरा पूरा हाथ बटा सकेगा।●

निरजन नाथ आचाय

# सामाजिक क्रान्ति के अगुआ

आज न जाने कितनी प्रिय अप्रिय घटनाओ से उठ कर अतीत की अमराइया म उतर आया हूँ। जीवन की डगर तो सभी पार करते हैं और इन पर रास्ता सुगमता से कट सके इसके प्रयत्न मे साथी की इच्छा भी करत है और कई-बार सफल भी हाते हैं, और तब प्यार की गू ज जीवन मे ध्वनित हो अधेरे और सुनसान गलियारो को गु जा देती है, आलोकित करती है। दिन प्रेरणा पा उठने हैं और रातें रातरानी सी महक उठती है। स्वप्न सी स्मतिया स्पन्दित ही नही करती कही आखो मे बस कर मन और आत्मा को रस प्लावित कर उठती हैं। ऐसी ही स्नेह सिक्त स्मृतियो मे मदहोश बना एक रसमय जीवन के प्रारम्भ की गाथा गू थने बैठा हू—

गम काफी की चाह मे था कि सूचना मिली सुखाडिया जी की तबियत कुछ खराब है। सीधा उनके निवास स्थान पर आया। देखा पास ही इन्दु बहिन बठी थी, जिनसे सटे हुए दो चार लडके लडकिया भी लेटे बैठे थ। मैंने कुछ उदासीनता भरी मुस्कान से नमस्ते की और तबियत क्या खराब है ? पूछने का औपचारिक प्रयत्न आरम्भ किया। उन्होने मुझे अपन पास ही बैठने का इशारा किया और एक भीनी मुस्कान म "ठीक है' कहकर उसी तरह बच्चो के साथ हसी ठिठाली करते रहे। इन्दु बहिन आवश्यकतानुसार हसती मुस्काती रही। हाँ, बच्चे अलबत्ता चहक रहे थे। कमरे का वातावरण खुशनुमा था। मेरा भावुक मन दूर भटक गया जहा इन्दु बहिन और सुखाडियाजी मेरे मानस पर उभर आये। तभी इन्दु बहिन की मीठी चुटकी से वास्तविकता की देहरी पर आया 'क्या सोचने लगे ? मैंने एक गहरी दृष्टि से श्री सुखाडियाजी की ओर देखा, जो उसी रहस्यमय दृष्टि के परिवेश से मुझे देखकर जसे अनुमति दे उठे थे 'कि अतीत की स्मृतिया के दीपक जब मन्द हो उठे तो याद की उगलियो से खिसका कर नवीन सुधियो का स्नेह आवश्यक हो जाता है फिर तुम आचायजी 'ऐसा प्रयास किस झिझक के कारण नही कर पा रहे हो ?" इन्दु बहिन हमारी मौन वार्ता को प्रश्नसूचक दृष्टि से देख रही थी। वे समज गई थी कि कही कुछ अतीत को उखाडने का प्रयत्न किया जा रहा है। जैसे कोई पीछे की डगर स पुकार उठा हो ऐस ही कुछ वे चौंकी, साथ ही सुखाडियाजी की मौन मुस्कान ने उन्हे और भी विचलित किया। 'यह सम्मिलित कारस्तानी कैसी ?" वे मुस्काने बिखेरती, हैरान होती रही। वे अनायास जान उठी की अवश्य मैंने उनके दापत्य

जीवन के प्रारम्भिक पृष्ठ पढ़ें नही तो सरसरी निगाह से देखें अवश्य हैं। वे कुछ ग्रस्त व्यस्त हो बोलीं "आप कहना क्या चाह रहे हैं ?' और यही मौन प्रश्न सकेत उन्होने सुखाडिया जी की ओर भी किया मैं एकाएक कुछ बोल न सका। क्योंकि कमरे म बैठी इन्दुबहन-नहीं बहुत पहले की छोटी-सी इन्दुबहन उभरआई थी। बीती अवस्था को समेटना, सहेजना फिर सजोकर सवारना उन्हे शायद अच्छा न लगे! वे सहज वाणी भुलाकर बोली साफ क्यो नही कहते ?" मैं एक सरम भोली और निश्छल मुस्कान उनके आनन पर भलकाना चाहता था ताकि मैं अपनी अनुभूतियो को अधिक सच्चाई और सरसता से व्यक्त कर सकू ।

उन्होने अपनी बचाव प्रेरणा से सुखाडिया जी की ओर देखा कि शायद वहा का किला उनके लिये आरक्षित हो, लेकिन उधर फली नटखट सी मुस्कान ने उनका यह भ्रम एक निमिष मे ही तोड डाला और वे सब समझ गई। पराजित सी बोली 'लगता है कही कुछ इन्होने ही कह दिया है' । कमरे का मौन घुटा वातावरण एकदम पुलकित हो उठा। हसी कह कहे इधर उधर बिखर गये। वे भी दबे-दब, हौले-हौल मुस्करा उठी। यह उनकी मौन स्वीकृति थी फिर भी आकृति पर रोप सा बिखरा था। मैंन अपनी विचार वीथिया मे स्वच्छन्द हिरन शावक की तरह चौकडी भरते हुए बेफिक्री म कहा क्या कहूँ इन्दु बहिन ! 'वही कबूतर वाला ! और सुखाडिया जी की ओर देखकर मुस्करा दिया। वे भी मुस्करा रहे थे, "क्या इन्दुजी !' फतह मेमोरियल मे बहुत वप पूव कोई युवक कबूतर लाया था क्या ? 'क्या ? कस कबूतर ? इन्दु बहिन ने फिर एक बार चुनौती दी फटकार स्वरूप। परन्तु अब इस फटकार में साहस कम और उत्सुकता अधिक थी। 'ये कुछ नही जान सकते' इस विश्वास की बाजी हार चुकी थी और मैं सुखाडिया जी के विश्वास का आश्वासन प्राप्त कर चुका पर हर पराजय को मुस्कान से और प्रत्येक विजय को उदारता से ग्रहण करना इस खानदान का गुण है। इसी गुण का प्रकाश इन्दु बहिन के अधरों से प्रस्फुटित हो उठा था। मैं फिर पुलकित भावनाओ म बह कर बोला 'क्या इन्दु बहिन ! किसी किशोरी ने एक बार किसी किशोर के हाथ की कलाई की केवल झलक ही देखी थी और वह मुग्ध हो उठी थी। कितना आश्चय होता है उस बुद्धि पर और उस सलौने भोलेपन पर !' वे आश्चय और विस्मय से भरी देखती रह गई। अब चेहरे पर फटकार का आभास नही था वहा किशोर रूप की सलौनी छटा छा रही थी। लेकिन अतीत की पगडडी पर वे अकेली उपहास्या बनने का तयार नही है। क्यो न उनके रहस्य प्रतीक—किशोर को भी भागीदार बनाया जाये ? अब दोनो का साथ साथ अपने विचारो के यान में बठा कर चालक की भूमिका मुझे सम्पादित करनी थी।

मैंने इन्दु बहिन के मोन विचरन को सन्तुष्ट करने के लिये सुखाडियाजी की ओर देखा जिसमे वे सिटपिटाए। क्योंकि वे समझ गय थे कि मेरा सकेत अब कहानी के दूसरे पहलू का पने वाला है। मैंन कह ही डाला 'गये थ आप शिकार करने उल्टे राजे गले पडे।' क्या इन्दु बहिन। ठीक है न। 'हा हा बिल्कुल ठीक है। उस समय इनकी हालत देखने के काबिल थी। क्यो अब चुप क्या हैं ? मैं अब ओभल होगया था और वे दोनों न जाने किस अलभ्य अबूझ सरसता म डूब उतरा रहे थे। जब वे ऊपरी सतह पर आये तो मैं बोला और इन्हें यह भी खतरा था कि अगर पसन्द न किय गय तब।' और हम तीना

मीठे सकेतो मे खोये थे कि कुछ ग्रात्मीय जन धीरे धीरे कब दशक बन कर पर्दे के ग्रास पास ग्रा बठे हम नही जान सके। लेकिन जब उन्होंने ग्रधिक स्पष्ट रूप से जानना चाहा तो इन्दु बहिन तो ग्रपने ग्रतीत की स्मृतियो म बौरा उठी, लेकिन सुखाडियाजी ने कुछ सकेतों का स्पष्टीकरण देना शायद कुछ ग्रशो मे ग्रावश्यक समझ कर कहा मई कुछ लोगो की मान्यता है कि मेरी शादी 'लव मरिज" है। इसी दृष्टिकोण स बाध्य होकर मैंने एक बार वाता म इसका कुछ जिक्र ग्राचायजी से किया था। उसी को लेकर ग्राज यह मिठास बाँट रहे हैं।' ग्रौर उसी सहज मुस्कान के साथ उन्होने बातो का सिलसिला एकदम दूसरी ग्रौर मोड दिया।

श्री सुखाडियाजी के ग्रत्यन्त निकट रहने पर भी उनके विवाह की वास्तविक रूपरेखा से मैं ग्रपरिचित सा ही था। लेकिन एक दिन सुखान्त क्षणो मे मैंने उन्ही के मुख से वास्तविक परिचय प्राप्त किया तो मैं उनके साहस से ग्रभिभूत रह गया। इन्दु बहिन के घराने मे सगीत ग्रौर कला वश परम्परा से पोषित रही है। यह घराना स्वरों की ग्रचना करता हुग्रा सगीत की ग्राराधना से सलग्न रहा। सगीत की हृदयग्राही उपासना मे हिन्दू मुस्लिम सस्कृतिया सदा से ही हर उपलब्धि को प्राप्त करने मे तन्मय रही है। ऐसे राग रजित माहौल म पली पढी ऐसी कलात्मक पृष्ठभूमि म ग्रकुरित, ग्रदब कायदा से ग्रनुशासित बालिका इन्दुजी एक दम विपरीत रुचिया को लेकर स्त्री शिक्षा, समाज सवा, ग्रादि की ग्रोर ग्रधिक ग्राकर्षित हुई। सगीत के ग्रारोह, ग्रवरोह के स्थान पर उन्हें ग्रविकसित महिला समाज के उत्थान मे रुचि ग्रधिक दिखाई दी। ग्रपना जीवन कला की सूक्ष्म कसौटियो पर खपा देने के बजाय महिला जागरण के सकल्प मे खपा देना ग्रधिक श्रेयस्कर समझा। इसीलिये बचपन से ही सौन्दय के साथ साथ शालीनता, तथा ग्रपरिमित गाम्भीर्य की स्वामिनी बनी जो उनके व्यक्तित्व का ठोस ग्रग है। समय के साथ साथ ग्रपनी रुचियो का परिचय ग्रपने परिवार को भी द दिया ग्रपनी शिक्षा ग्रादि म भी ग्रामूल परिवतन कराया। इनकी बडी बहिन रमा जीजी जो उस समय कलाविद होने पर भी ग्रपनी सामाजिक सेवाग्रो तथा लगन के कारण महिला जगत मे काफी नाम कमा रखा था बहिन के क्रिया कलापो का प्रभाव भी प्रत्यक्ष वा ग्रप्रत्यक्ष रूप से इन पर पडा था। वह उस समय वय सन्धि की सीमा पर खडी हुई थी। श्री सुखाडिया उन दिनो उदयपुर कालेज की शिक्षा समाप्त कर बम्बई मे इलेक्ट्रिकल टेक्नीक का विशेष ग्रध्ययन कर रहे थे ग्रौर विद्यार्थी समाज मे ग्रपना विशिष्ट स्थान बनाये हुए थे। इनके समक्ष भी मित्र गणो ने इन्दुजी के लिये योग्यवर की तलाश का प्रश्न रखा जिसे इन्होने बडे उत्तरदायित्व के साथ मजूर किया ग्रौर वर ढूढने म दत्तचित हो उठे।

उस समय जहा तक मैं समझता हू इन्दुजी के खानदान से श्री सुखाडियाजी का कोई भी निजी या सामाजिक सबध नही था हा कभी कभी रमा जीजी से ग्रवश्य समाज सेवा के क्षेत्र म मिलने जुलने का ग्रवसर प्राप्त हो जाता था परन्तु वह भी नितान्त ग्रौपचारिक।

सुखाडिया जी का स्वय का जीवन भी ग्रत्यन्त सरल व ग्राडम्बर रहित था वे जीवन की मजिल को ग्रासान समझते थ। जिन्दगी की पगडडी कितनी ग्राडी टेढी, है कितनी रहस्यमयी झाडिया हैं, कहीं फिसलन कहीं मोड, यह सब वे न जानते थे। ग्रात्मविश्वास से भरे हुए साहसिक, जीवन के चिन्तन का एक दाशनिक
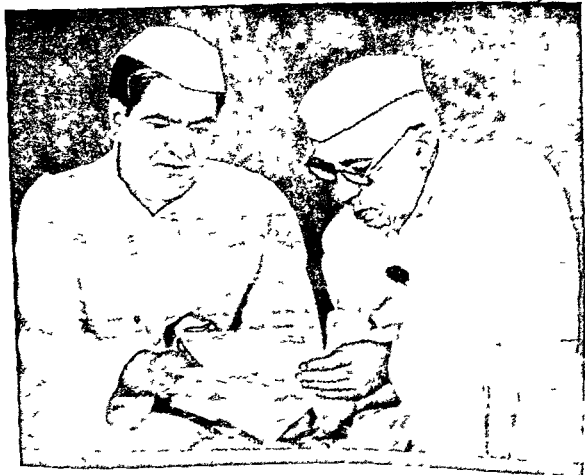
राजस्थान भारत का एक माने मे हृदय है। भारत का नक्शा देखा जब भी यह
उसका दिल सा है। इतिहास में भी रहा है। राजस्थान के भागों ने [illegible]
एक गाव से आकर यह निश्चय किया है कि वे इस [illegible]
के भार को अपने कंधों पर उठायेंगे। अब यह
जिम्मेदारी जनता के ऊपर आ गई है।
यह बहुत बड़ा काम है,
ऐतिहासिक काम है।
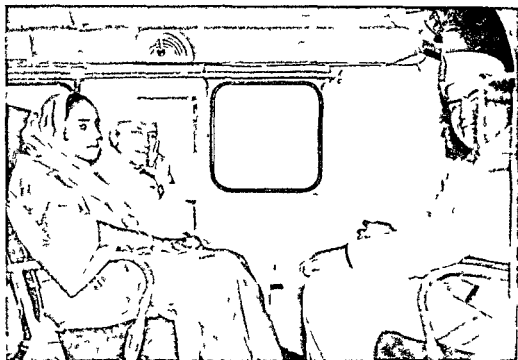
श्रीमती इ दुबाला सुखाडिया, प० जवाहरलाल नेहरू, श्री मोहनलाल सुखाडिया

पडितजी सुखाडियाजी के परिवार के बीच
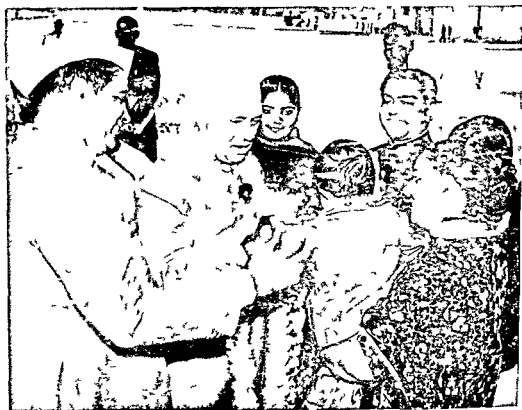
कालो-मन्दिर, चित्तौड

सवधर्मो समानत्व—

दरगाह शरीफ, अजमेर

मुखाडियाजी हर काम म समान रूप स दिलचस्पी लेते हैं

ग्राम राज्य देश की ग्रावश्यकता है—सर्वोदय कायक्रमो मे

शिक्षा हमारी संस्कृति और समाज की आवश्यकता के अनुरूप ना नमी यह साधन है।

कार्यरत मंदिर मगन विद्यालय में

आजादी के दीवाने प्रकृति की गोद म
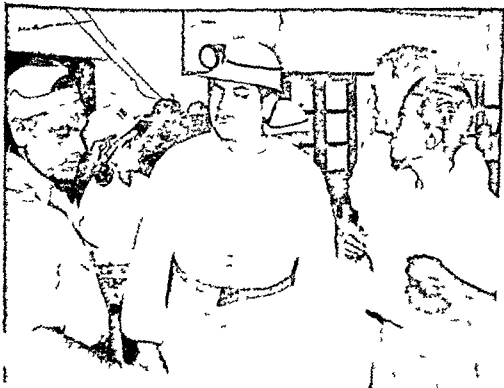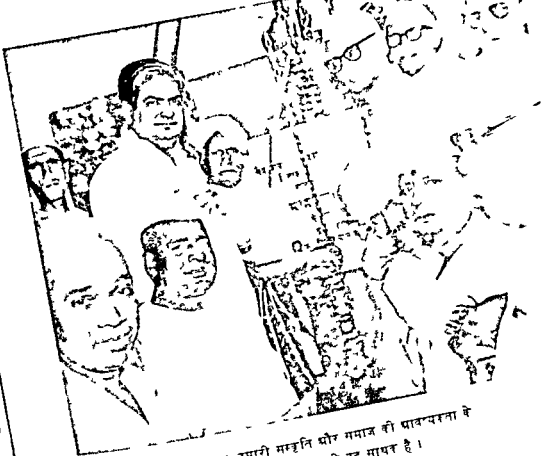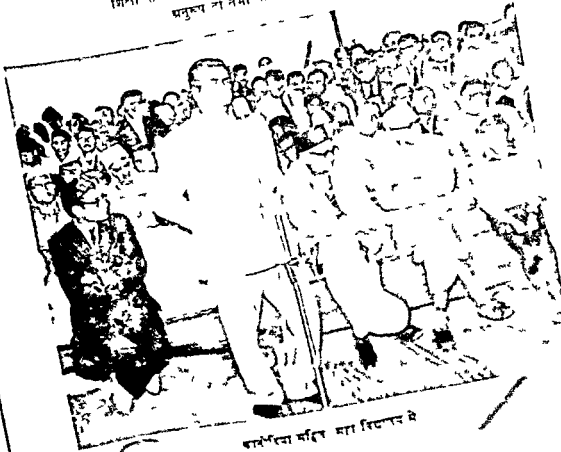
बजाज परिवार की राजस्थान में दिलचस्पी सब विदित है। उनके पुत्र श्री कमल नयन बजाज और श्री रामकृष्ण बजाज के साथ सुखाडिया-दम्पत्ति
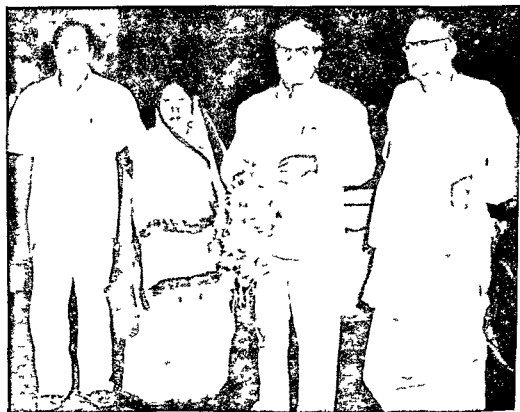
११ जून सन् १९३९ का यह क्रांतिकारी विवाह ब्यावर में संपन्न हुआ।

सुख हो या दुख दोनो को ही इन्होने उसी सहजता से झेला है ।

बापू—गाय को भारत की कामधेनु बनाने के लिये सतत प्रयत्नशील रहे।

बापू की कामधेनु श्री जमनालाल बजाज, जिन्होंने बापू की कल्पनाओं और आदर्शों को चरितार्थ करने में अपना जीवन लगा दिया ।
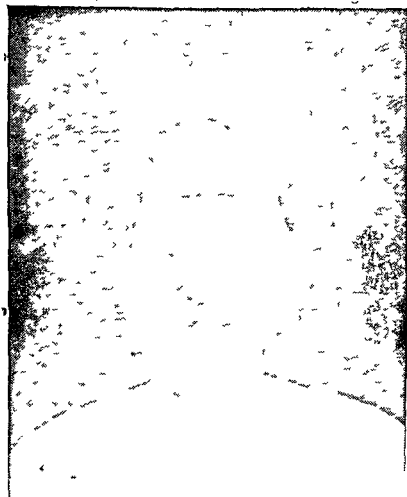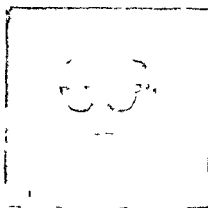
की भी भूमिका मे विश्लेषण करने वाले व्यक्ति थे। कई महीनो तक वह इष्ट मित्रो की सहायता से वर की तलाश मे रहे। चू कि इन्दुजी का खानदान वमव सम्पन्न था लोग इगलैंड तथा अमेरिका के अध्ययन का खच मागने लगे और सुखाडिया जी इन्दुजी के माता पिता को जानकारी देते रहे। लेकिन मनोनुकूल वर न मिला, तब मित्रों ने अप्रत्याशित रूप से उनके सामने उन्ही का नाम रखा बहुत आग्रह के साथ सुनकर वे आश्चय से सन्न रह गये। मित्रो से आग्रह वापिस लेने की माग की के साथ वापिस लेने की माग की। लेकिन सभी मित्रगण नय खून और नये जोश से ओत प्रोत थे। जब तक गर्मी की छुट्टिया रही यह आग्रह अत्यधिक तीव्र होता चला गया। सुखाडिया जी की मनोवृति इससे बदली। समाज म नई क्राति लाने के विचार उनके मानस को मथने लगे। नया विश्वास पुरानी मान्यताओ पर विजय पाने के लिए अकुला उठा। अन्तर्जातीय शादी कर वे अपने जीवन का एक बेहतरीन उदाहरण समाज के मच पर प्रस्तुत करने की दृढ़ता से तैयार हो उठे। लेकिन एक प्रश्न सकोच बन कर उनके मस्तिष्क पर हावी रहा जिस कन्या का वर ढूढने का प्रयास व अब तक अनवरत करते रहे और वर की कसौटी पर कोई भी खरा न उतर सका, कही ऐसा न हो कि वे अपने आपको प्रस्तुत करे और ना मजूर कर दिये जायें ? तब तो अपने ही सकल्पो मे वह टूट कर रह जायेंगे। यह उनके प्रारम्भिक साहसिक वृति के लिए हानिकारक होगा। दूसरा मथन उनका यह था, यदि वह इसम स्वीकृति प्राप्त कर लेते हैं तो धार्मिक मा यताओ से कसे हुए वैष्णव समाजी माता पिता की परम्परागत आस्थाओ तक कसे आशीर्वाद के लिय अपनी आवाज पहुचायेंगे ? आखिर कई दिनो के अन्तद्व द्वो के पश्चात उन्होने इन्दुजी से मिलना व उनके विचार जानना चाहा।

वह समय इनके लिए भयानक मानसिक द्वन्द्वो का था। जाने भविष्य क्या रूप लाये ? स्वीकृति का प्रश्न अलग। वह समय भी आया जब रमा जीजी के प्रयत्नो के द्वारा वे परिजनो से घिरी इन्दु बहन के समक्ष पहुँचे। अपनी शालीन सकोची और गम्भीर आदत के अनुसार इन्दुजी अपना चेहरा उठाकर न इनके चेहरे को ही देख सकी न सकोच के कारण अच्छी प्रकार बैठ ही सकी। यही स्थिति सरल स्वभाव सुखाडिया जी की भी हुई। इतना अवश्य उन्होंने इस थोडे से समय मे ही महसूस कर लिया कि इतनी सुन्दर, दक्ष, और शालीन लडकी उनको अपने समाज मे मिलना दुलभ है। इन्दुजी ने क्या देखा क्या सोचा कितना पाया, कितना खोया ?

आज पूछने पर तो इन्दु बहिन बस यही कहती है कि सुखाडिया जी को बिल्कुल नही देख सकी थी। केवल हाथ की कलाई, कोमल हथेली और कलात्मक उगलियो की रूपरेखा देखकर ही इनकी योग्यता सरलता और गर्भित व्यक्तित्व का अन्दाजा लगा कर स्वीकृत कर बैठी लेकिन सुखाडिया जी को यह पता उस दिन नहा चल सका। वे लौट कर फतह मेमोरियल मे आकर ठहर गये कि थोडी देर बाद छ या सात वष का बालक इनके पास आकर खडा हो गया। बच्चा बडा ही सुन्दर, खुशनुमा, इन्दुजी के चेहरे से नाक नक्श जसे चुराए हुए। उन्होंने बच्चे को पास बठाया, प्यार किया और आने का कारण जानना चाहा बच्चे को वे पहचान गये थे। बच्चे ने जसे स्नेह पाया तो वह इनके कोट के बटन से खेलता हुआ कुछ ठुनकते हुए प्यार से बोला "हमको भी एक कबूतर दो आप कबूतर लाये हैं।' बालक की विचित्र माग पर वे चौंके तथा विस्मय से भर उठे। कबूतर 'कौन से कबूतर मेरे पास तो कोई भी कबूतर नही है'। लाख बच्चे को

समझाया, लेकिन वह अपनी कबूतर की माग पर अटल रहा।" नही, आपके पास है। आप देते नहीं हैं। इन्दुजीजी ने बताया है कि आपके पास है और उन्होंने अपने लिए भी लाने को कहा है। इस आग्रह और रहस्योद्घाटन के साथ ही सुराडिया जी को उस नन्हे सदेशवाहक के प्रति और भी स्नेह उमडा और बोले 'अच्छा चलो तुम्हें बाजार से दिलवायें, हमारे पास तो अब खतम हो गये। और वे उस बाल हठ को पूर्ण करने बाजार चले।

आपको कोई तकलीफ तो यहा नही है, इन्दु जीजीने पूछा है रास्ते म चलते चलते वह बच्चा बोला "नही, वह दना अपनी जीजी से मुझे काई तकलीफ नहीं है यहा'। रास्ता कब पार हुआ, कबूतर खरीदा गया। बच्चा कब विदा हुआ, आदि जानकारी सुराडिया जी को नही हुई। वे तो केवल कबूतर की माग, सुख, सुविधा की चिन्ता का सदेश, बालक सदेशवाहक की हठ आदि को ही अपने हृदय की धडकनों मे बसाते रहे। तब क्या स्वीकृति पा चुका हूँ ? कबूतर प्रेम गाथाओ को लाने ले जाने वाला वाहक समझा गया है। बच्चा क्या माध्यम बनकर कोई पूर्व सूचना दे गया ?

किसी मित्र के आग्रह पूर्वक पूछने पर इसके पश्चात आपके मन एव मस्तिष्क की क्या प्रतिक्रिया हुई ? अपनी चिरपरिचित मुस्कान बिखेरते हुए उन्होने कहा कि कैसा क्या लगा ? बस समझ गया कि मुझे भी कोई सजोने वाला इस दुनिया म है, जो मेरी चिन्ता करता, मेरे जीवन की झाकी लेने को आतुर हो उठा है, और अत्यन्त सहज स्वाभाविक रूप से मेरा हृदय भी उसका वैसा ही प्रत्युत्तर देना चाहता था। आग भी वे कुछ कहना चाहते थे लेकिन कहानी के रूपक के लिऐ इतना ही पर्याप्त था।

राजनीति की बीहड मे इतना समय निकल गया और अधूरे प्रकरण को स्मृतियो मे बाधने का समय ही न ले सका। एक दिन फिर मैंने इस सस्मरण का अधूरा भाव सुधियो के तारा म पिराने के लिय उनसे विनीत आग्रह किया। कुछ देर तो वे मूक रहे, लेकिन मेरे निन्तर अनुरोध पर बोले क्या करोगे और अधिक जानकर। बस समझ लो कि इन्दु की स्वीकृति के पश्चात मुझे हर समय यह अनुभव होने लगा कि इसका लगाव मरे भावी जीवन से होगया है और अब मेरी उस परीक्षा का दिन करीब आ गया जब अपने परिवार स सामाजिक बन्धन से मुक्त होकर विवाह की स्वीकृति लेनी है तथा इधर उधर क विद्रोहो का धय व दृढता से मुकाबिला करना है। इसी उधेडबुन मे मैं बम्बई पुन अध्ययन हेतु आ गया। इन्दु के पत्र अब मेरे पास बराबर आते रहे। पत्रो मे भी इसकी भावनाए उसी के अनुरूप सरल सन्तुलित तथा औपचारिक मात्र होतीं। सभी पत्रा मे एक मात्र चिन्ता यही रहती कि मैं किसी भी प्रकार की तकलीफ न पाऊ कई पत्रो के आदान प्रदान के बाद उसने लिखा कि 'आपके माता पिता इस अन्तरजातीय विवाह की स्वीकृति देंगे भी या नही इस पर आप विचार करें।" जिसका उत्तर मैं अपने धैय व विवेक से देता रहा। लेकिन एक पत्र ने मुझे एकदम सहमा दिया। इन्दु ने लिखा कि यदि किसी कारण से हमारा विवाह स्वीकृत न हुआ तो वह आजीवन शादी नही करेगी। इस पत्र ने मेरे मस्तिष्क म भयानक उथल-पुथल मचादी। मैं विभ्रान्त सा हो उठा। एकाएक क्या उत्तर दू इस पत्र का, समझ ही नही सका। बहुत सोचने विचारने के बाद मैंने भी उसके इस पावन सकल्प का हृदय से आदर किया और अपने जीवन को भी इसी प्रकार

के संकल्प से अलंकृत किया। यही कुछ विचार मैंने लिखकर उसे भेज दिया। इधर मेरी इस शादी से उत्पन्न होने वाली परिस्थिति से मित्रगण भी चिन्तित थे। क्योंकि वे मेरी सभी विकट परिस्थितियों से परिचित थे। मित्रों की हमदर्दी मेरे साथ थी लेकिन माता पिता का आशीर्वाद पाना मेरे लिए दुष्कर काम था। पिताजी से स्वीकृति लेने का किसी में भी साहस न था। वे नाथद्वार में गोस्वामीजी के कृपा पात्रों में से थे और अच्छे पद पर थे। क्रिकेट के अच्छे खिलाड़ी होने के कारण देश में उनकी अच्छी ख्याति थी। गोस्वामी महाराज भी उनकी बड़ी इज्जत करते थे। इसलिए उनके पास जाकर शादी की स्वीकृति लेने की हिम्मत न पड़ी। हां, इसकी उड़ती उड़ती खबर जब उनके कानों में पड़ी और नाथद्वारे की गलियों, बाजारों, मन्दिरों में यह आम चर्चा जब उन्होंने सुनी तो मेरे मित्रों से इसकी जानकारी लेकर पूर्व पुष्टि करनी चाही। प्रगतिशील विचारों के तो वे थे, इतना मैं स्वयं भी जानता था, फिर भी समाज की मान्यताओं से तो वे बंधे ही थे। इस पर भी मुझे गर्व है यह बताते हुए कि जाति पांति के बंधन उनके मन, मस्तिष्क को परास्त नहीं कर पाते थे। हां यह सब सुनकर और मित्रों द्वारा मेरी इच्छा व दृढ़ निश्चय को जानकर वे मेरी मां की धारणा के प्रति चिन्तित हो उठे। क्योंकि वह कट्टर रूढ़िवादी थी। इसलिये मैं, मेरे मित्र और अब मेरे पिता भी अच्छी तरह समझ गये थे कि यदि उनको इस रहस्य का ज्ञान हो गया तो निश्चय ही उसका विरोध एक भयानक भूकम्प के सदृश्य होगा। अब पिताजी को सभी कुछ बताने तथा सलाह लेने में कोई हर्ज न था, क्योंकि जो भय था वह उन पर खुल ही गया था और उनकी स्वीकृति को मानो भी परोक्ष रूप से मैं पा ही गया था। लेकिन न जाने कौनसा भय था जो मेरी आत्मा में घर कर गया था। साथ ही दूसरी ओर एक ऐसी अविचलित दृढ़ता भी हृदय में समा गई थी कि मैं हर प्रकार के विरोध के बावजूद भी यह कदम उठाने को कृत संकल्प हो उठा। इधर इन्दु से भावनामय पत्राचार चल ही रहा था। झूठे प्रलोभनों में हम अपने घाव भरना नहीं चाहते थे। न ऐसा झूठा कोई सम्बोधन ही अपनाना चाहते थे जो नाकामयाब होकर हमारे जीवन को चिढ़ाता रहे। हम चाहते थे हमारा विवाह माता पिता की आज्ञा से सम्पन्न हो। समाज के विद्रोह को तो दबा लिया जायेगा, विद्रोह की सबसे अच्छी दवा समय है। ज्यों ज्यों समय बीतेगा बात धुंधली पड़ती जायेगी, जैसे तूफानी सांझ भी रात की गोद में सो जाती है लेकिन ये भावुक क्षण स्थाई नहीं हो पाते थे। जितना अधिक तसल्ली देता, उतनी ही अधिक चिन्ता सवार रहती।

एक बार शायद इन्दु से और मिलने का मौका मिला। असीम धीरज उसके आनन पर बिखरा था। वही निश्छल मुस्कान, अनायास छन छन कर आती मुस्कान। कितना असीम धैर्य तथा सन्तोष इसके मन के भीतर महकता है मैं अवश्य इस साथ पाकर अपनी मंजिल पूरी कर लूंगा मैंने सदैव अपनी रिक्तता को इस मुस्कान से भरने का प्रयास किया है। इसी प्रकार उलझन भरे दिन बीतते रहे। पत्रों के द्वारा इन्दु से धीरज और मित्रों से सहानुभूति पाता रहा। जब भी मन कमजोर होता, तभी इन्दु की सशक्त आकृति सहारा देने आ खड़ी होती और मैं उलझाव में मुक्ति, और एकान्त क्षणों की निरीह भावुकता से छुटकारा पा जाता। वह मेरा चरम सत्य का काल था और था एक सकारात्मक काल। मैं अकेला अपने हौसले पर प्रचलित परम्पराओं में बंधे समाज को चुनौती देने चला था। पिता की स्वीकृति मुझे प्राप्त थी और मैं

उनके चरणो मे आश्रय पा सका था, उनकी तनिक सी भी नाखुशी मेरे लिए घातक होती, जो जीवन को किसी बीहड मे फेंक देती। मैं इस समय भी सुनाते हुए विमोहित हो रहा हूँ अपने पिता के साहस एव दृढ निश्चय पर। उनकी सरस स्मृतिया आज भी मुझे विभोर कर देती है। आज पिता की स्वीकृति का पत्र मैं गवा चुका हूँ। यदि वह सुरक्षित होता तो मेरे पास उनकी वह बहुमूल्य धरोहर होती उस समय कौन जानता था कि भविष्य मे वह साधारण सा तथ्य इतना प्रेरणास्पद और अमूल्य बन जायेगा। पत्र म उन्होने लडकी देखने की इच्छा प्रगट की थी। और मा की और से शका उठाई थी। जिसका सकेत मैंने तुरन्त ही इन्दु को भी दे दिया, जिससे उसका घर भी अवगत हो जाये। मेरा अध्ययन अब समाप्त हो गया था अत मैं सीधा नाथद्वारा आ गया। इस विषम स्थिति मे भी पिता से मैंने वही स्नेह पाया जिस प्रकार का सदव पाता था किन्तु चाहे मा के विरोध की प्रति क्रिया हो चाहे स्वय की आत्मा के विरोध की, मैंने पाया उनके चेहरे की रेखाओ मैं कि मैं क्षमा नही प्राप्त कर सका हूँ। फिर भी शब्दो द्वारा उन्होंने कुछ भी मुझसे नही कहा और मैं नाथद्वारा मे कई दिनो तक उनके साथ रहा। माको अब सारे रहस्य का ज्ञान हो चुका था और उन्होने अपना विद्रोह प्रगट करना आरम्भ भी कर दिया था। यहा तक उन्होंने अपनी गम्भीर चुनौती दे दी कि यदि मैं वधु सहित नाथद्वारा लौटा तो वे आत्म हत्या कर लेंगी। किन्तु पिता की सहनशीलता इसे भी पी गई और माता का विरोध जोर पकडता गया। पिता का व्यवहार सन्तुलित रहा व मितभाषी थे। फिर ऐसे नाजुक मामले पर अधिक कहते भी क्या ?

"नाथद्वारे की सीमा म मेरी कल्पनायें ऊची ऊची उडाने भर रही थी। परन्तु अपने विवाह के प्रश्न को मैं तब तक आगे नही बढाना चाहता था जब तक यथा शक्ति परिवार की ओर से निश्चित न हो जाऊ और मा को थोडा शान्त न कर लू। इसीलिए मैं जल्दी म शादी करना नही चाहता था। थोडे दिनो के पश्चात् ही पिताजी का स्वास्थ्य गिरने लगा और इसके साथ ही इन्दु को देखने की लालसा भी उनकी तीव्रतर होती गई। लेकिन वे नाथद्वारा के विषम वातावरण और माताजी की विरोधी नीति के कारण उदयपुर जाने म बिल्कुल ही असमथ थे। और अब तो उनमे उदयपुर जाने की शक्ति भी नही रह गई थी। इसी द्वन्द्व मे वे सन् १९२३ म स्वगवासी हो गये और लाख इच्छा रहते हुए भी वे अन्त तक इन्दु को न देख सके। मैं इससे कितना सन्तापित हुआ यह मैं ही जानता हूँ। पिता की आड म तो मैं अपनी नई जिन्दगी को सुलझाने मे समथ पाता था। लेकिन अब तो सारी जिम्मेदारी मेरे ही कधो पर आ पडी। कुछ समय के लिये मैं एकदम दिशा-शून्य सा हो उठा। घर का विद्रोह बदस्तूर था। ऐसा भला कब तक चलता ? आखिर थोडे दिनो के पश्चात् मैंने विवाह करने का पक्का निश्चय कर लिया। माता के विरोध को विनम्रता से सहने का निश्चय कर मैंने विवाह कर लिया। मेरा यह विवाह मेवाड के सामाजिक जीवन मे क्रान्ति का पहला चरण था।

एक वश्य युवक जाति पाति के बन्धना को तोडकर वष्णव धम की परम्पराओ को छिन्न भिन्न कर रूढिगत मान्यताओ से विमुक्त होकर जीवन की एक नई दिशा म चल पडा था और ब्यावर के शिक्षित समाज म, विशिष्ट व्यक्तियो के प्रगतिशील सहयोग से यह विवाह वदिक रीति से सम्पन्न हुआ और उसने नौजवानो

के लिए एक रास्ता प्रशस्त किया । किन्तु नाथद्वारा मा के पास जाकर उनका आशीर्वाद पाना भी मेरा कर्तव्य था जो मुझे सबसे अधिक भयपूर्ण और मानसिक रूप से कष्टप्रद लग रहा था । लेकिन मुझ में रोष भी बडा था । जो मा मुझे बचपन से स्नेह से पालती रही हजारो कल्पनायें मेरे लिये सजोती रही, वही आज मुझ से मिलने मे आत्म ग्लानि और मेरा मुह देखने मे घृणा तथा मौत की सी अनुभूति कर उठी है । मेरे लिये यह बडी ही विषम परिस्थिति थी । इसमे मा का भी क्या दोष था ? वह ऐसे ही वातावरण मे पली थी । जीवन भर श्रीनाथ जी की भक्ति एव साधना म छुआछूत की पृष्ठभूमि म सतत सलग्न रही । वह भला मेरे इस विवाह से कैसे प्रसन्न होकर आशीर्वाद दे सकती थी ? और उसके व्यवहार के प्रति मेरा भी क्रोध कैसे शात हो सकता था ? दोनो ओर ही मजबूरी थी । दोनो ओर ही अपनी अपनी मान्यताओ के प्रति कर्तव्य था । आखिर एक ही विश्वास के बल पर मैं सन्तोष करके बैठ गया कि शायद मा का आज का आक्रोश कल आशीर्वाद बन उठे । इसी मानसिक विश्वास का सूत्र लेकर मैं उज्जवल भविष्य के अच्छे दिनो के इतजार मे चुप हो गया । मित्रो की सहायता व आग्रह से मैंने नाथद्वारा के समाज मे प्रवेश करने का निश्चय किया । क्योंकि मैं सामाजिक क्रान्ति का पालक बन चुका था राजनीति मे मैंने अभी तक प्रवेश नही किया था । मित्रो की मित्रता का परीक्षण भी इसी समय मेरे सामने होने को था । जिसमे कुछ तो वास्तव में मित्रता के नाम को सार्थक करते निकले और कुछ आपत्कालीन रूप पहचान कर अपने को अलग कर गये । मुझे पता लगा कि नाथद्वारे का वैष्णव समाज पूरे सक्रिय रूप से मेरा विरोध करने वाला था मित्रो ने इस बात की तनिक भी परवाह नही की । मुझे एक बग्घी मे वर के वेष मे, और इन्दु को वधु के वेश में बठाकर मेरे चारो ओर घेरा बनाकर एक जुलूस के रूप मे पूरे बाजार म लेकर निकले । किसी भी ओर बिना देखे सुने पूरे उल्लास व आनन्द के साथ 'मोहन भैया जिन्दाबाद" के तुमुलनाद के साथ शहर की परिक्रमा कराई गई । किसी भी विरोध से उनके पर न उखडे ।

'आज मैं सोचता हूँ कि शायद मुख्य मत्री के रूप मे भी ऐसा भव्य और अपूर्व उत्साह पूर्ण जलूस मेरा नही निकला जसा कि वह स्वागतपूर्ण जोशीला और आक्रोश के वातावरण से युक्त जलूस, जो अपनी विलक्षणता ने अनोखा था, जो मुझ को मेरे भावी जीवन के सघर्ष में आगे बढने की प्रेरणा दे रहा था । मेरे इद गिद सशक्त नौजवानों की अपूर्व भीड थी । इसी भीड के साथ पूरा बाजार पार कर गया । डरता रहा कि कही मा ऊपर की मजिल से कूद कर प्राण त्याग न करले । कुछ भी हो इस परीक्षा मे अपने मित्रो के सहयोग से उत्तीर्ण हुआ । हमारा निवास एक धर्मशाला मे हुआ । अब मैं पुन नाथद्वारे का अपने व्यक्तित्व का ही एक अग मानने लगा । धीरे धीरे सभी स्थलो पर मेरा सम्पर्क पुन होने लगा । मुझ मे अब अपने इस कदम पर आत्मविश्वास था ।

महिलाओ मे इन्दु के सौंदर्य, गाम्भीर्य और शालीनता की चर्चा होने लगी । गाव के नारी समाज मे एक नई चेतना जागृत हुई । धर्मशाला म इन्दु को देखने के लिये स्त्रियो के झुड के के झुड आने लग । हर समय एक मेला सा लगा रहने लगा । नाथद्वारे मे सदा से सगीत सौन्दर्य कला का मेल रहा है । फिर इन्दु के सौन्दर्य एव शालीनता ने यदि नारी समाज को आकर्षित कर लिया था तो क्या आश्चर्य था ? नारी सुकोमलता और स्वाभाविक लज्जाशीलता का जो परिचय इन्दु ने नाथद्वारे के नारी समाज को दिया

विश्वनाथ वामन काले

# विनम्र सुखाडिया जी

स्वाधीन राजस्थान को अपनी वसीयत मे मध्यकालीन सामन्तवाद की शाही परम्पराए, महल और अटारियां, उदारता की थोथी कहानिया और साहसी राजस्थान के गुजरे हुये जमाने के खण्डहर मिले जो न तो अतीत के इतिहास का गौरवशाली बनाते हैं और न आने वाले जमाने से मेल खाते हैं। अशिक्षा, अन्धविश्वास, रूढिवाद और सामन्तवाद से भयभीत असख्य गरीबो का काफला जिनकी कोई मजिल नही।

हमे सोचना चाहिए कि दोहरी दासता स मुक्त जो राजस्थान हमे मिला उसकी पृष्टभूमि क्या थी ? इस पृष्ट भूमि पर नये राजस्थान का काम शुरु हुआ वही सुखाडिया जी की सफलता की मौलिकता है। प्रजातन्त्र म लोकप्रियता महत्वपूर्ण है और वह उन्हें भरपूर मिली । कितने प्रान्त हैं जहा कोइ व्यक्ति १६-१७ वष तक लगातार मत्री और मुख्य मत्री बना रहा हो ?

३८ वष की उम्र मे जब वे मुख्य मत्री बने तो किसी को एक क्षण के लिये भी यह विश्वास नहीं हो सका था कि वे आने वाले कई वर्षो तक मुख्य मत्री बने रहेगे । सयोग से उन्हे व्यासजी जसे लोकप्रिय नेता की गद्दी पर बठना पडा जो प्रदेशके ही नही देश के नेताओ म अपना स्थान रखते थे। काग्रेस उच्च कमान को यह परिवतन बहुत रुचिकर लगा हो ऐसा उस समय स्पष्टतया नहीं लगता था । राजस्थान मे भी काफी अडचनें थी । परन्तु उन्होने उस वातावरण से सघष नही किया चुनौति नही दी बल्कि वे झुके और अपनी नम्रता व आदर भावना से नया वातावरण बनाना शुरु किया । वे लगातार कई मामलो मे व्यासजी से सलाह मशविरा करते रहे और उन्होने प्रयत्न किया कि व्यासजी के साथी प्रजातन्त्र की प्रक्रियाओ को सही रोशनी मे देखें और व्यक्तिगत रूप से उन्हें समझने का प्रयत्न करें । वे चाहते रहे कि व्यासजी का माग दशन मिलता रहे और दोनो मिलकर प्रदेश सेवा की मे एकाकार हो जायें । काश यह हो पाता !

एक चतुर शतरज के खिलाडी की तरह उन्होंने सन् ४७ के चुनाव के चक्रव्यूह की रचना की । स्वय एक छोटे हवाई जहाज से हर उम्मीदवार के क्षेत्र मे निरन्तर पहुँचे और परिणाम स्वरूप १२० काग्रेस सदस्य निर्वाचित हुए । राजनीति मे खास तौर से प्रजातन्त्र की राजनीति मे एक का बल कुछ नहीं होता – सबका बल और सहयोग लेकर चलना ही एक आदमी की कुशलता का प्रमाण होता है और वह कुशलता सुखाडिया जी मे थी । एक अच्छे कप्तान की तरह हमेशा उन्होंने टीम को बनाये रखा और उसी

यह बडे गौरव की बात है कि हम उस युग मे भी रहे थे जिसे गाधी युग कहा जाता है । राजस्थान का यह सौभाग्य है कि हर राजनतिक मोड पर उसे बापू और जमनालालजी का आशीर्वाद और सरक्षण प्राप्त हो सका ।

राष्ट्र पिता बापू और

जमनालालजी बजाज के

आशावाद म स्थापित गाधी आश्रम, हटूंडी जो अब महिला शिक्षा सदन के रूप में विकसित हो रहा है।

दासाहब (हरिभाऊजी) भले ही राजनीति के खिलाड़ी रहे हो पर जीजी (भागीरथी उपाध्याय) की वृत्ति हमेशा से रचनात्मक रही। पहले वे स्नेह व शक्ति से सिर्फ परिवार का पोषण करती थी अब विधान 'सदन' उसी से अनुप्राणित है।
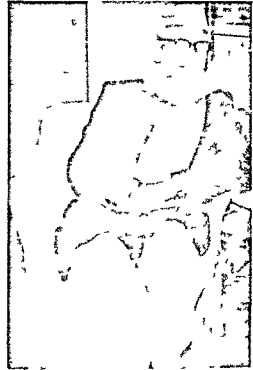
श्रीमती भागीरथी उपाध्याय

श्री हरिभाऊ उपाध्याय

श्रीमती रमाबाई देशपांडे, सुमित्रादेवी खेतान, इन्दिरादेवी शास्त्री, विद्यादेवी आदि कुछ बहनें जिन्होंने, स्वतन्त्रता संग्राम मे हिस्सा लिया तथा अब भी किसी न किसी प्रकार के सेवा कार्य में लगी हैं।

श्रीमती इन्दिरा गान्धी महिला-शिक्षा-सदन, हट्ट डी, म, सदन की अध्यक्षा माता रामश्वरीजी, रानी उर्मिलादेवी, श्रीमती भागीरथी उपाध्याय तथा सदन की छात्रायें और अध्यापिकाय

यह दाम्पत्य पहले राजनैतिक कार्यों मे लगा था अब उसी लगन से शिक्षा कार्य मे लगा है। इन्ही के परिश्रम का फल है वनस्थली विद्यापीठ

श्रीमती रतनदेवी शास्त्री
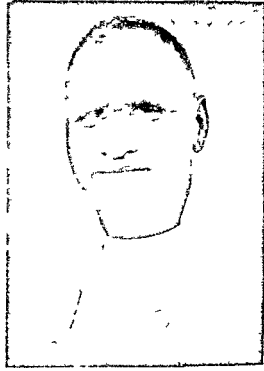
श्री० हीरालाल शास्त्री

वनस्थली की बालिकाओं द्वारा सांस्कृतिक प्रदर्शन

का परिणाम था –स्थायी प्रशासन। १९५७ की असाधारण सफलता के बाद भी उन्हें चैन से बैठने को नहीं मिला और "घर का संघर्ष" तब भी उनके सामने था।

आज दूसरे प्रदेशो मे जब पचायत राज की तयारी की जा रही है तब हम अपने मीठे कडुवे अनुभवो को लेकर और ज्यादा आगे बढने की सोच रह हैं। कई बार सुखाडिया जी के साथियो को भी झुंझलाहट होती है कि हमने पचायत राज की जिम्मेदारी लेकर एक अपरिपक्व कदम उठाया। परन्तु सुखाडिया जी का विश्वास अडिग है। वे कभी भी एक सीमा से अधिक किसी बात की थ्योरी पर ही सोचकर निराश नहीं होने और न छोटी मोटी हार जीत से प्रभावित ही होते है। प्रजातत्र की सभी प्रक्रियाओ से आया वे हमे भाय या न भाये, हमे गुजरना ही पडेगा तो फिर हम साहस और धैय के साथ क्यो न गुजरें ?

कांग्रेस का जयपुर सम्मेलन, चित्तौड मे गाडुलिया लोहारो का प्रवेश, नागौर म पचायत राज का उदघाटन और जयपुर म राजस्थान स्तर पर पचो का सम्मेलन जिस विशाल पैमाने पर हुए उसने जन भावना को झकझोर कर रख दिया। आम लोगों मे सुखाडिया जी के व्यक्तित्व की छाप दिनों दिन गहरी होती जा रही है। उनके भाषण प्रेरणा के स्रोत बन गये हैं। इस तरह ३८ वष के मुख्य मत्री ४४-४५ वष की उम्र म सही अथ म जन नेता बने।

विकास के इन पाच वर्षों मे दिल्ली राजस्थान के प्रति आकर्षित हुई। दुर्भावना और भ्रामक धारणाओं का कोहरा दिल्ली और राजस्थान के बीच कम होने लगा। १९५४ की तुलना मे ढेबर भाई का मानस १९५८ मे काफी बदल गया। और वे अलवर सम्मेलन मे और नजदीक आय। सुखाड़िया जी के खिलाफ पडित जी के पास पहुँचने वाले पत्रो का ताता जारी रहा परन्तु उनका महत्व घट गया। १९६२ के आम चुनाव म नेहरूजी ने जयपुर की आम सभा म सुखाडिया जी को अपना हार्दिक आशीर्वाद दिया।

पिछली बार अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी की काय समिति के सघष पूण चुनाव म वे खडे हुए और विजयी हुये। जयपुर के काग्रेस अधिवेशन मे उन्होने विदेश नीति पर प्रस्ताव रखा था। उससे पूव भी हाई कमान ने उनसे काग्रेस महा समिति म एक प्रस्ताव पचायत राज पर रखवाया था जो राजस्थान म पचायत राज की स्थापना का एक तरह से प्रारम्भ था। काग्रेस हाई कमान म कई बार कई व्यक्ति तेजी से आते है और उतन ही तेजी से चले जाते हैं परन्तु सुखाडिया जी ने कभी इस मामले मे जल्द बाजी नही की बल्कि अनुशासन पूवक वे क्यू मे रहे और धीरे धीरे उनकी योग्यता, लोकप्रियता और काम के प्रति लगन, उन्हें उच्च कमान के स्तरपर ले आयी। श्री शास्त्री जी ने उन्हें एक महत्वपूण समिति का सदस्य मनोनीत किया जो राष्ट्रीय समृद्धि के साधनों की जाच पडताल के लिए बनाई गयी है।

१९६२ के आम चुनावो के परिणामो ने उन्ह अवश्य चौंका दिया परन्तु वे उसके बाद से इस दिशा मे सजग है। काग्रेस की आन्तरिक एकता के लिए अब उन्होंने जी तोड कोशिश शुरू की है। भीलवाडा मे और अभी अभी हनुमानगढ म उनके यह प्रयत्न रग लाये हैं।

वष गाँठ का अवसर अधिक कहने-सुनने का नहीं है। विस्तार पूवक काफी कुछ कहा जा सकता है परन्तु कहने सुनने स अधिक प्रभावशाली वे सारे काम है जो उन्होंने किये है और जो अपनी कहानी आप कहते हैं। आज के दिन यही कहा जा सकता है कि वे स्वस्थ रहें—और राजस्थान को उनकी सेवाओ का लाभ अधिकाधिक मिले।●

# डा० रांगेय राघव

राजस्थान के अग्रणी और मनस्वी साहित्यकारों मे डा० रागेय राघव का नाम शीर्ष-स्थान है। बहुमुखी प्रतिभा के धनी डा० राघव अपने जीवन के अल्पकाल मे ही हिन्दी को बहुत कुछ दे गये। आगरा में जन्म लेनेके बावजूद भी सच पूछा जाय तो उनका मन व्हैर(भरतपुर जिले मे बयाना से दस मील दूर)मे अधिक रम सका था यही कारण था कि आगरा से अपनी उच्च शिक्षा प्राप्त कर पुन के गाव लौट आए। गाव म ही रहकर अपनी उल्लेखनीय एव प्रौढ कृतियो की रचना कर सके थे।

डॉ० रागेय राघव का लेखन काय सन् १९३७-३८ से प्रारम्भ होता है। उन दिनो अपने कॉलिज जीवन म वे आगरा के प्रगतिशील लेखक सघ के सम्पक मे आये। प्रगतिशील लेखक सघ की बठकों मे ही इनका लेखन पहली बार प्रकाश मे आया। उन्ही दिनो इनके पहले उपन्यास 'घरौदे (जो 'घरौंदा' के नाम से प्रसिद्ध हुआ ) पर चर्चाए हुआ करती थी। इस प्रकार पहली बार इन्हें अपनी प्रतिमा को प्रकाशित करने का अवसर मिला। सन्, ४२ मे बगाल के अकाल के समय वे अकाल की अग्नि मे तडपते भुलसते लोगो को अपनी आखो से देखने के लिए डाक्टरी जत्थे के साथ वहा गए। फलस्वरूप 'तूफानों के बीच रिपार्ताज का सृजन हुआ। इस प्रकार हिन्दी मे पहली बार 'रिपोर्ताज' नामक नयी विधा का प्रारम्भ इनके द्वारा हुआ। ('आज का भारतीय साहित्य म प्रभाकर माचवे का भाषण, अणिमा, माच, अप्रैल १९६६)

या प्रगतिवादी चिंतक के रूप मे वे माने जाने वाले साहित्यकार थे। लेकिन यह बात यहीं स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि उनका चिंतन मार्क्सवाद को ज्यो का त्यो स्वीकारने के पक्ष म नही है। वास्तव मे हम उन्हे 'सशोधन वादी समाजवादी कहे तो अधिक उचित होगा। मार्क्स के द्वन्द्वात्मक भौतिक वाद के औचित्य को स्वीकार करने के साथ साथ वे भारतीय परम्परा के श्रेष्ठ तत्वो को भी स्वीकार करते हैं। यों मानवतावाद पर उनका अटूट विश्वास था। मानव कल्याण बहुजन हिताय ही उनकी दृष्टि थी। और एक समीक्षक के रूप म यही उनका सर्वोपरी प्रतिमान भी था, जिसकी चर्चा हम आग चल कर करेंगे।

डा० रागेयराघव एक ही साथ कवि कथाकार, नाटककार, आलोचक, अनुवादक और इतिहासज्ञ साहित्य स्रष्टा थे। इनका कृतित्व इतने विशाल परिणाम म प्राप्त होता है कि कभी-कभी तो आश्चर्य ही

अधिक होता है कि यह सब एक ही व्यक्ति का लिखा हुआ है। ससार के इनेगिने लेखक ही इस दृष्टि से मिलते हैं। साहित्य का कोई क्षेत्र एसा नहीं जिस ओर इनकी लेखनी अग्रसर नही हुई हो और कमाल न कर दिखाया हो। सबसे बडा आश्चय तो तब होता है जब यह तथ्य सामने आता है कि यह सब एक ऐसे लेखक द्वारा लिखा गया है जो अहिन्दी भाषी रहा है जिसकी मातृ भाषा तमिल थी।

इसमे सदेह नही कि डा० रागेय राघव एक कथाकार के रूप मे हिन्दी जगत म अधिक लोकप्रिय हुए हैं। किन्तु यह एक सत्य है कि सबसे पहले वे, कवि थे। उपन्यासकार, अनुवादक तो उन्हे परिस्थितियो की विषमताओ से विवश होकर बनना पडा था। इस बात को उन्होंने कई बार अपने मित्रो के समक्ष प्रकट भी किया था। 'वीरेन, सच पूछो तो इतना लिखकर भी, मैं अपनी असली बात अभी तक नही कह पाया हू। सबसे पहले मैं कवि हूँ, फिर कुछ और। मेरा कवि अव्यक्त ही रह गया। ( भारती, अक्टूबर १९६२, वीरेन्द्र कुमार जैन से डा० राघव की बातचीत ) ये शब्द मूलत उनकी काव्य प्रतिभा पर प्रकाश डालते हैं। इस दृष्टि से अकेला 'मेधावी' महाकाव्य ही उनकी कवि-प्रतिभा की सफलता का कीर्तिमान स्थापित करने म समक्ष है। इसमे विशाल केनवस पर दशन, भूगोल, इतिहास, काव्य, समाजशास्त्र आदि के सहारे कवि को खुलकर खेलने का अवसर मिला है। 'मेधावी' ही नहीं, उसके अतिरिक्त 'अजेयखण्डहर' 'पिघलते पत्थर', 'रूपछाया', 'पाचाली' आदि भी उनके कवि-रूप को उजागर करते हैं। जीवन के अतिम दिनो म भी उन्होने 'उत्तरायण' नामक महाकाव्य का प्रणयन प्रारम्भ किया था। जिसमे "आधुनिक मानव के सत्यशोध के महान् अभिमान को एक विशद् विस्तृत यथार्थवादी फलक पर उजागर करते हुए उसकी अन्तर चेतना के गहिरतम द्वन्द्वो, ग्रन्थियो और चरम-परम प्रश्नो के निवारण के लिए बीच-बीच मे पौराणिक कथाओ की एक नवीन व्याख्या के आलोक मे उद्घाटित और उद्भावित करना था।' किन्तु वे अपने विशिष्ट 'विजन' को साकार नही कर पाए। बीच मे ही उन्हें इस लोक से उठ जाना पडा। इसी अध लिखे महाकाव्य के अन्त मे उन्होंने अपनी अदम्य जिजीविषा की ओर सकेत हुए तत्कालीन मन स्थिति निम्नलिखित पक्तियों म अभिव्यक्त की थी —

"चाहता हूँ जियूँ और जियूँ और
किन्तु सघप के पत्थर है घिसा करते मेरे पग,
दुबलता सताती है, एकाकी पन काटता है
और मैं व्याकुल-सा बिखरने के पथ पर
आ हिलता हूँ।'

यहा उनके काव्य के सम्बन्ध में अधिक विस्तार देना अपेक्षित नही होगा। काव्य के अतिरिक्त उपन्यासों के क्षेत्र मे उनकी लोकप्रियता निर्विवाद है। लगभग ४० उपन्यास लिखकर उन्होंने हिन्दी के उपन्यास साहित्य को श्रीसम्पन्न करने में महत्वपूर्ण योग दिया है। 'मुर्दों का टीला', 'कब तक पुकारू'



डा० रागेय राघव

उपन्यास उनके अच्छे उपन्यासो म गिनाये जा सकते हैं। सामाजिक एतिहासिक, पौराणिक और आचलिक उपन्यासो की रचना उनकी उपन्यासो के क्षेत्र म विविधता का प्रतीक हैं।

डा० रागय राघव एक अच्छे अनुवादक भी थे। शेक्सपीयर के सभी नाटको का अनुवाद उन्होंने किया है। कहा जाता है कि उन्होंने एक एक नाटक का अनुवाद एक एक दिन मे किया था। सस्कृत के अमर ग्रथो का अनुवाद, जो उनके द्वारा सम्पन्न हुआ है, वह नि सन्देह रूप से उनके प्रखर पाँडित्य का प्रत्यक्ष परिचायक है। मेघदूत, ऋतुसहार, मृच्छकटिक, गीतगोविन्द, दशकुमार चरित आदि का उल्लेख इस दृष्टि से किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त शेली, कीट्स, गेटे, लोर्कोत्सु, मायकोवस्की, होमर, टेनीसन, चौमर, यूरिपीडिज और स्टीवेसन आदि के काव्य लोक से पहली बार, उन्होंने हिंदी वालो को परिचित कराने का महत्वपूर्ण काय भी किया है।

एक आलोचक के रूप मे भी उन्ह पर्याप्त सफलता मिली है। इस दृष्टि से उनकी कुछ निश्चित मान्यताए थी। भारतीय-रस सिद्धान्त को वे दृढता के साथ स्वीकार करते थे। लेकिन उसको ज्यो का त्यों स्वीकार करके किंचित सशोधन के साथ स्वीकार करना उचित समझते थे। अन्य प्रगतिवादियो की तरह वे भारतीय रस-सिद्धान्त और प्रगतिवाद मे किसी प्रकार का विरोध नही देखते। उनके अनुसार प्रगतिवाद जनसाहित्य का हामी है, और रस-सिद्धात का साधारणीकरण वाला अश इसी बात का समथक है। डा० राघव इसलिए इस सदभ मे साधारणीकरण पर अधिक जोर देते है। धम, दशन, समाज, इतिहास, द्वन्द्वात्मक, भौतिकवाद, अस्तित्ववाद, फ्रायडवाद, गाधीवाद, रस सिद्धात, प्रयोगवाद आदि सभी-कुछ इनकी समीक्षा दृष्टि के वृत्त के अन्तगत आ जाते हैं। 'काव्य, कला और शास्त्र, यथाथ और प्रगति, प्रगतिशील साहित्य के मानदण्ड, समीक्षा और आदश, काव्य के मूल निवेच्य, महाकाव्य विवेचन, आधुनिक हिंदी कविता म विषय और शली तथा आधुनिक हिन्दी कविता म प्रेम और शृगार आदि इनके समीक्षा ग्रन्थ हैं, जिनमे इनकी मौलिकता की मुहर सवत्र दशनीय है। लखक को वे आत्मा के शिल्पी (Builders of Soul) के रूप मे स्वीकारते हैं।

कितना महान् लक्ष्य है कितनी निर्भीक वाणी है। आलोचक मे यह तभी विकसित हो सकती है जब वह नितान्त गुट निरपेक्ष होकर चले। यह एक मानी हुई बात है कि डा० राघव वादा गुटबाजियो और दलों के दल-दल से सदैव दूर रहना पसन्द करते थे। मानव कल्याण और सत्य की शोध ही उनका प्रमुख लक्ष्य था। यही कारण था कि वे अपने को प्रचार और प्रसार की दुनिया से सदा दूर रखते थे।

उनका व्यक्तित्व भी बडा ही आकर्षक था। "गौरवण, उन्नत ललाट और सुगठित किन्तु सुकुमार शरीर तो आकर्षक थे ही, पर उनकी आखें और उगलिया अदभुत थीं। देखने वाले को बरबस मत्र मुग्ध कर लेती उनका परिधान धोती कुरता ही था पर जब वे पैदल चलते तो उनकी चाल म एक गरिमा के दशन होते थे। पटलीदार धोती का एक सिरा हाथ मे थामे मन्द-मन्द एक-सी चाल से चलना उनकी खूबी थी'।

एक मित्र के रूप में भी वे काफी प्रसिद्ध रहे हैं। उनके मित्रों की संख्या भी कम नहीं है। कहना अनपेक्षित होगा कि उन्हें मित्रों के साथ गोष्ठियों में बैठने में बड़ा आनन्द आता था। सिगरेट उनको बड़ी प्रिय थी। संगीत और चित्रकला में उनकी अभिरुचि थी। वास्तव में वे अच्छे चित्रकार भी थे। मेघदूत, ऋतुसंहार, गीतगोविन्द का अनुवाद करते समय उन्होंने उनके अनुसार चित्र भी बनाये थे। उनके चित्रों की रेखाओं को देखने पर महादेवी वर्मा की याद ताजा हो जाती है। बंगाल के अकाल के समय बनाए गए उनके चित्र भी कम महत्वपूर्ण नहीं है।

इतने महान् लेखक-कलाकार के बावजूद भी अहं उन्हें छू भी नहीं पाया था। किन्तु विरोधियों के सामने उन्हें कभी झुकना पसन्द नहीं था। असल में उन्हें टूटना पसन्द था झुकना नहीं। उनके सम्बन्ध में या अनेक बातें हैं जिन पर पृष्ठ के पृष्ठ लिखे जा सकते हैं। यह सच है कि उनकी जिजीविषा बड़ी प्रबल थी। मृत्यु शैया पर लेटे-लेटे कहा करते थे "दस वर्ष और दे दो, कमल तोड़ कर रख दूँगा।' सुलोचना जी से बात-चीत के आधार पर)। जीवन के अंतिम दिनों में भी वे कई ग्रंथों की योजना बनाए हुए थे।

उन्हें हम राजस्थान का टैगोर कह सकते हैं। एक कवि, कथाकार, चित्रकार, चिन्तक—हर दृष्टि से हमारा कथन इस सम्बन्ध में सही उतरता है। इसमें संदेह नहीं कि डॉ० रांगेय राघव, जिन्होंने अपना खून पसीना एक करके लिखा, हिन्दी में ही नहीं समस्त भारतीय वाङ्मय में एक अच्छे साहित्यकार के रूप में सदैव स्मरण किये जायेंगे।●

राष्ट्र रक्षा के होत्र (यज्ञ) में जीवन हवि देने वाले नागरिकों! तुम इस राष्ट्र रक्षा की ज्योतिर्मय भावना के दूत बनकर इसका संदेश घर-घर में फैला दो। पृथ्वी और आकाश की सब दिव्य शक्तियां तुम्हारी रक्षा करेंगी। पराक्रमी इन्द्र अर्थात् सर्वोच्च प्रभुसत्ता अपना सम्पूर्ण राजकोष इस पावन राष्ट्र रक्षा कार्य में समर्पित कर देगी। जन-जन की स्वाहुति से जागृत और प्रबुद्ध आत्मज्योति जब समग्र राष्ट्र की तेजस्विनी ज्योति से संयुक्त हो जायगी, तब हमारी राष्ट्र शक्ति अपराजेय हो जायगी। तभी यह यज्ञ पूर्ण होगा।"

—यजुर्वेद २—६

# कवि सुधीन्द्र

**ज न, वश तथा प्रारम्भिक जीवन —**

श्री ब्रह्मदत्त मिश्र 'सुधी द्र का ज म कम्पिला के निपुर के एक उच्च मिश्र परिवार मे हुआ था। आपके पिता पडित गोकुल प्रसाद मिश्र फरूखाबाद जिले म छिबरामऊ तहसील के अ तगत सौरिख कस्बे में रहते थे। अपने भाई सु दरलाल मिश्र तथा बडे भाई प० रामनारायण मिश्र के साथ वे कोटा राज्य मे नौकरी के लिये चले आये थे। यहा माल विभाग मे आप कानूनगो के पद पर नियुक्त हुये।

मिश्र परिवार मे सरस्वती की सदा कृपा रही है परिवार के सभी सदस्यो मे साहित्यिक प्रतिभा पाई जाती है। श्री रुद्रदत्त मिश्र ने एम ए साहित्यरत्न किया और असख्य लेख और कविताए लिखते रहे। बाद मे सम्पादन क्षेत्र मे शीष स्थान पर पहुँचे। श्री इ द्रदत्त मिश्र 'स्वाधीन' की रुचि सक्रिय राजनीति मे रही हैं आज भी वे एक सफल पत्रकार के रूप म प्रख्यात हैं। शारदा मिश्र भी कालज मे प्राध्यापिका हैं। इस प्रकार परिवार मे सभी सदस्यो ने साहित्यिक प्रतिभा ता थी, पर यह सुधी द्र मे अपनी सर्वोच्च सीमा पर पहुँची थी।

**साहित्यिक जीवन —**

डा० सुधी द्र राष्ट्रीय विचार धारा के क्रान्तिकारी कवि, एकाकीकारी और लेखक थे। राष्ट्रीय काव्य के क्षेत्र म काय करने के लिये डा० सुधी द्र को अपने भाई श्री रुद्रदत्त जी मिश्र से बडी प्रेरणा मिली थी। वे सन् १६३० से ही देश भक्ति पूण प्रेरक और ममस्पर्शी कविताए लिखने लगे थे। उन दिनो की हबट कालेज मेगजीन कोटा म आपकी अनेक कविताए प्रकाशित हुई हैं। उनका प्रथम का य सग्रह स्वात त्र्य भावना और उदबोधक रचनाओं का सग्रह था। इसका नाम था 'शखनाद'।

शखनाद की राष्ट्रीय कविताए पुलिस की आखो म बुरी तरह खटकने लगी। अधिकारियो की कुटिल दृष्टि उन पर लग गई फलत पुस्तक पर पुलिस ने छापा मारा और उग्र विचारो के कारण यह क्रान्ति पुस्तक जब्त कर ली गई। यही नही सुधी द्र जी की नौकरी पर भी आच आई।

उन्हीं दिनो राष्ट्रीय आन्दोलन म दिलचस्पी लेने के कारण सुधीन्द्र का परिचय श्री हरिभाऊ उपाध्याय से हुआ। वे सुधीन्द्र की विद्वता, राष्ट्रीयता और सरल स्वभाव से बडे प्रभावित हुए। आप उनके साथ उनके निजी सहायक होकर हटूडी (अजमेर) चले गये और सरकारी नौकरी से त्याग पत्र दे दिया।

सन् १९३५-३६ के उपरान्त और भी तीव्रता से वे क्रान्तिकारी कविताओं का निर्माण करते रहे। 'शखनाद' 'मेरे गीत' उनकी प्रारम्भिक काल की रचनाए हैं। 'जौहर' (खण्ड काव्य) सन् १९३९ म पूर्ण किया। 'शखनाद' तथा 'जौहर' नामक काव्य ग्रन्थों पर उनकी श्रेष्ठता के कारण ग्वालियर राज्य से आपको सौ सौ रुपयो का पारितोषिक तथा प्रशसा पत्र प्राप्त हुये। ये काव्य राजस्थान की सस्कृति तथा वीर भावो से परिपूर्ण हैं। शाति और स्वातन्त्र्य की यह वीर भावना सुधीन्द्र के काव्य म उत्तरोत्तर विकसित होती रही है। आगे चलकर वे अपने युग के श्रेष्ठ वीर कवियो मे अग्रणी बने और राष्ट्रीयता की दृष्टि मे भारतीय जनता की भावनाए सशक्त भाषा मे मुखरित करते रहे। देशव्यापी क्रान्तिकारी भावना, राष्ट्र के प्राणो की चीत्कार और स्वातन्त्र्य आन्दोलन के लिय सघष उनकी आगे की सभी कविताओं म मुखरित हुआ है। 'मृतलेखा' (१९४०) उनका प्रतिनिधि साहित्य राष्ट्रीय कविताओं का सग्रह कहा जा सकता है।

डा० सुधीन्द्र ने राष्ट्रीय दृष्टि से क्रान्तिकारी कविता का अध्ययन किया था। यह अनुसधान उनके एक सुन्दर, आलोचनात्मक ग्रन्थ "हिन्दी कविता का क्रान्ति युग' (१९४७) म प्रकाशित हुआ है। आगे चलकर उन्होंने खडी बोली के विचार और साहित्य पर एक थीसिस लिखी। इसका नाम 'हिन्दी कविता मे युगान्तर १९५० है। यह ग्रन्थ उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत भी हुआ था। सुधीन्द्र के काव्य म देश की राष्ट्रीय चेतना, स्वतन्त्रता के लिये प्रबल प्रयत्न शोषण के प्रति आक्रोश और स्वदेश भक्ति की उदात्त भावना पाई जाती है।

डा० सुधीन्द्र कृत श्रेष्ठ काव्य ग्रन्थ "जौहर' इतिहास नही एक उदात्त भावना और जनवादी आदश का प्रेरक काव्य है। डा० सुधीन्द्र काव्य के अच्छे अनुवादक भी थे। उन्होंने रवीन्द्र नाथ ठाकुर कृत 'गीताजलि' तथा रुबा-इयात उमर खय्याम' का सफल काव्यमय अनुवाद भी किया। डा० सुधीन्द्र के एकाकी नाटका म भी क्रान्ति और जनवादी आन्दोलन की भावना स्पष्ट मुखरित हुई है। उनके (१) खून की होली (२) रावी (३) नया वष नया सन्देश (४) सगम (५) रेखा का राजमुकुट (६) राम रहमान (७) ज्वाला और ज्योति नामक एकाकियो म देशव्यापी राष्ट्रीय और क्रान्ति की समस्याओं को उभारा गया है तथा भारत आजादी से पूव तथा उसके उपरान्त की अनेक उपयोगी सूत्र यत्र तत्र बडे बिखरे पडे हैं। राष्ट्र के लिये बलिवेदी दीवानो हिन्दू-मुस्लिम ऐक्य मे देशभक्तों के प्रशस्ति चरित्र भी है। स्थान स्थान पर राष्ट्रीय गानो का भी प्रयोग किया गया है।

डा० सुधीन्द्र के समग्र साहित्य म क्रान्ति का स्वर और देश मे नवनिर्माण की दिशा मे स्वस्थ और मौलिक चिन्तन मिलता है। वे एक गहन विचारक और चिन्तक थे। उन्होंने बहुत सा मौलिक साहित्य का निर्माण किया है और व्यापक रूप से सब प्रश्नो पर गाधीवादी दृष्टि कोण से विचार किया है।●

शोभालाल गुप्त

# बून्दी का देशभक्त परिवार

श्री नित्यानन्द नागर और उनके परिवार की कहानी तत्कालीन रियासती शासन की निरकुशता और स्वेच्छाचारिता पर अच्छा प्रकाश डालती है। उनके पिता श्री मेघवाहनजी बूदी राज्य के बीस वष प्रधान मत्री रहे। उनको जागीर दी गई और वह खासी चल अचल सम्पत्ति के स्वामी बन सके। स्वय श्री नित्यानन्दजी को राज्य का प्रधान सेनापति नियुक्त किया गया।

श्री नित्यानन्दजी को राष्ट्रीयता की हवा लगी। सन् १९२१ में अहमदाबाद काग्रेस के अधिवेशन मे प्रतिनिधि के रूप म शामिल हुए। उनकी राष्ट्रीय गतिविधिया रियासनी हुकूमत की आखो मे बुरी तरह खटकी और ६ जुलाई १९२७ को बिना कोई कारण बताये उन्हे बून्दी रियासत से निर्वासित कर दिया गया। उनकी लाख-पौन लाख रुपये की सम्पत्ति भी उनसे छीन ली गई। ३५ वष बाद उनकी छिनी हुई कोठी सन् १९४५ म उन्हें वापस लौटा दी गई।

श्री नित्यानन्दजी २६ वष तक बून्दी रियासत से निर्वासित रहे। उन्होंने गाधीजी के नेतृत्व मे लडे गये स्वतत्रता-सग्राम म आगे बढकर हिस्सा लिया। सन् १९३० म उन्होने राजपूताना और मध्य भारत के प्रथम सत्याग्रही के रूप म नमक कानून तोडा। उन्हे एक वष का कारावास दण्ड मिला। सन् १९३२ के आन्दोलन मे वह दो वष के लिए और १९३९ के व्यक्तिगत सत्याग्रह मे एक वष के लिए जेल गये। सन् १९४२ मे "भारत छोडो" आन्दोलन शुरु हुआ तो उन्हे चार वष तक बून्दी के किले म नजरबन्द रखा गया।

श्री नित्यानन्दजी के सुपुत्र श्री ऋषिदत्त महता और उनकी पुत्रवधू सौ० सत्यभामा ने भी स्वतन्त्रता सग्राम मे हिस्सा लिया और कष्ट सहन किये। श्री ऋषिदत्त सन् १९३० और सन् ३२ में दो बार अजमेर मे जेल गये। वह ब्यावर और अजमेर म 'राजस्थान' नामक हिन्दी का साप्ताहिक पत्र निकालते थे। सौ०सत्यभामा भी अपने दो दूध पीते बच्चो को लेकर जेल गई।

अजमेर सरकार ने श्री ऋषिदत्तजी को अजमेर से निर्वासित कर दिया था। अत सन् १९४४ मे वह कोटा जाकर रहने लगे। उधर बून्दी रियासत के भीतर दाखिल न होने पर रोक लगा दी। यह सरासर अन्याय था गांधीजी की सलाह से बूदी की निर्वासन आज्ञा का भग करने का उन्होने निश्चय किया। निर्वासन आज्ञा वापस नही ली गई तो वह उसका उल्लघन करेंगे। सदभाग्य स बूदी सरकार मे सुबुद्धि का उदय हुआ और निश्चित अवधि के पहले ही श्री ऋषिदत्तजी के विरुद्ध निर्वासन आज्ञा रद्द कर दी गई। श्री नित्यानन्द नागर आज इस लोक मे नहीं हैं किन्तु उन्होने और उनके सारे परिवार ने देश की स्वतन्त्रता और समाज-सुधार के लिए जो त्याग किया और कष्ट सहन किये, उन्हे कभी भुलाया नही जा सकता।

हरिभाऊ उपाध्याय

# क्रान्ति वीरों का स्मरण

"राजस्थान—स्वतन्त्रता के पहले और बाद" के सम्पादक मण्डल की ओर से मुझे कहा गया कि मैं अपने कुछ मित्रों का परिचय तथा सत्याग्रह सम्बन्धी कुछ घटनाओ के सस्मरण लिख दू । मित्रों के नाम की पसदगी उन्होंने मुझ पर न छोड कर अपनी तरफ से एक सूची दे दी । उनका आदेश मान कर, उसी सीमा में, मैंने ये परिचय तयार किये हैं । इन्हें परिचय भी कहना ठीक न होगा—कुछ झलक मात्र है । या यों कहें कि इन मित्रों के सम्पर्क से उनका जो प्रभाव मेरे मन पर पडा, उसी को मैं कुछ अशों में झलका पाया हू । चाहता था कि स्वतन्त्रता सग्राम सम्बन्धी कई प्रसग यहा दू, परन्तु समय इतना कम था कि जो याद रहते गये उन्हें लिख दिया । सुविधा मिली तो अगले सस्करण में इस कमी को पूरा किया जायगा । इन घटनाओं में भी प्रसग से कई वीरो का स्मरण हो गया है ।

पहले तो मैं व्यक्तियों के बारे में बडी आसानी से लिख दिया करता था—दिवगत के बारे में लिखना फिर भी कुछ आसान है, विद्यमान के बारे मे लिखना अब पहले से भी ज्यादा कठिन हो गया है। स्वतन्त्रता के पहले जो हम परस्पर मित्र-भाव और उदारता रखते थे, उसकी जगह हम बहुत सकीर्ण और दल-ग्रस्त होते जाते हैं । तटस्थ भाव से सोचना लगभग छूट ही गया है । जब एक की प्रशसा लिखने लगते हैं तो दूसरी कई मूर्तिया नजर के सामने ऐसी आ जाती हैं जो उलहना भरा सकेत करती हैं । उनके प्रति सद्भावना रखते हुए मैंने इन सस्मरणों या परिचयों को लिखने का प्रयत्न किया है । मैं स्वभाव से गुण ग्राहक हू । दूसरो के दोषों और अवगुणों मे मेरी रुचि बहुत कम है । फिर भी सत्य के तकाजे से भी कैसे बचा जाय ? जो हो, ये परिचय बहुत जल्दी में तैयार किये हैं । ग्रथ के कलेवर का भी ख्याल रखना पडा है । आशा है, इन सब बातों पर ध्यान रखते हुए, पाठक इसकी कमियों को दरगुजर करेंगे ।

**सेठी जी —**

सन् १८-१६ की बात है—मैं इन्दौर में था । एक बडे देश भक्त नेता वहा आये तो उनके स्वागत-सम्मान मे लडको ने बग्घी के घोडे खोल दिये और खुद गाडी मे जुत गये । उन जोशीले नौजवानों में मैं भी एक था—हालाकि तब मैं कोई छात्र नहीं था । 'सरस्वती" का सहायक सम्पादक रह चुका था । उस समय क्या पता था कि इन्ही नेता जी से अजमेर मे सम्पर्क होगा, उसके साथ काम करने का अवसर आ जायेगा ।

ये नेता स्व० प० अर्जुन लाल सेठी थे। राजस्थान मे क्रान्ति के चार मुखिया माने जाते हैं—श्री अर्जुन लाल सेठी, श्री केसरीसिंहजी बारहठ, श्री दामोदरदासजी राठी और श्री गोपालसिंहजी खरवा। चारो अब दिवगत हो चुके हैं। सेठ दामोदर दासजी को छोड़ कर शेष तीनो के दर्शन करने का सौभाग्य मुझे एक नही कई बार मिला है। मेरे अजमेर आने तक भारत का राजनतिक वातावरण बहुत कुछ बदल चुका था। हिंसा तथा छल कपट की उग्र राजनीति का प्रभाव घट रहा था। गांधी जी की सत्य अहिंसा की सात्विक राजनीति जोर पकड रही थी। पुराने कई बडे-बडे नेताओ ने गाधी का नेतृत्व मान लिया था। और जो उनसे अलग रहे, वे मदान मे पिछड गय थे। सेठी जी की श्रद्धा तो गाधी जी के ऊपर थी। किन्तु वे काग्रेस के मैदान मे, राजस्थान मे, पीछे हटे हुए ही माने जाते थे। इसमे कोई शक नही कि अपने जमाने के वे जन-शास्त्र के प्रकाण्ड पडित थे। जयपुर कालेज के शायद प्रथम ग्रेजुएटो म थे। अग्रेजी, हिन्दी के प्रभाव शाली वक्ता, जन-कम सिद्धान्त के महापडित थे। उन्होने भारत की आजादी के खातिर जेलो मे तथा बाहर भी बडे कष्ट उठाये। अपना सारा जीवन और उसकी उमगे भारत-माता की वलिवेदी पर चढा दी। यह हमारा दुर्भाग्य है कि आखिरी वक्त उनका बडे कष्ट और दुखद वातावरण मे बीता।

**स्वामी कुमारानन्द —**

स्वामी कुमारानन्द उन मतवाले देश-भक्त वीरो मे हैं, जिन्हें देश की परतन्त्रता जहर की तरह लगती थी। और भारत माता की बेडिया काटने के लिए जो हर तरह की जोखिम, त्याग, तप करने के लिए उतारू थे। जन्म से बगाली हैं और बम पार्टी के सदस्य थे। अपना नाम वेप बदल कर कुमारानन्द" सन्यास सूचक नाम रख कर ब्यावर अजमेर मे डेरा डाला था। जब से यहा आये, यही के होकर रह गये। और जिसके भी सम्पर्क मे आये वह अपना आदर ही उन्हे दे कर उनसे बिदा हुआ। उन्हे जन-साधारण से, जनता से विशेष प्रेम है। मजदूर क्षेत्र के अब भी नेता हैं। बम पार्टी के बाद काग्रेस के मदान मे आये, हम लोगों के साथ अजमेर जेल म रहे फिर साम्यवाद का रग चढा। कई काग्रेसी बाद मे साम्यवादी कम्यूनिस्ट इसलिए हो गये कि उन्हे काग्रेस का कदम, समाजवाद की ओर बहुत धीमा—नही के बराबर—मालूम हुआ। हमारे स्वामी जी उन्ही मे से हैं। आजकल यद्यपि विश्वास मे पक्के साम्यवादी हैं राजस्थानी साम्यवादियो के गुरु-स्थानीय हैं, फिर भी काग्रेस के अनन्य भक्त हैं। राजस्थान के काँग्रेसी नेता, काग्रेस को बल देने की दृष्टि देंगे, इस दृष्टि से वे स्वामी जी पर यह विश्वास रखते हैं कि काग्रेस को सूली पर चढा कर साम्यवाद को बढावा नही देंगे। इस दृष्टि से स्वामी जी का व्यक्तित्व राजस्थान मे अद्वितीय है।

**शुरू के साथी —**

यहा म अपने उन पुराने साथियो का जिक्र किये बिना नही रह सकता, जिनका अभी तक साथ रहा है और जो जीवन साथी की श्रेणी मे आते हैं। भाई जीतमलजी लूणिया सस्ता साहित्य मण्डल के व भाई बलवन्त सावलाराम देशपाडे 'राजस्थान चर्खा सघ के मन्त्री बनकर अजमेर आ चुके थे। भाई नृसिंहदासजी बाबाजी और भी पहल राजस्थान मे सीकर म खादी काय कर रहे थे। मेरी उनमे अचानक मुलाकात

अहमदाबाद मे "हिन्दी नवजीवन" के दफ्तर मे हुई थी । वह उन दिनों मद्रास म कुछ व्यापार करते थे । वह "हिन्दी नवजीवन" की कुछ प्रतियां अपने बल से फ्री भिजवाने की व्यवस्था करने आये थे । सारा बदन नगा, सिर्फ एक धोती पहने थे । महात्माजी के प्रति भक्ति-भाव से सराबर थे । हम दोनो की निगाह एक दूसरे पर जमी । वह सपत्निक महात्माजी के आश्रम साबरमती मे रहना चाहते थे । वहा उन दिनो स्थान मिलना बडा ही कठिन था । स्थान कम और उम्मीदवार दुगने चौगुने । एक बार साबरमती के तीर पर नहाते हुए मेरी फिर उनसे भेंट हो गयी । उन्होने बडे दर्द से स्थान न मिलने की कठिनाई प्रकट की । मुझसे इसमे सहायता चाही । मुझे खुद बडी मुसीबत से जगह मिली थी । स्वयम् जमनालालजी ने अपना रिजर्व स्थान मुझे दिया था । तो मैं दूसरा स्थान कहा से दिलाता ? लेकिन एक त्यागी व्यापारी, फिर राजस्थानी और ना कहने मे असहृदयता समझने वाले व्यक्ति से फरमाइश । मैंने उन्हें आश्वासन दिया, 'यदि आप मेरे घर के किसी हिस्से म रह कर काम चला लें तो मैं कुछ सुविधा कर सकता हूँ' । यही से बाबाजी की व मेरी प्रेम गाठ बन्ध गयी । राजस्थान म आने पर उन्होने मुझे यहा बुलाने का प्रयत्न आरम्भ कर दिया था । भाई वैजनाथ महोदय मेरे कुछ समय बाद अजमेर आये ।

जीतमलजी इन्दौर से ही मेरे सुपरिचित थे । उनके साथ मण्डल का काम करने मे आनन्द ही अनुभव होता था । मेरा कुछ नुकीला स्वभाव अलबत्ता कभी कभी उन्हें चुभता रहता था । मेरी अव्यावहारिकता व साहसिकता कभी कभी उन्हें परेशान कर देती थी परन्तु हमारा प्रेम सम्बन्ध आज भी भाइयो की तरह बना हुआ है और हम सदा एक-दूसरे का साथ देने के लिये उत्सुक रहते हैं । त्यागभूमि का सम्पादन व 'मण्डल' की पुस्तको का निर्वाचन तथा हो सके तो सम्पादन, मेरे जिम्मे मुख्यत था ।

इसके विपरीत देशपाण्डे जी मेरे लिये बिल्कुल नये थे । मेरे अजमेर आने से पहले एक बार जमनालाल जी ने साबरमती मे उनसे मेरी जान पहचान कराई थी । स्वर्गीय अर्जुनलाल जी सेठी से ब्यावर के खादी-भण्डार का चार्ज लेने के सिलसिले मे बाबाजी को कुछ कठिनाइया पेश आई थी और देशपाण्डे जी अहमदाबाद से उनकी सहायता के लिए भेजे गये थे । वह इस ब्यावर प्रकरण की रिपोर्ट जमनालाल जी को देने आये थे । जमनालाल जी उन दिनो कांग्रेस के खादी विभाग के इन्चार्ज थे । सेठीजी व उनके साथियो के मुकाबले में उस समय देशपाण्डे जी ने बडी दृढता, साहस व निर्भीकता का परिचय दिया था । ऐसी छाप मेरे मन पर उनके उस समय के वर्णन की पडी थी । उनका यह गुण मुझे अच्छा भी लगा था । पर उस समय यह पता नही था कि इन्ही के साथ आगे राजस्थान मे काम भी करना होगा । यह पहले ही तय हो चुका था कि रचनात्मक काम की शुरुआत मुझे खादी से ही करनी है । आज भी खादी सारे रचनात्मक काम का केन्द्र बनी हुई है । खादी देश को केवल कपडा देने ही नहीं आई—वह एक आदर्श समाज व्यवस्था के आधार के रूप मे भी आई है । ऐसी दशा मे वह किसी संस्था या गुट तक सीमित नही रह सकती । भाव रूप म वह सारे जगत की वस्तु है परन्तु उस भाव को आकार अभी देना है । यद्यपि अन्त म खादी को सब संस्थाओ व देश की सीमाओ को पार कर जाना है तथापि अभी तो संस्था के सहारे बिना उसकी उन्नति नही हो सकती थी । फलत मैंने चरखा संघ के द्वारा ही उसके प्रचार का निश्चय किया । इसी को मैंने अपना कार्य माना । "राजस्थान चरखा संघ" के प्रचार मन्त्री की जगह मेरी नियुक्ति हुई ।

स्वभाव भेद के बावजूद मेरे उनके सम्बन्ध शुरू से जो अच्छे बने सो अब तक बने हुए हैं। हमें कभी एक दूसरे के बारे मे दुविधा नहीं मालूम पडी।

बाबा नर्सिह दासजी—

बावाजी स्व० नृसिंहदास राजस्थान में अपने ढग के निराले थे। उनसे मतभेद रखते हुए भी सभी दल के कार्यकर्त्ता उनके त्याग, सेवा तथा अपनेपन के प्रति आदर रखते थे। यह गुण बहुत कम लोगों मे होता है। उनका घनिष्ठ सम्बन्ध आरम्भ से ही आश्रम से रहा है। कुछ समय के लिए आश्रम छोडकर अन्यान्य प्रवृत्तियो मे लग गये थे, जब वापिस आये तो मैंने कहा—बाबाजी आपके आश्रम को मैंने हरा भरा ही रखा है—मैं आपका कपूत वारिस नही हूँ। शुरू से कुछ न कुछ बढता ही रहा है।' बाबाजी को इस पर बडी प्रसन्नता थी। आखिरी वक्त मे जब हृदय रोग के मरीज होगये थे कहते—'आप मेरी क्यो फिक्र करते हो? जीना तो आपको अधिक चाहिये।' यह जीवन के प्रति उनकी निस्पृहता का और गुण ग्राहकता का उत्तम नमूना है।

भागीरथी जी को वह अपनी बहन, बेटी की तरह मानते थे। पुरानी प्रथा के अनुसार वट सावित्री पूर्णिमा के दिन वह आश्रम के पास एक वट की पूजा के लिये गई। बाबाजी को उसकी यह धर्मान्धता सहन न हुई। 'हरिभाऊ की स्त्री ऐसा कैसे कर सकती है?' वे कुल्हाडी लेकर उस वट को काटने चले। किसी ने सुझाया, बावाजी, इसके बारे मे बापूजी की राय तो ले लीजिये, फिर कुछ करना ठीक होगा। यह बात उनके गले उतर गई। बापूजी ने इस पर राय दी, यदि भागीरथी ने पेड समझ कर पूजा की हो तो यह अच्छा नही है—'यदि उसमे परमेश्वर का वास समझकर पूजा की हो तो ठीक किया। बावाजी शान्त होगये।

जब बात उन्हे अनुचित लगी तो वे जी जान से उसके विरोध के लिए कटिबद्ध होगये, जब उनकी समझ मे दूसरी बात आ गई तो फौरन उसके अधीन हो गये। यह बाबाजी की विशेषता थी।

शोभालाल गुप्त—

बिजोलिया का सत्याग्रह चल रहा था। स्व० श्री जमनालाल जी बीच बचाव मे पडे थे और उनकी तरफ से श्री शोभालाल जी गुप्त बिजोलिया गये थे। वे उन दिनो 'त्यागभूमि' के सम्पादक वर्ग मे थे। बिजोलिया मे उन दिनो दमन का दौर था। जिस सदभावना का पैगाम लेकर शोभालालजी गये थे, उसकी कद्र तो दूर, सदेह मे पुलिस वालो ने उनके साथ बुरी तरह का व्यवहार किया। उन्हे मारा पीटा और अपमानित किया। शोभालालजी ने बडी शान्ति और धैर्य के साथ उसे सहा। जब मुझे मालूम हुआ मैं उन दिनो पचायत सलाहकार और सत्याग्रह का मार्ग दर्शक था—ग्लानि से मर सा गया। मैंने अनुभव किया कि यह अपमान या पिटाई शोभालालजी की नहीं, मेरी हुई है। उनके धैर्य तथा शान्ति का स्मरण सदैव बना रहता है। इस घटना से शोभालालजी हम सबके अधिक प्रिय और आदर के पात्र होगये हैं।

बजनाथ महोदय —

नमक सत्याग्रह के प्रारम्भ की घटना है। मैं उस सत्याग्रह का प्रथम डिक्टेटर था और मैंने तय किया था कि दो टोलिया एक दलनेता के नेतृत्व मे अजमेर से ग्रामों मे प्रचारार्थ जाय।

सभा का ऐलान हो चुका था। टोली का नाम प्रकाशित हो चुका था और जब मैं टोली को विदा देने के लिये, सभा स्थान पर पहुँचा तो मुझे खबर मिली कि टोली के नायक ने जाने से इन्कार कर दिया। मुझे काटो तो खून नहीं। 'भगवान! गजब हुआ खूब मुंह काला किया तूने।' मेरी वेदना बैजनाथ जी ने समझ ली। बोले, 'दादासाहब, चिन्ता क्यों करते हैं? मेरी टोली चली जायगी।' आप उसके नाम का ऐलान कर दें। मुर्दे में जान आ गई। महोदयजी के इस आश्वासन ने मेरी आंखों में कृतज्ञता के आंसू ला दिये।

कौनसा ऐसा काम था जिसमें यह विश्वास नहीं रखता था कि कोई बात नहीं महोदय सा० साथ हैं, वे कर देंगे। वे उन देवोपम व्यक्तियों में है, जिनके आलोचक शायद ही हो, जिनको स्पर्श तक छल कपट, द्वेष, की छूत तक नहीं लगी। आज तक के अपने सम्पर्क में मैंने उन्हें कभी क्रोधित नहीं देखा।

**लादूराम जोशी —**

इसी से मिलता जुलता व्यक्तित्व भाई लादूरामजी जोशी का है। उनके अकृत्रिम स्नेह का वर्णन कैसे किया जाय? सेवा करने तो वे थकते ही न थे। छोटे से छोटा सेवा का कार्य हो लादूरामजी सदा तैयार। कष्ट सहन को कुछ समझते ही नहीं। संस्कृत के पंडित, परन्तु नवीन से नवीन विचार को ग्रहण करने करने की तत्परता। आश्रम में उनके हाथ की खाई मोटी रोटी और मूंग की दाल बराबर याद आती है। नम्र भी, तेजस्वी भी। सदा सच्चाई का पक्ष लेने वाले। राजस्थान में जितनी बार वे जेल गये हैं, शायद ही कोई दूसरा गया हो। आज वे सीकर शेखावाटी के सर्वमान्य व्यक्ति हैं ऐसा कहें तो अत्युक्ति नहीं। यहां कुछ घटनाओं और प्रवृत्तियों के भी पावन प्रसंग याद आ रहे हैं वे इस प्रकार हैं —

**सस्ता-साहित्य-मण्डल और त्याग भूमि —**

'सस्ता साहित्य मण्डल' ने एक नवीन साहित्यिक व राष्ट्रीय जागृति का काम शुरू कर रखा था। भिक्षु अखण्डानंदजी ने गुजराती में बहुत सस्ती पुस्तकें निकालकर जनता को आश्चर्य व आनन्द में डाल दिया था। पुस्तकें सस्ती व इतनी तेजी से निकालते जा रहे थे कि पड़ौसी महाराष्ट्र व हिन्दी भाषी भी उससे प्रभावित हो रहे थे। यद्यपि जानकार लोग यह कहते थे कि इसमें गुण की अपेक्षा संख्या का भाग अधिक है, फिर भी इतना सस्तापन हर किसी को आकर्षित कर लेता था। उसे देखकर जमनालालजी के मन में यह विचार बार-बार उठता था कि हिन्दी में भी ऐसी एक संस्था सेवा-भाव से खोली जाय। भिक्षुजी से इस विषय में उन्होंने बातचीत में कई बार जिक्र किया था। मुझ से भी भिक्षुजी की बात हुई थी। पर जब तक कोई एक आदमी अपना सम्पूर्ण जीवन ऐसे कार्य को देने के लिए तैयार न हो, तब तक किसी संस्था को खड़ा करना, मानो अपने सिर एक बला मोल ले लेना है। जमनालालजी भुक्त भोगी थे, अत किसी सेवा भावी की राह देखी जा रही थी, जो कोरा साहित्यिक कवि, लेखक न हो। इनकी तो हिन्दी में कमी नहीं थी। पर वह व्यवस्था कुशल और कार्यदक्ष की तलाश में थे। आखिर 'अग्रवाल महासभा फतेहपुर (जयपुर राज्य) अधिवेशन के अवसर पर उसका बीजारोपण हो गया। ऐसा एक व्यक्ति भाई जीतमलजी लूणिया के रूप में हमें मिल गया। यहां मैंने जमनालालजी से लूणियाजी का परिचय कराया। उसके बाद



**क्रान्ति वीरों का स्मरण**

जल्द ही 'मडल' कायम हो गया । उसका उद्देश्य सस्ते परन्तु जीवन-स्फूर्तिदायी राष्ट्रीय ग्रथो का प्रकाशन था । उसे केवल बिक्री या पाठका के मनोरजन का ख्याल नही था, बल्कि उन्हे स्वस्थ एव पुष्टिदायी मानसिक खुराक देनी थी । अत्याचार का, फिर वह किसी भी क्षेत्र मे क्यो न हो, डटकर मुकाबला करने की प्रवृत्ति बढानी थी । फिर उसके द्वारा कार्यकर्त्ताग्रो का एक दल व ऐसा सगठन कर लेना था, जो साहित्य-सेवा के साथ साथ देश सेवा मे भी ग्रपना समय व शक्ति लगा सके । जब तक 'मडल' ग्रजमेर मे रहा, उसके कार्यकर्ताग्रों का प्रभाव लोगो को महसूस होता रहता था । उसके दिल्ली चले जाने के बाद (१६३४ मे) ग्रजमेर के लोगो को एक रूखापन मालूम पडने लगा । कई राजस्थानी मित्रो ने मुझ से कहा कि 'मडल' को दिल्ली भेजकर ग्राप लोगो ने बडी गलती की— इस प्रात का भारी नुकसान कर दिया, उसे ग्रजमेर मे इसीलिए खोला गया था कि उसके द्वारा राजस्थान के जीवन मे तेज ग्रा जाये ।

( मडल ने ग्रपनी दो-तीन मालाग्रो मे ग्रच्छी पुस्तकें तथा 'त्यागभूमि' जसी शात, गभीर व तेजस्वी-पत्रिका तो प्रकाशित की ही, पर साथ ही राजस्थान के प्राचीन ग्रथो की खोज व सग्रह का काम भी वह करना चाहता था, पर किसी योग्य व्यक्ति के ग्रभाव मे वह धरा ही रह गया ।)

'त्याग भूमि' की लोग ग्रब भी याद करते हैं । कई महानुभावो ने यह राय दी थी कि 'त्याग भूमि' जसी पत्रिका हिन्दी मे दूसरी नही है । खुद प० जवाहरलाल नेहरू ने लिखा था

इलाहाबाद, १६ ७ २६

प्रिय भाई हरिभाऊजी,

ग्रापका खत मिला ग्रौर जो ग्रापने 'त्यागभूमि' मे लेख भेजे हैं वह भी देखे हैं । बाज लेख बहुत ग्रच्छे हैं । ग्रगर ग्राप यह समझते हैं कि त्यागभूमि' की तरफ मेरा ध्यान नही है तो यह गलत बात है । मेरी राय मे हिन्दी मे सबसे ग्रच्छी पत्रिका 'त्यागभूमि है । लेकिन मैं कुछ लिखने से मजबूर हूँ । समय नही मिलता ग्रौर ग्राजकल कुछ जी भी नही चाहता । फिर भी जब हो सका तो ग्रापको लिखके भेजूँगा ।

ग्रजमेर मे ग्रापने इतने ग्रच्छे कार्यकर्ता जमा किये हैं कि वहा तो बहुत ग्रच्छा काम होना चाहिए ।

ग्रापका

जवाहरलाल नेहरू

उस समय 'त्यागभूमि के जो मतव्य स्थिर किये गये थे, वे ग्राज के समय म भी हमे स्फूर्ति देते हैं । 'त्याग भूमि' ग्रपनी शक्ति भर सेवा करके यद्यपि चिर-निद्रा मे सो गई, फिर भी उसका सदेश प्रत्येक हिन्दी-भाषी के हृदय मे प्रेरणा देता रहेगा । ऐसा मुझे विश्वास है । 'त्यागभूमि को चमकाने मे मेरे ग्रभिन्न-हृदय साथियो का स्नेहपूर्ण सहयोग भुलाये नही भूलता, जिसम क्षेमानन्द राहत, श्री रामनाथ लाल सुमन, भाई मुकुट बिहारीलाल वर्मा, कृष्णचद्र विद्यालकार प्रमुख हैं । परिश्रम इन सबका था नाम मेरा होता था ।

इसके तीन साल बाद त्यागभूमि मासिक से साप्ताहिक कर दी गई थी । बाद मे तत्कालीन ब्रिटिश सरकार के कोप से बद हो गई । एक साल मुश्किल से चल पाई होगी । लगभग इन चार बरसो म भी उस-समय उसने ग्रपनी जो धाक जमाई प्रभाव डाला वह ग्राज भी जगह-जगह दिखाई देता है । उसके लिए पूज्य बापू ने जो 'ग्राशीर्वाद' भेजा था, वह सदव मेरे कानो मे गूँजता रहेगा

" 'त्याग-भूमि' नाम तो बडा अच्छा है । परन्तु आजकल नाम के बराबर काम नही होता । मेरा तो विश्वास है कि 'त्याग-भूमि' इस बुरी आदत को दूर करने का सम्पूर्ण प्रयत्न करेगी । और मेरी दृष्टि से हिन्दुस्तान मे और इस युग मे जो भारतवर्ष की सेवा करना चाहता है, उसके त्याग का आरम्भ खादी और चर्खा से ही हो सकता है । मेरी आशा है कि 'त्याग-भूमि' भी अपने मन का आरम्भ चर्खा प्रचार से ही करेगी ।

मोहनदास गाधी"

३१ ३-२६

**और बिजोलिया —**

बिजोलिया (मेवाड) का किसान आदोलन और सत्याग्रह, ये दोनो राजस्थान के इतिहास म अमर रहेंगे । मैं समझता हूँ, सभवत भारत के किसान आदोलन म भी वह अपनी सानी नही रखता है । मेवाड-जसी पिछडी रियासत में, सो भी एक ठिकाने मे, इतना जबरदस्त आदोलन चलाना कि जिसम मेवाड-राज्य तक को झुकना पडा, यह स्व० विजयसिंह पथिक की ही करामात थी । सिरोही मे स्व० मोतीलालजी तेजावत के भील आदोलन को भी इसीसे स्फूर्ति मिली थी । उस समय पथिकजी और तेजावतजी ब्रिटिश हुकूमत के लिए भी एक जटिल समस्या बन गये थे ।

बिजोलिया आदोलन के दो भाग किये जा सकते हैं । (१) स्व० पथिकजी के नेतृत्व मे चला आदोलन जिसमे साधु सीताराम दास, वर्मा साहब तथा चौधरी रामनारायण जी ब्रह्मचारी हरिशकर उनके प्रमुख साथी थे और (२) गाधीजी के सिद्धान्त के अनुसार चला सत्याग्रह जिसमे स्व० जमनालाल जी बजाज का मार्गदर्शन तथा मेरा सहयोग भी रहा था । पथिकजी पुरानी छिपी कूटनीति को मानते थे । बाद मे तो पथिकजी भी खुली नीति को मानने लगे थे । पथिकजी के समय मे बिजोलिया की किसान-पचायत और मेवाड-राज्य के बीच सन् १६२२ मे एक समझौता हुआ था । उसके पालन के सिलसिले मे कुछ कठिनाइयाँ और बाधाएँ उपस्थित होने पर पथिकजी की सलाह से किसानो ने अपनी जमीन का इस्तीफा दे दिया । उसमे किसान बुरी तरह फँस गये । जमीन उनके हाथ से निकल गई और पिछले समझौते की शर्तें भी कुछ बाकी रह गई । तब पथिकजी ने पचायत के सलाहकार पद से इस्तीफा दे दिया । पचायत ने गाधीजी की रीति-नीति पर काम करने का निश्चय किया और और स्व० जमनालालजी बजाज से पथ-दर्शन का अनुरोध किया । तब उनकी प्रेरणा स मुझे सलाहकार नियुक्त किया गया । मैंने पहले मिल-जुल कर समझौता कराने की चेष्टा की, जसा कि सत्याग्रह का पहला सिद्धात है । उसके विफल होने पर सत्याग्रह की सलाह दी । इस सत्याग्रह मे वर्मा सा० तथा उनके पचासो साथियो को जेल के कठिन कष्टो को झेलने पडे । भाई श्री शोभालाल जी गुप्त तथा कवि अचलेश्वर जी (अब सम्पादक, प्रजा सेवक, जोधपुर) को बुरी तरह अपमानित होना पडा जिस प्रसग को याद करके आज भी मेरे रोगटे खडे हो जाते हैं । सत्याग्रह शुरू करने से पहले मैंने इस सम्बन्ध म मेवाड के महाराणा साहब को सारी स्थिति समझाते हुए पत्र लिखा था, जो इस प्रकार है

बिजोलिया के किसानो को लगान की बढती, छट्टूद तथा ठिकाने की अन्य ज्यादतियों की बहुत शिकायत थी और कोई दो साल उन्होन उन्ह दूर करने की गरज से हासिल रोक दिया था । श्रीयुत ट्रेंच

साहब ने श्री जमनालाल बजाज से एक बात कही थी कि ग्राप इस मामले में दिलचस्पी लीजिये। चुनांचे उन्होंने मुझे प्ररणा की और मैं ट्रेंच साहब से बिजोलिया के किसानों की पंचायत के सलाहकार और प्रतिनिधि की हैसियत से उदयपुर मे मिला। उन्होंने जब मुझसे यह निश्चय रूप से कहा कि मैं सुलह चाहता हूँ बिजोलिया फिर तूफान नहीं देखना चाहता, तब मैंने किसानों को शांत रहने और हासिल भर देने के लिए समझाया। किसानो की मुख्य चार माँगें थी

१ १६२२ के फैसले की जो शर्तें ठिकाने ने तोडी हैं, उनकी पूर्ति हो।

२ छट्टूंद लगान से अलहदा न लिया जाय।

३ माल का लगान बहुत ज्यादा है, इसलिए या तो लगान कम किया जाय या बदोबस्त की फिर से जाँच कराई जाय।

४ इन शिकायतो के विरोध मे, शिकायत दूर होने तक जिन जमीनों का इस्तीफा, किसानों ने दिया था, वे वापस लौटा दी जायें।

इन माँगो के बारे मे ट्रेंच साहब के और मेरे बीच यह समझौता तय पाया था

१ ठिकाने की ओर से यह आश्वासन मिले कि १६२२ के समझौते की कोई शर्त न तोडी जाय और जो किसी तरह टूटी हो तो उनकी पूर्ति की जाय।

२ छट्टूंद लगान मे शामिल कर दिया जाय।

३ लगान म कम-से-कम एक आना फी रुपया कम कर दिया जाय और लगान कम करने की बनिस्पत यह मुनासिब समझा गया कि वाकयात और कसरात मे छूट दे दी जाय।

४ जो जमीन ठिकाने के है, वह लौटा दी जाय और जिसकी बापी हो चुकी है, उसे जाब्ते से लौटाने मे दिक्कतें हैं इसलिए खानगी तौर पर कोशिश करके लौटा दी जाय। इसमे बापी की जमीन की तजबीज को छोडकर शेष बातो का ऐलान श्रीमान रावजी ने किसानो की वृहत सभा मे किया, जिससे किसानों को बडा सन्तोष हुआ और उन्होंने ठिकाने को तथा महकमा खास को इसके लिए धन्यवाद दिया।

'परन्तु मुझे खेद है कि इस समझौते का पूरा पूरा पालन अभी तक नहीं हुआ। जागीरदारो ने पहले तो जमीन लौटाने से इन्कार कर दिया, फिर महकमा खास की ओर से मुसरमात होने पर कुछ जमीन लौटाई, पर अब भी कितनी ही जमीन किसानो के कब्जे में नही आई है। इसी तरह बापीवाली जमीन भी उन्हें नही मिली है। बापी कराने मे नये लोगों को जो नजराना देना पडा, उसका कुछ बोझ उठा लेने के लिए किसान तयार हो गये, तब भी जमीन उन्हे नही मिली। ट्रेंच साहब कहते हैं कि कोशिश की गई, मगर वे इस्तीफावाली जमीन देने के लिए राजी नही हैं। मेरा ख्याल है कि यदि ट्रेंच साहब खुद कोशिश करें और जाती तौर पर उन्हे समझावें, अथवा श्रीमान् की ओर से उन्हें ऐसा कहा जाय तो कोई वजह नहीं कि उन पर असर न हो। यह मैं मानता हूँ कि जाब्ते से उनपर जोर डालना ठिकाने और राज्य दोनों के लिए मुश्किल है। पर यदि ट्रेंच साहब और श्रीमान् आपस के समझौते का कोई रास्ता निकाल दें तो कोई वजह नही कि दोनो पक्ष के लोग न मानें।

'श्रीमान् अब सिर्फ इन बातो की वजह से किसानों म असतोष बढ रहा है। अब वह मेरे रोकते रोकते भी इस हदतक पहुँच गया है कि उन्होंने आगामी आखातीज को अपनी-अपनी जमीन पर कब्जा कर लेने

के निश्चय की सूचना मुझे दी है। मैंने श्री ट्रेंच साहब को मिलने के लिए हालही पत्र भी लिखा, मगर अभी तक उत्तर नही आया। इधर आखातीज नजदीक आ रही है। इसलिए अब सीधा श्रीमान् की सेवा मे ही यह निवेदन करना पडा। यदि श्रीमान् मुझे शीघ्र ही मिलने का मौका दें तो इसे आपस मे तय कराने के लिए मैं हर तरह से सहयोग देने को तैयार हूँ और मेरी हार्दिक अभिलाषा है कि यह मामला बढने न पावे, न किसानो और उनके परिवारो को सत्याग्रह करके जेल आदि के कष्ट उठाने पडें, न इस नाजुक अवसर पर रियासत को ही किसी तरह की बदनामी उठानी पडे। एक ओर जब कि कांग्रेस ऐलान कर रही है कि किसानो का लगान पांच फी सदी कम कर दिया जायगा, जब कि लार्ड इरविन महात्माजी से वादा करते हैं कि किसानो की तमाम इस्तीफाशुदा जमीन लौटा दी जायेगी, जबकि जल्द ही राउंड टेबल कान्फ्रेंस मे ब्रिटिश भारत और देशी राज्यो के अधिकारो का फैसला होने वाला है, तब यदि श्रीमान अपने ठिकाने के दुखी किसानो के इस साधारण मामले का भी कोई संतोषजनक रास्ता न निकाल सकें तो इससे बढकर दुर्दैव की बात और क्या हो सकती है ? श्रीमान् को दो मे से एक बात का चुनाव कर लेना है

(१) या तो उन किसानो और परिवारो को बरबाद कर देना,

(२) या जागीरदारो और नई बापीवालो को समझाकर जमीन लौटवा देना।

"इनमे से कौन सी बात श्रीमान् के लिये सरल है, कौन सी श्रीमान की शोभा और गौरव को बढानेवाली है, यह मुझे निवेदन करने की आवश्यकता नही। मुझे पूर्ण विश्वास है कि जिस तरह पहले भी महकमा खास ने तथा ट्रेंच साहब ने अपनी सद्भावना और न्यायनिष्ठा का परिचय देकर किसानो के दुख को मेटने के लिए आगे कदम बढ़ाया था, उसी तरह अब भी वे यश के भागी बनेंगे और किसानो के आशीर्वाद प्राप्त करेंगे।"

इस पत्र का कोई उत्तर नही आया और न ही कोई सुनाई हुई। अत आखातीज पर सत्याग्रह शुरू होगया। किसानो ने अपने (इस्तीफा दिये हुए) खेतो पर हल चला दिये। मेवाड सरकार की ओर से दमन शुरू हुआ। इस सिलसिले मे मुझे मेवाड राज्य की ओर से एक चेतावनी भी दी गई और मेरा मेवाड मे प्रवेश निषिद्ध कर दिया। जिसके जवाब मे मैंने एक सविस्तार पत्र अजमेर मेरवाडा के तत्कालीन कमिश्नर को लिखा, वह इस सत्याग्रह के न्याय-पक्ष का अकाट्य प्रमाण है। इसके फलस्वरूप कमिश्नर की सहानुभूति ही नही, सहयोग भी हमे प्राप्त हुआ था।

बिजोलिया का यह आदोलन गुप्त और प्रकट दोनो कार्य पद्धतियो के गुण-अवगुण पर अब भी रोशनी डालता है।

इस समझौते मे पूज्य मालवीयजी, तथा श्री जमनालालजी बजाज को भी जोर लगाना पडा था। मेवाड राज्य के तत्कालीन प्रशासक सर सुखदेव बडे कडे और टर्रे हाकिमो मे थे। मालवीयजी को अपने एक पत्र मे उन्हे यहा तक नसीहत देनी पडी थी।

To their faults a little blind, to their virtues very kind अर्थात् बडो को उचित है कि दूसरो के अवगुणो को दरगुजर करें और गुणो की कद्र करें।

सर सुखदेव मुझसे इस कदर चिढ़ गये थे कि मालवीयजी का उन्होंने लिखा था कि 'हरिभाऊ पचायत का बद-सलाहकार है।' उनकी जो-हुक्मी या बदतमीजी का एक नमूना देखिये। इससे उस समय के हाकिमों की मगरूरी का कुछ पता चलता है। श्री जमनालालजी ने बिजोलिया-सत्याग्रह के तत्कालीन नेता श्री माणिक्यलालजी वर्मा को जेल से छुटकारे के लिए सर सुखदेव को पत्र लिखा। उन्हें खबर मिली थी कि वर्मा जी जेल म सताये जा रहे हैं और बीमार हो गए हैं। सर सुखदेव जवाब मे फरमाते हैं,

'माणिक्यलाल को किसी किस्म की तकलीफ नही है। और न वह जेल मे हैं। जिस कस्बे मे उसको रखा गया है वहा वह आजादी से बिना किसी रोक-टोक चल-फिर सकता है। और हर शख्स से बात कर सकता है। इजाजत लेने की कोई जरूरत नही है। फिर भी यह अफसोस है कि वह अमन मे खलल डालने के लिए लोगो को वरगलाने से बाज नही आता।"

कितनी तुच्छता से उस व्यक्ति का उल्लेख किया है, जो आगे चलकर राजस्थान का एक नेता और उसी मेवाड राज्य का पहला मुख्य मत्री बना।

बाद म सर टी० विजयराघवाचाय जब वहा के दीवान हुए तो जमनालालजी प्रजामडल के सिलसिले मे उनसे मिलने गये। उस समय १६४० मे जाकर मेवाड मे मेरा प्रवेश-प्रतिबध खुला। कोई दस साल यह बदिश रही। उस समय का एक प्रसग, जिसमे वर्माजी की अपने साथियो के प्रति सम्मान की भावना का प्रदशन होता है, लिखने योग्य है। यह स्वाभाविक ही था कि उदयपुर म जमनालालजी का जुलूस निकाला जाता। वर्माजी ने आग्रह किया कि "जमनालालजी के साथ जुलूस मे हरिभाऊजी भी बठेंगे। हमार निकट के साथी तो यही रहे हैं।" मेरी निषेधाज्ञा उस समय खुल गई, मेरे लिऐ यही बहुत था। अत मैंने उन्हे समझाया कि "यह समय ऐसे आग्रह के लिए अनुकूल नही है। आखिर मैंने जो कुछ किया है वह जमनालालजी के प्रोत्साहन और सहयोग से ही किया है। उनके सम्मान मे हम सबका सम्मान सुरक्षित है।'

**मेवाड के राष्ट्र देवता —**

यद्यपि मेवाड मे राजस्थान के राष्ट्र-देवता महाराणा प्रताप के वशजो का ही राज्य चला आता था, फिर भी १६२७ तक 'प्रताप-जयति जैसा कोई सावजनिक उत्सव वहा नही मनाया जाता था। १६२७ मे त्यागभूमि' (मासिक पत्रिका) अजमेर से निकली। मेरे साथ श्री क्षेमानदजी राहत (अब महात्मा भगवान) भी उसके सपादक थे। वह बडे प्रताप-भक्त थे। उन्ही की मुख्य प्रेरणा से त्यागभूमि' का प्रताप अक निकाला गया और उन्ही ने प्रताप-जयति मनाने की प्रेरणा मेवाड के तत्कालीन नेताओ को दी और प० शिवनारायणजी, दिलीपसिंह जी व राठी जी आदि तत्कालीन नेताओ के प्रयास से उदयपुर मे प्रताप-जयति धूमधाम से मनाने की शुरुआत हुई।

*महाराणा प्रताप जयंति —*

१६३१ मे बिजोलिया सत्याग्रह चल रहा था। मैं उसका सलाहकार था। उन्ही दिनो मे जहाँ तक मुझे याद है, प० शिवनारायणजी और राठीजी मुझसे अजमेर (हटूंडी) मे मिले और प्रताप-जयति समारोह की अध्यक्षता करने का अनुरोध किया। मुझे यह प्रस्ताव मौजूं नही लगा, क्योकि म बिजोलिया

सत्याग्रह मे लगा हुआ था । उदयपुर में स्व० सुखदेवप्रसादजी प्रधानमन्त्री या एडमिनिस्ट्रेटर थे । ऐसी दशा मे मेरा उदयपुर जाना रियासत को अखर सकता था और कार्यकर्ता सकट म पड सकते थे। यह दृष्टिकोण मने दानो मित्रों के सामने रखा, परन्तु उन्होने अपना आग्रह नही छोडा । अत नियत तिथि पर मैं प०लादूराम जी जोशी के साथ उदयपुर गया । महाराणा प्रताप का उत्सव राजकीय होने के कारण हम राज्य के अतिथि माने गये । हमारे उदयपुर पहुँचने के बाद शायद सर सुखदेवप्रसाद को ठीक तरह मालूम हुआ कि यह हरिभाऊ तो बिजोलिया सत्याग्रह के सचालक हैं । वह सोच मे पड गये और उन्होंने प० शिवनारायण आदि को बुला भेजा और कहा कि यह तो गजब हो गया । बिजोलिया का नेता यहा आ गया ! इस स्थिति को सँभालना चाहिए । और ऐसा करो कि उन्हे किसी तरह लौटा दो—वापस जाने के लिए कह दो । यह सुझाव इन्हे पसद नही आया । वह किस मुँह से ऐसा कहते ! तब सर सुखदेव ने सुझाव दिया कि वापस न भेज सकते हो तो वह भले रहें, पर अब उनका व्याख्यान मत होने दो । वह सिटपटाये हुए मेरे पास आये । मने मुस्कुराकर कहा, "मैंने तो पहले ही आपको सावधान किया था । पर अब, यह भी अच्छा नही लगता कि हम व्याख्यान न दें । अब आप एक काम कीजिये । आप सर साहब को सुझाइये कि हमारे मुँह से उन्हे यह कहना भी अच्छा नहा लगता, पर आप जाब्ते से उन्हें भाषण करने से मना कर दीजिये—वह आपका आदेश मान लेंगे । उन्होने कहा है कि हमारा आन्दोलन बिजोलिया तक सीमित है । उदयपुर मे हम किसी तरह का बखेडा नही चाहते । राज्य का आदेश हम मान लेंगे ।" यह सुझाव उन्हे पसद आ गया । इसम मेरा दुहरा उद्देश्य था—अव्वल तो म मानता था कि प्रधान मत्री राज्य की ओर से इस पुण्य जयन्ति के अवसर पर ऐसा आदेश निकालना ठीक नही समझेंगे, दूसरे दिया ही तो मैं मान लूँगा । दोना दशाओ मे हमारे उदयपुर के साथी परेशानी से बच जायगे ।

ऐसा ही हुआ—उन्होंने जाब्ते से मनाई का हुक्म देना ठीक नही समझा और यह मान लिया कि भाषण देने से रोकना आसान नहो, उचित भी नही है । तब उन्होने तत्कालीन पुलिस सुपरिंटेंडेंट को कुछ आदेश देकर उन्ह कह दिया कि, 'अच्छा व्याख्यान होने दो ।'

पुलिस सुपरिंटेंडेंट ने जहाँ तक मुझे याद है उनका नाम श्री प्यारेलाल था, मुझ कहलवाया कि सभा मे जाने से पहले मैं उनसे मिल लूँ । इधर इस बात की चर्चा सारे शहर म फल गई कि हरिभाऊ आये हैं और उनका भाषण होने वाला है । सरकार ने रोकना चाहा, पर उसकी नही चली आदि ।

सुपरिंटेंडेंट ने बडी सभ्यता और सौजन्य से बात करके मुझे राज्य की नाजुक स्थिति का भान कराया और कहा कि "आप भाषण म किसी तरह गाधीजी का और खादी का नाम न आने द । इसके बाद हम कोई ऐतराज नहीं है ।' मुझे उनका यह सुझाव अच्छा नही लगा । राज्य की नाजुक स्थिति का मुझे खुद भी खयाल था । इसी कारण मैं तो यहाँ आना भी नही चाहता था परन्तु ऐसी कोई शर्त मानने को म तयार नही था । मेरा कोई इरादा भी गाधीजी का या खादी का नाम लेने का नही था । परन्तु इस सुझाव या शर्त को मानना मने अपने स्वाभिमान के विरुद्ध समझा । मने कहा, 'राज्य की नाजुक स्थिति का मुझे खूब खयाल है । हम गांधीजी के आदमी हैं और उनकी नीति देशी राज्यो म कोई राजनतिक

आन्दोलन या अडगेबाजी करने की नही है। बिजोलिया का सत्याग्रह बिजोलिया के रावजी के खिल है, मेवाड राज्य के नही, और वह वही तक सीमित है। फिर मैं एक जिम्मेदार कार्यकर्ता हूँ। आपको मु पर विश्वास रखना चाहिए और ऐसी कोई शर्त नही लगानी चाहिए।"

वह चिंतित हुए। मैंने उनकी कठिनाई समझी और एक रास्ता सुझाया। और कहा, 'आप क शर्त तो मत रखिये, परन्तु आप स्वय सभा मे आइये। मेरे पास बठिये। मेरा भाषण सुनिये। और ज आपको कोई आपत्तिजनक बात लगे, मुझे धीरे से इशारा कर दीजिये मैं या तो तरकीब से भाषण ब दूगा या विषय बदल दूगा। इससे न तो राज्य पर ही आरोप आने पायगा कि 'प्रताप जयन्ति' के भाष पर भी रोक या शर्त लगाई गई न आप पर ही कोई आच आने पावेगी। जब मैं 'प्रताप जयंति के लि यहा आया हूँ तो मेरा धर्म है कि इस अवसर पर ऐसी कोई बात न कहूँ जिससे आप पर, सर सुखदेव या महाराणा साहब पर किसी प्रकार आच आवे और चिंता भी करनी पडे। आप तीनो को निश्चित क देने की जिम्मेदारी मेरी है, पर आप मुझ पर कोई शर्त न लगाईये।"

वह लाचार हो गये। इधर इस बातचीत से शहर भर मे यह हवा फल गई कि हरिभाऊ भाष जरूर देंगें, लेकिन बीच मे ही उनका भाषण रोक दिया जायगा। इससे भीड और उमड पडी। साधार तौर पर यह एक रस्मी उत्सव होकर रह जाता। पर इस चर्चा से इसमे बडी चेतना आ गई।

मैंने मन म सोच लिया था कि गाधीजी और खादी दोनो का नाम लूँगा, पर इस खूबसूरती से सुपरिंटेंडेंट और सर सुखदेव भी गुदगुदा उठें।

मेरी उदयपुर-यात्रा के सिलसिले म एक बार मास्टर बलवतसिंहजी ने विनोद मे कहा था दासाहब, मालूम है महात्मा गाधी इतने बडे महात्मा कैसे हो गये ? वह मेवाड का पानी पीते हैं। आश्चर्य से उनकी ओर देखने लगा।

"मेवाड का ? कैसे ?'

वह जो साबरमती नदी का पानी पीते हैं, सो मेवाड ही की तो है। हमारे जयसमुद्र से ही त साबरमती निकली है।

यह बात इस मौके पर मुझे याद आई।

मैंने अपना भाषण शुरू किया। मुझे जहा तक याद है अध्यक्ष कोई बहुत बडे सरदार थ—शाय बदला के राव साहब हो। मैंने शुरू किया। सभा म सन्नाटा छा गया—लोग सहमे हुए से थे—अब भाष बन्द हुआ अब बन्द हुआ

आज मेवाड के राष्ट्र देवता प्रात स्मरणीय महाराणा प्रताप की जयति है। वह उस पवि मवाड भूमि म जन्म थे जहा का पानी पीकर महात्मा गाधी इतने बडे जगत-पूज्य महात्मा हो गय। मेवा के लोग इस बात का गर्व अनुभव करते हैं कि मेवाड के पानी ने महाराणा प्रताप और दूसरे शूरवीर पिछ जमाने म पदा किये, और आज भी यहाँ का पानी महात्मा गाधी के रूप म साबरमती आश्रम म बोल रहा और सारी दुनिया को चकाचौंध कर रहा है।'

गाधीजी का नाम सुनते ही पहले तो सुपरिटेंडेंट और अध्यक्ष सा चौंके। पर मेरे एक दो वाक्य पूरे होते-न होते तालियों की गडगडाहट में वे भी ताली बजाने लगे। जिस तरह मैंने मेवाड के गौरव की याद में गाधीजी का नाम लिया, उस पर कोई क्या एतराज कर सकता था ? सबके चेहरे पर प्रसन्नता और उल्लास झलक रहा था। आज उदयपुर-जैसे शहर में व सर सुखदेवप्रसाद के बडे शासन मे भरी सभा में महात्मा गाधी का नाम इस आदर के साथ लिया गया—यह पहली और नई बात थी मेवाड के इतिहास मे।

अब रही खादी। महाराणा प्रताप के कई गुणो का बखान करने के बाद मैंने कहा, "हमारे वर्तमान श्रद्धेय महाराणा साहब खादी के बडे प्रेमी हैं। उनकी सहानुभूति से बिजोलिया मे खादी का काम चल रहा है। वह खुद भी अन्दर खादी का ही कपडा पहनते हैं अत जब मुझे एक मित्र ने यह सुझाया कि अपने व्याख्यान में आप खादी का जिक्र न करें तो मुझे बडा ताज्जुब हुआ। मालूम होता है, उन्होंने खादी को अग्रेजो का, और इसलिए मेवाड का भी दुश्मन समझ लिया है, मगर ऐसी बात नही है। खादी किसी की दुश्मन नही, सबकी दोस्त है। गरीबो की रोटी का सहारा है। यदि हमे महाराणा प्रताप के सादे जीवन का अनुकरण करना हो तो हम अवश्य खादी अपनानी चाहिए।'

यह कहकर तालियों की गडगडाहट मे मैंने भाषण पूरा किया। बैठते ही अध्यक्ष महोदय ने मुझे इतने उत्तम भाषण के लिए बधाई दी। तब मैंने पुलिस सुपरिटेंडेंट साहब से पूछा कि मैंने कोई आपत्तिजनक बात तो नही कही। वह बोले, "बहुत बढिया भाषण रहा।' सर सुखदेव को भी ऐसी ही रिपोर्ट दी गई और हम लोग अच्छे सौहार्दपूर्ण वातावरण मे घर लौटे।

**चौधरी जी —**

मुझे ऐसा याद पडता है कि श्री रामनारायण जी चौधरी से पहली मुलाकात अहमदाबाद काग्रेस (१६२१) मे हुई। राजस्थान सेवा सघ या बिजोलिया सत्याग्रह के सिलसिले मे उनसे मेरा परिचय कराया गया था। फिर १६२६ में मेरे राजस्थान आने से अब तक कई बार तरह तरह के प्रसगो में उनसे मिलने, बातचीत और गपशप करने, साथ काम करने से उनका विशेष परिचय हुआ। स्व० पथिक जी के व दाहिने हाथ थे। सगठन, प्रचार प्रबन्ध, पत्र सम्पादन, सब मे बडे कुशल, अपने ढग के निष्ठावान रहे। बडे भावुक और छुई-मुई तबीयत के मजेदार आदमी हैं। मैं अक्सर उन्हें मजाक में कहा करता हू कि आप प्रेमी हो तो अव्वल दर्जे के और दूसरे ही क्षण बिगड गये तो दुश्मन भी पहले दर्जे के। त्याग, सेवा सगठन की राजनीति में बोल-बाला रहा - अब प्रशासन सत्ता-व्यवस्था प्रजातन्त्र, सन्तुलन की राजनीति में पिछड गये। यदि उन्होने छुई मुई तबीयत न पायी होती और सन्तुलन का अवसर न खो देते तो राजस्थान के मुख्यमन्त्री बन गये होते। अब भी उनमे वह ताजगी तेजी और महक है जो उन्हे स्वस्थ जीवन जीने मे सहायता देती है। तरुण राजस्थान के सम्पादक रहे पथिक जी की रीति-नीति को छोड कर गाधी जी के अनुयायी बने भारत सेवक-समाज में भी सचिव का काम किया। कई खट्टे-मीठे अनुभवो के बाद अब ग्राम सेवा और लेखन की धुन है। अपने पुराने अजमेर नगर में फिर आ बसे हैं। हम लोग जब मिलते हैं तो "बुढ़ियाओ' की तरह पुरानी बातें कर के अपना मनोरजन करते रहते हैं।

वर्मा साहब —

वर्मा सा० ( श्री माणिक्य लाल जी ) राजस्थान के चोटी के नेताओ म हैं। किसी जमाने म राजस्थान मे चार प्रमुख नेता थे—व्यास जी, शास्त्री जी, गोकुल भाई व वर्मा जी । अब पिछले तीन रह गये, इनमे भी राजनैतिक क्षेत्र मे वर्मा जी ही गिने जाते हैं । जब मेरा उनसे परिचय (१६२७) हुआ तब वे अपने क्षेत्र के चमकते हुए सितारे तो प्रतीत होते थे, परन्तु राजस्थान के नेताओं मे किसी दिन आजायेंगे, यह आभास मुझे नही हुआ था । उन दिनो वे बिजोलिया के एक मात्र त्राता मेरी निगाह मे रह गये थे । असली नेता तो पथिक जी ही थे, परन्तु बिजोलिया के किसानो की जमीनो की समस्या ऐसी उलझ गयी थी कि पथिक जी उसम आगे कुछ नही कर सकते थे । किसानो के लिए जीवन-मरण का प्रश्न उपस्थित हो गया—तब अकेले वर्मा जी ही थे जिन्होने इधर उधर भाग दौड करके, दुबारा सत्याग्रह रचा कर जेलो म असीम कष्ट उठा कर उस समस्या को किसानो के पक्ष मे हल कराके ही छोडा । अलबत्ते इस प्रकरण म स्व० जमनालाल जी का माग दशन और सहानुभूति उन्ह मिली थी। फिर भी यदि वर्मा जी उस समय उस सकट म बिजोलिया म न होते, तो सब असम्भव सा था ।

एक साधारण घर मे पदा होकर, मामूली शिक्षा दीक्षा पाकर, केवल अपने त्याग साहस, कष्ट-सहन और सतत लगन के बल पर न केवल राजस्थान के नेता हो गये, बल्कि अपने कई साथियो को भी उन्नति मे योगदान देते रहे। यह कहूँ तो अत्युक्ति न होगी कि आज सुखाडिया जी जो, राजस्थान के शासन की बागडोर समाल रहे है उसकी बुनियाद मे वर्मा जी का बहुत बडा हाथ रहा है । उनका वरद हस्त शुरू से ही सुखाडिया जी पर न होता तो, मेरी समझ मे, सुखाडिया जी का माग इतना प्रशस्त न हुआ होता ।

*मैं अक्सर वर्मा जी को पीडित-पतित दुखियो का शकराचाय कहा करता हूँ ।* स्व० ठक्कर बापा के बाद इन जातियो का यदि कोई त्राता राजस्थान मे है तो वमा जी का नम्बर उनमे सवसे पहला है । आज राजस्थान के पाकिस्तानी सीमा-प्रान्त मे बैठकर जिन कठिनाइयो, कष्टो और शारीरिक असुविधाओ को उठा कर वे प्राण प्रण से लगे हुए हैं—यह उनकी सेवा राजस्थान के इतिहास मे अमर रहेगी ।

गोकुल भाई —

'गोकुल भाई तो मेरे मरने की राह देख रहे हैं—भारत के लौह-पुरुष सरदार पटेल के ये शब्द अब तब मेरे कानो मे गू जा करते हैं । आबू को सरदार ने गुजरात म मिला दिया था—जिन आबू वालो ने आबू को राजस्थान मे मिलाने का आन्दोलन किया था उनमे गोकुल भाई अग्रणी थे । इसी प्रसग पर बात करते हुए सरदार ने उपयु क्त वाक्य कहा था । सरदार जैसे से टक्कर लेने वाले गोकुल भाई को जब आज कुछ लोग ढीला-ढाला कहते हैं तो मुझे आश्चय होता है ।

एक समय था जब गोकुल भाई अधेरी (बम्बई) आश्रम के इचाज थे । बम्बई की कोई ऐसी सावजनिक प्रवृत्ति नही थी जिसमे गोकुल भाई कही न कही नही पाये जाते थे । असहयोग की लहर मे जो बहे तो वह ही गये । कालेज छोडकर बम्बई की प्रवृत्तियो मे जुट पडे ।

बाद मे जब राजस्थान आये तो प्रान्तीय कांग्रेस के अध्यक्ष, अखिल भारतीय कांग्रेस की काय-समिति के सदस्य तक पहुँच गये । पालियामेंट के भी सदस्य रहे । राजस्थान के चार बडे नेताओ मे माने गये ।

अब सर्वोदय क्षेत्र के राजस्थान के एक मात्र नेता हैं। और यहा की कोई ऐसी रचनात्मक प्रवृत्ति नही, जिसमे गोकुल भाई का हाथ न हो। कोई ऐसी सस्था नहीं, जिसम उनका सहयोग न हो। गाधी स्मारक निधि (राजस्थान) के प्रमुख, खादी बोड के उप प्रमुख, "ग्राम राज" के प्रधान सम्पादक, और न जाने कितनी ही सस्थाओ के सदस्य होगे। कभी कभी तो वे ऊब कर कह देते हैं कि मैं इन सस्थाओ से छुटकारा चाहता हूँ परन्तु लाग उनको छोडे कैसे ?

जीवन में अत्यन्त सादा, सदा तीसरे दर्जे म सफर करते हैं। नित्य नियम से चर्खा कातते हैं। दिनरात अविश्रान्त काम करते हैं चकारुठ की भाति। कभी अपने सुख-दुख के बार मे किसी से कुछ नही कहते। कभी कभी लोग उनका मजाक भी उडाते हैं ता शान्ति के साथ सहन कर लेते हैं। कभी दुर्भावना मन म नही आने देते। राजस्थान मे उनके जसा गाधी जी का दूसरा तपस्वी अनुयायी शायद ही हो। ऐसे कमठ, त्यागी और नेता-श्रेणी के व्यक्ति के लिए एक प्रसग पर मेरे कान मे ये शब्द पडे कि "गोकुल भाई का आज राजनीति मे कन्ट्रीब्यूशन क्या है ?" तो मेरी आखो से बरबस आसू निकल पडे।

असावा जी —

श्री गोकुल लाल जी असावा उन पुराने देश-भक्तो काग्रेस भक्तो म से हैं जो आज जीते जी कब्र म गड गये हैं। काशी विश्वविद्यालय से एम ए करने के बाद कोटा कालेज मे दशन के प्राध्यापक हुए थे कि असहयोग और सत्याग्रह की गांधी जी की पुकार आई और गोकुल लाल जी इस कटीले रास्ते पर बतहाशा दौड भागे। जेल मे तो बार बार रहना ही था परन्तु काग्रेस सगठन मे भी पूरा पूरा याग दिया। जब राजस्थान मे स्वतन्त्रता का दौर आया तो शाहपुरा (मेवाड) के प्रथम मुख्यमन्त्री बने। और उसके बाद ही जो एक छोटा राजस्थान भाई वर्मा जी के मुख्यमन्त्रित्व म बना उसमे उपमुख्यमन्त्री बनाये गये। अखिल भारतीय काग्रेस की काय-समिति के भी सदस्य रहे। बाद म राजनीति न ऐसा पलटा खाया कि अब गोकुल जी को पहचानने वाल और याद रखने वाले भी मुश्किल से मिलेगे। एक नबर के सच्चे ईमानदार, देश और सगठन क प्रति वफादार राजनीति के क्षेत्र मे कम मिलेगे। खुद को खतरे मे डाल कर भा अपने साथियो को सजग रखने वाले दुनिया म विरले ही मिलते हैं। असावा जी उन बिरलो म हैं उन पर काम सौंप कर आपको सजग रहने की आवश्यकता नही है। स्व० व्यास जी ने उनका नाम "गुरु" रख दिया था। अब भी हम लोग उन्हें 'गुरु' जी कहते हैं तो व प्रसन्न होते हैं। व्यास जी ने उनपर 'गाद के गुरु" नामक एक लेख भी लिखा था। व कहा करते थे कि अक्सर गुरु शिष्य को गाद लेते हैं, पर मैंने गुरु को गोद लिया है।

दशन, तन्त्र, वेदान्त के गम्भीर विद्वान, चिन्तक, जीवन में सीधे सादे, आज भी वसे ही देश और काग्रेस के भक्त हैं जसे पहले थे। काग्रेस की वतमान छिन्न भिन्नता पर दुखी तो रहते हैं परन्तु अपने लिए कभी कभार ही शिकायत करते हैं। आज किसी भी विश्वविद्यालय की शोभा बढ़ा सकते हैं।

शास्त्रीजी —

जब मैं राजस्थान मे आया तो मुझे श्री जमनालाल जी बजाज न उन कुछ व्यक्तियों के नाम बता दिये थे जिनसे मुझे सम्पक करना और बढ़ाना था। या उनसे कुछ दूर रहना था। श्री हीरालालजी शास्त्री

उनमे प्रमुख थे। उस समय वे जयपुर राज्य के गृह मत्री थे। मैं उनसे उनके सचिवालय मे पहली बार मिला। काफी ऊचे, पूरे जवान, बडी बडी लम्बी मूछे, रौबदार चेहरा, कुल मिला कर आदमी जीवट के और प्रभावशाली मालूम पडे।

सेठ जी ने बता दिया था कि हीरालाल जी होनहार व्यक्ति हैं। इन्हें सरकारी नौकरी से हटाकर सार्वजनिक सेवा क्षेत्र मे लगाना है। उनके मन मे भी ऐसी भावना है। आप उनसे मिलकर इस दिशा मे प्रयत्न करते रहे। और मुझे खुशी है कि वह सुयोग जल्दी ही आ गया। जबकि शास्त्री जी ने अपनी लगी लगाई अच्छी नौकरी से इस्तीफा दे दिया। बी० ए० तो हैं ही, पर 'शास्त्री' उनकी विरासत मे मिली हुई पदवी नही, कमाई हुई है। सस्कृत की शास्त्री परीक्षा पास हैं विधिवत। बाद मे उनके परिवार वालो ने भी उन्हे अपना लिया यह बात दूसरी है।

बाद मे तो शास्त्री जी से इतना सम्पर्क बढा -हम ऐसे घनिष्ठ मित्र और साथी रहे कि हम लोगो के निजी तथा सार्वजनिक जीवन के प्रत्येक उतार चढाव मे हम सहयोगी रहे। जीवन-कुटीर, जयपुर-प्रजामण्डल, वनस्थली विद्यालय, बृहत् राजस्थान का प्रथम मत्रिमडल, जिसके मुख्य मत्री शास्त्री जी ही हुए आदि सब मे हम लोग साथ रहे। जब अजमेर राज्य मे मत्रिमडल बना और मैं मुख्यमत्री हुआ--तब से राजस्थान के विशाल क्षेत्र से सिकुड कर मैं अजमेर मे सीमित हो गया। और घनिष्ठता और हार्दिकता के बावजूद सम्पर्क ढीला होता चला गया। इधर शास्त्री जी भी अधिकाधिक वनस्थली मे डूबते चले गये।

मैंने अक्सर मित्रो से कहा है कि शास्त्री जी मे रचनात्मक सगठनात्मक और प्रशासनात्मक सभी कामों मे अच्छी गति और योग्यता है। उनमे एक ऐसी विशेषता रही है कि जिससे वे दूसरे क्षेत्रो से सिमटते हुए वनस्थली मे केन्द्रित हो गये। और भगवान का यही सकेत मालूम होता है कि अपनी प्रिय वनस्थली को ही चमकायेंगे। यह है उनका घोर आत्म विश्वास, अपने मत का अत्यन्त आग्रह।

स्वेच्छा से मुख्यमत्री पद छोडने का उन्होने उदाहरण पेश किया है। बावजूद योग्यता के उस पद को छोडने की स्थिति, मेरी समझ मे, इसलिए उत्पन्न हुई कि वे प्रजातत्र के प्रयोग मे अपने लिए अनुकूलता न पैदा कर पाये। मैंने एक बार उनसे कहा था कि आपने सरदार का पल्ला पकड लिया, यह तो ठीक परन्तु साथियो को अपने से दूर कर दिया--यह प्रजातत्र मे निभने वाली बात नही है। अपनी असली शक्ति अपने साथी ही होते हैं। बात यह है कि विधि को राजस्थान मे आत्मबल के अलावा बाहरी बल से सरकार बनाने का तिलक भाई सुखाडिया जी के सिर पर ही लगाना था। इसलिए न शास्त्री जी ही वहा रह पाये, न स्व० व्यास जी ही। फिर भी शास्त्री जी अपने क्षेत्र मे अपनी ही शान से चमक रहे हैं इस मे कोई शक नही है।

**भरतपुर-तीन स्मरणीय प्रसग —**

१९२७ हिन्दी साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन। स्व० गौरीशकर जी ओझा-सभापति। स्व० भरतपुर नरेश का अपूर्व उत्साह महामना मालवीय जी, गुरुदेव (रवीन्द्र), जमना लाल जी जैसे महापुरुषो का आगमन। भाई राहत जी (अब श्री भगवान) की प्रेरणा। स्व० महन्त जगन्नाथदास जी की प्रबन्ध व्यवस्था। इस

आन-बरात के साथ, मानों इसमें से किसी की बेटी का ब्याह हो रहा हो—सम्मेलन में कई महत्वपूर्ण प्रस्ताव, खादी प्रदर्शनी—उस समय यह सब दृश्य मुझ जैसे राजस्थान में नवागन्तुक के लिए आश्चर्य आनन्द दायक था। जाटों की—भरतपुर के जाट-नरेशों की वीरता, साहस की कथायें इतिहास में पढ़ी थी। परन्तु अंग्रेजों के राज्य में, गाँधी जी जैसे महान् क्रान्तिकारी युग-निर्माता, सत्याग्रही के भारत-व्यापी असहयोग आन्दोलन के वातावरण में एक देशी नरेश का यह हिम्मत, उसके प्रति सब के मन में आदर पैदा कर रही थी। मेरे मन में आदर पैदा कर रही थी। मेरे मन में सवाल उठता था कि क्या इस सेवक महाराणा ने इस की कीमत चुकाने की तैयारी कर ली है। क्या उसे पता भी है कि कितनी कीमत चुकानी पड़ेगी? पर उनके हिन्दी प्रेम और जाटों की परम्परागत वीरता के सामने ये सब विचार दब से गये। अन्त में इस उत्साह और साहस का कीमत उन्हें देनी ही पड़ी। उन्हें प्रकारान्तर से राजकीय अधिकारों से वंचित किया गया।

यह मेरी पहली भरतपुर-यात्रा थी। हिन्दी क्षेत्र में एक सम्पादक के नाते मेरी शोहरत तो थी ही, परन्तु उस समय खादी प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया था जिसकी जिम्मेदारी मुझ पर थी—मैं चर्खा संघ की राजस्थान शाखा का प्रचार-मंत्री बन कर साबरमती से आया था। उस समय के उस उल्लास-पूर्ण वातावरण की सजीव छाप आज भी मन में जमी हुई है।

अब एक दूसरा सामूहिक दृश्य उपस्थित होता है—उसमें भरतपुर के जन-नेता प्रधान पात्र थे और भरतपुर नरेश के खिलाफ उन्होंने सत्याग्रह का बिगुल बजाया था। यह वह समय था जबकि राजस्थान में प्रजामण्डलों के द्वारा भिन्न भिन्न राज्यों में उत्तरदायी शासन की माग की जा रही थी। राजाओं की ओर से दमन-चक्र चल रहा था। और जगह जगह हमारे देशभक्त साथी और नेताओं को जेलों में ठूसा जा रहा था। प्रजामण्डलों की तरफ से तीन मांगें मुख्य थीं—१ उत्तरदायी शासन देने का ऐलान, २ राष्ट्रीय झण्डा फहराने के अधिकार की मान्यता और ३ राजनैतिक आंदोलन करने की स्वतन्त्रता।

अजमेर-मेरवाड़ा में प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी थी। और जहां तक मुझे याद है स्व० श्री जयनारायण व्यास देशी राज्य प्रजामण्डल के सचिव या अध्यक्ष थे। भरतपुर से समाचार मिले थे कि वहा के लगभग सभी नेता गिरफ्तार होकर जेलों में पड़े थे। उनके बेड़िया डाल रखी थी और उनके साथ काफी सख्तियां जेलों में बरता जा रही थी। इस की खोज-पूछ करने की दृष्टि से प्रजामण्डल की बैठक भरतपुर में बुलाई गई। मुझे जहां तक याद पड़ता है, मास्टर आदित्येन्द्रजी के प्रेस वाले मकान में हम ठहरे थे और मीटिंग भी वहीं हुई था। श्री राजबहादुरजी (आज के केन्द्रीय मंत्री) के घर हम भोजन करने गये थे। वे नये नये एल० एल० बी० होकर आये थे। शादी हुए भी ज्यादा अर्सा नहीं हुआ था। इनकी श्रीमती जी किसी स्कूल की मुख्य अध्यापिका या अध्यापिका थी और ये लोग जेल में थे। यह सब हमने जाना तो इस नवयुवक के प्रति मन में बड़ा स्नेह पैदा हुआ। भरतपुर का जेल वहा से कोई तीन चार मील दूर भरतपुर की फौजी छावनी के नजदीक थी। बन्दियों से मिलने की इजाजत हमको मिल गई और जब हम अन्दर गये तो कई आदरणीय व्यक्तियों को बेड़िया में देखकर हम को बहुत ही दुख हुआ। यों तो हमें सब तरह के कष्टों के लिए तैयार ही रहना था, हमारा एक एक कष्ट सहन का प्रसंग देशी राज्यों में स्वराज्य का एक-एक कदम नजदीक ही

लाता जाता था । अस्तु ! वहा भरतपुर के पुराने नेता (अब स्वर्गीय) प रेवती शरण जी श्री युगलकिशोर जी चतुर्वेदी, श्री राजबहादुर जी के नाम तो मुझे अच्छी तरह याद हैं । मेरा ख्याल है कि स्व० गोकुल जी वर्मा भी उनमे थे—जो कि भरतपुर के सबसे पुराने नेता माने जाते थे । मुझे ऐसा ख्याल पडता है कि कोई २०–२५ व्यक्ति राजबन्दी थे । भरतपुर मे एक सार्वजनिक सभा भी की गई जिसमे हम लोगो के भाषण हुए थे । इसी मीटिंग में यह भी तय हुआ था कि तत्कालीन बीकानेर नरेश से राजनैतिक समझौता करने के लिए और वहा के राजनैतिक बदियो को छुडाने के लिए श्री देशपाण्डे और मैं बीकानेर की यात्रा करें । इस यात्रा मे स्व० बीकानेर-नरेश ने पहले तो हमे बीकानेर-सीमा मे घुसते ही नजरबन्द कर लिया था, पर बाद मे बडे रुझान के साथ बातचीत करके भावी स्वराज्य-योजना के बारे मे आशा-प्रद बात की थी ।

इस यात्रा का एक मजेदार प्रसग याद आ रहा है । मैंने वृन्दावन, गोवर्द्धन और कदम्ब के वृक्षो का सरस और भक्तिपूर्ण वर्णन तो बहुत श्लोको और गीतो मे पढा था, पर दोनो के दर्शन नही किये थे । १९२७ मे भी हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अधिवेशन के समय यह इच्छा अधूरी रह गई । रसखान की "जो खग हो तो बसेरो करा उन कालिन्दी कूल कदम्ब की डारन" की गूज कानो म अक्सर आया करती थी । रसखान के ये दो-तीन सवैये ब्रजभाषा के तत्कालीन कवि प० सत्यनारायण कविरत्न के रसपूर्ण हृदय से मधुर स्वरो मे मैंने सुने थे । उनकी वह सरल भावुक मूर्ति आज भी मेरी आखो म बसी है । उन्होने एक और अपना स्वरचित गीत भी "भयौ क्यो अनचाहत कौ सग" बडे व्यथित हृदय से सुनाया था । जो उनके दुख पूर्ण दाम्पत्य जीवन से प्रेरित था । इसलिए जब भरतपुर मे प्रजा-मण्डल की बैठक पूरी हुई तो हम लोगो ने गोवर्द्धन जाने का कार्यक्रम बनाया । स्व० व्यास जी भी साथ थे । एक कोई और सज्जन भरतपुर से गोवर्द्धन तक हमारे साथ रहे । इस यात्रा मे मैंने पहली बार डीग के ऐतिहासिक राज महलो को देखा । उस दिन दवयोग से कोई पर्व पडता था । जिससे गोवर्द्धन म बडा मेला था । उसम 'मुडिया' निकलने वाली थी । और उस समय उसकी बडी धूम थी । व्यास जी और मैं गोवर्द्धन के पवित्र तीर्थ मे स्नान करके मुडिया की प्रतीक्षा म सडक के किनारे एक टाट बिछा कर बठ गये । काफी बडा मेला था । भरतपुर-नरेश स्वय उसम आये थे । जिस भवन की छत पर वे बठे तथा मुडिया देखने की रस्म अदा करने वाले थे, उसी के सामने सडक के किनारे हमने अपना आसन जमाया था । इस पर व्यास जी न और मैं ने आपस म मजाक भी किया कि भरतपुर म राजनैतिक सम्बन्ध को लेकर भरतपुर-नरेश का सामना था, यहा धार्मिक मेले मे भी सामना हो गया । "मुडिया" शब्द का अर्थ हम कुछ समझ नही पा रहे थे । इसलिए उसे देखने की बडी उत्सुकता थी । बडी प्रतीक्षा के बाद एक भजन मण्डली निकली, मृदग और मजीरे लिए हुए बगला या उडिया मे कुछ भजन गाते हुए, कीर्तन करते हुए ५–७ आदमी उस मण्डली मे थे । सबके सिर मुडे हुए थे । सिर मुडा होने से वे मुडियम कहलाते थे । वास्तव मे ये चैतन्य या गौरग महाप्रभु के अनुयायी थे और उनके कीर्तन का अनुकरण करते हुए जा रहे थे । उस समय के वातावरण मे हम लोगो पर उसका कोई खास प्रभाव नही पडा । बल्कि ऐसा ही लगा कि इतनी दूर से इतनी देर धूप मे प्रतीक्षा करना है ।

अब उसके आगे हमारी यात्रा और भी मनोरजक रही। कदम्ब के पेड देख लेने से और गोवर्द्धन मे स्नान-ध्यान करने से प्रसन्नता और ताजगी मिली थी, वह कुछ तो मुडिया ने हडप ली, और कुछ हमारी मथुरा-यात्रा ने जो चिरस्मरणीय हो गई।

मेले का दिन था—इसलिए मथुरा तक सवारी मिलना कठिन हो गया। गोवर्द्धन से मथुरा कोई १०-१२ मील पडता है। उन दिनो मोटर बस का कोई सवाल ही नही था। तागे मिला करते थे। ताग मुह मागा दाम लकर सवारी ले जाया करते थे। व्यास जी और हम दोनो को मथुरा जाना था। बडी मुश्किल से हम एक टूटा-सा तागा मिला। थोडी दूर हम उसम बठ कर गये। घोडा उसका लगडा था। चाबुक मार मार कर तागे वाला उसे आगे चला रहा था। एक आध जगह घोडा बैठ भी गया, हमे डर भी लगा कि रात का वक्त है, तागा कही उलट गया तो यहा कोई खर खबर भी लेन वाला नही मिलगा। हमने सामान तागे म रख कर पदल ही चलने मे कुशल समझा। मेरे पाव मे एक जूता था। उसमे एक कील निकल आयी। उसके चुभने से खून निकलने लगा, तब जूता भी तागे मे रख दिया और नगे पाव रात को चलते हुए हम लोग कोई २ बजे मथुरा पहुँचे। मेला होने के कारण मथुरा स्टेशन पर बडी भीड थी। प्लेटफाम तो खचाखच भरा हुआ था। बहुत दूर रेल की पटरी के किनारे मुश्किल से एक जगह मिली जहा हमने बिस्तरे फैलाये। और गोवर्द्धनधारी की जय बोल कर निद्रा देवी की शरण ली।

व्यास जी के साथ जीवन मे ऐसे तीन चार प्रसग कष्ट उठाने के आये जिनको स्मरण करके हम जब जब मिलते एक दूसरे स मजाक किया करते। व्यास जी कहते 'आपके साथ रहने का फल मिला' मैं कहता "यह आप की ही कुछ करामात है" इसका फसला हुआ ही नही था कि वे चल बसे—अब वही हमारा फैसला होना ठीक रहेगा।

**स्वामी केशवानन्द —**

स्वामी केशवानन्द राजस्थान की एक विभूति है। चुपचाप लगन से सब मगल की भावना से आजीवन त्याग-पूवक सेवा करने वाला ऐसा साधु राजस्थान मे दुलभ है। मुझे याद पडता है १९३० मे मेरी पहली भेंट उन से अबोहर (पजाब) मे हुई थी। वहा वे एक हिन्दी समिति चला रह थे। और सम्भवत उसके वार्षिकोत्सव पर मुझे बुलाया था। इधर सागरिया (बीकानेर राज्य) म उन्होने एक जाट स्कूल भी खोल रखा था, जिसके लिए ग्रामीण क्षेत्र मे होन के कारण मैंने दिल खोल कर छात्रवृत्तिया बिडला जी से दिलवायी थी। वह छोटा सा स्कूल अब सागरिया विद्यापीठ बन गया है जिस के विविध अग स्वामी जी के तत्वावधान म फल फूल रहे है। इतना बडा काम करते हुए भी, सब क मन म बडा आदर का स्थान प्राप्त करते हुए भी, मामूली आदमी की तरह विनम्र होकर जब उन्ह दूसरो से मिलता देखते हैं तो स्वय बहुत नमनीय हो जाते हैं। सेवा भाव की प्रति-मूर्ति को नमस्कार किये बिना नही रहा जाता।

**कमलनयन बजाज—**

कमलनयन बजाज व्याघ्रमुख गऊ की तरह है। बाज साधू ऐसे देखे हैं जो उलटी बातें बोलत हैं गाली देते हैं पत्थर मारते हैं लोग उनकी इन चेष्टाओ को प्रसाद और आशीर्वाद मानते हैं कमल का भी कुछ

एसा ही हाल है। हमारे परिवार से तथा आश्रम से उनका आज भी वसा ही घनिष्ठ सम्बन्ध है जसा कि स्व० काका जी जमनालालजी के समय था। नमक सत्याग्रह के समय काकाजी ने उन्हें खास कर अजमेर भेजा था, उनके प्रतिनिधि रूप म खुद उनकी वहाँ से जेल जाने की इच्छा थी, परन्तु मध्य प्रदेश का अधिकार बडा साबित हुआ, अत उनका बेटा ही राजस्थान के पल्ले पडा। कमल ने बडी बहादुरी से वहा पिकेटिंग म हिस्सा लिया और पुलिस से पिटा भी।

मुकुटजी —

पुष्कर राजनतिक परिषद १६३० में एक उदीयमान नक्षत्र जो एकाएक चमका। वह एम० ए० एल० एल० बी० करके ताजा ही आया था। सम्भवत राजनैतिक मच पर उसका वह पहला ही भाषण था। उसमे या अन्यत्र उन्होने उस माग के जवाब म जो उनसे राजनैतिक—काग्रेस क्षेत्र मे कूद पडने के लिये हम लोगो की ओर स की गयी थी, कहा था कि जब मैं राजनीति म कूद पडूगा तो जवाहरलालजी की तरह पडूगा—आधे दिल से नही। वास्तव मे इस परिषद से मुकुटजी के राजनतिक क्षेत्र मे पदार्पण करने का श्रीगणेश होता है। फिर तो ब्यावर म्युनिसिपल के चेयरमेन, जिला और बाद मे प्रान्तीय काग्रेस कमेटी के अध्यक्ष के नाते उन्होंने डटकर सेवा की। पहले ब्यावर के फिर सारे अजमेर—मेरवाडा के एक छत्र नेता हुए। इस क्षेत्र से वे पहले काग्रेसी थे जो भारतीय पालियामेट के सदस्य चुने गये। तब से आज तक वे उसके सदस्य रहे हैं। किसी समय भारत म जो सी-श्रेणी के राज्य बनाये गये थे उसके निर्माता हमारे मुकुटजी ही प्रधान रूप से थे। जब अजमेर राज्य बन गया तब उसका मुख्यमन्त्री बनने के लिये मुझे राजी करने वाले मुकुटजी ही थे।

१६३० से आजतक ३६ साल होने पर भी हमारी मित्रता अक्षुण्ण रही। मतभेद की अवस्था मे भी हम दोनो, मैं मुख्यमन्त्री और वे प्रदेश काग्रेस के अध्यक्ष दोनो ने अच्छी तरह निभायी। हम लोगो ने तय कर लिया था कि सगठन के प्रश्नो म उसके अध्यक्ष मुकुटजी की बात प्रधान रहेगी। शासन के मामले मे मुख्यमन्त्री की, मेरी चलेगी। घार मतभेद की अवस्था मे हममे से कोई प्रगट रूप से जनता मे विरोधी आवाज नही उठायेंगे। इस समझौते का परिणाम अच्छा ही हुआ। आगे चलकर हमारी मित्रता रिश्तेदारी म परिणित होगयी। मेरी मझली लडकी शीला का ब्याह मुकुटजी के होनहार भतीजे श्री विशेश्वरनाथ भागव से हो गया।

शुरू से ही मुझ पर और सुखाडियाजी पर विशेषजी की अच्छी छाप थी। और उनकी कायशक्ति से हम प्रभावित थ। ढेबर भाई ने भी मुझको इस युवक को बढावा देते रहने के लिय कहा था। फिर सुखाडियाजी के सुझाव पर शादी का प्रस्ताव दोनो ओर से मजूर हो गया। मुकुटजी कानून के अद्वितीय पण्डित हैं। राजस्थान म आज उनकी टक्कर के दो चार ही वकील होंगे। उनकी स्मरण शक्ति अद्भुत है। इधर कुछ सालो से उनकी आखो की रोशनी बहुत कुछ चली गयी है। खुद कुछ पढ नही सकते तो सुनकर ही सारी वकालती कायवाही करते हैं। कानून की पुस्तको और रिपोर्टों के परे तक उन्हे याद है। काग्रेसियो के बीसियो मुकदमे लडे होगे। उनम शायद ही किसी से फीस ली हो। बीसियो कामयाबी भी ८० फीसदी मे मिली। आजकल अजमेर म ही नही सारे राजस्थान मे वे बड़े आदर प्राप्त व्यक्ति हैं।

काशिनाथ त्रिवेदी—

१६३२ मे दुबारा सत्याग्रह शुरू हुआ था। राउड टेबल कान्फ्रेंस से बापू लौटे ही थे कि फिर सत्याग्रह की नौबत आ गई। साबरमती आश्रम से इस बार बहनो की तगडी टोली ने सत्याग्रह मे भाग लिया। उसके बाद जहा तक सख्या का सम्बन्ध है, अजमेर का दूसरा नम्बर था। बहनें एक के बाद दूसरी बडे उत्साह से सत्याग्रह के लिए तयार हो रही थी। जिनके लिए कभी कल्पना भी नही की जा सकती थी, उन्होने अपने नाम दे दिए। उस समय के कई अनूठे और मीठे अनुभव लिखने लायक हैं। यहा एक दे रहा हू। भाई काशीनाथजी त्रिवेदी अजमेर से जाकर इन्दौर मजदूर सघ के मन्त्री पद पर काम कर रहे थे। मैं इन्दौर बहनो की भरती करने के लिए गया हुआ था। काशीनाथजी की पत्नि सौ० कलावती अकेली थी। काशीनाथजी काम से अहमदाबाद गये हुए थे और बहनो का उत्साह देख कर वह भी अजमेर जाकर सत्याग्रह करने को तयार हो गई। मगर एक कठिनाई थी वह गर्भवती थी, फिर काशीनाथजी मौजूद नही। मैंने सुझाया कि तुम चली चलो मैं फोन से काशीनाथजी से बात कर लेता हूँ। वे भी अजमेर आजावेंगे वहा उनकी राय हो तो जेल चली जाना, वर्ना दोनो इन्दौर वापस आ जाना। दूसरी बहनो को विदाई दे आना। काशीनाथजी मुझे बडे भाई की तरह मानते हैं। उन्होने बडे उत्साह से इस प्रस्ताव का स्वागत किया, कलावती की उस अवस्था मे भी उन्होने उसके सत्याग्रह का हृदय से समर्थन किया। मुझे इस दम्पति के इस शौर्य पर आज भी गर्व है। काशीनाथजी जब तक अजमेर रहे, सस्ता साहित्य मडल तथा आश्रम की शक्ति सिद्ध हुए। उनका जीवन बापू के आदर्श और कार्यक्रम के लिए समर्पित है। हिन्दी के लेखक, शिक्षण शास्त्री, सेवाशील भावुक काशीनाथजी याद आते रहते हैं, उनकी इन योग्यताओ के सामने उनका आरम्भ काल में मध्य भारत में मन्त्रिपद पर रहना कोई बडी बात नही मालूम होती। लगभग सारा परिवार इसी रग मे रगा हुआ है।

कुम्भाराम आर्य

चौ० कुम्भाराम राजस्थान की एक ऐसी शक्ति है जो चुनौती मिलने पर तोड सकती है और चाहे तो जोड भी सकती है। ठेठ देहाती कुम्भाराम ने बीकानेर की राज्य सेवा से अपने जीवन का श्रीगणेश किया और आज राजस्थान के राजनैतिक क्षेत्र मे एक स्थान प्राप्त कर चुके हैं। मुझे याद नही पडता मेरी पहली मुलाकात उनसे कब हुई, अजमेर मे मेरे मुख्यमन्त्री बनने के बाद ही कही उनसे मुलाकात हुई ऐसा मैं समझता हूँ। राजस्थान मे एक समय था जब वे सुखाडिया जी के दाहिने हाथ माने जाते थे। सूरजमान अपहरण काण्ड मे जब उनका बार बार जिक्र आन लगा और जब कांग्रेस हाई कमान ने उन्हें सुखाडिया मन्त्रिमण्डल मे से हटाने का सकेत किया था तब मुझे याद है सुखाडियाजी ने कहा कि यदि मन्त्रीमण्डल से उन्हे हटाते हैं तो मेरा काम नही चल सकता। उस समय मैंने यह पैगाम श्री ढेबर भाई तक पहुँचाया था जो उस समय कांग्रेस के अध्यक्ष थे और वह प्रसग टल गया। ऐसे ही एक और अवसर पर मैंने श्री ढेबर भाई से कहा था कि ईश्वर न करे कि सुखाडियाजी और कुम्भारामजी मे झगडा हो तो फिर राजनैतिक क्षेत्र में कोई एक ही बचेगा। सुखाडिया जी मे सबको सम्भाल कर साथ ले चलने और काम को जमाने की अद्भुत शक्ति है। कुम्भारामजी एक बाढ की तरह हैं जो जोश मे आने पर किनारा छोड देती है।

कुम्भारामजी का रहन सहन बहुत सादा लगभग एक किसान की तरह है। किसानो का नेतृत्व उन्हें सहज ही मिला है। वे कहा करते हैं कि मुझे आत्मा की भाषा अच्छी लगती है ऐसी भाषा बालने का एक अच्छा अवसर आगया। एक बार जयपुर मे वे मेरे घर आये रात को कोई ११ बजे और भूख, घर मे मैं और बच्चे थे। हम सबने मिलकर खाना बनाया और चूल्हे के पास बठकर कुम्भारामजी ने जाटशाही भोजन किया, वह प्रसग मुझे बार बार उनके ममत्व की याद दिलाता है। किसानो का नेतृत्व उनके लिए बडा सहज है। जितनी अच्छी बातें उनकी होती हैं उतना ही स्थिर मिजाज उनका हो ता राजस्थान की कई राजनैतिक गुत्थियां सुलझ जाय। जहा तक मैंने समझा है राजस्थान का मुख्य मन्त्री बनने के बजाय मुख्यमन्त्री को अपने प्रभाव या बस म रखना वे अधिक पसन्द करते है। दुभाग्य से इस समय सुखाडियाजी से उनकी अनबन हो रही है। मुझसे स्नेह तो रखते हैं, बुजुग कहकर मेरा सम्मान भी करते हैं परन्तु मेरी सलाह को वे प्राकृतिक चिकित्सा जसी मानते हैं। सुखाडियाजी उनकी शक्ति को पहचानते हैं परन्तु अब नही कह सकते कहा तक वे उसका उपयोग कर सकेंगे।

गाधीजी कहा करते थे कि मैं राजनीति म एक और चाणक्य दादा होता परन्तु सत्य का रास्ता मेरे हाथ लग गया, मैं सत्याग्रही और महात्मा कहलाया। भगवान करे हमारे चौधरी के हाथ म भी सत्य इसी तरह जोर से पकड मे आ जाय।

**बालकृष्ण गर्ग —**

पिछले आम चुनाव १९५० के दिनों की बात है। अजमेर नगरपालिका के चुनाव मे काग्रेस की तगडी हार हुई थी। इससे आम चुनाव मे काग्रेस की जीत के बारे मे काग्रेस जना म चिन्ता बढ गई थी। उन दिनो बालकृष्ण गग अजमेर प्रा० का० क० के अध्यक्ष थे। बहुत से लोग महसूस कर रहे थे कि कोई पुराना प्रभावशाली व्यक्ति काग्रेस की बागडोर सम्भाल ले तो चुनाव की सफलता का इतमिनान हो सकता है। उन दिनो दलबन्दी का जोर बढ रहा था और काग्रेस के बडे बडे नेता परेशान हो रहे थे। मैं सदन के काम मे जुटा हुआ था। नाम का ही काग्रेसी बना हुआ था। मित्रो के सुझाव आये कि म काग्रेस की जिम्मेदारी समालू। वैसे लोग बालकृष्ण को मुझसे जुदा नही समझते थे फिर भी यह प्रश्न था ही की बालकृष्ण की जगह दा साहब को (मुझे) कैसे लाया जाय। मित्र लोग मुझे समझाने मे सफल हो गये। मैंने उनकी दुविधा दूर कर दी। मैंने कहा 'मैं ही बालकृष्ण स बात करूगा। मैंने बालकृष्ण के सामने सुझाव रखा। अजीब बात थी न? नौजवान गद्दी से खुद होकर उतरे और बूढा वहा जाकर बैठे। और प्रस्ताव भी खुद ही करे। ययाति वाला ही किस्सा हुआ। उसने बेटे से जवानी मागी—बेटे ने उसी क्षण दे दी। यहा भी लगभग ऐसा ही हुआ। बालकृष्ण ने कहा दा साहब मैं भी महसूस करता हूँ कि इस अवसर पर मेरी जगह आपको होना चाहिये। परन्तु आप कुछ दिन ठहर जाइये। मेरा कुछ हिसाब है वह सिद्ध हो जायगा तो दूसरे ही दिन म खुद जाकर प्रस्ताव करूगा और आप जिम्मेवारी ले लेना। मैंने मसलहत समझ ली—मियाद समाप्त होते ही बालकृष्ण न खुद कुर्सी छाड दी, मुझे बिठा दिया।

यह सपना नहीं, सच्ची बात है। इस छीना झपटी के युग में आपको इस पर विश्वास न होगा, इसे आप सतयुग की बात कहेंगे, पर है यह कलयुग की ही और सो भी ५–७ साल पहले की, आज बालकृष्ण अजमेर जिले के एक माने हुए और मजे हुए नई पीढी के अगुआ हैं।

रमेशचन्द्र ओझा —

भाई अभयदेव जी ने एक कार्यकर्ता भेजा। वह अपनी पत्नि के साथ आश्रम में काम करने आया। पहली बार जब मैं उससे मिला पत्नि इस तरह घूंघट काढ कर बैठी कि मालूम होता था कोई गठरी है। उससे सीधी बात करना मुश्किल हो गया। कोई प्रश्न में करता—तो पति उससे पूछता, वह धीरे से या इशारे से हां ना करती। मुझे चिंता हुई कि यह व्यक्ति किस तरह काम कर सकेगा। लेकिन थोडे ही दिनो मे उसने पत्नि को इतना तैयार कर लिया कि वह वर्धा के महिलाश्रम मे पढने के लिए भर्ती हुई और वहा काम सीखने के बाद महिला शिक्षा सदन मे कताई की शिक्षिका तथा छात्रावास का व्यवस्थापिका के काम पर नियत हुई। आज इस देश सेवक का सारा परिवार अपने गाव मे रचनात्मक सेवा कर रहा है। जो जहा पदा होता है वह वहा अक्सर लोकप्रिय नही होता। लेकिन यह परिवार शाहपुरा में स्नेह और आदर का पात्र बन रहा है।

रमेशचन्द्र जी ओझा खारोतट सेवा संघ के संस्थापक और यशस्वी मंत्री है। और उनकी धर्मपत्नि रमादेवी एक कन्या पाठशाला चला रही है। तथा उनके बेटी दामाद भी खादी तथा भूदान में जीवन लगा रहे हैं। लडका भी अच्छा कार्यकर्ता है।

हमारा कप्तान —

साठी के करीब पहुँचने वाले दुर्गाप्रसाद जी चौधरी (कप्तान) आज भी हँसमुख तेज तर्रार जवान ही नजर आते हैं जबकि दादा-नाना तक की मंजिल पर पहुँच गये है। साधारण पढे लिखे होने पर भी आज दनिक नवज्योति (अजमेर) के अपने ढग के सफल सम्पादक और पत्रकारो के एक नेता बने हुए हैं। क्या बिजौलिया का सत्याग्रह क्या डूँगरपुर का रचनात्मक काम, क्या स्वतन्त्रता संग्राम किसी भी देश सेवा के काम मे पीछे रहना कप्तान नही जानते। इस समय कांग्रेस में नहीं है, फिर भी कांग्रेस भक्ति में अन्तर नही आया।

जेल का डाक्टर —

श्री कृष्णगोपाल गर्ग, ने स्वतन्त्रता संग्राम के आंदोलन में जेल जाने पर 'डाक्टर का पद पाया था। दवाइयां बिमारियों का इतना ज्ञान है कि लोग उन्हें सचमुच डाक्टर समझ लेते हैं—कानून का भी इतना ज्ञान है कि सहसा उन्हें वकील समझने की भूल कर डालते हैं। शुरू से ही समाज सुधारक, असहयोग सत्याग्रह की ज्वाला भडकी तो सपत्नीक अपने को झोंक देने वाले, जिला कांग्रेस के उच्च पदों पर रहकर आज अजमेर नगर सुधार आयोग के अध्यक्ष हैं। मिजाज से तेज, सेवा शुश्रूषा को सदा तत्पर, कृष्णगोपाल को कौन भूल सकेगा ?●

# दरगाह में संत

१६४८ का वह जमाना ! भाई भाई का दुश्मन हो गया था। हिन्दुस्तान के दो टुकड़े हो चुके थे। ३० जनवरी को हमारे राष्ट्र पिता की हत्या हो चुकी थी। भय, अविश्वास और शका का वातावरण था। ऐसे ही समय म मुसलमानो का महान पव 'उस' आया। अजमेर के रहने वाले बहुत से मुसलमान डर कर भाग चुके थे। उस के अवसर पर देश के कोने कोने से मुस्लिम भाई आया करते थे। किन्तु यह बड़े दु ख और तकलीफ का साल था। सबके मन की चिन्ता को त्राण मिला—सत के आगमन से! ग्राम सेवा मडल के तत्वावधान म पूज्य विनोबाजी को अजमेर बुलाया गया। उस समय भी एक दिन के लिये विनोबाजी सदन मे ठहरे। बच्चों और कायकर्ताओ ने आदर और प्रेम से सत का स्वागत किया और उनका आशीर्वाद पाया। 'उस पर पूरा एक सप्ताह विनोबाजी अजमेर म रहे। मोइनिया इस्लामिया स्कूल मे उन्हे ठहराया गया। प्राथना, प्रवचन, सभा और कायकर्ताओ की मुलाकातें जारी रही। मुस्लिम भाइयो के डर भी खुलने लगे और डरे सहमें हुए भाई बहनो ने उस के मेले मे भाग लिया।

इसी दर्मियान विनोबाजी तारागढ किले और दरगाह भी गये। बडी नमाज के एक दिन पहले शाम को और बड़ी नमाज के दिन दोपहर को दरगाह शरीफ मे प्राथना हुई। प्राथना म हिन्दू मुसलमान का कोई भेद न रहा। दो दिन पहले ही जो एक दूसरे के खून के प्यासे थे वे सारी कटुता और द्वेष भूलकर साथ बैठे और प्राथना की। कुरान शरीफ की आयतें पारसी और ईसाइ धम ग्रथा के पावन वाक्य पढे गये। सस्कृत के श्लोक और भजन गाये गये। दरगाह शरीफ मे सबने मिलकर राम धुन गाई। इस चमत्कार और परिवतन की कल्पना करिये कि कैसा अपूव और पवित्र रहा हागा वह दृश्य ! यह पावन प्रसग, इसका जितनी बार कहा जाय और सुना जाय, पुण्य की वृद्धि होती है। दुखी लोगा ने सन्त को पाया—अपने त्राता, अपने पीर के रूप मे।

बडी नमाज के दिन का दृश्य अदभुत था। धम गुरू जहा बैठकर प्रवचन करते हैं वहा विनोबाजी बैठे थे। वे ध्यानावस्थित हा गये। न स्थान का भान रहा, न काल का। आसपास वाला पर भी उनकी समाधि का इतना प्रभाव पडा कि वे यह तक न कह सके कि सर पर कपडा रख लें। करीब आधा घण्टा सन्त समाधि में लीन रहे। असख्य स्त्री पुरुषो, बालक-वृद्धो से भरी हुई दरगाह मे असीम शाति थी।

राजस्थान स्वतन्त्रता के पहले और बाद

समाधि से जागृत होकर सन्त ने आखें खोलीं। आशा हुई कि सन्त अब प्रवचन करेंगे। किन्तु कहां का बोलना, कैसा बोलना। वे गदगद् हो उठे थे। आखों से अविरल अश्रु धारा बह निकली। इस सतत अश्रु प्रवाह को मानो प्रेम का प्रतीक मान कर आस पास के लोग उठकर इस पीर के घुटनों और हाथों को चूमने लगे। मातायें आशीर्वाद का हाथ अपने बच्चो के सर पर रखवा कर अपने को धन्य समझने लगी। कईयों ने सन्त को छुआकर गण्डे और तावीज बाध लिये। कोई भी एक शब्द न बोलता था। प्रेम का यह मूक प्रवाह जारी रहा। असख्य माई बहनो को आश्वासन मिला। विश्वास जागा।

और आजकल जो उस का मेला होता है उसे देख कर पुराने और बूढे लोग भी कहते हैं कि ऐसा मेला हमने कभी नही देखा था।

आज बेखटके देश और विदेश के कोने कोने से लोग आते हैं, दरगाह के दशन करते हैं। ये सब सन्त की निष्ठा का ही तो प्रभाव है।●

उद्योगिन पुरुषसिंहमुपति लक्ष्मी
दैवन देयमिति कापुरुषा वदन्ति।
दैव निहत्य कुरु पौरुषमात्मशक्त्या
यत्ने कृते यदि न सिद्धयति कोऽत्र दोष ॥

—हितोपदेश

लक्ष्मी उद्योग करने वाले के पास जाती है। भाग्य से मिलती है ऐसा कायर ही कहते हैं। मनुष्य को चाहिए कि भाग्य को हटाकर पुरुषार्थ करे, फिर भी काम मे सफलता न मिले तो यही मानना चाहिये कि हमारी काय-प्रणाली मे कोई त्रुटि रह गई है।

# समाज सेवी उद्योगपति

**पदमविभूषण जानकीदेवी बजाज, वर्धा —**

जावरा मे एक धार्मिक परिवार म जन्म। ८ वप की उम्र में श्री जमनालालजी वजाज मे विवाह हुआ। सन् १६२० से स्वतन्त्रता आन्दोलन म सक्रिय हिस्सा लिया। १६३० के नमक सत्याग्रह के दौरान खादी-प्रचार और विदेशी कपडो के बहिष्कार के लिए बगाल और बिहार का दौरा किया। १६३३ म अखिल भारतीय मारवाडी महिला सम्मेलन के कलकत्ता अधिवेशन की अध्यक्षता। गाधीजी के गोलमेज परिषद से लौटकर आने के बाद सत्याग्रह फिर शुरू हुआ तब श्रीमती जानकीदेवीजी को ६ महीने की जेल हुई। व्यक्तिगत सत्याग्रह और "भारत छोडो" आदोलन मे भी सक्रिय भाग लिया।

१६४२ म जमनालालजी की मृत्यु के बाद से वे देश के रचनात्मक कार्यों म विशेष दिलचस्पी लेने लगीं। अखिल भारतीय गो सेवा सघ की वे अध्यक्षा रह चुकी हैं। विनोबाजी के भूदान, सपत्तिदान, कूपदान आदि कार्यों म महत्वपूर्ण काय। गो-सेवा अभी भी उनका प्रिय काय है। कस्तूरबा ट्रस्ट की ट्रस्टी।

उनकी समाज सेवा से प्रभावित होकर भारत सरकार ने १६५६ मे उन्हें 'पदमविभूषण' की उपाधि से अलकृत किया।

**पदमविभूषण श्री घनश्याम दास बिरला, कलकत्ता —**

विश्व विख्यात औद्योगिक प्रतिष्ठान 'बिरला ब्रदस लि०" के श्री घनश्यामदास जी बिरला प्रमुख स्तम्भ हैं। चीनी, चाय, पटसन, कागज, सूती ऊनी कपडा मोटर, अल्युमीनियम सीमेन्ट मशीनरी, बैंकिंग, बीमा, आदि ऐसा कोई भी औद्योगिक क्षेत्र नही है जिसके विकास मे बिरला बन्धुओ का महत्वपूर्ण योगदान नही हो। बाल बियरिंग बनाने का तो हिन्दुस्तान भर मे एक ही कारखाना है जयपुर म बिरला ब्रदस के द्वारा प्रारम्भ किया गया है। इसी तरह देश के विभिन्न भागो मे विद्यालय पुस्तकालय, औषधालय, कालेज एव देवस्थानो की स्थापना कर बिरला-परिवार के यश कीर्ति एव मान सम्मान म चार चाद लगा दिये हैं। अपनी जन्मभूमि पिलानी (राजस्थान) म विविध उच्चकोटि की शिक्षा सस्थाओ की स्थापना कर विद्यार्थियो एव विद्वानो के लिये तीर्थ स्थान बना दिया है। दिल्ली का श्री लक्ष्मीनारायण मन्दिर तथा पिलानी का सरस्वती मन्दिर शताब्दियो तक उनके नाम को अमर रखेगा।

श्री बिरलाजी एक सफल उद्योगपति ही नहीं, अपितु प्रकाण्ड विद्वान, ओजस्वी वक्ता, अनुभवी अर्थशास्त्री, दूरदर्शी राजनितिज्ञ, लेखक एवं विचारक हैं।

श्री बिरलाजी की बहुमुखी प्रतिभा एवं लोक कल्याणकारी प्रवृत्तियों की सराहना स्वरूप राजस्थान विश्वविद्यालय ने उन्हें डी लिट की उपाधि प्रदान की तथा भारत सरकार ने १९५७ में उन्हें पद्मविभूषण से विभूषित किया।

**श्री भागीरथ कानोडिया, कलकत्ता —**

पतला दुबला शरीर तथा ७१ वर्ष की आयु। इस अवस्था में मनुष्य जब स्वयं को वृद्ध, कमजोर तथा अशक्त समझने लगता है तब वह दूसरों की क्या सहायता कर सकता है अथवा प्रेरणा दे सकता है? श्री भागीरथजी कानोडिया इसके अपवाद हैं। इस बडी आयु में भी वे विद्यार्थियों, समाजसेवियों, असहायों, पीडितों, सामाजिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक एवं जनसेवी संस्थाओं की आर्थिक समस्याओं को सुलझाने में प्रेरणा से लगे हुए हैं। आसपास के एवं देश के दूर दूर के विभिन्न स्थानों से लोग अपनी आर्थिक संकट की समस्या को लेकर उनके पास आते हैं, जिन्हें वे बडी सहानुभूति पूर्वक सुनते हैं। स्वयं यथोचित सहायता करते हैं तथा दूसरों से कराते हैं। उनका यह क्रम आज गत अनेक वर्षों से अबाध गति से चल रहा है।

गत वर्ष राजस्थान की राजधानी जयपुर में कानोडिया शिक्षण संस्थान के अन्तर्गत एक महिला-महाविद्यालय की स्थापना की। चीनी, चाय तथा कपडा मीलों की स्थापना कर देश के औद्योगिकरण में भी आपका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। आदित्य मिल्स लि, यू सीटी मि लि, सहारनपुर व ताप्ती मि लि, प्रभा मि लि, जनरल प्रोड्यूसिंग क लि, हिन्दुस्तान मरकण्टाइल बैंक लि आदि के डायरेक्टर है तथा अनेक शैक्षणिक एवं लोक कल्याणकारी संस्थाओं के संस्थापक एवं प्रबल पोषक हैं।

**श्री गजाधर सोमानी —**

श्री गजाधर सोमानी ( जी० डी० सोमानी ) का जन्म राजस्थान के एक छोटे से गाव मोरासर में १२ अप्रेल १९०७ को हुआ था। इनकी शिक्षा दीक्षा कलकत्ता में हुई। इनका विवाह सुप्रसिद्ध मानसिंका परिवार की सुश्री भवरीदेवी से हुआ। आपके चार पुत्र तथा एक पुत्री हैं। श्री गजाधरजी के पिता श्री हजारीमलजी सोमानी बडे ही धार्मिक विचारों के व्यक्ति थे और एक कुशल तथा सफल व्यापारी होने के साथ साथ उनके विचार ईश्वर भक्ति की भावना से ओतप्रोत थे। श्री हजारीमलजी ने ही श्री गजाधरजी को व्यापार और धर्म में प्रेरित किया।

१९३४ में श्री गजाधरजी ने अपना कार्यक्षेत्र कलकत्ता से बम्बई चुना और सुप्रसिद्ध बागड परिवार के साझे में श्रीनिवास काटन मिल्स लिमिटेड की स्थापना की। इस मिल की स्थापना के बाद ही श्री सोमानी ने अपनी प्रतिभा तथा व्यापार कुशलता से श्रीनिवास उद्योग समूह की स्थापना की जिसमें श्रीनिवास काटन मिल्स के अतिरिक्त श्री मधुसूदन मिल्स लि०, श्री गोपाल इन्डस्ट्रीज लि० श्री दिग्विजय सीमेन्ट कम्पनी लि०, वेस्ट कोस्ट पेपर मिल्स लि० तथा आंध्र प्रदेश पेपर मिल्स लि० सम्मिलित हैं।

श्री गजाधरजी के जीवन से राजनैतिक क्षेत्र भी अछूता नही रहा। सफलता ने यहा भी इनके चरण चूमे। आप १९५१ से १९६१ तक दोनों बार लोकसभा के सदस्य रहे।

राजस्थान के आर्थिक विकास मे श्री सोमानीजी की विशेष रुचि रही है। लोकसभा म कई बार उन्होंने राजस्थान की समस्याओ को उठाया। राजस्थान चेम्बर आफ कॉमर्स, राजस्थान राज्य की औद्योगिक सलाहकार परिषद तथा अन्य मचो से राजस्थान के औद्योगिक प्रगति में सक्रिय हाथ बटाते रहे।

श्री गजाधरजी सास्कृतिक, शक्षणिक, सामाजिक अथा धार्मिक क्षेत्रों में भी उसी उत्साह से काम करते रहे है। राजस्थान मे अपने ढग का अनोखा प्रथम ग्रामोद्धार केन्द्र ( रूरल अपलिफ्ट सेन्टर ) आपकी जन्मभूमि मोलासार म ही राज्य सरकार के सहयोग से स्थापित हुआ जिसका शिलान्यास जोधपुर के स्वर्गीय महाराजा ने किया था। बाद मे कुछ समय पहले अपने पूज्य पिताजी स्व० श्री हजारीमलजी सोमानी की पुण्य स्मृति म बम्बई के भारतीय विद्या भवन के अतगत एक आर्टस तथा साइन्स कालेज की स्थापना श्री गजाधरजी ने की। बम्बई का सुप्रसिद्ध श्री व्यकटेश देवस्थान मन्दिर, धार्मिक प्रवृतियो के अतिरिक्त पुस्तकालय, औषधालय तथा अन्य उपयोगी साधना द्वारा जनता की सेवा कर रहा है। इसके अतिरिक्त कई अन्य शक्षणिक, सामाजिक तथा सास्कृतिक सस्थाओ से आपका सम्बन्ध सर्वविदित है।

राष्ट्रहित के लिए प्रयत्न करने मे आप सदा सक्रिय रहे हैं। उदाहरण के लिए, जब आप इडियन मर्चेन्टस चेम्बर के अध्यक्ष थे, चीनी आक्रमण के तुरन्त बाद ही जसे ही श्री मोरारजी देसाई ने नेशनल डिफेन्स फन्ड तथा गोल्ड बाण्ड मे धन देने की अपील की, तो आपने इन कार्यों के लिए साधन जुटाने मे भागीरथ प्रयत्न किया। अपने प्रतिष्ठानों द्वारा लगभग ५००० तोला सोना तथा सोने के आभूषण ८ दिसम्बर १९६५ को दिल्ली में आयोजित एक विशेष समारोह के अवसर पर श्री लाल बहादुर शास्त्री को दिए।

**श्री रामनाथ पोद्दार —**

श्री रामनाथ पोद्दार उन व्यक्तियो मे हैं जिन्होने अपने पिता व बडे भाई के प्रारम्भ किय कार्यों को चलाया और आग भी बढाया। उद्योगपति के नाते ही वे राजस्थान के लिये आदर के पात्र नही है बल्कि अपने परिवार द्वारा सस्थापित और सचालित शक्षणिक सस्थाओ के लिये भी है। आनन्दीलाल पोद्दार चेरिटी ट्रस्ट के द्वारा सचालित शिक्षण सस्थाओ मे प्रमुख हैं नवलगढ महाविद्यालय राजारामदेव म हा स्कूल जयपुर सेठ आनन्दीलाल पोद्दार हाई स्कूल भवानीमडी श्री गणेश गर्ल्स मिडिल स्कूल आदि। इन स्कूल कॉलेजो की अनक एक्स्ट्रा केरिकूलर एक्टीविटीज के अलावा विशेषता यह है कि उनमे हरिजनो और सनिक परिवारो के बच्चो को नि शुल्क शिक्षण दिया जाता है तथा योग्य व जरूरतमन्द विद्यार्थियो का तथा अधे, बहरे और गूगें के लिये भी। जयपुर म सेठ आनन्दीलाल पोद्दार इन्स्टीटयूट बरसो से काय कर रहा है। राजस्थान मे यह अपने तरीके की अकेली सस्था हैं। आजकल भी श्री रामलाल जी काशीकावास सस्था के सगठन म लगे हुए हैं जो बजाज परिवार, सरकार और जनता के सहयोग स श्री जमनालालजी बजाज की स्मृति मे उनके जन्म स्थान म बन रही है।

पोद्दार जी भारतीय व्यापारी संघ, राजस्थान चेम्बर ऑफ कॉमर्स एण्ड इंडस्ट्रीज, वित्त निगम के अध्यक्ष है। तथा अनेक व्यापारी संगठनों के सदस्य तथा डाइरेक्टर हैं।

श्री कमलनयन बजाज —

स्व० श्री जमनालालजी बजाज के बड़े पुत्र। जन्म—२३-१-१९१५ वर्ष में। शिक्षा सत्याग्रह आश्रम, साबरमती आश्रम और गुजरात विद्यापीठ में महात्मा गांधी व विनोबा भावे के मार्गदर्शन में हुई। बाद में वे केम्ब्रिज यूनिवर्सिटी व लंदन के इनरटेम्पल में भी पढ़ने गये।

१७ वर्ष की उम्र से ही वे आन्दोलन में सक्रिय हिस्सा लेने लगे—१९३२ के "नमक-सत्याग्रह" में महात्मा गांधी के साथ दांडीकूच के फलस्वरूप ७॥ महीने की कैद। १९४२ में चिमूर आष्टी-वर्धा के मामलों में कैद किए गए सैकड़ों निर्दोष व्यक्तियों के लिए कानूनी-बचाव का संचालन। १९४८ के जयपुर कांग्रेस अधिवेशन की स्वागत समिति के कोषाध्यक्ष। कांग्रेस कार्यकारिणी समिति की दसी राज्य उपसमिति के सदस्य। "आल इण्डिया पीपुल्स कान्फ्रेंस" के पार्लियामेंटरी बोर्ड के सदस्य व कोषाध्यक्ष। सन् १९५० से वर्धा क्षेत्र से लोक सभा के सदस्य।

गांधी स्मारक निधि के ट्रस्टी व उसकी एक्जीक्यूटिव कमेटी, खादी ग्रामोद्योग संघ के सदस्य, शिक्षा मण्डल व जमनालाल बजाज सेवा ट्रस्ट के अध्यक्ष।

बच्छराज एण्ड कम्पनी लि०, पंजाब नेशनल बैंक, मुकन्द आयरन एण्ड स्टील वर्क्स, बजाज इलेक्ट्रिकल्स व बजाज आटो आदि एम्प्लायर्स एसोसियेशन आफ राजस्थान, राजस्थान चेम्बर आफ कामर्स आदि विभिन्न संस्थाओं से संबंधित हैं व कई के डाइरेक्टर हैं।

विदेश भ्रमण —

अफ्रीका, रूस, अमेरिका, पोलैंड चेकोस्लोवाकिया, जापान, व यूरोप की कई बार यात्रा कर चुके हैं।

श्री शान्ति प्रसाद जैन, कलकत्ता —

लगभग ३० वर्षों पहिले मेसर्स साहू-जैन लि० की स्थापना उसके अन्तर्गत देश के विभिन्न प्रान्तों में चीनी, कागज, कोयला, पटसन सीमेन्ट वनस्पति एवं रसायनिक सीमकाय कल कारखानों का श्रीगणेश कर, देश के औद्योगिक विकास में श्री शान्तिप्रसादजी जैन ने विशेष योगदान दिया है। अनेक शिक्षण एवं जनसेवी संस्थायें आपके आर्थिक सहयोग से देश के विभिन्न भागों में फल-फूल रहीं है।

साहू जैन लि०, जयपुर उद्योग लि०, आदि के सफल संचालन में आपका विशेष हाथ रहा है।

फेडरेशन आफ इण्डियन चेम्बरस आफ कामर्स एण्ड इंडस्ट्रीज, आल इण्डिया ओरगनाईजेशन आफ इंडस्ट्रीज एम्प्लॉयर्स, इण्डियन चेम्बर आफ कामर्स राजस्थान चेम्बर आफ कामर्स, बिहार चेम्बर आफ कामर्स आदि अनेक प्रमुख संस्थाओं के आप अध्यक्ष रह चुके हैं।

श्री बी एम बिरला —

श्री बृजमोहनजी बिरला, स्वनाम धन्य दानवीर राजा बलदेवदासजी के सुपुत्र एवं श्री घनश्यामदासजी के छोटे भाई हैं। बिरला परिवार के देश के विभिन्न भागों में स्थापित विशाल कल कारखानों का सफल

सचालन कर उनके चहुँमुखी विकास म आपका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उनकी प्रत्युतपन्नमति, प्रभावशाली वकशली ओजस्वी भाषण एव जन्मजात औद्योगिक प्रतिभा का लोहा बडे २ विदेशी उद्योगपति भी मानते हैं।

देश की अनेक जनसेवी एव लोक हितकारिणी सस्थाओ के आप ट्रस्टी सस्थापक एव पोषक हैं।

**श्री रामकृष्ण बजाज —**

स्व० श्री जमनालालजी बजाज के दूसरे पुत्र। जन्म २२ ६-१६२३ को वर्धा मे। शिक्षा—वर्धा के नवभारत विद्यालय व कामर्स कालेज म। राष्ट्रीय आन्दोलन म सक्रिय भाग लिया और १६४०, १६४२ ४५ मे जेल गए। विद्यार्थी व युवक आन्दोलन मे विशेष रुचि। "वर्ल्ड असैंबली आफ यूथ' की भारत शाखा, "नेशनल यूथ फ्रट' के अध्यक्ष, तथा युवक काग्रेस की केन्द्रीय सलाहकार समिति के सदस्य रह चुके हैं।

साथ ही कई औद्योगिक प्रतिष्ठानो बजाज टेम्पो लि०, जमनालाल सस (प्रा०) लि०, रेडियो एण्ड इलैक्ट्रिकल्स लि० मचवेल इलैक्ट्रिकल्स (इडिया) लि० आदि के चेयरमन व डाइरेक्टर हैं।

१६५६ मे यूनेस्को अतर्राष्टीय सम्मेलन म प्रतिनिधि, युवक प्रतिनिधि मडलो के नेता के रूप मे रूस (१६५८) और अमरीका (१६५६), इटरनेशनल चेम्बर आफ कामर्स के सम्मेलनो मे जापान व अमरीका, १६६४– भारतीय उद्योगपतियो के प्रतिनिधि मडल के सदस्य के रूप मे अफ्रीका गए।

जापान की सर, रूसी युवको के बीच,अतलातिक के उस पार आदि उनकी कुछ पुस्तकें हैं।

**डा० भरतराम, दिल्ली —**

देहली के सूय स्वर्गीय लाला श्रीरामजी के आप सुपुत्र है। भारत के औद्योगिकरण मे आपका प्रमुख हाथ है। देहली क्लाथ एण्ड जनरल मिल्स लि०, भारत वाल विर्यारिग क० लि०, ऊषा रेफ्रीजेशन इन्डस्ट्रीज लि०, बरोडा रेयान कारपोरेशन, नेशनल मशिनरी मेनुफेक्चरस लि०, ईस्ट इण्डिया होटसेल्स लि०, सेन्ट्रल पल्प मिल्स लि०, राजस्थान विनायल एण्ड केमिकल्स लि०, आदि अनेक प्रमुख औद्योगिक सस्थानो के आप चेयरमेन मैनेजिंग एजेन्ट तथा डाईरेक्टर हैं। औद्योगिक क्षेत्र के उपरान्त सावजनिक सेवा के क्षेत्र मे भी आपका प्रमुख स्थान है। फेडेरेशन आफ इडियन चम्बस आफ कामस एण्ड इन्डस्ट्रीज के प्रमुख स्तम्भ है तथा इसके अध्यक्ष भी रह चुके हैं। देश की अनेक सामाजिक, साहित्यिक एव लोक सेवी सस्थाओ की आप मुक्त हस्त सहायता करते रहते है।

विभिन्न क्षेत्रो मे आपकी प्रशसनीय सेवाओ के फलस्वरूप अलीगढ विश्वविद्यालय ने जनवरी १६६४ मे आपको डाक्टर आफ ला की डिग्री से अलकृत किया।

**श्री चरतराम, दिल्ली**

देश के औद्योगिकरण के अग्रदूत स्वर्गीय लाला श्री रामजी के आप द्वितीय पुत्र है। अपने पारिवारिक औद्योगिक प्रतिष्ठानो के विकास एव नये २ उद्योग धन्धो की स्थापना मे आप महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। आपके मागदशन म अनेक सस्थायें जन सेवा एव शिक्षा के विस्तार मे लगी हुई हैं।

आपकी विदुषी सेवाभावी धर्मपत्नी श्रीमती सुमित्रा देवी महिलाओं के सर्वांगीण विकास के लिये अथक प्रयत्न कर रही है। भारतीय संगीत, कला एवं संस्कृति की उन्होंने स्मरणीय सेवायें की हैं। भारत सरकार ने उनकी बहुमुखी सेवाओं की सराहना स्वरूप पद्मश्री की उपाधि से विभूषित किया है।

**श्री मगनूराम जयपुरिया, कानपुर**

१३ वर्ष की अल्पायु में ही श्री मगनूरामजी अपने पिता श्री आनन्दीलालजी को उनके कपड़े के व्यवसाय में सहयोग देने लगे। अपनी कुशाग्र बुद्धि, मधुर व्यवहार एवं व्यवसायिक सूझबूझ के कारण थोड़े समय में ही उन्होंने अपने पैतृक कपड़ा व्यवसाय को ही बड़े पैमाने पर नहीं बढ़ाया अपितु चाय, चीनी, कोयला, तथा कपड़ा मीलों की स्थापना कर, देश के औद्योगिकरण में महत्वपूर्ण योगदान दिया। स्वदेशी काटन मिल्स क० लि०, उदयपुर काटन मिल्स लि०, श्री आनन्द शुगर मिल्स लि०, गणेश शुगर मिल्स लि०, राजभाट टी क० लि०, नेशनल इन्शोरेंस क० लि०, अल्यूमीनियम कारपोरेशन आफ इन्डिया लि०, आदि के आप डाइरेक्टर हैं तथा अनेक शैक्षणिक एवं समाजसेवी संस्थाओं के संस्थापक एवं पोषक हैं।

**श्री मोहनलाल जालान, कलकत्ता —**

औद्योगिक जगत में सूरजमल नागरमल का अपना विशेष स्थान है। इस क्षेत्र में सर्व प्रथम प्रवेश करने वाले इने गिने भारतीय औद्योगिक संस्थानों में बड़े गर्व के साथ इस का नाम लिया जाता है। पटसन, सूती वस्त्र, चीनी, चाय, ऑक्सीजन, बीमा बैंकिंग आदि विविध क्षेत्रों के महत्वपूर्ण विकास में सूरजमल नागरमल का योगदान गत ८० वर्षों से रहा है। अल्पायु में ही श्री मोहनलाल जालान फर्म का कामकाज सम्भालने लगे थे। गत चालीस वर्षों से उद्योग धन्धों को बढ़ाने में निरन्तर रूप से भाग दे रहे हैं।

कलकत्ता की शैक्षणिक सांस्कृतिक एवं जनसेवी संस्थाओं के आप प्रमुख आधार स्तम्भ हैं। कलकत्ता के मध्य भाग सेन्ट्रल एवेन्यू में अपने पूज्य पिताजी की पुण्य-स्मृति में "श्री सूरजमल जालान स्मृति भवन" का निर्माण वहां की जनता की सेवा है।

अपनी जन्मभूमि रतनगढ़ (राजस्थान) में भी विविध शिक्षण संस्थाओं की स्थापना कर, जनसेवा का अनुकरणीय आदर्श उपस्थित किया है।

**श्री पद्मपत सिंघानिया, कानपुर**

देश के औद्योगिक विकास में जे० के० ऑरगॅनाईजेशन (मे० जुग्गीलाल कमलापत) का अपना विशिष्ट स्थान है। जिसके अध्यक्ष एवं प्रेरणास्रोत हैं, श्री पदमपतजी सिंघानिया। पटसन, चीनी, कागज, कोयला, स्टील, एलम्यूनियम, सूती-ऊनी कपड़ा नाईलान, बीमा, बैंकिंग आदि औद्योगिक क्षेत्रों के विकास में इनका अभूतपूर्व योगदान रहा है। देश के विभिन्न प्रदेशों में नये नये कल कारखाने स्थापित तो आपने किये ही हैं, लेकिन उत्तरप्रदेश के औद्योगीकरण का विशेष श्रेय आपको ही है लिखा जाय तो अत्युक्ति नहीं होगी।

अनेक प्रतिष्ठानों के आप डाइरेक्टर हैं तथा अनेक समाजसेवी संस्थाओं को मुक्तहस्त से आर्थिक सहायता प्रदान करते रहते हैं।

**श्री गोविन्दनारायण सोमानी, बम्बई—**

श्री सोमानी जी, सोमानी कम्पनी लि०, आसाम बाड बोज लि०, परमानेन्ट मैगनेट्स लि०, लक्ष्मी सीमेन्ट डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा० लि०, यूनाइटेड शिपर्स लि० आदि के डाइरेक्टर हैं ।

अपनी मिलनसारिता, मधुरता एवं सेवा भावना के कारण अनेक शैक्षणिक जनसेवायें एवं व्यवसायिक संस्थानों एवं संगठनों के सफल संचालन में आपका महत्वपूर्ण योगदान है ।

विश्व विख्यात लायन्स क्लब के डेपुटी डिस्ट्रिक्ट गवर्नर हैं तथा इन्डियन कौंसल ग्राफ फोरेन ट्रेड के कोषाध्यक्ष हैं । हिन्दी विद्या भवन, इन्डो अमेरिकन सोसाईटी, वेस्टर्न इन्डिया आटोमोबाइल एसोसियेशन आदि के प्रमुख कमेटी मेम्बर हैं । वेस्टर्न इन्डिया चम्बर ग्राफ कामर्स के उपाध्यक्ष रह चुके हैं । तथा सागर विकास समिति के अध्यक्ष हैं । तथा अनेक समाज सेवी संस्थाओं से संबंधित हैं, तथा जन सेवा के विविध कार्य अबाध गति से चलाये जा रहे है ।

सागर में विशाल 'श्री हरि भवन" का निर्माण कर एक बड़े अभाव की पूर्ति की है ।

**श्री हरिश्चन्द्र गोलेछा, जयपुर—**

सुप्रसिद्ध उद्योगपति स्वर्गीय श्री सोहनमलजी गोलेछा के आप सुपुत्र हैं । बड़े ही मिलनसार एवं मधुर स्वभाव है । जयपुर के सार्वजनिक क्षेत्र में आपका प्रमुख स्थान है । अरबन कोग्रोपरेटिव बैंक लि०, जयपुर चम्बर ग्राफ कामर्स, रामलीला कमेटी आदि कितनी ही संस्थाओं के आप अध्यक्ष हैं । जयपुर मिनरल डेवलपमेन्ट सिन्डीकेट प्रा० लि०, एसोसियेटेड सोप स्टोन डिस्ट्रीब्यूटिंग कं० प्रा० लि०, गोलछा मिनरल प्रा० लि० आदि के डाईरेक्टर है तथा सुप्रसिद्ध प्रेम प्रकाश टाकीज के संचालक हैं ।

**श्री मुकुन्ददास राठी ब्यावर—**

देशभक्त श्री दामोदरलालजी राठी ने तत्कालीन राजपुताना वर्तमान राजस्थान के ब्यावर नगर में प्रथम कपड़ा मील "श्री कृष्ण मिल्स की स्थापना की, अतः राजस्थान में स्वदेशी उद्योग धन्धों के जन्मदाता इन्हें कहा जाता है ।

श्री मुकुन्ददासजी राठी अपने पैतृक उद्योग धन्धों को विकसित कर नवीनतम रूप दे रहे हैं । श्रीकृष्णा मिल्स एक ओर सबसे पुरानी है तो दूसरी ओर आधुनिक मशीनों से सुसज्जित है ।●

> युद्ध हो या शांति, जीवन एक चुनौती है—व्यक्ति के लिए भी राष्ट्र के लिए भी । शांति कालीन समस्याएं और युद्ध कालीन संकट दोनों का सामना दृढ़ता और समझदारी के साथ करना पड़ता है । और इतिहास में कोई भी राष्ट्र शांति के दुरारोह शिखरों और युद्ध की फिसलने भरी घाटियों को पार किये बिना सशक्त और सुन्दर नहीं बना है युद्ध अस्वाभाविक नहीं असामान्य चीज है ।
>
> —स्वामी चिन्मयानन्द

# भवनम् भुवनम् भूषणम् दीप्त्या

सपादकीय नोट —

[यों तो समुचे राजस्थान में शिक्षण-सस्थानों का अभाव नहीं है—खासकर स्वतन्त्रता-उपलब्धि के बाद—किन्तु अजमेर का स्थान, इस बात मे हम सवप्रथम मानें तो कोई अत्युक्ति न होगी। इस का श्रेय किसको है—यह तो निश्चित रूप से नही कहा जा सकता, फिर भी इस क्षेत्र में स्वामी दयानन्द व उनके आर्य समाज-सस्थान तथा ईसाई मिशनरीज का नाम उल्लेखनीय है। डी० ए० वी० कालेज, वदिक यत्रालय, सेण्ट जोन्स, सेण्ट फ्लारेंस, सोफिया आदि सभी सस्थायें इसी बात का प्रमाण हैं। एक ओर आर्यसमाज ने—समाज सुधारक के रूप स्व० जियालाल जी को सभी जानते हैं—जहां जन-जागरण और नव चेतना लाने मे मे महत्वपूर्ण काम किया है (इस क्षेत्र की महिलायें तो विशेषकर आर्य समाज की ऋणी रहेंगी) वहां ईसाई मिशनरीज ने भी शिक्षा के विकास में पूर्ण योग दिया है। स्वतन्त्रता से पहले ही से अनेक सस्थायें यहा अच्छा काम कर रही थीं, उसके बाद तो जैसे उनकी धूम ही मच गयी है। इन में सरकारी और गैर-सरकारी दोनों ही उल्लेखनीय हैं। अस्तु, मानव-कल्याण की ऐसी सस्थाओं के बारे मे यदि हम कुछ जान लें तो अच्छा ही है।

बहुत इच्छा थी कि राजस्थान के—विशेषकर अजमेर, जोधपुर, बीकानेर, उदयपुर आदि स्थानों के शिक्षण-स्थानो के परिचय हम इस ग्रथ में देते। अच्छा भी रहता। पर, बाधायें कब किसी की इच्छाओं को पूरा होते देख सकती हैं। समय का अत्यन्त अभाव, पर्याप्त जानकारी का न मिल पाना, और न जाने कितनी ही कठिनाइयां बीच मे आ कूदीं? फिर भला हम क्या करते? जितना भर प्रयास इस दिशा में कर पाये हैं, उसी के अनुसार कतिपय सस्थाओं के विकास-विकास के परिचय की एक झलक आपके सामने प्रस्तुत है-सम्पादक]

गवर्नमेंट कॉलिज अजमेर —

सन् १८३६। ईस्ट इण्डिया कम्पनी द्वारा अजमेर में एक छोटे से इंगलिश स्कूल की स्थापना—किसे पता था कि आगे चलकर यही नन्हा सा स्कूल राजस्थान भर में सब से बड़ा राजकीय कालेज बन जायगा? सन् १८४७ में हाई स्कूल और १८६८ से इण्टरमीडियेट—यहा तक सब कुछ 'अनू मैसिल

नामक भवन में ही चलता था। तब उसी वष यानी सन् १८४७ मे राजस्थान के तत्कालीन ब्रिटिश एजेण्ट जनरल कीटिंग—ने वतमान भवन का शिलायास किया।

समय के पख हाने की बात काई माने या न माने, लेकिन इस कालेज ने जो ऊची उडान भरी है, वह किसी से छिपी नही है। अठारहवी शताब्दी के अत मे यह डिग्री कालेज हो गया। सन् १८९६ मे कला और १९१३ म विज्ञान की डिग्री कक्षायें चलने लगी। हाई स्कूल की कक्षायें अलग करके अयत्र भेज दी गइ। और फिर—सन १९४६ मे अथ-शास्त्र, जीव विज्ञान, वनस्पति शास्त्र—१९४८ मे अंग्रेजी व इतिहास मे स्नातकोत्तर कक्षाओ का शुभारम्भ हुआ। और अब १२ विषयो म स्नातकोत्तर कक्षाओ के अतिरिक्त, कानून विभाग अलग है। भौतिकी, रसायन शास्त्र, वनस्पति शास्त्र, जीव विज्ञान व इतिहास म शोध की सुव्यवस्था—यह सब ऊची उडान नही तो और क्या है ?

कालेज होते ही यह कलकत्ता विश्वविद्यालय से सम्बद्ध कर दिया गया और सन् १८८६ मे प्रयाग विश्वविद्यालय ने इसे मायता दी। सन् १९२७ म आगरा विश्वविद्यालय बना तब इसे आगरा विश्वविद्यालय के अतगत कर दिया गया और अत मे राजस्थान विश्वविद्यालय से इस का सम्बद्धीकरण हो गया। यानी कि यह कालेज विश्वविद्यालयो को ही अपनी ओर खीचता लाया है। इतनी अवधि म इस के मूतरूप भवन—मे भी काफी परिवतन आते रहे हैं। आज इसका सुरम्य मैदान और भव्य भवन देखते ही बनते हैं।

इस वष विश्वविद्यालय सहायता आयोग ने इसके प्रागण मे एक 'नॉन-रेजीडेण्ट स्टूडेण्टस सेण्टर" (Non-Resident Students' Centre) बनाना स्वीकार लिया है। 'दी स्टेट इस्टीटयूट आव लैंग्वेज स्टडीज इगलिश डिवीजन' भी प्रारम्भ हो रहा है। कालेज म गत वष १९१० छात्र अध्ययन कर रहे थे।

सुव्यवस्थित विज्ञान-शोधालय—४६००० पुस्तको से 'लैंस पुस्तकालय—लगभग २०० पत्र पत्रिकायें मगाने वाला वाचनालय—यह सब राजस्थान मे शिक्षा के विकास के प्रतीक रूप इस कालेज अनवरत ऊर्ध्वारोहण ही कहा जा सकता है।

**मेयो कॉलेज —**

सस्थाओ के निकास विकास की कहानिया प्राय एक जैसी होती हैं, लेकिन मेयो कालेज के साथ यह बात नही है। सन् १८६९ मे सब प्रथम कनल वाल्टर ने भारत के तत्कालीन वाइसराय–लाड मेयो के सामने इस का प्रस्ताव रखा। लाड मेयो ने सन् १८७० मे बारादरी पर लगे दरबार मे इस आशय का एक भाषण दिया। प्राय सभी राजे महाराजे उपस्थित थे। प्रस्ताव सभी को पसन्द आया। देखते देखते राजाओ ने साडे छ लाख रुपया इकट्ठा कर लिया—लगभग ७ लाख दिया भारत सरकार ने। सरकार की ही ओर से कालेज के लिए २१७ एकड भूमि मिल गयी और १८७७ तक कालेज के लिए काम-चलाऊ भवन बन गया—अजमेर के पूर्वी पाश्व मे।

यह कालेज राजा महाराजाओ के लिए बना था—अस्तु केवल उन्ही राजाओ के बच्चे यहा पढ सकते थे जो दस हजार रु० का दान देकर विधिवत इसके सदस्य बनते थे—ऐसा ही था यहा का विधान।

कालेज की सचालन कर्ता थी ब्रिटिश सरकार। सारे महत्वपूर्ण काय वही करती थी। बाद म इस बात को लकर राजा-महाराजाओ म जागृति आयी और उनके प्रयास स सन् १९३२ मे इसका अधिकार राजाओ को मिल गया। एक समिति बनायी जिसमे अध्यक्षादि का चुनाव हुआ।

लेकिन अब तक देश मे काफी जागृति व नव-चेतना आ चुकी थी। इसी कालेज से निकले हुए छात्र बडे बडे अधिकारी बन चुके थे। साथ ही आ गई थी उनमे राष्ट्रीय भावना। अत इस बात के प्रयत्न किये जाने लगे कि यह सस्था केवल राजकुमारो की ही न रहे जनता के लिए भी हो। १९४० से इस प्रकार के प्रयत्न किये गये, परन्तु सफलता मिली १९४८ म जाकर। और अब हर कोई २०० रु० मासिक देकर यहा पढ सकता है।

मेयो कालेज से शिक्षित दीक्षित अनेक ऊचे-ऊचे अधिकारी बने हैं। डूगरपुर के महाराज नगेन्द्रसिह व महारावल लक्ष्मण सिंह महाराजा भगतसिंह क्रिकेट के माने हुए खिलाडी गजेन्द्रसिह जनरल नाथूसिह, हिम्मतसिंह जी आफ मानसा, हिज हाईनस-जयपुर, ब्रिगेडियर होशियार सिंह, नेपाल के राजदूत के सुपुत्र, आदि इसी कालेज से शिक्षा ग्रहण कर निकले है। जम्मू कश्मीर भूटान, सिक्किम, तथा मस्कट (अरबिया) के राजकुमारो ने भी यही शिक्षा पाई है। आज भी ६०-७० छात्र एसे हैं जिनके माता पिता कही विदेशो म भारत-सरकार की सेवा कर रहे हैं। लगभग उतने ही छात्र ऐसे हैं जो मिलिट्री अफसरो के बच्चे हैं। एक विशेष बात—और बडी आश्चयजनक बात—यह है कि यहा सन १९७९ तक के लिए अग्रिम प्रवेश हो चुके हैं।

**पिलानी मे शिक्षा तब और अब —**

पिलानी मे शिक्षा प्रसार का इतिहास बडा रोचक है। १९०१ में सुनाम धय श्री शिव नारायण जी बिडला ने अपने पौत्र रामेश्वर दास तथा घनश्याम दास जी बिडला को अच्छी शिक्षा देने तथा अग्रेजी का ज्ञान कराने के लिए छोटी-सी पाठशाला का श्रीगणेश किया। तथा एक अग्रेजी के शिक्षक श्रीकान्त जी ठाकुर ५ रुपया महावार पर तथा प्रति विद्यार्थी पीछे एक सेर बाजरे पर नियुक्त कर दिय गये।

पाठशाला का कायक्रम उत्तरोत्तर बढता ही गया और कुछ समय बाद वह लोअर प्राइमरी स्कूल बन गई उसके बाद अपर फिर मिडिल और १९२६ मे वह हाई स्कूल बन गया।

१९२९ मे बिडला एज्यूकेशन ट्रस्ट की स्थापना हुई। श्री घनश्याम दास ने महामना मालवीयजी से पिलानी मे शिक्षा काय के हेतु एक कायकर्ता की माग की और महामना के आदेश से अवतनिक छुट्टी लकर मैंने (शुकदेव पाडे) १३ अक्टूबर १९२९ म काय भार ग्रहण किया और अध्यापक वग के पूण सहयोग तथा बिडला जी के प्रचुर दान तथा प्रोत्साहन व पथ प्रदशन से इस शिक्षा सस्था का एक नया अध्याय आरम्भ हुआ। शारीरिक व्यायाम अनिवाय किया गया। बालको को लाठी लझिम, भाला तलवार, जुजुत्सु कुश्ती इत्यादि म शिक्षा दी जाने लगी। स्काउट भी कक्षाओ म अनिवाय कर दिया गया। छात्रावासो तथा कालेजों म काय आरम्भ प्राथना से होता जिसमें गीता के श्लोक तथा भजन इत्यादि सामुहिक रूप स गाय जात हैं। शिल्प शाला की भी स्थापना की गयी जिसम लडको को सूत कातना रगना कपडे सीना आदि सीखाया जाने लगा।

श्री घनश्याम दास जी बिडला ने यह प्रस्ताव स्वीकृत कर दिया कि सस्था को शीघ्र ही महाविद्यालय (डिग्री कालेज) मे परिणित किया जाय। आगरा विश्वविद्यालय से मान्यता प्राप्त करने मे कोई देर न लगी। महाराज सवाई मानसिह उद्घाटन के लिये आमन्त्रित हुए। पिलानी का उत्साह देखते ही बनता था। परन्तु इस सब प्रदशन की प्रतिक्रिया उन ६-७ अग्रेजों मे जो उस समय महाराज के साथ थे बिल्कुल विपरीत हुई। कर्नल कोल ने लेखक को बधाई दी। परन्तु कनल शोल्डम ने जो उस समय महाराज के सचिव थे जयपुर जाकर लिख भेजा कि महाविद्यालय खोलने के लिए स्टेट से आज्ञा लेनी चाहिए। आज्ञा मागने पर उन्होने लिखा कि कासील आफ स्टेट अनुमति देना स्वीकार नही करती। हमारी तैयारी सब धरी रह गयी। ८ १० वष तक हम बराबर प्रयास करते रहे। एक बार आज्ञा दी गयी की सस्था के अध्यापको को जिनको राज्य सरकार राज्य के लिए उपयोगी नही समझती, पद से मुक्त कर दें। इस पर मत्री की हैसीयत से मैंने सरकार से यह अनुरोध किया कि सरकार जिन्हें दोषी मानती है उनके दोषों की जांच पडताल करे और उन पर कानूनी कायवाही की जाय या ट्रस्टीयों मे से किसी एक ट्रस्टी को उनके दोषों से अवगत करवाया जाय और एसा न करने पर ट्रस्ट यह न्याय सगत नही समझता है कि किसी भी अध्यापक को वह अकारण सेवा से हटावें।

मामला बहुत बढा। मैं डाइरेक्टर, शिक्षा मत्री तथा वाइस प्रेसीडेन्ट आफ स्टेट से मिला तीनो ने मुझसे अलग अलग पूछा यदि राज्य अपनी आज्ञा पर अडा रहे तो मेरी क्या प्रतिक्रिया होगी। मैंने उत्तर मे निवेदन किया कि हम लोग अपनी सस्था को पिलानी मे बन्द कर देंगे और जयपुर राज्य से बाहर जाकर इससे भी बडी सस्था स्थापित करेंगे जिसमे हम एक हजार पाच सौ विद्यार्थी जयपुर से छाट कर निशुल्क शिक्षा जैसी हम चाहे वसी देगें। उत्तर प्रदेश मे सस्था खोलने पर हमे प्रातीय सरकार से ५० प्रतिशत चालू खच का, तथा ५० प्रतिशत नॉन रेकरिंग सहायता के रूप मे मिलेगा। जब कि हमे राज्य से कुछ नहीं मिल रहा है। यह रुपया जो हम मिलेगा उससे हम सैकडों छात्रवृति देने मे समर्थ होंगे। इस उत्तर के बाद मामला स्वत शात हो गया।

सर मिर्जा इस्माईल के दीवान का भार ग्रहण करने पर हमारी सब कठिनाइया दूर हो गयी। उनके द्वारा हम बडा प्रोत्साहन मिला। विनान व कला मे डिग्री कालेज की स्थापना हुई। कुछ समय उपरान्त तकनीकी शिक्षा के लिये वृहत एक इजीनियरिंग कालेज खोला गया। इस प्रोत्साहन के कारण राज्य मे प्राथमिक शिक्षा के प्रसार मे भी बहुत कुछ काय कर पाये। एक वष के भीतर ४०० पाठशालाए स्थापित करने म हम समय रहे जिसमे तीस हजार विद्यार्थी पढते थे। व्यायाम अनिवाय था। सभी स्कूलो में गस्ती पुस्तकालय थे, दवा दारू का भी इन्तजाम था।

आज सब कालेजो का एकीकरण कर सस्था ने विश्वविद्यालय का रूप धारण कर लिया है। यहा विनान, कला तथा तकनीकी शिक्षा ऊचे स्तर की दी जा रही है। देश विदेश से विद्वान आ रहे हैं। इसके अतिरिक्त तीन हायर सेकन्ड्री स्कूल हैं जिनमे एक बालिकाओ के लिए तथा एक पब्लिक स्कूल है। ५ मिडिल स्कूल है और ५ प्राइमरी स्कूल है। पिलानी मे कुल मिलाकर इस समय ६५०० बालक बालिकायें

शिक्षा पा रही है और सब प्रकार भावी भारत के बालक बालिकाओं के लिये उच्चतम शिक्षा देने तथा उनके सर्वाङ्गीण विकास के प्रयत्न किये जा रहे हैं।

विद्या भवन संक्षिप्त परिचय —

विद्या भवन की कहानी, शिक्षा तथा समाज-सेवा क्षेत्र में किये गये साहसिक प्रयत्नों का वर्णन है। कुछ वर्षों से प्रचलित शिक्षा प्रणाली के विरुद्ध लोगों मे घोर असन्तोष रहा है परन्तु राष्ट्रीय शिक्षा की इस समस्या को सुलझाने के प्रयत्न बहुत ही कम हुए। विद्याभवन इस प्रणाली के दोषों को दूर करने का एक सजीव प्रयत्न है। अग्रगण्य सस्थाओं को जिन कठिनाइयों का सामना करना पडता है तथा जो कष्ट सहने पडते हैं वे सब विद्याभवन ने सहे हैं और सह रहा है।

विद्याभवन का मुख्य उद्देश्य व्यक्तित्व का सर्वाङ्गीण विकास रहा है जिससे समाज को समझदार तथा चरित्रवान नागरिक प्राप्त हो सकें। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये विद्याभवन का प्रादुर्भाव इसके सस्थापक डा० मोहनसिंह मेहता के प्रयत्नों से सन् १९३१ के जुलाई २१ को हुआ।

१९५६ मे पच्चीस वर्ष पूरे करने पर विद्याभवन ने अपना रजत जयन्ती समारोह हमारे राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद की अध्यक्षता मे मनाया।

चार कक्षाओं से विद्याभवन ने आज पूरे बहुउद्देशीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय का रूप धारण कर लिया है जिसमे शिशु मंदिर से लगाकर ग्याहरवीं कक्षा तक का अध्ययन होता है।

इसके अतिरिक्त महात्मा गांधी की बुनियादी शिक्षा योजना के आधार पर विद्याभवन से लगभग दो मील दूर कई गावों के केन्द्र स्थल पर बुनियादी विद्यालय चल रहे हैं। इसके द्वारा धीरे धीरे गाँवों मे जागृति फल रही है।

बच्चों की शिक्षा प्रारम्भ करने के पश्चात् विद्याभवन के सचालकों को अच्छे शिक्षकों का अभाव खटकने लगा। इसके फलस्वरूप १९४२ मे एक प्रशिक्षण महाविद्यालय की स्थापना हुई। सी० टी० के प्रशिक्षण से प्रारम्भ हुआ यह विद्यालय अब बी० एड०, एम० एड तथा पी० एच० डी० के प्रशिक्षण की सुविधायें प्रदान कर रहा है।

इसी प्रकार दस्तकारी का प्रशिक्षण देने के लिए १९४४ से हैण्डी क्राफ्टस इन्स्टीटयूट चल रहा है। इसमें एक वर्ष का प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम तथा दो वर्ष का डिप्लोमा-पाठ्यक्रम चलता है।

समाज शिक्षा मे सहायता देने के लिये १९५६ मे विद्याभवन मे समाजशिक्षा आयोजक प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित हुआ।

केन्द्रीय सरकार की रूरल इन्स्टीट्यूट योजना मे सहयोग देने के विचार से भारत के दस रूरल इन्स्टीटयूट मे से एक का विद्याभवन ने अपने तत्वावधान मे चलाने का काय भी हाथ मे लिया। १९५६ के १५ अगस्त से ही यह इन्स्टीटयूट चल रहा है।

पचों सरपचो, पचायत सचिवों तथा अन्य प्रकार से पचायतो से सबंधित व्यक्तियो की अल्पकालीन प्रशिक्षण देने हेतु एक 'पचायत राज प्रशिक्षण केन्द्र' भी सरकारी सहायता से खोला गया है। स्थान-स्थान पर प्रशिक्षण हेतु शिविरो का भी आयोजन किया जाता है।

विद्याभवन का अपना एक प्रकाशन विभाग है जिसने कई शिक्षा सबधी पुस्तकें प्रकाशित की हैं। "जनशिक्षण" नामक शिक्षा विषयक मासिक तथा विद्याभवन स्टडीज नामक वार्षिक शोध पत्रिका यही से प्रकाशित हाती है। "जनशिक्षण" (१९४९ के पूव 'बालहित") नाम से प्रकाशित होता था जिसका प्रारम्भ १९३६ से हो चुका था।

छात्रावास, गौशाला, कृषि विभाग, व्यायामगृह, लक्डी का कारखाना आदि छोट बडे पूरक काय भी सस्था के अन्तगत चलते हैं।

इस प्रकार प्रारम्भ के छाटे से विद्याभवन ने विद्याभवन सोसाइटी का एक वृहद् रूप धारण कर लिया है।

शन शनै विद्याभवन को समाज की तथा राज्य की मान्यताए प्राप्त हो रही हैं। भारत की प्रयोगात्मक तथा विशेष काय करने वाली शिक्षण-सस्थाओ म इसकी गणना है। परन्तु बच्चो पर व्यय की दृष्टि से समवतय यह इसी की समकक्ष सस्थाओ मे अल्प व्यय वाली सस्था है। बच्चो के माता पिता की आय के अनुपात मे शुल्क निर्धारित करने से साधारण स्थिति के बालक भी यहा शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। विद्याभवन के द्वार सभी आर्थिक स्तर के विद्यार्थियो के लिये खुले हैं।

हम आशा करें कि सस्था हमारे राष्ट्र के लिये अधिकाधिक उपयोगी सिद्ध हो।

**वनस्थली विद्यापीठ —**

वनस्थली मे ग्रामीण पुनर्निमाण के काम मे १९२९ से जिस जीवन कुटीर परिवार के लग्न वाले *कायकर्ता काम कर रहे थे उसकी एक होनहार बेटी (१२वष की आयु की) शान्ताबाई का अचानक और* असामयिक देहान्त हो गया और इसके बाद १९३५ के अक्टूबर म वनस्थली विद्यापीठ की यह आकस्मिक शुरूआत (शिक्षा कुटीर के नाम से) हुई। निस्वाथ सेवा के वातावरण म जिस प्रकार शान्ताबाई को प्रशिक्षण दिया जा रहा था उसी तरह का प्रशिक्षण कुछ बालिकाओ को देने का अस्पष्ट सा विचार था। आधी दजन लडकियो से काय आरम्भ हुआ। शिक्षा कुटीर के पास एक इच जमीन भी नही थी और न मकानो के नाम पर ही कुछ था। कायकर्ताओ के पास एक भी पैसा नहीं था। लडकियो को रखने के लिए जीवन कुटीर स कुछ कच्ची झोपडियाँ उधार ले ली गयी। हर लडकी से ७ रुपये मासिक छात्रावास शुल्क लिया जाता था, जिससे उनके निवास, भोजन, कपडे, जूते तथा पुस्तको के और दूसरे सब खर्चे चलते थे। लडकियो को खुश करने के लिए पाच रुपये मे एक टट्टू खरीदा गया और दस रुपये मे एक लक्डी का सितार खरीदा गया। पहले साल म विद्यालय के खच का बजट ३,०००) रुपये का और छात्रावास का बजट २,०००) रुपये का बना। वनस्थली विद्यापीठ का इस छोटे से रूप म प्रारम्भ हुआ। राष्ट्रवादी जीवन कुटीर के कायकर्ता सरकार से सहायता लेना स्वीकार नही कर सकते थे। पढाई का शुल्क वसूल करने का कोई सवाल नही था। सावजनिक चन्दा ही आमदनी का एकमात्र साधन था। एक ही वष के समय मे कक्षा ६ सबसे बडी कक्षा हो गई। भारतीय सस्कृति और राष्ट्रीयता का वनस्थली मे शिक्षा का आधार माना जाने लगा। चालूपाठयक्रम के अनुसार किताबी पढ़ाई तो

होनी ही थी साथ ही शिक्षा के अन्य पहलुओं को ध्यान में रख कर वनस्थली की "पचमुखी शिक्षा" का धीरे धीरे विकास हुआ।

अब वनस्थली विद्यापीठ लडकियों का सर्वांगीण शिक्षा के लिए अग्रणी और प्रयोगात्मक ढग की अखिल भारतीय आवास संस्था है। संस्था का लक्ष्य पूर्व और पश्चिम की आध्यात्मिक विरासत और वैज्ञानिक उपलब्धि म समन्वय करना है।

विद्यापीठ द्वारा अपना बाल मन्दिर प्राथमिक विद्यालय, उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, ज्ञानविज्ञान महाविद्यालय तथा शिक्षा महाविद्यालय चलाया जाता है। उच्चतर माध्यमिक विद्यालय राजस्थान के सेकेण्डरी एजूकेशन बोर्ड की मान्य संस्था है, और दोनो, महाविद्यालय से सम्बन्धित हैं। संगीत, चित्रकला (फ्रेसको सहित) और शारीरिक शिक्षा के विशेष शिक्षाक्रम भी चलते हैं। अंग्रेजी के अलावा जर्मन फ्रेंच और रशियन ये तीन विदेशी भाषाएं और हिन्दी तथा संस्कृत के अलावा मलयालम, असमी और बगाली ये तीन भारतीय भाषाएं भी पढाई जाती हैं।

वनस्थली अपनी जिस पचमुखी शिक्षा के लिए विख्यात हो चुका है उसके पाच अग इस प्रकार हैं (१) शारीरिक, (२) व्यावहारिक, (३) कलापरक (४) नैतिक और (५) बौधिक। वनस्थली म तमाम शिक्षा निशुल्क है और किसी भी अवस्था मे किसी प्रकार भी प्रशिक्षण के लिए कोई शुल्क नहीं लिया जाता है।

वनस्थली के पास अपनी ६०० एकड जमीन है और इसके अलावा २५ एकड जमीन नाम मात्र के लगान पर है। वनस्थली का बाहर दुनिया से सडक रेल, तार और टेलीफोन से सम्बन्ध है। वनस्थली का अपना हवाई जहाज का मैदान है, जहा डकोटा जसे हवाई जहाज उतर सकते है। विद्यापीठ उपनिवेश म बिजली की व पानी के नल की सुविधाये हैं। उपनिवेश मे एक केन्द्रीय सहकारी बक भी है। विद्यापीठ म सारे हिन्दुस्तान तथा विदेशो स भी आने वाली २०० से अधिक छात्राए हैं। हिन्दुस्तान भर से आये हुए और भिन्न भाषाए बोलने वाले कार्यकर्ताओं की कुल संख्या २६० है। जिसम १३८ शिक्षिकाए हैं।

विद्यापीठ क सामने विकास की अनेक योजनाये हैं और आशा है कि जनता के सहयोग से भी शन शनै पूर्ण होगी।

विद्यापीठ को यह आशा थी कि दर स नही बल्कि जल्दी ही विश्वविद्यालय अनुदान आयोग एक्ट के मातहत उसे डीम्ड यूनिवर्सिटी के तौर पर मान लिया जायगा। अभी यह आशा पूरी नही हुई है, हालाकि विद्यापीठ के कार्यकर्ताओं का यह विश्वास है कि विद्यापीठ को इस रूप मे या और किसी अन्य रूप मे मान्यता के मिलने म अधिक लम्बा समय नही लगेगा।

तपो भूमि 'सदन'

अरावली पवत की फली हुई बाहो के बीच स्थित यह सदन मानो पूर्व और पश्चिम की सीमा रेखा है। चारो और सुरम्य पहाडियोंके बाच का यह स्थल ऐसा लगता है जसे प्रकृति ने भारत हृदय बनाया हो। जिससे चारो ओर प्रेम प्रवाह बह कर निकलता हो। अधिक समय पहले को बात नही है अब थी

हरिमाऊ उपाध्याय को पूज्य बापूजी और जमनालालजी ने राजनैतिक और सामाजिक कार्यों के सगठन के लिये राजस्थान भेजा । उन्ही के आशीर्वाद और प्रेरणा से एक अगस्त १९२७ को गाधी आश्रम की स्थापना हुई । यह आश्रम राजस्थान और मध्य भारत की राष्ट्रीय चेतना और राजनतिक गतिविधियो का केन्द्र बन गया । यही श्री हरिमाऊ उपाध्याय, बाबा नरसिंहदास, जयनारायण व्यास, छेमानन्द राहत, बैजनाथ महोदय आदि की तपो भूमि है । राजनैतिक आन्दोलनो के कारण बार बार इसे सरकार द्वारा उजाडा गया । अन्त मे द्वितीय महायुद्ध के पश्चात् ३ अक्टूबर १९४५ को वतमान सदन की नीव श्रीमती चाचीजी —गुलाब देवीजी के हाथों पडी । १३ छात्राओ तथा एक अध्यापक से प्रारम्भ हुए सदन मे आज बहुउद्देशीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय है । सरदार बाल मन्दिर, ३ मिडिल स्कूल, आश्रम स्कूल तथा महिला बेसिक ट्रेनिंग स्कूल चल रहे हैं । जिनमे लगभग १००० छात्र छात्राए शिक्षा पा रही है तथा अध्यापक, अध्यापिकाओ की सख्या ४५ है । गत २१ वर्षों से सदन निश्चित पाठ्यक्रम के अलावा जीवनोपयोगी शिक्षा देता रहा है तथा कताई, बुनाई, सिलाई, बागवानी कृषि गोपालन आदि यहा की शिक्षा के आवश्यक अग हैं । यहा से जो बालिकायें शिक्षा पाकर निकली हैं उन्होने जीवन के जिस भी क्षेत्र मे प्रवेश किया हैं सफलता पायी है ।

स्टेशन से निकलते ही एक छोटासा मकान मिलेगा । वह 'नृसिंह भवन' अतिथि-गृह है । यही विजयालक्ष्मी पण्डित, डा० कैलाशनाथ काटजू पन्तजी आदि के हाथो लगे वृक्ष हैं । थोडा आगे पीपल का पौधा है जो बोधि वृक्ष की शाखा है जो श्री नेहरूजी की, याद दिलाती है, क्योकि उन्होने इसे लगाया है । बायी ओर 'मगलायतन' है पहले यहा बाबा नृसिंहदासजी रहते थे अब 'दासाहब' । पीछे दो मजिला भव्य छात्रावास है । सामने हैं केन्द्रीय कार्यालय, ऊपर बापा भवन । आगे पुराना छात्रावास, जहा कभी दासाहब रहा करते थे 'सस्ता साहित्य मण्डल' नई दिल्ली का जन्म भी यही हुआ । थोडा आगे बढें दायी और जमनालाल बजाज जी का स्मृति चिन्ह 'बजाज कूप है, सामने घटादार नीम का पेड, जयनारायण व्यास की मचान । व्यासजी इस पर मचान बनाकर रहा करते थे । सामने ऊचा है 'कमला नेहरू विद्यालय भवन है । पण्डित नेहरू के हाथो इसकी नीव रखी गयी थी । बायी ओर ऊचे टीले पर 'बा स्थली है । और यह है अहिंसा मन्दिर जहा महात्मा गान्धी 'महावीर 'ईसा आदि की मूर्तिया हैं । यही जापान के बौध भिक्षुओ के द्वारा भेजी गई भगवान बुद्ध की मूर्ति है । जिसे २८ फरवरी १९५९ का श्रीमती इन्दिरा गान्धी ने प्रस्थापित किया । अब हम, सिद्धेश्वर मन्दिर आ पहुँचे हैं । यही बालिकाय प्रति सोमवार को कीतन करती हैं । यह है बहुत ही सक्षेप मे सदन का अन्तर्बाह्य, आत्मा और कलेवर ।

**क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, अजमेर**

हमारे देश मे क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयो (रीजनल कालेज आफ एजुकेशन) की स्थापना, जगत में एक नवीन प्रयास तथा भावी शक्षिक क्राति का परिचायक है । राष्ट्र की विकासोन्मुख औद्योगिक, व्यावसायिक एव तकनीकी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए यह निनात आवश्यक है कि माध्यमिक शिक्षा का सगठन तथा उसमे विविध प्रकार के पाठयक्रमो का समावेश नए सिरे से किया जाय । इसी दृष्टि से बहूद्देशीय माध्यमिक विद्यालयो की स्थापना हुई । पर उसम वाछित सफलता न मिलने का एक प्रमुख कारण था—सभी

तक्नीकी एव प्राविधिक विषयो में योग्य प्रशिक्षित अध्यापकों का अभाव। इस अभाव की पूर्ति के लिए केन्द्रीय शिक्षा मत्रालय द्वारा स्थापित राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसधान एव प्रशिक्षण परिषद (नेशनल कौंसिल आफ एजुकेशनल रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग) ने चार क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयो की स्थापना की योजना बनाई। इनमे से एक क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय की स्थापना के लिये अजमेर को चुना गया, इसका प्रमुख श्रेय श्री सुखाडिया जी को है। उन्होने भावी शिक्षा की गति दिशा को पहिचाना और उसे सफल बनाने के लिए सक्रिय कदम उठाया। राजस्थान राज्य सरकार की ओर से जो भी योगदान सभव था, उसे उन्होंने इस शिक्षा महाविद्यालय के निर्माण मे सुलभ बना दिया।

३० अक्टूबर १९६३ को इस महाविद्यालय के प्रथम सस्थापन दिवस समारोह के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप मे श्री सुखाडिया जी ने क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय की आवश्यकता एव उपादेयता पर प्रकाश डालते हुए कहा था कि अब हमे अपनी पुरानी शिक्षा प्रणाली मे आमूल परिवर्तन करना है। माध्यमिक शिक्षा विश्वविद्यालय शिक्षा के लिए तैयारी मात्र नही है अपितु वह स्वय मे एक पूर्ण शिक्षा भी होनी चाहिए। जिससे इसके पश्चात बालक स्वतन्त्र रूप से किसी व्यवस्था मे लग सकें। अध्ययनात्मक एव व्यवसायिक दोनो प्रकार की शिक्षा इस स्तर पर होनी चाहिए। माध्यमिक स्तर पर सद्धान्तिक तथा मानविकी विषयो की शिक्षा के साथ-साथ अन्य तक्नीकी एव प्राविधिक धाराओ की शिक्षा का भी आयोजन होना चाहिये। इस योजना की सफलता के लिए सर्वप्रथम आवश्यकता यह है कि विज्ञान, तक्नीकी, कृषि, वाणिज्य शिल्प ललितकला, गृहविज्ञान आदि विषयो के अध्यापको को उचित रीति से प्रशिक्षित किया जाय। इस दिशा में क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय महत्वपूर्ण काय कर रहे है और विश्वास है कि इससे हम शिक्षा के वाछित भावी स्वरूप के निर्माण मे अभीष्ट सहायता प्राप्त होगी।

३० अक्टूबर १९६२ को इसका शिलान्यास हुआ और १९६३ के सत्र से शिक्षा का कार्य प्रारम्भ हो गया। भवन-निर्माण का कार्य, सडकें बनने का काय, और ऊँचे-नीचे टालों को समतल करने का काय, सब एक साथ होता रहा। १९६३ मे एक वर्षीय बी० एड० तथा चार वर्षीय बी० टेक० एड० की शिक्षा प्रारम्भ की गई। बी० एस० सी० बी०एड०, डिप्लोमा इन इण्डस्ट्रियलआर्ट्स, डिप्लोमा इन इण्डस्ट्रियलआर्ट्स, बी० एड० (ऐग्रिकल्चर), बी० एड० (कामर्स), बी० एड० (होमसाइन्स) आदि की शिक्षा प्रारम्भ हो गई। एक वर्ष मे यह आश्चर्यजनक विकास था। इसी वर्ष ३८ एकड का कृषि फार्म भी तयार किया गया और कृषि प्रशिक्षण के लिए उसका उपयोग भी होने लगा। १९६४ मे ही डिमास्ट्रेशन मल्टीपरपज हायर सेकेण्डरी स्कूल मे कक्षा ६ एव ९ की शिक्षा प्रारम्भ की गई। अब इस विद्यालय मे सभी कक्षाए खुल चुकी हैं। विगत दो-तीन वर्षों के अल्प काल मे कालेज का जो निर्माण काय हुआ है वह स्वत इस बात का परिचय दे देता है कि कितनी तत्परता एव द्रुत गति से यह सब हुआ है।

मरुभूमि सेवा सघ, रतनगढ़

स्वतन्त्रता के पश्चात् गावों की पुन रचना के लिये सामुहिक निजि, तथा स्थानीय रूप से काफी प्रयत्न किये जारहे है, फिर भी देश के अन्य राज्यो की तरह राजस्थान मे भी एस हजारो देहात है जहां यातायात के

आधुनिक साधनों का नितांत अभाव, पेय जल की भीषण समस्या और बेहद गरीबी है। ऐसे गावों मे शिक्षा के प्रसार व प्रचार के उद्देश्य से सन् १९४९ ई मे श्री गौतम ग्राम्य पाठशाला की, स्थापना कुछ उत्साही युवक कार्यकर्ताओ ने की जिनम श्री ओंकार प्रसाद व्यास, श्री सागरदत्त शर्मा, प्रहलादराय उपाध्याय, श्री काशीराम जोशी आदि के नाम प्रमुख है। सव प्रथम ग्राम मोजूस उपाधियान मे एक प्राथमिक पाठशाला की स्थापना की गई। इसके पश्चात मेहरासर उपाधियान तथा ढाढरिया चारनान मे प्रायमिक पाठशालाओं का स्थापना की गई।

धीरे २ यह छोटी सी सस्था आज वट वृक्ष के रूप मे विस्तृत होकर समाज सेवा कर रही है। इस सस्था के अन्तगत महरासर उपाध्यान मे उच्च विद्यालय क अतिरिक्त तीना स्थानो मे आधुनिक पद्धति के बालमन्दिर, बालिका विद्यालय, पुस्तकालय वाचनालय आदि, शिक्षण सस्थाए तो काय कर रही है, इसके अतिरिक्त तीनों गांवो को केन्द्र बनाकर उनके आस पास के बीसियो गावो की पुन रचना का व्यापक कार्य भी इस सस्था ने शुरु कर रखा है।

आदश बस्ती, औषधालय आदि की स्थापना के साथ साथ जल समस्या के निवारण की दिशा मे जन सहयोग तथा सरकारी सहायता से यह सस्था प्रशसनीय कार्य कर रही है। गावा मे महिला मण्डल, सिलाई बुनाई केन्द्र, युवक मण्डल, हरिजन सेवक सघ, आदि की स्थापना भी की गई है, और शाखा प्रशाखाओ को प्राणवान बनाये रखने का भी पूण ध्यान रखा जाता है। इस सस्था की विशेषता यह है कि इस सस्था के सचालक राज्य कमचारी ही हैं।

बूद बूद करके घट भरने वाली बात इन्होंने की है। एक एक रुपये उन्होंने करके लाखो रुपये मरुभूमि की सेवा मे अपण किये है, इस सस्था ने सबसे आश्चय एव साहस का काय यह किया है कि उच्च विद्यालय की स्थापना इस शत पर की गई है कि चतुथ पचवर्षीय योजना काल मे राज्य सरकार से कोई सहयोग नहीं मिलेगा।

सस्था के विशाल रूप को देखकर इसका नाम अब मरुभूमि सेवा सघ कर दिया गया है। क्योकि पाठशाला समिति नाम इसके काय क्षेत्र की व्यापकता एव विविधता का बोध कराने म असमथ था।

सस्था को इतना व्यापक रूप प्रदान करने मे सक्डो छोटे मोटे कायकर्ताओ, शिक्षा प्रेमियो तथा सेवा भावी महानुभावों का सहयोग तो प्राप्त हुआ ही है पर मुख्य रूप मे से श्री चम्पालाल उपाध्याय ऐडवोकेट का सहयोग प्रशसनीय रहा है, इस सस्था के अन्तगत ग्राम—२ मेहरासर उपाधियान म सकेन्ड्री स्कूल, श्री गाधी बाल मन्दिर, श्री हनुमान बक्स जडिया बालिका विद्यालय सचालित है, यह श्री उपाध्याय का जन्म स्थान है। आपने ग्राम विकास हेतु अपनी समस्त शक्ति लगा दी है।

आचाय श्री गौरीशकरजी ने समय समय पर माग दर्शन करके सस्था का भविष्य उज्जवल बनाने मे महत्वपूर्ण योग दिया है, आपके आर्शीवाद से ही यह सस्था के प्रगति पथ पर है।

**रतनगढ़ चरिटी ट्रस्ट —**

रतनगढ के सुप्रसिद्ध प्रवासी औद्योगिक प्रतिष्ठान श्री सूरजमल नागरमल के सस्थापक श्री सूरजमल जालान एव श्री नागरमल बाजोरिया ने रतनगढ के चतुर्दिक विकास में अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान

दिया है और उनके सुयोग्य उत्तराधिकारी दे रहे हैं परन्तु शिक्षा के क्षेत्र में उनकी सेवायें विशेषत उल्लेखनीय हैं इन सेवाओ को स्थाईत्व देने के लिये श्री रतनगढ चेरिटी ट्रस्ट की स्थापना की गई तथा ट्रस्ट के अन्तगत सचालन समिति काय कर रही है। रतनगढ मे ट्रस्ट के अन्तर्गत निम्नलिखित शिक्षण एव सेवा सस्थायें चल रही है।

१—श्री हनुमान आयुर्वेद महाविद्यालय

२—श्री हनुमान बालिका उच्च विद्यालय

३—श्री हनुमान शिल्प शाला

४—श्री हनुमान पुस्तकालय एव वाचनालय

५—श्री हनुमान महिला परिषद

६—श्री हनुमान ग्राम्य पाठशालायें (१६ शाला)

७—श्री हनुमान औषधालय एव रसायन शाला

८—श्री हनुमान रात्रि पाठशाला

इसके अतिरिक्त श्री सूरजमल जालान के सुपुत्र श्री मोहनलाल जालान ने अपनी माताजी के स्मृति म "श्री रमा देवी चरिटी ट्रस्ट' द्वारा लगभग २ लाख की लागत से एक भव्य भवन बनाकर श्री रघुनाथ बहु उ० मा० विद्यालय, रतनगढ को भेंट किया। इसी ट्रस्ट के अन्तगत म टी बी क्लीनिक का भवन निर्माण हो रहा है।

श्री गान्धी बाल निकेतन, रतनगढ़ —

राजस्थान के चूरू जिले म इस कस्बे रतनगढ मे सदव ही शिक्षा का प्राधान्य रहा है। नगर के कमठ व उत्साही सामाजिक कायकर्ता श्री श्याम सुन्दर लाल एडवोकेट, श्री चम्पालाल उपाध्याय एडवोकेट, श्री मोहनलाल सारस्वत व श्री कन्हैयालाल दूगड आदि ने अपने विचारो को श्री गान्धी बाल निकेतन का रूप दिया। यहा के प्रवासी बन्धुओ ने इस सस्था के विकास में विशेष रुचि एव सहयोग प्रदर्शित किया।

१ माच १९५५ ई० का ठड परिवार की धमशाला मे बाल निकेतन का शुभारम्भ किया गया था और विद्यालय न शीघ्र ही २० फरवरी १९६१ को अपना प्रथम व द्वितीय वार्षिकोत्सव श्री राजकुमार भुवालका एम पी की अध्यक्षता मे मनाया। इस वार्षिकोत्सव म निकेतन ने अपने सम्पूण स्वरूप का परिचय दिया।

दूसर वप से नगर के सुप्रसिद्ध गनेडीवाला परिवार ने सस्था को एक दुमजिला भवन तथा इसके साथ ४०,००० वगगज जमीन प्रदान की। सुप्रसिद्ध समाज सेवी तथा दानवीर सेठ श्री सोहन लाल जी दूगड ने निकेतन को असीम अनुराग दिया है। श्री दूगड ने निकेतन की प्रगति से अत्यधिक प्रभावित होकर ५६,००० की लागत से भवन बनवा कर दिया है इस भवन का शिलान्यास श्रीमती इन्दुबाला सुखाडिया, अध्यक्षा राजस्थान समाज कल्याण बोड, जयपुर न किया तथा उदघाटन केन्द्रीय शिक्षा मन्त्री डा० कालूलाल श्रीमाली ने किया।

वतमान निकेतन राज्य शिला विभाग से स्थपेल मॉटेसरी स्कूल की मान्यता प्राप्त है तथा २०० के करीब बालक बालिका शिक्षायें ग्रहण करते हैं। निकेतन के पास सुयोग्य स्टाफ है।

निकेतन की प्रबन्ध समिति मे नगर के गणमान्य प्रतिष्ठित तथा सामाजिक कार्यकर्त्ता हैं। श्री श्याम सुन्दर लाल ऐडवोकेट व श्री चम्पालाल उपाध्याय एडवोकेट क्रमश अध्यक्ष व मन्त्री हैं इन्होंने सस्था को बनाने एव व्यवस्थित ढग से चलाने के लिये बहुत मेहनत की है जिसके सहारे ही सस्था आज के रूप मे आई है।

रतनगढ नगर के निवासी प्रवासी महानुभावो ने निकेतन के लिए अपना विशेष अनुराग दर्शाया है विशेषत श्री मानमल जी भुवालका, श्री मोहनलाल जालान, श्री चिरजीलाल जी बाजोरिया श्री राजकुमार भुवालका, कलकत्ता, श्री आसकरण जालान श्री गनपतराम धानूका तथा श्री सावरमल खेमका (आसाम) के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं इनके अतिरिक्त प्रवासी नागरिको ने भी निकेतन के प्रगति मे विशेष योगदान दिया है।

निकेतन की भावी योजनायें कई प्रकार की हैं जिनमे विशेषत यह है कि सस्था की शाखायें शुरू करा जाकर मान्टेसरी पद्धति से गरीब बच्चो को नि शुल्क शिक्षा दी जावे। ●

गांधीजी से एक बार एक व्यक्ति ने कहा—"बापू, यह दुनिया बडी बेईमान है। आप तो जानते हैं, मने ५० हजार रुपये दान देकर धमशाला बनवायी, पर अब लोगो ने मुझे ही उसकी प्रबध-समिति से हटा दिया है। धमशाला नहीं थी, तो कोई नहीं था, पर अब पचास अधिकार जतानेवाले आ गये। " उसकी बातें सुनकर बापू गम्भीर हो गये, बोले—'तुम्हें यह निराशा इसलिये हुई है कि, तुमने 'दान' का सही अथ नहीं समझा। वास्तव मे, किसी चीज को देकर कुछ प्राप्त करने की आकाक्षा दान नहीं, व्यापार है। और, जब तुमने व्यापार किया, तो लाभ-हानि की सम्भावना तो रहेगी ही!"

—किशोरलाल मशरुवाला

# अर्जुनलाल सेठी

छत्तीस साल पहले की बात है। देश भर मे बडे पैमाने पर गिरफ्तारियों की वजह से १९३० का सत्याग्रह आन्दोलन कुछ धीमा पड गया था और सरकार दमन पर उतर आई थी। सितम्बर मे काग्रेस कमेटिया गैरकानूनी घोषित कर दी गई थी और काग्रेस कार्यालयों मे ताले डाल दिये गये थे। अजमेर मे एकत्रित राजस्थान व मध्यभारत के सारे नेता व कार्यकर्त्ता गिरफ्तार हो चुके थे। तब हम लोगों ने चलता-फिरता काग्रेस दफ्तर बना लिया था। एक के बाद डिक्टेटर नियुक्त होते थे और कुछ साथियो सहित गिरफ्तार हो जाते थे। पारिवारिक जिम्मदारियो के कारण उस समय मेरी जेल जाने की तैयारी नहीं थी, इसलिए मैं पर्दे मे रह कर काग्रेस के दफ्तर का काम चलाता था। अक्टूबर में जीतमलजी लूणिया डिक्टेटर बने और उन्होंने अपनी गिरफ्तारी के बाद मोतीसिंहजी कोठारी को डिक्टेटर नामजद किया। तब हमारे सामने सवाल आया कि आन्दोलन मे गर्मी लाने के लिए क्या किया जाय ?

स्व० अर्जुनलाल सेठी के दिल को १९२८ के काग्रेस चुनावो की हार से काफी ठेस लगी थी और वह काग्रेस की राजनीति से अलग हो गये थे। हमने सोचा कि सेठीजी से अनुरोध किया जाय कि वे फिर मैदान में आकर आन्दोलन की बागडोर सम्हालें। इस इरादे से जीतमलजी लूणिया, मोतीसिंहजी कोठारी और मैं उनस मिले, पर वह राजी नही हुए मगर हमने अपने प्रयत्न जारी रखे। इसी बीच कौल साहब (बालकृष्ण कौल) भी जेल से छूट कर आगये और हम चारो सेठीजी से बराबर मिलते रहे और करते रहे। सेठीजी के साथी मिर्जा अब्दुल कादर बेग और प्यारे मिया नही चाहते थे कि सेठीज काग्रेस का नेतृत्व फिर सम्हालें। लेकिन अन्त मे सेठीजी की उत्कट देशभक्ति ने उनके रोष मिया की रोक-टोक पर विजय पाई और उन्होंने हमारी प्रार्थना स्वीकार करली। १ नवम्बर को ९ केसरगज के गाधी चौक मे विशाल जनसमूह के सामने अपना जोशीला भाषण दिया और दूसरे दिन वह गिरफ्तार कर लिये गये। होनहार की बात है कि कुछ विचित्र सयोग से मुझे भी उस सभा में बोलन पडा था। पुलिस तो मेरी ताक म थी ही सो कुछ दिन बाद मुझे भी गिरफ्तार होना पडा।

सेठीजी से मेरा परिचय यहीं से शुरू होता है। इसके बाद तो मैं कई वर्षों तक उनके यहा जाना और घटों उनकी दिलचस्प बातें सुनता रहता था। फिर १९३४ में जब गाधीजी खुद सेठीजी के घर गये थ

अर्जुनलाल सेठी

उनसे सक्रिय राजनीति में भाग लेने का आग्रह किया तो सबकी सहमति से वे राजपूताना मध्यभारत प्रान्तीय कांग्रेस के अध्यक्ष बने। किन्तु दुर्भाग्य से कांग्रेस महासमिति ने यह चुनाव रद्द कर दिया और सेठीजी ने खिन्न होकर राजनीति से सदा के लिए सन्यास ले लिया। इधर तो वह सार्वजनिक जीवन से बिल्कुल कट गये, उधर उनके मुस्लिम मित्र उन्हें घेरे रहे और उनकी सहायता भी करते रहे। उनके घर की आर्थिक स्थिति बड़ी शोचनीय थी। सूफियत की तरफ तो उनका झुकाव पहले ही था, उसी तरफ इसी को उनके मानसिक असंतुलन की दशा कहा जाता है। एक समय ऐसा भी आया जब वह अपने को गाजी अर्जुनलाल सेठी कहने लगे थे। यह बात मैं सुनी सुनाई नहीं कह रहा हूँ, मुझे यह तो ठीक याद नहीं है कि क्या अवसर था, किन्तु यह याद आज तक बाकी है कि उन्होंने एक चिट मुझे लिख कर भेजी थी जिस पर अंग्रेजी में गाजी अर्जुनलाल सेठी हस्ताक्षर थे। लोग तो यहां तक कहते हैं कि उन्होंने इस्लाम कबूल कर लिया था और मरने पर दफनाये जाने की इच्छा प्रकट की थी और इसीलिए उनके मुस्लिम मित्रों ने उनकी मृत्यु की खबर किसी को नहीं होने दी और उनकी लाश को दफना दिया। सेठीजी का देहान्त २२ दिसम्बर १९४१ को हुआ बताया जाता है। कुछ वर्ष पहले दरगाह में मौलाना मुईनुद्दीन की कब्र के बराबर एक कब्र सेठीजी की बतायी जाती थी। जो भी हो, उनकी मृत्यु बड़ी संदेहजनक परिस्थितियों में हुई और उनके परिवार को भी तीन दिन बाद पता लगा। मृत्यु से कुछ महीने पहले वह दरगाह में ही रहते बताये जाते हैं जहां वह ३० रु० मासिक वृत्ति पर बच्चों को पढ़ाया करते थे। एक महापुरुष का ऐसा दुःखद और ऐसी परिस्थितियों में देहावसान, वास्तव में हमारे राजनीतिक जीवन की शर्मनाक और कड़वी घटना है।

महात्मा भगवानदीन ने लिखा है "अर्जुनलाल सेठी को लोगों ने भुला दिया। भुला देना हम बड़ा अच्छा काम समझते हैं। जो समाज अपने चांदों, अपने सूर्यों को भुलाना नहीं जानता, वह जीना नहीं जानता। पर चांद और सूरज को भुलाने के लिए बड़ी अक्ल चाहिए, बड़ी हिम्मत चाहिए, बड़ा त्याग चाहिए और मर मिटने की तैयारी चाहिए। यह कौन नहीं जानता कि युग-युग में नये-नये आदमी पैदा होकर पुराने आदमियों को भुलाते जाते हैं। इस तरह भुलवाने से बुजुर्गों की आत्मा नयों को आशीर्वाद देती है। पर समाज ने अर्जुनलाल सेठी को इस तरह से कहां भुलाया? अगर इस तरह से भुलाया होता तो अर्जुनलाल सेठी की आत्मा आज हम सब को आशीर्वाद दे रही होती। अर्जुनलाल सेठी को हम आदमी कहें, या देश की आजादी का दीवाना कहें, हम अर्जुनलाल सेठी को हिन्दुस्तानी कहें, या आजादी के दीपक का परवाना कहें, जो अपने २० वर्ष के इकलौते बेटे को मौत के बिस्तर पर छोड़ कर पं० सुन्दरलाल के एक मामूली तार पर दौड़ा हुआ बम्बई पहुंचता है और बेटे के मर जाने के बाद भी उसे देश का काम छोड़ कर घर लौटने की जल्दी नहीं होती। हमसे उमर में दो वर्ष बड़े थे और हमारी जब उनसे जान-पहचान हुई तब वह हमसे कई गुने ज्यादा धर्म के ज्ञाता थे और हम उनको धर्म के मामले में गुरू ही मानते थे और उनकी बहुत सी बातों की नकल करने की कोशिश करते थे।"

अर्जुनलाल सेठी का जन्म ९ सितम्बर १८८० को जयपुर में हुआ था। १९०२ में उन्होंने बी ए की परीक्षा पास की। उस समय बी ए पास करना बड़े गौरव की बात माना जाता था। कालेज से निकलने

पढ़कर बाद मथुरा और सहारनपुर की जैन संस्थाओं में अध्यापक रहे और १९०७ में जयपुर में जैन वर्द्ध विद्यालय की स्थापना की। इसी साल वह सूरत की कांग्रेस में शामिल हुए और लोकमान्य तिलक के संपर्क में आये। सेठीजी के विद्यालय में धार्मिक शिक्षा के साथ-साथ विद्यार्थियों को देश-सेवा और क्रान्ति पाठ पढ़ाया जाता था। क्रान्तिकारी युवक मानिकचंद और मोती चंद इसी विद्यालय में शोलापुर से पढ़ने लिए आये थे। कुछ वर्ष बाद सेठीजी सेठ तिलोकचंद कल्याणमल जैन हाई स्कूल के प्रधानाध्यापक ह इन्दौर चले गये। किन्तु इससे पहले ही प्रसिद्ध क्रान्तिकारी रास बिहारी बसु से उनका सम्पर्क हो चुका और उन्हें राजस्थान में सशस्त्र क्रान्ति का संगठन करने का भार सौंपा गया था। इन्दौर में स्कूल संस्थापकों से सेठीजी की बनी नहीं, इसीलिए वह फिर जयपुर चले आये और उनके साथ शिव नामक एक व्यक्ति भी आया। इसने मुखबरी करके सेठीजी को नेमाज (जिला आरा बिहार) की हत्या और दिल्ली षडयन्त्र केस में फंसा दिया। इस केस में सेठीजी के शिष्य मोती चंद को फांसी गई जिससे सेठीजी के हृदय को बहुत चोट पहुंची। सेठीजी के खिलाफ सबूत न मिलने के कारण उन्हें तो नहीं दी जा सकी लेकिन उन्हें जयपुर में नजर बंद कर दिया गया। यहां उन्हें देव प्रतिमा के दर्शन बिना भोजन लेने से इंकार कर दिया तो रियासत को उनकी मांग पूरी करनी पड़ी। यह १९१३-१४की बात

सेठी जी की नजर बंदी पर सारे भारत में तहलका मच गया और देश के सारे नेताओं ने राष्ट्रीय समाचार पत्रों ने घोर विरोध प्रकट किया। इस हल्ले से घबरा कर सरकार ने सेठीजी को प्रेसीडेन्ट की वेलूर जेल में भेज दिया। यहां भी इन्होंने सरकार का चैन नहीं लेने दिया और कैदियों के साथ किये जाने वाले दुर्व्यवहार के खिलाफ भूख हड़ताल कर दी जो ७० दिन चली।

इस नजरबन्दी के विरुद्ध देश भर में रोष की भावना के कारण आखिर सरकार ने १९२ सेठीजी को छोड़ दिया। मुक्त होने पर जब वह पूना होते हुए बम्बई जा रहे थे तब पूना स्टेशन लोकमान्य तिलक उनके स्वागत के लिए आये और गोयलीय के शब्दों में, "वह इतने आनन्द विभोर उन्होंने अपने गले का रेशमी दुपट्टा सेठीजी के गले में डाल दिया और अभिनन्दन करते हुए कहा— महाराष्ट्रवासी सेठीजी को अपने बीच देख कर फूले नहीं समाते। ऐसे महान त्यागी, देश भक्त और तपस्वी का स्वागत करते हुए महाराष्ट्र आज अपने को धन्य समझता है।"

नजरबन्दी से छूटकर सेठीजी १९२० की नागपुर कांग्रेस में शामिल हुए। नागपुर के कांग्रेसी डा. मुंजे आदि गांधीजी का जुलूस निकालने के विरोधी थे। लेकिन सेठीजी ने इस घोर विरोध के गांधीजी का विशाल जुलूस निकलवाया।

इसके बाद सेठीजी ने अजमेर को अपना कार्य क्षेत्र बनाया और यहां रहकर कांग्रेसी तथा क्रा दोनों प्रवृत्तियों का संचालन करते रहे। १९२१ के सत्याग्रह आन्दोलन में अजमेर ने हिन्दु-मुस्लिम शराब के ठेकों की पिकेटिंग का जो अभूतपूर्व उदाहरण प्रस्तुत किया उसकी दाद गांधीजी को भी देनी

प्रसिद्ध क्रांतिकारी चन्द्रशेखर आजाद और उनके दल के लोग गुप्त मंत्रणाओं के लिए अजमेर आया करते थे और सेठी जी से परामर्श करते थे। एक बार चन्द्रशेखर आजाद की अज गिरफ्तार की झूठी खबर छपने पर सेठीजी तुरन्त छद्मवेश में निकल पड़े और उन्हें सुरक्षित स्थ

— अर्जुनलाल सेठी

पहुँचाया। मेरठ षडयन्त्र केस के अभियुक्त शौकत उस्मानी और काकोरी ट्रेन डकैती के फरार अभियुक्त अशफाउल्ला को सेठीजी ने शरण दी और छिपाया। बाद मे सेठीजी के ही किसी निकट के साथी ने इनाम के लालच मे जयपुर स्टेशन पर अशफाउल्ला को गिरफ्तार करवा दिया और इसका लाछन सेठीजी को भुगतना पडा। अजमेर के क्रातिकारी नवयुवकों को सेठीजी से ही प्रेरणा और सहायता मिलती थी।

सेठीजी अग्रेजी, फारसी, अरबी, सस्कृत और पाली के विद्वान थे और जैन दर्शन के माने हुए पडित थे। सस्कृत उन्होने स्वय ही सीखी थी। जन दर्शन पर व्याख्यान देते तो बडे-बडे दिग्गज पडित दातो तले उगली दबाते। परन्तु उन्होने स्याद्वाद की जो व्याख्या सर्वधर्म समभाव के रूप मे की और जनियो को गीता पढने की जो सलाह दी वह जन धर्मावलम्बियो को पसन्द नही आई। उनकी विद्वता के बारे मे अयोध्या-प्रसाद गोयलीय लिखते हैं —

"जन धर्म के उद्भट विद्वान, हिन्दू धर्म, विशेषकर गीता के अधिकारी विद्वान, इस्लाम धर्म के ऐसे जानकार कि मुसलमान कुरान पढ़ने आते थे। राजनीति मे इतने पारगत कि अच्छे-अच्छे राजनीतिज्ञ मत्रणा के लिये आते थे। व्याख्यान शैली अत्यन्त प्रभावशाली, जनता घटो मत्रमुग्ध बनी सुनती रहती।"

सेठीजी तुकबन्दिया भी किया करते थे। अपनी बनाई हुई यह तुकबन्दी उन्हें बहुत पसन्द थी और इसे वह अक्सर गाया करते थे —

कब आयगा वह दिन कि बनू साधु विहारी ।।
दुनिया मे कोई चीज मुझे थिर नहीं पाती
और आयु मेरी यों ही तो है बीतती जाती
मस्तक पै खडी मौत वह सब ही को है आती
राजा हो चाहे राजा हो, हो रक भिखारी ।।
सर्वस्व लगा के मैं करू देश की सेवा
घर घर में जाके मैं रखूगा ज्ञान का मेवा
दुखो का सभी जीवो के हो जायगा छेवा
भारत मे न देखूगा कोई मूर्ख अनारी ।।

और अन्त मे, सेठीजी की मृत्यु पर महात्मा भगवानदीन उदगार —

"एक शोर है कि सेठीजी दफनाये गये और साथ मे यह भी शोर है कि उनके दफनाये जाने की जगह का ठीक पता नही है। अगर यह बात ठीक है तो बडे काम की बात है क्योकि इस तरह मरने के बाद नाम न छोड कर दाफनाये जाने से किसी दिन तो उन हड्डियो पर हल चलेगा और वहा खेती होगी और उससे जो दाने उगेंगे उन्हे खायेगा उसमे देशभक्ति आये बगर न रहेगी। सेठीजी को जो मौत मिली, वैसी मौत के लिए दिल्ली के मशहूर कवि गालिब तक तरसते गये—

रहिये अब ऐसी जगह चलकर जहा कोई न हो।
हम सखुन कोई न हो और हमजुबा कोई न हो ।।
पडिये गर बीमार तो कोई न हो तीमारदार
और अगर मर जाइये तो कोई नौहख्वा न हो। ●